प्रस्तावना

ज्ञान सागर बाबा ने हमको विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, यह कोरी कल्पना या कोई आदर्शवाद नहीं है बल्कि यह अटल सत्य है। इस आधारभूत सत्य को जब हम समझ लेंगे और परमात्मा गुण-कर्तव्य को समझ लेंगे उस पर पूरा निश्चय होगा, तब ही आत्मा में उनकी श्रीमत पर चलने अर्थात् उसको पालन करने की दृढ़ इच्छा होगी और उस पर चलने की शक्ति जाग्रत होगी, जिससे आत्मा का अपना व्यक्तिगत और समग्र विश्व का कल्याण होगा। परमात्मा पिता की श्रीमत पर चलने वाला बाप का फेथफुल हो जाता है और उसमें सर्व आत्माओं का भी फेथ स्वत: जाग्रत होता है।

आत्मा जिस कार्य के महत्व को समझ लेता, निश्चय कर लेता, उसको करने बिना रह नहीं सकता अर्थात् उसको करता अवश्य है। हम अनादि ईश्वरीय सन्तान हैं और अभी साकार में भी परमात्मा के गोद के बच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारी बने हैं तो उनकी मत पर चलना हमारा पावन कर्तव्य है और उसमें ही हमारा अपना और समग्र विश्व का कल्याण है।

बाबा ने समाज के हर वर्ग के जीवन-व्यवहार के लिए, अमृतवेले उठने से रात्रि सोने तक के लिए, जन्म से मृत्यु तक के लिए अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र के विषय में श्रीमत दी है, उनमें से कुछ मुख्य-मुख्य क्षेत्रों के विषय में बाबा की क्या-क्या श्रीमत है, उस पर कुछ विचार यहाँ किया गया है। वैसे तो सारा ही गीता-ज्ञान श्रीमत है परन्तु इस आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए कुछ विशेष बातों के विषय में, विशेष परिस्थितियों के लिए बाबा ने जो राय दी है, मत दी है, महावाक्य उच्चारे हैं, उनको ही यहाँ श्रीमत के रूप में उद्धृत करने का पुरुषार्थ किया गया है, जिससे उसके विषय में हमारा मार्ग प्रशस्त रहे।।

ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के शास्वत सत्यों का भी ज्ञान दिया है, जो तीनों कालों में प्रभावित होते हैं। उन सत्यों के विषय में न कोई सन्देह है और न ही उनके विषय में बाबा से पूछने की आवश्यकता है अर्थात् वह भी बाबा की शाश्वत श्रीमत है अर्थात् उनके विषय में बाबा से पूछने की भी आवश्यकता नहीं है। जैसे पवित्रता की बात, सुख देगे तो सुख पायेंगे, दुख देगे तो दुख पायेंगे।

बाबा ने सार्वजनिक रूप से मुरली में जो मत दी है, वही श्रीमत है। किसी व्यक्ति विशेष को उसकी विशेष परिस्थिति के अनुसार भी बाबा ने मत दी है, जो उसके लिए श्रीमत है। शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा कर्म करके और यज्ञ में भाई-बहनों के जीवन-व्यवहार को बनाकर भी शिक्षा दी है, वह भी श्रीमत है। किसी देश-काल-परिस्थिति में मेरे लिए क्या श्रीमत यह एक विचारणीय विषय है, जिसके निर्णय में परमात्मा पर, उसके विधि-विधान पर निश्चय का विशेष महत्व है।

बी.के.महेश, एकाउण्ट्स ऑफिस
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू
I.Com No. 4879

विषय-सूची

श्रीमत

श्रीमत की परिभाषा
श्रीमत का निर्णय और निर्णय का विधि-विधान
श्रीमत और निश्चय एवं विजय
श्रीमत और निश्चय की परख
श्रीमत और पुरुषार्थ
श्रीमत और साक्षी स्थिति

ज्ञान

श्रीमत और गीता-ज्ञान
श्रीमत और यथार्थ गीता-ज्ञान
श्रीमत और परमात्मा अर्थात् श्री-श्री शिवबाबा
श्रीमत और पिताश्री ब्रह्मा बाबा
श्रीमत और परमात्म-मिलन
श्रीमत और आत्मा
श्रीमत और आत्मा एवं शरीर का भेद
श्रीमत और देह में रहते, देह से न्यारी स्थिति
श्रीमत और विश्व-नाटक अर्थात् सृष्टि-चक्र
श्रीमत और विश्व-नाटक की हू-ब-हू पुनरावृत्ति
श्रीमत और विश्व-नाटक की संरचना
श्रीमत और विश्व-नाटक की कल्याणकारिता
श्रीमत और विश्व-नाटक की न्यायपूर्णता
श्रीमत और विश्व-नाटक की सत्यता, अविनाश्यता, एक्यूरेसी
श्रीमत और विश्व-नाटक की खेल-भावना
श्रीमत और मुक्ति-जीवनमुक्ति
श्रीमत और मोक्ष
श्रीमत और तीन लोक
श्रीमत और पुरुषोत्तम संगमयुग
श्रीमत और पुरुषोत्तम संगमयुग एवं उसकी यादगार पुरुषोत्तम मास
श्रीमत और कल्प-वृक्ष
श्रीमत और मुरली

श्रीमत और विचार-सागर मंथन अर्थात् चिन्तन
श्रीमत और गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ
श्रीमत और पढ़ाई एवं परीक्षा
श्रीमत और फाइनल पेपर

योग

श्रीमत और योग अर्थात् याद
श्रीमत और तपस्या
श्रीमत और योगाभ्यास
श्रीमत और रुहानी ड्रिल अर्थात् सेकेण्ड में फुल स्टॉप
श्रीमत और निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति
श्रीमत और एकान्त एवं एकाग्रता
श्रीमत और स्मृति एवं विस्मृति
श्रीमत और स्मृति एवं स्थिति का सम्बन्ध
श्रीमत और मौन स्थिति
श्रीमत और देह में रहते देह से न्यारी स्थिति
श्रीमत और आत्माभिमानी स्थिति एवं परमात्माभिमानी स्थिति
श्रीमत और उड़ती कला की स्थिति
श्रीमत और योगबल
श्रीमत और योग का प्रयोग

धारणा

श्रीमत और ईश्वरीय गुण एवं दैवी गुण
श्रीमत और पास्ट-प्रजेन्ट-फ्युचर
श्रीमत और समय-संकल्प-शक्ति
श्रीमत और शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक
श्रीमत और चिन्तन, चिन्ता एवं चिन्तन-चिन्ता से परे निर्संकल्प स्थिति
श्रीमत और स्व-चिन्तन, पर-चिन्तन एवं व्यर्थ चिन्तन
श्रीमत और परमत, मनमत, पर-दर्शन, पर-दोष-दृष्टि
श्रीमत और बेफिकर बादशाह की स्थिति
श्रीमत और बेग़मपुर के बादशाह की स्थिति
श्रीमत और इच्छा-आकांक्षा, कामनायें, आवश्यकतायें, आशायें-अभिलाषायें
श्रीमत और इच्छामात्रम् अविद्या अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति

श्रीमत और तपस्या
श्रीमत और पवित्रता
श्रीमत और ब्रह्मचर्यव्रत
श्रीमत और विकार
श्रीमत और संगमयुगी ब्राह्मण जीवन
श्रीमत और गृहस्थ जीवन अर्थात कमल पुष्प सम जीवन
श्रीमत और ट्रस्टी जीवन
श्रीमत और सन्यास
श्रीमत और वानप्रस्थ जीवन एवं वानप्रस्थ स्थिति
श्रीमत और ब्राह्मण जीवन की दिनचर्या
श्रीमत और अमृतवेला
श्रीमत और सायंकाल का सन्धिकाल
श्रीमत और स्वप्न एवं निद्रा
श्रीमत और परमार्थ एवं जीवन-व्यवहार
श्रीमत और ब्राह्मणों का जीवन-स्तर अर्थात् साधारणता में महानता
श्रीमत और खान-पान
श्रीमत और अन्न
श्रीमत और बुद्धि का भोजन
श्रीमत और संग
श्रीमत और सत्य का संग एवं कुसंग
श्रीमत और बांधेली जीवन
श्रीमत और व्यक्तिगत जीवन
श्रीमत और कुमार-कुमारी जीवन
श्रीमत और समर्पित जीवन
श्रीमत और मधुवन (पाण्डव भवन) एवं मधुवन निवासी
श्रीमत, दैवी मत और आसुरी मत अर्थात् मनुष्य मत
श्रीमत और दृष्टि, वृत्ति, संकल्प, वायब्रेशन और वातावरण
श्रीमत और संकल्प, वृत्ति एवं वायुमण्डल
श्रीमत और वातावरण
श्रीमत और संस्कार-स्वभाव परिवर्तन
श्रीमत और स्व-परिवर्तन एवं विश्व परिवर्तन अर्थात् विश्व-कल्याण
श्रीमत और आत्म-कल्याण एवं विश्व-कल्याण
श्रीमत और दृष्टि-वृत्ति और सृष्टि परिवर्तन

श्रीमत और विश्व-शान्ति
श्रीमत और दान-पुण्य
श्रीमत और दानी, महादानी एवं वरदानी
श्रीमत और देखना, सुनना, पठन-पाठन
श्रीमत और संकल्प, बोल एवं कर्म
श्रीमत और प्रतिज्ञा एवं प्रतिज्ञा की दृढ़ता

ईश्वरीय सेवा
श्रीमत और मन्सा, वाचा, कर्मणा सेवा
श्रीमत और धन की सेवा
श्रीमत और सौंदर्य प्रसाधन, सौंदर्य प्रदर्शन एवं फैशन
श्रीमत और अंग-प्रदर्शन
श्रीमत और टीचर्स जीवन
श्रीमत और महारथी एवं आदि रत्न
श्रीमत और शिक्षा का स्वरूप

श्रीमत और आपघात - महापाप
आपघात और जीवघात
श्रीमत और दिव्य-दृष्टि एवं साक्षात्कार
श्रीमत और रहम की भावना
श्रीमत और शुभ-भावना, शुभ-कामना एवं सहयोग की भावना
श्रीमत और राग-द्वेष, इर्ष्या-घृणा
श्रीमत और निर्दोष दृष्टि
श्रीमत और माया का ग्रहण
श्रीमत और माया, माया से युद्ध एवं माया पर विजय
श्रीमत और उमंग-उत्साह, हिम्मत एवं साहस
श्रीमत और आशा-निराशा

श्रीमत और कर्म
श्रीमत और विकर्मों से मुक्त अर्थात् श्रेष्ठ कर्म
श्रीमत और कर्मयोगी स्थिति
श्रीमत और कर्म का विधि-विधान
श्रीमत और धर्मराज एवं धर्मराज की सजायें

श्रीमत और निष्काम कर्म
श्रीमत और जमा का खाता
श्रीमत और पाप-पुण्य एवं पाप-पुण्य का विधि-विधान
श्रीमत और पाप-पुण्य का खाता
श्रीमत और पापी एवं पापकर्म
श्रीमत और दुख-सुख
श्रीमत और दुखी होना या रोना

श्रीमत और ईश्वरीय प्राप्तियाँ एवं उनका नशा और खुशी
श्रीमत और रुहानी नशा एवं खुशी
श्रीमत और आनन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख
श्रीमत और हिसाब-किताब
श्रीमत और ज्ञान का वर्णन, मनन एवं मगन स्थिति
श्रीमत और व्यक्त में अव्यक्त मिलन तथा अव्यक्त होकर अव्यक्त मिलन
श्रीमत और महान एवं मेहमान
श्रीमत और देह और देह के सम्बन्ध
श्रीमत और परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्ध एवं उनका अनुभव
श्रीमत और बाप का वर्सा
श्रीमत और बाप का वारिस बनना एवं बाप को वारिस बनाना

श्रीमत और मरजीवा जीवन
श्रीमत और जीते जी मरना
श्रीमत और जीवन एवं मृत्यु
श्रीमत और मृत्यु-विजय
श्रीमत और मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय और उनसे मुक्ति
श्रीमत और देह-त्याग
श्रीमत और अन्त मति सो गति
श्रीमत और अचानक के पेपर
श्रीमत और एवररेडी स्थिति
श्रीमत और वैजन्ती माला
श्रीमत और आशिक-माशूक
श्रीमत और शमा एवं परवाने
श्रीमत और लव एण्ड लॉ

श्रीमत और मधोगरी अर्थात् शिवबाबा की भण्डारी
श्रीमत और शिवबाबा का भण्डारा
श्रीमत और गोबर्धन पर्वत में अंगुली का सहयोग
श्रीमत और परमात्मा की छत्रछाया
श्रीमत और परमात्मा की मदद
श्रीमत और बाप की मदद एवं बाप के मददगार
श्रीमत और "एक बल, एक भरोसा" और एकरस स्थिति

श्रीमत और हिंसा और अहिंसा
श्रीमत और सम्पूर्णता
श्रीमत और सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता एवं प्रसन्नता
श्रीमत और मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति
श्रीमत और अचल-अडोल, एकरस स्थिति
श्रीमत और स्वराज्य अधिकारी
श्रीमत और सच्ची स्वतन्त्रता
श्रीमत और कर्मेन्द्रियजीत
श्रीमत और स्वमान एवं सम्मान
श्रीमत और अधिकार एवं कर्तव्य
श्रीमत और अहंकार-हीनता

श्रीमत और साइलेन्स एवं साइन्स
श्रीमत और वायसलेस (Voiceless) एवं वाइसलेस (Viceless) स्थिति
श्रीमत और त्याग एवं भाग्य
श्रीमत और त्याग-तपस्या-सेवा
श्रीमत और बाप का दिल-तख्त एवं विश्व के राज्य का तख्त
श्रीमत और बलि-प्रथा
श्रीमत और स्वर्ग-नर्क
श्रीमत और स्वर्ग की राजाई
श्रीमत और राजा-रानी, दास-दासी एवं साहूकार प्रजा
श्रीमत और नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करना

श्रीमत और समय का ज्ञान और उसका महत्व
श्रीमत और सफल कर सफलता मूर्त बनना

श्रीमत और लाइट-माइट हाउस एवं सर्च-लाइट स्थिति
श्रीमत और डबल लाइट स्थिति
श्रीमत और विश्व-बन्धुत्व अर्थात् ईश्वरीय परिवार
श्रीमत और आत्मिक स्नेह
श्रीमत और अपकारी पर उपकार
श्रीमत और परस्पर एकमत
श्रीमत और संगठन
श्रीमत और संगठन की सफलता
श्रीमत और परस्पर व्यवहार

श्रीमत और कर्मातीत स्थिति
श्रीमत और कर्म-बन्धन एवं कर्म-सम्बन्ध
श्रीमत और कर्मभोग अर्थात दैहिक एवं मानसिक व्याधियाँ
श्रीमत और आध्यात्मिक जीवन की सफलता
श्रीमत और गरीबी (स्थूल धन से)
श्रीमत और भाग्य एवं भाग्य विधाता
श्रीमत और दाता, विधाता, वरदाता - परमात्मा
श्रीमत और दाता-विधाता-वरदाता - आत्मा
श्रीमत और बालकपन-मालिकपन अर्थात बालक सो मालिक
श्रीमत और मास्टर सर्वशक्तवान स्थिति
श्रीमत और मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी
श्रीमत और सत्य ज्ञान एवं सत्य ज्ञान की अथॉरिटी अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुभव की अथॉरिटी
श्रीमत और परमात्म प्यार एवं परमात्म-प्यार के अनुभव की अथॉरिटी
श्रीमत और परमात्म पालना
श्रीमत और मास्टर नॉलेजफुल एवं पॉवरफुल
श्रीमत और बाप समान स्थिति
श्रीमत और फॉलो फादर

श्रीमत और बापदादा की बच्चों से आशायें एवं उन आशाओं को पूरा करने के लिए श्रीमत
श्रीमत और परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार

श्रीमत और एकनामी-एकॉनामी स्थिति
श्रीमत और सच्ची दिल एवं साफ दिल
श्रीमत और सच्चाई-सफाई
श्रीमत और सत्यता एवं सभ्यता

श्रीमत और दुआयें अर्थात् सुख देना और सुख लेना
श्रीमत और सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, ... मर्यादा पुरुषोत्तम की स्थिति
श्रीमत और ईश्वरीय कुल अर्थात् ब्राह्मण कुल की मर्यादायें
श्रीमत और दैवी कुल की मर्यादायें
श्रीमत और 16 कला सम्पूर्ण जीवन
श्रीमत और प्रश्न एवं प्रश्नों से परे स्थिति
श्रीमत और सन्तुलन (Balance)
श्रीमत और साधन एवं साधना
श्रीमत और भौतिक साधन-सम्पत्ति एवं ईश्वरीय प्राप्तियां
श्रीमत और वर्तमान एवं भविष्य प्राप्ति
श्रीमत और पैगम्बर-मैसेन्जर

श्रीमत और ईश्वरीय वरदान एवं स्वमान
श्रीमत और आशीर्वाद एवं अभिषाप
श्रीमत और स्थूल और सूक्ष्म भोजन
श्रीमत और प्रत्यक्षता
  सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता
  बाप की प्रत्यक्षता
  स्वयं की प्रत्यक्षता
श्रीमत और भारत एवं विश्व
श्रीमत और दैनिक चार्ट एवं स्व-चेकिंग
श्रीमत और गीत-कवितायें
श्रीमत और फोटो
श्रीमत और गन्धर्वी विवाह
श्रीमत और विभिन्न त्योहार, उनका रहस्य एवं उनका मनाना
श्रीमत और रीति-रस्म, उत्सव
श्रीमत और अन्य प्राणियों के प्रति व्यवहार
श्रीमत और विदेशी

श्रीमत और भय एवं चिन्ता
श्रीमत और निर्भय एवं निश्चिन्त स्थिति
श्रीमत और विघ्न एवं विघ्न-विनाशक स्थिति
श्रीमत और निर्विघ्न जीवन

श्रीमत और बैज
श्रीमत और हमारा कोर्ट ऑफ आर्म्स
श्रीमत और चित्र एवं चित्रों की लिखत आदि
श्रीमत और विभिन्न धर्म एवं धर्म-प्रचारक
श्रीमत और विभिन्न धर्म-शास्त्र
श्रीमत और हठयोग, तन्त्र-मन्त्र, रिद्धि-सिद्धि आदि
श्रीमत और सद्गुरु
श्रीमत और टी.वी., बाइस्कोप, देखना-सुनना, पठन-पाठन आदि
श्रीमत और बांधेली जीवन
श्रीमत और विनाश एवं विनाश की प्रक्रिया
श्रीमत और प्राकृतिक आपदायें
श्रीमत और रुहानी सेना, पाण्डव सेना, सेलवेशन आर्मी
श्रीमत और नैया एवं खिवैया
श्रीमत और ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य - फरिश्ता
श्रीमत और लक्ष्य एवं लक्षण
श्रीमत और भावना एवं विवेक
श्रीमत और ईश्वरीय विवेक एवं आसुरी विवेक

श्रीमत और प्रत्यक्ष फल
श्रीमत और मांगना या किससे लेने की इच्छा रखना
श्रीमत और मांगना अर्थात् सामने वाला कुछ दे तो मैं उसको दूँ - ऐसी भावना रखना
श्रीमत और ईश्वरीय लॉज एवं लॉ मेकर
श्रीमत और ईश्वरीय दरबार एवं उसके विधि-विधान
श्रीमत और विभिन्न शब्दों का यथार्थ रहस्य
श्रीमत और बाप का स्नेह एवं स्नेही आत्माओं की परख
श्रीमत और क्षमा का विधि-विधान
श्रीमत और समर्थ स्थिति
श्रीमत और व्यर्थ एवं समर्थ

श्रीमत और बेहद का वैराग्य
श्रीमत और बेहद का सन्यास
श्रीमत और देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थों की आकर्षण
श्रीमत और मुसाफिर
श्रीमत और न्यारा एवं प्यारा
श्रीमत और अनुशासन
श्रीमत और सत्यता
श्रीमत और भक्ति, भक्ति-भावना एवं यथार्थ ज्ञान
श्रीमत और दिल एवं दिमाग़
श्रीमत और विल-पॉवर
श्रीमत और पर्सनॉलिटी एण्ड रॉयलिटी
श्रीमत और जाति-पान्ति, देश-धर्म, भाषा आदि का भेद
श्रीमत और विविधि विषय

सारांश
अमृतधारा

श्रीमत

गीता में श्रीमत का वर्णन है और सारा ही गीता ज्ञान श्रीमत भगवत-गीता के नाम से प्रसिद्ध है परन्तु बहुधा श्रीमत शब्द का प्रयोग देश-काल-परिस्थिति में कृत्य-अकृत्य के निर्णय के लिए निराकार या साकार बाबा के द्वारा दिये गये दिशा-निर्देशों के लिए किया जाता है परन्तु वास्तविकता को देखें तो कृत्य-अकृत्य के निर्णय में सारा ही गीता ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भले ही चाहे वह विश्व-नाटक का ज्ञान हो या कर्म-सिद्धान्त का ज्ञान हो, योग का ज्ञान और स्थिति हो, कृत्य-अकृत्य के निर्णय के लिए सभी की संगठित रूप में आवश्यकता है। सब बातें संगठित रूप में होंगी तब ही बुद्धि से श्रीमत के विषय में यथार्थ निर्णय होगा और आत्मा में उसे पालन करने की शक्ति आयेगी।

किसी देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता, इसलिए किसी देहधारी की मत को श्रीमत नहीं कह सकते। श्रीमत एक शिव भगवान की ही है।

बाबा की श्रीमत पर यथार्थ रीति चलने का दृढ़ संकल्प रखेंगे तो चलने का बल भी मिलेगा और चलने का फल भी मिलेगा।

“आखिर वह दिन आया आज ... यह है श्री-श्री शिवबाबा की श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। ... बाप पहली-पहली मत देते हैं - बच्चे, देही-अभिमानी बनो, शिवबाबा हम आत्माओं को पढ़ाते हैं, यह पक्का-पक्का याद करो।” सा.बाबा 25.8.05 रिवा.

बाबा की मूल श्रीमत है - बच्चे, ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर देह और देह की दुनिया से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस देह रूपी वस्त्र को धारण कर विश्व-नाटक के खेल को देखो और अपना पार्ट बजाओ और इसका आनन्द लो तथा सर्व आत्माओं को भी यह सन्देश दो, अनुभव कराओ।

श्री-श्री शिवबाबा विश्व के कल्याणार्थ अवतरित हुए हैं, उनकी मत पर चलने में ही हमारा और विश्व का कल्याण है। श्रीमत इस ब्राह्मण जीवन का मूलाधार है और ब्राह्मण जीवन की सफलता का एकमात्र साधन है। जो बाबा की श्रीमत को यथार्थ रीति समझते और समझ कर यथार्थ रीति चलते हैं, उनके जीवन में सफलता परछाई की तरह पीछे-पीछे आती है। उनके जीवन में कब असफलता स्वप्न में भी आ नहीं सकती, उनको ये ब्राह्मण जीवन कब भारी नहीं लगेगा, वे सदा ही इसमें परमानन्द का अनुभव करेंगे, जो इस संगमयुगी जीवन की परम प्राप्ति है। यदि कहाँ भी आत्मा को इस जीवन में दुख-अशान्ति की अनुभूति होती है, ये

जीवन भारी अनुभव होता है तो जरूर श्रीमत की कमी है।

श्रीमत शब्द का प्रयोग श्रीमद्भगवत् गीता में ही किया गया है और अभी बाबा हमको प्रत्यक्ष में वह गीता ज्ञान दे रहे हैं।।

जिनको श्री-श्री परमात्मा शिवबाबा पर निश्चय हो जाता है, उनको उनके द्वारा दिये ज्ञान के आधार पर स्वयं पर, परमात्मा के कर्तव्य पर, इस विश्व-नाटक के विधि-विधान पर, कर्म के विधि-विधान आदि पर अवश्य ही निश्चय हो जाता है। वे श्रीमत में ही अपना कल्याण समझते हैं, इसलिए वे मनमत-परमत छोड़कर उनकी श्रीमत पर ही चलते हैं, इसलिए उनके हर कदम में सफलता होती है।

जिसको परमात्मा पर निश्चय होगा, उसको उसके द्वारा दी गई मत, उसके महावाक्यों पर अवश्य ही निश्चय होगा और जिसको उसकी श्रीमत पर निश्चय होगा, वह श्रीमत पर अवश्य ही चलेगा क्योंकि हर मनुष्य सुख-शान्तिमय जीवन चाहता है। परमात्मा ज्ञान का सागर, सर्वज्ञ है तो वह जो मत देगा, उस पर चलने में सदा ही कल्याण है अर्थात् जीवन में सदा ही सच्चे सुख का अनुभव होगा।

शिवबाबा के साथ-साथ ब्रह्मा की मत भी मशहूर है। शिवबाबा और ब्रह्माबाबा एक ही तन द्वारा कर्तव्य करते हैं, इसलिए दोनों की मत हमारे लिए कल्याणकारी है। ब्रह्मा बाबा की मत के लिए भी शिवबाबा ने कहा है कि वे उत्तरदायी हैं। वास्तव में दोनों की मत को आंख बन्द करके भी पालन करें तो भी हमारा सदा ही कल्याण है।

बाबा ने कई बातों के विषय में मुरली में श्रीमत दी है तो कई बातों को करके भी प्रत्यक्ष किया है। शिव बाबा ने श्रीमत को ब्रह्मा बाबा के द्वारा दादियों को जो चाल-चलन, जीवन-व्यवहार सिखाया, वह भी श्रीमत का ही एक अंग है। उससे हम समझ सकते हैं कि हमारे लिए क्या कृत्य है और क्या अकृत्य है।

विश्व-नाटक के घटना-चक्र पर विचार करें तो देखते हैं कि लक्ष्मी-नारायण सर्वगुण सम्पन्न ... होते हुए भी उतरती कला में ही होते हैं, इसलिए चढ़ती कला के लिए बाबा ने जो विश्व-नाटक के विधि-विधान, कर्म के विधि-विधान और चेतन आत्मा का जड़ तत्वों पर तथा जड़ तत्वों का चेतन आत्मा के ऊपर क्या प्रभाव होता है, उसका ज्ञान अति आवश्यक है, जिसके लिए ही शिवबाबा का अवतरण होता है। शिवबाबा जो ये ज्ञान देते हैं, जो मत देते हैं और ब्रह्मा बाबा अपने अनुभव से जो राय-सलाह देते हैं, वह सब श्रीमत है और उस सबको समग्र रूप से प्रयोग करने पर ही आत्मा का व्यक्तिगत और सामूहिक विश्व का कल्याण होता है अर्थात् ये सब अस्त्र-शस्त्र हैं, जो इस जीवन रूपी महाभारत युद्ध में माया पर विजय पाने के

लिए अति आवश्यक हैं, जो श्रीमत के रूप में बाबा ने हम आत्माओं को दिये हैं।

"अभी तुमको अविनाशी ज्ञान धन मिला है, वह धारण कर फिर दान करना है। यह है सोर्स ऑफ इन्कम।... जैसे बाप कल्याणकारी है, वैसे तुम बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है, सबको रास्ता बताना है। ... भगवान की ही श्रेष्ठ मत है।"

सा.बाबा 22.8.05 रिवा.

"आखिर वह दिन आया आज ... यह है श्री-श्री शिवबाबा की श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। ... बाप पहली-पहली मत देते हैं - बच्चे, देही-अभिमानी बनो, शिवबाबा हम आत्माओं को पढ़ाते हैं, यह पक्का-पक्का याद करो।" सा.बाबा 25.8.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - हे आत्मायें, अब मेरी मत पर चलो। यह अविनाशी आत्मा को अविनाशी बाप द्वारा अविनाशी मत मिलती है। ... अभी की श्रीमत ही अविनाशी बन जाती है।"

सा.बाबा 18.8.05 रिवा.

"तुमको यह निश्चय है कि हम आत्मा हैं और दूसरा यह कि हम आत्मायें अभी परमपिता परमात्मा से वर्सा ले रहे हैं। मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन-मन-धन से हम शिवबाबा के मददगार बनते हैं। यह सब कुछ शिवबाबा को अर्पण किया है, फिर शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं कि ऐसे-ऐसे यह करो - इसको श्रीमत कहा जाता है।" सा.बाबा 9.6.06 रिवा.

श्रीमत की परिभाषा

श्रीमत अर्थात् श्री-श्री शिवबाबा के द्वारा हम आत्माओं के लिए कृत्य-अकृत्य का निर्णय करने के लिए दिये गये दिशा-निर्देश।

श्रीमत अर्थात् वह श्रेष्ठ मत है, जिससे आत्मा का व्यक्तिगत और सामूहिक विश्व का कल्याण होता है और आत्मा बन्धनमुक्त बनकर मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को पाती है। कल्याणकारी एक श्री-श्री परमात्मा ही है, इसलिए उनकी मत ही श्रीमत है।

वैसे तो श्रीमत शब्द का प्रयोग दैवी गुणों की धारणाओं, जीवन-व्यवहार, सेवा आदि के लिए जो राय-सलाह दी है, आज्ञायें दी हैं, उसको ही श्रीमत कहते हैं परन्तु वास्तविकता ये है कि शिवबाबा ने जो भी ज्ञान दिया, महावाक्य उच्चारे, वह सब श्रीमत है क्योंकि वह सबका ब्राह्मण जीवन की सफलता में योगदान है।

"यह परमात्म-श्रीमत ही पालना है। बिना श्रीमत अर्थात् परमात्म-पालना के एक कदम भी नहीं उठा सकते। ऐसी पालना सिर्फ अभी ही प्राप्त है, सतयुग में भी नहीं मिलेगी।"

अ.बापदादा 3.10.92

श्रीमत का निर्णय और निर्णय का विधि-विधान

Q. श्रीमत क्या है, किसको श्रीमत मानें और कैसे समझें या कैसे लें ?

श्रीमत क्या है, उसका निर्णय करना भी एक महत्वपूर्ण विषय है, जो श्रीमत के राज़ को जान लेता है, वही श्रीमत ले सकता है और उस पर चलकर इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकता है। श्रीमत का निर्णय करना और उसका पालन करने के लिए यह आवश्यक है कि उसको श्री-श्री शिवबाबा के विधि-विधान में पूर्ण निश्चय और अटल श्रृद्धा-भावना हो तथा उनके साथ अव्यभिचारी सम्बन्ध हो। जब परमात्मा के विधि-विधान में पूर्ण निश्चय और अटल श्रृद्धा-भावना होगी, तो परमात्मा के द्वारा उसको देश-काल-परिस्थिति के अनुसार यथार्थ श्रीमत अवश्य मिलेगी अर्थात् कोई न कोई ऐसा विधि-विधान बनेगा, जिससे वह कृत्य-अकृत्य का यथार्थ निर्णय कर सके। इसलिए अपनी बुद्धि का कांटा शिवबाबा के साथ स्थिर होना अति आवश्यक है।

शिवबाबा ने मुरली में कहा है - वास्तव में शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के मुख कमल से सम्मुख में जो राय दी है, महावाक्य उच्चारे हैं या अव्यक्त रूप में जो मत देते या ज्ञान देते हैं अर्थात् साकार मुरलियों और अव्यक्त मुरलियों में जो राय दी है या देते हैं वही श्रीमत है, उसके आधार पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार वास्तविकता को समझकर उस पर चलना ही श्रीमत पर चलना है।

दूसरे कोई भी भाई-बहनें उस श्रीमत की स्मृति ही दिला सकते हैं परन्तु उनकी मत को श्रीमत नहीं कहा जा सकता है। इसके लिए अव्यक्त बाबा ने भी एक मुरली में कहा है कि किसी भी भाई बहन की मत को श्रीमत नहीं कहा जा सकता है, उसको शुभ राय भले ही कहेंगे। परन्तु किसी देश, काल और परिस्थिति में जहाँ इन दोनों रूपों से समझकर कृत्य-अकृत्य का निर्णय नहीं कर पाते या उस परिस्थिति में उस समय श्रीमत ले नहीं सकते तो वहाँ शिवबाबा पर श्रृद्धा-विश्वास रखते हुए निमित्त आत्मा के द्वारा दी गई मत भी श्रीमत ही कही जायेगी परन्तु ये भी निश्चय हो कि बाबा ने उसको निमित्त बनाया है और अपने अन्दर भी शिवबाबा की याद हो, उस पर पूर्ण श्रृद्धा और विश्वास हो तो उसके द्वारा दी गई मत भी श्रीमत के समान ही कार्य करेगी, उसके लिए भी बाबा उत्तरदायी है। जहाँ ये भी सम्भव नहीं है वहाँ निमित्त स्थान यथा बाबा के कमरे में श्रृद्धा-भावना से बाबा की याद में बैठ कर बाबा से मत लेना भी अच्छा है, उसमें भी बाबा निर्णय करने में मदद करता है और वह भी श्रीमत के अनुरूप ही काम करेगी। किसी विशेष परिस्थिति में जहाँ ये सब सम्भव नहीं है वहाँ किसी भी

स्थान पर योग में बैठकर बाबा की प्रेरणा को लेना और समझना भी अच्छा है और वह भी श्रीमत के समान ही सही मार्ग प्रदर्शना कर सकती है। इस प्रकार श्रीमत का भी निर्णय देश, काल और परिस्थिति के आधार पर होता है और उस अनुसार ही बाबा उत्तरदायी होता है। परन्तु ये विचारणीय बात है कि उस समय हमारी परमात्मा में पूर्ण निष्ठा और विश्वास होना चाहिए। जो परमात्मा में निष्ठा और विश्वास रखता है, उसको वह सदा, सर्वदा और सर्वत्र मदद करता ही है, उसे कोई धोखा नहीं दे सकता है क्योंकि परमात्मा बुद्धिमानों की बुद्धि है, वह उसके साथ रहता है और मार्ग-प्रदर्शना करता है।

यहाँ ये बात भी विचारणीय है कि ये सब बातें नम्बरवार हैं और उनका फल भी उसी प्रकार होता है। यदि अन्दर कोई खोट होगी, कोई बहाना होगा, अन्दर में कोई संशय होगा, स्वार्थपरता होगी, जिसके कारण हम यथार्थ श्रीमत को छोड़कर बाद वाले साधनों का सहारा लेंगे तो वह श्रीमत नहीं होगी और उसका फल यथार्थ नहीं होगा।

वर्तमान समय सन्देशियों द्वारा अव्यक्त बापदादा से श्रीमत लेने का विधि-विधान भी चल रहा है परन्तु उसमें भी सन्देशी की मन:स्थिति की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है क्योंकि सन्देशियों की अपनी स्थिति बाबा की श्रीमत को समझने, वर्णन करने की क्षमता भी नम्बरवार है। इसलिए बाबा के द्वारा निमित्त सन्देशी ही बाबा की यथार्थ श्रीमत को स्पष्ट कर सकती है।

श्रीमत को समझने के लिए सबसे सहज और स्पष्ट साधन है बाबा की मुरली और शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा कर्म करके और करा के जो शिक्षायें दी हैं, उन गुण-कर्तव्य को फालो करना श्रीमत है।

जितना परमात्मा पर निश्चय होगा, उतना ही उसके द्वारा प्राप्त श्रीमत पर निश्चय दृढ़ होगा और उसी अनुसार ही संकल्प और कर्म होंगे और जैसे संकल्प और कर्म होंगे, उस अनुसार ही कर्म-फल होगा अर्थात् जीवन की सफलता-असफलता होगी।

सेना का एक सिद्धान्त होता है कि युद्ध-स्थल पर जब कोई सेनापति मारा जाता है तो उस समय उस देश-काल-परिस्थिति में जो सीनियर होता है, वह स्वत: ही उस स्थान को ले लेता है। ऐसे ही किसी देश-काल-परिस्थिति में जो सीनियर हो, उसकी राय-सलाह भी श्रीमत के समान कार्य करेगी, जब परमात्मा के साथ बुद्धियोग होगा और उसको निमित्त समझकर उसकी राय-सलाह लेंगे।

"मुरली से साँप के विष को भी समाप्त कर लेते हैं। तो ऐसा मुरलीधर हो जो किसी का कितना भी कड़ुवा संस्कार-स्वभाव हो, उसको भी वश कर दे।... सदा हर्षित बना दे।... मुरली से प्यार है अर्थात् मुरलीधर से प्यार है लेकिन प्यार का सबूत है। ... जो कहा, वह करके

दिखाना।" अ.बापदादा 11.4.86

"कहते फलानी डेट की मुरली में यह बात कही गई है, उसी प्रमाण मैं यह कर रहा हूँ। समय और सरकमस्टान्सेज को नहीं देखते लेकिन शब्द पकड़ लेते हैं।"

अ.बापदादा 27.10.75

"सदा निश्चय हो कि जो साकार की मुरली है, वही मुरली है और जो मधुवन से श्रीमत मिलती है, वही श्रीमत है। बाप सिवाए मधुबन के और कहीं मिल नहीं सकता। सदा एक बाप की पढ़ाई में निश्चय हो।" अव्यक्त बापदादा 11.4.82 पार्टियों के साथ

* ये शिवबाबा की श्रीमत है, इसमें ही हमारा कल्याण नीहित है, जब इसका दृढ़ निश्चय होगा तब ही उसकी जीवन में पालना सम्भव होगी और उसमें सफलता होगी। यदि पूरा निश्चय नहीं होगा अर्थात् संशय होगा तो सफलता हो भी सकती और नहीं भी हो सकती है। होगी भी तो पूरी सफलता नहीं होगी, पूरी सन्तुष्टता नहीं होगी।

कुछ बातों के लिए बाबा ने स्पष्ट श्रीमत दी हुई है, जिसमें किसी भी रूप में कोई ढील दे नहीं सकते। जैसे पवित्रता के लिए। पवित्रता के लिए बाबा ने कहा है कि कोई पवित्रता के लिए मारता है और मार खाने वाला मर जाता है, तो भी वह ऊंच पद पा सकता है और जो पवित्रता में किसी भी कारण अर्थात् भय, लोक-लाज, मोह, स्वास्थ्य, बीमारी आदि के कारण भी गिरता है, वह पद-भ्रष्ट हो जायेगा। वह किसी भी रूप में पवित्रता के लिए मरने वाले से ऊंच पद नहीं पा सकता है। वास्तव में ये सब बहाने हैं और माया के रूप हैं।

"शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा सब कुछ समझाते हैं। यह भी जानते तो हैं ना। फिर भी तुम यही समझो कि शिवबाबा कहते हैं। यह न समझने के कारण बहुत अवज्ञा करते हैं। ... भल अकल्याण हो जाये, वह भी कल्याण के रूप में बदल जायेगा।"

सा.बाबा 5.4.06 रिवा.

"यह श्रीमत है वा ब्रह्मा की मत है - इसमें मूझने की दरकार नहीं है। ... शिवबाबा कहते हैं - इनके लिए मैं रेस्पान्सिबुल हूँ। ड्रामा में यह राज़ नूँधा हुआ है। ... श्रीमत पर चलने से कभी घुटका नहीं आयेगा।" सा.बाबा 19.01.06 रिवा.

"चाहे अज्ञानी आत्माओं की सेवा, चाहे सेवा-साथियों की सेवा - दोनों में सफलता का आधार एक ही है - परखने और निर्णय करने की शक्ति। ... परखने की शक्ति को बढ़ाओ।"

अ.बापदादा 10.1.90

"जिद्द करेंगे या सिद्ध करेंगे। यह निशानी है वशीभूत बुद्धि की। ऐसे समय पर बापदादा की एक श्रेष्ठ मत याद रखो कि जिन्होंको बाप ने निमित्त बनाया है, वे निमित्त आत्मायें जो

डायरेक्शन देती है, उसको महत्व देना चाहिए।”

अ.बापदादा 10.1.90

“निश्चयबुद्धि ही विजयन्ति।... अब बाप में निश्चय है तो श्रीमत पर पूरी रीति चलना पड़े ना। हर एक की नब्ज भी देखी जाती है, उस अनुसार ही राय भी दी जाती है। बाबा ने भी बच्चों को कहा कि अगर शादी करनी है तो जाकर करो।... बाबा से पूछते हैं - हम पवित्र रहना चाहते हैं, हमारे सम्बन्धी हमको घर से निकालना चाहते हैं। अब क्या करना है ? यह पूछते हो तो... पवित्र रहना है, अगर नहीं रह सकते हो तो जाकर शादी करो। ... इसमें हिम्मत चाहिए ना।”

सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

श्रीमत का ब्राह्मण जीवन में महत्व

ब्राह्मण जीवन का आधार ही है श्रीमत। जो श्रीमत पर नहीं चलते या चल सकते, वे वास्तव में ब्राह्मण ही नहीं हैं। श्रीमत ब्राह्मण जीवन का प्राण-वायु है। जैसे प्राण-वायु के बिना जीवन नहीं हो सकता, ऐसे ही बिना श्रीमत के पालन के ब्राह्मण जीवन नहीं रह सकता।

“सतयुग में किससे राय लेने की दरकार नहीं रहती है। ... अभी तुमको बाप से जो श्रीमत मिलती है, वह सतयुग में भी कायम रहती है।” सा.बाबा 5.8.06 रिवा.

श्रीमत और निश्चय एवं विजय / श्रीमत और निश्चय की परख

निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति गाया हुआ है अर्थात् जिसको परमात्मा में निश्चय है और उनकी श्रीमत चलेगा, उसकी कब हार स्वप्न में भी नहीं हो सकती। विजय परमात्मा में, उनके द्वारा दिये ज्ञान में निश्चय और श्रीमत की पालना की पहचान है, कसौटी है, जिससे हम सहज ही समझ सकते हैं कि हम कहाँ तक श्रीमत पर चल रहे हैं। जहाँ श्रीमत वहाँ विजय निश्चित है। विजय होगी या नहीं होगी, होगी तो कितनी होगी, इस संकल्प का भी प्रश्न नहीं है। विजय शत प्रतिशत निश्चित है। इस बात का संकल्प उठना संशय है और संशयबुद्धि विनश्यन्ति कहा है अर्थात् उसकी हार ही होती है।

“नॉलेज का रिगार्ड अर्थात् आदि से अभी तक जो भी महावाक्य उच्चारण हुए, उन हर महावाक्य में अटल निश्चय हो। ... क्वेश्चन उठाना भी सूक्ष्म संकल्प के रूप में संशय उठाना है।” 25.1.79 अ.बापदादा

जिसको स्वयं पर निश्चय है, परमात्मा पर निश्चय है, वे सदा मनमत-परमत छोड़कर उसकी श्रीमत पर चलते हैं, उनके हर कदम में सफलता है। परमात्मा ज्ञान का सागर, सर्वज्ञ है तो वह जो मत देगा, उस पर चलने में सदा ही कल्याण है ही है। श्रीमत पर चलने वाले को जीवन में सदा सच्चे सुख का अनुभव होगा।

"समझो अचानक छत गिर पड़ती है, कोई मर पड़ते हैं तो कहेंगे भावी।... ड्रामा में जो पार्ट मिला हुआ है, वह बजाना है। .. समझो ये बाबा भी चला जाये, तुम बच्चों को तो नॉलेज मिली हुई है। शिव बाबा से वर्सा लेना है न कि इनसे।" सा. बाबा 25.6.72 रिवा.

"अगर एक बाप से सर्व प्राप्तियों का, सर्व सम्बन्धों का और सदा सहारे-दाता का अनुभव है और उस पर अटल विश्वास और निश्चय है तो बापदादा निराकार-आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं। ... भक्ति मार्ग में भी मीरा को साक्षात्कार ही नहीं लेकिन साक्षात् अनुभव हुआ तो क्या ज्ञान सागर के डायरेक्ट ज्ञान स्वरूप बच्चों को साकार रूप में सर्व प्राप्ति के आधार मूर्त, सदा सहारे-दाता बाप का अनुभव नहीं हो सकता। फिर सर्वशक्तिवान को छोड़कर यथा-शक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो। यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है - इसको जानो।"

अ.बापदादा 8.4.82

"पहले तो तुमको यह निश्चय चाहिए कि हमको पढ़ाते कौन हैं, यह है श्री श्री शिवबाबा की मत।... बाबा युक्तियाँ तो सब बतलाते हैं परन्तु कोई विश्वास भी रखे ना।"

सा.बाबा 25.1.2001 रिवा.

* जब ये निश्चय होता है कि परमात्मा हमारा पिता है, वह ब्रह्मा तन में आया है। ब्रह्मा भी हमारा पिता है तो उसके प्रति श्रृद्धा-भावना स्वत: जाग्रत होती है, उसके शब्दों में विश्वास होता है और जीवन में धारणा होती है, जो ब्राह्मण जीवन की सफलता का मूलाधार है।

"तुम्हारी भी नजर आत्मा पर ही पड़नी चाहिए। आत्मा भृकुटी के बीच में है। शरीर पर नजर पड़ने से ही विघ्न आते हैं। आत्मा से बात करनी है, आत्मा को ही देखना है। ... बहुत अच्छे-अच्छे, नामीग्रामी हैं, उनको भी संशय आ जाता है। कब-कब एक-दो में बात करते हैं - हमको तो यह बातें समझ में नहीं आती हैं, हम कहाँ फँस तो नहीं पड़े हैं, कोई जादूगरी तो नहीं है। समझ लेना चाहिए संशय बुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।"

सा.बाबा 15.12.69 रिवा.

"जो पक्के निश्चयबुद्धि बन जाते हैं वे कोई की परवाह नहीं करते। बिल्कुल ही नष्टोमोहा हो जाते हैं। एकदम नष्टोमोहा सेकण्ड में। जो स्वर्गवासी नहीं बनते तो जहन्नुम में जाने दो। राजाई

को भी थूक मार देंगे। भक्ति मार्ग में मीरा का मिसाल है। ... कहेंगी हमको तो पवित्र बनना है, फट से कहेंगी हमको राजाई की कोई परवाह नहीं है। जैसे उन राजाओं की रानियों को परवाह नहीं रही, छोड़ दिया। वैसे अब रानियाँ निकलेंगी, जो राजाओं की परवाह नहीं करेंगी। बस हम तो स्वर्ग की मालिक बनती हैं। भक्ति मार्ग में राजाओं का नाम है, जिन्होंने सन्यास किया है। अभी यह तो है ज्ञान मार्ग।" सा.बाबा 14.4.73 रिवा.

"कौरव गवर्मेन्ट की विनाश काले विपरीत बुद्धि। बाप कहते हैं मैं सत्य कहता हूँ उन्होंका विनाश हो जायेगा और तुम्हारी है बाप से प्रीत बुद्धि। तुम विश्व पर राज्य पाते हो। कई बच्चे डरपोक भी बहुत हैं। समझते हैं हम ऐसा लिखेंगे तो गवर्मेन्ट जेल में डाल देगी। इसी डर से अगर लिखेंगे तो सचमुच जेल में चले जायेंगे। निडर होकर लिखेंगे तो कब जेल में डाल न सकेंगे।" सा.बाबा 3.5.71 रिवा.

"ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके। ... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है। ... चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है। ... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।" अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी

"जिनको निश्चय हो जाता है, उनको किसी की परवाह नहीं रहती है। मनुष्य अपने हाथ-पांव वाला है ना। ... अपने को स्वतन्त्र रख सकते हैं। क्यों न हम बाप से अमृत लेकर अमृत का ही दान करूँ।" सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

"सिर्फ बाप में निश्चय नहीं। अपने आप में भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी। ... बाप, आप और ड्रामा तीनों निश्चय साथ-साथ रहें। कभी संकल्प में भी कोई हिला न सके। अंगद बन जाओ।"
अ.बापदादा 21.12.89 पार्टी 3

"सेवा भी करावनहार बाप करा रहे हैं और कराते रहेंगे... वह हमारे द्वारा करा रहे हैं - इससे बेफिकर हो जायेंगे। निश्चय है कि यह श्रेष्ठ कार्य होना ही है वा हुआ ही पड़ा है। इसलिए निश्चयबुद्धि निश्चिन्त, बेफिकर रहते हैं। यह तो सिर्फ बच्चों को बिज़ी रखने के लिए सेवा का एक खेल करा रहे हैं। बच्चों को निमित्त बनाये वर्तमान और भविष्य सेवा के फल का अधिकारी बना रहे हैं।" अ.बापदादा 25.12.89

"तुम जानते हो भल कितने भी विघ्न पड़ें तो भी स्वर्ग की स्थापना जरूर होनी है। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें संशय की बात ही नहीं। ... बाप जो समझाते हैं, उसको अच्छी रीति मन्थन कर धारण करना है।" सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

"कई हैं, जो निश्चय से पढ़ते थे, संशय आने से पढ़ाई छोड़ दी। निश्चय कैसे हुआ, फिर संशयबुद्धि किसने बनाया? ... यह बड़ा इम्तहान है, इसमें बहुत साहस चाहिए। एक तो निश्चयबुद्धि का साहस चाहिए, दूसरा माया से युद्ध है।" सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"निश्चय और विजय - ये एक-दो के पक्के साथी हैं।... निश्चयबुद्धि की कभी हार हो नहीं सकती। निश्चयबुद्धि औरों को भी हार से छुड़ाने वाले हैं।... विजय का फाउण्डेशन है निश्चय। ... फाउण्डेशन पक्का होगा तो निर्भय होंगे। ... मायाजीत बनने का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि विजयी।" अ.बापदादा 21.12.89 पार्टी 3

"ब्राह्मणी कैसी भी हो परन्तु यह पढ़ाई है बाप की, पढ़ाने वाला वह सुप्रीम टीचर है। अटेन्शन पढ़ाई पर होना चाहिए। ... बाप से निश्चय ही टूट पड़ता है तो फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। ... अन्त तक जब तक जीना है, पढ़ना जरूर है।" सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"निश्चय की परख तूफान के समय होती है।... मैं कौनसी आत्मा हूँ, वह नशा और वह स्वमान समय पर अनुभव हो, इसको कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। कोई पेपर है ही नहीं और कहे - मैं तो पास विद् ऑनर हो गया तो कोई उसको मानेगा? ... ऐसे समय पर अपने निश्चय का फाउण्डेशन को चेक करो।" अ.बापदादा 27.12.87

"निश्चयबुद्धि और रुहानी नशे में रहने वाले की विशेषतायें... जितना ही श्रेष्ठ नशा, उतना ही निमित्त भाव, ... निमित्त भाव के कारण निर्मान भाव ... जितनी निर्मान बुद्धि होगी, उतना ही नव-निर्माण करने वाली बुद्धि होगी। ... निमित्त, निर्मान और निर्माण।"

अ.बापदादा 27.12.87

"निश्चयबुद्धि की भाषा में सदा मधुरता तो कामन बात है लेकिन उदारता होगी। ... उदारता अर्थात् दूसरों को आगे रखना। जैसे ब्रह्मा बाप ने ... जितना स्वयं इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में रहते, उतना बाप और परिवार अच्छा योग्य समझकर उसको ही पहले रखते हैं। ... उदारता, सन्तुष्टता और सर्व के कल्याण की भाषा होगी।"

अ.बापदादा 27.12.87

"निश्चय की निशानियाँ - जैसा निश्चय वैसा कर्म, ... हर कर्म और संकल्प में सहज विजय... श्रेष्ठ भाग्य, श्रेष्ठ जीवन, बाप और परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क में संशय संकल्पमात्र भी नहीं होगा, ... क्वेश्चन मार्क समाप्त, हर बात में बिन्दु बन बिन्दु लगाने वाले, ... बेफिकर बादशाह की स्थिति सहज और स्वत: अनुभव हो, ... निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा बाप पर बलिहार जाने वाले, ... सदा निश्चिन्त, ... सदा रुहानी नशे में और उसे देखकर औरों को यह रुहानी नशा अनुभव होगा।" अ.बापदादा 27.12.87

"सबसे श्रेष्ठ सितारा है सफलता का सितारा।... "कर सकेंगे या नहीं कर सकेंगे" - उनके जीवन में असफलता का अंश-मात्र भी नहीं होगा। जैसे स्लोगन है - सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, ऐसे वह स्वयं प्रति सफलता अधिकार के रूप में अनुभव करेंगे। ... परिस्थिति भी स्वस्थिति के उड़ती कला का साधन बन जायेगी।" अ.बापदादा 23.1.87

"निश्चय सदा ही निश्चिन्त बनाता है। ...जब निश्चिन्त होते हैं तो बुद्धि जजमेन्ट यथार्थ करती है। ... यथार्थ निर्णय का आधार है - निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त।... जब निर्णय यथार्थ होगा तो विजयी अवश्य होंगे।" अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 2

"निश्चय की पहचान ऐसे परिस्थिति के समय पर ही होती है। परिस्थिति सामने आये और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति स्थिर रहे, तब कहेंगे निश्चयबुद्धि विजयी। तीनों में निश्चय पक्का चाहिए। बाप में, अपने आप में और ड्रामा में। ... विजय का तिलक सदा मस्तक पर लगा हुआ है।" अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 4

"जो प्रीत बुद्धि हैं, वे विजयन्ति और जो विप्रीत बुद्धि हैं, वे विनश्यन्ति हो जाते हैं। ... कितना जबरदस्त खजाना मिलता है, ऐसे बाप को थोड़ेही छोड़ना चाहिए। ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति।" सा.बाबा 24.8.05 रिवा.

"ज्ञान में तीन का महत्व है। त्रिकालदर्शी भी बनते हो, तीनों कालों को जानते हो या सिर्फ वर्तमान को ही जानते हो ? ... जो हो गया वह भी अच्छा, जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होने वाला वह और भी अच्छा होगा। ... जो विश्व का कल्याण करने वाला है, उसका अकल्याण हो नहीं सकता। यह पक्का निश्चय रखो।" अ.बापदादा 26.3.93 पार्टी 4

"बाप का डायरेक्शन मिला हुआ है - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा जानकर मुझे याद करो। ... वह बाप निराकार है, गीता का भगवान है, वही सर्व का सद्गतिदाता है, वह इस समय सद्गति करने का पार्ट बजा रहे हैं।... निश्चय हो, बाप से लव हो तो समझें हमको कदम-कदम श्रीमत पर चलना है।" सा.बाबा 14.4.06 रिवा.

"परमात्म की बात तो आंख बन्द कर माननी चाहिए, भल उसमें नुकसान हो वा फायदा हो। परन्तु ऐसे निश्चयबुद्धि हैं नहीं।... हमेशा समझो कि शिवबाबा ही कहते हैं, रेस्पान्सिबुल शिवबाबा है।... ड्रामा में नूँधा हुआ है, इस निश्चय वाला कभी हिलेगा नहीं।"

सा.बाबा 8.4.06 रिवा.

"निश्चय रखो कि अनेक बार के विजयी हैं।... आप हो बेफिकर बादशाह। जब बाप बैठा है तो बच्चे बेफिकर होते हैं। तो बेफिकर बादशाह बन गये हो।"

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 4

“इसमें निश्चय बड़ा अडोल चाहिए। शिवबाबा से तो कभी कोई भूल हो न सके, इनसे हो सकती है। तुम शिवबाबा की श्रीमत समझकर चलो तो उल्टा भी सुल्टा हो जायेगा।”

सा.बाबा 19.01.06 रिवा.

“तुमको बाप समझाते हैं तो तुम कितना रिफ्रेश होते हो। ... जो इन बातों को नहीं जानते, उनको भी समझाना चाहिए, ताकि वे भी तुम्हारे जैसा रिफ्रेश हो जायें। अपना फर्ज है सबको पैगाम देना। ... यही याद दिलाना है कि बाप और वर्से को याद करो।”

सा.बाबा 20.01.06 रिवा.

“शिवबाबा है रुहानी बाप और प्रजापिता ब्रह्मा है जिस्मानी बाप। ... शिवबाबा खुद कहते हैं - मैं इस ब्रह्मा तन में आता हूँ तब तो इस ब्राह्मण धर्म की स्थापना होती है। ... निश्चयबुद्धि बच्चे बाप की आज्ञा पर चलेंगे क्योंकि श्रीमत से ही श्रेष्ठ बन सकते हैं।”

सा.बाबा 3.5.06 रिवा.

“ऐसा बेहद का बाप, जिससे 21 जन्मों का वर्सा मिलता है, निश्चय हो जाये तो बहुत खुशी का नशा चढ़ जाये ... बेहद के बाप को याद करना है और फिर दूसरों को भी रास्ता बताना है। ... जब तक पूरा निश्चय नहीं होगा तब तक आगे बढ़ेगा नहीं। निश्चय वाला तो झट भागेगा कि ऐसे बाप से जाकर मिलें।” सा.बाबा 2.9.06 रिवा.

“मनुष्य एक्टर होकर इस बेहद ड्रामा के मुख्य एक्टर्स, डायरेक्टर और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं तो वे बेसमझ हैं। इस लिखने में कोई हर्जा नहीं है। एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल नहीं देना चाहिए। ... तुमको किसी बात में संशय नहीं आना चाहिए। अगर दिल में संशय आता तो सर्विस अच्छी रीति नहीं कर सकेंगे।“

सा.बाबा 22.8.06 रिवा.

“मुख्य बात है - जो यथार्थ निश्चय है, उसको पक्का करो। ... बाप साथ है तो किसी की हिम्मत नहीं है, जो हिला सके। निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी।”

अ.बापदादा 4.12.95

“आधा कल्प हार खाई, अभी विजय प्राप्त करने का समय है। ... विजय अपना जन्मसिद्ध अधिकार है। अधिकार का नशा वा खुशी रहती है ना! ... हर कर्म में विजय का निश्चय और नशा हो।” अ.बापदादा 10.1.94 पार्टी 1

श्रीमत और पुरुषार्थ

संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है अर्थात् पुरुषार्थ भी परमानन्दमय है अर्थात् ये पुरुषार्थी जीवन परमानन्दमय है।

पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थ हीनता ही मृत्यु है।

पुरुषार्थ क्या है और कैसे करना चाहिए, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है और ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ का सेम्पुल भी हमको दिखाया है। बाबा ने हमारे पुरुषार्थ के जो चार मुख्य सब्जेक्ट ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के बताये हैं, उनके विषय में क्या-क्या करना है और कैसे करना है, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

मुख्य पुरुषार्थ है ही देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, कर्मातीत बनने का और श्रेष्ठ कर्म करके भविष्य के लिए पुण्य का खाता जमा करने का। उसमें सफलता के लिए ही ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के विषय हैं।

"पुरुषार्थ शब्द का अर्थ क्या करते हो? इस रथ में रहते अपने को पुरुष अर्थात् आत्मा समझकर चलो, इसको कहते हैं पुरुषार्थी। ... ऐसा पुरुषार्थी कब हार नहीं खा सकता।... पुरुषार्थहीन हो जाते हैं तब हार होती है। ... शव को देखने से शिव को भूल जाते हैं।"

अ.बापदादा 3.5.72

पुरुषार्थ किसको कहा जाता है, यथार्थ पुरुषार्थ क्या है और कैसे किया जा सकता है? इसका ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है और परमात्मा ने ही यथार्थ पुरुषार्थ की विधि भी बताई, जिससे आत्मा पावन बनती है और सदा सुख-शान्ति को पाती है। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने को आत्मा समझ देह और देह की दुनिया को भूलकर एक परमात्मा को याद करना ही सच्चा पुरुषार्थ है, जिससे ही पुरुष अर्थात् आत्मा पावन बनती है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख को पाती है।

आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है इसलिए आध्यात्मिक उन्नति के लिए हर आत्मा स्वतन्त्र है और उसका व्यक्तिगत पुरुषार्थ है क्योंकि आध्यात्मिक पुरुषार्थ और पुरुषार्थ का आधार है - नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। इसमें न कोई आत्मा किसका साधक है और न ही बाधक। स्वर्ग नई दुनिया की स्थापना में आत्माओं का संगठित पुरुषार्थ होता है परन्तु परमात्मा और प्रकृति नियमानुसार कर्म और फल का अटल विधान है अर्थात् जो आत्मा अपने तन-मन-धन से नये विश्व की रचना में जितना और जैसा सहयोग करता है, उस अनुसार उसको फल अवश्य मिलता है। इसलिए ज्ञानी पुरुष कब राग-द्वेष के वशीभूत नहीं होते हैं।

“बच्चे, पहले-पहले यह प्रैक्टिस करो कि हम आत्मा हैं, न कि शरीर। जब अपने को आत्मा समझेंगे तब ही परमपिता परमात्मा को याद कर सकेंगे। ... जब ये प्रैक्टिस पक्की होगी कि मैं आत्मा हूँ तब ही रुहानी बाप की याद ठहरेगी।”

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

“अपने को पक्का-पक्का आत्मा समझेंगे तब बाप भी पक्का याद रहेगा। देहाभिमान होगा तो बाप को याद कर नहीं सकेंगे। ... यह देही-अभिमानी बनने की शिक्षा बाप अभी ही देते हैं, सतयुग में ये शिक्षा नहीं मिलती है।” सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

“विकार भी अधर्म है ना। सब अधर्मों का विनाश और एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने मुझे आना पड़ता है। भारत में जब सतयुग था तो एक ही धर्म था, वही धर्म फिर अधर्म बनता है। ... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। अपने को आत्मा निश्चय करना है।” सा.बाबा 1.9.04 रिवा.

“कितना बाबा की सर्विस में जीवन सफल करते हैं। ऐसे नहीं कि इस ब्रह्मा ने घरबार छोड़ा है, इसलिए नारायण बनते हैं। ये भी मेहनत करते हैं ना।... तुम बच्चों में जिसने जितना ज्ञान उठाया है, उस अनुसार ही सर्विस कर रहे हैं। मुख्य बात है ही गीता के भगवान की। ... यह बाबा भी पुरुषार्थी है, पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है।” सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

“जैसे इस शरीर को लेने और छोड़ने का अनुभव सभी को है वैसे ही जब चाहो तब शरीर का भान बिल्कुल छोड़कर अशरीरी बन जाना और जब चाहो तब शरीर का आधार लेकर कर्म करना - इस अनुभव को अब बढ़ाना है।” अ.बापदादा 22.1.70

“चरित्र को देखो और चेतन अर्थात् विचित्र को देखो। अगर ये दो बातें देखो तो देह की आकर्षण जो न चाहते हुए भी खींच लेती है, वह दूर हो जायेगी। ... व्यक्त में होते भी अव्यक्त में रहो। यह पहला पाठ ही भूल जायेंगे तो फिर ट्रेनिंग क्या करेंगे।”

अ.बापदादा 18.9.69

“साक्षी-दृष्टा होकर अपने को महीन रूप से स्व को चेक करो कि कहाँ ईश्वरीय प्रवृत्ति में सूक्ष्म में मैं और मेरापन तो नहीं छिपा हुआ है। ... अमृतवेले संगठित रूप में अब ऐसे सर्व आत्माओं को सर्व किरणें देने का अभ्यास करो। फिर जहाँ भी जाओ, वहाँ यह अभ्यास समय को, स्वयं को और सर्व को मुक्त कर मुक्ति के पात्र बनायेगा।”

अ.बापदादा का सन्देश 4.4.05 गुल्जार दादी के द्वारा

“बोलते हुए बोलने से परे की स्थिति हो सकती है? ... अब हो सकती है या कुछ मास वा कुछ वर्ष चाहिए? ... अगर हो सकती है तो अब से ही हो सकती है? प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल

साथ-साथ होना चाहिए।" अ.बापदादा 26.3.70

"कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध को यहाँ ही भोगने की इच्छा रखते हैं। ... प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो। ... सम्पूर्णता की समीपता की निशानी है सफलता।" अ.बापदादा 30.11.70

"ड्रामा बिगर बाप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। कई बच्चे कहते हैं - ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे, वे कभी ऊंच पद पा नहीं सकते। ... कल्प पहले मुआफिक ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता है। कोई ड्रामा पर ठहर जाते हैं कि जो ड्रामा में होगा। तो समझा जाता है कि इनकी तकदीर में नहीं है।" सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"84 जन्मों के संस्कार प्रबल हैं या इस सुहावने संगमयुग के एक सेकेण्ड में अशरीरी, वाणी से परे अपनी अनादि स्टेज का अनुभव प्रबल है ? क्या समझते हो ? ... ज्यादा आकर्षण कौन करता है, वाणी में आने का संस्कार या वाणी से परे होने का अनुभव ? वास्तव में यह एक सेकेण्ड का अनुभव बहुत समय के अनुभव का आधार है। ... श्रीमत है - एक सेकेण्ड में साक्षी अवस्था में स्थित हो जाओ। ... एक सेकण्ड में अपने को इस स्थिति में स्थित करने के पुरुषार्थ को ही तीव्र पुरुषार्थ कहा जाता है।" अ.बापदादा 4.5.73

"सिद्ध करने वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता। वास्तव में प्रसिद्ध होने वाला कोई भी बात को सिद्ध नहीं करेगा अर्थात् जिद्द करने वाला कभी भी प्रसिद्ध नहीं हो सकता। जिद्द करने वाला कभी सिद्धि को पा नहीं सकता। सिद्धि को पाने वाले, स्वयं को नम्रचित, निर्मान, हर बात में अपने आपको गुणग्राहक बनायेगा।" अ.बापदादा 16.5.74

"कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध को यहाँ ही भोगने की इच्छा रखते हैं। ... प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो। ... सम्पूर्णता की समीपता की निशानी है सफलता।" अ.बापदादा 30.11.70

"ड्रामा बिगर बाप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। कई बच्चे कहते हैं - ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे, वे कभी ऊंच पद पा नहीं सकते। ... कल्प पहले मुआफिक ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता है। कोई ड्रामा पर ठहर जाते हैं कि जो ड्रामा में होगा। तो समझा जाता है कि इनकी तकदीर में नहीं है।" सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"ड्रामा की लकीर खींची हुई है, नई लकीर नहीं लगा रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं सीधी होगी वा नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रारब्ध को सिर्फ बनाते हो क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है। ... हर संकल्प में दृढ़ता माना तपस्या।" अ.बापदादा 11.4.86

"अगर कोई रचना की नॉलेज में पूरा नॉलेजफुल नहीं हैं, कमजोर है तो स्थिति डगमग होती

है। रचता की भी पूरी नॉलेज को जानना है। जानना सिर्फ सुनने को नहीं कहते। जानना अर्थात् मानना और चलना। इसको कहते है नॉलेजफुल।" अ.बापदादा 20.8.71

"ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है। यह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व-कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा।" अ.बापदादा 3.2.74

"पुरुषार्थ में रुकावट के दो शब्द हैं - मैं और मेरा। इस मैं और मेरा को परिवर्तन करने की बापदादा ने बहुत सहज विधि बताई है। ... मैं अर्थात् मैं आत्मा हूँ और मेरा बोलते हो तो तो कहो मेरा बाबा। ... मैं शब्द आये तो फौरन आत्मिक स्वरूप सामने आये। यह अभ्यास करना, यह नेचर और नेचुरल बनाओ।" अ.बापदादा 21.10.05

"बाबा बहुत सहज करके समझाते हैं। इसमें हार्टफेल नहीं होना है। ... जितना हो सके, पुरुषार्थ करके ऊंच पद पाना है, मूँझना नहीं है। ड्रामा को जो कराना होगा, वह करायेगा - यह कहना भी रांग है। हमको पुरुषार्थ करना ही है।" सा.बाबा 28.10.05 रिवा.

बाबा ने कहा है - जो सोचते हैं हम अन्त में पुरुषार्थ कर लेंगे परन्तु यह एक भ्रान्ति है। अन्त में पुरुषार्थ नहीं हो सकता है, बहुत समय का किया हुआ पुरुषार्थ ही अन्त समय काम आता है।

Q. क्या विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानने वाली आत्मा पुरुषार्थहीन हो सकती है?

Q. ड्रामा पूर्व-निश्चित (Pre-ordained) होते हुए पुरुषार्थ का क्या महत्व है और अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है? क्या विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को जानने, समझने और निश्चय करने वाला पुरुषार्थहीन हो सकता है?

पुरुषार्थ का एक ही आयाम नहीं है परन्तु पुरुषार्थ के कई आयाम हैं, जिनके विषय में बाबा ने श्रीमत दी हुई है। अच्छे पुरुषार्थी को उन सब पर ध्यान रखना होगा। जैसे

अमृतवेले उठना - आंख खुलते ही बाबा को याद करके उठना।

अमृतवेला का योग - अमृतवेला केवल उठना ही नहीं, लेकिन पॉवरफुल योग भी हो। अमृतवेला केवल चार बजे ही नहीं बल्कि चार से 6 बजे के बीच योग का अच्छा अभ्यास भी अच्छा है। भले चार बजे का संगठन का योग विशेष है, वह विशेष बाबा की आज्ञा है।

प्रातः मुरली का क्लास - मुरली क्लास भी यथार्थ रीति श्रीमत अनुसार करना।

खान-पान में बाबा की याद - खान-पान बाबा की श्रीमत अनुसार हो।

सायंकाल का योग - सायं का योग भी यथार्थ रीति श्रीमत अनुसार करना।
रात को चार्ट की चेकिंग - रोज अपने चार्ट पर भी ध्यान रखना और रात को चेकिंग करना।
निद्रा - सोने से पहले अच्छी रीति बाबा को याद करके सोना।

"बाप कहते हैं - मीठे-माठे बच्चो, पुरुषार्थ कर पास हो जाओ, जो कुछ भी सजा नहीं खानी पड़े। ... चलते-फिरते, काम करते बाप को याद करने में ही कल्याण है।"

सा.बाबा 3.11.05 रिवा.

"डबल फॉरेनर्स सेवा और पुरुषार्थ दोनों तरफ अटेन्शन दे आगे बढ़ रहे हैं। बढ़ रहे हैं, इसकी मुबारक है लेकिन अभी आगे इस अटेन्शन में और भी तीव्रता लाओ। ... जो भी आये, किसी न किसी बात में प्रभावित होकर जाये और बार-बार आता ही रहे। आगे बढ़ता रहे। ... विजयी भव का वरदान चलन और चेहरे से दिखाई दे।"

अ.बापदादा 15.12.05 डबल विदेशी

"पहले तो तुमको यह निश्चय चाहिए कि हमको पढ़ाते कौन हैं। यह है श्री-श्री शिवबाबा की मत।... जिनकी तकदीर में होगा, उनकी बुद्धि में ही बैठेगा।... बाप को याद करने का आपही उपाय ढूँढना चाहिए।" सा.बाबा 31.1.06 रिवा.

"बच्चे जानते हैं - हमको ड्रामा पुरुषार्थ कराता है, हम जो पुरुषार्थ करते हैं, वह ड्रामा में नूँध है। पुरुषार्थ करना भी जरूर है। ड्रामा पर बैठ नहीं जाना है। हर बात में पुरुषार्थ जरूर करना होता है।" सा.बाबा 14.9.06 रिवा.

"जो तकदीर में होगा ... नहीं, इसको तमोप्रधान पुरुषार्थ कहा जाता है। सतोप्रधान पुरुषार्थ उसको कहेंगे जो बाप से पूरा वर्सा लेने की प्रतिज्ञा करते हैं। ... आठ घण्टा तुम इस ईश्वरीय सर्विस में दो ... अमृतवेले की याद अच्छा असर करती है। बाबा बहुत करके रात को जागते रहते हैं। सूक्ष्म सर्विस में थकावट नहीं होती। कमाई में तो खुशी होगी।"

सा.बाबा 20.6.06 रिवा.

"मेहनत का पुरुषार्थ नहीं करो, पुरुषार्थ भी मौज-मौज से करो। ... याद के बिना तो एक सेकेण्ड भी नहीं रहते हो। ... जब याद करना ही है तो क्यों नहीं जिससे फायदा है, प्राप्ति है, उसको याद करें। जिससे नुकसान है, उनको क्यों याद करें।... बस, "मेरा बाबा"।"

अ.बापदादा 31.12.94

"रोज सर्व प्राप्तियों में से कोई न कोई प्राप्ति को याद करो।... रोज एक नया टाइटल परिवर्तन करो। ... टाइटल की सीट पर सेट होकर बैठो।" अ.बापदादा 31.12.94

"समाप्ति के समय को लाने वाली आप विशेष आत्मायें निमित्त हो।... तो चैक करो - मुझ विशेष आत्मा की परिवर्तन की गति तीव्र रही वा कभी तीव्र और कभी मध्यम रही ? ... पुराने संसार की कोई आकर्षण रही ?... स्व परिवर्तन के पुरुषार्थ में कहाँ तक लाइट अर्थात् हल्के रहे ?" अ.बापदादा 25.1.94

"सबको माया से छुड़ाना बाप का काम है। आप स्व पुरुषार्थ में तीव्र बनो, तो आपके वायब्रेशन्स से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरों की माया सहज भाग जायेगी।"

अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और साक्षी स्थिति

साक्षी स्थिति जीवन की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है, जिसका गायन सभी शास्त्रों में है और सभी धर्म-पिताओं और धर्म-गुरुओं ने भी उसका वर्णन किया है और उसके लिए अपनी तरह का पुरुषार्थ बताया है परन्तु यथार्थ ये है कि अभी तक कोई साक्षी बन नहीं सका है। साक्षी स्थिति के लिए यथार्थ ज्ञान और उसके लिए पुरुषार्थ बाबा ने ही बताया है और उस स्थिति में स्थित होने के लिए श्रीमत भी दी है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान ही साक्षी स्थिति का एकमात्र आधार है।

साक्षी स्थिति जीवन की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है, जिसके तरफ प्राय: सभी महापुरुषों ने ध्यान खिंचवाया है और अपनी-अपनी तरह से उस स्थिति को बनाने का उपदेश भी दिया है परन्तु वह स्थिति सदा काल किसकी बनी नहीं है। साक्षी स्थिति कैसे बनें, उसके लिए किस सत्य ज्ञान आवश्यक है, उसका ज्ञान और विधि-विधान अभी बाबा ने बताया है, जिसके आधार पर ही साक्षी स्थिति सम्भव है। बाबा ने हमको जो विश्व-नाटक का ज्ञान दिया, कर्म के विधि-विधान का ज्ञान दिया है, उसके आधार पर ही साक्षी स्थिति बनती है। बाबा ने उसके श्रीमत भी दी है और उस स्थिति में स्थित होने के लिए पुरुषार्थ करने के लिए बाबा ने कहा है- जब तुम इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखो और जब साक्षी होकर देखेंगे, तब ही इसका यथार्थ सुख अनुभव कर सकेंगे।

"पहले के पेपर कुछ अलग हैं, लेकिन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखते हैं, ... लेकिन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है। वह तब होगी जब एक ही बाप की याद में सदा मग्न होंगे।" अ.बापदादा 19.9.72

"सहनशील ही ड्रामा की ढाल पर ठहर सकता है। सहनशीलता नहीं तो ड्रामा की ढाल को पकड़ना भी मुश्किल है। सहनशीलता वाला ही साक्षी बन सकता है और ड्रामा की ढाल को

पकड़ सकता है।" अ.बापदादा 8.06.71

"जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने लिए ग्लूकोज चढ़ाते है तो जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हैं तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती है। और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है।" अ.बापदादा 3.6.71

"जितना साक्षी रहेंगे, उतना साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् मूर्त बनेंगे। ... इसलिए ये अभ्यास करो अभी-अभी आधार लिया और अभी-अभी न्यारे हो गये। ... निर्माण बनने से प्रत्यक्ष प्रमाण बन सकेंगे। निर्माण बनने से विश्व का नव-निर्माण कर सकेंगे।"

अ.बापदादा 6.8.70

"तुम्हारे दिव्य नेत्र क्लीयर अर्थात् रुहानियत से सम्पूर्ण हों।... लाइट का विशेष गुण है अस्पष्ट को स्पष्ट करना। ... अगर मार्ग स्पष्ट नहीं होता है तो अपनी लाइट की परसेन्टेज की कमी है। ... ऐसे अपने को साक्षात्कार मूर्त बनाना है। लेकिन साक्षात्कार मूर्त वह बन सकेंगे, जो सदैव साक्षी स्थिति में स्थित होंगे। उनके नयन प्रोजेक्टर का काम करेंगे।"

अ.बापदादा 2.2.70

"जैसे बाप-दादा को साकार, आकार और निराकार अनुभव करते हो, क्या वैसे ही अपने को भी बाप-समान साकार होते हुए आकारी और निराकारी सदा अनुभव करते हो ? यह अनुभव निरन्तर होने से इस साकारी तन और इस पुरानी दुनिया से स्वत: ही उपराम हो जावेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसेकि ऊपर-ऊपर से साक्षी हो इस पुरानी दुनिया को खेल सदृश्य देख रहे हैं।" अ.बापदादा 3.2.74

"बाप के समान बनने वालों की भी यह विशेषता है कि बाहर से स्मृति स्वरुप और अन्दर से समर्थी स्वरुप जितना ही साकार स्वरुप में स्मृति-स्वरुप उतना ही अन्दर समर्थी स्वरुप हो। दोनों का साथ-साथ बैलेन्स हो ... साथ-साथ साक्षीपन की स्टेज भी हो।"

अ.बापदादा 18.1.76

"आगे चल ड्रामा क्या दिखलाता है सो साक्षी होकर देखना है। पहले से ही बाबा साक्षात्कार नहीं करायेंगे कि यह होगा। फिर तो आर्टीफिशियल हो जाये। यह बड़ी समझ की बातें हैं।"

सा.बाबा 24.10.69 रिवा.

"हर एक आत्मा अपना-अपना पार्ट बजा रही है। तुम साक्षी होकर देखते रहो। सारा नाटक तुमको साक्षी होकर देखना है और एक्ट भी करना है। ... बाप कहते हैं - तुम जो कुछ देखते

हो, यह सब विनाशी है। अभी तुमको तो घर जाना है। ... ये सब काग-विष्टा के समान सुख है।““ सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

“जब नाम ही है वैरायटी ड्रामा। ... तो उसमें वैरायटी संस्कार व वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या? ... साक्षीपन की सीट पर सेट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे।”

अ.बापदादा 8.7.73

“तुमको कोई आंसू न आना चाहिए, सब साक्षी होकर देखना चाहिए। जानते हो ड्रामा है। इसमें रोने की क्या दरकार। पास्ट-प्रेजेन्ट का कब विचार भी न करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सभी को रास्ता बताते रहो।” सा.बाबा 25.9.71 रिवा.

“आत्मा तो कभी विनाश नहीं होती। आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, वह कभी विनाश नहीं हो सकता। ... यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इस ड्रामा की आयु 5 हजार वर्ष है। सेकेण्ड भी कम-जास्ती नहीं हो सकता। ... देही-अभिमानी होकर साक्षी होकर खेल को देखना है। ... परमात्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। जो नूँध है, वह बदल नहीं सकता।”

सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

“साक्षीपन के तख्त की मुख्य निशानी...वह सदैव हर कदम, हर संकल्प में बापदादा को सदा साथी अनुभव करेंगे, ...दूसरा वह बाप के दिल-तख्तनशीन होगा। वह सपूत होगा अर्थात् बापदादा को मनसा-वाचा-कर्मणा व तन-मन-धन सब बातों में फॉलो करने का सबूत देगा। तीसरा है विश्व-महाराजन बन विश्व के राज्य के तख्तनशीन बनने का। वह न सिर्फ कर्मेन्द्रिय-जीत लेकिन वह साथ-साथ प्रकृतिजीत भी होगा।” अ.बापदादा 11.7.74

“बाप कहते हैं - आत्माभिमानी बनो। कोई मरता है तो भी कोई ख्याल नहीं। आत्मा में जो पार्ट की नूँध है, उसको हम साक्षी होकर देखते हैं। ... इसमें हम कर ही क्या सकते हैं।”

सा.बाबा 28.9.05 रिवा.

“खेल में भिन्न-भिन्न खेल देखते रहते हो। साक्षी होकर खेल देखने में मज़ा आता है ना!... साक्षी होकर खेल देखो तो वह अपने विधि का खेल और वह अपने विधि का खेल।... कोई भी आकर्षण अन्त समय आकर्षित न करे, इसको कहा जाता है सहज चोला बदली करना।... पहले से ही किनारे छूटे हुए हों।... सिवाए मंजिल के और कोई लगाव नहीं हो।”

अ.बापदादा 25.11.93 दो कुमारियों का समर्पण और आलराउण्डर दादी ने शरीर छोड़ा

“सदा साक्षीपन के आसन और बेफिकर बादशाह के सिंहासन पर बैठकर सब खेल देख रहे हो ना। इस ब्राह्मण जीवन में घबराने का तो स्वप्न में भी संकल्प नहीं उठ सकता। ... समय

प्रमाण आने-जाने में व किसी वस्तु के मिलने में कुछ खींचातान हो परन्तु मन में संकल्पों की खींचातान में नहीं आना।” अ.बापदादा 18.1.91 सर्व बच्चों प्रति सन्देश

“सतयुग की राजधानी की जो रस्म-रिवाज़ होगी, वही फिर रिपीट होगी। ... जैसे राज्य किया होगा, वैसे करेंगे। वह साक्षी होकर देखना है। अभी उसका चिन्तन करने की दरकार नहीं है।” सा.बाबा 18.8.06 रिवा.

“दिव्य जन्म पर यही वायदा करते हो - एक बाप दूसरा न कोई। ... तो स्वप्न में भी मन और कहाँ जा नहीं सकता। ऐसे पक्के हो ना। ... सेवा के साथी बनो लेकिन साक्षी होकर साथी बनो। साक्षीपन भूलकर, सिर्फ साथी बनने में बाप भूल जाता है। इसलिए साक्षी बनकर पार्ट बजाने की प्रैक्टिस करो।” अ.बापदादा 13.12.89

“इस संगमयुग में विशेष बापदादा की देन सन्तुष्टता है। एक सन्तुष्टता की विशेषता और विशेषताओं को भी सहज अपने समीप लाती है। ... यह माया का वा प्रकृति का भी एक शो है, जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। ... सन्तुष्टता की विशेषता को सदा इमर्ज रूप में स्मृति में रखो।” अ.बापदादा 3.4.94

“साक्षीपन का तख्त कभी छोड़ो नहीं।... जब तख्तनशीन रहने के संस्कार अब से ही डालेंगे तब ही विश्व के तख्त पर भी बैठेंगे।... संस्कार सब अभी भरने हैं, फिर वही भरे हुए संस्कार सतयुग में कार्य करेंगे। रॉयल्टी के संस्कार अभी से भरने हैं।“ अ.बापदादा 23.2.97

ज्ञान

यथार्थ ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर देते हैं, जो उस ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा करते हैं, वे सदा खुशी में रहते हैं और उनकी सदा चढ़ती कला होती है। इसलिए ज्ञान की धारणा कैसे हो, उसके लिए सदा ही श्रीमत देते हैं।

“कर्मों के हिसाब-किताब से छूटना है। तुम्हें अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए, बाबा हमको ऐसी सतयुगी दुनिया में ले जाते हैं। ... ये सब बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करना है। बाप के साथ बड़ा लव रहना चाहिए। परमपिता परमात्मा आकर हमको पढ़ाते हैं।”

सा.बाबा 17.5.06 रिवा.

“सेवा के लक्ष्य में ज्ञानी-योगी तू आत्माओं के तरफ अटेन्शन ज्यादा चाहिए। ऐसी आत्माओं की वृद्धि आवश्यक है। ... भावुक नहीं बनो, ज्ञानी भी बनो। प्रकृति के भी ज्ञानी बनो, सिर्फ आत्मा का ज्ञान नहीं। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का भी ज्ञान। उसमें ड्रामा भी आ जाता है।” अ.बापदादा 1.4.92

"ज्ञान रत्न भी हैं, ज्ञान रोशनी भी है, ज्ञान शक्ति भी है।... ज्ञान पढ़ाई भी है, ज्ञान लड़ाई के श्रेष्ठ शस्त्र भी हैं।... शस्त्र को समय प्रमाण यूज नहीं करो तो बेकार हो जाता है। ज्ञान शस्त्र भी है। अगर मायाजीत बनने के समय शस्त्र को कार्य में नहीं लगाया तो उसकी वेल्यू को कम कर दिया।" अ.बापदादा 10.1.88

"शिवलिंग की पूजा करते हैं। जब ज्ञान है तो तुम पूजा नहीं करते हो क्योंकि वह चेतन्य सम्मुख में है, उनको ही तुम याद करते हो।... तुमको इन सब बातों को अच्छी रीति समझकर फिर समझाना है।" सा.बाबा 27.10.05 रिवा.

"बच्चों को ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिल रहा है... इन बातों को अच्छी रीति समझो। तुम्हारे सिवाए यह ज्ञान और कोई में है नहीं।... वह अभी थोड़ेही दिखा देंगे। जब होगा तब उसको भी साक्षी होकर देखेंगे।" सा.बाबा 22.7.06 रिवा.

"साक्षी स्थिति के सिंहासन पर बैठ जाओ और अपने आपको ही जज करो। अपना जज बनना, दूसरे का जज नहीं बनना। दूसरे का जज बनना तो सभी को आता है ... साक्षीपन के सिंहासन पर अपने आपका निर्णय बहुत अच्छा होता।" अ.बापदादा 19.1.95

श्रीमत और गीता ज्ञान

अजोनित्या शाश्वतो अयं हन्यते न हन्यमाने शरीरे।

निश्चयबुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति

....

स्वधर्मे निधनम् श्रेयष्कर, परधर्म भयावहा।

स्वधर्म और परधर्म का राज़ भी बाप ने समझाया है और परधर्म अर्थात् देह के धर्म को भूलकर अपने स्वधर्म अर्थात् आत्मा के धर्म अर्थात् शान्ति-प्रेम-आनन्द, दया-क्षमा, भाई-भाई की दृष्टि आदि में स्थित हो क्योंकि परधर्म आत्मा के दुख का कारण है और स्वधर्म आत्मा के सुख-शान्ति-आनन्द का मूलाधार है। बाबा ने भी जो श्रीमत दी है, उसका मूल तन्त यही है कि देह के धर्म अर्थात् देहाभिमान को भूल कर आत्मा के धर्म अर्थात् स्वधर्म में टिको अर्थात् देही-अभिमानी बनो।

"पहले रचता बाप को समझो, फिर रचना का राज़ समझना है। ... मुख्य बात है गीता का भगवान कौन ? तुम्हारी विजय भी इनसे ही होनी है।" सा.बाबा 12.9.05 रिवा.

"गाया भी जाता है - धर्म में ही ताकत है। भारतवासियों को यह पता नहीं है कि हमारा धर्म क्या है।... तुमको तो अपने स्वधर्म में टिकना है और बाप को याद करना है।...देही-अभिमानी बनें तो नशा चढ़े। जितना तुम देही-अभिमानी होंगे, उतना बल आयेगा।"

सा.बाबा 11.8.05 रिवा.

"गीता में है - मामेकम् याद करो और देह के सर्व सम्बन्ध भूलकर अपने को आत्मा समझो। ... पहले तो बताओ कि बाप कहते हैं - देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। हम आत्मा अशरीरी आई थी, अब फिर अशरीरी होकर जाना है।"

सा.बाबा 4.11.05 रिवा.

"गीता का कितना मान है। बाप ही आकर राजयोग सिखलायेंगे। ... बाप कहते हैं और संग बुद्धि का योग तोड, एक मुझ संग जोड़ना है।... भगवानोवाच्य, जब समझें, तब बुद्धि में बैठे।"

सा.बाबा 29.8.06 रिवा.

श्रीमत और यथार्थ गीता-ज्ञान

विद्या ददाति विनयम, फलों से लदा वृक्ष झुक जाता है, सम्पन्नता निर्मानता को लाती है, बाबा ने कहा है- निर्मान बनो निर्माण करो। बाबा स्वयं भी कहते हैं - I am your obediant servant.

"गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो। ... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना। ... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।"

अ.बापदादा 18.1.87

"परमपिता परमात्मा शिव है गीता का भगवान। वही ज्ञान का सागर है। मुख्य है सर्वशास्त्र शिरोमणि गीता। ... बाप कहते हैं - देह के सब सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो। ...प्रदर्शनी में इतने ढेर चित्रों की दरकार नहीं है। नम्बरवन चित्र है गीता का भगवान कौन ?"

सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

आत्मा जो है, जैसी है वैसा उसे जानना, मानना और उस स्वरूप में स्थित होना।
परमात्मा जो है, जैसा है वैसा उसे जानना, मानना और वैसा जानकर याद करना।
विश्व-नाटक जो है, जैसा है वैसा उसे जानना, मानना और उस अनुसार चलना अर्थात् इस विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी और हू-ब-हू पुनरावृत्ति के विधि-विधान को जानकर

इसके हर दृश्य को साक्षी होकर इसे देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना। संकल्प मात्र भी क्यों-क्या-कैसे का प्रश्न न उठना।

कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान को जानकर राग-द्वेष दोनों से मुक्त रहना और श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होना।

आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है, अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा सर्व दुख-दर्द से मुक्त परमानन्द का अनुभव करती है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को बुद्धि में रख इस विश्व-नाटक को देखो तो ये परम-सुखमय है और परमात्मा की साथ से अपने सर्व विकर्मों के खाते को खत्म कर अपने घर में चले जाओ, जो स्थिति परम-शान्ति मय है। ये ब्राह्मण जीवन परमानन्दमय है।

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर यह रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।" सा.बाबा 10.1.69

"सीढ़ी उतरना होता है। ज्ञान, भक्ति फिर है भक्ति का वैराग्य। जब ज्ञान मिलता है तब ही भक्ति का वैराग्य होता है। ... अब बेहद की दुनिया का सन्यास करना है।ठ

सा.बाबा 9.9.05 रिवा.

"बाप बिगर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ कोई समझा न सके। आत्माभिमानी बनने में ही बच्चों को मेहनत होती है। ... अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ... पहले अपने को आत्मा समझेंगे तब ही बाप को याद कर सकेंगे।" सा.बाबा 8.10.05 रिवा.

"इस ज्ञान को समझने के लिए बुद्धि बड़ी अच्छी पवित्र चाहिए, वह तब होगी जब याद की यात्रा में मस्त रहेंगे। ... बाप को बहुत याद करना है और पढ़ना भी पूरा है।"

सा.बाबा 8.10.05 रिवा.

"देह का अहंकार छोड़ देही-अभिमानी बन तुमको बाप को याद करना है। ... बाप कहते हैं- मेरा पार्ट ही संगम पर है, इसलिए इसको कल्याणकारी युग कहा जाता है।"

सा.बाबा 16.11.05 रिवा.

"गीता वालों को मुख्य एक ही बात समझाओ कि भगवान ऊंच से ऊंच को ही कहा जाता है। वह है निराकार। कोई भी देहधारी मनुष्य को भगवान नहीं कह सकते।"

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

"अभी भगवान आकर पढ़ाते हैं और राजयोग सिखाते हैं। गीता में लिखा है - भगवानुवाच

श्रीमत भगवत गीता। श्रीमत माना श्रेष्ठ मत। ... गीता है मुख्य। गीता से ही देवी-देवता धर्म स्थापन हुआ। ... पहले-पहले बुद्धि में आना चाहिए कि निराकार परमपिता परमात्मा इस तन द्वारा हमको पढ़ाते हैं।" सा.बाबा 1.4.06 रिवा.

"बाबा कहते हैं - सबसे ओपिनियन लेते रहो कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है, गीता का भगवान शिव है, न कि श्रीकृष्ण। पहले तो पूछो गीता का भगवान किसको कहा जाता है। भगवान निराकार को कहेंगे या साकार को ?" सा.बाबा 18.02.06 रिवा.

"एक गीता ही है, जिसमें श्रीमत भगवत गीता लिखा हुआ है। और कोई शास्त्र में श्रीमत नहीं है। ... अभी तुम बाप द्वारा डायरेक्ट सुनते हो। वह है ज्ञान का सागर।"

सा.बाबा 15.7.06 रिवा.

"वे सब हैं विनाश काले विप्रीत बुद्धि यादव सम्प्रदाय ... अभी कोई भी देहधारी मनुष्य से प्रीत नहीं लगानी है। ... उनकी है विनाशकाले विप्रित बुद्धि और तुम्हारी है प्रीतबुद्धि। ... सारे विश्व पर तुम विजय पाते हो। यह अच्छी रीति याद रखना है।"

सा.बाबा 30.6.06 रिवा.

"गीता का कनेक्शन महाभारत लड़ाई से है। तुम गीता सुनकर राज्य पाते हो और महाभारत लड़ाई लगती है, सफाई के लिए। ... गीता कितनी छोटी है क्योंकि बाप सुनाते ही हैं एक बात कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और सृष्टि-चक्र को समझो। ... बीज छोटा होता है, उससे झाड़ कितना बड़ा निकलता है।" सा.बाबा 2.10.06 रिवा.

श्रीमत और परमात्मा अर्थात् श्री-श्री शिवबाबा / श्रीमत और पिताश्री ब्रह्मा बाबा / श्रीमत और परमात्म-मिलन

गीता को ही श्रीमद्भगवत गीता कहा गया है और उसमें ही भगवानोवाच्य है अर्थात् श्री-श्री शिवबाबा की मत श्रीमत है। शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के मुख कमल से सम्मुख में जो राय दी है या अव्यक्त रूप में देते हैं और साकार मुरलियों और अव्यक्त मुरलियों में जो राय देते हैं वही श्रीमत है, उसके आधार पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार वास्तविकता को समझकर कृत्य-अकृत्य का निर्णय करना ही श्रीमत है। दूसरे कोई भी भाई-बहनें उस श्रीमत की स्मृति ही दिला सकते हैं, परन्तु उनकी मत को श्रीमत नहीं कहा जा सकता है। इसके लिए अव्यक्त बाबा ने भी एक मुरली में कहा है।

ब्रह्मा बाबा की मत भी मशहूर है क्योंकि ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा की श्रीमत को पूरा-पूरा धारण किया है और बाप समान बना है। इसलिए ब्रह्मा को भी भग्यविधाता कहा जाता है। परमात्मा आकर श्रीमत देकर हम आत्माओं पुरुषोत्तम बनने का रास्ता भी बताते हैं और अपना राज़ भी बताते हैं। उनके गुण-कर्तव्य क्या है और हम कैसे उनको फॉलो करें, जिससे हम भी उनके समान कर्मातीत, निराकार स्थिति को प्राप्त करें क्योंकि सभी आत्माओं को निराकार स्थिति में ही घर में जाना है। बाबा की श्रीमत है - बच्चे मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा जानकर याद करो।

शिवबाबा निराकार है, वह ब्रह्मा तन में आकर ही श्रीमत देते हैं। ब्रह्मा बाबा भी उनकी मत पर चलते हैं और उनकी मत पर चलकर सम्पूर्ण बनें।

"शिवबाबा सर्वात्माओं का बाप है, उनसे ही वर्सा लेना है। उनको याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे, इसलिए शिवबाबा को ही याद करना है ... शान्तिधाम को याद नहीं करना है, बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

"ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा की श्रीमत पर हम फिर से ज्ञान और योगबल से अपना स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। बाप है सर्वशक्तिवान, उनसे बल मिलता है। ... विनाश के आसार भी देखते हो। यह वही महाभारत लड़ाई है तो जरूर भगवान भी होगा।"

सा.बाबा 19.8.06 रिवा.

"घड़ी-घड़ी यह बुद्धि में आना चाहिए कि हमको बेहद का बाप मिला है, वह कल्प-कल्प वर्सा देते हैं। अब उनकी मत पर चलना है।" सा.बाबा 11.8.06 रिवा.

"तुम जानते हो - बाबा हमको श्रीमत दे रहे हैं। श्रीमत है ही भगवान की। ... फिर कलायें कम होती जाती हैं। जैसे चन्द्रमा की कलायें कम होते-होते बाकी एकदम पतली लकीर बन जाती है। सारा गुम नहीं होता। अब तुम्हारी यह है बेहद की बात।"

सा.बाबा 22.7.06 रिवा.

"हर बात में बाप की श्रीमत प्रमाण "जी हजूर, जी हाजिर" करते रहो। बच्चों का "जी हजूर" करना और बाप का बच्चों के आगे "जी हाजिर" होना। ... टीचर्स को तो ड्रामा अनुसार बहुत भाग्य मिला हुआ है। ... बाप ने तो स्वतन्त्र पंछी, उड़ता पंछी बनाया।"

अ.बापदादा 19.11.89

"जो भी डायरेक्शन निकलते हैं, सदैव समझो शिवबाबा के हैं तो तुम सेफ रहेंगे। ... उनके साथ कितना रिगार्ड से, रॉयल्टी से चलना चाहिए।" सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"अब मिलती है तुमको ईश्वरीय मत। आसुरी मत से हम उतरती कला में जाते हैं, ईश्वरीय मत से चढ़ती कला में जाते हैं। ... श्रीमत है ही भगवान की। ऊंच ते ऊंच भगवान ही है।"

सा.बाबा 29.9.05 रिवा.

"बाप है मुख्य एक्टर, क्रियेटर, डायरेक्टर। वह डायरेक्शन भी देते हैं। श्रीमत देते हैं। ... शरीर बिगर तो आत्मा बोल न सके। ... शिवबाबा पहले-पहले आकर गीता सुनाते हैं अर्थात् विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं।" सा.बाबा 29.9.05 रिवा.

"शिवबाबा कहते - ऐसे-ऐसे करो, इनको भी राय देते हैं। ... सिवाए याद के कर्मेन्द्रियां वश होना मुश्किल है। याद से ही बेड़ा पार होना है। यह शिवबाबा कहते हैं या ब्रह्मा बाबा कहते हैं, यह समझना भी मुश्किल हो जाता है। इसमें बड़ी महीन बुद्धि चाहिए।"

सा.बाबा 27.9.05 रिवा.

"जो जैसा कर्म करेगा, उसको ऐसा फल मिलेगा। अच्छा कर्म ही करना है। समझ नहीं सकते तो उसके लिए श्रीमत लेनी है। ... शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा रेस्पाण्ड करते हैं।"

सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

"मैं थोड़ेही एक-एक के अन्दर को बैठ जानूँगा। यह तो हो न सके। मैं आता ही हूँ सिर्फ राय देने। पावन नहीं बनेंगे तो तुम्हारा ही नुकसान है। ... अन्दर खायेगा कि हमने कितना फरमान का उलंघन किया।" सा.बाबा 19.10.05 रिवा.

"बाप पुरुषार्थ भी कराते हैं और बेफिकर भी रहते हैं। समझते हैं ड्रामा की नूँध ऐसी है। ... सब ड्रामा में इकट्ठे थोड़ेही आयेंगे। आयेंगे फिर भी नम्बरवार ही। ड्रामा में कोई एक्टर बिगर समय थोड़ेही स्टेज पर आ जायेंगे।" सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"कहते - परमात्मा अन्तर्यामी है। जो जैसा पुरुषार्थ करेंगे ऐसा फल पायेंगे। मुझे जानने की क्या दरकार है। जो करता है, उसकी सजा भी खुद पायेंगे।"

सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"बाप आकर ज्ञान का वर्सा देते हैं। ज्ञान कोई वहाँ साथ नहीं चलता है। ... तुम बच्चे बाबा की श्रीमत से राज्य स्थापन करते हो और दैवी गुण धारण करते हो, इसलिए तुम्हारा गायन-पूजन है।... आपही पूज्य, आपही पुजारी तुम्हारे लिए है। बाप तो एवर पूज्य है।"

सा.बाबा 4.10.05 रिवा.

"बाप जानते हैं - मैं गरीब निवाज़ हूँ परन्तु साथ-साथ यह भी समझता हूँ कि मैं गरीब निवाज़ कोई इन भीलों के लिए नहीं हूँ। ... मैं हूँ ही पतित पावन। ... बाप गरीब निवाज़ है तो कहेंगे ऐसी चीजें देवें, जिससे वे सदा के लिए साहूकार बन जायें। बाकी कपड़ा आदि देना तो कॉमन

बात है। ... उनको अनाथ से सनाथ बना दें।" सा.बाबा 2.12.05 रिवा.

"अनन्य बच्चे भी भूल जाते हैं कि इनमें शिवबाबा आते हैं। कोई भी डायरेक्शन देते हैं तो समझते नहीं कि यह शिवबाबा का डायरेक्शन है। ... बाप जो है, जैसा है, उनको जानने में बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।" सा.बाबा 2.12.05 रिवा.

"हम प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियां श्रीमत पर देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। ... ब्रह्मा की मत नहीं, श्रीमत है ही परमपिता परमात्मा शिव की, जो सबका बाप है।"

सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

"बाबा के पास राय लेने आते हैं - स्थूल बातों की राय लेते हैं ... बाबा कहते हैं - यह दुनियावी बातें बाप के पास नहीं ले आओ। हाँ, कहाँ दिलशिकस्त न हो जायें तो कुछ न कुछ आथत देकर बता देते हैं। यह मेरा धन्धा नहीं है। मेरा तो ईश्वरीय धन्धा है, तुमको विश्व का मालिक बनने का रास्ता बताने का।" सा.बाबा 10.01.06 रिवा.

"इस बाबा को गाली दी तो शिवबाबा भी झट सुन लेगा। ब्रह्मा से नहीं पढ़े तो शिवबाबा से भी पढ़ न सके। ब्रह्मा बिगर तो शिवबाबा भी सुन न सके, इसलिए कहते हैं साकार से जाकर पूछो।" सा.बाबा 4.5.06 रिवा.

"सदा ब्रह्मा बाप को सामने रखो और यह तीन वरदान (निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी) याद रखो और फॉलो करो। ये अन्तिम वरदान बहुत शक्तिशाली हैं। इन तीन वरदानों को अगर सदा प्रैक्टिकल में स्मृति में रखते तो बाप के दिल तख्त और राज्य तख्त के अधिकारी जरूर बनेंगे।" अ.बापदादा 13.12.89

"पालनहार परमात्मा कैसे है! ब्रह्मा माँ की पालना भी मिल रही है और बाप की श्रेष्ठ मत पर योग्य आत्मायें बन गये हो। बाप बच्चे को योग्य बनाता है और माँ शक्तिशाली बनाती है।"

अ.बापदादा 13.12.89

"सर्व ब्राह्मण आत्माओं में इस लक्ष्य (योगयुक्त और युक्तियुक्त) में नम्बरवन समीप कौन है? ब्रह्मा बाप। ब्रह्मा बाप ने क्या विधि अपनाई जो इस सिद्ध को प्राप्त किया? विधि है - सदा अपने को सारथी और साक्षी समझकर चलना।" अ.बापदादा 9.12.89

"तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा से योग।... आत्मा को कहते हैं तुमको इन आंखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा इनके द्वारा तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं।" सा.बाबा 28.6.06 रिवा.

"कितना वण्डरफुल खेल है। कभी किसी बात में संशय नहीं होना चाहिए। बापदादा में जरा भी संशय नहीं लाना चाहिए। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है। नहीं तो माया नुकसान करा देती

है।" सा.बाबा 29.6.06 रिवा.

"पतितों को पावन बनाने वाला एक बाप ही है, जिसकी श्रीमत पर तुम चल रहे हो। प्रजापिता ब्रह्मा की मत भी मशहूर है। ... शिवबाबा नामीग्रामी है, वह जो मत देंगे, जो कुछ करेंगे वह राइट होगा। इस ब्रह्मा को भी मत शिवबाबा देते कि यह करो।"

सा.बाबा 29.6.06 रिवा.

"श्रीमत पर अपने को देखना है कि हमारी बाप के साथ कितनी प्रीत है? ... बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं कि कैसे बाबा से बातें करता हूँ। बाबा कैसा वण्डरफुल यह ड्रामा है, आप कैसे आकर पतित से पावन बनाते हो।" सा.बाबा 26.6.06 रिवा.

"यह है पढ़ाई। पहले तो यह निश्चय चाहिए कि हमको पढ़ाते कौन हैं ... बाप हमको श्रीमत दे रहे हैं। परमात्मा की मत से ही हम श्रेष्ठ बनते हैं। जिनकी तकदीर में होगा, उनकी बुद्धि में ही यह बैठेगा। ... बच्चों को पढ़ाई का बहुत नशा रहना चाहिए।"

सा.बाबा 21.9.06 रिवा.

"अभी यहाँ प्रेम मिला, शान्ति अनुभव हुई, ब्रह्मा बाप की कमाल है - यहाँ तक आये हैं लेकिन ब्रह्मा बाप में परम-आत्मा की कमाल है - वहाँ तक पहुँचाना है। ... ऐसे ज्ञान के समीप लाओ जो वे परमात्म-ज्ञान को स्वयं समझकर स्पष्ट करें। मेहनत है इसमें। ... समाप्ति तब होगी जब सबको परमात्म पहचान मिले।" अ.बापदादा 16.2.96

"ज्ञान सागर बाप की श्रीमत पर चलना है, उनकी श्रीमत नामीग्रामी है। श्री-श्री की श्रीमत से तुम श्रेष्ठ बनते हो। ... बाप की महिमा दिल से धारण करने से नशा चढ़ेगा।"

सा.बाबा 31.5.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा इस समय तक कोई ने मुझे जाना नहीं हैं। पिछाड़ी में तुम पूरी रीति जानेंगे। ... आगे चलकर पूरा पहचानेंगे तब पूरा श्रीमत पर चलेंगे।"

सा.बाबा 12.10.06 रिवा.

"परमधाम में हैं ही निराकारी आत्मायें, बिन्दी। बिन्दी, बिन्दी से तो मिल न सके। तो शिवबाबा से कैसे मिलेंगे। इसलिए यहाँ समझाया जाता है - हे आत्माओं, तुम अपने आत्मा समझ बुद्धि में यह रखो कि हम शिवबाबा से मिलते हैं। ... शिवबाबा इसमें आकर ज्ञान सुनाते हैं।"

सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

श्रीमत और आत्मा

श्रीमत और आत्मा एवं शरीर का भेद

परमात्मा ने आत्मा का यथार्थ ज्ञान दिया है और आत्मा शरीर से अलग है। दोनों में क्या सम्बन्ध है, उसका भी राज़ बताया है। बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चे, तुम इस साकार देह से अलग हो, यह देह तो आत्मा एक वस्त्र है। जैसे इस देह पर हम कोई वस्त्र धारण करते और जब चाहते तब उसको उतार देते या बदल लेते, ऐसे ही ये अभ्यास करो - जब चाहें तब वस्त्र के समान देह को धारण करें और जब चाहें तब उसको उतार कर अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायें। देह और आत्मा का सम्बन्ध रथ और रथी के रूप में भी बताया है। इसका वर्णन भगवत् गीता में भी किया गया है।

बाबा ने आत्मा के गुणों का, नाम-रूप, गुण-कर्तव्य का ज्ञान दिया है और श्रीमत दी है कि तुम उन गुणों की अनुभूति में स्थित रहो। सदा अपने को शान्त स्वरूप आत्मा समझो। बाबा आत्मा के स्वरूप का ज्ञान दिया है और देह में उसकी स्थिति का ज्ञान देकर श्रीमत दी है - अपने को ज्योति स्वरूप आत्मा भृकुटी में विराजमान है, ऐसे स्वरूप में देखने का अभ्यास करो। जिसका अभ्यास हठयोगी भी यथार्थ ज्ञान न होते हुए भी भृकुटी को आज्ञा-चक्र मानकर मन-बुद्धि को भृकुटी में एकाग्र करते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण वह सदा काल नहीं रहता और समयान्तर में वे उससे विमुख हो जाते हैं।

बाबा ने कहा है - जैसे वस्त्र को उतारने और पहनने में कोई असुविधा नहीं होती, वस्त्र को अपने से अलग समझते, ऐसे ही इस शरीर को भी एक वस्त्र समझो और इसका अभ्यास करो।

"तुम आत्माओं का घर है मुक्तिधाम अर्थात् निराकारी दुनिया। ... उसको कहेंगे स्वीट साइलेन्स होम। वहाँ आत्मायें सुख-दुख दोनों से न्यारी रहती हैं। हम आत्मायें स्वीट साइलेन्स होम की रहने वाली हैं, यहाँ पार्ट बजाने आते हैं - यह बात अच्छी रीति पक्का करना है।"

सा.बाबा 17.11.05 रिवा.

"शरीर द्वारा कर्म कराने वाली मैं आत्मा हूँ, वह नहीं भूले। ... शरीर से काम कराते हुए भी कराने वाली मैं आत्मा अलग हूँ, यह प्रैक्टिकस करो तो कभी भी बॉडी कान्शस की बातों में नीचे-ऊपर नहीं होंगे।" अ.बापदादा 27.2.96

श्रीमत और देह में रहते, देह से न्यारी स्थिति

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति अति न्यारी, प्यारी और परमानन्दमय है, जो सर्व पुरुषार्थ और प्राप्तियों का आधार है। उस स्थिति में आत्मा को जो आनन्द प्राप्त होता है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ भी प्राप्त नहीं हो सकता है। वह स्थिति क्या होती है, कैसी होती है, उसका देह, तत्वों और अन्य आत्माओं पर क्या प्रभाव पड़ता है और उस स्थिति का भविष्य जीवन से क्या सम्बन्ध है, कैसे वह हमारे भविष्य जीवन को प्रभावित करती है, उस सबका ज्ञान परमात्मा ने दिया है और उस स्थिति में स्थित रहने के लिए भी श्रीमत दी है। उस स्थिति में स्थित होने में क्या-क्या बाधायें आयेंगी, उनको कैसे पार करें, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति परमानन्दमय है, इसलिए बाबा सदा ही इस अभ्यास पर जोर देते हैं परन्तु काम, क्रोध आदि विकारों से युक्त संकल्प-विकल्प उसमें स्थित नहीं होने देते हैं। इस देह से न्यारी स्थिति आत्मा के सर्व दुखों और समस्याओं से मुक्त करने वाली है और सर्व प्राप्तियों का मूलाधार है। देह से न्यारी स्थिति अर्थात् देह में रहते देह के सर्व धर्म भूल जायें और आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाये। इस स्थिति को कैसे बनायें, इसके लिए बाबा ने अनेक प्रकार से श्रीमत दी है।

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति ही फरिश्ता स्थिति है क्योंकि इस जगत में रहते कोई भी आत्मा स्थूल व सूक्ष्म शरीर के बिना रह नहीं सकती। इसलिए अभी हम देह से न्यारे होकर पार्ट बजायेंगे, वही फरिश्ता स्वरूप है। उसके लिए अपने मूल स्वरूप को याद कर उसमें स्थित होने का पुरुषार्थ करना है।

"बाप बच्चों को समझाते हैं - देह सहित देह के सब सम्बन्ध भूल अपने को आत्मा समझो। यह बहुत जरूरी बात है, जो इस संगमयुग पर बाप ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

"समझा वे सकेंगे, जो याद की यात्रा में होंगे। ... नॉलेज है सोर्स ऑफ इन्कम। योग को बल कहा जाता है। दोनों रात-दिन का फर्क है। ... अशरीरी होकर बैठो तो कितने पावन बन जायें।" सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

"नम्बरवन पुरुषार्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। ... खुद भी याद में बैठे और औरों को भी बिठायें। ... अपने को शरीर समझना सबसे कड़ी बीमारी है।"

सा.बाबा 21.11.05 रिवा.

"समान बच्चों की विशेषता है कि वे सदा निविघ्न, निर्विकल्प, निर्मान और निर्मल होंगे। ऐसी आत्मायें सदा स्वतन्त्र होती हैं ... अपने से पूछो ऐसी बेहद की स्वतन्त्र आत्मा बने हैं! पहली स्वतन्त्रता है - देहभान से स्वतन्त्र। जब चाहे तब देह का आधार लें, जब चाहें तब देह से न्यारा हो जायें।" अ.बापदादा 30.11.05

"अपने को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा देखने की प्रेक्टिस डालो, इस युक्ति से तुम्हारी यह बीमारी निकल जायेगी। ... जितना तुम देही-अभिमानी होंगे, उतना तुम्हारे में कशिश आयेगी। अभी इतना इस देह और पुरानी दुनिया से पूरा वैराग्य नहीं आया है।"

सा.बाबा 6.11.04 रिवा.

"अभी तुमको ज्ञान मिलता है। ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटते हैं। यह ज्ञान और कोई को नहीं है। मनुष्य यह थोड़ेही समझते हैं - हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं, हमको शरीर से डिटैच होकर बैठना है। यहाँ तुमको बल मिलता है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ बाप की याद में बैठ सकते हो। कैसे अपने को आत्मा समझ डिटैच होकर बैठना है, यह बाप ही समझाते हैं।" सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

"अशरीरी बनने की शिक्षा कोई जानते ही नहीं हैं। ... तुम बच्चे जब यहाँ बैठते हो तो इस धुन में बैठो कि हम सब आत्मायें अशरीरी हैं।" सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

"जब रुहानी चित्र व तस्वीर आकर्षणमय बनायेंगे तो अनेक आत्मायें चलते-फिरते भी देह-अभिमान से निकल देही-अभिमानी बन जायेंगी। जब स्थूल चित्रों में इतनी आकर्षण है, तो क्या आप रुहानी चैतन्य चित्रों में उतनी रुहानी आकर्षण नहीं है ?" अ.बापदादा 18.7.74

"मैं तुमको सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। बाप गॉरन्टी तब करते हैं जब तुम यह गॉरन्टी करते हो कि बाबा हम आपको याद करते रहेंगे। इतना याद करो जो शरीर का भान भी न रहे।"

सा.बाबा 10.8.05 रिवा.

"ऐसे नहीं कि जिस समय याद में बैठो, उस समय अशरीरी स्थिति का अनुभव करो। नहीं, चलते-फिरते बीच-बीच में यह अभ्यास पक्का करो। आत्मा का स्वरूप ज्यादा याद होना चाहिए। ... "मेरा बाबा" यह भूले नहीं।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 2

"सदा आकारी और निराकारी स्थिति का अभ्यास करना है। जब चाहें तब उस स्थिति में स्थित हो जायें। इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े ... तो सूक्ष्म रीति से चेक करो कि लगाव अंश मात्र भी नहीं हो।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 3

"शिवबाबा की याद में रहने से हमारे जो भी विकर्म हैं, वे भस्म हो जायेंगे और हम विकर्माजीत

बन जायेंगे। आत्मा की ड्रिल है - शरीर को भूल जाना अर्थात् यह शरीर है ही नहीं। ... यहाँ बैठे कोई अपने मित्र-सम्बन्धियों, धन्धे आदि को याद करते हैं तो वे वायुमण्डल में विघ्न डालते हैं।" सा.बाबा 21.7.06 रिवा.

"अब तुमको बाप की श्रीमत मिलती है। इसमें आशीर्वाद वा रहम आदि कुछ भी नहीं मांगना है। सिर्फ बाप को याद करना है और कोई बात पूछने करने की भी दरकार नहीं है।... अपने को आत्म समझ देह सहित जो कुछ देखते हो, वह सब भूल जाओ।"

सा.बाबा 24.8.06 रिवा.

"चाहते हो सेकण्ड में अशरीरी हो जायें, उसका फाउण्डेशन यह बेहद की वैराग्य वृत्ति है।... ऐसा अभ्यास चाहिए जो जब चाहें, जहाँ चाहे, जैसे चाहें वहाँ सेकेण्ड में स्थित हो जायें।... विल पॉवर चाहिए। जो चाहें वह प्रैक्टिकल में कर सकें।" अ.बापदादा 3.4.96

"एक सेकण्ड में अशरीरी बनना - यह पाठ पक्का है ? अभी-अभी विस्तार, अभी-अभी सार में समा जाओ। अच्छा, इस अभ्यास को सदा साथ रखना।" अ.बापदादा 22.3.96

श्रीमत और विश्व-नाटक अर्थात् सृष्टि-चक्र

"अब इसमें नाराज़ होने की तो बात ही नहीं है। ... तुम भी ड्रामा के वश हो, ड्रामानुसार बाप भी आया हुआ है। ... यह बेहद का नाटक है, जिसको अच्छी रीति समझना है। ... यह ज्ञान तुमको वहाँ नहीं रहेगा।" सा.बाबा 3.8.06 रिवा.

हम गम्भीरता से विचार करें तो बाबा ने हमको ये जो विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, यह परमात्मा का हम आत्माओं को सर्वश्रेष्ठ उपहार है। विश्व-नाटक के सत्य ज्ञान और उससे निर्मित धारणाओं से ही आत्मा की चढ़ती कला होती है। यदि हम विचार करें तो सतयुग के आदि में सर्वात्मायें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं, फिर भी आत्माओं की और जड़ तत्वों सहित सारे विश्व की उतरती कला होती है। चढ़ती कला इस संगम पर ही होती है।

बाबा ने विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हमको दिया है और उस ज्ञान को समझकर हमारी स्थिति कैसे श्रेष्ठ बनें, उसके लिए भी श्रीमत दी है अर्थात् विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से अनेकानेक दिव्य गुणों की धारणायें हमारे जीवन में कैसे आ जाती हैं, वह ज्ञान हमारे पुरुषार्थ में कैसे और कहाँ तक सहयोगी है, उसको किस दृष्टिकोण से देखें, जिससे वह हमारे पुरुषार्थ में सहयोगी बनें, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

बाबा ने कहा है - कितना सुन्दर, वण्डरफुल नाटक है, जो रचता बाप को अति प्रिय है और जब रचता बाप को प्रिय है तो रचता के बच्चों को भी अवश्य ही प्रिय होगा। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चे, इस विश्व-नाटक के ज्ञान को अच्छी रीति समझने का पुरुषार्थ करो। इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझ जायेंगे तो कब घबरायेंगे नहीं, दुखी नहीं होंगे और इस विश्व-नाटक का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे क्योंकि ये विश्व-नाटक सुख-दुख का खेल होते हुए भी परम-सुखदायी है अर्थात् जो इसके राज को जानता है और अपने स्वरूप में स्थित होकर इसे देखता है और पार्ट बजाता है, वह इसके परम सुख को अनुभव करता है। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुम अपने को सदा एक्टर समझो और हम ड्रामा की स्टेज पर पार्ट बजा रहे हैं, ऐसे समझो। सभी आत्माओं के साथ एक्टर के समान ही व्यवहार करो। बाबा ने अभी जो सृष्टि-चक्र का राज़ बताया है, उसके लिए बाबा ने कहा है - जो इस राज़ को जान लेता है, वह कब नाराज़ नहीं हो सकता। बाप की श्रीमत है यदि कहाँ कुछ फील होता है, नाराज़ी आती है तो चेक करो ड्रामा के राज़ को जानने में कहाँ कमी है और उसे पूरा करो और सदा राज़ी रहो तथा सबको राज़ी करो। जो स्वयं राज़ी होगा, उससे सब राज़ी अवश्य होंगे और वह सर्व को राज़ी अवश्य करेगा।

"आगे चल ड्रामा क्या दिखलाता है, सो साक्षी होकर देखना है। बाबा पहले से ही साक्षात्कार नहीं करायेंगेकि यह-यह होगा। फिर तो ड्रामा ही आर्टिफिशियल हो जाये। यह बड़ी समझने की बातें हैं।" सा.बाबा 4.11.05 रिवा.

"यह बना-बनाया खेल है ना। यह बेहद का बाप समझाते हैं, उनको ही सत्य कहा जाता है। सत्य बातें तुम संगम पर ही सुनते हो, फिर तुम सतयुग में जाते हो। ... तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में उतना ही टाइम लगता है, जितना टाइम बाप यहाँ रहते हैं।"

सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

"बाप को तो गम और खुशी की बात ही नहीं। यह ड्रामा बना हुआ है। तुमको भी कोई गम नहीं होना चाहिए। बाप मिला और क्या चाहिए। ... सतयुग में तो ज्ञान की बात ही नहीं। यहाँ तुमको बेहद का बाप मिला है तो तुमको स्वर्ग से भी जास्ती खुशी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

"यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इसमें जीतते भी हैं और फिर हारते भी हैं। अब यह चक्र पूरा हुआ, अभी हमको घर जाना है। ... बाबा हमको रावण पर जीत पहनाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें सवेरे-सवेरे उ"कर अपने साथ करनी चाहिए।" सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

"अभी तुम जानते हो - यह भी खेल बना हुआ है। आधा कल्प है ज्ञान का दिन, आधा कल्प

है भक्ति की रात। तुम बच्चों की बुद्धि में सीढ़ी की नॉलेज जरूर होना चाहिए।... यह भी ड्रामा में नूँध है। जिनका पार्ट होगा, वे कैसे भी आ जायेंगे। इसमें डरने की बात ही नहीं।"

सा.बाबा 12.6.06 रिवा.

"यह बहुत मजे का खेल है। खेल हमेशा मजे का ही होता है। सुख भी होता है तो दुख भी होता है। इस बेहद के खेल को तुम बच्चे ही जानते हो। इसमें रोने-पीटने आदि की बात ही नहीं है। ... हम आत्मायें इसके एक्टर्स हैं। ... तुम बच्चे जानते हो - यह ड्रामा कैसे फिरता है। इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बाप ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

"हीरो पार्ट बजाने के लिए पहले अपने को जीरो समझना है। ... हीरो पार्ट बजाने के लिए विशेष दो शक्तियां चाहिए। एक रूलिंग पॉवर और दूसरी कन्ट्रोलिंग पॉवर। ... जब चाहो तब एक सेकेण्ड में न्यारे हो जाओ अर्थात् संकल्प करते ही स्वरूप में स्थित हो जाये।"

अ.बापदादा 11.10.75

"हद के एक्टर्स जब हद के अन्दर अपने एक्ट करते दिखाई देते हैं तो लाइट के कारण अति सुन्दर स्वरूप दिखाई देते हैं...ऐसे ही बेहद ड्रामा के आप हीरो-हीरोइन एक्टर्स, अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट करने से क्या दिखाई देंगे? अलौकिक फरिश्ते! ... वे हर आत्मा को स्वत: ही अपनी तरफ आकर्षित करेंगे।" अ.बापदादा 5.9.75

"यह सृष्टि एक खेल है। ... अगर इसको खेल समझो तो खेल में कभी परेशान नहीं होंगे, हँसते रहेंगे। ये परीक्षायें भी एक खेल हैं। ... उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात् खेल नूँधा हुआ है, यह स्मृति आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी।"

अ.बापदादा 8.7.73

"मंथन के लिए तो बहुत खजाना है, इसमें मन को बिजी रखना है। समय की रफ्तार तेज है या आपकी रफ्तार तेज है? ... समय की कौनसी तेजी देखते हो? समय बीती को बीती करने में तेज है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो कमियां हैं, उनमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकण्ड में उन्नति को लाते जाओ। ... क्रियेटर के बच्चे क्रियेशन से ढीले क्यों? इसलिए एक बात का ध्यान रहे कि जैसे ड्रामा में हर सेकण्ड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गई, वह फिर रिपीट नहीं होगी। पांच हजार साल बाद ही रिपीट होगी।" अ.बापदादा 26.1.70

"यह है बड़ा वण्डरफुल ड्रामा। अभी तुम बच्चे आदि से लेकर अन्त तक सब जानते हो। ... बाप के पास सारा ज्ञान है, तुम्हारे पास भी होना चाहिए। ... यह साक्षात्कार आदि सब ड्रामा

में नूँध हैं, इसमें तुमको मूँझने की दरकार नहीं है।"   सा.बाबा 28.3.05

"यह समझानी जो अभी तुमको दे रहा हूँ, यह हर कल्प देता आया हूँ।... यह एक बेहद का नाटक है। इसमें कोई की निन्दा आदि की बात नहीं है। अनादि ड्रामा बना हुआ है, इसमें फर्क कुछ भी नहीं पड़ सकता। यह अनादि बना-बनाया बड़ा अच्छा नाटक है, जिसको बाप समझाते हैं। इस ड्रामा के राज़ को समझने से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो।"

सा.बाबा 4.10.04 रिवा.

"मनुष्य से देवता और देवता से मनुष्य कैसे बनते हैं - यह राज़ बाप ने तुमको समझाया है।... इस अविनाशी ड्रामा के राज़ को जो ठीक रीति जानते हैं, वे सदा हर्षित रहते हैं।... हू-ब-हू सारी एक्ट फिर से रिपीट हो रही है। इसमें संशय कर नहीं सकते।"

सा.बाबा 17.12.04 रिवा.

"हमको सभी बात पसन्द है क्योंकि यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। हार-जीत का खेल है। जो होता है सो ठीक। क्रियेटर को ड्रामा पसन्द तो होगा ना। जरूर क्रियेटर के बच्चों का भी ड्रामा में पार्ट है। ड्रामा सारा अच्छा है। ड्रामा को बुरा क्यों कहेंगे, ड्रामा का राज बुद्धि में है।... बहुत सुन्दर नाटक बना हुआ है। नाटक में सुख-दुख सभी पार्ट को देख खुशी होती है। यह भी बेहद का खेल बड़ा फाइन बना हुआ है। सो तो पसन्द ही आना चाहिए।... बहुत फर्स्ट क्लास खेल है। इसको जानने से बुद्धि पुर हो गई है। हम इस खेल को जान गये तो समझते हैं मजा ही मजा है। ... सारा दिन बुद्धि में यह ख्याल चलना चाहिए - कैसा वण्डरफुल खेल है।... इस वण्डरफुल ड्रामा को भी नहीं जानते। जो अच्छी रीति जानते हैं और समझते हैं, उनको जरूर खुशी का पारा चढ़ता होगा। जो बहुत दान करते हैं उनको नशा भी होगा ना।"

सा.बाबा 21.4.72 रिवा.

"यह बना-बनाया नाटक है, हम समझते हैं कि ये सभी एक्टर्स हैं। निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा ही करनी पड़े। अपना ही नाटक है, हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर तुम खुश होते हो, निन्दा तो नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फन्दे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।"

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

"विधि और विधान दोनों के साथ ही विधाता की याद आती है। अगर विधाता याद रहे तो विधि और विधान दोनों साथ स्मृति में रहेगा। ... जब विधि और विधान दोनो साथ रहेंगे तब सफलता गले का हार बन जायेगी।"   अ.बापदादा 7.6.70

"बाप कहते हैं तुमने वेद-शास्त्र तो बहुत सुने हैं। अभी तुम यह सुनो और जज करो कि शास्त्र

राइट हैं या गुरु लोग राइट हैं या जो बाप सुनाते हैं वह राइट है?... सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनकर फिर औरों को सुनाते हो। इसे ही शंख-ध्वनि कहा जाता है।"

सा.बाबा 9.12.04 रिवा.

"बाप किसी को दोष नहीं देते हैं। वह यह तो जानते हैं - तुमको पावन से पतित बनना ही है और हमको पतित से पावन बनाना ही है। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें कोई की निन्दा की बात नहीं। ... बाप तुम बच्चों को कितना समझदार बनाते हैं।"

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

"स्वदर्शन-चक्र फिराना है। सबको वापस ले जाने वाला तो बाप ही है। ऐसे-ऐसे ख्यालात में रहना चाहिए। रात को सोते समय भी बुद्धि में यह नॉलेज घूमती रहे। सुबह उठते भी यही नॉलेज याद रहे। ... रात को बाबा की याद का नियम बनायेंगे तो तुमको खुशी का पारा चढ़ा रहेगा।" सा.बाबा 4.12.04 रिवा.

"अन्दर विचार चलना चाहिए - अभी हम संगमयुग पर हैं, पावन बन रहे हैं, बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यह घड़ी-घड़ी सुमिरण करना है। ... तुम ईश्वरीय मिशन हो ना। ईश्वरीय मिशन का काम है पहले तो शूद्र से ब्राह्मण और ब्राह्मण से देवता बनाना। ... तुमको सर्व आत्माओं का कल्याण करने का शौक होना चाहिए।" सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

"तुम्हारा नाम ही स्वदर्शन चक्रधारी। तो उसका चिन्तन चलना चाहिए। स्वदर्शन चक्र कब रुकता थोड़ेही है। तुम चेतन्य लाइट हाउस हो। ... बहुतों की बुद्धि में ये बातें रहती नहीं हैं, जो उनका चिन्तन करें।" सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

"आत्मा की ही दुर्गति और सद्गति होती है। ये सभी बातें विचार-सागर मंथन करने की हैं। ... बाप कहते हैं - बच्चे बुद्धि को सदा बिजी रखो तो सदा सेफ रहेंगे। इसको ही स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है।" सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

"ये सब चित्र (झाड़, त्रिमूर्ति, गोला) बाप ने दिव्य दृष्टि द्वारा बनवाये हैं। ये सब श्रीमत से बने हुए हैं, किसी मनुष्य मत से नहीं बने हैं। ये सब भी खलास हो जायेंगे, कुछ भी इनका नाम निशान नहीं रहेगा। नई दुनिया में सब कुछ नया होगा।" सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"बच्चों को समझाया गया है- आत्मा भिन्न नाम-रूप धारण करते नीचे उतरती है। जब से काम चिता पर चढ़ती है तब से काला बनती है। ... मुख्य बात है पवित्रता की।"

सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

"यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। ड्रामानुसार उनको इस समय जाना ही था, इसमें कर ही क्या सकते हैं। जरा भी दुखी होने की बात नहीं। यह है योगबल की अवस्था। लॉ कहता है कि जरा

भी धक्का नहीं आना चाहिए। सब एक्टर्स हैं, अपना-अपना पार्ट बजाते रहते हैं। ... ऐसी अवस्था वाले ही जाकर निर्मोही राजा बनते हैं।" सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

"अगर फौरन फल नहीं निकलता है तो अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं। सभी फल फौरन नहीं मिलते हैं। कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से भी नहीं निकलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है। ... कोई नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज का फल निकालेगी।" अ.बापदादा 11.7.71

"तुम बच्चों को अभी यह ज्ञान मिला है। तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है, वे ही अब पढ़ेंगे। जिसने जो पुरुषार्थ किया होगा, वही करने लगेंगे और वैसा ही पद भी पायेंगे। ... हर एक्टर को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है - किस समय किसको क्या पार्ट बजाना है। यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, जिसका राज़ बाप समझाते हैं।"

सा.बाबा 29.12.04 रिवा.

"अगर कोई भी बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह फाइनल स्टेज नहीं है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए, अच्छा ऐसा हुआ! अगर ऐसा संकल्प ड्रामा के ज्ञान होने पर भी उत्पन्न होता है तो इसको भी अंश मात्र की हलचल का रुप कहेंगे।... जो हुआ वह अच्छा हुआ, वह होना ही चाहिए, यह है फाइनल स्टेज।" अ.बापदादा 15.4.74

"बाप कहते हैं - मैं ब्रह्मा-मुख कमल द्वारा रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बताता हूँ। ड्रामा में क्या है - यह मनुष्यों की बुद्धि में आना चाहिए। यह है बेहद का ड्रामा, हम एक्टर्स हैं। ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बुद्धि में रहना चाहिए।"

सा.बाबा 22.11.71 रिवा.

"विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुद्धि में रहेगा तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। "नथिंग न्यू" यह है फाइनल स्टेज।"

अ.बापदादा 15.4.74

"सभी तरफ अति दिखाई पड़ रही है। अन्त की निशानी अति है। तो जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे ही सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रुप में आयेंगे।" अ.बापदादा 15.4.74

"मैं संगमयुग पर ही आता हूँ। मैं न सतयुग में आता और न कलियुग में आता हूँ। दोनों के बीच में आता हूँ। ... बाप ने सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज दी है। यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है। ... यह बेहद की नॉलेज तो जरूर बुद्धि में होनी चाहिए।"

सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

"चित्र आदि दिव्य दृष्टि से निकाले हुए हैं फिर बाप खुद ही आकर करेक्ट करते हैं। यह भी बाप ने समझाया है कि जो सेकण्ड पास होता है, उसको ड्रामा समझते चलो, मूझो मत। पास्ट हुआ .. टाइम पास्ट हो गया फिर वह बातें याद क्यों करते हो। ड्रामा को भूल जाते हो। बीती को चितवो नहीं, आगे की कोई आश न रखो। बाप को याद करने से तुम्हारी सभी आशायें पूरी हो जायेंगी।" सा.बाबा 15.11.69 रिवा.

"बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। तमोप्रधान बनने में आधा कल्प लगा है, बल्कि सारा ही कल्प कहें क्योंकि कला तो सतयुग से ही कम होती जाती है।"

सा.बाबा 25.7.05 रिवा.

"बाप समझानी देते हैं - यह दुनिया का नाटक कैसे चलता है। ... बाप क्रियेटर भी है, तुम बच्चों को क्रियेट करते करते हैं, अपना बनाते हैं। डायरेक्टर बन डायरेक्शन भी देते हैं। श्रीमत देते हैं और एक्ट भी करते हैं। ... एक्टर होकर ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर और मुख्य एक्टर को न जाना तो क्या ठहरा!" सा.बाबा 30.9.05 रिवा.

"बाबा ने हर एक बात का राज़ समझाया है। ... यह राजधानी स्थापन हो रही है। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसको विस्तार से समझना है। ... इस शरीर पर तुम लाइट का ताज नहीं दे सकते।" सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

"आत्मा इस शरीर रूपी खिलौने की चाबी है। तुम हो चैतन्य खिलौने। ... आत्मा इस शरीर द्वारा सुनती है, कर्म करती है - यह पक्की आदत डालनी है। ... जैसे ड्रामा में कठपुतलियां नाचती हैं, वैसे ही तुम आत्मायें भी कठपुतलियों मिसल हो। ... तुम समझते हो अभी श्रीमत से हमको चाबी मिल रही है।" सा.बाबा 6.12.05 रिवा.

"सदा अमृतवेले स्वयं को तीन बिन्दियों का तिलक देते हो?... जैसी स्मृति, वैसी स्थिति होती है। अगर स्मृति श्रेष्ठ है तो स्थिति भी श्रेष्ठ होगी। ... सिर्फ आत्मा की स्मृति नहीं लीकिन आत्मा के साथ बाप की स्मृति है ही है और बाप के साथ ड्रामा की स्मृति भी अति आवश्यक है। अगर ड्रामा का ज्ञान नहीं है तो भी कर्म में नीचे-ऊपर होंगे। ... ड्रामा का ज्ञान है तो अचल-अडोल हैं, नहीं तो हलचल में आ जाते हैं।" अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 3

"दुनिया यह नहीं जानती कि यह विनाश तो अच्छा है ना। पीस के लिए प्रयत्न करते हैं परन्तु आखरीन विनाश तो होना ही है।... विनाश तो सबका होना है। इसमें डरने की बात नहीं। ... एक चक्र पूरा होता है, फिर नया चक्र लगाना है। इस चक्र को जानना चाहिए ना।"

सा.बाबा 17.01.06 रिवा.

"निराकारी दुनिया में सभी आत्माओं का एक सिजरा बना हुआ है, उनको इन्कारपोरियल ट्री कहा जाता है। यह है कारपोरियल ट्री। निराकारी दुनिया से सबको नम्बरवार आना है। आत्मायें यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। सभी आत्मायें इस ड्रामा के एक्टर्स हैं। आत्मा अविनाशी है, उसमें पार्ट भी अविनाशी है। ड्रामा कब बना, यह कहा नहीं जा सकता। ... यह ड्रामा का खेल है, जिसको बुद्धि में धारण करके औरों को भी कराना है।"

सा.बाबा 29.4.06 रिवा.

"बाबा राय देते हैं कि घड़ी-घड़ी चक्र के सामने जाकर बैठो तो बुद्धि में सारा ज्ञान आ जायेगा ... आपेही अपने को लायक बनाने के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए।"

सा.बाबा 12.8.06 रिवा.

"कोशिश करते, ऐसे बॉम्बस बनायें जो मनुष्य फट से मर जायें। बॉम्बस की इम्प्रूवमेन्ट करते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। ड्रामा का बना-बनाया खेल है। कल्प-कल्प ऐसे विनाश होता है। सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा। ... तुम्हारी बुद्धि में यह चक्र फिरना चाहिए। अभी तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो, जिससे फिर जाकर चक्रवर्ती राजा बनेंगे।"

सा.बाबा 11.7.06 रिवा.

"जब कोई से मिलते हो तो यह समझाना पड़े कि यह बना-बनाया ड्रामा है। ... कल्प पहले तुम ऐसे ही बैठे होंगे। पत्ता हिला ड्रामा अनुसार। ऐसे नहीं कि पत्ते-पत्ते को परमात्मा हिलाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें समझकर फिर सबको समझाओ।" सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

"मनुष्य एक्टर होकर इस बेहद ड्रामा के मुख्य एक्टर्स, डायरेक्टर और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं तो वे बेसमझ हैं। इस लिखने में कोई हर्जा नहीं है। एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल नहीं देना चाहिए। ... तुमको किसी बात में संशय नहीं आना चाहिए। अगर दिल में संशय आता तो सर्विस अच्छी रीति नहीं कर सकेंगे।"

सा.बाबा 22.8.06 रिवा.

"सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज बुद्धि में रखनी है और सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह सबको समझाना है। ... इन लक्ष्मी-नारायण को भी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं है।" सा.बाबा 31.5.06 रिवा.

"स्वदर्शन चक्रधारी होकर रहो। उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि सारी नॉलेज रहे। ... यह बना-बनाया ड्रामा है, जो फिरता ही रहता है। यह कह नहीं सकते कि भगवान ने इसे कब, कैसे और कहाँ बैठ बनाया ? ... पूछा जाता है - ड्रामा सर्वशक्तिवान है या ईश्वर ? ... बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ।" सा.बाबा 11.5.06 रिवा.

"पहले से थोड़ेही सब बता देंगे। फिर तो आर्टीफिशियल हो जाये। अचानक कोई इत्तेफाक आदि होते रहेंगे, उसको कहेंगे ड्रामा। ऐसे नहीं कि यह नहीं होना चाहिए। मम्मा को तो पिछाड़ी तक रहना था।... ड्रामा में जो हुआ सो राइट। ... ईश्वर ने बोला या इसने बोला, सब ड्रामा में था।" सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

श्रीमत और विश्व-नाटक की हू-ब-हू पुनरावृत्ति

बाबा ने विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान दिया है और उस ज्ञान को धारण कर यथार्थ पुरुषार्थ की भी श्रीमत दी है। पुनरावृत्ति के ज्ञान को जीवन में कैसे उपयोग करें, उसके लिए भी श्रीमत दी है, जिससे हमारा पुरुषार्थ और तीव्र हो।

"बाप आकर सारे सृष्टि चक्र की नॉलेज देते हैं। ... यह चक्र फिरता रहता है। ये बड़ी सूक्ष्म बातें हैं समझने की। यह बना-बनाया खेल है। ... देही-अभिमानी बनें तब खुशी का पारा चढ़े। ... बाबा से कोई बात पूछते हैं तो बाबा कहते हैं - ड्रामा में जो कुछ बताने का है, वह बता देते हैं। ड्रामा अनुसार जो उत्तर मिलना था सो मिल गया, बस उस पर चल पड़ना है।"

सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुद्धि में रहेगा तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। "नथिंग न्यू" यह है फाइनल स्टेज।"

अ.बापदादा 15.4.74

"बाप ने तो सारा ज्ञान दे दिया है। जिसने जितना कल्प पहले धारण किया था, उतना ही अभी करेंगे। पुरुषार्थ करना है, कर्म बिगर तो कोई रह न सके। ... कल्प-कल्प एक ही बार बाबा बतलाते हैं कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है।" सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

"यह खेल चलता ही रहता है। ड्रामा शूट होता जाता है। यह ड्रामा एवर न्यू है। यह कभी पुराना नहीं होता है।... यह बेहद का अविनाशी ड्रामा है, इसमें सब आत्मायें अविनाशी पार्टधारी हैं।... ड्रामा को फिर रिपीट करना है, इसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता है।"

सा.बाबा 28.10.05 रिवा.

"अपने को अशरीरी समझो, अभी तुमको बाप को याद करते-करते बाप के पास जाना है।... एकान्त में बैठकर ऐसे अपने साथ मेहनत करनी है। ... जितना हो सके ऐसे बैठकर विचार करो। अन्दर में यह चिन्तन चलना चाहिए। बाहर में कुछ बोलना नहीं है।"

सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

"ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करो तो इससे तुमको खुशी भी रहेगी। इसमें एकान्त भी जरूर

चाहिए। एक की याद में शरीर का अन्त होता है, उसको कहा जाता है एकान्त। ... सन्यासी भी ऐसे बैठे-बैठे ब्रह्म की याद में शरीर छोड़ देते हैं।" सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

"यह सब ड्रामा अनुसार चलता रहता है। भोग आदि यह सब ड्रामा में नूँध है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जो एक्ट होती है, वह सब ड्रामा में नूँध है। ... जो ज्ञानी बच्चे हैं, वे कभी साक्षात्कार आदि की बातों में खुश नहीं होंगे।" सा.बाबा 30.5.05 रिवा.

"बाप जो समझाते हैं, उसकी एक-एक बात में बहुत ही गुह्य राज भरा हुआ है, जो समझना और समझाना बहुत जरूरी है। ... यह सृष्टि का चक्र फिरता है, ऐसा कहते भी हैं परन्तु कैसे फिरता है, हू-ब-हू फिरता है या कोई चेन्ज होती है, यह किसको पता नहीं है।"

सा.बाबा 9.11.05 रिवा.

"पास्ट इज़ पास्ट। यह तो ड्रामा में नूँध है, सृष्टि को सतोप्रधान बनना ही है। यह ड्रामा की भावी है। ईश्वर की भावी नहीं, ड्रामा की भावी ऐसी बनी हुई है। ... जब रात पूरी हो दिन शुरू होता है तब ही मैं आता हूँ।" सा.बाबा 19.7.06 रिवा.

"मनुष्य रचता और रचना को नहीं जानते, यह भी ड्रामा में नूँध है। गायन है - बनी बनाई ... जो अनहोनी होये। होनी बदल नहीं सकती। आज जो हो रहा है, वह 5 हजार वर्ष फिर होगा।... अखबार में एकदम ऐसा लिख दो। फिर वे भल आकर पूछें। लिखने में कोई हर्जा नहीं है ... यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है।"

सा.बाबा 20.9.06 रिवा.

श्रीमत और विश्व-नाटक की संरचना

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, इसलिए इसकी रचना का तो प्रश्न ही नहीं उठता है अर्थात् न इसकी कभी रचना हुई है और न ही विनाश होने वाला है परन्तु इसमें हर पल-विपल परिवर्तन अवश्य होता है। इसलिए जगत को परिवर्तनशील कहा जाता है। इस सतत परिवर्तन के आधार पर ही ये विश्व नाटक नित्य नया प्रतीत होता है।

परमात्मा सृष्टि का तो रचता नहीं है परन्तु वह स्वर्ग का रचता अवश्य है। कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर वह आकर सतयुग की स्थापना करता है। अभी वही पुरुषोत्तम संगमयुग का समय चल रहा है, जब परमात्मा पुरानी दुनिया में नई दुनिया की कलम लगा रहे हैं, आत्माओं को ब्रह्मा तन से एडॉप्ट कर ज्ञान देकर पावन बना रहे हैं। इस प्रकार हम देखें तो परमात्मा विश्व-नाटक की संरचना नहीं करता लेकिन नये चक्र की संरचना अवश्य करता है अर्थात् पुराने से नया बनाता है। तमोप्रधानता की चरम सीमा और सतोप्रधानता की चरम सीमा

ही इसके आदि-अन्त की पहचान है, जिसको स्वर्ग और नर्क के नाम से भी जाना जाता है।
"हर आत्मा अपना-अपना 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। एक सेकेण्ड का पार्ट दूसरे सेकेण्ड से मिल न सके। ... अब बाप को रचता कहा जाता है परन्तु ऐसे नहीं कि वह ड्रामा का कोई रचता है। परमात्मा को रचता कहते अर्थात् वे इस समय आकर सतयुग को रचते हैं।" सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

"कोई कहते हैं - भगवान ने यह आवागमन का नाटक रचा ही क्यों है। इसमें क्यों का सवाल नहीं उठता। यह तो ड्रामा का चक्र अनादि बना हुआ है, जो रिपीट होता रहता है।"

सा.बाबा 24.11.05 रिवा.

"यह नाटक बना हुआ है, जो चक्र अनादि-अविनाशी फिरता ही रहता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह भी अभी तुम जानते हो। ... कोई-कोई पूछते हैं - यह ड्रामा कब से शुरू हुआ। परन्तु यह तो अनादि है, यह कभी विनाश नहीं होता। इसलिए कब शुरू हुआ, यह प्रश्न नहीं उठता।" सा.बाबा 31.8.06 रिवा.

श्रीमत और विश्व-नाटक की कल्याणकारिता

बाबा ने श्रीमत दी है, इस विश्व-नाटक की कल्याणकारिता को सदा अपनी बुद्धि में रखेंगे तो कब विचलित नहीं होंगे।

"वे तुमको विष के लिए मार देकर शिवबाबा की याद दिलाते हैं। तुम बाप से वर्सा पाते हो, पाप कट जाते हैं। यह भी ड्रामा में तुम्हारे लिए गुप्त कल्याण है।"

सा.बाबा 16.5.05 रिवा.

"अगर कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनता है तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले। ... हर बात में कल्याण दिखाई दे। कोई भी अकल्याण की बात हो नहीं सकती। यह निश्चय और स्मृति-स्वरूप हो जाओ तो आप कभी डगमग नहीं होंगे।" अ.बापदादा 20.6.73

"अज्ञानी लोग जिसको अकल्याण समझते हैं लेकिन आपका उस अकल्याण में ही कल्याण समाया हुआ है। जैसे लोग विनाश को अकल्याण समझते हैं लेकिन आप समझते हो कि इससे ही गति-सद्गति के गेट्स खुलेंगे।" अ.बापदादा 20.6.73

"बच्चों की बुद्धि में ये वण्डरफुल बातें हैं। कैसा यह वण्डरफुल ड्रामा बना हुआ है, कल्प-कल्प हम वही पार्ट बजायेंगे। कल्प-कल्प बजाते रहते हैं। ... बनी-बनाई बन रही ... जो अनहोनी होये। यह चक्र फिर भी रिपीट होगा। इसमें मूँझने की बात नहीं।"

सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

"तीव्र पुरुषार्थी शुद्ध संकल्पों में पहले से ही मन को बिजी रखेंगे तो और संकल्प आयेंगे ही नहीं। ... मंथन करने के लिए तो बहुत खजाना है। ... समय की कौन सी तेजी देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेजी है। वही बात को समय फिर कब रिपीट नहीं करता है? ... ड्रामा में जो बात बीती, जिस रूप से बीती, वह फिर रिपीट नहीं होगी। फिर 5000 वर्ष के बाद ही रिपीट होगी।" अ.बापदादा 26.1.70

"सतयुग में दुख का नाम नहीं, त्रेता में दो कला कम हो जाती है तो थोड़ा कुछ होता है, फिर भी हेविन कहा जाता है ना। तुम बच्चों को तो अथाह अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।"

सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

"ड्रामा में जो शूट किया हुआ है, उसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। यह भी बेहद का ड्रामा है। ...किसी भी बात में दिल अन्दर दुख नहीं हो सकता। कोई को दुख है तो समझना चाहिए कि ड्रामा को नहीं समझा है।" सा.बाबा 24.4.73 रिवा.

"जब भी क्यों का क्वेश्चन आता है - क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राज को जान जाये तो क्यों क्या का क्वेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी तो यह क्या-क्यों का क्वेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का क्वेश्चन उठता है।" अ.बापदादा 18.12.91

"ड्रामा की हर सीन को प्यारा देखते हुए चलो। हर सीन प्यारी है। दुनिया के लिए जो अप्यारी सीन है, वह आपके लिए प्यारी है। जो भी होता है, उसमें कोई न कोई राज़ भरा हुआ होता है। राज़ को जानने वाले नाराज़ नहीं होते।" अ.बापदादा 13.2.91

"क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी, कब कोई क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है, उसमें कल्याण छिपा हुआ है क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 3

"ड्रामा की हर सीन को प्यारा देखते हुए चलो। हर सीन प्यारी है। दुनिया के लिए जो अप्यारी सीन है, वह आपके लिए प्यारी है। जो भी होता है, उसमें कोई न कोई राज़ भरा हुआ होता है। राज़ को जानने वाले नाराज़ नहीं होते।" अ.बापदादा 13.2.91

"बाप कल्याणकारी है। तुमको भी कल्याणकारी बनाते हैं। अब विचार सागर मन्थन करना चाहिए, समझकर औरों को भी कैसे समझायें। ... मेरे को याद करो, मांगना कुछ भी नहीं है

कि कृपा करो, मदद करो। नहीं, मैं तो सबको मदद करता हूँ। पुरुषार्थ तो तुमको करना ही है, आशीर्वाद की बात नहीं।" सा.बाबा 19.7.06 रिवा.

श्रीमत और विश्व-नाटक की न्यायपूर्णता

ये विश्व-नाटक पूर्ण न्यायपूर्ण है, इसमें किसी आत्मा के प्रति कोई पक्षपात नहीं है। बाबा ने कहा है, इस विश्व-नाटक की न्यायपूर्णता को घ्यान में रखेंगे तो कब किसी आत्मा के प्रति ईष्या-द्वेष-घृणा आदि नहीं आयेगी।

"बच्चे अन्जान हैं, इसलिए उनका कोई दोष दिखाई नहीं पड़ता। ऐसे ही माया भी अगर किस आत्मा के द्वारा समस्या वा विघ्न वा परीक्षा पेपर बनकर आती है तो उन आत्माओं को निर्दोष समझना चाहिए। ... इस दृष्टि से हर आत्मा को देखो तो फिर पुरुषार्थ की स्पीड कब ढीली नहीं हो सकती। 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए यह कला भी आनी चाहिए।"

अ.बापदादा 3.10.71

"प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा। किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर, ... न ड्रामा के ऊपर ... न व्यक्ति पर ... न प्रकृति के ऊपर, ... न अपने शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।" अ.बापदादा 5.10.87

"ड्रामा अनादि बना हुआ है। न रावण का दोष है और न मनुष्यों का दोष है। चक्र को फिरना ही है। ...बच्चे अन्तर्मुख होकर अपना चार्ट रखो तो जो भूलें होती हैं, उनका पश्चाताप कर सकेंगे। यह जैसे योगबल से अपने को माफ करते हो। बाबा कोई क्षमा या माफ नहीं करते। ड्रामा में क्षमा अक्षर ही नहीं है। ... पाप का दण्ड भोगना ही पड़ता है। क्षमा की बात नहीं।"

सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

"मनुष्य कड़े पाप तब करते हैं, जब बिल्कुल ही तमोप्रधान बनते हैं। ...परन्तु बाबा कहते हैं यह विनाश करते हैं, यह तो बाप के प्रेरे हुए हैं। इसलिए इन पर कोई दोष नहीं लगता। यह तो प्रेरे हुए हैं। नहीं तो विनाश कैसे हो ? बड़े कायदे कानून हैं।"

सा.बाबा 11.3.73 रिवा.

"यह सब ड्रामा में नूँध है, फिकर की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा, वह पायेगा। ... किसको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा। ... किसी न किसी को सन्देश सुनाकर फिर भोजन खाना चाहिए।"

सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो

पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।" मातेश्वरी 24.6.65

"यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इसमें जीतते भी हैं और फिर हारते भी हैं। अब यह चक्र पूरा हुआ, अभी हमको घर जाना है। ... बाबा हमको रावण पर जीत पहनाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें सवेरे-सवेरे उठकर अपने साथ करनी चाहिए।" सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

"जिनको ये निश्चय नहीं कि हमने 84 जन्म लिए हैं, उनकी बुद्धि में ये बातें बैठेंगी नहीं। जो सतोप्रधान दुनिया में आये थे, वे ही अब तमोप्रधान में आये हैं और वे ही आकर जल्दी निश्चयबुद्धि बनेंगे।" सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

"मंथन के लिए तो बहुत खजाना है, इसमें मन को बिजी रखना है। समय की रफ्तार तेज है या आपकी रफ्तार तेज है?... समय की कौनसी तेजी देखते हो? समय बीती को बीती करने में तेज है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो कमियां हैं, उनमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकेण्ड में उन्नति को लाते जाओ। ... क्रियेटर के बच्चे क्रियेशन से ढीले क्यों? इसलिए एक बात का ध्यान रहे कि जैसे ड्रामा में हर सेकेण्ड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गई, वह फिर रिपीट नहीं होगी। पांच हजार साल बाद ही रिपीट होगी।" अ.बापदादा 26.1.70

श्रीमत और विश्व-नाटक की सत्यता, अविनाश्यता, एक्यूरेसी

बाबा ने कहा है - ये विश्व-नाटक बहुत ही सुन्दर बना हुआ है, इसकी सत्यता, अविनाश्यता, एक्यूरेसी को समझ जायेंगे तो कब घबरायेंगे नहीं। इसलिए सदा इसकी सत्यता, अविनाश्यता, एक्यूरेसी का चिन्तन करते हुए इसे आत्मसात करना है।

"यह 5000 वर्ष का ड्रामा है, जो चलता रहता है। इसकी डिटेल तो बहुत है परन्तु मुख्य-मुख्य बातें समझाई जाती हैं।... तुम बच्चों को वण्डर लगना चाहिए कि जो फीचर्स, जो एक्ट सेकेण्ड बाई सेकेण्ड पास्ट हुई, वह फिर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू रिपीट होनी है। कितना वण्डरफुल यह नाटक है।" सा.बाबा 21.10.04 रिवा.

"ड्रामा में एक पार्ट दो बार बज न सके। सारी दुनिया में जो पार्ट बजता है, वह एक-दो से नया। तुम विचार करो सतयुग से लेकर अब तक कैसे दिन बदलता जाता है। ... अभी तुम इस ड्रामा के पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्युचर को जानते हो।" सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

"ड्रामा बड़े कायदे अनुसार चलता रहता है। इस ड्रामा में कोई भूल नहीं है। अनादि-अविनाशी बना हुआ है। अभी जो एक्ट चलती है, फिर 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होगी।... हू-ब-हू

रिपीट होता रहता है। इसको समझने की भी ब्रेन चाहिए।... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है ना।"
सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

"अभी ड्रामा का राज़ बुद्धि में है। मुख से कुछ कहने का भी नहीं है। हम उनके हो गये इसलिए ज्यादा ज्ञान की भी दरकार नहीं है।... जो गाया हुआ है, वह अब प्रैक्टिकल में हो रहा है। फिकर की कोई बात नहीं।" सा.बाबा 11.8.06 रिवा.

"ड्रामा प्लॉन अनुसार सबको तमोप्रधान बनना ही है। इस समय सारा झाड़ जड़ जड़ीभूत हो गया है। ... बाप बीज है। बीज को याद करने से सारा झाड़ बुद्धि में आ जायेगा। तुम सेकण्ड में सब जान लेते हो।" सा.बाबा 25.8.06 रिवा.

"जो अच्छे निश्चयबुद्धि हैं, वे बाप की याद कभी भूलते नहीं हैं। ... ड्रामा में ऐसी युक्ति रची हुई है,जो श्रीमत पर चलते हैं, वे ही ऊंच पद पा सकते हैं। बाकी सब सजायें खाकर शान्तिधाम अथवा पावन दुनिया में जायेंगे।... ड्रामा अनुसार फिर भी गीता के भगवान का नाम ऐसे ही बदलना है।" सा.बाबा 16.6.06 रिवा.

श्रीमत और विश्व-नाटक की खेल-भावना

ये विश्व-नाटक एक खेल है, इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि इसे खेल समझकर देखो और खेल में अपना पार्ट समझकर पार्ट बजाओ, तब इसका सच्चा सुख अनुभव होगा। खेल में हार और जीत दोनों ही सुखदायी होती है। जो हार में घबराता नहीं है, वही जीत का सुख अनुभव कर सकता है।

"आत्मा तो कभी विनाश नहीं होती। आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, वह कभी विनाश नहीं हो सकती। ... यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इस ड्रामा की आयु 5 हजार वर्ष है। सेकेण्ड भी कम-जास्ती नहीं हो सकता। ... देही-अभिमानी होकर साक्षी होकर खेल को देखना है। ... परमात्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। जो नूँध है, वह बदल नहीं सकता।"
सा.बाबा 2.10.04 रिवा.

"कैसा यह विचित्र ड्रामा बना हुआ है। कोई भी इसके राज़ को नहीं जानते। ... एक्टर होकर ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को न जानें तो उन्हें क्या कहेंगे। ... सच से जीत, झूठ से हार। सच्चा बाप सचखण्ड की स्थापना करते हैं। रावण से तुमने हार खाई है। यह सब खेल बना हुआ है।" सा.बाबा 26.5.05 रिवा.

"यह बहुत मजे का खेल है। खेल हमेशा मजे का ही होता है। सुख भी होता है तो दुख भी होता है। इस बेहद के खेल को तुम बच्चे ही जानते हो। इसमें रोने-पीटने आदि की बात ही नहीं

है। ... हम आत्मायें इसके एक्टर्स हैं। ... तुम बच्चे जानते हो - यह ड्रामा कैसे फिरता है। इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बाप ही समझाते हैं।" सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

"यह सृष्टि एक खेल है। ... अगर इसको खेल समझो तो खेल में कभी परेशान नहीं होंगे, हँसते रहेंगे। तो परीक्षायें भी एक खेल हैं। ... उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात् खेल नूँधा हुआ है, यह स्मृति आने से कभी भी अवस्था डगमग नहीं होगी।"

अ.बापदादा 8.7.73

"तुमको नशा है कि हम फिर से अपनी राजधानी स्थापन करेंगे, जैसे कल्प पहले की थी। ... तुम वहाँ जायेंगे तो ऑटोमेटिक तुम वह मकान आदि बनाने लग पड़ेंगे क्योंकि वह संस्कार आत्मा में भरा हुआ है। ...आत्मा में सब पहले से ही नूँध है। ...नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती है, वह भी ड्रामा में नूँध हैं। ...यह भी खेल है ना। खेल में हमेशा खुशी होती है।"

सा.बाबा 2.7.05 रिवा.

"संगमयुग पर युद्ध कर माया से विजय प्राप्त करना भी एक खेल समझते हो, मेहनत नहीं। ... खेल लगता है। ... जब मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित होते हो तो खेल लगेगा।" अ.बापदादा 27.12.87 पार्टी

"यह खेल बना हुआ है। इसमें शुक्रिया आदि की बात नहीं है। ... खेल अक्षर कहने से सारा ही खेल बुद्धि में आ जाता है। ... अभी तुम तीनों लोकों और तीनों कालों, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझते हो।" सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

"बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल-अडोल स्थित रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं। ... प्रकृति के भी पांच खिलाड़ी हैं और माया के भी पांच खिलाड़ी हैं। ... खिलाड़ी खेल के बिना रहेंगे क्या ? ... संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं के लिए तो खेल देखना इन्ज्वाय करना है।" अ.बापदादा 16.3.92

"माया के खेल खिलाड़ी बनकर देखते चलो। ... बाप का श्रीमत रूपी हाथ और दिव्य बुद्धियोग रूपी साथ सदा अनुभव कर समर्थ बन सदा पास विद् ऑनर बनते चलो।"

अ.बापदादा 18.1.92

"यह भी फुटबाल का खेल है। खेल खेलने में मजा आता है। ... नथिंग न्यू। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है।" अ.बापदादा 26.10.91

"खेल में कुछ आयेगा, कुछ जायेगा, कुछ बदलेगा। अगर सीन बदली न हो तो खेल अच्छा ही नहीं लगेगा। ... माया के रूप को कैच करो और खेल समझकर उस दृश्य को साक्षी होकर देखो। आगे के लिए और स्व स्थिति को मजबूत बनाने की शिक्षा लेकर आगे बढते

चलो।" अ.बापदादा 16.2.88

"माया का भी खेल है। अगर माया के खेल को खेल समझ कर करो तो उत्साह बढ़ेगा। अगर माया की कोई परिस्थिति को दुश्मन समझ देखते हो तो घबरा जाते हो। ... माया से घबराओ नहीं लेकिन एक मनोरंजन समझो।" अ.बापदादा 16.2.88

"बिना डबल लाइट बने तीव्रगति हो नहीं सकती। डबल लाइट बनने के लिए एक शब्द याद रखो - 9मेरा बाबा", बस। ... बुद्धि में मेरा बाबा कहा और टच होगा कि यह ऐसे होगा। हर बात सहज लगेगी।" अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 4

श्रीमत और मुक्ति-जीवनमुक्ति / श्रीमत और मोक्ष

परमात्मा अभी यथार्थ ज्ञान दिया है और बताया है कि मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है और हर आत्मा इस विश्व-नाटक अपने पार्ट के समय अनुसार मुक्ति-जीवनमुक्ति पाती है। अभी भी तुम मेरी मत पर चलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहो तो तुम अभी ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगे। परमात्मा सबका बाप है, इसलिए वह सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देता है। अभी बाप बना है तो उसका अनुभव भी अभी ही करायेगा।

दुनिया में कुछ लोग मोक्ष की इच्छा रखते हैं, उनकी इच्छा का राज़ भी परमात्मा ने बताया है और यथार्थ क्या है, उसकी भी श्रीमत दी है। जो इस विश्व-नाटक की सत्यता को समझ लेगा, वह कभी मोक्ष की इच्छा नहीं रखेगा। मोक्ष की इच्छा तब होती है, जब आत्मा इस जगत में दुख की महसूसता करती है परन्तु आत्मिक स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखें तो ये बहुत ही आनन्दमय अनुभव होगा। जिस व्यक्ति को कोई दुख न हो और न वह किसी को दुखी होता देखे, तो कोई मोक्ष की इच्छा नहीं करता है। इसलिए बाबा ने कहा बच्चे, देही-अभिमानी बनो और इस विश्व का परम-सुख अनुभव करो।

"यह बना-बनाया ड्रामा है, इससे कोई छूट नहीं सकता। जो कुछ देखते हो, मच्छर उड़ा, कल्प बाद भी उड़ेगा। इसे समझने में बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। यह शूटिंग होती रहती है। ... यह ड्रामा जूँ मिसल धीरे-धीरे चलता रहता है।" सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

"ड्रामा को भी अच्छी रीति समझना है। सभी प्वाइन्ट्स में डिफीकल्ट से डिफीकल्ट और वण्डरफुल प्वाइन्ट है आत्मा स्टार में कितनी बड़ी इम्पेरिशेबुल नॉलेज है, 84 जन्मों का पार्ट

भरा हुआ है। न ड्रामा पूरा हो सकता है, ना पार्ट पूरा हो सकता है।... इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।"
सा.बाबा 25.3.72 रिवा.

"यह बना बनाया अविनाशी ड्रामा है। हरेक आत्मा में अपना अपना पार्ट नूँधा हुआ है, जो हरेक अपना पार्ट फिर रिपीट करते रहते हैं। इसमें जरा भी फर्क नहीं रहेगा। अविनाशी पार्ट है। फिल्म में जो पार्ट एक बार रिपीट हुआ वही फिर रिपीट होगा।"

सा.बाबा 14.3.72 रिवा.

"यह बना-बनाया नाटक है। ... हम इस नाटक के एक्टर हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर खुश होते हो, निन्दा नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।"
सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

"कल्प-कल्प हम बाप से वर्सा लेते हैं, फिर माया बिल्ली छीन लेती है। इसलिए इसको हार-जीत का खेल कहा जाता है। ...कई समझते हैं मोक्ष पाना तो अच्छा है, फिर आयेंगे ही नहीं। ... एक्टर तो एक्ट जरूर करेगा। जो घर बैठ जाये, वह कोई एक्टर थोड़ेही हुआ। मोक्ष होता नहीं है। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। ... तुम ड्रामा में बंधायमान हो। ... कर्म बिगर कोई रह नहीं सकता।"
सा.बाबा 25.5.05 रिवा.

"ऐसे नहीं कि ड्रामा बनाया ही क्यों ? ... यह तो अनादि ड्रामा है ना। चक्र में न आओ तो फिर दुनिया ही न रहे। ... 5 हजार साल बाद फिर ऐसे ही चक्र लगायेंगे।"

सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

"बच्चे, इस ड्रामा में हर एक को अनादि पार्ट मिला हुआ है। मैं भी क्रियेटर, डायरेक्टर, प्रिन्सीपल एक्टर हूँ परन्तु ड्रामा के पार्ट को हम कुछ चेन्ज नहीं कर सकते। ... परमात्मा तो खुद कहते हैं मैं भी ड्रामा के अधीन हूँ, इसके बन्धन में बांधा हुआ हूँ।"

सा.बाबा 12.12.04 रिवा.

"कोई-कोई बच्चे को विचार आता है - यह ड्रामा क्या है, यह नाटक रचा ही क्यों ? इससे क्या फायदा ? ... इससे तो छूट जायें तो अच्छा है, मोक्ष मिल जाये ... बाप कहते हैं - यह कभी हो नहीं सकता। मोक्ष के लिए कोशिश करना ही वेस्ट हो जाता है। ... आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, इस ड्रामा के पार्ट से कोई छूट नहीं सकता।"

सा.बाबा 4.10.05 रिवा.

"बहुत कहते हैं, हम शान्तिधाम में ही रहें। परन्तु लॉ नहीं है। वह तो पार्टधारी हुआ ही नहीं। ... बाप ने कितना समझाया है - कोई ऐसी युक्ति रचो, जो मनुष्य सहज ही समझ जायें।"

सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

"अपने को आत्मा निश्चय करो और अपने बाप को याद करो। बुद्धियोग ऊपर में लगाओ तो स्वीट होम में चले जायेंगे।" सा.बाबा 25.8.06 रिवा.

"बहुत काल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुत काल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। ... जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबन्ध वाली आत्माओं का बन्धन समाप्त करेगा। यह सेवा नहीं करनी है क्या ? ... सब बन्धनों में पहला है देह-भान का बन्धन, उससे मुक्त बनो।... ब्रह्मा बाप ने आत्मा का पाठ आदि से कितना पक्का किया।"

अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और तीन लोक

बाबा ने अभी हमको तीन लोकों का ज्ञान दिया है, जिससे हमको अपने घर परमधाम का भी पता पड़ा है और ये विश्व एक नाटक है, जहाँ हम घर से पार्ट बजाने के लिए आते हैं, यह भी पता पड़ा है। इसलिए बाबा सदा कहते तुम अपने को यहाँ मेहमान समझो, मुसाफिर समझो तो तुम्हारा यहाँ लगाव नहीं होगा। अपने को परमधाम निवासी समझ कर मुझे परमधाम में याद करो।

"अभी तुम बच्चों को मूलवतन से लेकर स्थूलवतन तक के सब राज़ समझाये हैं। मूलवतन का राज़ बाप के बिगर और कौन समझायेंगे। ... तुम औरों को भी आप समान बनायेंगे तो बहुत ऊंच पद पा सकते हो। ... अब बाप ने आर्डिनेन्स निकाला है - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पाने से तुम जगतजीत बन जायेंगे।" सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

"आत्मायें मूलवतन वा ब्रह्म महतत्व में निवास करती हैं, वह है हम आत्माओं का घर। यह आकाश तत्व है, जहाँ साकारी पार्ट चलता है। ... अभी है संगमयुग, जिसको कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है। यहाँ आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है।"

सा.बाबा 11.9.06 रिवा.

श्रीमत और पुरुषोत्तम संगमयुग

बाबा ने इस विश्व-नाटक का ज्ञान देकर संगमयुग का महत्व बताया है और श्रीमत देते हैं कि इसके महत्व को जानकर इसका सुख अनुभव करो, यही इस जीवन की सफलता है, प्राप्ति है।

संगमयुग के लिए बाबा श्रीमत देते कि संगमयुग के आगे पुरुषोत्तम शब्द अवश्य

लिखो। ये पुरुषोत्तम संगमयुग बहुत ही महत्वपूर्ण समय है। ये संगमयुग पर ही सर्व प्रकार के ज्ञान के चरमोत्कर्ष का संगम होता है अर्थात् अभी आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में भौतिक विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान, आदि के ज्ञान का भी संगम है। आत्मा और परमात्मा का भी संगम है, स्थापना-विनाश का भी संगम है, कल्प के दिन-रात का भी संगम है, कल्प के आदि-अन्त का भी संगम है, स्वर्ग-नर्क का भी संगम है। देवताओं और असुरों का भी संगम है अर्थात् दैवी और आसुरी संस्कारों का भी संगम है। इन सब सत्यों पर विचार करें तो इन सबकी अभी चरम सीमा है। स्मृति-विस्मृति का भी संगम है अर्थात् अभी परमात्मा से अनेक प्रकार की स्मृतियां मिलती हैं, जो सतयुग के प्रथम जन्म से विस्मृति में चली जाती हैं। विज्ञान के क्षेत्र में सर्व प्रकार की महत्वपूर्ण अनुसंधान इस संगमयुग पर ही हुये हैं, जो ही सतयुग के निर्माण में काम आती है और वहाँ से ही समयान्तर वह ज्ञान लोप होने लगता है, जो त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगमयुग तक पूरा ही लोप हो जाता है।

ऐसे संगमयुग के महत्व को बताते हुए बाबा ने इस संगमयुग का एक-एक सेकेण्ड और इस संगमयुगी जीवन का एक-एक स्वांस सफल कर सफलतामूर्त बनने के लिए अनेक प्रकार से श्रीमत दी है।

"संगमयुग का असली संस्कार है जो सदा नॉलेज देता और लेता रहता है, उसको सदा ज्ञान स्मृति में रहेगा और वह सदा हर्षित रहेगा। ... अपने जन्म और समय के महत्व को जानो तब ही महान कर्तव्य कर सकेंगे।" अ.बापदादा 16.6.72

"जितना त्याग करेंगे, उतना ही भाग्य प्राप्त करेंगे। वर्तमान में भी और भविष्य में भी। ऐसे नहीं समझना कि संगमयुग में सिर्फ त्याग करना है और भविष्य में भाग्य लेना है। ऐसे नहीं है। जो जितना त्याग करता है और जिस घड़ी त्याग करता है, उसी घड़ी जितना त्याग उसके रिटर्न में उनको भाग्य जरुर प्राप्त होता है।" अ.बापदादा 15.3.72

"अभी जो भाग्य बनाया वह सारे कल्प में भोगना पड़ता है - चाहे श्रेष्ठ, चाहे नीच। लेकिन यह संगमयुग ही है जिसमें भाग्य बना सकते हो। जितना चाहो उतना बना सकते हो क्योंकि भाग्य बनाने वाला बाप साथ है।" अ.बापदादा 15.3.72

"जैसे लोगों को प्रदर्शनी में संगम के चित्र पर खड़ा करके पूछते हो कि अभी आप कहाँ हो और कौन हो ? ...क्योंकि संगम है ऊंच ते ऊंच स्थान वा युग। इसी प्रकार अपने आप को ऊंची स्टेज पर खड़ा करो और फिर अपने आप से पूछो कि मैं सदा प्रीत बुद्धि हूँ ?"

अ.बापदादा 2.2.72

"जैसे बाप आकार में निराकार आत्माओं को ही देखते हैं, वैसे ही बाप समान बने हो ? ...

आकार में निराकार देखने आये, इसमें अन्त तक भी अगर अभ्यासी रहेंगे तो देही-अभिमानी का अथवा अपने असली स्वरूप का जो आनन्द वा सुख है, वह संगमयुग पर अनुभव नहीं करेगे ! संगमयुग का वर्सा कब प्राप्त होता है, संगमयुग का वर्सा कौनसा है ?”

अ.बापदादा 28.7.71

“इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा भरपूर रहती है, फिर खाली हो जाती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, फिर आते हैं इस स्वीट संगम पर। इनको स्वीट कहेंगे। शान्तिधाम कोई स्वीट नहीं है। सबसे स्वीट है पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग। ड्रामा में तुम्हारा भी अच्छे ते अच्छा पार्ट है। तुम कितने लकी हो जो बेहद के बाप के तुम बनते हो।”

सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

“जब डायरेक्ट साथ निभाने का वायदा है तो वायदे का फायदा उठाओ। इस समय दो बाप के साथ व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है, जो फिर सारे कल्प में नहीं होगा। यह सिर्फ अभी की ही प्राप्ति है। तो उसका पूरा-पूरा लाभ उठाओ। कोई भी बात हो सदा बाबा ही याद रहे। इसको कहा जाता है, “निरन्तर योगी”।” अ.बापदादा 23.1.76

“स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करो क्योंकि सम्पन्नता का वरदान संगमयुग पर ही मिलता है। सिवाए संगमयुग सम्पन्न स्वरूप का अनुभव और कहीं भी नहीं कर सकेंगे। दैवी जीवन में सर्वगुण सम्पन्न होने का, 16 कलाओं का गायन है लेकिन सम्पन्न स्वरूप क्या होता है, गुणों और कलाओं की नॉलेज इस ईश्वरीय जीवन में ही है। इसलिए सम्पन्न बनने का आनन्द इस ईश्वरीय जीवन में ही प्राप्त कर सकते हो।” अ.बापदादा 21.9.75

“संगमयुग की विशेषता है कि इस युग में ही बाप भी प्रत्यक्ष होते हैं, ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होते हैं। आप सबके 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती है। श्रेष्ठ नॉलेज भी प्रत्यक्ष होती है। इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता है।” अ.बापदादा 10.9.75

“यह कब भूलो मत कि हम पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं। ... तुमने प्रतिज्ञा की है कि हम सिवाए एक बाप के और कोई को याद नहीं करेंगे। ... इस दुनिया के सुख भी काग विष्टा के समान हैं, तुम पढ़ते हो नई दुनिया के लिए।” सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

“यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो एक ही बार आता है। मनुष्य पुरुषोत्तम संगमयुग का अर्थ भी नहीं समझते हैं तो यह भी लिखना है - कलियुग अन्त और सतयुग आदि का संगम। तो संगमयुग सबसे सुहावना, कल्याणकारी हो जाता है। बाप भी कहते हैं - मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ।” सा.बाबा 10.9.04 रिवा.

“इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग व सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो क्योंकि आत्मा के हर

प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बन्धों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकार्ड के समान भरता जाता है। 84 जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला दोनों के संस्कार इस समय ही आत्मा में भरते हो।"

अ.बापदादा 30.5.73

"तुम बच्चों को पहले-पहले तो यह समझानी देनी है कि गीता का भगवान कौन ? ... मैं अन्त तक तुमको ज्ञान सुनाता रहूँगा। ... गीता का बहुत प्रभाव है परन्तु गीता ज्ञान दाता को भूल गये हैं।" सा.बाबा 16.11.05 रिवा.

"वर्तमान का फल भविष्य में मिलेगा। महत्व वर्तमान का है। ... संगमयुग का एक सेकेण्ड और युगों के एक वर्ष से भी ज्यादा है। तो इतना महत्व सदा याद रहता है ? ... सदा याद रहे तो हर सेकेण्ड परमात्म दुआयें प्राप्त करते रहेंगे।" अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 3

"जीते जी मरना कहा ही उनको जाता है, जो एडॉप्ट होते हैं।... अभी ईश्वर ने तुमको एडॉप्ट किया है। ... पुरुषोत्तम मास में बहुत दान-पुण्य आदि करते हैं। तुम इस पुरुषोत्तम युग में सर्वस्व स्वाहा कर लेते हो ... सबसे दिल से ममत्व मिट जाये।"

सा.बाबा 10.8.06 रिवा.

"समय का भी महत्व याद रहे और स्वयं का भी महत्व याद रहे। ... संगमयुग के समय को और जीवन को हीरे तुल्य कहा जाता है। ... अभी जमा करने का समय है। अभी के जमा के हिसाब से ही राज्य अधिकारी भी बनते हो और पूज्य भी बनते हो।"

अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 2

श्रीमत और पुरुषोत्तम संगमयुग एवं उसकी यादगार पुरुषोत्तम मास

पुरुषोत्तम संगमयुग कितना महान है और उसके महत्व को जानकर उसको सफल कैसे करें, उसके लिए बाबा ने अनेक प्रकार से श्रीमत दी है, जिसको पालन करने से हम महान बन सकते हैं।

कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग की यादगार में ही भारत में पुरुषोत्तम मास को सर्व मासों से श्रेष्ठ मास समझते हैं और उस मास में भक्ति-भावना, दान-पुण्य, त्याग-तपस्या, व्रत-नियम आदि विशेष करते हैं और उसका फल भी विशेष माना जाता है। भक्ति-भावना वाली आत्मायें पुरुषोत्तम मास में विकार में जाना भी बड़ा पाप समझते हैं, इसलिए पवित्र रहते हैं। ये सब नियम-संयम, कर्म-काण्ड इस पुरुषोत्तम संगमयुग की ही यादगार हैं। इस संगमयुग पर आत्मा, परमात्मा के संग से पावन बनती है, जिसकी यादगार में विभिन्न नदियों के संगम पर

और गंगा सागर का मेला लगता है।

"सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है। ... द्वापर से भक्ति से अल्पकाल का फल मिलता है। अभी-अभी जमा किया, अभी-अभी फल पाया और खत्म हुआ। ... इस युग को वरदानी युग कहा जाता है। इस युग में स्नेह के कारण बाप भोले भण्डारी बन जाते हैं, जो एक का पदमगुणा फल देता है।"

अ.बापदादा 06.1.86

"उन्हों का भी आधार तिथि और वेला पर होता है। वैसे ही यहाँ भी मरजीवा जन्म की तिथि, वेला और स्थिति है। ... आप लोग भी इन तीनों बातों तिथि, वेला और स्थिति को जानते हुए अपने संगमयुग की प्रारब्ध व संगमयुग की भविष्य स्थिति और भविष्य जन्म की प्रारब्ध को अपने आप भी जान सकते हो।" अ.बापदादा 24.4.73

"बहुत समय का मतलब ये नहीं कि स्थूल तारीखों व वर्षों के हिसाब से है लेकिन जब से जन्म लिया तब से बहुत समय की लगन हो। ... अगर कोई 35 वर्ष के बदले 15 वर्ष से आ रहे हैं लेकिन 15 वर्ष में बहुत समय पुरुषार्थ की सफलता में रहा है तो उनकी गिनती जास्ती में आयेगी। बहुत समय सफलता के आधार पर गिना जाता है।" अ.बापदादा 24.4.73

"इसको कहेंगे चढ़ती कला का परिवर्तन। परिवर्तन तो द्वापर में भी होता है परन्तु वह है गिरती कला का परिवर्तन। अभी संगम पर है चढ़ती कला का परिवर्तन।" अ.बापदादा 11.4.73

"अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो। ... तुम बच्चों को बाप का नाम बाला करना है, तुम्हारा मुखड़ा सदैव हर्षित रहना चाहिए। मुख से सदैव रतन निकलें। ... अभी तुम जो ज्ञान रतन लेते हो, वे फिर सच्चे हीरे-जवाहरात बन जाते हैं। ... ज्ञान रतनों की माला इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बनती है।" सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

"तीनों लाइट्स का साक्षात्कार होगा तो अभी से ही अपना गायन सुनेंगे। द्वापर का गायन कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन ऐसे साक्षात्कारमूर्त और साक्षात मूर्त बनने से अभी ही अपना गायन सुनेंगे। आपके आगे आने से लाइट ही लाइट देखने में आये।" अ.बापदादा 19.6.70

"पुरुषोत्तम मास में दान-पुण्य बहुत करते हैं। ... वास्तव में इस पुरुषोत्तम युग का बहुत मान है। तुमको कितनी खुशी और नशा होना चाहिए। अब तुमसे कोई पाप कर्म नहीं होना चाहिए क्योंकि तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो।" सा.बाबा 10.8.06 रिवा.

श्रीमत और कल्प-वृक्ष

परमात्मा आकर कल्प-वृक्ष का भी ज्ञान देते हैं और इसकी कलम लगने का राज़

भी समझाते हैं और हम कैसे कल्प-वृक्ष की कलम लगाने में बाप के मददगार बनें, उसके लिए श्रीमत देते हैं।

"झाड़ के राज़ को भी समझना है। बाप ही आकर सारे कल्प-वृक्ष का ज्ञान सुनाते हैं। इनकी भेंट फिर निराकारी झाड़ से होती है। ... बीज में झाड़ नहीं समाया हुआ है लेकिन झाड़ का ज्ञान समाया हुआ है। ... झाड़ के पत्ते भी नम्बरवार निकलेंगे। इसका बीज ऊपर में है, इसलिए इसको उल्टा वृक्ष कहा जाता है।" सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"बच्चों को यह सारा राज़ बुद्धि में होना चाहिए कि हम कैसे पुनर्जन्म लेते हैं। ... तुम बच्चे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो।... सारे सृष्टि के मनुष्यों की चाल-चलन का, सब धर्मों का तुमको ज्ञान है।" सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"ड्रामा को न जानने के कारण मूँझे हुए हैं। तुम्हारे सिवाए कोई समझा न सके। ... यह सारा चक्र बना ही है धर्मों पर। यह है ही वैरायटी धर्मों का झाड़। ... तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियां अपने धर्म को और सबके धर्म को जानते हो। तुमको तरस पड़ना चाहिए, सबको चक्र का राज़ समझाना चाहिए।" सा.बाबा 30.9.05 रिवा.

"बाप भी अविनाशी है, हम आत्मायें भी अविनाशी हैं और यह ड्रामा भी अविनाशी है। ... यह ज्ञान कल्प बाद तुम बच्चों को दिया जाता है। तो यह नशा होना चाहिए। ... अभी मुझे इस सृष्टि रूपी झाड़ के आदि-मध्य-अन्त का मालूम पड़ा है।" सा.बाबा 2.6.06 रिवा.

"सतयुग दैवी राज्य में 9 लाख होंगे। कोई बोले इसका क्या प्रूफ है ? बोलो - यह समझ की बात है कि सतयुग में झाड़ होगा ही छोटा।... अब कितना बड़ा झाड़ हो गया है, यह अब विनाश होना है।" सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

श्रीमत और मुरली

बाबा की मुरली अनेक रतनों की खान है, ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है, ब्राह्मणों के जीवन के लिए जीयदान है। मानव जीवन की सफलता और चढ़ती कला का आधार एक परमात्मा ही है और उसके द्वारा दी गई मत ही है, उस मत को ही श्रीमत कहा जाता है, जो बाबा ने मुरली में दी हुई है।

"मुरली मिस कर देते हैं। बाप कहते हैं - कितनी गुह्य-गुह्य बातें तुमको सुनाता हूँ, जो सुनकर धारणकरना है। धारणा नहीं होगी तो कच्चे रह जायेंगे। बहुत बच्चे भी विचार सागर मंथन कर अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं। ... तुमको तो अथाह खुशी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 29.7.04 रिवा.

"बाप को जादूगर भी कहते हैं। गाया हुआ है मुरली तेरी में जादू। मनुष्य से देवता बन जाते हैं। गायन है - मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार।" सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

"जहाँ लगन होती है, वहाँ कोई विघ्न ठहर नहीं सकते। स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं। पढ़ाई से प्रीत, मुरली से प्रीत वाले विघ्नों को सहज पार कर लेते हैं। ... एक मुरली से प्यार, पढ़ाई से प्यार और परिवार का प्यार किला बन जाता है। किले में रहने वाले सेफ हो जाते हैं।"

अ.बापदादा 27.3.86

"मुरली है लाठी, इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जायेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुंचायेगा लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं।... मुरलीधर से स्नेह की निशानी मुरली है। जितना मुरली से स्नेह है, उतना ही समझो मुरलीधर से भी स्नेह है। सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी।" अ.बापदादा 23.10.75

"लाइट, माइट और डिवाइन इन्साइट तीनों कायम रहें, उसके लिए मुख्य किस बात का अटेन्शन चाहिए? ... जो एक दिन भी रिवाइज कोर्स की मुरली मिस नहीं करते, वे हाथ उठाओ। ... भल जान चुके हो लेकिन अभी बहुत कुछ जानने को रह गया है। जो अच्छी रीति से रिवाइज कोर्स को रिवाइज करते हैं, वे स्वयं भी ऐसा अनुभव करते हैं।"

अ.बापदादा 24.6.72

''एक कम्पलेन्ट है - व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं। ... दूसरी मुख्य कम्पलेन्ट है - वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। यह दोनों कम्पलेन्ट्स तब तक हैं, जब तक रोज की मुरली द्वारा जो डायरेक्शन्स मिलते रहते हैं उन डायरेक्शन्स को अर्थात् मुरली को ध्यान से सुनकर और धारण नहीं करते हैं।....अगर सारा समय ज्ञान-रत्नों से खेलने में व ज्ञान खजाने को देखने में, सुमिरण करने में बुद्धि को बिजी रखो, तो क्या व्यर्थ संकल्प आ सकते हैं?"

अ.बापदादा 11.7.74

"ब्राह्मण जीवन के जी-दान का आधार कौन-सा हैं? मुरली, पढाई का भी आधार है मुरली। ... जितना स्नेह जी-दान से होगा उतना ही स्नेह, जीवनदाता से होगा। ऐसा स्नेही, अन्य आत्माओं को भी सदा स्नेही व निर्विघ्न बना सकेंगे।" अ.बापदादा 28.4.74

"आपस में ज्ञान चर्चा करना, यह तो ब्राहमणों का कर्तव्य है। जिस बात में जिसकी जो लगन होती है, उसके लिए समय की कमी कभी नहीं हो सकती। तो इन दो बातों पर ध्यान रखो एक तो प्योरिटी और दूसरा जीयदान का महत्व।" अ.बापदादा 28.4.74

"जिन्होंकी पढ़ाई से प्रीत है, वे सदा शक्तिशाली रहते हैं। बाप से प्रीति अर्थात् मुरलीधर से प्रीति, मुरलीधर से प्रीति माना मुरली से प्रीति। मुरली से प्रीति नहीं तो मुरलीधर से भी प्रीति

नहीं। ... पढ़ाई से प्रीति, मुरली से प्रीति वाले विघ्नों को सहज पार कर लेते हैं।"

अ.बापदादा 27.3.86

"ब्रह्मा बाप का सबसे ज्यादा प्यार मुरली से रहा ना, तब तो मुरलीधर बना। ... मुरली से प्यार रहा तब ही भविष्य में श्रीकृष्ण के रूप में भी मुरली की निशानी दिखाते हैं। तो जिससे बाप का प्यार रहा, उससे प्यार रहना ही प्यार की निशानी है।"

अ.बापदादा 31.12.92

"स्थूल धन से साधारण हो लेकिन ज्ञान-धन से साहूकार हो। ... मुरली मिस करते तो फॉलो फादर नहीं हुआ ना। ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की।"

अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 5

"व्यर्थ संकल्प आवे ही नहीं ... उसकी विधि है - अपने मन को सदा मन्सा, वाचा, कर्मणा सेवा में बिजी रखो। हर रोज़ की मुरली मन को बिजी रखने का साधन है।"

अ.बापदादा 7.3.93 पार्टी 2

"सदा बाप के संग में और बाप के दिये हुए शुद्ध संकल्पों में रहना। यह रोज की मुरली रोज के लिए शुद्ध संकल्प है। ... ऐसे नहीं कि मैं तो खुश रहती हूँ, बाहर से दिखाई नहीं देता। अन्दर का बाहर अवश्य आता है। तो सदा चेक - हमारा चेहरा और चलन अलौकिकता की झलक दिखाता है?" अ.बापदादा 09.01.93 पार्टी 1

"स्थूल धन से साधारण हो लेकिन ज्ञान-धन से साहूकार हो। ... मुरली मिस करते हो तो फॉलो फादर नहीं हुआ ना। ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की।"

अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 5

"सवेरे-सवेरे उठकर विचार सागर मन्थन करना चाहिए, फिर जो भी आये, उनको समझाना है। मुरली की मुख्य प्वाइन्ट्स नोट करनी चाहिए, फिर रिपीट करनी चाहिए।"

सा.बाबा 23.5.06 रिवा.

श्रीमत और विचार-सागर मंथन अर्थात् चिन्तन

विचार-सागर मंथन से ही ज्ञान के गुह्य राज़ स्पष्ट होते हैं, उनकी धारणा होती है और ज्ञान व्यवहारिक जीवन में आता है। इसीलिए शास्त्रों में सागर मंथन का गायन है। परमात्मा ज्ञान का सागर है और वह अनेक ज्ञान रतन देता है, उनका सुख अनुभव करने के लिए उन पर विचार करना अति आवश्यक है। विचार-सागर मन्थन करने से ही ज्ञान व्यवहारिक जीवन

में आता है, दूसरों को भी उसकी सत्यता स्पष्ट करने की शक्ति आती है। जो आत्मायें उनका सदुपयोग करते हैं, यथार्थ रीति ज्ञान मन्थन करते हैं, उनके लिए वह अमृत बन जाता है और जो उनका दुरुपयोग करता है अर्थात् उल्टी मथानी चलाते हैं, उनके लिए वह विष का ही काम करता है। बाप का बनकर उनकी श्रीमत का उलंघन कर यज्ञ की मर्यादा का उलंघन करता है, उसके लिए यह अमृत भी विष बन जाता है और वह दोनों जहान के सुख से वंचित रह जाता है। वे दुनिया के साधारण मनुष्यों से भी अधिक गिर जाते हैं।

"जिनकी दिल सच्ची थी उन पर साहेब राज़ी हुआ। तब तो प्रॉपर्टी दी। प्रॉपर्टी तो दे दी। अब उनको सिर्फ अपना बनाने की बात है। सर्विस वा दान भी तब कर सकेंगे जब प्रॉपर्टी को अपना बनाया होगा। जितना प्रॉपर्टी होगी उतना नशे से दान कर सकेंगे।"

अ.बापदादा 30.5.71

"खजाना अपना बन गया फिर दूसरे को देने से बढ़ता जाता है। यह हुई पीछे की बात। लेकिन पहले अपना कैसे बनायेंगे जितना-जितना जो खजाना मिलता है उसके ऊपर मनन करने से अन्दर समाता है। जो मनन करने वाले होंगे उन्हों के बोलने में भी विल पॉवर होगी।"

अ.बापदादा 30.5.71

"इस मुरली में ज्ञान का जादू है। ... इस ज्ञान का विचार सागर मंथन करना चाहिए। स्टूडेण्ट्स विचार सागर मंथन कर ज्ञान को उन्नति में लाते हैं। तुमको यह ज्ञान मिलता है, उस पर अपना विचार सागर मंथन करने से अमृत निकलेगा। अगर ज्ञान का विचार सागर मंथन नहीं होगा तो क्या मंथन होगा ? आसुरी विचार मंथन।" सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

"अन्तर्मुख होकर बाप को याद करना है। ... यह सब ज्ञान का चिन्तन अन्दर में होना चाहिए। बाप में ज्ञान और योग दोनों है, तुम्हारे में भी होना चाहिए। ... बच्चों को अच्छी रीति विचार सागर मन्थन करना है। नॉलेज पर बहुत-बहुत मन्थन करना चाहिए, तब तुम अपना कल्याण कर सकेंगे।" सा.बाबा 12.01.06 रिवा.

"बच्चों को विचार-सागर मन्थन करना है, तब ही प्वाइन्ट्स निकलेंगी। ... इस लड़ाई के बाद स्वर्ग के द्वारा खुलने हैं। इस लड़ाई में जैसे स्वर्ग समाया हुआ है।"

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

"विचार करना चाहिए - कैसे मनुष्यों को राय दें कि बाप सुख-शान्ति का वर्सा दे रहे हैं। विश्व में शान्ति कैसे होती है, विश्व में शान्ति कब थी। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, उन्होंका यह चिन्तन चलता है।" सा.बाबा 15.9.05 रिवा.

"बच्चों का दिन-रात चिन्तन चलना चाहिए कि मनुष्यों को हम कैसे समझायें।... अकेले बाप

क्या करेंगे। बच्चों को भी मददगार बनना है। विचार-सागर मन्थन करो - क्या उपाय निकालें, जिससे मनुष्य झट समझ जायें कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है।" सा.बाबा 15.9.05 रिवा.

"आत्मा फट से तो सतोप्रधान नहीं बनती है। यह सब विचार-सागर मन्थन किया जाता है। बाबा का विचार सागर मन्थन चलता है तब तो समझाते हैं। युक्तियां निकालनी चाहिए कि किसको कैसे समझायें।" सा.बाबा 15.9.05 रिवा.

"इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर से पार्ट बजाने। ... बाप सदैव परमधाम में रहते हैं, यहाँ एक ही बार संगम पर आते हैं। ... जब दुनिया को बदलना होता है।" सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

"तुम बच्चों को हर एक बात का विचार सागर मंथन करना चाहिए।"

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

"इस चक्र का तुमको ही पता है। जो विचार सागर मंथन करते रहेंगे, उनको ही धारणा होगी। मुरली चलाने वाले का विचार सागर मंथन अच्छा चलता रहेगा।"

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

"बैठे-बैठे यह विचार आना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि अब अलौकिक है और किसी मनुष्य की बुद्धि में यह बातें रमण नहीं करती होंगी। ... देवी-देवतायें भी तो नम्बरवार होंगे, एक जैसे तो हो भी न सकें क्योंकि राजधानी है ना। यह ख्यालात तुम्हारे चलते रहने चाहिए।"

सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

"आज अंधेरे में है इन्सान ... अभी तुम तो अंधेरे में नहीं हो। ... कितना वण्डरफुल यह नाटक है। ... सवेरे उठकर एक तो बाप को याद करना है और खुशी में ज्ञान का सुमिरन करना है।" सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

"विष्णु का लेटा हुआ चित्र दिखाते हैं। ज्ञान को सिमरण कर हर्षित हो रहा है। ... नर और नारी दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे ऐसे हर्षित रहते हैं। ... जो जितना ही ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे उतना ही हर्षित रहते हैं। ... व्यर्थ सिमरण होता है तो ज्ञान का सिमरण नहीं होता।" अ.बापदादा 16.6.72

"हम आत्मायें इस ड्रामा में एक्टर हैं, इनसे हम निकल नहीं सकते, मोक्ष पा नहीं सकते। बाप कहते हैं ड्रामा से कोई निकल जाये, दूसरा कोई एड हो जाये - यह हो नहीं सकता। इतना सारा ज्ञान सबकी बुद्धि में रह नहीं सकता। सारा दिन ऐसे ज्ञान में रमण करना है।"

सा.बाबा 26.4.05 रिवा.

"एकान्त में बैठने से ऐसे-ऐसे विचार-सागर मन्थन चलेगा। ... ये बड़ी गुह्य बातें हैं समझने

की। बाप कहते हैं - आज तुमको गुह्य ते गुह्य नई-नई प्वाइन्ट्स समझाता हूँ।”

सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

“आत्मा ब्रह्म महतत्व में खड़ी होती हैं, जैसे स्टार्स आकाश में खड़े हैं। ... जो बच्चे ज्ञान का विचार-सागर मन्थन नहीं करते हैं, उनकी बुद्धि में माया खिट-खिट करती है।”

सा.बाबा 26.7.05 रिवा.

“ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करो कि कैसे किसको समझायें। ... पहले हम मुक्तिधाम जायेंगे, फिर पहले से लेकर चक्र रिपीट होगा। ... स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में यह सारी नॉलेज होनी चाहिए। ... यह रुहानी नॉलेज रुहानी बाप समझाते हैं। तुम बच्चों को बहुत खुशी और नशे में रहना चाहिए।” सा.बाबा 27.7.05 रिवा.

“इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर से पार्ट बजाने। ... बाप सदैव परमधाम में रहते हैं, यहाँ एक ही बार संगम पर आते हैं। ... जब दुनिया को बदलना होता है।” सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

“बच्चों को ही विचार सागर मन्थन करना है। शिवबाबा तो नहीं करते हैं। वह तो कहते हैं ड्रामा अनुसार जो कुछ सुनाता हूँ, ऐसे ही समझो कल्प पहले जो समझाया था, वही अभी समझाया। ... यह ब्रह्मा भी मन्थन करते हैं।” सा.बाबा 12.9.05 रिवा.

“सौदा तो सबने किया है लेकिन हर बात में नम्बरवार होते हैं। बाप ने तो सभी को एक जैसे सर्व खजाने दिये हैं क्योंकि अखुट सागर है। बाप को देने में नम्बरवार देने की आवश्यकता नहीं है। ... अथाह खाजाना है लेकिन लेने वालों में नम्बर हो जाते हैं। ... नम्बरवन सौदागर खजानों को स्व के प्रति मनन कर अनुभवी बन कार्य में लगाते हैं।”

अ.बापदादा 10.12.87

“तुम ब्राह्मण श्रीमत पर सेवा करते हो। ... तुम्हारा धन्धा है रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानना और किसको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताना। सारा दिन यही बुद्धि में चलना चाहिए।” सा.बाबा 17.8.05 रिवा.

“यह चक्र है ना, इसको कहा जाता है स्वदर्शन चक्र। यह ज्ञान की बात है। बाप कहते हैं - तुम्हारा यह स्वदर्शन चक्र रुकना नहीं चाहिए। फिरते रहने से विकर्म विनाश होंगे।”

सा.बाबा 13.8.05 रिवा.

“हम यहाँ लाख लेकर क्या करेंगे, गरीबों को ही राजाई मिलनी है। बाप गरीब निवाज है ना। ... जो साहूकार हैं, वे इस ज्ञान को उठा न सकें। ... सबको सुनाओ दुनिया बदल रही है, बाप से वर्सा मिल रहा है, कल्प पहले के मुआफिक। बच्चों को विचार सागर मन्थन करना - कैसे

सर्विस को अमल में लायें।” सा.बाबा 6.10.05 रिवा.

“सतयुग में श्रेष्ठाचारी मातायें होती हैं, जो समय पर बच्चे को आपही दूध पिलाती हैं, बच्चे को रोने की दरकार नहीं होती। ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करना होता है। ... अब तुम बच्चों को सवेरे-सवेरे उठकर विचार सागर मन्थन करना है कि मनुष्यों को भगवान का परिचय कैसे दें।” सा.बाबा 5.10.05 रिवा.

“तुम एडवाइजर भी हो। जब तक बाप एडवाइज न करे, श्रीमत न दे तब तक कोई भी मुक्तिधाम में जा नहीं सकते। ... शरीर बिगर आत्मा न पाप और न पुण्य कर सकती है। जितना हो सके विचार सागर मन्थन करो।... अन्दर उछल आती रहेगी - कैसे मनुष्यों को रास्ता बतायें।” सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

“तुम कहाँ भी भाषण करने जाते हो तो पहले उस टॉपिक पर विचार-सागर मन्थन कर लिखना चाहिए। फिर लिखकर पढ़ना चाहिए।... पहले-पहले तो बोलना चाहिए - भाई-बहनों आत्माभिमानी होकर बैठो।“ सा.बाबा 12.10.05 रिवा.

“मनन शक्ति बाप के खजाने को अपना खजाना अनुभव कराने का आधार है। ... जैसे भोजन को हज़म करने से खून के रूप में अपना बन जाता है। ऐसे ज्ञान को मनन करने से शक्ति रूप बन जाता है। ... सदा नशा नहीं रहता तो इसका कारण कि ज्ञान को सदा मनन शक्ति से अपना नहीं बनाया।” अ.बापदादा 10.1.88

“मनन शक्ति अर्थात् सागर के तले में जाकर अन्तर्मुखी बन हर ज्ञान-रत्न की गुह्यता में जाना। ... प्वाइन्ट का राज़ क्या है .. प्वाइन्ट को किस समय, किस विधि से कार्य में लगाना है और प्वाइन्ट को अन्य आत्माओं के प्रति सेवा में किस विधि से कार्य में लगाना है। ... यह चारो ही बातें हर ज्ञान की प्वाइन्ट को सुनकर मनन करो। ... नशे की अनुभूति करो।”

अ.बापदादा 10.1.88

“ज्ञान की शक्ति के आगे परिस्थिति वा विघ्न ठहर नहीं सकते। लेकिन अगर विजय नहीं होती तो समझो यूज करने की विधि नहीं आती। ... बहुत काल का अभ्यास चाहिए। इसलिए हर रोज मनन शक्ति को बढ़ाते जाओ।” अ.बापदादा 10.1.88

“मनन सारा दिन चलता रहे। ... मनन शक्ति के लिए विशेष समय मिले तब अभ्यास करेंगे, ऐसी कोई बात नहीं है। चलते-फिरते भी मनन कर सकते हो। ... मनन शक्ति से बुद्धि बिजी रहेगी तो स्वत: और सहज ही मायाजीत बन जायेंगे।” अ.बापदादा 10.1.88

“यह सब बातें नोट करने बिगर याद नहीं रह सकती हैं।... स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में सदैव नॉलेज मन्थन होती है। ऊंच से ऊंच बाप ही यह रुहानी नॉलेज देते हैं। ... यह नॉलेज बच्चों

की बुद्धि में है परन्तु औरों को भी यथार्थ रीति समझायें और इस ईश्वरीय धन्धे में लग जायें।"

सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

"बच्चे विचार करो - हम किसके आगे बैठे हैं ... इतना पुरुषार्थ करो जो कर्म करते कम से कम 8 घण्टा बाप की याद में रहो। ... सिर पर विकर्मों का बोझा बहुत है, इसलिए सवेरे उठकर बाप को याद करो।" सा.बाबा 26.4.06 रिवा.

"हर एक बात में विचार-सागर मन्थन करना है। अपनी बुद्धि चलानी है। ... बाप सतोप्रधान बनाते हैं तो उनकी मत पर चलना पड़े ना।" सा.बाबा 17.4.06 रिवा.

"बीज को देखने से झाड़ सेकेण्ड में याद आ जाता है कि यह बीज फलाने झाड़ का है। ... इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का सारा राज़ बाप ने समझाया है। ... तुम 84 के चक्र में कैसे आते हो, यह अच्छी रीति नोट करो, फिर इस पर विचार करो। ... एक-एक बात अच्छी रीति समझाओ।" सा.बाबा 26.01.06 रिवा.

"तुमको ज्ञान मिलता है, उस पर विचार-सागर मन्थन करने से अमृत मिलेगा। ... दैवी गुण भी ज्ञान से धारण होते हैं। ... बच्चों को हर बात में विचार सागर मन्थन करना चाहिए। ... जो विचार सागर मन्थन करते होंगे, उनको धारणा भी अच्छी होगी।"

सा.बाबा 28.01.06 रिवा.

"ऐसे अपने से बातें करनी हैं। हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। विचार सागर मन्थन करना चाहिए। ... हम शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा वर्सा लेते हैं। यह याद रखना चाहिए। पढ़ना है और फिर पढ़ाना है।" सा.बाबा 8.7.06 रिवा.

"अभी तुमको ईश्वर की मत मिलती है। ईश्वरीय मत की रिजल्ट 21 जन्म चलती है, फिर आधा कल्प माया की मत पर चलते हैं।... सवेरे में बैठकर विचार-सागर मन्थन करना है।"

सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

"सवेरे उठकर अपने से बातें करो। बाबा एक्ट करके दिखाते हैं कि मैं भी सवेरे उठ विचार सागर मन्थन करता हूँ।... यह कमाई की युक्ति बहुत अच्छी है।"

सा.बाबा 13.9.06 रिवा.

"तुम बच्चों को यह ज्ञान के ख्यालात रहने चाहिए।... अभी तुम ज्ञान से भरपूर हो। अभी तुमको सबको ज्ञान ही सुनाना है। ... सवेरे उठकर बाप को बहुत प्रेम से याद करना है, ... बाप से बातें करनी हैं। इसको ही विचार-सागर मन्थन करना कहा जाता है।"

सा.बाबा 16.9.06 रिवा.

"घड़ी-घड़ी यह चिन्तन करने से बच्चों को खुशी रहेगी और पुरुषार्थ भी करेंगे।... सारा दिन

बुद्धि में विचार सागर मन्थन चलना चाहिए। जैसे गाय खाना खाकर उगारती रहती है, ऐसे उगारना है। बच्चों को अविनाशी खज़ाना मिलता है। यह है आत्माओं के लिए भोजन।”

सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

“रोज़ सवेरे उठकर यह विचार सागर मन्थन करो और यही चार्ट रखो। कितना समय हमने बाप को याद किया, कितनी जंक उतरी है। ... अन्दर में यही घोटना है - हम आत्मा हैं। गाते भी हैं तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुवीर। ... एकान्त में बैठकर अपने साथ बातें करो।” सा.बाबा 14.6.06 रिवा.

“यह सारा ज्ञान बच्चों की बुद्धि में टपकना चाहिए। ... बाप बेहद का वर्सा देने कल्प-कल्प आते हैं, यह तो छी-छी दुनिया है। ऐसी-ऐसी बातें अपने आपसे करनी होती हैं।”

सा.बाबा 29.5.06 रिवा.

“ऐसे-ऐसे विचार-सागर मन्थन करना चाहिए। ... बाप तुमको आप समान नॉलेजफुल बनाते हैं। अभी तुम नॉलेजफुल बन रहे हो। ... कल्प पहले भी ऐसे हुआ है। पुरानी दुनिया का विनाश होना है। कोई अफसोस की बात नहीं।” सा.बाबा 30.9.06 रिवा.

श्रीमत और गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ

स्टूडेण्ट लाइफ इज़ दि बेस्ट कहा गया है। वास्तव में वह स्टूडेण्ट लाइफ भी बेस्ट है परन्तु ये गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ तो बेस्ट में भी बेस्ट है।

विचार करो सर्वशक्तिवान ज्ञान का सागर सच्चिदानन्दघन परमात्मा शिक्षक बनकर पढ़ाये और सच्चिदानन्दमय आत्मा बैठकर पढ़े तो वह जीवन कितना सुखमय होगा और उस पढ़ाई का परिणाम क्या होगा। जिस पढ़ाई का परिणाम देवताई जीवन है, जो सर्वगुण सम्पन्न... सदा सुखमय है परन्तु फिर भी उतरती कला तो होती है। ये जीवन तो परमानन्दमय है, चढ़ती कला का जीवन है।

बाबा ने कहा है - ऐसी पढ़ाई में कब अलबेलापन नहीं होना चाहिए, पढ़ाई एक दिन भी मिस नहीं करनी चाहिए, सदा पढ़ाने वाला याद रहना चाहिए, क्लास में बैठते समय बुद्धि सिवाए पढ़ाई और पढ़ाने वाले टीचर के सिवाए और कहीं न जानी चाहिए। क्लास में बैठे अगर बुद्धि बाहर भटकती है तो वह भी पाप हो जाता है क्योंकि वह क्लास का वातावरण दूषित करता है। वह भी आत्मा पर बोझा चढ़ जाता है क्योंकि उससे अन्य स्टूडेण्ट्स का भी अहित होता है। समय पर टीचर से पहले क्लास में जाना चाहिए। मुरली के पहले और बाद में योग करना चाहिए। पढ़ाई के बाद जो पढ़ा उसको एकान्त में उगारना चाहिए, उस पर विचार-सागर

मन्थन करना चाहिए। क्लास में प्वाइन्ट्स नोट करनी चाहिए। कार्य-व्यवहार में भी पढ़ाई और पढ़ाने वाला शिक्षक याद रहना चाहिए।

इस ईश्वरीय पढ़ाई, पढ़ाने वाले शिक्षक और पढ़ाई के परिणाम को बुद्धि में रखकर उसका नशा और खुशी बुद्धि में रहनी चाहिए। बाबा ने कहा है -उस आई.सी.एस. की पढ़ाई पढ़ने वालों को कितना नशा रहता है और तुम्हारी पढ़ाई तो है मनुष्य से देवता बनने की, जिन देवताओं के आगे आजकल के राजायें भी माथा झुकाते हैं। उस पढ़ाई का फल तो एक ही जन्म तक सीमित है परन्तु इस पढ़ाई से तो 21 जन्म के लिए कमाई होती है सो भी सदा सम्पन्न और सुखमय।

“यह है गॉडली युनिवर्सिटी। भगवान पढ़ाते हैं, देही-अभिमानी भी वही बना सकते हैं। वह और कोई हुनर जानता ही नहीं। ... बाप इस समय ही आते हैं तुमको देही-अभिमानी बनाने। ... यह पढ़ाई है मनुष्य से देवता बनने की।” सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

“सच्चे-सच्चे स्टूडेण्ट बनो। अच्छे स्टूडेण्ट जो होते हैं, वे एकान्त में बगीचे में जाकर पढ़ते हैं। ... पढ़ाई के लिए टाइम निकालना चाहिए। स्वीट बाप और स्वर्ग को याद करेंगे तो अन्त मति सो गति हो जायेगी।” सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

“इसमें योग बहुत जरूरी है। योग से ही हमारी आत्मा जो पतित बन गई है, वह पावन बनेगी। फिर हम पवित्र बन पवित्र दुनिया में राज्य करेंगे। सब इम्तहानों में सबसे बड़ा यह इम्तहान वा सभी पढ़ाइयों से ऊंच पढ़ाई यह है।... बच्चों को यहाँ बैठे यह खुशी रहनी चाहिए। स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट यह है।” सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

“अपना गॉडली स्टूडेण्ट रूप सदा स्मृति में रहे। ... भगवान मेरे लिए बाप-टीचर बनकर आये हैं।... क्लास में मुरली सुनाने वाले को नहीं देखो लेकिन बोलने वाले बोल किसके हैं, उसको सामने देखो।” अ.बापदादा 31.12.70

“काम विकार है मुख्य। एक काम विकार के कारण सारी क्वालिफिकेशन बिगड़ पड़ती है, इसलिए बाप कहते हैं - काम विकार को जीतो तो जगतजीत बनेंगे। ... यह पढ़ाई है ही पतित से पावन बनने की।” सा.बाबा 17.11.04 रिवा.

“वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का राज़ समझकर सबको समझाओ। मूल बात है मन्मनाभव। याद की यात्रा है नम्बरवन। ... पढ़ाई कितनी मीठी लगती है क्योंकि नॉलेज इज सोर्स ऑफ इन्कम।” सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

“यह एक ही पढ़ाई है, जिससे तुम्हारी कमाई होती है। ... कोई समय ऐसी गुह्य बातें निकलती हैं, जो पुराना संशय ही उड़ जाता है, इसलिए पढ़ाई कब मिस नहीं करनी चाहिए।”

सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

"यह स्टूडेण्ट लाइफ भी एक ही बार होती है, जब भगवान आकर पढ़ाते हैं। ... जब भगवान हमको पढ़ाते हैं तो तुमको कितना हर्षित रहना चाहिए।" सा.बाबा 16.5.05 रिवा.

"कोई अभिमान के कारण हिम्मत द्वारा मदद की विधि को भूल जाते हैं ... यह है अटेन्शन रखने में अलबेलापन। जहाँ तक जीना है वहाँ तक पढ़ाई और सम्पूर्ण बनने का, बेहद की वैराग्य वृत्ति का अटेन्शन रखना ही है। ब्रह्मा बाप को देखा ... नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते हुए भी अलबेले नहीं रहे।"

अ.बापदादा 22.11.87

"बच्चे, जरा सोचो तो सही पढ़ाने वाला कौन है, पढ़ने वाले कौन हैं! ... तुमको पढ़ाकर तुम्हारे लिए सारी दुनिया को ही बदल देते हैं। ... तुम बाप को अच्छी रीति जानते हो और बाप द्वारा सृष्टि-चक्र को भी जाना है।" सा.बाबा 6.10.05 रिवा.

"तुम बच्चे विचार कर त्योहारों को नम्बरवार लिखो। ... पहले कहेंगे शिवजयन्ति, फिर गीता जयन्ति। ... शिवबाबा ने ज्ञान सुनाया, जिसको गीता कहा जाता है।"

सा.बाबा 29.9.05 रिवा.

"रुहानी बाप समझाते हैं - रुहानी बच्चों को देही-अभिमानी अवस्था में निश्चयबुद्धि होकर बैठना वा सुनना है। ... यह सद्गति और दुर्गति का चक्र हर एक की बुद्धि में रहना ही चाहिए। चलते-फिरते बुद्धि में यह चक्र रहे।" सा.बाबा 22.10.05 रिवा.

"स्टूडेण्ट्स को अपनी पढ़ाई का नशा होना चाहिए, करेक्टर्स का भी ख्याल होना चाहिए। विवेक कहता है जबकि यह गॉडली पढ़ाई है तो उसमें एक दिन भी मिस नहीं करना चाहिए। टीचर से पहले क्लास में जाना चाहिए। टीचर के बाद क्लास में आना भी टीचर की इन्सल्ट है।" सा.बाबा 7.11.05 रिवा.

"जो ज्ञान डांस के शौकीन हैं, उनको ही सामने बैठना चाहिए। ... उनको खुशी होती रहेगी, हमको भी डांस करना है। यह है ज्ञान डांस।" सा.बाबा 17.11.05 रिवा.

"तुम बच्चों की पढ़ाई कितनी ऊंची है। तुम बच्चे मनुष्य से देवता बनने वाले हो। ... इसलिए तुम बच्चों को गुप्त नशा रहना चाहिए।" सा.बाबा 27.11.05 रिवा.

"आखिर वह दिन आया आज ... यह है श्री-श्री शिवबाबा की श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। ... बाप पहली-पहली मत देते हैं - बच्चे, देही-अभिमानी बनो, शिवबाबा हम आत्माओं को पढ़ाते हैं, यह पक्का-पक्का याद करो।" सा.बाबा 25.8.05 रिवा.

"जैसा समय वैसी स्थिति। पढ़ाई के समय अगर कोई कहे कि मैं आवाज़ से परे स्थिति में

बहुत शक्तिशाली अनुभव कर रहा हूँ, तो पढ़ाई के समय यह राइट है ? ... टीचर के सामने गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ ही यथार्थ है।" अ.बापदादा 12.3.88

"जैसा समय वैसी स्थिति। पढ़ाई के समय अगर कोई कहे कि मैं आवाज़ से परे स्थिति में बहुत शक्तिशाली अनुभव कर रहा हूँ, तो पढ़ाई के समय यह राइट है ? ... टीचर के सामने गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ ही यथार्थ है।" अ.बापदादा 12.3.88

"भल यहाँ बैठे कोई की बद्धि में सर्विस के ख्यालात भी चलते हैं परन्तु जो अच्छे बच्चे होंगे, वे समझेंगे - अभी तो हमको बाप से ही सुनना है। और कोई संकल्प आने नहीं देंगे। बाप ज्ञान रत्नों से झोली भरने आये हैं।" सा.बाबा 10.02.06 रिवा.

"सभी क्लासेज जरूर अटेण्ड करना चाहिए क्योंकि हर एक रता में बापदादा वा ड्रामानुसार कोई न कोई विशेषता भरी हुई है।... क्लास की कई बातें समय पर बरोबर काम में आयेंगी। ... पढ़ाई का अर्थ सिर्फ सुनना नहीं लेकिन पढ़ाई का अर्थ है सुनना और करना।"

अ.बापदादा 4.12.95

"जिस समय कोई ऐसी परिस्थिति आ जाये तो अपने को स्टूडेण्ट बनाकर आपही यह "पॉजिटिव थिंकिंग" का कोर्स कराओ। अपने को करा सकते हो या सिर्फ दूसरों को ही करा सकते हो ? ... अगर हलचल में आते हैं तो उसका कारण है - नेगेटिव सुनना, सोचना वा बोलना या करना।" अ.बापदादा 26.2.95

श्रीमत और पढ़ाई एवं परीक्षा

पढ़ाई में परीक्षा भी अवश्य होती है, इसलिए पढ़ने वाले स्टूडेण्ट्स, उस परीक्षा में पास होने का भी संकल्प और निश्चय अवश्य रखते हैं परन्तु लौकिक पढ़ाई में आने वाला पेपर पहले से पता नहीं होता है। परन्तु बाबा जो पढ़ाई पढ़ाता है, उसमें पास होने के लिए पेपर क्या आने वाला है, वह भी पहले से ही बता देता है, फिर भी ड्रामानुसार परीक्षा में नम्बरवार ही पास होते हैं। परीक्षा में अच्छे मार्क्स से पास हों, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है और युक्तियां भी बताई हैं।

बाबा ने ये भी कहा है - इस पढ़ाई में तुम्हारा हर सेकेण्ड पेपर होता है और उस पेपर के मार्क्स भी अन्तिम परीक्षा में जमा होते हैं।

"तुम्हारा पेपर ऊपर से आयेगा। सब साक्षात्कार करेंगे। कैसी वण्डरफुल पढ़ाई है। कौन पढ़ाते हैं, किसको पता नहीं है।... यह जो गायन है अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो, यह पिछाड़ी की बात है।" सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

“आगे परीक्षायें भी कड़ी आने वाली हैं, उनका सामना करने के लिए पुरुषार्थ भी कड़ा चाहिए। ... मुख्य श्रीमत यही है कि ज्यादा से ज्यादा समय याद की यात्रा में रहना है क्योंकि याद की यात्रा से ही पवित्रता, दैवीगुण और सर्विस में सफलता होगी।”

अ.बापदादा 19.6.69

“दृष्टि से सृष्टि बनती है।... बाप पहला पाठ क्या पढ़ाते हैं? भाई-भाई की दृष्टि से देखो। ... पुरुषार्थ भी मुख्य इस बात का ही है दृष्टि बदलने का। जब दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति स्वत: बदल जाती है।” अ.बापदादा 18.6.69

“फाइनल पेपर जो विनाश का है, उसमें पास होने के लिए भी सहनशक्ति चाहिए।... सहनशक्ति कैसे आयेगी? जितना-जितना बाप-टीचर-सतगुरु के स्नेही बनेंगे। स्नेह में शक्ति आ जाती है।... स्नेह कम है इसलिए सहनशक्ति भी कम है।” अ.बापदादा 26.5.69

“साकार तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था, वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ। अब पढ़ाई पढ़ाने के लिए नहीं आते हैं। वह कोर्स, उसी तन द्वारा पार्ट पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिए, बहलाने के लिए। मुख्य बात है अशरीरी बनने की।” अ.बापदादा 26.6.69

“कहाँ तक रिवाइज कोर्स पूरा हुआ है, वह अभी निर्णय करना है।... साकार तन के हर कर्म, हर स्थिति से अपने को भेंट करना है। उनको देखने, भेंट करने से पता पड़ेगा कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं।” अ.बापदादा 26.6.69

“सृष्टि में सारा झाड़ समाया हुआ है परन्तु सृष्टि का ठिकाना संगम है। संगमयुग की बलिहारी है, जिसने आप सबको यहाँ लाया है।... बापदादा की जो पढ़ाई मिली है, उसको धारण करो। धारणा से ही धीर्यवत और अन्तर्मुख होंगे।” अ.बापदादा 6.7.69

“पास विद ऑनर और पास में क्या फर्क है? पास विद ऑनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सजा न खायें। धर्मराज की सजाओं की तो बात पीछे है लेकिन अपने संकल्पों की भी उल्झन अथवा सजाओं से परे। इसको कहते हैं पास विद ऑनर।” अ.बापदादा 6.8.70

“वारिस कितने बनाये, प्रजा कितनी बनाई। ... फाइनल पेपर का आज सुना रहे हैं। किस-किस क्वेश्चन पर मार्क्स मिलते हैं। एक तो यह क्वेश्चन अन्तिम रिजल्ट में होगा, दूसरा सुनाया अन्त तक सर्विस का शो और तीसरी बात आदि से अन्त तक अवस्था कैसी रही।... सारे जीवन की सर्विस, स्व-स्थिति और अन्त तक सर्विस का सबूत - यह तीन बातें देखी जायेंगी।”

अ.बापदादा 20.12.69

“कोई कितनी भी कोशिश करें कि हम जल्दी कर्मातीत बन जायें परन्तु होगा नहीं। राजधानी स्थापन हो रही है। कोई स्टूडेण्ट कितना भी पढ़ाई में होशियार हो परन्तु इम्तहान तो टाइम पर

ही होगा। … 16 कला सम्पूर्ण आत्मा अभी कोई बन नहीं सकती।”

सा.बाबा 28.4.05 रिवा.

“यहाँ पढ़ा हुआ, वेद-शास्त्र आदि सब भूल जाना है। अभी मैं जो सुनाता हूँ, वह सुनो। … जो यहाँ के होंगे, वे ही समझने की कोशिश करेंगे। … सर्विस की युक्तियाँ बाबा बहुत बतलाते हैं, बच्चों को अमल में लाना चाहिए।” सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

“फुल पास होने के लिए सबसे सहज साधन है - जो भी कोई पेपर आते हैं और इस तपस्या वर्ष में भी पेपर अवश्य आयेंगे। ऐसे नहीं कि नहीं आयेंगे लेकिन पेपर समझ कर पास करो।… पास होना है, पास करना है और बाप के पास रहना है तो फुल पास हो जायेंगे।”

अ.बापदादा 13.2.91

“बात चाहे कितनी भी बुरी हो लेकिन पाठ अच्छा ही पढ़ाती है। … धीरज का पाठ पढ़ाती है … इसलिए कहते हैं - जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होना है, वह और भी अच्छा होगा। अच्छाई उठाने की सिर्फ बुद्धि चाहिए।” अ.बापदादा 15.4.92 दादियों से

“माया को चेलेन्ज करने वाले हो। स्टूडेण्ट्स कभी पेपर से घबराते हैं? … जो योग्य स्टूडेण्ट्स होते हैं वे आवाह्न करते हैं कि जल्दी से पेपर हो और क्लास आगे बढ़े।”

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 1

“इस ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ने की विधि सिर्फ सुनना नहीं है लेकिन हर महावाक्य स्वरूप में लाना है। … लक्ष्य को लक्षण में लाना - इसमें लक्ष्य और लक्षण में फर्क पड़ जाता है।”

अ.बापदादा 13.10.92

“चेक करो - अगर बार-बार किसी भी बात में स्थिति नीचे-ऊपर होती है अर्थात् बार-बार पुरुषार्थ में मेहनत करनी पड़ती है, इससे सिद्ध है कि ज्ञान की मूल सब्जेक्ट के दो शब्द - “रचता और रचना” की पढ़ाई को स्वरूप में नहीं लाया।” अ.बापदादा 13.10.92

“अष्ट शक्तियां, यह अष्ट तो निशानी मात्र है लेकिन हैं तो सर्व शक्तियां। … बाप ने तो सर्व शक्तियां दीं लेकिन मैंने कितनी लीं और धारण कीं। … एक भी शक्ति कम होगी तो समय पर वही धोखा दे देगी। … वही पेपर आता है।” अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 2

“फेल होने का कारण है - कोई न कोई बात फील कर लेते हो।… पास करना है, पास होना है और पास रहना है।” अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 1

“फुल पास होने के लिए सबसे सहज साधन है - जो भी कोई पेपर आते हैं और इस तपस्या वर्ष में भी पेपर अवश्य आयेंगे। ऐसे नहीं कि नहीं आयेंगे लेकिन पेपर समझ कर पास करो। … पास होना है, पास करना है और बाप के पास रहना है तो फुल पास हो जायेंगे।”

अ.बापदादा 13.2.91

"यह है योग और पढ़ाई है रेस। ... अब तुमको यह पढ़ाई पढ़नी है, सबको रास्ता बताना है और अंधों की लाठी बना। घर-घर में यह पैगाम पहुँचाना है।"

सा.बाबा 4.8.06 रिवा.

"पुरानों में अलबेलापन ज्यादा आता है। ... सब सुन लिया, सब समझ लिया। सोचो, अगर सब समझ लिया होता तो बापदादा पढ़ाई पूरी कर देते। ... औरों को नही देखो, बाप को देखो।" अ.बापदादा 31.12.95

श्रीमत और फाइनल पेपर

परीक्षा का फाइनल पेपर क्या होगा और उसमें कैसे और कौन पास हो सकेंगे, उसमें पास होने के लिए पुरुषार्थ क्या करें, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है, उसके सब विधि-विधान भी बताये हैं। फाइनल पेपर में पास होने का साकार बाबा का उदाहरण भी दिखाया है

"तो लास्ट पेपर क्या देखा? स्नेह होते हुए भी नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। यही लास्ट पेपर यादगार में भी गायन रूप में है। ... एक तरफ स्नेह को समाना और दूसरे तरफ रहा हुआ लास्ट का हिसाब-किताब सहन शक्ति से समाप्त करना। ... कर्मभोग को भी समाना और स्नेह को भी समाना।" अ.बापदादा 18.1.76

"अभी स्नेह के साथ शक्ति भी है। ... ऐसी बातों का एलान निकलना है, जो आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी। ऐसे पेपर में जो पास होंगे, वे ही पास विद् ऑनर होंगे।"

अ.बापदादा 20.12.69

"फाइनल पेपर सेकेण्ड का ही होना है, मिनट का भी नहीं। सोचने वाला नहीं पास कर सकेगा, अनुभव वाला पास हो जायेगा। तो अभी सभी सेकेण्ड में 9मैं परमधाम निवासी श्रेष्ठ आत्मा हूँ", इस स्मृति का स्वीच ऑन करो, और कोई भी स्मृति नहीं हो, बुद्धि में कोई हलचल नहीं हो, अचल।" अ.बापदादा 30.11.03

"न्यारे तब हों सकेंगे जब जो कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटेचमेन्ट होगी तो फिर एक सेकण्ड में डिटेच नहीं हो सकेंगे। ... क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपनी तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे।... अगर इस सब्जेक्ट में नम्बर कम हैं तो फाइनल नम्बर में आगे नहीं आ सकेंगे।" अ.बापदादा 16.10.69

“लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ की विधि है - प्रतिज्ञा।... प्रतिज्ञा अर्थात् संकल्प किया और स्वरूप हुआ। ... समय मिलेगा एक सेकण्ड का। लास्ट पेपर का टाइम भी फिक्स है और पेपर भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना - “नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप”।” अ.बापदादा 23.6.73

“यह तो अभी कुछ नहीं हुआ। अब तो बहुत कुछ होना है। आप सोचेंगे अचानक हो गया, इसलिये थोड़ा-सा हुआ। लेकिन पेपर तो अचानक आवेंगे, पेपर कोई बता कर नहीं आवेंगे। पहले बता तो दिया है कि ऐसे-ऐसे पेपर होने वाले हैं। लेकिन उस समय अचानक होता है।”

अ.बापदादा 19.9.72

“सेकेण्ड के हार-जीत के खेल में कौन-सी शक्ति चाहिए? ऐसे समय में समेटने की शक्ति आवश्यक है। जो अपने देहाभिमान के संकल्प को, देह की दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को, ... के संकल्प को भी समेटना है।” अ.बापदादा 14.9.75

“फेल होने का कारण है - कोई न कोई बात फील कर लेते हो। ... पास करना है, पास होना है और पास रहना है।” अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 1

“तपस्या अर्थात् तेरा और तपस्या भंग होना माना मेरा। ... अन्तिम पेपर का क्वेश्चन ही यह आना है - नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप।” अ.बापदादा 4.12.91

“जो फाइनल नम्बर मिलेंगे, उसमें ये नहीं होगा कि इसने कितने भाषण किये या इसने कितने स्टूडेण्ट वा सेन्टर बनाये हैं लेकिन योग्य कितनों को बनाया है ... फाइनल नम्बर जितनों को सुख दिया, जितना स्वयं शक्तिशाली रहे, उस प्रमाण मिलेंगे। इसलिए चाहिए-चाहिए खत्म करो। नहीं तो योग नहीं लगेगा।” अ.बापदादा 4.12.95

“एक सेकेण्ड में डॉट लगा सकते हो?... बुद्धि कर्म में लगी हुई है लेकिन डायरेक्शन मिले - फुल स्टॉप। तो फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? ... अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकेण्ड के फुल स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकेण्ड में विस्तार को समा लो, सार स्वरूप बन जाओ। ... यह अभ्यास स्वयं ही करो, किसी के कराने की आवश्यकता नहीं है।” अ.बापदादा 7.3.95

“विनाश अचानक होना है, परिवर्तन भी अचानक होना है। ... पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी, फिर अचानक विनाश होगा। ... पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपल मदद नहीं करता।” अ.बापदादा 23.2.97

योग

श्रीमत और योग अर्थात् याद

बाबा ने कहा है योग अक्षर भक्ति मार्ग का है, इसलिए योग न कहकर इसे याद करो क्योंकि इसमें परमात्मा को याद करना है, जिस याद से ही आत्मा का पापों का बोझा खत्म होगा और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति जाग्रत होगी, परमात्मा की याद से श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान होगा, जिससे कर्म श्रेष्ठ होंगे और जीवन सुखमय होगा।

योग की यथार्थता को जानकर देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने बिन्दु स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा बिन्दु को परमधाम में याद करना ही योग की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है परन्तु हमारा सदा परमात्मा के साथ योग रहे, उसके लिए चलते-फिरते आत्मिक स्वरूप में रहने का अभ्यास करना है। बाबा ने कहा है - तुम कर्मयोगी हो, तुमको कर्म भी योग में रहकर करना है, इसलिए योग का अभ्यास भी आंखे खोलकर करना है, जिससे कर्म करते भी योग की स्थिति रहे।

"तुम एक मुझ बाप को याद करो। किसी देहधारी की स्तुति नहीं करनी है। आत्मा की बुद्धि में कोई देह याद न आये, यह अच्छी रीति समझने की बात है।"

सा.बाबा 10.12.05 रिवा.

"बाप की याद के साथ-साथ घर की भी याद जरूर चाहिए क्योंकि अब वापस घर जाना है। घर में ही बाप को याद करना है। भल तुम जानते हो बाबा इस तन में आकर हमको सुना रहे हैं परन्तु बुद्धि परमधाम स्वीट होम से टूटनी नहीं चाहिए। ... बाप तो सेकेण्ड में कहां भी जा सकते हैं।" सा.बाबा 13.8.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - अभी तुमको वापस जाना है। अपने को आत्मा समझो, आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हों, और कोई उपाय नहीं है।"

सा.बाबा 10.10.05 रिवा.

"अभी बाप कहते कोई भी विकार की बात इन कानों से न सुनो। ... बाप फरमान करते - मामेकम् याद करो। किसी देहधारी को याद नहीं करना है। मम्मा-बाबा भी देहधारी हैं ना। मैं तो विदेही हूँ, इसमें बैठ तुमको ज्ञान देता हूँ।" सा.बाबा 11.10.05 रिवा.

"पहले-पहले तुम यह समझाओ कि ऊंच से ऊंच भगवान एक है, याद भी उनको करना चाहिए। ... भल देवतायें भी मनुष्य हैं परन्तु वे हैं दैवी गुणों वाले, इस समय सब मनुष्य हैं

आसुरी गुणों वाले। सतयुग में काम महाशत्रु होता नहीं। ... उसके लिए एक ही दवाई मिलती है - बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे।" सा.बाबा 7.12.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी। ... भारत में ही स्वर्ग था। अभी नर्क के विनाश के लिए महाभारत लड़ाई खड़ी है। ... बाप की श्रीमत पर ही हम कहते हैं कि हम भारत को पावन बनाकर ही छोड़ेंगे।" सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

योग क्या है ?

एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद ही योग है। विचार करो - हमारी अव्यभिचारी याद कहाँ तक है ?

एक परमात्मा ही पतित-पावन है और पावन बनना हर आत्मा का लक्ष्य है, जिसके लिए ही हम परमात्मा के पास आये हैं, उनके बने हैं, इसलिए पावन बनने के लिए एक बाप को ही याद करने की श्रीमत दी है, जिसको अव्यभिचारी याद कहा जाता है। एक बाप के सिवाए किसी भी अन्य व्यक्ति या वस्तु को याद करना व्यभिचारीपना है और व्यभिचारी कब भी बाप की ब्लिस को पा नहीं सकता, उसकी मदद का अनुभव कर नहीं सकता।

"योग लगाना भी क्या है ! खुशी में नाचना ही तो है ना। बाप की महिमा गाते रहो, इसी में सेवा है, इसी में ही योग है, इसी में ही ज्ञान वा धारणा है।"

अ.बापदादा 25.12.89 पार्टी 4

"श्रीमत मिलती है - मामेकम् याद करो। कोई-कोई को तो अभी तक भी समझ में नहीं आता कि हम याद कैसे करें। ... जब अपने को आत्मा बिन्दी समझें तब बिन्दुरूप बाप की याद आये।" सा.बाबा 14.9.05 रिवा.

अब हमारी अव्यभिचारी याद कैसे रहे, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है और अनेक प्रकार विधि-विधान, उदाहरण बताये हैं, जिससे हम याद की यथार्थता को समझ सकें और उस अनुसार याद करके अपनी स्थिति को जमा सकें। याद में क्या-क्या बातें सहयोगी हैं और क्या-क्या बातें बाधक हैं, विघ्नरूप हैं, उनके विषय में भी ज्ञान दिया है और उनसे बचने के लिए भी श्रीमत दी है। हमारी याद कहाँ-कहाँ जाती है और क्यों जाती है, उसका कारण और निवारण के लिए भी श्रीमत दी है।

दूसरों की दी हुई चीज उपयोग करेंगे तो उनकी याद आयेगी। इसलिए यज्ञ की दी

हुई चीज का ही उपयोग करो। हम जो पढ़ते हैं या सुनते हैं तो उसमें लिखने वालों की या सुनाने वालों की याद स्वभाविक ही सूक्ष्म में रहती है, इसलिए बाबा ने कहा है - मैं जो पढ़ाता, वही पढ़ो और वही सुना। अनावश्यक संग्रह न करो - नहीं तो वह भी अन्त में याद आयेगा और तुम्हारा पदभ्रष्ट हो जायेगा। बीमारी, दुखदर्द के समय भी किसी देहधारी की याद नहीं आनी चाहिए, कोई लौकिक सम्बन्धी याद नहीं आना चाहिए। कोई ऐसा कर्म न करो, जो दिल को खाता रहे क्योंकि उस समय परमात्मा की याद रह नहीं सकती। राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा के वश न हो क्योंकि उसके वशीभूत उन व्यक्तियों की ही याद आयेगी, परमात्मा की याद ठहर नहीं सकती। आदि-आदि अनेक बातों का ज्ञान देकर याद को सफल बनाने की श्रीमत दी है।

याद की सफलता के लिए बाबा ने यह भी कहा है - तुमको बहुत ऊंची चीज का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि कीमती चीज होगी तो उसकी ओर ध्यान अवश्य जायेगा और योग सिद्ध नहीं होगा। वास्तव में बाबा की हम आत्माओं के प्रति जो श्रीमत है, उसके अनुसार हमको उतना ही उपभोग करना चाहिए, जिससे हमारी कार्यक्षमता की वृद्धि हो या कार्यक्षमता स्थिर रहे। अधिक विलासितापूर्ण या दिखावे के लिए वस्तुओं के उपभोग से कार्यक्षमता का ह्रास होता है, जिसके उपभोग और उपयोग के लिए बाबा ने मना की है।

"बाबा हमेशा कहते मांगो मत। ... दाता के बच्चे हो ... और किससे लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि वह शिव बाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिव बाबा के भण्डारे में।"

सा.बाबा 25.1.72 रिवा.

"कोई भी गुरु गोसाई आदि का फोटो भी न रखना है। इसलिए बाबा फोटो निकालने को भी मना करते हैं। फोटो में तुम इस मम्मा-बाबा को देखते रहेंगे और ही वह समय तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। बाबा-मम्मा का चित्र देखने लग पड़ेंगे, शिव बाबा भूल जायेगा। तुम आत्माओं को तो निराकार बाप को याद करना है। इसलिए मैं फोटो आदि देखता हूँ तो फाड़ भी देता हूँ। समझते हैं यह मम्मा-बाबा के फोटो देखते रहते हैं। मरने समय अगर उनको ही देखते रहे तो दुर्गति हो जायेगी। तुमको याद करना है एक शिव बाबा को। उसका फोटो निकल नहीं सकता। इसलिए बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता है। परन्तु क्या करें, बच्चे नाराज न हो जायें इसलिए खुश कर लेते हैं। परन्तु समझते हैं इनका शिव बाबा से योग टूटा हुआ है, तब कहते हैं बाबा हमारे साथ फोटो निकालो। वह गुरु लोग तो बहुत खुश होते हैं। बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता। कहाँ साकार में फंस कर मर न जायें।"

सा. बाबा 16.7.72 रिवाइज

"देही-अभिमानी बनो, नहीं तो पुराने सम्बन्धी याद पड़ते रहेंगे। छोड़ा भी है फिर भी बुद्धि जाती रहती है। नष्टोमोहा हैं नहीं, इसको व्यभिचारी याद कहा जाता है। वे सद्गति को पा न सकें क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते रहते हैं।" सा.बाबा 18.3.71 रिवा.

"पहले-पहले जिन्होंने अव्यभिचारी भक्ति शुरू की है, वे ही आकर ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ करेंगे। ... अविनाशी ज्ञान रतनों का सेल्समैन बनना है।" सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

"कोई-कोई को मोह का कीड़ा होने के कारण फिर धारणा नहीं होती। तुम गाते हो "और संग तोड़ आप संग जोड़ेंगे", बाप कहते हैं मुझे याद करो तो अन्त मते सो गति हो जायेगी। ये बातें बुद्धि में क्यों नहीं बैठती। देहाभिमान बहुत है इसलिए धारणा नहीं होती।"

सा.बाबा 25.4.71 रिवा.

"जो जैसा कर्म करते हैं वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है। बाबा यह भी समझाते हैं कपड़े आदि कुछ भी चाहिए तो शिवबाबा के यज्ञ से लो। और कोई से लेंगे तो वह याद आयेगा, तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। इसमें लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए क्योंकि अभी हम वापस जा रहे हैं। ऐसा न हो कहीं दिल लग जाये और तकदीर बिगड़ जाये।"

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

"इसमें चित्र आदि की कोई दरकार नहीं है। हमको कोई चित्र आदि याद नहीं करना है। अन्त में सिर्फ यह याद रहेगा कि हम आत्मा हैं, मूलवतन की रहने वाली हैं, यहाँ हमारा पार्ट है। ... ये चित्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग की चीजें।" सा.बाबा 14.7.05 रिवा.

"पहला पाठ ही पालिश है, उसकी बहुत आवश्यकता है। सारे दिन में यह आत्मिक दृष्टि, स्मृति कितना रहती है। इस स्थिति की परख अपनी सर्विस की रिजल्ट से भी देख सकते हो।... सभी से छोटा रूप बाप है और आप सभी का भी है। जीरो को याद करेंगे तो हीरो बनेंगे।" अ.बापदादा 19.7.69

"आत्माभिमानी होंगे तो बाप की याद आयेगी। अगर देहाभिमानी होंगे तो लौकिक सम्बन्धी याद आयेंगे। ... अभी संगमयुग पर ही तुम बच्चों को आत्माभिमानी बनाया जाता है।"

सा.बाबा 6.6.05 रिवा.

"अभी मम्मा के नाम-रूप को भी याद नहीं करना है। हमको भी उन जैसी धारणा करनी है। ... सिर्फ मम्मा की महिमा करने से थोड़ेही बन जायेंगे। बाप तो कहते हैं - मामेकम् याद करो, मम्मा जैसा ज्ञान सुनाना है। ... इस दादा को भी याद करने से पेट नहीं भरेगा। याद एक को ही करना है। बलिहारी उस एक की है।" सा.बाबा 17.10.05

"शिवबाबा तुम बच्चों को याद करते हैं, ब्रह्मा बाबा याद नहीं करते हैं। शिवबाबा जानते हैं

हमारे सपूत बच्चे कौन-कौन हैं। बाप सर्विसएबुल सपूत बच्चों को याद करते हैं। यह थोड़ेही किसको याद करेंगे। इनकी आत्मा को तो डायरेक्शन मिला है - मामेकम् याद करो।"

सा.बाबा 14.4.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - साकार का भी मुरीद मत बनो, याद मामेकम् करो। यह बाबा भी मुझे याद करते हैं। ... हमको ही पावन बनने के लिए याद करना है। महिमा एक की ही है, उनके सदके इनका मान है। तुमको कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। ... उनको याद करो परन्तु थ्रू इनके कहते हैं।" सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - मुझे याद करो और घर को भी याद करो। ... मुझे भी घर में याद करो। यहाँ तो मैं टेम्प्रेरी आता हूँ। तुम्हारी बुद्धि शान्तिधाम में टिकनी चाहिए। ... अपने घर को भी नहीं भूलो, बाप को भी नहीं भूलो। बाप को याद करने से ही पवित्र बन घर चले जायेंगे।"

सा.बाबा 26.7.06 रिवा.

"श्रीकृष्ण को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। वह तो पिन्स था, उसने प्रालब्ध भोगी, उनकी महिमा की दरकार नहीं है। देवताओं की क्या महिमा करेंगे। ... बाकी उन्होंने क्या किया, सीढ़ी तो उतरते ही आते हैं।" सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

श्रीमत और तपस्या

बाबा ने तपस्या का अर्थ, तपस्या का विधि-विधान और उसका महत्व भी बताया है और तपस्या करने के लिए श्रीमत भी दी है। बाबा ने कहा है - ऐसी तपस्या करो, जो पुराने स्वभाव-संस्कार भस्म हो जायें, उनका नाम-निशान भी न रहे। जब पुराने भस्म होंगे, तब ही नये जाग्रत होंगे।

"अमृतवेले भी बहुत पुरुषार्थ करते हैं लेकिन योग-तपस्या अर्थात् योग तप के रूप में नहीं करते हैं।... याद को इतना पॉवरफुल नहीं बनाया, जो जो संकल्प करो विदाई तो विदाई हो जाये (पुराने स्वभाव-संस्कार की)।" अ.बापदादा 31.12.05

"योग को पॉवरफुल बनाओ। एकाग्रता की शक्ति विशेष संस्कार भस्म करने में आवश्यक है। जिस रूप में, जितना समय एकाग्र होना चाहें एकाग्र हो जाये। एकाग्रता से संकल्प किया और भस्म। इसको कहा जाता है योग-अग्नि।... पुराने संस्कार का रहा हुआ अंश भी वंश पैदा कर देता है।" अ.बापदादा 31.12.05

"मैंजारिटी बच्चों को तपस्या के लिए उमंग-उत्साह अच्छा है, मैनारिटी सोचते हैं कि प्रोग्राम

प्रमाण करना ही है। एक है प्रोग्राम से करना और दूसरा है दिल से उमंग-उत्साह से करना।... परिस्थितियों प्रमाण .. स्व-उन्नति .. तीव्र गति की सेवा और बापदादा के स्नेह का रिटर्न देने के लिए तपस्या अति आवश्यक है।" अ.बापदादा 13.12.90

"तपस्या का सदा और सहज फाउण्डेशन है - बेहद का वैराग्य। बेहद का वैराग्य अर्थात् चारों ओर के किनारे छोड़ देना। ... न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है।" अ.बापदादा 13.12.90

"तपस्या करना अर्थात् एक का बनना, जिसको बाबा एकनामी कहते हैं। तपस्या अर्थात् मन-बुद्धि को एकाग्र करना। तपस्या अर्थात् एकान्त-प्रिय रहना। तपस्या अर्थात् स्थिति को एकरस रखना। तपस्या अर्थात् सर्व प्राप्त खजानों को व्यर्थ से बचाना अर्थात् एकॉनामी से चलना।" अ.बापदादा 13.12.90

"ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही तपस्या है। तपस्या अर्थात् एक की लगन में मगन रहना। ... तपस्या का अर्थ ही है - मन-वचन-कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में अपवित्रता का अंशमात्र भी विनाश हो जाना, नाम-निशान समाप्त हो जाना।" अ.बापदादा 4.12.91

"तपस्या अर्थात् प्योरिटी की पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी का स्वयं भी अनुभव करना और औरों को भी अनुभव कराना। ... जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा कि प्योरिटी की पर्सनॉलिटी कितनी स्पष्ट अनुभव करते थे।" अ.बापदादा 4.12.91

"तपस्या वर्ष अर्थात् तपस्या के वायब्रेशन्स विश्व में और तीव्र गति से फैलाओ। ... विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूँध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं। ... फुटबाल के खेल में बाल आती है तब तो ठोकर लगाते हो। बाल ही न आये तो ठोकर कैसे लगायेंगे।" अ.बापदादा 26.10.91

श्रीमत और योगाभ्यास / श्रीमत और आँखे खोलकर योगाभ्यास

बहुधा दुनिया में साधक आंखें बन्द करके ही ध्यान करते हैं परन्तु बाबा ने कहा है तुम्हारा कर्मयोग है अर्थात् तुमको कर्म करते हुए भी योगी जीवन धारण करना है और घर-गृहस्थ में रहते योगी अवस्था बनानी है। आंखें बन्द करके आत्मा कर्म नहीं कर सकती है और भविष्य नई दुनिया में जो भी प्राप्ति होने वाली है, वह भी हर आत्मा के अभी के कर्म पर ही आधारित है। इसलिए बाबा ने हमको आंखें खोलकर योग का अभ्यास करने की श्रीमत दी है। जब ये आदत पक्की हो जाती है तो कर्म करते भी योग की अवस्था रहती है, जिससे कर्म श्रेष्ठ

होता है और श्रेष्ठ कर्म की प्रालब्ध भी श्रेष्ठ मिलती है।

दूसरी बात बाबा आंखे खोल कर योगाभ्यास करने के लिए क्यों कहते हैं क्योंकि आंखें बन्द करके योगाभ्यास करने पर मन में अनेक प्रकार के संकल्प-विकल्प उठते हैं, जो आंखें खोलकर अभ्यास करने पर नहीं उठते हैं भले ही आंखें खोलकर अभ्यास को पक्का करने में थोड़ा अधिक पुरुषार्थ करना होता है परन्तु वह योग की सिद्धि में बहुत ही हितकर है।

तीसरी बात आंखें खोलकर अभ्यास करने से अपने को आत्मा समझने और दूसरे को भी आत्मिक स्वरूप में देखने से एक-दूसरे को शक्ति की अनुभूति होती है, शक्ति का आदान-प्रदान होता है, जो योग की सिद्धि में बहुत सहायक है। ये सब आंखें खोलकर अभ्यास करने पर ही सम्भव है।

बाबा ने हमको अपने कल्याण के साथ औरों के कल्याण की भी श्रीमत दी है, जो हम आंखें खोलकर योगाभ्यास करने पर ही कर सकते हैं अर्थात् दूसरों को भी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करा सकते हैं।

इस प्रकार हम देखें तो बाबा ने आंखें खोलकर योगाभ्यास करने की जो श्रीमत दी है, वह ही योग का यथार्थ अभ्यास है और योग की सिद्धि के लिए बहुत आवश्यक है।

परमात्मा से सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होगी तो बाप की याद सहज रहेगी, इसलिए बाबा से क्या-क्या प्राप्तियां हुई है, उनको याद करो।

परमात्मा की सदा याद के लिए बाबा से सर्व सम्बन्धों की अनुभूति करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। जब सर्व सम्बन्ध एक बाबा से होंगे तब ही उनकी याद रहेगी।

"बाप को और 84 के चक्र को याद करो। यह है ही सहज याद। ... बाप कहते हैं - कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। ... तुम आत्मा हो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।" सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

"सतयुग में तुम कितने साहूकार थे तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। ... याद से ही फायदा है। भण्डारे में भोजन बनाते हैं तो भी समझो हम शिवबाबा के बच्चों के लिए भोजन बनाते हैं।" सा.बाबा 27.9.05 रिवा.

"ऐसे नहीं कि जिस समय याद में बैठो, उस समय अशरीरी स्थिति का अनुभव करो। नहीं, चलते-फिरते बीच-बीच में यह अभ्यास पक्का करो। आत्मा का स्वरूप ज्यादा याद होना चाहिए। ... "मेरा बाबा" यह भूले नहीं।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 2

"अखण्ड ज्योति को याद करना रांग हो जाता है। याद तो एक्यूरेट चाहिए। पहले एक्यूरेट जानना चाहिए। बाप ही आकर अपना परिचय देते हैं, फिर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का

समाचार सुनाते हैं।" सा.बाबा 11.5.06 रिवा.

श्रीमत और रुहानी ड्रिल अर्थात् सेकण्ड में फुल स्टॉप

योग का अभ्यास ऐसा हो, जो हम एक सेकेण्ड में अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें और जो अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगा, वही यथार्थ रीति परमात्मा की याद में भी स्थित हो सकेगा। इसके लिए बाबा जो अभ्यास कराते हैं, उसको बाबा ने रुहानी ड्रिल कहा है क्योंकि जैसे जिस्मानी ड्रिल से शरीर बलवान बनता है, शारीरिक स्वास्थ्य ठीक होता है, उसी प्रकार रुहानी ड्रिल से आत्मा शक्तिशाली बनती है।

"यह पार्ट भी बहुत थोड़ों का है। अन्त तक भी बाप की प्रत्यक्षता करते जायेंगे।... प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो एक सेकण्ड में अशरीरी हो जायें। सेकण्ड भी बहुत है। सोचना और करना साथ-साथ चले।" अ.बापदादा 20.12.69

"रुहानी ड्रिल अर्थात् रूह को जहाँ चाहें, जैसे चाहें, जब चाहें तब वहाँ स्थित कर सकें। ... प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो एक सेकण्ड में अपनी स्थिति को जहाँ चाहो वहाँ टिका सको।"

अ.बापदादा 23.10.70

"अच्छा अभी सभी एक सेकेण्ड में, एक मिनट नहीं, एक सेकेण्ड में "मैं फरिश्ता सो देवता हूँ" - यह मन्सा ड्रिल सेकेण्ड में अनुभव करो। ऐसी ड्रिल दिन में बार-बार करो। ... यह मन की ड्रिल मन को शक्तिशाली बनाने वाली है। मैं फरिश्ता हूँ, इस पुरानी दुनिया, पुरानी देह, पुराने देह के संस्कार से न्यारी फरिश्ता आत्मा हूँ।" अ.बापदादा 02.11.04

"एक सेकेण्ड में अपना पूर्वज और पूज्य स्वरूप इमर्ज कर सकते हो ? ... तो एक सेकेण्ड में सभी और संकल्प समाप्त कर अपने पूर्वज और पूज्य स्वरूप में स्थित हो जाओ।"

अ.बापदादा 17.02.04

"अगर आवाज से परे निराकार स्वरूप में स्थित हो फिर साकार में आयेंगे तो फिर औरों को भी उस अवस्था में लायेंगे। एक सेकण्ड में निराकार और एक सेकण्ड में साकार - ऐसी ड्रिल सीखनी है। जब ऐसी अवस्था हो जायेगी तब साकार रूप में हर एक को निराकार रूप का आपसे साक्षात्कार होगा।" अ.बापदादा 15.9.69

"मन को यह ड्रिल करानी है। एक सेकण्ड में आवाज में, एक सेकण्ड में आवाज से परे। एक सेकण्ड में सर्विस के संकल्प में आयें और एक सेकण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। इस ड्रिल की बहुत आवश्यकता है।" अ.बापदादा 16.10.69

"कहा जाये कि एक सेकण्ड में साकारी से निराकारी बन जाओ तो बन सकेंगे ? ... प्रश्न का उत्तर देने वाले कौन हैं ? वह तो बहुत नाम सुनाये, फिर प्रश्न-उत्तर से पार जाने वाले कौन

हैं ?… बाप समान भी बनना है और प्रजा भी बनानी है।” अ.बापदादा 20.10.69

“आर्डर मिले और मन-बुद्धि एकाग्र हो जाये … अन्तिम समय की अन्तिम रिजल्ट का समय एक सेकण्ड के क्वेश्चन का एक ही होगा। … सम्पन्न और सम्पूर्ण के नेचुरल संस्कार हैं।” अ.बापदादा 27.11.87

“एक्सरसाइज और भोजन के ऊपर अटेन्शन है … लेकिन आप यह मन की एक्सरसाइज अभी-अभी ब्राह्मण, ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता। यह मन्सा ड्रिल का अभ्यास सदा करते रहो और शुद्ध भोजन अर्थात् मन का शुद्ध संकल्प। व्यर्थ संकल्प, नेगेटिव संकल्प चलता है तो यह है मन का अशुद्ध भोजन। … जितना समय चाहो, उतना समय शुद्ध संकल्प स्वरूप बन जाओ।” अ.बापदादा 15.12.05

“बापदादा एक सेकेण्ड में अशरीरी भव की ड्रिल देखना चाहते हैं। अगर अन्त में पास होना है तो यह ड्रिल बहुत आवश्यक है। इसलिए अभी इतने बड़े संगठन में बैठे एक सेकेण्ड में देहभान से परे स्थिति में स्थित हो जाओ। कोई आकर्षण आकर्षित न करे।” अ.बापदादा 30.11.05

“सेकेण्ड में जहाँ, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहो, वहाँ सेकेण्ड में लग जाये। हलचल में नहीं आये। … इस अभ्यास को सारे दिन में कर्म करते हुए भी करो। इसके लिए मन के कन्ट्रोलिंग पॉवर की आवश्यकता है।” अ.बापदादा 30.11.05

“अभी-अभी आवाज़ में आना और अभी-अभी आवाज़ से परे हो जाना। … इस रुहानी एक्सरसाइज़ में सिर्फ मुख की आवाज़ से परे नहीं होना है लेकिन मन से भी आवाज़ में आने के संकल्प से परे होना है। … मुख और मन दोनों की आवाज़ से परे, शान्ति के सागर में समा जायें।” अ.बापदादा 16.3.92 पार्टी 1

“कैसी भी परिस्थिति और वातावरण में संकल्प किया कि आवाज़ से परे हो जायें तो सेकेण्ड में आवाज़ से न्यारे फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ। … लास्ट समय चारो ओर व्यक्तियों के चिल्लाने का, प्रकृति की हलचल का आवाज़ होगा, ऐसे समय पर सेकेण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ - यह अभ्यास ही विजयी बनायेगा।” अ.बापदादा 18.1.92

“ज्ञाता तो नम्बरवन हो गये हैं लेकिन एक बात में अलबेले बन जाते हो, वह है - स्व को सेकेण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुल स्टॉप लगाकर परिवर्तन करना। … जब बिन्दु स्वरूप बाप और बिन्दु स्वरूप आत्मा दोनों की स्मृति हो। यह स्मृति फुल स्टॉप अर्थात् बिन्दु लगाने में समर्थ बना देती है।” अ.बापदादा 23.12.93

"पवित्रता का अर्थ ही है - सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना। कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकेण्ड में फुल स्टॉप लगाने में स्वयं को सदा पहले ऑफर करो - मुझे करना है। ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआयें मिलती हैं। एक स्वयं को स्वयं की, दूसरी बाप की और तीसरी जो भी श्रेष्ठ आत्मायें ब्राह्मण परिवार की हैं, उनकी भी दुआयें मिलती हैं।" अ.बापदादा 23.12.93

"फुल स्टॉप लगाने का सहज स्लोगन याद रखो - जो हुआ, जो हो रहा है और जो होगा वह सब अच्छा होगा। ... संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा है। ... निश्चय है फाउण्डेशन। निश्चय का फाउण्डेशन पक्का होगा तो कर्म ऑटोमेटिकली श्रेष्ठ होंगे।"

अ.बापदादा 18.02.93 पार्टी 1

"अभी एक मिनट के लिए सभी लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति द्वारा विश्व में अपनी लाइट-माइट फैलाओ। ऐसा अभ्यास समय प्रति समय कार्य में होते हुए भी करते रहो।"

अ.बापदादा 28.3.06

"सभी बच्चों को ड्रिल कराते हैं। सभी रेडी हो गये। सब संकल्प मर्ज कर दो, अभी एक सेकेण्ड में मन-बुद्धि द्वारा अपने स्वीट होम में पहुँच जाओ, अभी परमधाम से अपने सूक्ष्मवतन में पहुँच जाओ। अभी सूक्ष्मवतन से स्थूल वतन में अपने राज्य स्वर्ग में पहुँच जाओ, अभी अपने पुरुषोत्तम संगमयुग में पहुँच जाओ। अभी मधुवन में आ जाओ - ऐसे बार-बार स्वदर्शन चक्रधारी बनकर चक्र लगाते रहो।" अ.बापदादा 25.2.06

"जैसा चाहे, जिस समय चाहे, वैसे स्वरूप और स्थिति में स्थित हो सके ... इसके लिए बहुत स्वच्छ, महीन अर्थात् अति सूक्ष्म बुद्धि, दिव्य बुद्धि, बेहद की बुद्धि, विशाल बुद्धि चाहिए।"

अ.बापदादा 12.3.88

"सदा आकारी और निराकारी स्थिति का अभ्यास करना है। जब चाहें तब उस स्थिति में स्थित हो जायें। इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े... तो सूक्ष्म रीति से चेक करो कि लगाव अंश मात्र भी नहीं हो।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 3

"कैसी भी परिस्थिति और वातावरण में संकल्प किया कि आवाज़ से परे हो जायें तो सेकेण्ड में आवाज़ से न्यारे फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ।... लास्ट समय चारो ओर व्यक्तियों के चिल्लाने का, प्रकृति की हलचल का आवाज़ होगा, ऐसे समय पर सेकेण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ - यह अभ्यास ही विजयी बनायेगा।"

अ.बापदादा 18.1.92

"भल कितना भी बिजी रहो लेकिन ... हर घण्टे में एक मिनट शक्तिशाली याद का अवश्य

निकालो। ... शक्तिशाली याद सदा रहे, उसके लिए यह लिंक टूटना नहीं चाहिए। ... एक सेकेण्ड की शक्तिशाली याद तन और मन दोनों को फ्रेश कर देती है।"

अ.बापदादा 20.2.88

"एक सेकण्ड में अपने को अशरीरी बना सकते हो। संकल्प किया और स्थित हो गये। सेकेण्ड में अशरीरी, न्यारे और बाप के प्यारे। यह ड्रिल सारे दिन में बीच-बीच में करते रहो।... यह अभ्यास करने से लास्ट में अशरीरी बनने में बहुत मदद मिलेगी।"

अ.बापदादा 27.2.96

"सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ लगाना चाहें वहाँ लगा लें। ... बीच-बीच में चेक करो। जिस समय बुद्धि बहुत बिजी हो, उस समय ट्रायल करके देखो कि अभी-अभी अगर बुद्धि को इस तरफ से हटाकर बाप की तरफ लगाना चाहें तो सेकेण्ड में लगती है ?"

अ.बापदादा 10.1.90 पार्टी

"आत्मा का अनादि-आदि स्वरूप ही राजा का है, मालिक का है। यह तो पीछे परतन्त्र बन गई है। ... बन्धनमुक्त अर्थात् राजा, स्वराज्य अधिकारी। ... इसलिए यह अभ्यास करो। स्टॉप कहा और स्टॉप हो जाये।" अ.बापदादा 10.1.90 पार्टी

"अभी महीन बुद्धि बनो क्योंकि समय समाप्त अचानक होना है।... बाप कभी भी पहले से बताकर टाइम कान्सेस नहीं बनायेगा। ... सेकेण्ड में एवर-रेडी बन सकते हो, सेकेण्ड में अशरीरी बन सकते हो ? ... बिजी होते भी बीच-बीच में एक सेकेण्ड भी अशरीरी होने का अभ्यास अवश्य करो।" अ.बापदादा 6.4.95

"दिन प्रतिदिन अचानक यह प्रकृति अपनी हलचल बढ़ाती जाती है। यह कम नहीं होनी है, और बढ़नी ही है। ... क्यों-क्या में नहीं जाये, बुद्धि को जहाँ लगाना चाहें, वहाँ लग जाये।"

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी 6

"अभी एक सेकेण्ड में अशरीरी आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाओ। ... ऐसा अभ्यास बार-बार कर्म करते, करते रहो। स्वीच ऑन किया और सेकण्ड में अशरीरी बनें। यह अभ्यास ही कर्मातीत स्थिति का अनुभव करायेगा।" अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति

हठयोग में भी निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि का वर्णन है और बाबा ने भी निर्संकल्प स्थिति और निर्विकल्प स्थिति का ज्ञान दिया है, उनका महत्व बताया है और उस

स्थिति को जमाने के लिए श्रीमत दी है।

"कोई कुछ कहें तो सुना-अन्सुना कर देना चाहिए। ... तुमको तो कहा गया है - सारे दुनिया को भूल जाओ, अपने को आत्मा समझो। आत्मा कानों बिगर सुनेगी कैसे, अशरीरी हो जाओ। जैसे आत्मा रात को अशरीरी हो जाती है, सो जाते हैं तो कोई गला भी काट कर जाते हैं तो पता नहीं पड़ता है। ... जब तक अशरीरी नहीं बने हो तब तक कुछ न कुछ माया की चोट लगती ही रहेगी।" सा.बाबा 13.1.69

"आप तो संकल्प को भी जज कर सकते हो। ऐसे जस्टिस जो अपने और दूसरी आत्माओं के भी संकल्प को जज कर सकें व परख सकें। ऐसे बन गये हो ? ऐसा जस्टिस कौन बन सकता है, जिसकी बुद्धि का काँटा एकाग्र हो। ...बुद्धि निर्विकल्प हो, जिसके बोल और कर्म में लव और लॉ हो तथा स्नेह और शक्ति में बैलेन्स हो।" अ.बापदादा 21.7.73

"निर्संकल्प अवस्था में रहने से तुम अपने तो क्या, किसी भी विकारी के विकल्पों को भी दबा सकते हो। कोई भी कामी पुरुष तुम्हारे सामने आयेगा तो उसका विकारी संकल्प नहीं चलेगा। जैसे देवताओं के आगे ... तुम्हारे आगे किसी विकारी का विकारी संकल्प नहीं चल सकता और यदि कुछ संकल्प चलेगा भी तो भी वह वार नहीं कर सकेगा। तुम योगयुक्त होकर खड़े रहेंगे तो।" सा.बाबा 04.01.55

"आत्मा बिन्दु रूप में स्थित रहेगी तो ड्रामा बिन्दु भी काम में आयेगा और समस्याओं को भी सेकेण्ड में बिन्दु लगा सकेंगे और बिन्दु बन बिन्दु आत्मा परमधाम में जायेगी। ... तो बिन्दु बन बिन्दु बाप के साथ पहले घर जाना है।" अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और एकान्त एवं एकाग्रता

योग के सफल अभ्यास के लिए एकान्त और एकाग्रता का क्या महत्व है, वह भी बाबा ने बताया है और उस स्थिति का अभ्यास कैसे करें, उसके लिए श्रीमत भी दी है।

योग में शिवबाबा या ब्रह्माबाबा के चित्र पर मन-बुद्धि या ध्यान को एकाग्र करना यथार्थ योग नहीं है, इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुमको किसी चित्र आदि पर मन-बुद्धि को एकाग्र (Concentrate) नहीं करना है। तुमको देह से न्यारे बिन्दु बन बिन्दु रूप शिवबाबा को परमधाम में याद करना है, इस साकार देह से न्यारे अव्यक्त फरिश्ता बनकर फरिश्ता स्वरूप में सूक्ष्मवतन में ब्रह्माबाबा और ब्रह्मातन में पधारे शिवबाबा से रूह-रुहान करनी है। एकाग्रता अर्थात् किसी एक स्वमान में, ज्ञान की किसी एक प्वाइन्ट, योग की किसी एक स्थिति आदि-आदि में जैसे आर्डर मिले, वैसे ही तुरन्त स्थित हो जायें, और कहाँ भी बुद्धि न जाये।

"एकता के साथ एकान्तप्रिय बनना है। ... एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें, यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिसका अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ होगा और एक का प्रिय होगा। एकान्तप्रिय होने के कारण एक की याद में रह सकता।... एक के सिवाए दूसरा न कोई। जो ऐसी स्थिति वाला होगा, वह एकान्तप्रिय हो सकता है।"

अ. बापदादा 25.10.69

"एकाग्रता की शक्ति, मालिकपन की शक्ति सहज निर्विघ्न बना देती है, युद्ध नहीं करनी पड़ती है। एकाग्रता की शक्ति से स्वत: एक बाप दूसरा न कोई - यह अनुभूति होती है। ... एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही एकरस फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति होती है।"

अ.बापदादा 15.11.03

"अव्यक्त स्थिति में रहकर फिर व्यक्त भाव में आओ ... परन्तु यह तब होगा जब एकान्त में बैठ अन्तर्मुख अवस्था में रह अपनी चेकिंग करेंगे, इसका अभ्यास करेंगे। ... जितना सर्विस का ध्यान है, उतना ही इस अभ्यास का भी ध्यान रहे।" सा.बाबा 18.1.69

"एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही सर्व के प्रति स्नेह, कल्याण, सम्मान की वृत्ति रहती ही है क्योंकि एकाग्रता अर्थात् स्वमान की स्थिति। फरिश्ता स्थिति स्वमान है।"

अ.बापदादा 15.11.03

"सन्यासी भी एकान्त में चले जाते हैं। सतोप्रधान सन्यासी जो थे, वे बहुत निडर रहते थे। ... सन्यासी जो सतोप्रधान थे, वे ब्रह्म की मस्ती में मस्त रहते थे, उनमें बड़ी कशिश होती थी। ... ब्रह्म ज्ञानियों के स्वांस भी सुखाले हो जाते हैं, ब्रह्म की ही याद में रहते हैं।"

सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

"एकता और एकान्तवासी दोनों की बहुत आवश्यकता है। एकान्त के आनन्द के अनुभवी बन जायें तो बाहरमुखता अच्छी नहीं लगेगी। ... अव्यक्त स्थिति को बढ़ाने के लिये इनकी बहुत आवश्यकता है। इसलिए एकान्त में ज्यादा रुचि रखनी है।" अ.बापदादा 16.6.69

"हम आत्मा छोटी सी बिन्दी हैं, हमारा बाप भी बिन्दी है, वह इस ड्रामा का मुख्य एक्टर है। ... आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट अविनाशी नूँधा हुआ है। ये बहुत नई-नई बातें हैं। एकान्त में बैठकर अपने साथ ऐसी-ऐसी बातें करनी हैं।" सा.बाबा 26.5.05 रिवा.

"तुम बच्चों को यह सब विचार-सागर मन्थन करने के लिए बहुत एकान्त चाहिए। ... बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए कि हम जीवात्माओं को परमात्मा पढ़ा रहे हैं।"

सा.बाबा 29.11.05 रिवा.

"योग को पॉवरफुल बनाओ। एकाग्रता की शक्ति विशेष संस्कार भस्म करने में आवश्यक

है। जिस रूप में, जितना समय एकाग्र होना चाहें एकाग्र हो जाये। एकाग्रता से संकल्प किया और भस्म। इसको कहा जाता है योग-अग्नि। ... पुराने संस्कार का रहा हुआ अंश भी वंश पैदा कर देता है।" अ.बापदादा 31.12.05

"इस समय विशेष अटेन्शन चाहिए - मन-बुद्धि सदा एकाग्र रहे। एकाग्रता की शक्ति सहज ही निर्विघ्न बना देती है। ... एकाग्रता की शक्ति स्वत: ही 9एक बाप दूसरा न कोई" ये अनुभूति सदा कराती है। ... स्वप्न में भी सेकण्ड मात्र भी हलचल में नहीं आये।"

अ.बापदादा 9.12.93

"आत्माभिमानी बनने में ही मेहनत है। कर्म करते भी बुद्धि बाप की तरफ लगी रहे। हर बात में यह प्रैक्टिस करनी चाहिए। ... बीच-बीच में समय मिले तो एकान्त में जाकर बैठना चाहिए। तुम्हें सबको बाप का परिचय भी सुनाना है।" सा.बाबा 20.4.06 रिवा.

"अभी आप छोटी-छोटी बातों में मन और बुद्धि को बिजी बहुत रखते हो, इसलिए सेवा के सूक्ष्म गति की लाइन क्लीयर नहीं रहती है। ... इसलिए यह सूक्ष्म सेवा तीव्र गति से नहीं चल रही है। इसके लिए विशेष अटेन्शन - एकान्त और एकाग्रता।" अ.बापदादा 27.11.89

"वरदाता को "एक" शब्द प्यारा लगता है। एकव्रता, एक-बल, एक-भरोसा ... साथ-साथ एकमत, न मनमत, न परमत, एकरस - न और कोई व्यक्ति का और न कोई वैभव का रस। ऐसे ही एकता, एकान्तप्रिय। ऐसे और भी शब्द निकालना।" अ.बापदादा 23.11.89

श्रीमत और स्मृति एवं विस्मृति / श्रीमत और स्मृति एवं स्थिति का सम्बन्ध

हमको परमात्मा की स्मृति अर्थात याद कैसी हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - जैसे पतिव्रता स्त्री की बुद्धि पति के सिवाए और कहीं नहीं जाती, ऐसे ही तुम्हारी बुद्धि में एक बाप की याद रहे। जैसे आशुक-माशुक एक दूसरे को याद करते, कर्म करते आशुक-माशुक सामने खड़ा हो जाता है। जैसे छोटे बच्चे को मां की याद रहती, उसकी गोद राजसिंहासन से भी अधिक सुखदायी होती है, बच्चा और किसके पास नहीं जाना चाहता। ऐसे एक बाप की याद रहे, और कोई भी वस्तु या व्यक्ति याद न आये।

"जब अविनाशी आत्मिक स्थिति में रहेंगे तब ही अविनाशी सुख की प्राप्ति होगी। आत्मा अविनाशी है ना। अव्यक्त आनन्द, अव्यक्त शक्ति ... सदैव वरदाता की याद में रहने से यह

वरदान अविनाशी रहेगा। ... सारी सृष्टि में सबसे प्रिय वस्तु वही है तो उनकी याद भी स्वत: ही रहनी चाहिए। फिर उनकी याद भूलते क्यों हो ? जरूर और कुछ याद आता होगा। कोई भी बात बिना कारण के नहीं होती। विस्मृति का भी कारण है।"

अ.बापदादा 24.1.70

"हमारा हर कर्म सुखदायी हो, यह है ब्राह्मण कुल की रीति।... अगर याद भूल जाते हैं तो बुद्धि कहाँ रहती है ? एक तरफ से भूलते हैं तो दूसरे तरफ लगेगी ना। अपने को चेक करो कि अव्यक्त स्थिति से नीचे आते हैं तो किस व्यक्त तरफ बुद्धि जाती है। जरूर कुछ रहा है तब बुद्धि वहाँ जाती है।" अ.बापदादा 25.1.70

"स्मृति को छोड़ेंगे ही नहीं तो विस्मृति कहाँ से आयेगी। सूर्यास्त हो जाता है तब अंधियारा हो जाता है। सूर्यास्त ही न हो तो अंधियारा कैसे आये। वैसे ही अगर स्मृति का सूर्य सदा कायम रखेंगे तो विस्मृति का अंधियारा आ नहीं सकता।" अ.बापदादा 20.10.69

"सिर्फ भाग्यशाली बनने से भी मायाजीत नहीं बन सकेंगे। भाग्यशाली के साथ-साथ शक्तिशाली भी बनना है। ... सदाकाल शक्तिशाली स्थिति में, स्मृति में स्थित नहीं होते तब हार होती है। जहाँ स्मृति है, वहाँ विस्मृति का आना असम्भव है।" अ.बापदादा 21.6.72

"बलिहार जाने वाले की हार नहीं होती है। स्मृति समर्थी को लाती है और समर्थी में आने से ही कार्य सफल होते हैं अर्थात् जो सुनाया - खुशी, मस्ती, नशा वा निशाना सभी हो जाता है।"

अ.बापदादा 27.2.72

"कल्प पहले भी पास किया था ... यह नहीं समझते कि अगर अनेक बार यह अनुभव नहीं किया होता तो आज इतने समीप कैसे आये। ... यह स्मृति स्पष्ट और सरल रूप में रहे, खैंचना न पड़े। ... जरूर कोई माया की खिंचावट अभी है, इसलिए बुद्धि में कल्प पहले वाली स्मृति स्पष्ट और सरल रूप में नहीं आती है।" अ.बापदादा 3.10.71

"त्रिमूर्ति के इस एक ही चित्र की स्मृति में सारे ज्ञान का सार समाया हुआ है। रचयिता और रचना के ज्ञान से यह प्राप्ति होती है। ... मूझो नहीं। बाप की याद वा बाप के कर्म द्वारा बाप की याद वा बाप के गुणों द्वारा बाप की याद है तो भी वह याद ही हुई ना। ... याद के कोर्स को मुश्किल करते-करते फोर्स नहीं आता है, कोर्स में ही रह जाते हो।"

अ.बापदादा 4.7.71

"इस विश्व-नाटक में हम पार्टधारी हैं, अभी हमने 84 का चक्र पूरा किया है - यह तुम बच्चों की स्मृति में आना चाहिए। ... भारत कितना सालवेन्ट था, भारत की ही सारी कहानी है, साथ-साथ अपनी भी - यह सारी स्मृति आई है। ... सारा दिन यह स्मृति में लाना पड़े।"

सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

"जो समझते हैं कि हमारे सतयुगी संस्कार ऐसे ही मुझे स्पष्ट स्मृति में आते हैं जैसे इस जीवन के बचपन के संस्कार स्पष्ट स्मृति में आते हैं, वह हाथ उठाओ। यह स्पष्ट स्मृति में आना चाहिए। साकार रुप में स्पष्ट स्मृति में थे ना। यह स्मृति तब होगी जब अपने आत्मिक स्वरुप की स्मृति स्पष्ट और सदा काल रहेगी।" अ.बापदादा 11.3.71

"अभी आत्मिक स्थिति की स्मृति कब-कब देह के पर्दे के अन्दर छिप जाती है। इसलिए यह स्मृति भी पर्दे के अन्दर दिखाई देती है। स्पष्ट नहीं दिखाई देती है। आत्मिक स्मृति स्पष्ट और बहुत समय रहने से अपना भविष्य वर्सा अथवा अपने भविष्य के संस्कार स्वरुप में सामने आयेंगे।" अ.बापदादा 11.3.71

"जैसे अपना साकार स्वरूप, सदा और स्वत: याद रहता है, उसका अभ्यास नहीं करते हो बल्कि और ही उसको भुलाने का अभ्यास करते हो। ऐसे ही अपना निजी-स्वरूप व वरदानी-स्वरूप, सदा ही स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता का और विस्मृति का नामोनिशान न रहे, इसको कहा जाता है - वरदानों का कोर्स करना। क्या ऐसा कोर्स किया है?"

अ.बापदादा 27.12.74

"आप सब अपने मस्तक की रेखाओं को जान और देख सकते हो, परन्तु कैसे? बाप-दादा के दिल-तख्तनशीन बनकर, स्मृति के तिलकधारी बनकर, नॉलेजफुल और पॉवरफुल स्टेज पर स्थित होकर देखेंगे तो स्पष्ट जान सकेंगे। अपनी पोज़ीशन को छोड़कर, माया की ऑपोज़ीशन की स्थिति में व स्टेज पर स्थित होकर अपने को व अन्य आत्माओं को जब देखते हो, तब स्पष्ट दिखाई नहीं देता।" अ.बापदादा 26.6.74

"समस्या के सीट को सम्भालने नहीं लग जाओ। लेकिन सीट पर बैठकर समस्या का सामना करना है। अब तो समस्या सीट की याद दिलाती है। ... इससे सिद्ध होता है कि दुश्मन ही शस्त्र की स्मृति दिलाते हैं लेकिन स्वत: और सदा-स्मृति नहीं रहती। ... दुश्मन आये ही नहीं, समस्या सामना न कर सके। शूली से कांटा बनना - यह भी फाइनल स्टेज नहीं है।"

अ.बापदादा 15.4.74

"जैसे अपना साकार स्वरूप सदा स्मृति में रहता है, क्या वैसे ही अपना निराकारी स्वरूप सदा और सहज स्मृति में रहता है? यह भी अपना निजी और अविनाशी स्वरूप है, यह भी सहज स्मृति में रहना चाहिए अब इसी स्मृति-स्वरूप के अभ्यास की गुह्यता में जाना चाहिए।"

अ.बापदादा 25.1.74

"सुहाग की निशानी तिलक गाया हुआ है। सदा बाप के साथ हैं, यह सदा विजय का तिलक

अपने माथे पर लगा रहे। ... सदा यह स्मृति रहे कि मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ, अभी की नहीं।"

अ.बापदादा 1.10.75

"निरन्तर इस निश्चय की स्मृति रहे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ यह स्मृति रहती है ? स्मृति के बिना समर्थी थोड़ेही आयेगी ? विजयी होने का आधार है - स्मृति। अगर स्मृति कमज़ोर होगी, निरन्तर नहीं होगी और स्मृति पॉवरफुल नहीं होगी तो विजयी कैसे होंगे ? ... कोई सोचे कि मार्ग तय करने से पहले मंजिल पर पहुंच जायें - यह हो सकता है ? मार्ग तो जरूर तय करना ही पड़ेगा। तो विजय है मंज़िल और मार्ग है निरन्तर-स्मृति।"

अ.बापदादा 9.2.75

"श्रीमत के पहिये लगने से स्वत: ही पुरूषार्थ की रफ्तार तेज हो जायेगी। सदा ऐसे सेवाधारी बनकर चलो। जरा भी बोझ महसूस नहीं करो। करावनहार जब बाप है तो बोझ क्यों ? इसी स्मृति से सदा उड़ती कला में जाते रहो।"

अ.बापदादा 17.5.83

"साधारण कर्म करते भी श्रेष्ठ स्मृति और श्रेष्ठ स्थति हो, जिसको देखते ही महसूस करें कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। ... हीरा अपनी चमक छिपा नहीं सकता। ... जैसे ब्रह्मा बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होता था। तो ऐसे फॉलो फादर।"

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 1

"जैसी स्मृति होती है वैसी स्थिति होती है और जैसे स्थिति होगी वैसे कर्म होंगे ... जब यह स्मृति रहती है कि मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ तो स्वत: ही हर कर्म श्रेष्ठ होता है। ... अनेक अज्ञानियों के बीच आप 9ज्ञानी आत्मा" प्यारी अनुभव हो। इसको कहा जाता है हीरो पार्टधारी।"

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 2

"चलते-फिरते, खाते-पीते बेहद वर्ल्ड ड्रामा की स्टेज पर विशेष पार्टधारी अनुभव करते हो ? ... इस सारे ड्रामा का आधार आप हो ना। ... तो सदा यह स्मृति रहे कि मैं विशेष पार्टधारी हूँ, इसलिए हर कर्म विशेष हो, हर कदम विशेष हो, हर सेकेण्ड, हर संकल्प श्रेष्ठ हो।"

अ.बापदादा 25.11.93 पार्टी 5

"सदैव स्मृति रखो कि "कम्बाइण्ड थे, कम्बाइण्ड हैं और कम्बाइण्ड रहेंगे। कोई की ताकत नहीं जो अनेक बार के कम्बाइण्ड स्वरूप को अलग कर सके।" ... जहाँ प्यार होता है, वहाँ अधिकार भी होता है। अधिकार का नशा है ना। इतना बड़ा अधिकार सतयुग में भी नहीं मिलेगा।"

अ.बापदादा 26.3.93 पार्टी 3

"साधारण कर्म करते भी श्रेष्ठ स्मृति और श्रेष्ठ स्थति हो, जिसको देखते ही महसूस करें कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। ... हीरा अपनी चमक छिपा नहीं सकता। ... जैसे ब्रह्मा

बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होता था। तो ऐसे फॉलो फादर।"

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 1

"सदा इस भाग्य को सामने रखो अर्थात् स्मृति में रखो - मैं कौन हूँ, किसका हूँ और हमको क्या मिला है ... स्मृति आने से सहज ही जैसी स्मृति वैसी स्थिति हो जाती है। ... क्या भी होता रहे लेकिन हम मौज में रहने वाले हैं।" अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 1

"जैसी स्मृति होती है वैसी स्थिति होती है और जैसे स्थिति होगी वैसे कर्म होंगे ... जब यह स्मृति रहती है कि मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ तो स्वत: ही हर कर्म श्रेष्ठ होता है। ... अनेक अज्ञानियों के बीच आप 9ज्ञानी आत्मा" प्यारी अनुभव हो। इसको कहा जाता है हीरो पार्टधारी।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 2

"अनादि बाप ने आदि देव ब्रह्मा द्वारा आदि ब्राह्मणों की रचना की और आदि ब्राह्मणों ने अनेक ब्राह्मणों की वृद्धि की। ... अपने अनादि-आदि नाम, रूप, गुण और अब ब्राह्मण जीवन के सर्व गुणों के स्मृति स्वरूप बनो। ऐसे ही कर्तव्यों की स्मृति इमर्ज करो।"

अ.बापदादा 18.1.91

"सारी दुनिया ही अपना परिवार है। सर्व आत्माओं का तना आप ब्राह्मण हो। ... सदा यह स्मृति में रखो कि आदि आत्मा ने जिस श्रेष्ठ दृष्टि से हमको देखा, ऐसी ही श्रेष्ठ स्थिति की सृष्टि में सदा रहेंगे।" अ.बापदादा 1.12.89

"बाप से अनेक प्रकार की प्राप्तियां हुई हैं। कभी किसी प्राप्ति को, कभी किसी प्राप्ति को स्मृति में रखो। ... बाप ने क्या-क्या खज़ाना दिया है, उसकी लिस्ट निकालो और स्मृति में रखो।"

अ.बापदादा 23.11.89 ग्रुप 3

"अभी स्मृति में आता है कि जो यहाँ के होंगे, उनको झट स्मृति में आ जायेगा। हाँ, स्मृति में आये हुए को भी माया कोई समय जोर से थप्पड़ लगाये विस्मृत कर देती है। इसलिए बच्चों को बड़ा खबरदार रहना है। पवित्रता का कंगन भी पूरा बांधना है।"

सा.बाबा 26.8.06 रिवा.

"अपने ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचुरल नेचर बनाना - इसको ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है। सिर्फ एक "मैं विशेष आत्मा हूँ" - इस स्मृति स्वरूप में स्थित हो जाओ तो बाप समान बनना अति सहज अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 25.1.94

श्रीमत और मौन स्थिति

मौन स्थिति का अभ्यास भी अवस्था को योगयुक्त और समर्थ बनाने में बहुत सहायक है, इसलिए ही बाबा ने यज्ञ स्थापना की आदि में और बीच में भी मौन का अभ्यास कराया है, जिसकी यादगार में भक्ति मार्ग में भी मौन व्रत रखते हैं।

मौन भी दो प्रकार का होता है - एक मन का मौन और दूसरा वाचा का मौन। योग की सफलता के लिए दोनों की आवश्यकता है।

"पहले-पहले तुम बच्चों को अन्तर्मुख होना है। किससे जास्ती तीक-तीक नहीं करनी है। ... अलफ को समझने से फिर कोई संशय नहीं होगा।" सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

"चेक करो - बोल द्वारा इनर्जी और समय कितना जमा किया और कितना व्यर्थ गया ? जब इसको चेक करेंगे तो स्वत: ही अन्तर्मुखता के रस को अनुभव कर सकेंगे। अन्तर्मुखता का रस और बोलचाल का रस - इनमें दिन-रात का अन्तर है।" अ.बापदादा 14.1.90

श्रीमत और आत्माभिमानी स्थिति एवं परमात्माभिमानी स्थिति

परमात्मा आकर अभी हमको सारा ज्ञान देकर आत्माभिमानी बनाते हैं जब आत्माभिमानी बनते तब ही परमात्माभिमानी बनते हैं और आत्मिक सुख का अनुभव करते हैं। इसलिए बाबा ने आत्माभिमानी बनने के लिए श्रीमत दी है और आत्माभिमानी कैसे बनें, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

"बाप कहते - बच्चे, छी-छी मत बनो, माया से हार नहीं खाओ। ... बाप के मददगार बन फिर हार खाये तो नाम बदनाम कर देते हैं। ... बाप कहते - देह सहित जो कुछ देखते हो, उन सबको भूल जाओ।" सा.बाबा 6.10.05 रिवा.

"रुहानी बाप रुहानी बच्चों को कहते हैं - मैं तुमको राह तो दिखलाता हूँ परन्तु पहले अपने को आत्मा निश्चय कर बैठो, देही-अभिमानी होकर बैठो तो फिर तुमको राह बहुत सहज देखने में आयेगी।" सा.बाबा 7.10.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल जाना है। एक बाप को याद करना है। आत्मा को यहाँ ही पवित्र बनना है। याद नहीं करेंगे तो फिर सजायें खानी पड़ेंगी। इसलिए याद की मेहनत करो।" सा.बाबा 7.10.05 रिवा.

"बाबा कहते हैं - इस छी-छी चोले को छोड़ दो। देह सहित सारी दुनिया को भूल जाओ। यह

है बेहद का सन्यास।" सा.बाबा 5.10.05 रिवा.

"गीता के आदि में और पिछाड़ी में यह बात आती है - मन्मनाभव। ... बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, दूसरे कोई देहधारी को याद नहीं करना है।"

सा.बाबा 4.10.05 रिवा.

"पहले-पहले यह समझ देता हूँ - अपने को आत्म समझ बैठो। अन्दर में यह घोटते रहो कि मैं आत्मा हूँ। अपने को आत्मा न समझने से बाप को भूल जाते हो।"

सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

"सतयुग में देही-अभिमानी रहते भी बाप को नहीं जानते, सृष्टि-चक्र के ज्ञान को नहीं जानते। ... मैं आत्मा छोटा सा स्टार हूँ, बाप भी छोटा स्टार है। तुम बच्चों को पहले-पहले यह मेहनत करनी है।" सा.बाबा 11.4.06 रिवा.

"थकने का मतलब है देहाभिमानी बनना। ... देहाभिमान में आने से धन्धाधोरी, बच्चे याद आ जाते हैं। ... धन्धाधोरी, बच्चों आदि के चिन्तन में मरेंगे तो मुफ्त में अपनी बरबादी कर देंगे। ... देही-अभिमानी बनने में ही आबादी होती है।" सा.बाबा 26.7.06 रिवा.

"श्रीमत पर तुम ही चल सकते हो। अगर कहाँ श्रीमत पर न चले तो माया पछाड़ती रहेगी। ... श्रीमत पर चलो, नहीं तो त्राहि-त्राहि करना पड़ेगा। ... जितना श्रीमत पर चलेंगे, उतना श्रेष्ठ बनेंगे। बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। बच्चे, देह-अभिमान छोड़ दो, देही-अभिमानी बनो, निरन्तर याद करो।" सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

"बच्चों को आत्माभिमानी होकर बैठना है। ... भल इन लक्ष्मी-नारायण के लिए कहेंगे कि यह आत्माभिमानी थे, फिर भी देह-अभिमान तो रहता है ना। ... अपने को आत्मा समझें और बाप को भी बिन्दी समझें। अपने को आत्मा समझ फिर बाप को और घर को याद करना है।"

सा.बाबा 23.8.06 रिवा.

"सारा दिन में ये "मैं" शब्द बहुत आता है और आना ही है। तो अभ्यास करो - जब भी मैं शब्द कहते हो तो मैं कौन? ... अगर मैं शब्द आत्माभिमानी बनकर कहेंगे तो आत्मा को बाप स्वत: याद आयेगा।" अ.बापदादा 16.2.96

"जब तक तुम अपने को आत्मा नहीं समझेंगे, तब तक बाप को भी याद नहीं कर सकेंगे। ... जब तक आत्मा को ही नहीं जानते हो तब तक आत्मा के बाप को कैसे जान सकेंगे। ... घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा निश्चय करो, आत्माभिमानी बनो।" सा.बाबा 24.5.06 रिवा.

"अच्छे-बुरे संस्कार आत्मा में रहते हैं, उन संस्कारों अनुसार शरीर भी ऐसा मिलता है।... पहली-पहली मुख्य बात बच्चों को देही-अभिमानी होकर रहना है।" सा.बाबा 12.5.06 रिवा.

श्रीमत और उड़ती कला की स्थिति

बाबा ने जो ज्ञान दिया है और श्रीमत दी है, उसके अनुसार उड़ती कला का अनुभव वही कर सकता है, जो विश्व-नाटक के ज्ञान को समझकर न भूतकाल का चिन्तन करता है और न भविष्य की चिन्ता करता है। जो न अपने ऊपर किसी का बोझ रखता है और न वह स्वयं किसी पर बोझ होता है। इसके लिए दादी जानकी जी ने भी कहा है कि पंक्षी क्यों उड़ता रहता है क्योंकि वह न भूतकाल का चिन्तन करता और न भविष्य की चिन्ता करता है। वह किसी के ऊपर बोझ नहीं होता है और न उसके ऊपर किसी का बोझ होता है, इसलिए वह स्वच्छन्द गगन में उड़ता है।

"बेहद का राज्य-भाग्य प्राप्त करने वालों को पहले इस समय अपनी देह की हद से परे जाना पड़ेगा। अगर देहभान की हद से निकले तो और सभी हद से निकल ही जायेंगे। ... देह की हद कभी भी उड़ने नहीं देगी। ... सदा यह नशा रखो कि बेहद के बाप के बालक और बेहद के वर्से का मालिक हूँ अर्थात् बालक सो मालिक हूँ।" अ.बापदादा 17.12.89 पार्टी

"मेरापन का बोझ फरिश्ता बनने नहीं देगा। कोई भी मेरापन मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी नेचर, कुछ भी मेरा है तो बोझ है और बोझ वाला उड़ नहीं सकता, फरिश्ता बन नहीं सकता। ... मेरापन अर्थात् मैलापन। ... सर्व के प्यारे, इसको कहा जाता है फरिश्ता। कोई-कोई के प्यारे तो फरिश्ते नहीं। ... सर्व के प्रति कल्याण की भावना हो।"

अ.बापदादा 10.1.94 पार्टी 2

श्रीमत और योगबल

बाबा आकर योग सिखाते हैं, जिस योग के बल से नई दुनिया की स्थापना होती, अपने योग बल के आधार पर ही नई दुनिया में पद पाते। बाबा ने कहा है - कोई बाहुबल से विश्व का राजा नहीं बन सकता, तुम योगबल से ही विश्व के राजा बनते हो, बाबा ने योगबल और भोगबल से सन्तान की उत्पत्ति के विषय में भी बताया है और ऐसा योगबल जमा करने के लिए श्रीमत दी है।

जैसे आत्माभिमानी और देहाभिमानी शब्द हैं, वैसे ही योगबल और भोगबल शब्द भी हैं। सतयुग में देहाभिमान होता नहीं, सभी आत्माभिमानी होते हैं, इसलिए वहाँ सारे कार्य योगबल से सम्पन्न हुए माने जाते हैं और द्वापर से जब देहाभिमानी बनते तो सारे कार्य भोगबल से होते हैं।

"तुम योगबल से विश्व पर राज्य करते हो। ... तुम कहते हो - बाबा, हम कल्प-कल्प आपसे सतयुग का स्वराज्य लेते हैं, फिर गँवाते हैं, फिर लेते हैं। ... यह रचता और रचना का ज्ञान तुमको अभी मिला है। इन लक्ष्मी-नारायण को भी यह ज्ञान नहीं होगा।"

सा.बाबा 2.5.05 रिवा.

सतयुग-त्रेतायुग में सन्तानोत्पत्ति योगबल से होती है और द्वापर-कलियुग में सन्तान भोगबल अर्थात् विषय-भोग के द्वारा होती है। योगबल से सन्तानोत्पत्ति के विषय में बाबा ने मोर का, पपीते आदि का उदाहरण भी दिया है। बाबा ने मुख के प्यार आदि से सन्तानोत्पत्ति की बात भी कही है। कहने का तात्पर्य कि सतयुग-त्रेतायुग में सन्तानोत्पत्ति विषय-भोग से नहीं होगी, इसीलिए उसको स्वर्ग कहा जाता है और भोगबल की दुनिया को नर्क कहा जाता है।

"तुम हो डबल अहिंसक। न काम कटारी, न वह लड़ाई। ... श्रीकृष्ण का चित्र तो कॉमन है - मोरमुकुटधारी। तुम बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है कि वहाँ जन्म कैसे होता है।"

सा.बाबा 4.2.05 रिवा.

"सतयुग को स्वर्ग कहा जाता है।... सतयुग को कहा जाता है योगी दुनिया क्योंकि वहाँ भोग-विलास होता नहीं। कलियुग है भोगी दुनिया, नर्क।" सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

"जब दो युग पास्ट हुए फिर आता है द्वापरयुग, रावण का का राज्य। देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं तो विकार का सिस्टम बन जाता है। सतयुग-त्रेता में सभी निर्विकारी रहते हैं।"

सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

"तुमको भारत खण्ड की बहुत महिमा करनी चाहिए। भारत सचखण्ड था, कितनी महिमा थी। ... यह बहुत वण्डरफुल ड्रामा है। ... मोर के लिए बाबा ने समझाया है - उनको भारत का नेशनल बर्ड कहते हैं क्योंकि श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर का पंख दिखाते हैं। ... डेल (मोरनी) को गर्भ भी मोर के आंसू से होता है, इसलिए उसको नेशनल बर्ड कहते हैं।"

सा.बाबा 7.11.05 रिवा.

श्रीमत और योग का प्रयोग

बाबा ने अनेक बार मुरलियों में योग का प्रयोग करने के लिए श्रीमत दी है परन्तु विचारणीय बात है कि बाबा ने योग का प्रयोग अर्थात् बाबा का आशय योग के Experiment करने के लिए है या प्रयोग अर्थात् Utilise करने के सम्बन्ध में है। योग बल तो एक ब्रह्मास्त्र है, जो अचूक है अर्थात् वह कभी निष्फल नहीं हो सकता, इसलिए उसके Experiment अर्थात् वह प्रभावित होगा या नहीं - इसका तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हाँ जिसके योग में

जितनी अधिक शक्ति होगी, उसका प्रभाव उतना ही प्रभावशाली होगा। इसलिए हम अनुभव करते हैं कि बाबा का योग का प्रयोग का आशय योग को कार्य में लगाने अर्थात् Utilise करने से है।

"योग का, शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करो। ... पहले स्व के प्रति प्रयोग करो। जब स्व के प्रति प्रयोग में सफल हो जायेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्रयोग करना सहज हो जायेगा और जब स्व के प्रति सफलता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वत: ही बढ़ता जायेगा।" अ.बापदादा 1.2.94

"बापदादा ने देखा - योगी तो बने हैं लेकिन प्रयोगी कम बनते हैं। ... योग की जो परिभाषा जानते हो, वर्णन करते हो वे सभी विशेषतायें प्रयोग में आती हैं? सबसे पहले अपने आप में चेक करो कि अपने संस्कार परिवर्तन में कहाँ तक प्रयोगी बने हो? क्योंकि आपके श्रेष्ठ संस्कार ही श्रेष्ठ संसार के रचना की नींव हैं। ... अगर समय पर योग की शक्तियों का प्रयोग नहीं हुआ तो इसको क्या कहा जायेगा?" अ.बापदादा 25.11.93

धारणा

धारणा शब्द को बाबा ने अनेक रूपों में प्रयोग किया है। सत्य ज्ञान की धारणा भी धारणा है, दैवी गुणों की धारणा भी धारणा है, शक्तियों की धारणा भी धारणा है। सब प्रकार की धारणायें ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए अति आवश्यक हैं, इसलिए बाबा ने धारणा के लिए श्रीमत दी है। वास्तव में यथार्थ ज्ञान की धारणा से ही आत्मा में दैवी गुणों और शक्तियों की धारणा होती है।

"तुम कुमारियाँ मम्मा को फॉलो करो, गृहस्थियों को बाबा को फॉलो करना चाहिए। ... सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। दूसरे को सिखाते रहेंगे, खुद उस अवस्था में नहीं रहेंगे तो असर नहीं पड़ेगा। अपना भी पुरुषार्थ करना है।" सा.बाबा 8.03.06 रिवा.

"ये सब प्वाइन्ट्स औरों को समझाने से बुद्धि में बैठेंगी। टॉपिक्स की लिस्ट बनानी है, फिर एक-एक प्वाइन्ट को लेकर अन्दर में भाषण करना चाहिए या लिखना चाहिए, फिर देखना चाहिए कि सब प्वाइन्ट्स लिखी हैं। जितना माथा मारेंगे, उतना अच्छा है।"

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

"बुद्धि कोई शरीर में नहीं है। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। ... तुमको मुख्य-मुख्य प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण करनी है। ... किसको भी समझानी ऐसी देनी चाहिए जो उनके कपाट ही खुल

जायें।" सा.बाबा 4.11.05 रिवा.

"बच्चों की बुद्धि में यह नॉलेज अच्छी रीति रहनी चाहिए, इसलिए तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। ... बाप तुम्हारी पढ़ाई की, सम्भालने की, और श्रृंगारने की सर्विस करते हैं। तुम भी ऑन गॉडली सर्विस पर हो, तुमको भी सबको सुख का रास्ता बताना है।"

सा.बाबा 2.11.05 रिवा.

"सब प्वाइन्ट्स बुद्धि में अच्छी रीति धारण करनी है।... यह भी खेल बना हुआ है। बाप बैठ समझाते हैं - कैसे यह खेल बना-बनाया है।... देवताओं को भी स्वदर्शन चक्रधारी नहीं कहेंगे। देवताओं में यह ज्ञान होता ही नहीं है। तुम कहेंगे - हमारे में सारा ज्ञान है। ... तुम ब्राह्मणों का देवताओं से भी उत्तम कुल है।" सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

"उनके सम्पर्क में आने से शान्ति, शक्ति, खुशी का अनुभव होता है। ...वर्तमान समय के पूज्य तो भविष्य के भी पूज्य। ... ब्रह्मा बाप की विशेषता सदा सामने रखो, और कोई बातों में नहीं जाओ। विशेषताओं को देखो और वर्णन करो और हर एक को विशेषता का महत्व सुनाकर विशेष बनाओ। दूसरों को बनाना अर्थात् स्वयं बनना।" अ.बापदादा 26.1.88

श्रीमत और ईश्वरीय गुण एवं दैवी गुण

अभी हम संगमयुग पर ईश्वरीय सन्तान हैं और भविष्य में देवी-देवता बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं तो हमारे में ईश्वरीय गुण अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियां भी होनी चाहिए और दैवी गुण भी होने चाहिए। ये ईश्वरीय गुण और दैवी गुणों की धारणा कैसे हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

"तुम्हारा खानपान भी शुद्ध चाहिए। दैवी गुण भी यहाँ ही धारण करने हैं। ... यहाँ तुम हो ईश्वरीय सन्तान। तुम्हारा यह सर्वोत्तम जन्म है। देवताओं से भी तुम उत्तम हो। अभी तुम औरों को भी उत्तम बनाते हो।" सा.बाबा 30.6.06 रिवा.

"जब फाइनल रिजल्ट होगी तो उसमें पहली मार्क्स प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप को मिलेगी। ... जो दूसरों को सुनाते हो, वेल्यूज़ पर भाषण करते हो, उसकी पहले स्वयं में चेकिंग करो। क्योंकि सेवा की एक मार्क है तो धारणा की 10 मार्क्स हैं।... व्यर्थ बहुत चलता है, इसलिए सेवा में बुद्धि बिज़ी रहे, इसलिए यह सेवा का साधन है।" अ.बापदादा 25.11.95

"सदा इस स्नेह के वरदान को स्मृति में रखो। ... स्नेह ही सहज योग है, स्नेह में समाना ही

सम्पूर्ण ज्ञान है। ... संगमयुग है ही परमात्म-स्नेह का युग। ... भविष्य में तो स्थूल हीरे-मोतियों से सजेंगे। यह परमात्म-प्यार के हीरे-मोती अन्मोल हैं, इनसे सदा सजे-सजाये रहो।"

अ.बापदादा 18.1.94

श्रीमत और पास्ट-प्रजेन्ट-फ्युचर / श्रीमत और समय-संकल्प-शक्ति

समय, संकल्प और शक्ति आत्मा का बहुमूल्य खज़ाना है, जो आत्मा जितना ही इसको बचाता है, इसका सदुपयोग करता है, उसका जीवन उतना ही श्रेष्ठ और सुखमय होता है। बाबा ने इस सत्य का ज्ञान भी दिया है और उसको बचाने और सदुपयोग के लिए श्रीमत भी दी है। बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक का भी ज्ञान दिया है और इसके विधि-विधान, कर्म-सिद्धान्त के अटल सत्यों का भी ज्ञान दिया और इन सत्यों को जानते हुए हमारा क्या कर्तव्य है, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

बाबा ने श्रीमत दी है - बनी-बनाई बन रही ..., इसलिए बीती का कोई भी चिन्तन नहीं करना है अर्थात् एक सेकेण्ड पहले बीती हुई बात का संकल्पमात्र भी चिन्तन न चले और भविष्य में जो होना है, वही होगा, इसलिए उसकी कोई चिन्ता नहीं करनी है। वर्तमान तुम्हारे हाथों में है, उसको सफल करना है। जब वर्तमान में हम अपने समय-संकल्प-शक्ति को सफल करेंगे तो भविष्य निश्चित ही अच्छा होगा क्योंकि वर्तमान भूतकाल का फल और भविष्य का बीज है। जैसा बोयेंगे वैसा फल पायेंगे, यह सृष्टि का अटल सिद्धान्त है।

दादी जानकी जी ने भी अपने विषय में बताया कि हमारी इनर्जी कहाँ से आ रही है क्योंकि मैं वर्तमान में ही जीती हूँ अर्थात् न भूतकाल का चिन्तन करती और न भविष्य की चिन्ता करती, सदा वर्तमान को सफल करती हूँ। यही बाबा की श्रीमत है। 21.12.05 मधुवन निवासियों के क्लास में कही।

"संकल्प की शक्ति सबसे फास्ट शक्ति है। ... कोई भी शक्ति की कमी है तो समय पर धोखा मिल सकता है। ... तो सब शक्तियां अपने पास हैं - यह चैक करो।"

अ.बापदादा 14.1.90 पार्टी 1

"समय, संकल्प, सम्पत्ति सब "सफल करो सफलता पाओ" ... सफल करना है बीज और सफलता है फल। अगर बीज अच्छा है तो फल नहीं मिले, यह हो नहीं सकता। बीज में कुछ कमी है तब सफलता का फल नहीं मिलता।" अ.बापदादा 22.3.96

श्रीमत और शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक

चिन्तन आत्मा का स्वभाव है परन्तु चिन्तन क्या करना है और क्या नहीं करना है, यह समझ की बात है और इस पर जीवन की उन्नति और अवनति का आधार है। वर्तमान समय देहाभिमान के कारण प्राय: सभी का पर-चिन्तन और व्यर्थ चिन्तन की आदत पड़ गई है, अब इस आदत को मिटाकर स्व-चिन्तन, शुभ-चिन्तन का परमात्मा ने रास्ता बताया है, दोनों प्रकार के चिन्तन के हानि-लाभ का ज्ञान दिया है और पर-चिन्तन, व्यर्थ चिन्तन को छोड़कर शुभ-चिन्तन और स्व-चिन्तन में कैसे प्रवृत्त हों, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

"आज बापदादा दो चीजें सौगात में दे रहे हैं - सदा शुभ चिन्तक और शुभ चिन्तन। शुभ चिन्तन से अपनी स्थिति बना सकते हो और शुभ चिन्तक बनने से अनेक आत्माओं की सेवा करेंगे।" अ.बापदादा 22.1.70

"शुभ-चिन्तक अर्थात् ज्ञान-रतनों से भरपूर। ... शुभ-चिन्तन वाला सदा अपने सम्पन्नता के नशे में रहता है। ... पर-चिन्तन और व्यर्थ चिन्तन वाला सदा खाली होने के कारण अपने को कमजोर अनुभव करेगा।" अ.बापदादा 10.11.87

"होली मनाना अर्थात् सदा के लिए आज के दिन से बीती सो बीती का पाठ पक्का करना। यही होली मनाना है। ... अपनी बीती हुई बातें या दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में न लाना और चित्त में भी न रखना। एक होता है चित्त में रखना, दूसरा होता है चिन्तन में लाना और तीसरा होता है वर्णन करना।" अ.बापदादा 23.3.70

"शुभ-चिन्तक सदा रहें, इसका विशेष आधार है - शुभ-चिन्तन। जिसका शुभ-चिन्तन सदा रहता है, वह अवश्य ही शुभ-चिन्तक है। ... सदा शुभ-चिन्तक मणि का शुभ-चिन्तन का शक्तिशाली खजाना सदा भरपूर होगा। भरपूरता के कारण ही औरों के प्रति शुभ-चिन्तक बन सकते हैं।" अ.बापदादा 10.11.87

परमात्मा के द्वारा विश्व-नाटक का दिया हुआ यथार्थ ज्ञान ही शुभ-चिन्तन के लिए परमावश्यक है क्योंकि किसी चीज की यथार्थता और उसकी उपयोगिता को समझने के बाद आत्मा की उसमें अभिरुचि स्वभाविक हो जाती है।

"श्री श्री की श्रीमत से तुम एवरहेल्दी बनते हो। ... बाप समझाते हैं - बच्चे, एक तो याद की यात्रा में रहो, कोई भी विकर्म न करो और सर्विस की युक्तियां निकालो। आप समान बनाने की सेवा करो।" सा.बाबा 9.8.05 रिवा.

"तुम हो ईश्वरीय सेलवेशन आर्मी। सेलवेशन कहो, सद्गति की आर्मी कहो। अभी तुम बच्चों

पर रेस्पॉन्सिबुलिटी है, सबको गति-सद्गति का रास्ता बताने की। ... सारा दिन यही ख्यालात चलते रहें कि हम किसका कल्याण कैसे करें।" सा.बाबा 3.4.06 रिवा.

"करावनहार बाप है और करने के निमित्त मैं आत्मा हूँ - इसको कहते हैं असोच अर्थात् एक की याद। शुभ चिन्तन में रहने वाले को कभी चिन्ता नहीं होती। जहाँ चिन्ता है, वहाँ शुभ चिन्तन नहीं और जहाँ शुभ-चिन्तन है, वहाँ चिन्ता नहीं हो सकती।"

अ.बापदादा 25.12.89

"दो शब्द याद रखो। एक शुभ चिन्तन और दूसरा सभी के प्रति शुभ चिन्तक। शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक दोनों का सम्बन्ध है। अगर शुभ चिन्तन नहीं तो शुभ चिन्तक भी नहीं बन सकते। ... शुभ चिन्तक बन शुभ वायब्रेशन दो तो बदल जाते हैं।"

अ.बापदादा 18.1.96

श्रीमत और चिन्तन, चिन्ता एवं चिन्तन-चिन्ता से परे निर्संकल्प स्थिति

श्रीमत और स्व-चिन्तन, पर-चिन्तन एवं व्यर्थ चिन्तन

बाबा ने बताया है - स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है और पर-चिन्तन पतन की जड़ है अर्थात् स्वचिन्तन वाला सदा ही चढ़ती कला में जाता है और पर-चिन्तन एवं व्यर्थ चिन्तन वाला सदा ही पतन की तरफ जाता है।इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है - तुमको सदा ही स्व-चिन्तन में रहना है। जब सदा स्व-चिन्तन में रहेंगे तो पर-चिन्तन होगा ही नहीं और यदि होता भी होगा तो वह भी खत्म हो जायेगा।

बाबा ने सदा और सर्व का शुभ-चिन्तक बनने के लिए श्रीमत दी है, परन्तु शुभ-चिन्तक वही हो सकता है, जो सदा शुभ-चिन्तन में रहेगा। इसलिए ही बाबा ने सदा स्व-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन, सेवा के चिन्तन में रहने की श्रीमत दी है।

बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चे, विश्व-नाटक को जानकर न भूतकाल का चिन्तन करो और न भविष्य की चिन्ता करो, तुम सदा वर्तमान में अभीष्ट पुरुषार्थ करो क्योंकि भूतकाल तो बीत गया, वह वापस आने वाला नहीं है और भविष्य हमारे वर्तमान कर्म पर ही आधारित है, इसलिए वर्तमान में अच्छा पुरुषार्थ करने वाले का भविष्य निश्चित ही अच्छा होगा। इसलिए बाबा ने चिन्तन और चिन्ता से परे स्व-चिन्तन में रहकर अपनी मूल स्थिति में स्थित होने के अभ्यास के लिए भी श्रीमत दी है।

"बनी-बनाई बन रही अब कुछ बननी नाहि, चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होये" । मनुष्य सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए इस विश्व के उत्थान और पतन में उसके चिन्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारा चिन्तन सदा शुभ रहे, ये हमारा परम कर्तव्य है।

बाबा ने कहा है स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है और पर-चिन्तन पतन की जड़ है। स्व-चिन्तन क्या है, और कैसे करना है, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। संक्षेप में विचार करें तो जिस चिन्तन से आत्मा और परमात्मा की याद आये वह स्व-चिन्तन और शुभ चिन्तन है और जिस चिन्तन से किसी वस्तु-व्यक्ति की याद आये, वह पर-चिन्तन है। यदि हम गहराई से विचार करें तो हमारा जो भी चिन्तन चलता है, उसमें किसी न किसी व्यक्ति-वस्तु या परमात्मा की याद अवश्य आती है, जो हमारे चिन्तन की कसौटी है। अभी वस्तु तथा व्यक्ति की याद भुला कर परमात्मा की याद स्थिर करनी है। यह देह भी पर है, इसलिए देह और दैहिक सुखों की याद भी पर चिन्तन। इसीलिए लौकिक गीता में भी कहा है - स्वधर्मे निधनं श्रेयष्कर, परधर्म भयावहा।

"जितना-जितना गहराई में जायेंगे, उतना ही घबराहट गायब हो जायेगी। ... सागर के तले में, गहराई में क्या होता है ? बिल्कुल शान्त और शान्त के साथ प्राप्ति भी होती है।"

अ.बापदादा 3.10.69

"इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर से पार्ट बजाने। ... बाप सदैव परमधाम में रहते हैं, यहाँ एक ही बार संगम पर आते हैं, जब दुनिया को बदलना होता है।" सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

"वैभव वा व्यक्ति चिन्ता को मिटाने वाले नहीं, चिन्ता को उत्पन्न कराने के निमित्त बन जाते हैं। ... शुभ-चिन्तक आत्मायें औरों के भी व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन को समाप्त करने वाले हैं।"

अ.बापदादा 10.11.87

"ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके।... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है।... चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है।... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।" अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी I

"तुमको नॉलेज देने वाला वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी, नॉलेजफुल बाप है। ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम सदा खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।"

सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

"जो सर्व में सम्पन्न होता है, उसकी आँख व बुद्धि कोई किसी तरफ नहीं डूबती। वह सदा

रूहानी फखुर में रहते हैं, अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करता रहता हैं।"

अ.बापदादा 2.5.74

"बाप कहते हैं - बच्चे, फिकर मत करो। सेवा में मेहनत करो। ... तुम्हारा कुछ भी व्यर्थ नहीं जायेगा। तुम्हारा काम है सबको राइट बताना।" सा.बाबा 10.8.05 रिवा.

"जैसे कल्प पहले महल आदि बनाये हैं बनायेंगे। बनायेंगे फिर भी वैसे ही जैसे कल्प पहले बनायें होगे। उस समय वह बुद्धि आपही आ जायेगी, उसका ख्याल अब क्यों करें। इससे तो बाप की याद में रहें। ... अभी याद की यात्रा में तोड़ निभाना है और बहुत खुशी में रहना है कि हमको बाप मिला है।" सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

"दुनिया वालों को हर कदम में चिन्ता है और आप सबके हर संकल्प में परमात्म चिन्तन है, इसलिए बेफिकर हो। ... निश्चय है और निश्चिन्त हैं। टीचर्स को कोई चिन्ता है?... चिन्ता से कभी सफलता नहीं होगी। चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है इसलिए सब सहज होना ही है। सिर्फ निमित्त बन तन-मन, धन सब सफल करते चलो।"

अ.बापदादा 18.11.93 दादियों से

"सब बच्चे एक साथ तो रह नहीं सकते। भल साथ वाले डायरेक्ट ज्ञान सुनते हैं और दूर वालों को देरी से मिलता है। परन्तु ऐसे नहीं कि साथ वाले जास्ती उन्नति को पाते हैं और दूर वाले कम उन्नति को पाते हैं। नहीं, प्रैक्टिकल में देखा जाता है कि जो दूर हैं वे जास्ती पढ़ते हैं और उन्नति को पाते हैं।" सा.बाबा 23.10.05 रिवा.

"यह सब बातें बुद्धि में धारण करनी हैं। कोई विरले हैं, जो सदैव प्वाइन्ट्स लिखते रहते हैं। ... तुम बच्चों को प्वाइन्ट्स लिखनी चाहिए। बहुत महीन-महीन प्वाइन्ट्स हैं ... बच्चों को अपनी उन्नति के लिए ख्याल करना है।... यह हैं ज्ञान रत्न।"

सा.बाबा 23.10.05 रिवा.

"मुख्य तौर पर तो पहली स्टेज - "स्व-चिन्तक" कहाँ तक बने हैं? इस पर ही तीनों सब्जेक्ट्स का रिज़ल्ट आधारित है। सारे दिन में चेक करो कि स्व-चिन्तक कितना समय रहते हैं? जैसे विश्व-परिवर्तक बनने के कारण विश्व-परिवर्तन के प्लेन्स बनाते रहते हो, समय भी निश्चित करते ही रहते हो, ...ऐसे ही स्व-चिन्तक बन, सम्पूर्ण बनने की विधि हर रोज़ नये रूप से, नई युक्तियों से सोचते हो?" अ.बापदादा 1.2.75

"जो हुआ, वह अच्छा हुआ - यह निश्चय बुरे को भी अच्छे में बदल देता है क्योंकि हिसाब-किताब चुक्तू होने के कारण वा समय प्रति समय प्रक्टिकल पेपर ड्रामा अनुसार होने के

कारण... बातें आयेंगी, आती रहीं हैं और आती भी रहेंगी ... नुकसान के बीच फायदे को ढूँढ लेगा।" अ.बापदादा 18.12.87

"कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकण्ड कल्याणकारी है। ... ब्राह्मणों का आक्यूपेशन ही है विश्व-परिवर्तक, विश्व-कल्याणकारी। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है।" अ.बापदादा 18.12.87

"विघ्न तो आयेंगे, उनको खत्म करने की युक्ति है सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है।... इसमें घबराना नहीं है, उसकी गहराई में जाकर पास करना है।" अ.बापदादा 24.1.70

"हमारा धन्धा ही सर्विस करना है। सर्विस करते रहेंगे तो सारा दिन विचार सागर मन्थन होता रहेगा। यह बाबा भी विचार सागर मन्थन करता होगा ना। नहीं तो यह पद कैसे पायेगा।"

सा.बाबा 25.4.05 रिवा.

"यह है याद की अग्नि, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। एक बाप से प्रीत बुद्धि होना है। सबसे फर्स्टक्लास माशूक है, जो तुमको भी फर्स्टक्लास बनाते हैं। ... यह सब विचार-सागर मन्थन करेंगे तो तुमको बड़ा मजा आयेगा।" सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

"जो बातें मनन की जाती हैं उन को वर्णन करना सहज हो जाता है। तो मनन करते और वर्णन करते चलो। यह भी दो बातें हुई। मनन करते-करते मग्न अवस्था आटोमेटीकली हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते वह मग्न अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते।"

अ.बापदादा 24.5.71

"दूर से ही जान जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार है। अब ब्रह्माकुमार के साथ-साथ तपस्वी कुमार दूर से ही दिखाई पड़ो, ऐसा बनकर जाना है। वह तब होगा जब मनन और मग्न दोनों का अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 19.4.71

"अभी तो जो मिलता है, उसको बुद्धि में जमा करते जाते हो फिर बैठ जब रिवाइज करके उनकी महीनता वा गुह्यता में जायेंगे तब दूसरों को भी गुह्यता में ले जा सकेंगे।"

अ.बापदादा 16.10.75

"प्रेम से ज्ञान सुनाओ। पहले तो अच्छी रीति मंथन करना पड़े। शिव बाबा तो विचार सागर मंथन नहीं करते हैं। यह विचार सागर मंथन करते हैं, बच्चों को देने के लिए। फिर भी हमेशा ऐसे समझो कि शिव बाबा समझाते हैं। इनका भी यह नहीं रहता कि मैं सुनाता हूँ, शिव बाबा सुनाते हैं। इसको निरहंकारीपना कहा जाता है। याद एक शिव बाबा को ही करना है।"

सा.बाबा 3.3.72 रिवा.

"अभी तुमको इस विकारी दुनिया से वैराग्य है। तुमको यह सब बातें अच्छी रीति धारण करनी है, नोट करना है और परहेज भी रखनी है। दैवी गुण धारण करने हैं।"

सा.बाबा 7.12.05 रिवा.

"सारा दिन यही ख्यालात चलते रहें कि कैसे सेन्टर खोल सर्विस को बढ़ायें। ... बाबा पावन बनने के लिए युक्तियां बताते रहते हैं, बच्चों को उसमें ही रमण करते रहना है। ... बाप के सिवाए और कोई नई दुनिया की स्थापना की मत नहीं दे सकते।"

सा.बाबा 1.12.05 रिवा.

"समय आपका इन्तजार कर रहा है और आपको इन्तजाम करना है, समय का इन्तजार नहीं करना है। सर्व को सन्देश देने का और समय को सम्पन्न बनाने का इन्तजाम करना है।"

अ.बापदादा 20.12.92

"प्रश्नचित्त कभी भी प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता ... अगर क्यों-क्या के प्रश्नों की रचना रच ली तो पालना करनी ही पड़ेगी। ... इसलिए इस व्यर्थ रचना को कन्ट्रोल करो।"

अ.बापदादा 19.11.89

"एक है जिम्मेवारी, जिसके कारण सुनना पड़ता है, वह अलग बात है। ... जिम्मेवारी उठाना भी एक ऊंची स्थिति है। भले जिम्मेवारी उठाओ लेकिन पहले यह चेक करो कि सेकेण्ड में बिन्दी लगती है? ... अगर ऐसी स्थिति है तो जिम्मेवारी लो, नहीं तो देखते भी नहीं देखो, सुनते भी नहीं सुनो, स्व-चिन्तन में रहो।" अ.बापदादा 25.11.95

"ज्ञान की प्वाइन्ट्स रिपीट कर दी या ज्ञान की प्वाइन्ट्स सुन ली, सुना दी - सिर्फ यही स्व-चिन्तन नहीं है लेकिन स्व-चिन्तन अर्थात् अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को, छोटी-छोटी गलतियों का चिन्तन करके मिटाना, परिवर्तन करना, ये स्व-चिन्तन है। ... वह ज्ञान का मनन-चिन्तन है लेकिन स्व-चिन्तन का महीन अर्थ अपने प्रति है।" अ.बापदादा 25.11.95

"युद्ध होगी। व्यर्थ संकल्प शुद्ध संकल्प को कट करेगा... युद्ध में तीर, तीर को रास्ते में ही खत्म कर देता है ... लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है। विजय का तिलक सदा है ही है। ... शुद्ध संकल्प से व्यर्थ संकल्प को समाप्त करो। तो सर्व के शुभ संकल्पों का वायुमण्डल का घेराव कमाल करके दिखायेगा।" अ.बापदादा 14.4.94

"जब व्यर्थ की अविद्या हो गई तो दिव्यता स्वत: ही सहज ही अनुभव होगी और अनुभव करायेगी। ... न बातें बनाओ, न बातें देखो, न बातें करो लेकिन क्या करो? बाप को देखो, बाप समान करो, बाप समान बनो।" अ.बापदादा 14.4.94

श्रीमत और परमत, मनमत, पर-दर्शन, पर-दोष-दृष्टि

श्रीमत एक शिवबाबा की ही है, जो आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण का एकमात्र आधार है, उसके अतिरिक्त जो भी मतें हैं, वे पतन के ही कारण बनती हैं और पर-मत कही जायेंगी। दुनिया में अनेक मनुष्य, अनेक सम्बन्ध हैं, उनकी अपनी-अपनी मतें हैं, जिन पर चलकर मनुष्य पतन की ओर जाता रहा है और जा रहा है। कोई भी देहधारी, फिर वह चाहे ज्ञानी हो या अज्ञानी हो, उसकी मत को परमत ही कहा जायेगा, श्रीमत नहीं। हाँ ज्ञानी आत्मा शिवबाबा की श्रीमत की स्मृति दिला सकता है परन्तु वह श्रीमत नहीं हो सकती क्योंकि हर देहधारी में कोई न कोई स्वार्थपरता अवश्य होती है, इसलिए उसकी मत को परखकर ही कार्य व्यवहार में लाना है। श्रीमत को छोड़कर अपनी मत पर चलना मनमत है, जो भी आत्मा के पतन का ही कारण बनती है।

परमत, मनमत, पर-दर्शन का आत्मा पर कैसा दुष्प्रभाव होता है और उससे कैसे बचें, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। इसलिए बाबा ने हम बच्चों को कहा है - बच्चों की दूर की नज़र तो तेज है परन्तु पास की नज़र कमजोर है। पर-दर्शन ही पर-चिन्तन का मूल कारण है और श्रीमत इन सब से बचने और स्व-चिन्तन में रहने का मूलाधार है।

“कट निकली हुई हो तो कोई को तीर लगे। पहले कट निकालने की कोशिश करनी चाहिए।... घूमने जाते हो तो भी बाप की याद में हो ... झरमुई-झगमुई करते हैं तो फिर कट और ही चढ़ जाती है। परचिन्तन की कोई बात नहीं सुनो।” सा.बाबा 23.9.05 रिवा.

“एक पर-दर्शन दूसरा पर-चिन्तन। पर-चिन्तन में व्यर्थ चिन्तन भी आ जाता है। यही दो बातें संग के रंग में स्वच्छ हीरे को दागी बना देती हैं। इसी पर-दर्शन... का यादगार रामायण की कथा बनी हुई है। गीता ज्ञान भूल जाता है। गीता ज्ञान अर्थात् स्व-चिन्तन।”

अ.बापदादा 13.4.83

“ज्यादा सोचो भी नहीं। व्यर्थ सोच भी कमजोर कर देता है। जिसके व्यर्थ संकल्प ज्यादा चलते हैं तो दो-चार बार मुरली पढ़ो, मनन करो। पढ़ते जाओ। कोई न कोई प्वाइन्ट बुद्धि में बैठ जायेगी। शुद्ध संकल्पों की शक्ति जमा करते जाओ तो व्यर्थ संकल्प खत्म हो जायेंगे।”

अ.बापदादा 29.3.86 पार्टी

“शुभ-चिन्तक अर्थात् ज्ञान-रतनों से भरपूर।... शुभ-चिन्तन वाला सदा अपने सम्पन्नता के नशे में रहता है। ... पर-चिन्तन और व्यर्थ चिन्तन वाला सदा खाली होने के कारण अपने को कमजोर अनुभव करेगा।” अ.बापदादा 10.11.87

“जो हो रहा है, वह बहुत अच्छा है। यह कड़ा हिसाब भी शक्तिशाली बना देता है, सहनशक्ति को बढ़ा देता है। ... और बातों में जाना, औरों को देखना माना गिरना और बाप को देखना, बाप का सुनना अर्थात् उड़ना। ... अगर प्रकृति की तरफ भी देखते हैं तो भी परदर्शनधारी हो गये। बॉडी कॉन्शस होना माना परदर्शन और आत्माभिमानी होना माना स्वदर्शन।”

अ.बापदादा 18.12.91

“चलते-चलते थकते क्यों हैं? चलते-चलते श्रीमत के इशारों में मनमत-परमत मिक्स कर देते हैं, इसलिए स्पष्ट और सीधे रास्ते से भटक टेढ़े-बांके रास्ते में चले जाते हैं।”

अ.बापदादा 18.12.91

“यहाँ साधारण रहना है, न बहुत ऊंच न बहुत नीच। निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सर्दी-गर्मी ... यह सब कुछ सहन करना पड़ता है। ... निन्दा-स्तुति में नहीं जाना है।” (न निन्दा-स्तुति से स्वयं प्रभावित होना है और न किसकी निन्दा-स्तुति में जाना है)

सा.बाबा 11.8.06 रिवा.

“बापदादा प्रश्न पूछता - कब तक हर एक स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनायेंगे। दूसरे को नहीं देखो ... मुझे स्व को सम्पन्न बनाना है। ... बातें खत्म हों तो सम्पन्न बनें, यह होना नहीं है। जितना आगे बढ़ेंगे, रूप जरूर चेन्ज होगा लेकिन बातें तो आयेंगी। ... बातें न दिखाई दें लेकिन बाबा दिखाई दे। बाबा ने क्या कहा है।” अ.बापदादा 28.3.06

“जो हो रहा है, वह बहुत अच्छा है। यह कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है, सहनशक्ति को बढ़ा देता है। ... और बातों में जाना, औरों को देखना माना गिरना और बाप को देखना, बाप का सुनना अर्थात् उड़ना। ... अगर प्रकृति की तरफ भी देखते हैं तो भी परदर्शनधारी हो गये। बॉडी कॉन्शस होना माना परदर्शन और आत्माभिमानी होना माना स्वदर्शन।”

अ.बापदादा 18.12.91

“चलते-चलते थकते क्यों हैं? चलते-चलते श्रीमत के इशारों में मनमत-परमत मिक्स कर देते हैं, इसलिए स्पष्ट और सीधे रास्ते से भटक टेढ़े-बांके रास्ते में चले जाते हैं।”

अ.बापदादा 18.12.91

“बाप तो बच्चों को सावधान करते हैं - श्रीमत का उलंघन नहीं करना है।... बिगर श्रीमत के करेंगे तो गिरते ही जायेंगे। ... ऊंच चढ़ते-चढ़ते फिर श्रीमत को भूलकर अपनी मत पर चलते हैं तो देवाला मार देते हैं। ... माया हप कर लेती है।”

सा.बाबा 12.01.06 रिवा.

“अब बाप बच्चों को फरमान करते हैं, मुझे याद करो। और सब बातों को छोड़ तुम अपना

कल्याण करो। बाप को याद करने में ही कल्याण है। ... तुम परचिन्तन को छोड़ अपना कल्याण करो, दूसरों के चिन्तन में जाओ ही नहीं। ... श्रीमत पर नहीं चलते हो तो आपही अपने को श्रापित करते हैं।" सा.बाबा 14.8.06 रिवा.

"अपने को आत्म समझ बाप को याद करो। वह रुहानी बाप है निराकार, जिसको हम आत्मायें बुलाते हैं। ... पतित-पावन तो एक बाप ही है।... अब बाप कहते हैं - तुमको मेरी श्रीमत पर चलना है, और किसकी मत पर न चलो।" सा.बाबा 3.7.06 रिवा.

"क्या करूँ, कैसे करूँ, अभी तो पुरुषार्थी हूँ, अभी सम्पूर्ण नहीं बने हैं, आखिर में हो जायेंगे... अभी कौन हुआ है, सबके पास है -ये है माया की खातिरी करना।... आनी ही हैं लेकिन स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो पर-स्थिति उसके आगे कुछ भी नहीं है।" अ.बापदादा 16.2.96

"व्यर्थ बातें सुनाने वाले को भी समझाकर उसे भी उससे मुक्त करो। सुनकर इन्ट्रेस्ट नहीं बढ़ाओ। ... थोड़ा-थोड़ा किचड़ा इकट्ठा होते-होते घृणा भाव या चाल-चलन में अन्तर आ जाता है। इसको कहा जाता है श्रीमत में परमत मिलाना।" अ.बापदादा 25.11.95

"बच्चों का पुरुषार्थ ढीला क्यों होता है, समय वेस्ट क्यों जाता है, उसके तीन कारण हैं। पहला - चलते-चलते श्रीमत के साथ आत्माओं की परमत मिक्स कर देते हैं।... दूसरा कारण है पर-चिन्तन। ... तीसरी बात है पर-दर्शन।" अ.बापदादा 25.11.95

श्रीमत और बेफिकर बादशाह की स्थिति / श्रीमत और बेग़मपुर के बादशाह की स्थिति

हमारा जीवन सदा निर्भय और निश्चिन्त रहे, उसका मार्ग भी परमात्मा ने अभी हमको बताया, जिस मार्ग पर चलकर हम सहज निर्भय और निश्चिन्त जीवन का अनुभव कर सकते हैं। परमात्मा आकर आत्माओं को सर्व फिकर से फारिग कर देते हैं। ईश्वरीय ज्ञान और परमात्मा की याद आत्मा को फिकर से फारिग बेफिकर बादशाह बनाती है। जो अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित है, वह सदा ही बेफिकर बादशाह है। जिसके सिर पर परमात्मा का हाथ है और उसका साथ है, वह सदा ही बेफिकर बादशाह है। हम बेफिकर बादशाह कैसे बनें, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

"बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है। पक्के रहेंगे तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।" सा.बाबा 23.12.68 रात्रि क्लास

"जैसा निश्चय वैसा कर्म और वाणी स्वत: होती है।... निश्चयबुद्धि हर समय अपने को बेफिकर बादशाह सहज और स्वत: अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 21.12.87

"रुहानी फखुर में रहते हो इसलिए बेफिकर बादशाह हो।... ऐसे अनुभव करते हो ना! बेफिकर हो और बादशाह भी हो।... बेफिकर हो क्योंकि आपने सारे फिकर बाप को दे दिये हैं। बोझ उतर गया ना। फिकर खत्म और बेफिकर बादशाह बन अमूल्य जीवन अनुभव कर रहे हो।" अ.बापदादा 15.12.04

"दुनिया के धन्धे आदि की बात यहाँ नहीं लाओ।... यह कोई मेरा काम नहीं है। मेरा धन्धा है तुम्हें पतित से पावन बनाकर विश्व का मालिक बनाने का।... देवताओं को भी कोई परवाह नहीं होती है। देवताओं के ऊपर है ईश्वर। ईश्वर के बच्चों को क्या परवाह हो सकती है।"

सा.बाबा 25.12.04 रिवा.

"गाया जाता है ना - साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन और सदा अपने साथ श्रीमत रुपी हाथ अनुभव करेंगे।... तुमको बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता हैं।"

अ.बापदादा 31.5.72

"ब्रह्मा बाप का यही शब्द हर बात में रहा - "नथिंग न्यू" होना ही है, हो रहा है और हम बेफिकर बादशाह। ... फिकर में होंगे तो निर्णय ठीक नहीं होगा। बेफिकर होंगे तो निर्णय अच्छा होगा तो बच जायेंगे। टचिंग होगी - अभी समय अनुसार यह करें या नहीं करें।"

अ.बापदादा 30.11.99

"अपने को विधाता बाप द्वारा विधि और विधान को जानने वाले समझते हो?... विधि और विधान को जानने वाले हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेगमपुर के बादशाह।" अ.बापदादा 3.10.75

"तुमको नॉलेज देने वाला वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी, नॉलेजफुल बाप है। ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम सदा खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।"

सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

"मैं निमित्त कर्मयोगी हूँ, करावनहार बाप है। अगर यह स्मृति हर समय स्वत: ही रहती है तो सदा ही बेफिकर बादशाह हैं। ... बेफिकर बादशाह अर्थात डबल लाइट रहने वाले। जब तक बादशाह नहीं बने हैं तब तक यह कर्मेन्द्रियां भी अपने वश में नहीं रह सकती हैं। राजा बनते हो तब ही मायाजीत, कर्मेन्द्रिय-जीत, प्रकृतिजीत बनते हो।" अ.बापदादा 10.3.86

"सभी कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बादशाह हो। पवित्रता लाइट का ताजधारी बनाती है। ... बेफिकर बादशाह की निशानी है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को भी सन्तुष्ट करने वाले। कभी भी कोई अप्राप्ति है ही नहीं जो असन्तुष्ट हों। जहाँ अप्राप्ति है वहाँ असन्तुष्ता है और जहाँ प्राप्ति है वहाँ सन्तुष्टता है।" अ.बापदादा 15.12.04

"जो सर्व में सम्पन्न होता है, उसकी आंख व बुद्धि कोई किसी तरफ नहीं डूबती। वे सदा रूहानी फखुर में रहते हैं, अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करता रहता हैं।"

अ.बापदादा 2.5.74

"अगर बापदादा के दिल पर चढ़ना चाहते हो तो विचार सागर मंथन करो ... बच्चे आदि की परवाह नहीं रखी जाती है। वास्तव में बच्चे की शादी कराना न चाहिए। लोक-लाज कुल की मर्यादा खोनी पड़ती है दुश्मन से डरना थोड़ेही होता है। बाबा का हाथ मिला फिर परवाह किसकी नहीं रखी जाती है।" सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

"आप बेफिकर बादशाह हो, बेगर होते भी बादशाह।... बादशाह का अर्थ यह नहीं कि तख्त पर बैठें। बादशाह अर्थात् भरपूर, कोई अप्राप्ति नहीं, कमी नहीं।"

अ.बापदादा 10.12.87

"परिस्थिति के आधार पर स्थिति बनाने वाला कभी भी अचल, अडोल नहीं रह सकता। ... परिस्थिति के आधार पर स्थिति नहीं लेकिन अपने वर्से और वरदान के आधार पर वा अपनी श्रेष्ठ स्थिति के आधार पर परिस्थिति को परिवर्तन करने वाला होगा। निश्चयबुद्धि इस कारण सदा बेफिकर बादशाह है।" अ.बापदादा 27.12.87

"निश्चय रखो कि अनेक बार के विजयी हैं। ... आप हो बेफिकर बादशाह। जब बाप बैठा है तो बच्चे बेफिकर होते हैं। तो बेफिकर बादशाह बन गये हो।"

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 4

"सदा साक्षीपन के आसन और बेफिकर बादशाह के सिंहासन पर बैठ कर सब खेल देख रहे हो ना। इस ब्राह्मण जीवन में घबराने का तो स्वप्न में भी संकल्प नहीं उठ सकता। ... समय प्रमाण आने-जाने में व किसी वस्तु के मिलने में कुछ खींचातान हो परन्तु मन में संकल्पों की खींचातान में नहीं आना।" अ.बापदादा 18.1.91 सर्व बच्चों प्रति सन्देश

"बापदादा को बच्चों का समय प्रमाण युद्ध का स्वरूप भाता नहीं है। बापदादा हर बच्चे को मालिक के रूप में देखना चाहते हैं। ... शक्तिशाली, बेफिकर बादशाह।"

अ.बापदादा 31.12.05

“बेफिकर बादशाह इस समय बनते हो। क्योंकि सतयुग में फिकर वा बेफिकर का ज्ञान ही नहीं है। ... सदा स्मृति में रहे - मैं स्वराज्य अधिकारी बेफिकर बादशाह हूँ। ... ड्रामा अनुसार साइन्स वालों को भी टच तभी हुआ है, जब बाप को आवश्यकता है।”

अ.बापदादा 18.02.93 पार्टी 5

“सदा बुद्धि में यह स्मृति रहती है ना कि बाप करावनहार करा रहा है, हम निमित्त हैं ... इसको कहते हैं - बेफिकर बादशाह।” अ.बापदादा 27.3.88

“बेफिकर। क्या होगा, कैसा होगा, इसका भी फिकर नहीं। त्रिकालदर्शी स्थिति में रहने वाले जानते है - जो हो रहा है वह सब अच्छा है और जो होने वाला है वह और अच्छा होगा। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप के साथी हो, साथ रहने वाले हो।”

अ.बापदादा 28.3.06

“तो सदा बेफिकर रहना है और दूसरों को बेफिकर बनने की अनुभव से विधि बतानी है। ... तो स्वयं भी बेफिकर बादशाह और दूसरों की भी शुभ-भावना की दुआयें मिलेंगी।”

अ.बापदादा 12.3.88 पार्टी 1

“बाप भी बेफिकर और बच्चे भी बेफिकर हो गये। ... ट्रस्टी काम बहुत प्यार से करता है लेकिन बोझ नहीं होता है। सब कुछ तेरा ... जैसी स्मृति होती है, वैसी ही स्थिति होती है। तेरा माना बाप की स्मृति। ... अविनाशी धन के बादशाह हो।”

अ.बापदादा 12.3.88 पार्टी 1

“तो सदा बेफिकर रहना है और दूसरों को बेफिकर बनने की अनुभव से विधि बतानी है। ... तो स्वयं भी बेफिकर बादशाह और दूसरों की भी शुभ-भावना की दुआयें मिलेंगी।”

अ.बापदादा 12.3.88 पार्टी 1

“बाप का हाथ है श्रीमत। तो श्रीमत का हाथ सदा हाथ में है। ... तो सदा साथ रहने वाले और सदा श्रीमत के हाथ में हाथ देकर चलने वाले। जिसका साथी बाप है और जिसका हाथ बाप के हाथ में है, वह सदा ही निश्चिन्त, बेफिकर बादशाह है।”

अ.बापदादा 5.12.94 डबल विदेशी

श्रीमत और इच्छा-आकांक्षा, कामनायें, आवश्यकतायें, आशायें-अभिलाषायें

बाबा दैवी सृष्टि की स्थापना करता है, जहाँ हर आत्मा की इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति होती है अर्थात् इच्छा क्या होती है, उसका भी देवताओं का ज्ञान नहीं होता है अर्थात् उनकी स्थिति ऐसी होती है, जो प्रकृति समय पर उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वत: करती है, इसलिए उनको इच्छा करने की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए बाबा की श्रीमत है - तुमको यहाँ ही यह स्थिति धारण करनी है। इसके लिए बाबा ने कहा है - इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी, कामना माया का सामना करने नहीं देगी। इसलिए बाबा की श्रीमत है - तुमको इच्छा-आकांक्षा, कामना आदि से परे जाना है। जब तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगे तो इच्छा-आकांक्षा, कामना आदि का नाम-निशान नहीं होगा। इसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है - तुमको अपने साधनों के अनुसार ही जीवन स्तर को रखना है और तपस्या करनी है। दुनिया में कहा गया है - उतने ही पैर पसारिये, जितनी लम्बी चादर होये।

"कितने भी खुश हों लेकिन फिरभी कोई न कोई प्राप्ति की इच्छा तो होती है ना। चाहे वातावरण ठीक है इसके लिए परेशान नहीं भी हैं लेकिन फिर भी जब तक ज्ञान नहीं है तो विनाशी इच्छायें कभी भी पूरी नहीं होती हैं। एक के बाद दूसरी इच्छा उत्पन्न होती रहती है। तो इच्छा भी सदा सन्तुष्टता का अनुभव नहीं कराती है।" अ.बापदादा 13.3.86

"अभी तुम बच्चों को इस विकारी दुनिया से नफरत होनी चाहिए।... हमको बाप को याद कर अपनी आत्मा को पवित्र बनाना है।" सा.बाबा 7.11.05 रिवा.

"अभी तुमको जास्ती तमन्नायें नहीं रखनी हैं। ... अगर बाप की श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो तुम श्रेष्ठ नहीं बनेंगे। पांच विकारों का दान देना है तब यह ग्रहण छूटेगा।... गाया भी जाता है - अमृत छोड़ विष काहे को खाये। ... अभी तुमको ईश्वरीय मत मिलती है कि बाप को याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी।" सा.बाबा 1.7.06 रिवा.

"जो मिले, उसमें खुश रहो। दाल-रोटी जैसी और कोई चीज होती नहीं। जास्ती लालच भी नहीं होनी चाहिए।" सा.बाबा 11.5.06 रिवा.

श्रीमत और इच्छामात्रम् अविद्या अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति

सतयुग में सभी आत्मायें इच्छामात्रम् अविद्या होंगी क्योंकि उनकी सर्व आवश्यकतायें

स्वत: ही पूर्ण होती रहेंगी, इसलिए इच्छा का प्रश्न ही नहीं उठता है। परन्तु वह स्थिति हमको अभी यहाँ ही बनानी है, जिसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - बच्चे, इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी। दाता के बच्चे दाता बनो।

"हर एक बच्चे को अपने से पूछना चाहिए कि बाप से सभी कुछ मिला है ? किस-किस चीज में कमी है ? हर एक को अपने अन्दर में झांकी पहननी है। जैसे नारद का मिसाल ... अपने अन्दर जो खामी हो, वह सर्जन को बतानी चाहिए, फिर बाबा युक्ति भी बतायेंगे और करेण्ट भी देंगे, जिससे खामी निकल जायेगी, नहीं तो बढ़ती रहेगी।" सा.बाबा 11.12.68

"स्व-स्थिति को मास्टर सर्वशक्तिवान कहा जाता है। ... जब तक कोई सूक्ष्म वा स्थूल कामना है तब तक सामना करने की शक्ति नहीं आ सकती।... इच्छामात्रम् अविद्या।... मास्टर सर्वशक्तिवान कब हार नहीं खा सकते।" अ.बापदादा 3.12.70

"अपने से पूछो हमारी स्थिति "इच्छा मात्रम् अविद्या" की बनी है ? जब ब्राह्मणों की ऐसी स्थिति बनेगी तब जयजयकार भी होगी, तो हाहाकार भी होगा।" अ.बापदादा 3.12.70

"प्राप्ति तो की लेकिन ऐसी प्राप्ति की जो सर्व तृप्त हो जायें। जितना तृप्त बनेंगे, उतना ही इच्छामात्रम् अविद्या होगी और कामना के बजाये सामना करने की शक्ति आयेगी। ... सदैव यह स्मृति रखना कि मैं विजयी माला का विजयी रतन हूँ। इस स्मृति से कब हार नहीं होगी।"
अ.बापदादा 5.12.70

"व्यक्त भाव में आना व कोई भी व्यक्ति व वस्तु में भावना रखना कि यह प्रिय है व अच्छी लगती है। यह व्यक्त वस्तु और व्यक्ति में भावना रहना अर्थात् कामना का रूप हो जाता है। जब तक कामना है, तब तक माया से सम्पूर्ण रीति सामना नहीं कर सकते। जब तक सामना नहीं कर सकते, तब तक समान नहीं बन सकते अर्थात् वायदा नहीं निभा सकते।"
अ.बापदादा 5.12.74

"इच्छामात्रम् अविद्या" स्वयं भी बाप द्वारा व सर्व सहयोगी आत्माओं द्वारा सहयोग, स्नेह, हिम्मत, उल्लास, उमंग की इच्छा रखने वाले और कोई भी प्रकार का आधार लेने वाले सर्व-आत्माओं के निमित्त आधार-मूर्त नहीं बन सकते। प्रकृति के व परिस्थिति के और व्यक्ति के व वैभव के अधीन रहने वाली आत्मा अन्य आत्माओं को भी सर्व अधिकारी नहीं बना सकती।"
अ.बापदादा 26.6.74

"असार संसार अनुभव होता है ? "यह सब मरे ही पड़े हैं" - ऐसा बुद्धि द्वारा अनुभव होता है ? मुर्दों से कोई प्राप्ति की इच्छा हो सकती है, क्या कोई सम्बन्ध की अनुभूति होती है ? ऐसे इच्छा मात्रम् अविद्या, सदा एक के रस में रहने वाले, एकरस स्थिति वाले बन चुके हो अथवा अब

तक भी मुर्दों से किसी प्रकार की प्राप्ति की कामना है।" अ.बापदादा 2.8.75

"मन के भाग्यवान सदा इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति वाले होते हैं।... मन का लगाव व झुकाव किसी व्यक्ति व वस्तु की तरफ नहीं होगा ... मन को बाप के तरफ लगाने में मेहनत नहीं होगी लेकिन सहज ही मन बाप की मोहब्बत के संसार में रहेगा।"

अ.बापदादा 19.11.89

श्रीमत और पवित्रता / श्रीमत और ब्रह्मचर्यव्रत

ब्रह्मचर्य ब्राह्मण जीवन का आधार है और सम्पूर्ण एवं सम्पन्न पवित्रता ब्राह्मण जीवन का अभीष्ट लक्ष्य है। बाबा ने कहा है - पवित्रता केवल ब्रह्मचर्य अर्थात् काम विकार में न जाने को ही नहीं कहा जाता है। सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् पूर्ण आत्मिक स्थिति अर्थात कर्मातीत स्थिति। पांच विकार, आलस्य, अलबेलापन से भी मुक्त सम्पूर्ण निर्विकारी के साथ देह-भान से भी न्यारे। ऐसी पवित्रता को धारणा करने के लिए बाबा ने अनेक प्रकार से श्रीमत दी है। ब्रह्मचर्य के लिए बाबा ने कहा है - जीवन के मूल्य पर भी इसको धारण करना है क्योंकि ये ब्राहमण जीवन का आधार है, जहाँ से पवित्रता के भवन का निर्माण आरम्भ होता है। यदि ब्रह्मचर्य की धारणा नहीं तो वह ब्राह्मण नहीं शूद्र है।

पवित्रता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है क्योंकि पवित्र आत्मा ही इस विश्व-नाटक का परमसुख अनुभव कर सकती है, उसके जीवन में दुख हो नहीं सकता। यह ब्राह्मण जीवन है ही पवित्र बनने और बनाने के लिए। पवित्रता क्या है, पवित्रता की धारणा कैसे हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

पवित्रता अर्थात ब्रह्मचर्य के लिए बाबा ने कहा है - ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के समान जीवन। ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म में रहने वाली स्थिति अर्थात् देहाभिमान और देहभान से परे। इसलिए बाबा देहभान से परे होने की ड्रिल कराते हैं।

पवित्रता की कसौटी क्या है?

पवित्रता के लिए बाबा ने कहा है यदि अंशमात्र भी आत्मा को दुख की महसूसता होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-आवेश का अंश है तो वह पवित्रता की कमी की निशानी है। इन सबसे हम अपनी पवित्रता का माप सकते हैं और जब ऐसी चेकिंग करेंगे तब ही सम्पूर्ण पवित्रता के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकते हैं, उस पुरुषार्थ के लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने आवाज़ से हंसने को भी अपवित्रता कहा है क्योंकि यह भी देहाभिमान की ही निशानी है अर्थात् देहाभिमान का अंश है। बाबा सदैव कहते - देवतायें कब जोर से नहीं हँसते, वे सदैव

मुस्कराते हैं। इस सत्य का प्रमाण साकार ब्रह्मा बाबा और गुल्जार दादी के तन में पधारे अव्यक्त बापदादा को देखने से अनुभव होता है।

पवित्रता के लिए बाबा ने कहा है - सम्पूर्ण पवित्र आत्मा जब परमधाम से आती है और जब परमधाम जाती है तब ही होती है। आने के बाद हर क्षण आत्मा में अपवित्रता अर्थात् देहभान बढ़ता जाता है, जो ही बाद में देहाभिमान में बदल जाता है। परन्तु उसकी अनुभूति हम अभी कर सकते हैं, जिस अनुभूति को बढ़ाते-बढ़ाते सम्पूर्णता को पाना है।

ब्रह्मचर्य आवश्यक क्यों?

योग साधना के लिए आधार शिला

मन-बुद्धि की एकाग्रता के लिए

मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव अर्थात् संगमयुग का परम-सुख अनुभव करने के लिए

आत्मिक शक्ति के ह्रास और आत्मिक शक्ति के विकास के लिए -

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

पवित्रता परमात्मा की श्रीमत है और पवित्रता की धारणा के लिए परमात्मा की श्रीमत पर चलना अति आवश्यक है।

पवित्रता दैवी जीवन का मूल गुण है

बाबा ने ब्रह्मचर्य की धारणा के लिए श्रीमत दी है और उसके महत्व को बताया है, वह सब हमारी बुद्धि में होगा तो ब्रह्मचर्य की धारणा सहज होगी।

"नम्बर वन है काम, उनको ही पतित कहा जाता है। क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे।... सतोप्रधान को पुण्यात्मा और तमोप्रधान को पापात्मा कहा जाता है। विकार में जाना पाप है। बाप कहते हैं अब पवित्र बनो।" सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

"पवित्रता आत्मा की सुख-शान्ति का मुख्य आधार है। पवित्र आत्मा को कब दुख-अशान्ति हो नहीं सकती। मुख्य बात है पवित्रता की। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनो। इस पर जीत पाने से ही तुम पवित्र बनेंगे। ... जब आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो फिर यह पतित शरीर नहीं रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे।"

सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

"मूल बात है पतितों को पावन बनाने की। वैसे दुनिया में पावन तो बहुत होते हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। ... वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते हैं। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें। ... शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते।" सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

“आप जो श्रेष्ठ आत्मायें हो वह सदैव वैष्णव अर्थात् तमोगुणी संकल्प वा तमोगुणी संस्कारों को भी टच नहीं कर सकते हो। ... इसी प्रकार अगर अपनी कमजारी के कारण कोई भी पुराना तमोगुणी संस्कार वा संकल्प भी टच कर देते हैं तो विशेष रुप से ज्ञान-स्नान करना चाहिए अर्थात् बुद्धि में विशेष रूप से बाप की याद अथवा बाप से रुह-रिहान करनी चाहिए।”

अ.बापदादा 15.5.72

“पवित्रता के श्रृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पांवो में सदा पवित्रता का श्रृंगार प्रत्यक्ष हो। ... जैसे कर्मों की गति गहन है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है। पवित्रता ही फाउण्डेशन है।” अ.बापदादा 17.10.87

“अपनी ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपकी वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाये। ... वृत्ति बदल गई है ? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना है। ... कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है ? कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बने हो, बनी हुई है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना-बनाया ड्रामा। बना हुआ है, सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है।“

अ.बापदादा 7.3.05

“जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।”

अ.बापदादा 14.11.87

“सफलतामूर्त बनने के लिए मुख्य दो ही विशेषतायें चाहिए - एक प्योरिटी और दूसरी युनिटी। अगर प्योरिटी में कमी है तो युनिटी में भी कमी होगी। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता है। संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्योरिटी।”

अ.बापदादा 31.10.75

“आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। जो यथार्थ कर्म नहीं है, वह सब विकार है। ... पवित्रता के आधार पर ही कर्म की गति-विधि का आधार है। ब्रह्मचारी रहे या निर्मोही रहे - सिर्फ इसको ही पवित्रता नहीं कहेंगे। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है।”

अ.बापदादा 17.10.87

“वास्तव में याद वा सेवा की सफलता का आधार है - पवित्रता। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचारी नहीं लेकिन पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है - ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना।... आचरण में फालो ब्रह्मा बाप को करना है।” अ.बापदादा 20.2.87

पवित्रता अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिसा परमोधर्म - हर आत्मा परमधाम में जाते और परमधाम से आते समय सम्पूर्ण पवित्र होती है। परमात्मा आकर सर्वात्माओं को पावन बनाकर घर ले जाते हैं, जहाँ से सब नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं।

"पवित्रता की शक्ति के कारण जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। पवित्रता फाउण्डेशन है। पवित्रता को माता कहते हैं और सुख-शान्ति उनके बच्चे कहते हैं। तो जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है।" अ.बापदादा 22.3.86

"मूल बात है पतितों को पावन बनाने की। वैसे दुनिया में पावन तो बहुत होते हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। ... वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते हैं। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें। ... शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते।" सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

"आपको स्व-धर्म, स्व-देश, स्व का पिता और स्व स्वरूप, स्व कर्म सबकी नॉलेज मिली है तो नॉलेज की शक्ति से मुश्किल अति सहज हो गया। ... सारे विश्व के आगे चैलेन्ज से कह सकते हो कि पवित्रता तो हमारा स्व- स्वरूप है।" अ.बापदादा 22.3.86

"आप सभी पवित्रता को धारण करना कितना सहज समझते हो क्योंकि बापदादा द्वारा नॉलेज मिली और नॉलेज की शक्ति से जान लिया कि मुझ आत्मा का अनादि और आदि स्वरूप है ही पवित्र।... वास्तविक को अपनाना सहज हो गया ना।" अ.बापदादा 22.03.86

"पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है - स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाती है। जब स्मृति है कि यह फीमेल है तो वह स्मृति वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खींचती है।" अ.बापदादा 25.8.71

"बाप से सर्व सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझाना चाहिए और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान और कहाँ मैं।" अ.बापदादा 11.7.74

"जो पक्के निश्चयबुद्धि बन जाते हैं वे कोई की परवाह नहीं करते। बिल्कुल ही नष्टोमोहा हो जाते हैं। एकदम नष्टोमोहा सेकेण्ड में। जो स्वर्गवासी नहीं बनते तो जहन्नुम में जाने दो। राजाई को भी थूक मार देंगे। भक्ति मार्ग में मीरा का मिसाल है।... कहेंगी हमको तो पवित्र बनना है, फट से कहेंगी हमको राजाई की कोई परवाह नहीं है। जैसे उन राजाओं की रानियों को परवाह नहीं रही, छोड़ दिया। वैसे अब रानियाँ निकलेंगी, जो राजाओं की परवाह नहीं करेंगी। बस

हम तो स्वर्ग की मालिक बनती हैं। भक्ति मार्ग में राजाओं का नाम है, जिन्होंने सन्यास किया है। अभी यह तो है ज्ञान मार्ग।“ सा.बाबा 14.4.73 रिवा.

“आंखें क्रिमिनल बनती हैं तब शरीर की कर्मेन्द्रियां चंचल होती हैं।... यहाँ क्रिमिनल आई बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। भाई-बहन होकर रहेंगे तब पवित्र रह सकेंगे।”

सा.बाबा 16.9.05 रिवा.

“कलियुग है, यहाँ भाई-बहन भी खराब हो पड़ते हैं। परन्तु लॉ मुजिब भाई-बहन के बुरे ख्यालात नहीं रहेंगे। ... तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो तो यह ज्ञान पक्का हो जाना चाहिए कि हम भाई-बहन हैं। हम आत्मायें भगवान के बच्चे भाई-भाई हैं। ... हम आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से अलग हैं।” सा.बाबा 29.7.05 रिवा.

“तुम जानते हो हम आत्मा हैं, इस समय हम रुहानी पण्डे बने हैं। बनते भी हैं और बनाते भी हैं . यह बातें अच्छी रीति धारण करो।... रोज सुबह-शाम यह विचार करना चाहिए ... अमरपुरी जाने के लिए तुम पवित्र बन रहे हो।” सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

“शान्तिधाम हमको जाना ही है, यह ड्रामा की भावी टाले नाहिं टले। यह अच्छी रीति बुद्धि में धारण करो। ... परमात्मा पवित्रता का सागर है, वह अब बच्चों को पवित्र बनाने के लिए श्रीमत देते हैं कि मामेकम् याद करो।” सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

“कई कुमारियाँ अथवा कुमार कहते हैं बाबा मात-पिता बहुत नाराज होते हैं शादी न करने पर। बाबा कहते हैं जाकर शादी करो। पूछते हो ना, खुद तुम्हारी दिल है। .... शिव बाबा को याद करते मर भी गये तो तुम्हारा बहुत ऊंच पद होगा।” सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

“स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है ... ईर्ष्या वा आवेश के वश कर्म होता है ... इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा। जब स्वप्न का भी प्रभाव पड़ता है तो साकार में किये हुए कर्म का कितना प्रभाव पड़ता होगा।” अ.बापदादा 17.10.87

“ऐसे बहुत हैं, जो जन्म से बाल ब्रह्चारी रहते हैं। वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते। मदद तब हो जब पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें श्रीमत पर। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से।““ सा.बाबा 17.10.69

ब्रह्मचर्य व्रत के विषय में भाइयों के स्वप्नदोष और बहनों के मासिक के लिए भी बाबा ने कहा है कि ये दोनों काम विकार के ही अंश है। सतयुग में ये कोई किचड़पट्टी होती नहीं है। इनकी वास्तविकता को विचार करें तो जब तक ये दोनों बातें हैं, तब तक दृष्टि-वृत्ति, स्मृति में काम विकार अंश अवश्य मिलेगा। बिना दृष्टि-वृत्ति की चंचलता के ये प्रक्रियायें हो नहीं सकती।

"हरेक के मस्तक की मणि की चमक बापदादा देखते हैं। ऐसे ही अगर आप सभी भी मस्तक की मणि को ही देखते रहो तो फिर यह दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी। दृष्टि चंचल होती है, उसका मूल कारण यह है। मस्तक की मणि को न देख शारीरिक रूप को देखते हो।" अ.बापदादा 16.10.69

"मस्तक की मणि को न देख जब रूप को देखते हो तो ऐसे ही समझो कि सांप को देख रहे हैं। ... सांप को देखा और सांप ने काटा। सांप तो अपना कार्य करेगा ही। सांप में विष होता है।" अ.बापदादा 16.10.69

"मणि को देखने से सांप का जो विष है, वह हल्का हो जायेगा। अगर शरीर रूपी सांप को देखा तो फिर उसके बन जायेंगे और मणि को देखेंगे तो बापदादा की माला के मणि बन जायेंगे। ... बापदादा से तो बहुत प्रतिज्ञायें कीं लेकिन आज अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि अब से लेकर सिवाए मणि के और कुछ नहीं देखेंगे और बाप की माला के मणि बनकर सारे सृष्टि के बीच चमकेंगे।" अ.बापदादा 16.10.69

"जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति है। अगर पवित्रता नहीं तो सुख-शान्ति नहीं। ... कोई भी विकार का अंश-मात्र भी न रहे, इसको कहा जाता है पवित्रता। ... लक्ष्य को सामने रख लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण कर उड़ते चलो।" अ.बापदादा 7.3.93 पार्टी 5

"इस रुहानी रॉयल्टी का फाउण्डेशन क्या है ? सम्पूर्ण प्योरिटी।... हर एक नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे, चलन में रॉयल्टी दिखाई देती है ?"

अ.बापदादा 3.11.92

"तन से ब्रह्मचारी अर्थात् देह के लगाव से न्यारा। सिर्फ तन से ब्रह्मचारी बनना, इसको सम्पूर्ण पवित्रता नहीं कहते हैं। मन से भी ब्रह्मचारी हो अर्थात् मन भी सिवाए बाप के और किसी भी प्रकार के लगाव में नहीं आये।" अ.बापदादा 16.3.92

"पतित उसे कहा जाता है, जो विकार में जाते हैं। ऐसे बहुत हैं, जो विकार में नहीं जाते हैं। ब्रह्मचारी रहते हैं। जैसे पादरी हैं, मुल्ले-काजी हैं, बौद्धी हैं। ... उनको पतित पावन बाप पावन नहीं बनाते हैं, इसलिए वे पावन दुनिया का मालिक नहीं बन सकते। ... सन्यासियों की भी पवित्रता के कारण मान्यता है।" सा.बाबा 1.9.06 रिवा.

"बापदादा कहते हैं - समान बनना है। समान बनने में तो कई बातें हैं। ब्रह्मा बाप की विशेषतायें देखो और ब्रह्मा बाप समान ही बनना है तो कितनी बड़ी लिस्ट है ... ब्रह्मा बाप वा ज्ञान का आधार है - पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। जहाँ पवित्रता होगी, वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफाई सब आ जाता है।" अ.बापदादा 7.11.95

"चेहरे और चलन से प्योरिटी की झलक तब दिखाई देगी, जब सदा संकल्प में भी प्योरिटी होगी। ... तो सदा चेक करो - अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो। ... प्योरिटी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है।" अ.बापदादा 9.3.94 पार्टी 3

श्रीमत और विकार

सतयुग-त्रेता में आत्मायें सम्पूर्ण निर्विकारी होती हैं, भले त्रेता के अन्त तक आत्मा और सारी सृष्टि की पवित्रता की चार कलायें कम हो जाती हैं परन्तु देहाभिमान न होने के कारण आत्मा विकारों में प्रवृत्त नहीं होती है, इसलिए ही उसको स्वर्ग कहा जाता है। विकारों का मूल है देहाभिमान और देहाभिमान का मूल है अज्ञानता अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप की विस्मृति। विकार आत्मा के परम शत्रु हैं, जो आत्मा के दुख के मूल कारण है। इन विकारों का कारण क्या है, इनके आत्मा के ऊपर प्रभावित होने का कारण क्या है और इन पर विजय प्राप्त करने साधन क्या है। इन सब बातों का बाबा ने ज्ञान भी दिया है और उसको धारण कर इन पर विजय प्राप्त करने की श्रीमत भी दी है।

काम विकार - काम विकार आत्मिक शक्ति के ह्रास और आत्मा के दुख का मूल कारण है। काम विकार से सबसे अधिक आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है। काम विकार पर विजय प्राप्त करने के लिए इस बात को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप का दृढ़ अभ्यास, भाई-भाई की दृष्टि के विषय में बाबा ने अनेक प्रकार से श्रीमत दी है। बाबा ने यह भी बताया है कि काम विकार भी एक हिंसा है क्योंकि इसके परिणाम में आत्मा दुख ही पाती है, इसलिए इस हिंसा से भी मुक्त होने के लिए श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है काम विकार वाले को ही पतित कहा जाता है। स्वर्ग और नर्क की मूल पहचान काम विकार है। द्वापर से जन्म की प्रक्रिया काम विकार से शुरू होती है, इसलिए द्वापर-कलियुग को नर्क कहा जाता है।

बाबा ने भाईयों के स्वप्नदोष और बहनों के मासिक को भी काम विकार का अंश कहा है और बताया है कि सतयुग में ऐसी कोई किचड़पट्टी होती नहीं है। उससे भी मुक्ति पाने की श्रीमत दी है। इनके विषय में यदि हम विचार करेंगे तो ये स्पष्ट हो जायेगा कि उनका कारण कहाँ न कहाँ अन्तर में छिपी काम वासना ही है। हम कोई न कोई ऐसे दृश्य देखते, सुनते हैं, उसके कारण ही ये होता है। ऐसा देखने और सुनने से बचने के लिए भी बाबा ने

श्रीमत दी है कि ऐसे अवसर पर तुमको वहाँ से हट जाना चाहिए।

"भगवानुवाच काम महाशत्रु है, उन पर जीत पानी है।... अमृत पीते-पीते विष खा लेते हैं तो 100 गुणा काले बन जाते हैं, हड्डी-हड्डी टूट जाती है।" सा.बाबा 6.9.05 रिवा.

"काम विकार में गिर पड़ते हैं। ऐसे थोड़ेही कि उसने गिराया। गिरना, न गिरना अपने हाथ में है। ... गिरे तो खाना खराब, जोर से चमाट लगती है।" सा.बाबा 28.9.05 रिवा.

"जिस आत्मा पर बहुत कट चढ़ी हुई होगी तो उसे पुरानी दुनिया की कशिश होती रहेगी। सबसे बड़ी कट चढ़ती ही है काम विकार से। पतित भी उससे ही बनें हैं।... विकार में जाना, सबसे बड़ा पाप है।" सा.बाबा 24.9.05 रिवा.

"संगमयुग पर तुमको देह-अभिमान का बीज नहीं बोना है। काम का बीज नहीं बोना है। ... मुख्य बात है - मन्मनाभव।" सा.बाबा 9.12.05 रिवा.

"अभी तुम जानते हो - याद की यात्रा से हमको पूरा पुण्यात्मा बनना है।... बाप की श्रीमत पर चलना है। बाप मुख्य बात कहते हैं - एक तो याद की यात्रा में रहो और काम महाशत्रु है, उस पर जीत पानी है।" सा.बाबा 26.8.05 रिवा.

"यहाँ तुमको शिवबाबा से प्रतिज्ञा करनी है - बाबा हम कभी विकर्म नहीं करेंगे, 5 विकार हम आपको दे देते हैं। यह भी बाप जानते हैं कि विकार कोई फट से नहीं छूटेंगे। अन्दर डर रहना चाहिए कि हम विकारों का दान देकर फिर लेंगे तो बड़ा पाप हो जायेगा। जैसे राजा हरिश्चन्द्र का मिसाल है।" सा.बाबा 29.7.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - सिर्फ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। अब करो, न करो सो तुम्हारी मर्जी। कोई देहधारी के नाम-रूप में नहीं फँसना है।" सा.बाबा 10.03.06 रिवा.

"काला मुँह करने वाले को बाबा लिख देते, तुमको 12 मास तक यहाँ आने की दरकार नहीं है। तुम प्रतिज्ञा कर फिर भी विकार में गिरे।" सा.बाबा 4.01.06 रिवा.

"देहाभिमानी पतित मनुष्य जो भी कर्तव्य करते, वह पतित ही करते हैं। दुनिया में जो भी दान-पुण्य करते, वह सब पतित ही बनाते हैं। ... बाप आकर आर्डिनेन्स निकालते हैं - बच्चे खबरदार, विकार में नहीं जाना, काम पर विजय पानी है। तूफान आदि आयेंगे परन्तु इसमें फाँ नहीं होना है।" सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

"प्योरिटी होगी तो पीस एण्ड प्रॉस्पेरिटी मिलेगी।... थोड़ी भी विकार की टेस्ट बैठी तो वृद्धि हो जायेगी। ... सब छी-छी आदतें मिटानी हैं।... विकार का ज़रा भी ख्याल नहीं आना चाहिए।" सा.बाबा 15.9.06 रिवा.

"सबसे मुख्य बात है - बच्चे, नाम-रूप में नहीं फंसना है। काम वश नाम-रूप में फंसते हैं।

क्रोध नाम-रूप में नहीं फंसाता है। ... जब तुम अच्छे योगी बनेंगे तो कहाँ भी आंख नहीं डूबेगी, फिर तुम्हारी इन्द्रियां शान्त हो जायेंगी। ... तो अपनी आपही जांच करते रहो।"

सा.बाबा 21.8.06 रिवा.

क्रोध - दूसरे नम्बर का विकार है क्रोध। क्रोध पर विजय प्राप्त करने के लिए बाबा ने विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, जिस ज्ञान पर हम विचार करें तो हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है, सभी आत्मायें निर्दोष हैं, इसलिए किसी आत्मा पर क्रोध करने का कोई औचित्य नहीं है परन्तु आत्मा स्वार्थपरता के वशीभूत दूसरों को दोषी मानकर उन पर क्रोध करता है। कर्म और फल पर आधारित इस विश्व-नाटक में हर आत्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। इस सत्य का ज्ञान और उसकी धारणा से ही आत्मा क्रोध पर सहज विजय प्राप्त कर सकती है। इस सत्य को बाबा ने भिन्न रूप से समझाया है और क्रोध पर विजय प्राप्त करने के लिए श्रीमत भी दी है।

क्रोध के लिए बाबा की श्रीमत है कि अगर कोई तुम्हारे पर क्रोध करता है तो भी तुमको क्रोध नहीं आना चाहिए, उसको सुना-अन्सुना कर देना चाहिए। भूत समझकर उसका सामना नहीं करना चाहिए, किनारा करना चाहिए।

"उसका काम है क्रोध करना और आपका काम है स्नेह देना। ... चाहे सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करेंगे। ... व्यर्थ से बेपरवाह बादशाह, समर्थ में बेपरवाह नहीं होना, मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं होना।"

अ.बापदादा 9.1.95

लोभ - बाबा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उसके अनुसार इस विश्व में न कुछ अपना है और न ही पराया। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। आत्मा के साथ संचित धन-सम्पत्ति तो साथ जाती नहीं है लेकिन वह कैसे अर्जित की उसका फल अवश्य साथ जाता है। बाबा ने इस सत्य का ज्ञान होने से लोभ पर सहज विजय प्राप्त हो सकती है।

"इस दुनिया का केस बहुत होपलेस है, यह खत्म होनी ही है, सब मर जायेंगे। इसलिए इससे ममत्व मिटाओ। ... लोभ-मोह भी सत्यानाश कर देता है। बच्चे आदि में मोह होगा तो वह याद आते रहेंगे। पुरुषार्थ ऐसा करना है, जो अन्त में कोई याद न पड़े।"

सा.बाबा 2.9.06 रिवा.

मोह एवं लगाव-झुकाव

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न ही पराया है। हर आत्मा अपना पार्ट बजा

रही है और उस पार्ट के अनुसार जो आज अपना है वह कल पराया होगा और पराये अपने होंगे। इस सत्य के अनुभव के लिए महाभारत में भी पुत्र-मोह के वशीभूत अर्जुन और अभिमन्यु का संवाद बड़ा अच्छा है। इस सत्य के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में इस जगत में अनेक जीते-जागते उदाहरण देखते हैं। कर्म सम्बन्ध के आधार पर भाई-भाई, स्त्री-पुरुष जो आज एक दूसरे के लिए जान देने को तैयार होते हैं, वे ही कल एक दूसरे की जान लेने को तैयार दिखाई देते हैं और एक दूसरे की जान ले भी लेते हैं। बाबा ने कहा है - तुमको इस देह का भी मोह नहीं रखना है परन्तु इसको सम्भालना अवश्य है क्योंकि इससे ही तुम अपने भविष्य के लिए पुरुषार्थ कर सकते हो, परमात्म मिलन का सुख भी इस देह के द्वारा ही कर सकते हो।

अपना बच्चा न होते भी दूसरे का बच्चा गोद लेकर अपना कर्म-बन्धन बना लेते हैं, जो भी श्रीमत के अनुसार यथार्थ नहीं है। ज्ञान में आने के बाद ऐसी परिस्थिति में ईश्वरीय सेवा को ही अपना लक्ष्य बनाकर निर्बन्धन रहना अच्छा है।

"झुकाव तब होता है, जब लगाव होता है ... पूज्य आत्मा सम्पन्न होने के कारण सदा ही अपने रुहानी नशे में रहेगी। उसकी मन-बुद्धि का झुकाव न देह के सम्बन्ध में और न देह के पदार्थ में होगा। सबसे न्यारा और प्यारा।" अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 4

"जो श्रीमत पर चलते हैं, वे ही विजय माला का दाना बनते हैं। ... बाप कहते - बच्चे देही-अभिमानी बनो, नहीं तो पुराने सम्बन्धी याद पड़ते रहते हैं। नष्टोमोहा नहीं हैं, उसको व्यभिचारी याद कहा जाता है। वे सद्गति को पा न सकें क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते रहते हैं।"

सा.बाबा 2.03.06 रिवा.

"हम स्वदर्शन चक्रधारी हैं, यह नशा तो रहना चाहिए। हम रचयिता बाप और रचना के चक्र को जानते हैं। ... कोई में भी कोई की रग नहीं रहनी चाहिए। पूरा नष्टोमोहा बनना है, इस शरीर में भी मोह न रहे। ... योगबल से इसको थमाना है।" सा.बाबा 8.7.06 रिवा.

अहंकार - इस विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थता को देखें तो इसमें अहंकार और हीनता का कोई स्थान नहीं है। इस विश्व-नाटक में सभी आत्मायें अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं और हर पार्टधारी अपने पार्ट के अनुसार सतोप्रधान और तमोप्रधान दोंनों ही पार्ट बजाता है। जो आज राजा है, वह कल अपने पार्ट और कर्मफल के अनुसार क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। बाबा ने कहा है - तुमको कोई अहंकार नहीं होना चाहिए, निरहंकारी होकर तुम सर्वात्माओं की सेवा करो। बाप भी सर्वेन्ट बनकर आया है तो तुम बच्चों को सर्वेन्ट बनकर सभी की सेवा करनी है।

श्रीमत और संगमयुगी ब्राह्मण जीवन

ब्राह्मण जीवन द्विज जन्म अर्थात् एक ही देह में रहते दूसरा जन्म है। विचारणीय है कि क्या किसी आत्मा के दूसरे जन्म लेने पर पहले जन्म के सम्बन्धियों के प्रति आकर्षण रहता है, उनकी चिन्ता रहती है भले ही वे किसी भी परिस्थिति में हों। दूसरा जन्म लेने पर स्वभाव-संस्कार में भी परिवर्तन जाता है भले आत्मा पहले जन्म से जो संस्कार-स्वभाव लेकर जाती है, उसके अनुरूप ही दूसरे जन्म में भी होते हैं। इस प्रकार हम विचार करें तो हमारी स्थिति क्या है, वह स्पष्ट हो जाता है।

ब्राह्मण भी दो प्रकार के हो जाते हैं -

एक फुल कास्ट ब्राह्मण अर्थात् पूरे मरजीवा और दूसरे हॉफ कास्ट ब्राह्मण अर्थात् आधे मरजीवा अर्थात् जो अभी तक पुराने सम्बन्धियों के हिसाब-किताब से मर रहे हैं।

पूरे मरजीवा में भी दो प्रकार के हो जाते हैं -

एक जो दैहिक सम्बन्धियों के हिसाब-किताब से मरजीवा और दूसरे सम्बन्धियों के साथ-साथ पुराने स्वभाव-संस्कार से भी मरजीवा।

"बाप ने कितनी स्मृतियां दिलाई हैं, याद करो तो लम्बी लिस्ट निकल आयेगी। ... जो भक्त आप स्मृति-स्वरूप आत्माओं के हर कर्म की विशेषता का सुमिरण करते रहते हैं। ... मगन हो जाते हैं।" अ.बापदादा 14.10.87

"भक्त आप प्राप्ति-स्वरूप आत्माओं का सुमिरण करते-करते उसमें खो जाते हैं ... वह अल्पकाल का अनुभव उन आत्माओं के लिए कितना न्यारा और प्यारा होता है अर्थात् लवलीन हो जाते हैं। ... क्योंकि आप आत्मायें बाप के स्नेह में सदा लवलीन रही हैं, प्राप्तियों में सदा खोई हुई रही हैं।" अ.बापदादा 14.10.87

"सतयुग में यह ज्ञान नहीं रहेगा। वहाँ तुमको यह थोड़ेही मालूम रहता है कि हम फिर गिरेंगे। यह मालूम हो तो सुख की भासना ही न आये। यह ड्रामा का ज्ञान सिर्फ अभी तुम्हारी बुद्धि में है। ब्राह्मण ही अधिकारी हैं इस ज्ञान के। ब्राह्मणों को ही बाप ज्ञान सुनाते हैं।... बुद्धि में रहे तो अपार खुशी रहे।" सा.बाबा 9.6.05 रिवा.

"जब डायरेक्ट साथ निभाने का वायदा है तो वायदे का फायदा उठाओ। इस समय दो बाप के साथ व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है, जो फिर सारे कल्प में नहीं होगा। यह सिर्फ अभी की ही प्राप्ति है। तो उसका पूरा-पूरा लाभ उठाओ। कोई भी बात हो सदा बाबा ही याद रहे। इसको

कहा जाता है, "निरन्तर योगी"।" अ.बापदादा 23.1.76

"स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करो क्योंकि सम्पन्नता का वरदान संगमयुग पर ही मिलता है। सिवाए संगमयुग के सम्पन्न स्वरूप का अनुभव और कहीं भी नहीं कर सकेंगे। दैवी जीवन में सर्वगुण सम्पन्न होने का, 16 कलाओं का गायन है लेकिन सम्पन्न स्वरूप क्या होता है, गुणों और कलाओं की नॉलेज इस ईश्वरीय जीवन में ही है। इसलिए सम्पन्न बनने का आनन्द इस ईश्वरीय जीवन में ही प्राप्त कर सकते हो।" अ.बापदादा 21.9.75

"संगमयुग की विशेषता है कि इस युग में ही बाप भी प्रत्यक्ष होते हैं, ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होते हैं। आप सबके 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती है। श्रेष्ठ नॉलेज भी प्रत्यक्ष होती है। इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता है।" अ.बापदादा 10.9.75

"यह कब भूलो मत कि हम पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं।... तुमने प्रतिज्ञा की है कि हम सिवाए एक बाप के और कोई को याद नहीं करेंगे। ... इस दुनिया के सुख भी काग विष्टा के समान हैं, तुम पढ़ते हो नई दुनिया के लिए।" सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

"हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हैं तो जरूर नई दुनिया के हुए ना। सतयुगी देवतायें नई दुनिया के हैं या ब्राह्मण नई दुनिया के हैं। ब्राह्मणों की चोटी है ना। चोटी नई या माथा नया।"

सा.बाबा 12.6.72 रिवा.

"यह ईश्वरीय बर्थ डे ही मनाना चाहिए। वह जिस्मानी बर्थ डे केन्सिल कर देना चाहिए। ... ऐसे नहीं कि ईश्वरीय जन्म मनाकर फिर जाये आसुरी जन्म में पड़े।... जो निश्चयबुद्धि हैं, उनको ईश्वरीय जन्मदिन मनाना चाहिए, जिससे वह आसुरी जन्म ही भूल जाये।"

सा.बाबा 10.9.05 रिवा.

"सच्चे ब्राह्मण वे जो कभी शूद्र न बनें, जरा भी कुदृष्टि न जाये।"

सा.बाबा 12.9.05 रिवा.

ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए निम्नलिखित बातों का ज्ञान, अनुभव और निश्चय होगा तब ही यह जीवन सफल और सुखमय होगा। इन बातों का बाबा ने ज्ञान अर्थात् समझ दी है और उस अनुसार स्थिति बनाने की श्रीमत भी दी है।

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान का यथार्थ ज्ञान। जैसे हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान और विश्व-नाटक की यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता का अनुभव युक्त ज्ञान।

कर्म के नियम-सिद्धान्त और विधि-विधान का यथार्थ ज्ञान। जैसे जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है अर्थात् हमारा हमारा अपना कर्म ही हमारे सुख-दुख का कारण है और हर कर्म का फल कर्ता को भोगना ही पड़ता है।

आधे कल्प का कर्म और फल का विधि-विधान जितने का उतना है परन्तु अभी संगमयुग पर कर्म और फल का विधि-विधान एक का सौगुणा है। ये एक का सौगुणा फल का विधि-विधान संगमयुग के इस ब्राह्मण जीवन के अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कर्मों पर प्रभावित होता है। बाबा ने श्रेष्ठ कर्मों का विधि-विधान भी बताया है, उनको करने के लिए श्रीमत भी दी है और उनको करने की शक्ति प्राप्त करने का विधि-विधान भी बताया है।

आध्यात्मिक विधि-विधान का यथार्थ ज्ञान। जैसे पवित्र अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को कभी किसी प्रकार के दुख की महसूसता अंशमात्र भी हो नहीं सकती। यदि होती है तो आत्मिक स्वरूप में स्थिति की कमी है।

"तुम हो संगमयुगी। तुम्हारा जीवन अमूल्य है। देवताओं का जीवन अमूल्य नहीं कहेंगे, ब्राह्मणों का जीवन अमूल्य है। ... तुमको अपने पर भी रहम करना है और दूसरों पर भी रहम करना है। जब अपने पर करें तो दूसरों पर भी करें।" सा.बाबा 30.9.05 रिवा.

"ब्राह्मण अर्थात् श्रेष्ठ कार्य करने वाले, श्रेष्ठ सोचने वाले, श्रेष्ठ बोलने वाले ... श्रेष्ठ कर्म का आधार है - श्रेष्ठ स्मृति। ... सदा याद रहे कि "मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ"।"

अ.बापदादा 23.12.93 पार्टी 4

"इच्छा मात्रम् अविद्या, यह गायन किसका है ? देवताओं का या ब्राह्मणों का। देवताई जीवन में तो इच्छा वा ना इच्छा का सवाल ही नहीं।... नॉलेज होते "इच्छा मात्रम् अविद्या", इसको ही ब्राह्मण जीवन कहा जाता है।" अ.बापदादा 13.12.89 पार्टी

"ब्राह्मणों का ही सर्वोत्तम कुल है। पहला नम्बर कुल कहेंगे ब्राह्मणों का। ब्राह्मण कुल अर्थात् ईश्वरीय कुल। ... तुम ब्राह्मण आपस में भाई-बहन हो।... शिववंशी तो सब हैं परन्तु जब साकार में आते हैं तो प्रजापिता का नाम होने के कारण भाई-बहन हो जाते हैं।"

सा.बाबा 13.9.06 रिवा.

"आत्मा को बाप से आधा कल्प के लिए सुख मिला हुआ है, इसलिए भक्ति मार्ग में उनको याद करती है। ... ब्राह्मणों की ही सेपलिंग लगनी है।... सबको सन्देश देते रहो तो बहुतों का कल्याण होगा।" सा.बाबा 5.9.06 रिवा.

"तुम जानते हो हमारा बाप नॉलेजफुल है, उसमें सारे ड्रामा की नॉलेज है। अभी हमको भी नॉलेज मिल रही है। यह चक्र बड़ा अच्छा है। यह पुरुषोत्तम युग होने के कारण तुम्हारा यह जन्म भी पुरुषोत्तम है।" सा.बाबा 6.9.06 रिवा.

"हर एक बाप पर अच्छी रीति विचार करना चाहिए। ब्रह्मा को कहते हैं - मुझे याद करो तो यह बनेंगे। ब्रह्मा को कहा गोया ब्रह्मा मुख वंशावली सबको कहा - मुझे याद करो। ... जब

यह समझें कि हम आत्मा परमात्मा के बच्चे हैं तब खुशी का पारा चढ़े और कहें कि हम बाप को याद जरूर करेंगे।" सा.बाबा 6.9.06 रिवा.

"जहाँ रुहानी फखुर होगा, वहाँ विघ्न नहीं हो सकता।... इस ईश्वरीय भाग्य के आगे धन तो कुछ भी नहीं है। वह तो पीछे-पीछे आयेगा।... सदा इसी नशे में रहो। ब्राह्मण जीवन है ही खुशी की जीवन।" अ.बापदादा 2.1.90 पार्टी 2

"इस मेले से ताज, तख्त और अविनाशी तिलक की निशानी सभी साथ में ले जाना। ... मैं ब्राह्मण आत्मा हूँ, मैं सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ - इस निश्चय और नशे में सदा ही रहना। सिर्फ बुद्धि में नहीं लेकिन नशा चलन और चेहरे में दिखाई दे।"

अ.बापदादा 31.3.95

"ब्राह्मण हो या क्षत्रिय हो ?... अगर माया से युद्ध करनी पड़ती है तो क्षत्रिय हुए। ब्राह्मण माना विजयी और क्षत्रिय माना युद्ध करने वाले।... बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा योगी बच्चा हो, युद्ध करने वाला नहीं।" अ.बापदादा 31.3.95

"सदा यह याद रखो कि मैं ब्राह्मण आत्मा राज्य सत्ता और धर्म सत्ता की अधिकारी आत्मा हूँ। इस स्मृति का निश्चय है तो नशा है। निश्चय कम तो नशा भी कम। तो चेक करो - ये दोनों सत्तायें सदा साथ रहती हैं ?" अ.बापदादा 7.3.95

"पवित्रता की ही पूजा होती है। साधारण आत्मा भी पवित्रता को धारण करती है तो महान आत्मा कहलाती है। ... ब्राह्मणों की पवित्रता का गायन है। ... स्थिति का आधार है स्मृति। ... सदा याद रखना कि हम पुरुषोत्तम विशेष आत्मायें बन गये तो साधारण कर्म कर नहीं सकते।" अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी 3

श्रीमत और गृहस्थ जीवन अर्थात् कमल पुष्प सम जीवन

गृहस्त जीवन के जीवन-व्यवहार के विषय में भी बाबा ने श्रीमत दी है, जिससे गृहस्थ व्यवहार में रहते ये ईश्वरीय जीवन सफल बना सकें।

उत्तरदायित्व - बच्चों का मात-पिता के प्रति और माता-पिता का बच्चों-बच्चियों के प्रति क्या कर्तव्य है और उसको कैसे निभायें, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

"बच्चे को शादी कराना गोया रौरव नर्क में ढकेलना है। समझना है कि इसमें हम मदद करता हूँ, तो यह भी पाप चढ़ता है। पापात्मा बन जाता हूँ। बुद्धि से काम लेना चाहिए ना। मुरली में खबरदार रहने की तो सब बातें आती हैं। कोई पाप किया तो वह सौगुणा हो जाता है। ज्ञान में आकर फिर ऐसा पाप करे, बच्चे को खुश करने के लिए तो दोष आ जाता है। यह है किसका

खून करना। ... अपने हाथों से बच्चों का खून न करना है। बाबा से पूछेंगे तो बाबा कहेंगे भल कराओ। ज्ञानवान खुद समझते हैं, वे कब पूछेंगे नहीं। बच्ची की तो शादी करानी ही है। आपेही जाकर डूबती है, उसको तो कराना पड़े। बच्चा तो भल खराब हो जाये, उसका ख्याल नहीं रहेगा।" सा.बाबा 20.12.69 रिवा.

"पूछते हैं - बच्चे की शादी करायें... पूछते हैं तो इससे ही समझा जाता है कि हिम्मत नहीं है, तो बाबा कह देते हैं भल कराओ... मोह भी तो है ना। ... यह तो समझने की बात है कि हमको फूल बनना है तो पवित्र के हाथ का खाना है। उसके लिए अपना प्रबन्ध करना है। इसमें पूछना थोड़ेही होता है।" सा.बाबा 22.6.05 रिवा.

"अगर बापदादा के दिल पर चढ़ना चाहते हो तो विचार सागर मंथन करो ... बच्चे आदि की परवाह नहीं रखी जाती है। वास्तव में बच्चे की शादी कराना न चाहिए। लोक-लाज कुल की मर्यादा खोनी पड़ती है दुश्मन से डरना थोड़ेही होता है। बाबा का हाथ मिला फिर परवाह किसकी नहीं रखी जाती है।" सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

बाबा से पूछते हैं, बाबा मकान बनायें तो भी बाबा कहेंते हैं - पैसा है तो भल मकान बनाओ, मोटर गाड़ी लो, आराम से रहो। मकान बनाते हो तो उसमें एक कमरा योग और सेवा के लिए भी बनाओ, उसमें भी चित्र आदि लगे हों, जिससे कोई घर में आये तो सेवा कर सको। परन्तु ये सब करते खान-पान, रहन-सहन की पूरी परहेज रखनी है, तब ये ब्राह्मण जीवन सफल होगा।

सर्विस करने वाले रिश्वत आदि लेने के प्रसंग में भी बाबा से पूछते हैं तो बाबा ने कहा है, रिश्वत आदि लेते हो तो उसका अच्छा-बुरा परिणाम तुमको स्वयं ही भोगना। बाबा तो कहता है - पेट तो दो रोटी ही खाता है, उसके लिए अधिक मारामारी करने की आवश्यकता नहीं है। रहना भी साधारण है। दुनिया में कहावत है - उतना पैर पसारिये, जितनी लम्बी चादर होये। बाबा ये भी कहते हैं - तुमको किससे रीस अर्थात् प्रतिस्पर्धा नहीं करनी है।

बाबा ने मिलिटरी या पुलिस की सर्विस करने वालों के कृत्य-अकृत्य के लिए भी श्रीमत दी है, जिससे वे विकर्मों से बच सकें। पुलिस वालों के लिए बाबा ने कहा है - पहले प्यार से समझाओ, प्यार से काम न हो तो मार आदि से काम लो। परन्तु सच्चे दिल का प्यार होगा तो प्यार से ही काम हो जायेगा। मिलीटरी वालों को भी बाबा कहते - देश की रक्षा तो करनी ही है लेकिन तुम बाबा की याद में गोली चलायेंगे तो तुम सहज सफलता को पायेंगे, तुम बाबा की याद में मर भी जायेंगे तो स्वर्ग में आ जायेंगे।

कोई कहते हम रिश्वत लेकर यज्ञ सेवा में लगायें परन्तु बाबा उसके लिए कभी हाँ

नहीं करता है। हाँ जिनकी सर्विस ऐसी है, जो संगठन में रिश्वत लेनी ही पड़ती है तो बाबा कहते हैं - उस पैसे को सेवा में लगा दो, अपने प्रयोग में न लाओ, तो तुम उसके पाप से बच जायेंगे।

"विश्व के आगे चैलेन्ज की हुई है कि घर-गृहस्थ में रहते कमल-पुष्प के समान न्यारे और प्यारे रहने की। कीचड़ में रहते कमल अथवा कलियुगी सम्पर्क में रहते ब्राहमण - इस चैलेन्ज को प्रैक्टिकल रूप में लाने के निमित्त हैं।" अ.बापदादा 28.4.74

"फर्स्ट चैलेन्ज है प्यूरिटी का। सम्पर्क और सम्बन्ध में रहते संकल्प में भी इसी फर्स्ट चैलेन्ज की कमजोरी न हो। ... क्योंकि यही असम्भव को सम्भव करने वाली एक बात है।"

अ.बापदादा 28.4.74

"होलीएस्ट का कौनसा गायन है ? कमल-नयन, कमल-हस्त, कमल-मुख के रुप में अब तक भी गायन करते रहते हैं। अब प्रक्टिकल में चेक करो कि हर कर्म-इन्द्रियां कमल समान न्यारी बनी है...कोई कर्म-इन्द्रियों का रस देखने का, सुनने का, बोलने का अपने वशीभूत तो नहीं बनाता है ? वशीभूत होने का अर्थ होलीएस्ट से भूत बन जाना।" अ.बापदादा 23.1.76

"बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सिमरण करते रहो।... अभी तुमको ईश्वरीय मत पर चलना है।" सा.बाबा 29.8.05 रिवा.

"यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र घर में जरूर होना चाहिए, इनको देखकर बहुत खुशी होनी चाहिए क्योंकि यह है तुम्हारा एम एण्ड आब्जेक्ट। ... इनको देखकर बहुत खुशी होनी चाहिए।" सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

"बहुत बच्चियां आती हैं, जिनकी दिल होती है - हम कहाँ सर्विस में लग जायें परन्तु छोटे-छोटे बच्चे हैं। बाबा कहते हैं बच्चों को सम्भालने के लिए कोई माई को रख दो और सर्विस में लग जाओ तो बहुतों का कल्याण करेंगी। होशियार हैं तो क्यों नहीं रुहानी सर्विस में लग जायें।"

सा.बाबा 19.11.05 रिवा.

"छोटे बच्चों को सुधारने के लिए कान से पकड़ते हैं... थप्पड़ नहीं लगाओ, नहीं तो वे भी मारना सीख जायेंगे। ... बहुत तंग करे तो कान से पकड़ सकते हो। ... निर्मोही भी बनना चाहिए।" सा.बाबा 2.12.05 रिवा.

"घर में रहने वाली, घर की सेवा करने वाली साधारण मातायें हैं, यह याद रहता है या जगत माता हैं, जगत का कल्याण करने के निमित्त यह कार्य कर रही हूँ - यह याद रहता है ? ... जिसको यह रुहानी नशा होगा वह कर्म करेगा लेकिन कर्म के बन्धन में नहीं आयेगा, न्यारा और न्यारा होगा।" अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

“चाहे प्रवृत्ति वाले, चाहे सेन्टर वाले ... सदा शिव बाप की भण्डारी है और ब्रह्मा बाप का भण्डारा है - इस स्मृति से भण्डारी भी भरपूर रहेगी और भण्डारा भण्डारा भी भरपूर रहेगा। मेरापन लाया तो भण्डारा वा भण्डारी में बरक्कत नहीं होगी। ... कोई कमी होती है तो इसका कारण बाप के बजाये मेरेपन की खोट है।” अ.बापदादा 18.1.92

“अगर प्रवृत्ति में भी रहते हो तो सेवा के लिए रहते हो। कभी भी यह नहीं समझो कि हिसाब-किताब है, कर्म-बन्धन है ... सेवा है। सेवा के बन्धन में बँधने से कर्म-बन्धन खत्म हो जाता है। ... निशानी है - अगर कर्म-बन्धन होगा तो दुख की लहर आयेगी और सेवा का बन्धन होगा तो दुख की लहर नहीं आयेगी, खुशी होगी।” अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 2

“कभी भी यह नहीं सोचो कि यह गृहस्थी का घर है, प्रवृत्ति है। प्रवृत्ति का अर्थ ही है पर-वृत्ति में रहने वाले।.. वातावरण भी लौकिक नहीं, अलौकिक।” अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 3

“बन्धन नहीं है, स्वतन्त्र हैं तो बाबा राय देंगे कि क्यों नहीं सर्विस में लग जाते हो। स्वतन्त्र हैं तो बहुतों का भला कर सकते हो। ... जैसे बाप रहम करता है, ऐसे तुमको भी औरों पर रहम करना चाहिए। ... बच्चों को बहुत रहमदिल, कल्याणकारी बनना है।”

सा.बाबा 17.4.06 रिवा.

“तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल-फूल समान पवित्र बनना है। ... हर एक को अपना कल्याण करना है। तुम शिवबाबा पर थोड़ेही मेहरबानी करते हो। मेहरबानी तो अपने पर करनी है। अब श्रीमत पर चलना है। ... वे राजा के लिए लड़ते हैं, तुम अपने लिए सब कुछ करते हो।” सा.बाबा 10.4.06 रिवा.

“यहाँ रहकर पुरुषार्थ करने वालों से भी घर में रह पुरुषार्थ करने वाले तीखे हो सकते हैं। ... शास्त्रों में भी अर्जुन और भील का मिसाल है ना। ... यहाँ रहने वालों को भी माया छोड़ती नहीं है। ऐसे नहीं कि बाबा के पास आने से माया से छूट जाते हैं। ... घर-गृहस्थ में रहने वाले भी अच्छा पुरुषार्थ कर सकते हैं।” सा.बाबा 7.4.06 रिवा.

“ऐसे भी हैं, जो गृहस्थ व्यवहार में रहते भी अर्पणमय जीवन है, बहुत सर्विस कर रहे हैं । ... देखा जाता है कि बाहर गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले बहुत तीखे हो जाते हैं।... कन्या वा कुमार, वानप्रस्थी को गृहस्थी नहीं कहेंगे। ... उनमें भी कुमारियों को अच्छा चान्स है।... यहाँ रहने वालों से भी बाहर रहने वाले बहुत ऊंचा पद पा सकते हैं।”

सा.बाबा 20.03.06 रिवा.

“धन्धा आदि भल करो। कर्म तो करना ही है परन्तु बुद्धि का योग वहाँ लगा रहे। ... गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए तुम मुझे याद करो तब ही तुम नई दुनिया के मालिक बनेंगे।”

सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

"तुम अभी जीते जी बाप के बने हो। बाप कहते हैं - तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहना है। बाबा कभी किसको कह नहीं सकते कि तुम घरबार छोड़ो। नहीं, गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनना है। ... तुमने ईश्वरीय सेवा अर्थ आपेही छोड़ा है। कई बच्चे हैं, जो घर-गृहस्थ में रहते भी ईश्वरीय सर्विस करते हैं।" सा.बाबा 11.03.06 रिवा.

"यहाँ रहने वालों से भी जो घर-गृहस्थ में रहते हैं, सर्विस में रहते हैं, वे बहुत ऊंच पद पाते हैं। ... इससे तो जो बाहर गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं, वे बहुत ऊंच चले जाते हैं। ... सेन्टर्स की हेड्स को बिल्कुल निरहंकारी होकर रहना है। बाप देखो कितना निरहंकारी है।... न नाम-रूप में फंसना है और न देहाभिमान में आना है।" सा.बाबा 11.03.06 रिवा.

"मम्मा-बाबा भी पढ़ रहे हैं श्रीमत से। वे पहले नम्बर में आते हैं, फिर जो उनको फॉलो करते हैं, वे ही उनके तख्त पर बैठेंगे।... भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, बच्चों को सम्भालो परन्तु आत्मा की दिल बाप की तरफ हो। घर में रहते यही प्रक्टिस करते रहो।"

सा.बाबा 1.03.06 रिवा.

"बापदादा चाहते हैं - एक-एक माता जगतमाता बन विश्व का कल्याण करे ... ड्रामानुसार वर्तमान समय माताओं को चान्स मिला है, इसलिए माताओं को आगे रखना है।"

अ.बापदादा 22.1.88 माताओं से

"बाबा कोई मकान आदि बनाने की मना नहीं करते हैं। भल बनाओ। पैसे भी तो मिट्टी में मिल जायेंगे, इससे तो क्यों न मकान बनाये, आराम से रहो। पैसे काम में लगाने चाहिए। मकान भी बनाओ, खाने के लिए भी रखो, दान-पुण्य भी करो।" सा.बाबा 15.02.06 रिवा.

"तुम बच्चों को गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है, धन्धा आदि भी करना है। हर एक अपने लिए राय पूछते हैं। ... बाबा हर एक की नब्ज़ देखकर राय देते हैं... कहूँ और करे नहीं तो नाफरमानबरदार की लाइन में आ जाये।" सा.बाबा 6.02.06 रिवा.

"मनुष्य समझते बच्चे बड़े हो गये तो शादी करायें ... अगर बच्चा राय पर नहीं चलता है तो फिर श्रीमत लेनी पड़े कि बच्चा स्वर्गवासी नहीं बनता है तो हम क्या करें। अगर आज्ञाकारी नहीं है तो जाने दो। इसमें पक्की नष्टोमोहा अवस्था चाहिए।" सा.बाबा 31.01.06 रिवा.

"तुमको लौकिक मित्र-सम्बन्धियों की सर्विस भी अनासक्त होकर अपनी फर्ज-अदाई समझ पालन करनी चाहिए, मोह की रग नहीं जानी चाहिए।" सा.बाबा 04.01.55

"बाबा कहते - अगर छुट्टी नहीं मिलती है, तो घर बैठे याद करो। यह तो जानते हो - हम शिवबाबा की सन्तान हैं। मुरली तो मिल जाती है। ऐसे नहीं कि यहाँ आने से याद की यात्रा

अच्छी होगी, घर में बैठने से याद की यात्रा कम हो जायेगी।... हाँ, ज्ञान सम्मुख सुनने से अच्छा लगता है।" सा.बाबा 2.5.06 रिवा.

"तुमको सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी तुम बाप को याद करो। कर्म तो करना ही है। कर्म करते बुद्धि का योग बाप के साथ लगा रहे।... राजा जनक का भी गायन है ना।" सा.बाबा 1.5.06 रिवा.

"जो सेन्सीबुल अच्छे बच्चे हैं, वे समझते हैं - हमको घर-गृहस्थ में रहते कमल पुष्प समान रहना है। गृहस्थ व्यवहार से तंग नहीं होना चाहिए। ... गृहस्थ व्यवहार में रहते फैशनेबुल मत बनो। फैशन कशिश करता है।" सा.बाबा 12.6.06 रिवा.

"जो ब्राह्मण बनेंगे, वे ही देवता बनेंगे। ब्रह्मा का नाम भी बाला है। तुम ब्राह्मण हो सबसे उत्तम, तुम भारत की सच्ची रुहानी सेवा कर रहे हो। ... गृहस्थ व्यवहार में रहते एक बाप के सिवाए और कोई को याद नहीं करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे।"

सा.बाबा 10.6.06 रिवा.

"अगर कुछ हिसाब-किताब रहा हुआ होगा तो सज़ा खानी पड़ेगी। कर्मभोग, भोग कर चुक्तू करना होगा, फिर पद भी ऊंच नहीं मिलेगा। यह कर्मों की गुह्य गति बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। ... यहाँ आते हो तो बाहर कोई मित्र-सम्बन्धी, घरघाट, धन्धाधोरी आदि याद नहीं करना है। ... याद की कमाई में लग जाना है।" सा.बाबा 3.7.06 रिवा.

"बच्चे एक-दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। ... लौकिक मां-बाप अगर ज्ञान में हैं तो बच्चों को भी आप समान बनाना है। मां-बाप सच्ची कमाई करते हैं तो बच्चों को सच्ची कमाई करानी चाहिए।" सा.बाबा 5.7.06 रिवा.

"तुम श्रीमत पर चलते रहो। ऐसे भी न हो कि तुम्हारे पैसे आदि कहाँ मुफ्त में चले जायें, कुछ फल भी न निकले। ... बाबा से राय लेनी है कि बाबा इस हालत में हम क्या करें! ... बच्ची की तो शादी करानी ही पड़ेगी क्योंकि उनका भी हिस्सा है, उनको दे दो। ... बच्चों को बाप की आज्ञा पर चलना है, इसमें ही कल्याण है।" सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

"पक्का निश्चय है कि कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। परन्तु अलबेले या आलस्य वाले को नहीं। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। ... परिवार में भी खिटखिट तो होनी ही है ... आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति लेकर हल करो, गृहस्थी बनकर नहीं। ... अगर बुद्धि में उल्झन होती है तो समझ लो - ये मेरापन है।"

अ.बापदादा 18.1.96

"प्रवृत्ति वाले एग्जाम्पुल बन गये। पहले कहते थे हमारा बनना मुश्किल है और अभी कहते हैं

पवित्र प्रवृत्ति में रहना अच्छा है ... अभी प्रवृत्ति वालों को ऐसी माला तैयार करनी है, जो हर सेवाकेन्द्र पर हर वर्ग का कोई न कोई जरूर हो।"

अ.बापदादा 25.11.95 प्रवृत्ति वाले

"बाप के साथ सो जाओ ... कभी भी व्यर्थ बातों का वर्णन करते-करते नहीं सोना है। ये अलबेलापन है, ये फरमान का उलंघन करना है।... कोई जरूरी बात है तो कमरे के बाहर 2 सेकेण्ड में सुनाओ, लेकिन सोते-सोते नहीं सुनाओ।... बापदादा हर एक सेन्टर, हर एक प्रवृत्ति वाले, सबके यहाँ चक्कर लगाते हैं और देखते हैं।" अ.बापदादा 16.11.95

"प्रवृत्ति वालों को तो इन सभी महात्माओं को चरणों में झुकाना है। सब आपके गुण गायेंगे कि ये प्रवृत्ति में रहते भी निर्विघ्न पवित्रता के बल से आगे बढ़ रहे हैं।... लेकिन अपना वायदा याद रखना - लगाव-मुक्त रहना।" अ.बापदादा 16.11.95

"प्रवृत्ति वाले जितना-जितना पवित्रता के पिलर को पक्का करेंगे, उतना-उतना ये पवित्रता का पिलर लाइट हाउस का काम करेगा।" अ.बापदादा 16.11.95

"प्रवृत्ति वाले सदा ये वरदान याद रखना कि हम विश्व के शो-केस के नम्बरवन शो पीस हैं। ... शो-पीस को देखकर सौदा करते हैं ... आप प्रवृत्ति वालों का सेम्पुल देखकर हिम्मत आती है। ... प्रवृत्ति का अर्थ पर-वृत्ति में रहने वाले। ... सदा न्यारे और प्यारे।"

अ.बापदादा 31.3.95

"ज्ञान देने वाला है एक शिवबाबा। ज्ञान मिलता है तो भक्ति आपही छूट जाती है।... तुम बच्चों को दोनों तरफ तोड़ निभाना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है।"

सा.बाबा 28.9.06 रिवा.

श्रीमत और ट्रस्टी जीवन /
ट्रस्टी जीवन अर्थात् गृहस्थ व्यवहार में रहते समर्पित जीवन

बाबा ने विश्व-नाटक के विधि-विधान का ज्ञान देकर और उनको समझकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी बनकर इसमें पार्ट बजाने की श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब में ट्रस्टी बनना है। बाबा कहते हैं - गृहस्थ में रहते भी समझो हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं, ईमानदारी से सारा आय-व्यय का पोतामेल बाबा को दो। सेवाकेन्द्र के समान ही पवित्रता से भोजन बनाओ, भोग लगाओ और बाबा की याद में खाओ। धन-सम्पत्ति भी शिवबाबा की समझकर शिवबाबा की श्रीमत अनुसार

उपयोग करो, सफल करो।

"ट्रस्टी बनकर रहो तो ममत्व मिट जाये। परन्तु ट्रस्टी बनना मासी का घर नहीं है। यह ब्रह्मा खुद ट्रस्टी बने हैं, बच्चों को भी ट्रस्टी बनाते हैं। ... जब कहते हो - यह ईश्वर का दिया हुआ है तो फिर मरने पर रोने की क्या दरकार है ?" सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

"अपने को ट्रस्टी समझकर धन्धा आदि करो तो ममत्व मिट जायेगा। यह बाबा लेकर क्या करेंगे ! इसने तो अपना सब कुछ छोड़ा ना।" सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

"जब लौकिक कार्य भी बाप की श्रीमत प्रमाण करते हो जिसकी श्रीमत है, वही याद आयेगा ना ! इसलिए बापदादा कहते लौकिक कार्य करते भी सदा अपने को ट्रस्टी समझो। ट्रस्टी भी हो और वारिस भी हो। चाहे कहाँ भी रहते हो लेकिन मन से समर्पित हो तो वारिस हो।"

अ.बापदादा 23.12.87 पार्टी

"ट्रस्टी बनकर रहो तो सदा हल्के रहेंगे। साफ दिल मुराद हासिल। श्रेष्ठ संकल्पों की सफलता जरूर होती है। ... कोई भी आये तो आपके भण्डारे से खाली न जाये।"

अ.बापदादा 25.12.82

"अब यह पुरानी दुनिया बदल रही है। बाबा अपना मिसाल बताते हैं। बाबा ने साक्षात्कार कराया, देखा 21 जन्मों के लिए राजाई मिलती है, उसके आगे ये 10-20 लाख क्या हैं। ... मोहजीत भी जरूर बनना पड़े।" सा.बाबा 18.11.05 रिवा.

"बाप भी देखते हैं कि सबकुछ हमको अर्पण कर फिर हमारी श्रीमत पर कैसे चलते हैं। कोई उल्टा-सुल्टा खर्चा कर पापात्माओं को तो नहीं देते हैं। शुरू में इसने भी सबकुछ अर्पण कर ट्रस्टी होकर दिखलाया ना। सबकुछ ईश्वर को अर्पण कर खुद ट्रस्टी बन गया। बस किसको भी कुछ नहीं दिया। ईश्वर के अर्थ दिया तो सब ईश्वर के काम में ही लगना है।... इनको देखकर फिर औरों ने भी ऐसे किया।" सा.बाबा 2.8.06 रिवा.

"ऑनेस्टी अर्थात् अमानत में कभी भी ख्यानत नहीं करें। वेस्ट करना अर्थात् अमानत में ख्यानत करना।... वह छोटी सी वस्तु को भी वेस्ट नहीं करेगा।"

अ.बापदादा 18.12.91

"मेरा बाबा" और मैं बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा और न भूलेंगे।" अ.बापदादा 12.11.92

"परिवार को ट्रस्टी बनकर सम्भालते हो या गृहस्थी बनकर सम्भालते हो ? ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा। ... ट्रस्टी जीवन कितनी प्यारी है, सम्भालते हुए भी कोई बोझ नहीं, सदा हल्के। ... जरा भी दुख की लहर संकल्प में भी आती है तो जरूर कहाँ धोखा खाया है।

चेक करो।” अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 4

“ब्रह्मा भोजन भी बाप ही ब्राह्मण बच्चों को खिलाता है। चाहे लौकिक कमाई भी करके पैसे जमा करते, उससे भोजन मंगाते हो लेकिन अपनी कमाई भी पहले बाप की भण्डारी में डालते हो। भण्डारी भोलानाथ का भण्डारा बन जाता है। इस विधि को कब भूलना नहीं। ... ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा।” अ.बापदादा 7.3.88

“मेरा बाबा और मैं बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा और न भूलेंगे।” अ.बापदादा 12.11.92

“अगर बाप में पूरा निश्चय है तो पूरा श्रीमत पर चलना पड़े। हर एक की नब्ज़ देखी जाती है, उस अनुसार फिर राय भी दी जाती है। बाबा ने भी बच्चे को कहा - अगर शादी करनी हो तो जाकर करो, बहुत मित्र-सम्बन्धी आदि बैठे हैं, वे शादी करा देंगे।... पूछते हो, अगर नहीं रह सकते तो जाकर शादी करो।” सा.बाबा 16.02.06 रिवा.

“कदम-कदम पर बाप से राय लेनी पड़े। सरेण्डर हो जाये तो फिर बाप कहेंगे - अब ट्रस्टी बनो। बाबा की राय पर चलो। अपना पोतामेल बतायेंगे तब तो बाबा राय देंगे।”

सा.बाबा 4.01.06 रिवा.

“बच्चे समझ सकते हैं कि कौन-कौन कितना श्रीमत पर चलते हैं। श्रीमत मिलती है सर्विस करने की। ... बाबा तुमको मकान आदि बनाने के लिए कभी मना नहीं करते हैं। तुम अपने ही घर में एक कमरे में हॉस्पिटल-कम-युनिवर्सिटी बना दो।” सा.बाबा 6.5.06 रिवा.

“तुम जानते हो बाप ने क्या किया ? सब कुछ माताओं को दे दिया। उसने ही डायरेक्शन दिया कि सब कुछ माताओं की सर्विस में लगाओ। ... श्रीमत पर चलने से कदम-कदम पर पदम हैं।” सा.बाबा 26.7.06 रिवा.

“परमात्म-पालना में ही सभी ब्राह्मण चल रहे हो। ... अपनापन अर्थात् गृहस्थी और ट्रस्टी अर्थात् सब बाप का है। ... जैसे समर्पित भाई-बहनें भिन्न-भिन्न कार्य में तन-मन-धन लगाते हैं, ऐसे प्रवृत्ति में रहने वाले भी ... बाप की अमानत समझ श्रीमत प्रमाण अपना तन-मन-धन लगाते हो।” अ.बापदादा 13.12.89

“तन-मन-धन सब तेरा। इसमें बाप का फायदा नहीं है, आपका ही फायदा है। क्योंकि मेरा कहने से फंसते हो और तेरा कहने से डबल लाइट ट्रस्टी बन जाते हो। ... जब तक हल्के नहीं बने तब तक ऊंची स्थिति तक पहुँच नहीं सकते। उड़ती कला ही आनन्द की अनुभूति कराने वाली है। ... सदा यही याद रखना कि मैं ट्रस्टी हूँ।” अ.बापदादा 1.12.89 पार्टी 1

“बाप ने जन्म लेते ही दिव्य-दृष्टि, दिव्य-बुद्धि का वरदान दे दिया है तो दिव्य बुद्धि में साधारण

बातें आ नहीं सकती। ... दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण तन से साधारण कर्म कर नहीं सकते, मन से साधारण संकल्प कर नहीं सकते, धन को साधारण रीति से कार्य में नहीं लगा सकते क्योंकि तन-मन-धन तीनों के ट्रस्टी हो, इसलिए बाप की श्रीमत के बिना कार्य में लगा नहीं सकते।"

अ.बापदादा 11.11.89

"इस ज्ञान मार्ग में कायदे बड़े कड़े हैं। बाप पवित्र बनें और बच्चा न बनें तो वह बच्चा हकदार नहीं हो सकता है, उसको बच्चा नहीं समझेंगे। ... गृहस्थ व्यवहार में ट्रस्टी होकर रहना है। ... अभी तुमको राइट-रांग की बुद्धि मिली है तो कोई भी रांग काम नहीं करना।"

सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

"बाप ने इस तन रूपी मन्दिर का ट्रस्टी बनाया है। ट्रस्टीपन स्वतः ही नष्टोमोहा अर्थात् स्वच्छता और पवित्रता को अपने में लाता है। ... मन की स्वच्छता अर्थात् मन के प्रति बापदादा का डॉयरेक्शन है - मन को मेरे में लगाओ या विश्व-सेवा में लगाओ। ... और किसी तरफ भी मन भटकता है तो भटकना अर्थात् अस्वच्छता। इस विधि से चेक करो कि कितनी परसेन्ट में स्वच्छता धारण हुई है?" अ.बापदादा 6.1.90

"मेरा-मेरा कहकर मैला कर देते हैं। मन दे दिया, तन दे दिया, धन दे दिया। ट्रस्टी हो गये। तो ट्रस्टी हो या गृहस्थी हो? गृहस्थी माना मेरा और ट्रस्टी माना तेरा। अपने में ट्रस्ट है? बाप तो स्वयं ऑफर करता है कि मैं आपके साथ हूँ।" अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 4

"जैसे स्थूल आंखों से देखा जाता है, वैसे अनुभव भी एक आंख है। सबसे बड़ी आंख है अनुभव। अनुभव की आंख से देखा तो भी देखा कहेंगे। ... ब्रह्मा बाप के चित्र के आगे बैठते हो तो भी चेतन्यता का अनुभव करते हो... रेस्पान्स भी मिलता है ना। तो बाप है तभी तो सुनता है और रेस्पान्स देता है। इस अनुभव से वंचित नहीं रह जाना।" अ.बापदादा 9.3.94

"अगर ट्रस्टी है तो निर्बन्धन हैं और गृहस्थी है तो बन्धन है।... निर्बन्धन उड़ती कला वाले सेकेण्ड में अपने स्वीट होम में पहुँच सकते हैं। इसको कहा जाता है योगबल, शान्ति की शक्ति।" अ.बापदादा 1.2.94 पार्टी 3

"बच्चों को हिम्मत रखनी चाहिए, बाबा की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। ... अगर बच्चा तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता है तो बच्चा, बच्चा नहीं। ... तुम उनको अपना वारिस बनायेंगे तो वह तुमको 21 जन्मों के लिए वर्सा देंगे।" सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

श्रीमत और वानप्रस्थ जीवन एवं वानप्रस्थ स्थिति

दुनिया में बाल, युवा, वानप्रस्थ, सन्यास जीवन की चार अवस्थाओं का गायन है परन्तु यथार्थ वानप्रस्थ स्थिति क्या है, उसका अर्थ बाबा ने अभी बताया है। वानप्रस्थ अर्थात् वाणी से परे स्थिति में रहना या कम से कम वाणी में आना। बाबा ने कहा है - आत्मा परमधाम की रहने वाली है, जहाँ कोई वाणी आदि की बात नहीं। सूक्ष्म वतन में भी वाणी नहीं होती, सारा कार्य मूवी में ही होता है। बाबा ने सन्यास और वानप्रस्त का सही अर्थ बताया है और कैसे हम यथार्थ रूप में सन्यासी और वानप्रस्थी बनें, उसके लिए भी श्रीमत दी है। बाबा ने घर-परिवार में रहते भी सन्सासी और वानप्रस्थी बनकर रहने के लिए श्रीमत दी है क्योंकि अभी सबकी वानप्रसथ अवस्था है।

"कोई-कोई को तो बन्धन नहीं हैं तो भी फंसे रहते हैं। लाख दो हैं, भल बड़ा कुटुम्ब है तो भी बाबा कहेंगे जास्ती धन्धे आदि में नहीं फंसो। वानप्रस्थी बन जाओ। खर्चा आदि कम कर लो।"

सा.बाबा 24.11.05 रिवा.

"ऐसी कमेटी बनें, जो प्रदर्शनी के पिछाड़ी प्रदर्शनी करती रहे। बन्धन मुक्त तो बहुत हैं। कन्यायें बन्धनमुक्त हैं, वानप्रस्थी भी बन्धनमुक्त हैं। बच्चों को बाप का डायरेक्शन अमल में लाना चाहिए। ... बाकी सोये नहीं रहना है। कई बच्चे देह-अभिमान में सोये रहते हैं। कमेटी बनाये, खीरखण्ड हो प्लैन बनाना चाहिए।" सा.बाबा 9.03.06 रिवा.

"सारी दुनिया का सन्यास कर हम अपने घर चले जायेंगे। एक बाप के सिवाए कोई भी चीज याद न आये। ... वाणी से परे मूलवतन को कहेंगे। वहाँ सभी आत्मायें निवास करती हैं। अभी सबकी वानप्रस्थ अवस्था है क्योंकि सबको वाणी से परे जाना है घर।"

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

"आदि स्वरूप आवाज में आने का है लेकिन अनादि-अविनाशी संस्कार साइलेन्स है। ... अब आदि-मध्य-अन्त तीनों ही काल का पार्ट समाप्त कर अपने अनादि स्वरूप, अनादि स्थिति में स्थित होने का समय है। इसलिए इस समय यही अभ्यास ज्यादा आवश्यक है। अपने आपको चेक करो कि कर्मेन्द्रियजीत बने हैं?" अ.बापदादा 16.3.86

"इस समय आत्म को शक्तिशाली बनाने के लिए यह रुहानी एक्सरसाइज का अभ्यास चाहिए। चारो ओर कितना भी वातावरण हो, हलचल हो लेकिन आवाज में रहते, आवाज से परे स्थिति का अभ्यास अभी बहुत काल से चाहिए।... देह, देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार,

व्यक्ति, वैभव, वायब्रेशन, वायुमण्डल सब होते हुए भी आकर्षित न करे। इसको ही कहते हैं - नष्टोमोहा, समर्थ स्वरूप।" अ.बापदादा 16.3.86

"अब तुम बच्चों का इस पुरानी दुनिया से बुद्धियोग बिल्कुल हट जाना चाहिए। ... अपने को आत्मा निश्चय कर, मुझे याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी। ... वह है हद का सन्यास और यह है बेहद का सन्यास। उन सन्यासियों को भी कितना मान मिलता है।"

सा.बाबा 21.6.06 रिवा.

"माताओं में जोश आना चाहिए।... एक दो के मददगार बनकर पहले दो मास, तीन मास सेवा में निकलो, फिर सेवा का रस बैठ जायेगा, जो आपको आपही निर्बन्धन करेगा।... अभी तक यह आश बाप की प्रवृत्ति वालों ने पूरी नहीं की है।" अ.बापदादा 9.1.96

श्रीमत और ब्राह्मण जीवन की दिनचर्या

बाबा ने प्रातः उठने से रात सोने तक के हर कर्म के लिए श्रीमत दी है। रात को हमारी नींद कैसी हो, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा को याद करके सोयेंगे तो नींद भी सतोप्रधान होगी, स्वप्नों में भी परमात्म मिलन की अनुभूति होगी। नींद भी सेवा करेगी अर्थात् नींद में भी जो देखेगा, उसको प्रेरणा आयेगी। प्रातःकाल उठते ही पहले शिवबाबा की याद आये, फिर उठकर अमृतवेले का योग, क्लास नियमित हो। दिन के व्यवहारिक जीवन में भी दैवी गुणों की धारणा हो, बीच-बीच में योग का अभ्यास हो।

सायंकाल भी योग हो। जिसके लिए बाबा कहते - अच्छे आदमी दो बार स्नान करते हैं अर्थात् दो बार योग स्नान अवश्य हो। रात को सोने से पहले भी विधिवत बाबा की याद करके सोयें। खान-पान में भी पहले बाबा को याद अवश्य करें। दिन में सेवा करते भी बीच-बीच में जो समय मिले, उसमें बाबा को याद करें, समय न मिले तो भी समय निकालकर बाबा को याद करें।

कोई कार्य करते भी कोई सामने आ जाये, तो उसको बाबा का सन्देश अवश्य दें। जिसके लिए बाबा कहते अगर कोई गोबर के उपले भी बना रहा हो तो भी कोई सामने आ जाये तो उसको बाबा का परिचय दें। ब्रह्मा बाबा ने ये सब करके दिखाया कि ये सब सम्भव है अगर अपना लक्ष्य है तो। हर कर्म में यह स्मृति में रहे कि बाबा करा रहा है, बाबा साथ है, बाबा हमको देख रहा है, हम बाबा के यज्ञ के लिए ये कार्य कर रहे हैं। कर्म-कान्शस न हों,

कर्मयोगी बनकर कर्म करें।

एक-दूसरे के विस्तर पर बैठना, सोना, एक-दूसरे के वस्त्रों का उपयोग, एक-दूसरे के बर्तनों में खाना भी योग की सिद्धि के लिए यथार्थ नहीं है। इसके लिए भी बाबा ने सारे विधि-विधान बताये हैं और यज्ञ में करके भी सिखाये हैं।

“स्मृतिस्वरूप अर्थात् जैसा समय, जैसा कर्म वैसे स्वरूप की स्मृति इमर्ज रूप में अनुभव करो। जैसे अमृतवेले मास्टर वरदाता बन वरदाता से वरदान लेने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... वह वरदानी समय है और वरदाता-विधाता साथ में है। ... मुरली सुनते समय गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ ... भगवान पढ़ाने आये हैं ... तो कितना नशा रहेगा।... ऐसे हर कर्म में बाप के साथ स्मृति-स्वरूप बनते चलो।” अ.बापदादा 14.10.87

“बाबा को याद करते-करते सो जाओ, फिर देखो क्या होता है। आगे बाबा कब्रिस्तान बनाते थे, फिर कोई शान्त में चले जाते थे, कोई रास करने लगते थे।”

सा.बाबा 17.11.05 रिवा.

“रात को जब सोते हो तो भी यह ख्याल करो - बाबा हम आपकी याद में सो जाते हैं गोया हम इस शरीर को छोड़कर आपके पास आ जाते हैं। फिर देखो बहुत मजा आता है। ... रात को सोते समय बाबा को याद करते, चक्र को बुद्धि में याद करते रहो।”

सा.बाबा 17.11.05 रिवा.

श्रीमत और अमृतवेला

जैसे दिन-रात के हिसाब से प्रातःकाल रात-दिन का सन्धिकाल अमृतवेला माना जाता है, वैसे काल-चक्र के हिसाब से ये संगमयुग कल्प की अमृत-वेला है। अमृत-वेला का समय सबसे श्रेष्ठ और शुभ माना जाता है, जिस समय विशेष रूप से भक्त लोग भक्ति, साधना, गंगा स्नान आदि करते हैं, उसका विशेष फल होता है। कल्प के संगमयुग अर्थात् अमृतवेला पर परमात्मा आकर आत्माओं को ज्ञान देकर, उनकी विशेष पालना करते हैं। परमात्मा ने भी रात-दिन के सन्धिकाल को विशेष महत्व दिया है और कहा है कि यह समय विशेष ब्राह्मण बच्चों के लिए है, इस समय बाबा विशेष पालना करते हैं। काल-चक्र और पृथ्वी की गति को देखें तो हर क्षण अमृत-वेला का होता है क्योंकि किसी न किसी देश में सूर्योदय का समय होता ही है, इसलिए परमात्मा हर क्षण आत्माओं की ज्ञान-गुणों और शक्तियों से पालना करते ही हैं परन्तु अमृतवेला का वह समय, जहाँ अमृतवेला का समय होता है, उस स्थान के रहने वालों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि उस समय वहाँ पर

परमात्मा की विशेष दृष्टि होती है। बाबा ने अमृतवेला की विशेष विशेषतायें भी बताई हैं और अमृतवेला को सफल बनाने के लिए भी श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है, उस समय वातावरण शान्त होता है, जिससे आत्मा सहज ही ब्रह्मलोक वासी बन जाती है अर्थात् शान्ति का अनुभव करती है।

"अमृतवेले पॉवर हाउस से फुल पॉवर लेने का जो नियम है, उसको बार-बार चेक करो।... उठकर बैठ गये, यह तो नियम पालन किया लेकिन कनेक्शन ठीक है अर्थात् प्राप्तियों का अनुभव होता है ? ... अमृतवेले का कनेक्शन अर्थात् सर्व पॉवर्स का और सर्व प्राप्तियों का अनुभव होना।... अगर आदि काल ठीक न होगा तो मध्य और अन्त भी ठीक न होगा।"

अ.बाप-

दादा 8.7.73

"अखुट खजाने के बालक सो मालिक हो और ऐसे फिर दूसरों से शक्ति का उधार लेवे तो उनको क्या कहा जाये ... बजट बनाना अर्थात् अपनी बुद्धि का, वाणी का और फिर कर्म का, सभी का अपना हर समय का प्रोग्राम फिक्स करो। ... शक्तियों को जमा करने की सहज युक्ति यही है कि रोज अमृतवेले अपना मन्सा, वाचा, कर्मणा का प्लेन बनाओ।"

अ.बापदादा 8.7.73

"सहज युक्ति कौनसी है, जो रिवाइज कोर्स में भी बहुत रिवाइज हो रही है ? वह है अमृतवेले अपने आप से और बाप से रूह-रुहान करना वा अमृतवेले को महत्व देना।... अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे ही होंगे। कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा। ... अमृतवेला सारे दिन के समय की फाउण्डेशन वेला है।"

अ.बापदादा 24.6.72

"अमृतवेला को ब्रह्म-मुहूर्त कहते हैं। ब्रह्मा-मुहूर्त शब्द राइट है क्योंकि ब्रह्मा समान दिन का आरम्भ करते हो। ... उस समय का वायुमण्डल ऐसा होता है जो आत्मा सहज ही ब्रह्म-निवासी बनने का अनुभव कर सकती है।" अ.बापदादा 24.6.72

बाबा के उपर्युक्त महावाक्यों से हम अमृतवेले के महत्व समझ और उसके प्रति बाबा की श्रीमत को समझकर उसका पालन कर अमृतवेला का लाभ उठा सकते हैं।

"तुम बच्चों को यह ज्ञान मिलता है, कितना रमणीक, रहस्ययुक्त है। ... तुम बच्चों का भी यही चिन्तन चलता है, ... सवेरे-सवेरे उठकर यह ख्याल करना चाहिए। ... वह हमारा घर है। वहाँ शरीर ही नहीं तो आवाज़ कैसे हो।" सा.बाबा 18.8.05 रिवा.

"सवेरे उठकर बाबा से बातें करना बड़ा अच्छा है। भक्ति और ज्ञान दोनों के लिए यह टाइम

अच्छा है। ... ऐसे-ऐसे सवेरे बैठ विचार सागर मन्थन करना है। प्वाइन्ट्स निकलेंगी तो तुमको बहुत खुशी होगी।" सा.बाबा 5.10.05 रिवा.

"अमृतवेले सदा अपने मस्तक में विजय का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक लगाओ। भक्ति मार्ग में तिलक लगाते हैं ना। भक्ति की निशानी भी तिलक है, सुहाग की निशानी भी तिलक है और राज्य प्राप्त करने की निशानी भी राजतिलक होता है।"

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 5

"अमृतवेले योग करते... ऐसे समझो हम विश्व की स्टेज पर बैठे हैं, हीरो पार्टधारी हैं ... अमृतवेला भी पॉवरफुल बनाओ।... योग अग्नि हो, ज्वालामुखी हो। तो यह तीन मास विशेष अमृतवेला भी नोट करना।" अ.बापदादा 31.12.05

"रोज अमृतवेले स्वयं को ब्राह्मण जीवन के स्मृति का तिलक लगाओ ... सदा स्मृति रखो कि हम कम्बाइण्ड हैं। ये साथ का तिलक सदा लगाओ। ... सदा साथ हैं और सदा सन्तुष्ट हैं।"

अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 2

"अमृतवेले सदा अपने मस्तक में विजय का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक लगाओ। भक्ति मार्ग में तिलक लगाते हैं ना। भक्ति की निशानी भी तिलक है, सुहाग की निशानी भी तिलक है और राज्य प्राप्त करने की निशानी भी राजतिलक होता है।"

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 5

"सुबह को चिन्तन अच्छा चलता है तो दिन को भी खुशी रहती है। अगर खुशी नहीं रहती है तो जरूर बाप से प्रीतबुद्धि नहीं हैं। अमृतवेले एकान्त अच्छी होती है। जितना बाप को याद करेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ेगा।" सा.बाबा 4.5.06 रिवा.

"सदा अमृतवेले अपने आपको विजय का तिलक लगाओ और बार-बार उसे रिफ्रेश करो। ... जब हिम्मत रखकर बाप के बन गये तो बनने के बाद हिम्मत की पदमगुणा मदद मिलती ही है। ... सदा बाप समान विजयी हैं ही हैं।" अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 3

श्रीमत और सायंकाल का सन्धिकाल

जैसे अमृतवेले का समय का विशेष महत्व है, वैसे सायंकाल का सन्धिकाल भी विशेष महत्वपूर्ण है। उस समय भी विशेष भक्ति भावना, आध्यात्मिक पुरुषार्थ आदि करते हैं। भक्ति मार्ग में गायन है - नुमा शाम के समय देवतायें चक्र लगाते हैं। बाबा ने भी योग साधना

के लिए इस समय को विशेष महत्व दिया है और तपस्या करने के अच्छा समय बताया है। अनुभव भी यही कहता है कि इस समय बुद्धि को एकाग्र करने में वातावरण का विशेष सहयोग होता है। इस समय का कैसे लाभ उठायें, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

“बच्चे जितना बाप को याद करते हैं उतना बाप-दादा भी रिटर्न में करते हैं।...जैसे बच्चे बाप का आवाह्न करते हैं, वैसे विश्व की आत्मायें आप सब सर्वश्रेष्ठ आत्माओं का आवाह्न कर रहीं हैं। ऐसे आलाप कानों में सुनाई देते हैं। विशेष इस “नुमाशाम” के समय जब सूर्य के साथ लक्की सितारों को, अन्धकार मिटाने वाले ज्योति स्वरुप समझकर इस हद की लाइट को नमस्कार करते हैं।...ऐसे नमस्कार-योग्य स्वयं को अनुभव करते हो ?”

अ.बापदादा 22.1.76

श्रीमत और स्वप्न एवं निद्रा

निद्रा जीवन का एक अभिन्न अंग है और स्वप्नों का निद्रा से गहरा सम्बन्ध है। इस प्रकार से हम देखें तो स्वप्न भी जीवन का एक अंग हैं और उनका भूत काल के जाग्रत जीवन से गहरा सम्बन्ध है और भविष्य जाग्रत जीवन के कर्मों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारे स्वप्न सदा शुभ और श्रेष्ठ रहें, उसके लिए बाबा ने स्वप्नों का ज्ञान, उनका आधार और उनकी श्रेष्ठता के लिए श्रीमत भी दी है।

“ऐसे नहीं कि स्वप्न तो मेरे वश में नहीं है। स्वप्न का भी आधार अपनी साकार जीवन है। अगर साकार जीवन में मायाजीत हो तो स्वप्न में भी माया अंशमात्र में भी नहीं आ सकती। ... जो स्वप्न में कमजोर होता है, तो उठने के बाद भी वे संकल्प जरूर चलेंगे और योग साधारण हो जायेगा। ... सदा मायाजीत अर्थात् सदा बाप के समीप संग में रहने वाले।”

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 3

“अगर कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। ... बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपनी बुद्धि को खाली करो।”

अ.बापदादा 16.11.95

श्रीमत और परमार्थ एवं जीवन-व्यवहार

परमार्थ सर्वोपरि है। परमार्थ से व्यवहार की सिद्धि सहज हो सकती है और होती ही

है, यह दृढ़ निश्चय हो परन्तु व्यवहार से परमात्मा की सिद्धि कभी भी नहीं हो सकती। व्यवहार परमार्थ की सिद्ध में केवल सहयोगी बन सकता है। जीवात्मा के लिए परमार्थ और व्यवहार दोनों आवश्यक हैं परन्तु परमार्थ व्यवहार से ऊपर है, महत्वपूर्ण है।

"रोज चेक करना है - कितना समय लौकिक तरफ दिया और कितना समय अलौकिक वा पारलौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया। ... उस तरफ कम हुआ तो हर्जा नहीं लेकिन इस तरफ कम न होना चाहिए। ... परमार्थ से व्यवहार भी स्वत: सिद्ध हो जाता है।"

अ.बापदादा 19.6.69

"जब भी अन्य आत्माओं की सर्विस करते हो तो सदैव यह भी ध्यान में रखो कि दूसरों की सर्विस के साथ अपनी सर्विस भी करनी है। आत्मिक स्थिति में अपने को स्थित रखना, यह है अपनी सर्विस। पहले यह चेक करो कि अपनी सर्विस भी चल रही है?"

अ.बापदादा 10.6.71

"इसी प्रकार धन की शक्ति अर्थात् ज्ञान-धन की शक्ति। ज्ञान धन स्थूल धन की प्राप्ति स्वत: ही कराता है। जहाँ ज्ञान धन है, वहाँ प्रकृति स्वत: ही दासी बन जाती है। ... इसलिए ज्ञान-धन सब धन का राजा है।... यह ज्ञान-धन राजाओं का भी राजा बना देता है।"

अ.बापदादा 29.10.87

"वास्तव में ज्ञान-धन पद्मापदमपति बनाने वाला है। परमार्थ व्यवहार को स्वत: ही सिद्ध करता है। परमात्म-धन वाले परमार्थी बन जाते हैं।" अ.बापदादा 29.10.87

"व्यवहार में धन की वृद्धि करते हुए याद की विधि भूलनी नहीं चाहिए।... इसको कहा जाता है लौकिक स्थूल कर्म भी कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। कर्म अर्थात् व्यवहार और योग अर्थात् परमार्थ।" अ.बापदादा 31.12.70

"बहुत साधारण रहना है क्योंकि अभी तुम वनवाह में हो।... यहाँ तो बहुत सिम्पुल रहना चाहिए। नहीं तो देहाभिमान आ जाता है।... श्रीमत तो श्रीमत है ना। निश्चय में विजय है।"

सा.बाबा 17.9.05 रिवा.

"कोई पुलिस की नौकरी करते हैं तो उन्हें भी कहा जाता है - तुम पहले प्यार से समझाओ, फिर सच्ची न करे तो बाद में मार। प्यार से समझाने से हाथ आ सकते हैं परन्तु उस प्यार में भी योगबल भरा होगा तो। ... समझेंगे यह तो जैसे ईश्वर समझाते हैं।"

सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"मास्टर ज्ञान सूर्य...कोई भी परिस्थिति सामने आये लेकिन सूर्य रोशनी देने के कार्य के बिना रह नहीं सकता। ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य हो?... परमार्थ से व्यवहार और परिवार दोनों को श्रेष्ठ

बनाना है। जहाँ परमार्थ है, वहाँ व्यवहार सहज सिद्ध हो जाता है।"

अ.बापदादा 10.12.87 पार्टियों से

"तुम बच्चों को इस सेवा में अपना जीवन सफल करना है। चलन भी बहुत मीठी सुन्दर चाहिए। ... बाप भी सर्विस पर है ना। तुम बच्चे भी दिन-रात सर्विस पर रहो।"

सा.बाबा 28.9.05 रिवा.

"बाप बच्चों को समझाते हैं - कोई भी बात में हार्टफेल मत हो। ये ज्ञान की बातें हैं। भल अपना धन्धा आदि भी करो परन्तु भविष्य ऊंच पद पाने के लिए भी पूरा पुरुषार्थ करो। ... धन्धे आदि से भी कुछ समय निकाल याद कर सकते हो। यह भी अपने लिए धन्धा है ना।"

सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

"बच्चे मुझे याद करो और दैवी गुण धारण करो। प्रॉपर्टी आदि का कोई भी झगड़ा आदि है तो उसको खलास कर दो। ... इस ब्रह्मा बाप ने छोड़ा तो कोई झगड़ा आदि थोड़ेही किया। ... हमको विश्व की बादशाही मिलती है तो यह सब क्या है।" सा.बाबा 17.10.05 रिवा.

"जितना सर्विस करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।... अपनी आपही जांच करनी चाहिए। हर एक अपनी अवस्था को तो जानते हैं।... सर्विसएबुल बच्चे हैं, भल नौकरी में भी हैं तो भी उनको कहा जाता है कि हाफ पे पर भी छुट्टी लेकर जाये सर्विस करो, हर्जा नहीं है।"

सा.बाबा 6.12.05 रिवा.

"चाहे व्यवहार हो चाहे परमार्थ हो, व्यवहार में भी सहज और परमार्थ माना अपना पुरुषार्थ, उसमें भी सहज। लौकिक में भी सहज और अलौकिक में भी सहज, बोझ नहीं।... मेरा-मेरा माना बोझ और तेरा-तेरा अर्थात् हल्का। संगमयुग है ही खुशियों का युग।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 1

"जब ईश्वरीय सुख मिल जाता है तो विनाशी सुख आपही पीछे-पीछे परछाई की तरह आता है। ... जहाँ परमार्थ होता है, वहाँ व्यवहार स्वत: सिद्ध हो जाता है। ईश्वरीय सुख है परमार्थ और विनाशी सुख है व्यवहार। ... कोई अप्राप्ति नहीं रहती है।"

अ.बापदादा 12.3.88 पार्टी 2

"तुम जानते हो कि श्रीमत पर चलने में ही विजय है। निश्चय में ही विजय है। शिवबाबा राय देते हैं। वह तो सर्विस के लिए ही मत देंगे। कोई कहते - बाबा यह व्यापार करूँ ? बाबा कोई इन बातों के लिए मत नहीं देंगे।" सा.बाबा 5.4.06 रिवा.

"चाहे व्यवहार हो चाहे परमार्थ हो, व्यवहार में भी सहज और परमार्थ माना अपना पुरुषार्थ, उसमें भी सहज। लौकिक में भी सहज और अलौकिक में भी सहज, बोझ नहीं।... मेरा-मेरा

माना बोझ और तेरा-तेरा अर्थात् हल्का। संगमयुग है ही खुशियों का युग।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 1

"जब ईश्वरीय सुख मिल जाता है तो विनाशी सुख आपही पीछे-पीछे परछाई की तरह आता है। ... जहाँ परमार्थ होता है, वहाँ व्यवहार स्वत: सिद्ध हो जाता है। ईश्वरीय सुख है परमार्थ और विनाशी सुख है व्यवहार। ... कोई अप्राप्ति नहीं रहती है।"

अ.बापदादा 12.3.88 पार्टी 2

श्रीमत और ब्राह्मणों का जीवन-स्तर अर्थात साधारणता में महानता

बाबा की हम बच्चों को श्रीमत है - तुम्हारा जीवन व्यवहार, रहन-सहन मध्यम होना चाहिए। न बहुत ऊंचा और न बहुत नीचा। साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को अपने साधनों और आमदनी के अनुसार ही अपना जीवन व्यवहार बनाना चाहिए, तब ही इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव होगा, आत्मा निचिन्त और निर्संकल्प रहेगी।

"ये सब बातें बुद्धि में धारण कर बड़ी आन्तरिक खुशी रहनी चाहिए। ... तुम बच्चों का श्रीमत पर चलने में ही कल्याण है, तब ही देहाभिमान टूटेगा। ... ऊंचे कपड़े आदि नहीं पहनने हैं। साधारण रहना है। नहीं तो देहाभिमान आ जाता है। जैसे कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और सब करेंगे। ... देहाभिमान में आने से बाप को भूल जायेंगे।" सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

"इस पढ़ाई में बच्चों को बड़ा खबरदार रहना चाहिए। तुम हो साधारण, तुमको पढ़ाने वाला भी बिल्कुल साधारण रूप में है, तो पढ़ने वाले भी साधारण ही रहेंगे।... हमारे मम्मा-बाबा कितने साधारण रहते हैं तो हम भी साधारण रहें। यह साधारण क्यों रहते हैं? क्योंकि वनवाह में हैं।"

सा.बाबा 18.4.06 रिवा.

"भल अपना राजयोग है, तो भी बहुत साधारण रहना है।... देखते हो यह बाबा कितना साधारण चलते हैं। ... ऐसे बाप का तो फरमानबरदार, वफादार बनना चाहिए।"

सा.बाबा 22.3.06 रिवा.

"अपना आदि से अन्त तक का यह नियम है कि न बिल्कुल सादा हो और न बहुत रॉयल हो। बीच का होना चाहिए। ... अभी साधन भी हैं और साधन देने वाले भी हैं फिर भी कोई भी कार्य करो तो बीच का करो। ... ऐसा भी कोई न कहे कि यह क्या लगा दिया और कोई ये भी न कहे कि अभी तो राजाई ठाठ हो गया है।" अ.बापदादा 22.12.95

श्रीमत और खान-पान / श्रीमत और अन्न

मानव जीवन दो बातों से अस्तित्व में आया है। एक है ज्ञानमय और दूसरी है अन्नमय। दोनों के विषय में बाबा ने ज्ञान भी दिया है और उनकी सफलता के लिए श्रीमत भी दी है। खान-पान खान-पान के विधि-विधान के विषय में भी बाबा कहा है कि ब्राह्मण किसी शूद्र के हाथ का बनाया हुआ खा नहीं सकते और यदि खाते हैं तो उसका असर अवश्य होता है क्योंकि अन्न का असर मन पर अवश्य पड़ता है और मन का असर अन्न पर अवश्य पड़ता है। जो व्यक्ति जिस भावना, दृष्टि-वृत्ति, स्मृति से भोजन बनाता है, उनसे उसके वायब्रेशन उस भोजन में प्रवाहित होते हैं और उसको उस अनुरूप बना देते हैं। जैसी स्मृति होती है, वैसा संकल्प होता है और वैसे ही प्रकम्पन दृष्टि और त्वचा से प्रवाहित होते हैं और भोजन को प्रभावित करते हैं। इस सत्य को जानते हुए ही बाबा ने अन्न की बहुत परहेज बताई है।

यदि किसी की परिस्थितियां असामान्य हैं तो उसको भी बाबा से व्यक्तिगत राय लेनी है, और बाबा की श्रीमत लेकर खायेगा तो बाबा उसके लिए रेस्पान्सिबुल हो जायेगा, बाबा उसको मदद करेगा। उसमें भी बाबा ने कहा है कि तुम उतना ही अधिक बाबा की याद करके खाओ, जिससे वह अपवित्र भोजन भी पवित्र बन जाये। परन्तु यह श्रीमत सार्वजनिक रूप में नहीं दी है अर्थात् सबके लिए नहीं है।

इस सम्बन्ध में हठयोग के प्रणेता महर्षि पातन्जलि के पातन्जलि योगदर्शन के एक भाष्य-कर्ता ने अपने भाष्य में लिखा है - यदि योगी के हाथ का भोजन भोगी खाये तो एक दिन भोगी योगी हो जायेगा और यदि भोगी के हाथ का भोजन एक योगी खाता रहे तो एक दिन योगी भोगी अवश्य बन जायेगा।

अन्न के सम्बन्ध में बाबा ने ये भी कहा है कि किसी पतित का दिया हुआ अन्न, पतित के द्वारा दिये गये धन से खरीदा अन्न भी तुम्हारे पेट में नहीं जाना चाहिए। इसलिए ऐसे देने वालों की पहले सेवा करो, फिर वे कुछ देते हैं तो ही उसे स्वीकार करो। यदि कोई ऐसा धन आता है तो जहाँ तक सम्भव हो, उसको सेवा में लगाओ परन्तु भोजन में प्रयोग नहीं करो। इसलिए ही बाबा ने मुरलियों में कहा है कि सन्यासी पतितों का अन्न खाते हैं तो उनको पतितों के पास जन्म लेना होता है क्योंकि उसका भी हिसाब-किताब बनता है।

"शुद्ध अन्न पेट में पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिवबाबा का साक्षात्कार हो सकता है।... शिवबाबा को याद करते भोजन बनायेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोजन में

ताकत भर जाती है। ... ब्रह्मा भोजन का गायन भी है ना।" सा.बाबा 20.10.04 रिवा.
अ.ब178

"यह नॉलेज कितनी वण्डरफुल है, जिसको तुम्हारे सिवाए कोई नहीं जानते हैं। बाप की याद में रहने बिगर धारणा भी नहीं होगी। खान-पान आदि का भी फर्क पड़ने से धारणा में फर्क पड़ जाता है। इसमें प्योरिटी बड़ी अच्छी चाहिए।" सा.बाबा 22.1.05 रिवा.

"भोग लगाया तो ब्रह्मा भोजन हो गया ना। अगर भोग लगाकर, याद करके नहीं खाया तो साधारण खाना हो गया, उसमें ताकत नहीं आयेगी, पेट भरेगा लेकिन आत्मा में शक्ति नहीं आयेगी।" अ.बापदादा 25.12.89 पार्टी 4

"बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं - मैं तुमको ऐसा कर्म करना सिखाता हूँ जो कि विकर्म नहीं बने। किसी को दुख नहीं दो, पतित मनुष्य का अन्न नहीं खाओ, विकार में मत जाओ।"
सा.बाबा 11.8.69 रिवा.

"वाणी द्वारा भी उल्टा संग का रंग लग जाता है। इससे भी अपने को बचाना और फिर अन्न का संगदोष भी है। अगर कब भी किसके भी समस्या अनुसार वा कोई सम्बन्धी के स्नेह के वश भी अन्नदोष में आ गई तो यह अन्न भी अपने मन को संग के रंग में ला देता है।"
अ.बापदादा 11.6.71

"कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ... खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा, सूक्ष्म खायेंगे। यह भी एक कायदा है। ... ये ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी-सुनानी चाहिए।" सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

"सभी से ग्लानि की चीज है विकार। सन्यासियों में भी थोड़ा क्रोध रहता है क्योंकि "जैसा अन्न वैसा मन", गृहस्थियों का ही खाते हैं। कोई अनाज नहीं खाते, पैसे तो लेते हैं ना। पतितों का उसमें भी असर तो रहता है ना।" सा.बाबा 2.8.71 रिवा.

"तुम हो ब्राह्मण, तुमको शूद्र के हाथ का खाना नहीं है। बाप को याद जरुर करना है। लाचारी हालत में खाओ तो भी याद कर खायेंगे तो ताकत भर जायेगी। परन्तु तुम याद कर खाते कहाँ हो।" सा.बाबा 18.6.71 रिवा.

"जो विश्व के मालिक बनने वाले बच्चे हैं, उनके ख्यालात बहुत ऊंचे और चलन बड़ी रॉयल होगी। ... भोजन भी बहुत सूक्ष्म होगा। खुशी जैसी खुराक नहीं। सदैव खुशी में रहो तो खान-पान भी बहुत थोड़ा हो जायेगा। ... भोजन सदैव एकरस रहना चाहिए।"
सा.बाबा 4.7.05 रिवा.

"हम विश्व के मालिक थे, अभी फिर बन रहे हैं।... यह सब बातें तुम बच्चों की ही बुद्धि में हैं

तो तुमको कितनी खुशी रहनी चाहिए। यह बातें सुनकर फिर दूसरों को भी सुनानी हैं। ... भोजन भी तुम योग में रहकर बनाओ और खिलाओ तो बुद्धि इस तरफ खिंचेगी।"

सा.बाबा 7.11.05 रिवा.

"अगर धन भी अशुद्ध आता है तो वह अशुद्ध धन खुशी को गायब कर देता है, चिन्ता लाता है ... और शुद्ध अन्न मन को शुद्ध बना देता है, इसलिए धन भी शुद्ध हो जाता है। याद के अन्न का महत्व है। ... याद में बनाया हुआ और याद में स्वीकार करने वाला अन्न दवाई का भी काम करता है और दुआ का भी काम करता है।" अ.बापदादा 16.2.88

"देवताओं को भोग हमेशा पवित्र ही लगाया जाता है, तो तुम भी पवित्र खाओ। ... वहाँ तेल आदि होता नहीं। ... तुम बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए। अभी हमको बाबा लेने के लिए आया है। बाप से हमको स्वर्ग का वर्सा मिलना है।" सा.बाबा 13.02.06 रिवा.

"बाबा की याद में रहकर भोजन भी अपने हाथ से बनाना है।... तुम्हारा भी कल्याण होगा और याद में रहने से चीज़ भी अच्छी बनेंगी।... तुम जानते हो हम अभी स्थापना कर रहे हैं, राजयोग से श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बना रहे हैं।" सा.बाबा 6.7.06 रिवा.

"ब्रह्मा भोजन की महिमा अपरमअपार है। इससे तुम पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनते हो... जैसे पतिव्रता स्त्री पति के सिवाए और किसी को भी याद नहीं करती। ऐसे तुम बच्चे भी बाप की याद में रहकर भोजन बनाओ और खाओ तो बहुत बल मिलेगा।"

सा.बाबा 12.10.06 रिवा.

श्रीमत और बुद्धि का भोजन

जीवात्मा जो अन्न ग्रहण करती हॅ, उसका प्रभाव जीवन पर पड़ता है, ऐसे ही बुद्धि द्वारा आत्मा जो ग्रहण करती है, उसका प्रभाव भी जीवन पर पड़ता है। आत्मा सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों (आंख, कान, स्वचा आदि) से जो ग्रहण करता है, वह अन्दर हज़म होता है अर्थात् संकल्प में चलता है और उसका प्रभाव हमारे अन्त:पटल पर पड़ता और फिर हमारे भविष्य कर्म, संस्कारों और जीवन को प्रभावित करता है। इसलिए बाबा ने इन सब बातों के लिए श्रीमत दी है। इसलिए बाबा ने स्पर्श आदि की भी परहेज बताई है। दूसरे के विस्तर पर या दूसरों के प्रयोग किये हुए वस्त्र आदि के प्रयोग के लिए भी बाबा ने परहेज बताई है क्योंकि इन सबका जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

"जैसे मलेच्छ भोजन की बदबू समझ में आ जाती है, वैसे मलेच्छ संकल्प रूपी आहार स्वीकार करने वाली आत्माओं के वायब्रेशन से बुद्धि में स्पष्ट टचिंग होती है।"

अ.बापदादा 28.10.75

"कार्य में दिव्यता ही सफलता का आधार है। दिव्य बुद्धि की निशानी है - हर कर्म में दिव्यता। ... दिव्य बुद्धि प्राप्त करने वाली आत्मायें सदा अदिव्य को भी दिव्य बना देती हैं। ... दिव्य बुद्धि अर्थात् पारस बुद्धि। ... अभी दिव्य बुद्धि के वरदान को कार्य में लगाओ।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 4

"बाबा हम आपकी श्रीमत पर जरूर चलेंगे। ऐसे-ऐसे अपने अन्दर अपने से बातें करनी होती हैं। ... हम कल्प-कल्प आपको भूल जाते हैं ... याद से ही बाप का वर्सा मिलेगा। ... यह रुहानी भोजन मिलता है, उसको फिर उगारना चाहिए।" सा.बाबा 5.01.06 रिवा.

"बापदादा ने श्रीमत दी है कि भोजन करने के पहले भोग लगाओ, पीछे खाओ। इससे अन्न का मन पर प्रभाव पड़ेगा, दूसरा बाप की श्रीमत मानने से आज्ञा पालन का भी फल मिलेगा।"

अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

श्रीमत और संग / श्रीमत और सत्य का संग एवं कुसंग

जैसे अन्न का जीवन में महत्व है, वैसे ही संग का भी जीवन में बहुत महत्व है। संग के लिए गायन है - संग तारे, कुसंग बोरे अर्थात् अच्छा संग उन्नति का आधार बनता है और बुरा संग गिरावट का कारण बनता है। संग केवल स्थूल में ही नहीं होता है लेकिन मन से भी संग होता है। जीवात्मा जिसको याद करता है, वह सूक्ष्म में उसके साथ रहता है, उसके गुण धर्म उस पर प्रभावित होते हैं और जीवात्मा जिसके स्थूल में संग में रहता है, तो जब वह स्थूल में साथ नहीं होता है तो उसकी स्मृति आती रहती है। इसलिए इस दोनों प्रकार के संग की बहुत परहेज चाहिए। परचिन्तन भी एक प्रकार का कुसंग ही है।

गलत स्थान में जाने का भी अवस्था पर असर हो जाता है क्योंकि वहाँ का दूषित वातावरण आत्मा को प्रभावित करता है।

"एक होता रियल लव, दूसरा होता है आर्टिफिशियल लव। बाप से लव तब हो, जब अपने को आत्मा समझें। ... एक तो बाजार की छी-छी गन्दी चीजें न खाओ और मामेकम् याद करो।... संग भी अच्छा चाहिए, जिसको बाइसकोप की आदत पड़ी वे पतित बनने बिगर रह नहीं सकेंगे।" सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"जो समीप रहने वाले होते हैं, उनमें समीप रहने वाले के गुण स्वत: और सहज ही आ जाते हैं।

इसलिए कहा जाता है कि संग का रंग अवश्य लगता है। ... वैसे ही कुसंग में रहने वाली आत्माओं का मायावी रंग भी छिप नहीं सकता।" अ.बापदादा 19.4.73

"चाहे मन्सा संकल्प में, चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से माया का जरा भी इफेक्ट होने का कारण डिफेक्ट होता है। ... संगदोष, अन्नदोष न हो, उसके तरीके जानते हो तो अपने को इफेक्ट-प्रूफ भी कर सकते हो। ... अगर सदा ज्ञान अर्थात् सेन्स में रहे तो सेन्सीबुल कभी किसके इफेक्ट में नहीं आता है।" अ.बापदादा 26.6.72

"अगर बुद्धि की लगन सदा एक के संग में है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता। बुद्धि की लगन कम होने का कारण अनेक प्रकार के संग के आकर्षण अपनी तरफ खींच लेते हैं।"

अ.बापदादा 22.6.71

"कई प्रकार के आकर्षण पेपर के रुप में आयेंगे लेकिन आकर्षित न होना। ... माया संकल्पों के रुप में भी अपने संग का रंग लगाने की कोशिश करती है। तो इस व्यर्थ संकल्पों के वा माया के आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना।" अ.बापदादा 11.6.71

"बुरा न देखना, न सुनना, न बोलना, न सोचना। अगर इस आज्ञा को सदैव स्मृति में रखेंगे तो फिर सदा हंस बनकर बाप जो सर्व गुणों का सागर है, उस सागर के किनारे पर सदैव बैठे रहेंगे।" अ.बापदादा 11.6.71

"तो सदा संगदोष से बचना है और ईश्वरीय संग में रहना है। एक संग छोड़ना है और एक संग जोड़ना है। ईश्वरीय संग सिर्फ शरीर से नहीं होता लेकिन बुद्धि द्वारा भी ईश्वरीय संग में रहना है।" अ.बापदादा 11.6.71

"अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जाएंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा।"

अ.बापदादा 25.3.71

"वृति और स्मृति दोनों ही पुरूषार्थ में आगे बढ़ने में सहयोगी होते हैं। स्मृति बनती हैं संग से और वृति बनती है वातावरण व वायुमण्डल से।... तो आप लोगों को अमृतवेले से लेकर रात तक सारा दिन यही श्रेष्ठ संग हैं, शुद्ध वातावरण है और शान्त वायुमण्डल है।... तो स्मृति और वृति सहज ही श्रेष्ठ हो सकती है।" अ.बापदादा 20.2.74

"होली अर्थात् पवित्र और हिन्दी में हो ली अर्थात् बीती सो बीती। ... ऐसी बुद्धि वाले सदा होली अर्थात् रुहानी रंग में रंगे हुए रहते हैं, सदा ही बाप के संग के रंग में रंगे हुए हैं।"

अ.बापदादा 6.12.87

"तुम हो अभी संगमयुग पर, पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। विकारी पतित मनुष्यों से तुम्हारा कोई कनेक्शन नहीं है। हाँ, अभी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है, इसलिए कर्म सम्बन्धों से भी दिल लग जाती है। ... बाप से लव नहीं, लव सारा मित्र-सम्बन्धियों में चला जाता है। ... कहाँ वह जंक खाया हुआ संग और कहाँ यह संग।" सा.बाबा 23.9.05 रिवा.

"ब्राह्मण जीवन में ऐसे पवित्र बनते हो जो शरीर और प्रकृति को भी पवित्र बना देते हो। ... सबसे अच्छे ते अच्छा रंग कौनसा है? बाप के संग का रंग। जैसा संग होता है, वैसा रंग लगता है। ... बाप के संग में रहो तो रंग आप ही लग जायेगा।" अ.बापदादा 7.3.93

"सिवाए ज्ञान के और कुछ सुनाते हैं तो समझो - यह हमारा दुश्मन है। हमको दुर्गति में ले जाते हैं। ... तुमको एक बाप से ही सुनना है। ... बाप आये हैं मनुष्य से देवता बनाने तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए।" सा.बाबा 21.03.06 रिवा.

"यह ज्ञान और विज्ञान है - होली और धूरिया। ... बाबा ने तुमको यह होली और धूरिया खिलाया। बाकी रंग आदि लगाना तो उन मनुष्यों का काम है। कोई किसकी ग्लानि सुनाये तो सुनना नहीं चाहिए।" सा.बाबा 15.03.06 रिवा.

"अपनी कमजोरी मुश्किल बना देती है, बाकी मुश्किल है नहीं। कमजोर क्यों होते हैं क्योंकि कोई न कोई विकारों के संगमदोष में आ जाते हैं। सत का संग किनारे हो जाता है और दूसरा संगदोष लग जाता है।" अ.बापदादा 4.12.91 पार्टी 2

श्रीमत और बांधेली जीवन

बांधेलियों की उन्नति और बन्धन मुक्त होने के लिए भी बाबा ने अनेक प्रकार की श्रीमत दी है, जिसका पालन करके वे बन्धनमुक्त हो सकती हैं।

"बांधेली हैं। वास्तव में उनमें अगर ज्ञान की पराकाष्ठा हो जाये तो कोई भी उनको पकड़ न सके। परन्तु मोह की रग बहुत है। ... शरीर सहित सबको भूल जाना है, अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना है।" सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

"जो सच्चे बच्चे होते हैं, उनकी अवस्था पक्की रहती है, जरा भी विकार की तरफ ख्याल नहीं जाता है। ऐसे बच्चों पर अगर कोई जबरदस्ती जुलुम करते हैं तो उसका पाप उन पर नहीं चढ़ता है।... जितना जास्ती मारेंगे, तुम और ही नष्टोमोहा होती जायेंगी। मार भी अच्छा पद बना लेती है। ... ये सितम भी कर्मभोग हैं। पुरुष, स्त्री को मारता है, ऐसे ही कोई मार सकता

है क्या ? तुमने भी उनको मारा होगा, वह हिसाब-किताब चुक्तू हो रहा है। यह सब कर्मों का हिसाब-किताब है। ... अब तुम श्रीमत पर श्रेष्ठ कर्म कर रहे हो। सबसे श्रेष्ठ कर्म है सबको बाप का परिचय देना।" सा.बाबा 30.6.02 रिवा.

"बाप बच्चों को युक्तियां तो बहुत बताते हैं। तुम अपने पति को बोलो - बाबा कहते हैं बच्चे काम महाशत्रु है, इन पर जीत पहनो। माया जीते जगतजीत बनो। अब हम स्वर्ग की मालिक बनें या तुम्हारे कारण अपवित्र बन नर्क में जायें। बहुत प्यार और नम्रता से समझाओ।"

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"बांधेलियाँ कितनी मार खाती हैं, तड़फती हैं फिर भी याद में रह अच्छा उठा लेती हैं। उनका पद भी ऊंच बन जाता है। ... सब एक जैसे हो न सकें। बांधेलियाँ आदि बाहर में रहकर भी अच्छी कमाई करती हैं।" सा.बाबा 23.10.05 रिवा.

"बहुत बच्चियां कहती हैं - बन्धन है। अरे, बन्धन तो सारी दुनिया को है। बन्धन को युक्ति से काटना है। समझो कल हम मर पड़ते हैं, फिर बच्चों को कौन सम्भालेंगे ? जरूर कोई न कोई समम्भालने वाले निकल पड़ेंगे। ... तुम्हारा ये मरजीवा जन्म है अर्थात् तुम जीते जी मर गये... जरूर कोई नर्स रखनी पड़े। ... मित्र-सम्बन्धियों का भी उद्धार करो।"

सा.बाबा 17.12.05 रिवा.

"बाबा राय देते हैं साक्षी होकर बाबा की याद में थोड़ी पूजा आदि बाहर से कर दो।... अन्दर तुमको शिवबाबा को याद करना है। अगर कोई तंग करते हैं तो बाहर से थोड़ी पूजा करके दिखाओ, तो वे खुश हो जायेंगे। ... दोनों तरफ तोड़ तो निभाना है।"

सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

"अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। बाप कहते - बच्चे थोड़ा सहन करना पड़ेगा। तुम अपने बाप और वर्से को याद करते रहो। मार खाने के समय भी बुद्धि में याद करो - शिवबाबा। ... श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मत है ही एक बाप की।" सा.बाबा 16.6.06 रिवा.

श्रीमत और व्यक्तिगत जीवन

ज्ञान-सागर परमात्मा जीवन के हर कर्म के लिए मुरली में श्रीमत दी हुई है परन्तु यह भी स्मृति में रखना है कि बाबा ने किसी-किसी को उसकी विशेष परिस्थिति के अनुसार अलग भी श्रीमत दी हुई और उसका भी कहाँ-कहाँ मुरलियों में वर्णन है, इसलिए उस व्यक्ति की देश-काल-परिस्थिति को भी ध्यान में रखकर उसको समझना है और उस पर चलना है।

कहीं-कहीं बाबा ने जीवन रक्षा के लिए खान-पान के विषय में श्रीमत दी हुई है परन्तु वह जीवन रक्षा के समय की बात है, साधारण और सामान्य परिस्थिति के लिए नहीं है।

किसी को व्यक्तिगत रूप में दी गई श्रीमत को स्वयं प्रति लगाते समय उस व्यक्ति के देश-काल-परिस्थिति को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए, विचार करना चाहिए परन्तु सार्वजनिक रूप से बाबा ने मुरली में जो श्रीमत दी है, उसको पालन करने में किसी प्रकार के विचार की भी आवश्यकता नहीं है।

श्रीमत और कुमार-कुमारी जीवन

बाबा ने जो ज्ञान दिया है या श्रीमत दी है, उसके अनुसार हम जहाँ खड़े हैं, वहाँ से ही हमारे जीवन में पवित्रता की धारणा हो और हमारा पुरुषार्थ सही हो तब ही हम श्रेष्ठ पद पा सकते हैं। यदि कोई कुमार-कुमारी जीवन में बाबा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो उसके लिए कुमार-कुमारी जीवन ही श्रेष्ठ है। कुमार-कुमारी जीवन में ज्ञान लेने के बाद यदि कोई शादी करता है और पवित्र रहता है, तो भी वह यथार्थ जीवन नहीं है, श्रीमत के अनुरूप जीवन नहीं है। भले वह गन्धर्वी विवाह ही क्यों न हो, बाबा उसको दूसरे नम्बर पर रखता है क्योंकि उसमें भी नाम-रूप की बीमारी तो लग ही जाती है, वह अधर कुमार-कुमारी ही कहा जायेगा। इसीलिए बाबा ने एक मुरली में कहा है कि गन्धर्वी विवाह भी एक कमजोरी है। भले ही ज्ञान में आने के बाद जो शादी करके गृहस्थ में पवित्र रहते हैं, बाबा उन्होंकी महिमा भी करता है क्योंकि न से वह भी अच्छा है और बाबा को तो सबको ही पावन बनाना है।

"कई कुमारियाँ अथवा कुमार कहते हैं - बाबा मात-पिता बहुत नाराज होते हैं शादी न करने पर। बाबा कहते हैं जाकर शादी करो। पूछते हो ना, तो खुद तुम्हारी दिल है। ... बाबा की याद में तुम्हारा गला भी कट जाये तो भी तुम बहुत ऊंच पद पा लेंगे। मार से डरना नहीं है।"

सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

"श्रेष्ठ कुमारियां श्रेष्ठ काम करेंगी ना! सबसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य है बाप का परिचय दे बाप का बनाना। ... तो अपने को श्रेष्ठ कुमारी, पूज्य कुमारी समझो।" अ.बापदादा 17.5.83

"साहस से सामना करने के लिए हिम्मत भी पहले से ही अपने में रखनी है। ... कुमारियों को शीतला के साथ काली भी बनना है। ... काली रूप होंगी तो कभी भी किस पर बलि नहीं चढ़ेंगी। बल्कि जिसके ऊपर आप सभी बलि चढ़ी हो, उन पर ही सभी को बलि चढ़ाना है।"

अ.बापदादा 28.5.70

"अगर संगदोष में आ गई तो दूर हो जायेंगी। फिर न निराकारी वतन में, न अभी संगमयुग में, न भविष्य में पास रह सकेंगी। एक संगदोष तीनों लोकों से दूर हटा देता है। एक संगदोष से बचने से तीनों लोकों के तीनों कालों में बाप के समीप रहने का भाग्य प्राप्त कर सकती हो।"

अ.बापदादा 11.6.71

"तुम कुमारियों को कितना नाम बाला करना चाहिए। तुमने श्रीमत पर राजाई स्थापन की थी। ... इस कब्रस्तान से दिल नहीं लगानी है। हम तो बाप से वर्सा ले रहे हैं। पुरानी दुनिया से दिल लगाना माना जहन्नुम में जाना।" सा.बाबा 6.9.05 रिवा.

"कुमारियां तो गृहस्थ में गई ही नहीं हैं... मनुष्य अधरकुमारी का अर्थ भी नहीं समझते। अभी तुम जानते हो कन्या पवित्र है और अधर कन्या उनको कहा जाता है जो अपवित्र बनने के बाद फिर पवित्र बनती हैं।" सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

"जहाँ भी रहो, वहाँ सदा अपने को पूज्य महान आत्मा समझकर चलना। न आपकी दृष्टि किसी में जाए, न और किसी की दृष्टि आप पर जाये। ऐसी पूज्य आत्मा समझकर चलना। पूज्य आत्मा की स्मृति में रहने वाली कुमारियों के तरफ किसी की भी ऐसी दृष्टि नहीं जा सकती है।" अ.बापदादा 19.5.05

"कुमारियों को तो इस सेवा में लग जाना है। कुमारी की कमाई माँ-बाप नहीं खाते हैं। परन्तु आजकल भूखे हो गये हैं तो कुमारियों को भी कमाना पड़ता है।"

सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

"कुमारियां ...अगर मां-बाप कहे आओ तो क्या करेंगी ? अगर अपनी हिम्मत है तो कोई किसको रोक नहीं सकता है। अगर थोड़ा-थोड़ा आकर्षण होगा तो रोकने वाले रोकेंगे।"

अ.बापदादा 31.12.91

"कुमारियों का नाम भी गाया हुआ है। देहली-बाम्बे में जो अच्छी-अच्छी कुमारियां हैं, पढ़ी-लिखी हैं, उनको तो खड़ा हो जाना चाहिए। ... अगर कुमारियां खड़ी हो जायें तो नाम बाला हो जाये। ... कुमारियां शादी कर काला मुंह कर लेती तो सबके आगे झुकना पड़ता है। ... आजकल फैशन में ही कुमारियां रहती हैं।" सा.बाबा 27.4.06 रिवा.

"कुमारी या कुमार जीवन बहुत श्रेष्ठ जीवन है लेकिन ब्रह्माकुमार हैं तो। जो सदा खुश रहते हैं, वे ब्रह्माकुमार हैं। ... पाण्डवों को अपना नशा है, अपनी खुशी है। पाण्डव सदा बाप के साथी दिखाते हैं। पाण्डवों ने कभी साथ नहीं छोड़ा, अन्त तक साथ निभाया।"

अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 6

"कुमारियां ताजधारी तो अच्छी लग रही हो। अभी फॉरेन वाली कुमारियों का झुण्ड इण्डिया में ऐसी कमाल करके दिखाओ, कुछ प्रत्यक्षता करके दिखाओ ... उनका फाइल बनाओ, जो यहाँ के वी.आई.पी. को दिखायें कि इतनी कुमारियां और कुमार परिवर्तन हुए हैं।... क्योंकि बापदादा का, ब्रह्मा बाप का आदि से यह संकल्प रहा है कि विदेश वाले देश को जगायेंगे।"

अ.बापदादा 25.2.06 डबल विदेशी कुमारियां

"बाकी कन्याओं के लिए तो बाबा कहते हैं कि तुम यह ईश्वरीय सर्विस करो। ... कन्या वह जो 21 कुल का उद्धार करे। ... विचार सागर मन्थन भी करना है, साथ-साथ शिवबाबा से बुद्धि का योग भी लगाना है। याद से ही कट उतरनी है।" सा.बाबा 7.4.06 रिवा.

"कुमारी वह जो 21 कुल का उद्धार करे। यह तुम्हारा ही गायन है। तुम कुमारियां हो, गृहस्थी नहीं हो। भल बड़े हैं लेकिन मरजीवा बन, सब बाप के बच्चे-बच्चियां बने हो।"

सा.बाबा 17.03.06 रिवा.

"लौकिक बाप शादी के लिए कहते हैं, तुम नहीं करते हो क्योंकि तुम जानते हो कि अब मृत्युलोक का अन्त है। शादी बरबादी ही होगी, फिर हम पावन कैसे बनेंगे। इससे तो हम क्यों न भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा में लग जायें।" सा.बाबा 11.03.06 रिवा.

"कुमारियां ...अगर मां-बाप कहे आओ तो क्या करेंगी ? अगर अपनी हिम्मत है तो कोई किसको रोक नहीं सकता है। अगर थोड़ा-थोड़ा आकर्षण होगा तो रोकने वाले रोकेंगे।"

अ.बापदादा 31.12.91

"कन्या सौ ब्राह्मणों से उत्तम गाई हुई है, यह महिमा क्यों है ? क्योंकि जितना स्वयं श्रेष्ठ होंगे, उतना ही औरों को भी श्रेष्ठ बना सकेंगे। ... कुमारी ही पूजी जाती है। कुमारी जब गृहस्थी बन जाती है तो सबके आगे सिर झुकाती है। तो सदा अपने को ऐसे भाग्यवान समझ आगे बढ़ते चलो।" अ.बापदादा 22.1.88 कुमारियों से

"अगर सगाई की हुई है, राज़ी करना है ... तुम उनसे लिखा लो, हमारी आज्ञा पर पवित्र रहना पड़ेगा। ... अपनी हिम्मत चाहिए। बाबा युक्तियां बता देते हैं। ... हमको बाप की श्रीमत पर चलना है।" सा.बाबा 16.02.06 रिवा.

"लौकिक बाप कहते शादी कर पतित बनो, पारलौकिक बाप कहते हैं - पावन बनो। ... जबकि विनाश सामने खड़ा है, अब क्या करना चाहिए ? जरूर पारलौकिक बाप की मत पर चलना चाहिए ना।" सा.बाबा 13.02.06 रिवा.

"वास्तव में कन्यायें बन्धनमुक्त होती हैं, वे इस रुहानी पढ़ाई में लग जायें तो बहुत अच्छा उठा सकती हैं। उनको कमाई करने की दरकार नहीं है। कुमारी अगर अच्छी रीति से यह नॉलेज

समझ जाये तो सबसे अच्छी है। जो सेन्सीबुल होगी, वह इस रुहानी कमाई में लग जायेगी।... कुमारियां श्रीमत पर चलें तो बहुत फर्स्टक्लास हो जायें।" सा.बाबा 19.01.06 रिवा.

"कुमार-कुमारियां तो जैसे सन्यासी हैं, उनमें विकार हैं ही नहीं।... तुमको तमोप्रधान जिस्मानी श्रृंगार ज़रा भी नहीं करना है। ... बाप तुमको स्वर्ग की परियाँ बनाते हैं।"

सा.बाबा 12.6.06 रिवा.

"कुमारियां तो हैं ही कन्हैया की। बस एक शब्द याद रखना - सबमें एक। एक मत, एक रस, एक बाप।" अ.बापदादा 11.8.88

"कुमारियां अर्थात् होवनहार टीचर्स, तब कहेंगे ब्रह्माकुमारियां हैं। अगर होवनहार सेवाधारी नहीं तो पाई-पैसे वाली कुमारी है। ... बापदादा को हंसी आती है कुमारियों के ऊपर। टोकरी का बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाती हैं लेकिन भगवान के घर में अर्थात् सेवा-स्थानों में रहने की हिम्मत नहीं रखती हैं।" अ.बापदादा 27.11.89

"कुमारियां लक्ष्य रखो कि विश्व की आत्माओं को बाप की पालना दें।... अनेकों की दुआयें लेना, यह कमाई कितनी बड़ी है। ... यह कमाई अनेक जन्मों के लिए साथ जायेगी। वे पांच-दस लाख तो घर में या बैंक में रह जायेंगे। लक्ष्य सदा ऊंचा रखा जाता है, साधारण नहीं।"

अ.बापदादा 27.11.89

"बच्चों को हर प्रकार की शिक्षा मिलती रहती है। हर एक के कर्मों का हिसाब है। कन्याओं के कर्म अच्छे हैं। ... कन्यायें फ्री बड्र्स हैं। परन्तु खराब संग में नुकसान हो जाता है। ... कन्यायें अच्छी सेवा कर सकती हैं।" सा.बाबा 17.8.06 रिवा.

"कुमारी रहना अच्छा है। नहीं तो अधरकुमारी नाम पड़ जाता है। ... अधरकुमारी बनने का ख्याल भी क्यों करना चाहिए। कुमारियों का नाम बाला है। बाल ब्रह्मचारी हैं। ... कुमारी सेवा पर निकल सकती है। ... कुमारों को भीष्म पितामह जैसा बनना है।"

सा.बाबा 14.8.06 रिवा.

"कुमारियों को मधुवन अच्छा लगता है, बाप से प्यार भी है लेकिन समर्पण होने में सोचती हैं। जो स्वयं ऑफर करता है, वह निर्विघ्न चलता है और जो कहने से चलता है, वह रुकता है, फिर चलता है। ... सोचती हैं - इससे तो बाहर रहकर सेवा करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रहकर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना, इसमें अन्तर जरूर है।"

अ.बापदादा 5.12.89

"कुमारियां सोचती हैं इससे तो बाहर रहकर सेवा करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रहकर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना, इसमें अन्तर जरूर है। जो समर्पण के महत्व को

जानते हैं, वे सदा ही अपने को कई बातों से किनारे होकर आराम से आ गये हैं। ... टीचर्स अपने महत्व को अच्छी रीति जानती हो ना!" अ.बापदादा 5.12.89

"कुमार सेवा के क्षेत्र पर खुद समस्या नहीं बनो लेकिन समस्या को मिटाने वाले बनो, फिर देखो कुमारों की बहुत वेल्यू होगी।... हिम्मते बच्चे मदद दे बाप और सारा परिवार आपके साथ है।" अ.बापदादा 27.11.89

"कुमार अर्थात् न तो समस्या बनना है और न समस्या में हार खानी है। कुमार, कुमारियों से भी आगे जा सकते हैं लेकिन निर्विघ्न कुमार हों तो। ... ऐसे भी कुमार हैं जो बाप के सिवाए न कम्पनी बनाने वाले हैं, न कम्पेनियन बनाने वाले हैं। सदा बाप की कम्पनी में रहने वाले कुमार सदा सुखी रहते हैं।" अ.बापदादा 27.11.89

"कुमार पाण्डव भवन (जहाँ कुमार मिलकर रहें) बनाकर सफल रहें, ऐसा कोई करके दिखाओ। ... साथी सिर्फ फीमेल साथी ही नहीं चाहिए, कुमार आपस में भी मिलकर रह सकते हैं। लेकिन एक-दो के निर्विघ्न साथी होकर रहें, अभी वह जलवा नहीं दिखाया है।"

अ.बापदादा 27.11.89

"जो शिवबाबा के बच्चे हैं, जिनको यह ज्ञान है, वे अपने बच्चों को भी विकारों से बचाते रहेंगे। ... कन्याओं को तो पहले बचाना चाहिए। ... कन्याओं का न्यु ब्लड है, किसको भी ज्ञान का पत्थर मार सकती हैं। ... अभी माता गुरु का सिलसिला चलता है। बाप आकर माताओं पर ज्ञान का कलष रखते हैं।" सा.बाबा 21.9.06 रिवा.

"बापदादा हर कुमारी में कमाल करने वाली शुभ भावना, शुभ कामना रखते हैं। क्योंकि कुमारियां बहुत से बन्धनों से फ्री हैं।... कुमारियों को अपने आपको निर्बन्धन बनाने की विशेष सेवा करनी है।... बापदादा ने सदैव कहा है फॉलो फादर-मदर, न कि कमजोर को फॉलो करो।" अ.बापदादा 9.1.96

"अपनी दृष्टि-वृत्ति द्वारा एक सेकण्ड में किसको भी बाप का परिचय दे सको। कुमारों को ऐसी सेवा करनी है। ... अगर आप ऐसे पक्के योगी बन गये तो थोड़े समय में आपका खाता भी उतना ही जमा हो सकता है। ... शरीर की तरफ स्वप्न मात्र भी संकल्प नहीं जाये। तो कुमार ऐसी कमाल करना।" अ.बापदादा 9.1.96

"तो कुमारियों को टोकरी वाली बनना है या ताज वाली बनना है? ... समझती हैं सेवाकेन्द्र पर पता नहीं क्या-क्या होगा, कैसे चलेंगे या नहीं चल सकेंगे ... कुमारियों पर तो सब युगों में से संगमयुग पर विशेष परमात्म-कृपा है। ... डरो नहीं, डरने के कारण अपनी परमात्म-कृपा का भाग्य नहीं गँवाओ।" अ.बापदादा 4.12.95

"युवा वर्ग का आना संस्था की शान है। ... अब युवा वर्ग ऐसी कमाल करके दिखाओ, जो बाप का नाम हर युवा की चलन से, परिवर्तन से दिखाई दे ... चेहरा औरों को फरिश्ता या दिव्य गुणधारीमूर्त दिखाई दे।" अ.बापदादा 4.12.95

"प्रजा बनाने से कुमार राजा बन जायेंगे। कुमारियों को दादी-दीदियां बनने दो और आप लोग राजा बन जाओ। ... एक भी वारिस क्वालिटी निकाल दिया तो महाराजा बन जायेंगे ... उसको देखकर अनेक आयेंगे। ... थोड़ा भी आकर्षित हुए तो ये ऐसी माया है, जो कहानी है गज को ग्राह ने खाया। खींच लेता है।" अ.बापदादा 25.11.95 कुमार

"कुमारियों को अपने जीवन का स्वयं ही स्वयं का मित्र बन निर्बन्धन बनाने में नम्बरवन जाना चाहिए। ... निर्बन्धन अर्थात् न मन का बन्धन, न सम्बन्ध का बन्धन।"

अ.बापदादा 16.11.95

"कुमार ... पवित्रता के लिए बिगड़ते हैं, वह बात अलग है लेकिन दिव्यगुणों की धारणा में आपका प्रभाव घर वालों के ऊपर पड़ना चाहिए।" अ.बापदादा 16.11.95

"कोई भी कुमारी किसके भी सामने जाये तो साधारण कुमारी नहीं दिखाई दे। पवित्रता की देवी अनुभव हो। ... हर कुमारी अपने को देवी स्वरूप अनुभव करे और दूसरों को भी अनुभव कराये। देवी के ऊपर कभी भी किसी की व्यर्थ नजर नहीं जा सकती।... अगर आपकी पवित्र दृष्टि है तो दूसरों के आसुरी संस्कार को समाप्त कर देगी।" अ.बापदादा 6.4.95

"यह है शान्ति की क्रान्ति। तो सभी कुमार सदा याद रखो कि हमारा हर कर्म विश्व-परिवर्तन के निमित्त है। ... जिस सेन्टर पर कुमार नहीं होते हैं, वहाँ सेवा के प्लेन कम बनेंगे। ... निर्विघ्न सेवाधारी कुमार। कुमार ही सेवा की शोभा हैं, इसलिए बापदादा को प्यारे लगते हैं।"

अ.बापदादा 31.3.95

"कुमारियों का बहुत बड़ा भाग्य है। ... कुमारियां अगर टीचर बन जाती हैं तो दादी-दीदी का टाइटिल मिल जाता है। ... दीदी बनना अर्थात् बड़े दिल से स्व का पुरुषार्थ करना और औरों को भी कराना।" अ.बापदादा 31.3.95

"जो गृहस्थ व्यवहार में रहते, यह सुनते-सुनाते हैं तो पुरानों से भी तीखे जा रहे हैं। ... तुम्हारा कोर्स है - गृहस्थ व्यवहार में रहते यह पढ़ना। इसमें कन्यायें बड़ी तीखी जानी चाहिए। ... यह लक्ष्मी-नारायण प्रवृत्ति मार्ग वाले राज्य करते थे।" सा.बाबा 29.5.06 रिवा.

"माया कभी भी न आये, इसका सहज साधन है कि सदा गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ में रहो। ... कुमारी जीवन में सफलता का आधार है - स्टूडेण्ट लाइफ।... बापदादा खुश होते हैं, जो कुमारियां हिम्मत रखकर सेवा में आगे बढ़ती हैं।" अ.बापदादा 5.12.94 कुमारियां

"अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते रहो। यहाँ कन्याओं के लिए बाप के पास सबसे जास्ती रिगार्ड है। कन्यायें कर्म-बन्धन से फ्री रहती हैं।... चैरिटी बिगन्स एट होम।"

सा.बाबा 30.9.06 रिवा.

श्रीमत और समर्पित जीवन

परमात्मा के ज्ञान को पाकर उनकी सेवा में समर्पित हो जाना सबसे श्रेष्ठ जीवन है परन्तु समर्पित होकर इस जीवन की महानता, दिव्यता सदा बुद्धि में रहे और हमारे पुरुषार्थ की लाइन सदा क्लियर रहे, हमारे जीवन में कोई असुरक्षा का संकल्प जाग्रत न हो, पुरुषार्थ ढीला न हो, कोई भी ऐसा कर्म न हो, जो समर्पित जीवन के विपरीत हो, ये जीवन सदा सफल हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

समर्पित होने के बाद यदि बुद्धि लौकिक सम्बन्धों में भटकती है, तो वह यथार्थ समर्पित जीवन नहीं है और वह कभी समर्पित जीवन का सच्चा सुख अनुभव नहीं कर सकता है। बाबा कहते हैं - वे और ही पाप के भागी बन जाते हैं क्योंकि यज्ञ का वातावरण खराब करते हैं।

"पूरा देही-अभिमानी तब बनेंगे जब कम्पलीट सरेण्डर होंगे। ... यह देह भी जैसे कि मेरी नहीं है, इनको मैं छोड़ देता हूँ। ... मेरा बन और सब से ममत्व मिटा दो। ... बाप सिर्फ एक्सचेन्ज करते हैं। बुद्धि से सब कुछ सरेण्डर करो।" सा.बाबा 27.6.06 रिवा.

"तन-मन-धन, समय और सम्बन्ध सब अर्पण।... मुख्य बात है ही मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्पों-विकल्पों को समर्पण करना।... जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, जो बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे वह श्रीमत के बिना नहीं करेंगे।"

अ.बापदादा 3.10.69

"जो बलि चढ़ जाता है, उसको रिटर्न में क्या मिलता है? बलि चढ़ने वालों को ईश्वरीय बल बहुत मिलता है। ... खुद को बदलकर औरों को बदलना है, यह है निश्चय की छाप।"

अ.बापदादा 28.9.69

"अपनी मूरत को देखने के लिए अपने पास दर्पण रखना चाहिए। ... जो अर्पणमय होगा, उनके पास ही दर्पण रहेगा। अर्पण नहीं तो दर्पण भी अविनाशी नहीं रह सकता। ... अव्यक्त मिलन का अनुभव भी वही कर सकता जो अव्यक्त स्थिति में होगा।"

अ.बापदादा 17.5.69

"आज वतन से दर्पण लाया है, सभी का अर्पणमय मुखड़ा देखने के लिए और दिखाने के लिए।... समर्पण किसको कहा जाता है?... उसमें तीन बातें देख रहे हैं। एक स्वभाव

समर्पण, दूसरा देह-अभिमान का समर्पण और तीसरा सम्बन्धों का समर्पण।”

अ.बापदादा 14.5.70

“जो जैसा कर्म करते हैं वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है। बाबा यह भी समझाते हैं कपड़े आदि कुछ भी चाहिए तो शिवबाबा के यज्ञ से लो। और कोई से लेंगे तो वह याद आयेगा, तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। इसमें लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए क्योंकि अभी हम वापस जा रहे हैं। ऐसा न हो कहीं दिल लग जाये और तकदीर बिगड़ जाये।” सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

“भल सरेण्डर हैं परन्तु जब तक पुण्यात्मा बन औरों को न बनायें तब तक ऊंच पद पा नहीं सकते। ... कल्याणकारी जरूर बनना है।” सा.बाबा 14.9.05 रिवा.

यज्ञ में धन समर्पण करने वालों के लिए - समर्पण अर्थात् अपनापन निकल जाये, कब पुन: वापस लेने का संकल्प न आये, कब ये न आये कि हम शिवबाबा को देते हैं। सदा बुद्धि में रहे कि हम शिवबाबा से लेते हैं अर्थात् शिवबाबा हमको कई गुणा करके देते हैं।

“बलिहार अर्थात् सर्वन्श समर्पित। चाहे देहभान में लाने वाले विकारों का वंश हो, चाहे देह के सम्बन्ध का वंश, चाहे देह के विनाशी पदार्थों की इच्छाओं का वंश।... मधुबन में रहना, सेन्टर पर रहना तो समर्पण की एक सीढ़ी है लेकिन समर्पण की मंजिल है तीनों ही वंश सहित अर्पित।” अ.बापदादा 27.12.87

“समर्पित अर्थात् न हद का मैंपन और न हद का मेरापन।... एक साक्षी-दृष्टा बनकर अपने आपको सर्टीफिकेट दो, दूसरा जिन साथियों के साथ कार्य करते हो उनका सर्टीफिकेट चाहिए और तीसरा दादियों का सर्टीफिकेट चाहिए। चौथा बाप का चाहिए क्योंकि बाप सबके मन की गति को देखते हैं।” अ.बापदादा 4.9.05 समर्पित भाई-बहनें

“चाहे प्रवृत्ति में हो, चाहे सेन्टर पर हो लेकिन दिल से कहा - “मेरा बाबा” तो बाबा ने अपना बनाया। यह दिल का सौदा है। मुख का स्थूल सौदा नहीं है। सरेण्डर माना श्रीमत के अण्डर रहने वाले।” अ.बापदादा 20.3.87

“मधुबन का हीरो एक्टर है, सदा जीरो याद है। ... दादियों की विशेषता - बाप की श्रीमत पर हर कदम उठाना, मन को भी बाप की याद और सेवा में समर्पण करना। ... मन का झण्डा शिवबाबा में एकाग्र हो जाये।” अ.बापदादा 3.2.06 दादी जी से

“कदम-कदम पर सर्जन से राय लेनी है। किसको लौकिक घर से कुछ मिलता है, बाबा कहते - भल पहनों, फिर रेस्पॉन्सिबुल बाबा हो गया। ... श्रीमत पर चलने में हर हालत में फायदा है।” सा.बाबा 29.3.06 रिवा.

"इसमें माया के तूफान की तो बात ही नहीं है। समझो यह मेरी भूल है, मैं श्रीमत पर नहीं चलता हूँ। ... नहीं चल सकते हो तो गृहस्थ व्यवहार में रहते पुरुषार्थ करो। अगर यहाँ रहते डिस्सर्विस की तो जो कुछ थोड़ा रहा हुआ होगा, वह भी खत्म हो जायेगा। ... बाबा सब कायदे-कानून बता देते हैं, जिससे कोई ट्रिब्युनल में यह न कहे कि हमको पता थोड़ेही था।"

सा.बाबा 20.3.06 रिवा.

"अभिमान को ही स्वमान समझ लेते हो लेकिन इस अल्पकाल की विजय में बहुत काल की हार समाई हुई है। ... इसलिए देहाभिमान के अंशमात्र सहित समर्पित हो। इसको कहा जाता है शिव बाप के ऊपर बलि चढ़ना।" अ.बापदादा 1.3.92

"समर्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ स्थित हो जायें।... इसलिए ये अभ्यास करो कि जिस समय जो चाहें वह स्थिति हो। नहीं तो धोखा मिल जायेगा।... सेवा का भी संकल्प नहीं। अगर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं तो रूलिंग पावन आ नहीं सकती।"

अ.बापदादा 13.12.89

श्रीमत और मधुबन (पाण्डव भवन) एवं मधुबन निवासी

मधुबन अर्थात् जहाँ शिवबाबा ने साकार बाबा के तन द्वारा स्वर्ग की स्थापना का कार्य किया। बाबा ने मधुबन की बहुत महिमा की है और मधुवन वासियों को श्रीमत देते हैं कि तुमको ये स्वाभिमान होना चाहिए कि हम परमात्मा की कर्मभूमि के निवासी हैं और अपनी अवस्था ऐसी रखनी चाहिए कि दूसरे आकर तुमसे प्रेरणा लें, इस भूमि का महत्व अनुभव करें। भक्त कवि तुलसीदास ने भी लिखा है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ जहाँ नाथ पांव तुम धारा। मधुवन को बाबा वरदान भूमि कहते हैं, जहाँ आने से ही हर आत्मा ईश्वरीय वरदानों को अनुभव करती है। यहाँ रहने वाले बच्चों की स्थिति भी वरदानी होनी चाहिए।

समर्पित जीवन का केन्द्रबिन्दु है मधुवन, जहाँ से समर्पित जीवन की यथार्थ झलक अनुभव होती है। समर्पित जीवन क्या है और समर्पित जीवन में हमारा कार्य-व्यवहार, मानसिक स्थिति, बोल-चाल, सम्बन्ध-सम्पर्क कैसा होना चाहिए, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

"मधुबन अर्थात् जितना स्नेही (मधु) होंगे, उतना बेहद का वैराग्य (वन) होगा। तो नम्बरवन टीचर बन सकते हो क्योंकि जैसी अपनी धारणा होगी वैसे औरों को अनुभव में ला सकेंगे। इन दोनों गुणों की अपने में धारणा करनी है। ... जब स्वयं सफलता स्वरूप बनेंगे तब दूसरी आत्माओं को भी सफलता का मार्ग बता सकेंगे।" अ.बापदादा 26.1.70

“मधुबन है सर्व प्राप्तियों की खान। ... एक-एक सेकण्ड में पदमों की कमाई कर सकते हो। पदमापदम भाग्यशाली तो हो लेकिन इस भाग्य को सदा कायम रखने के लिए पुरुषार्थ सदा सम्पूर्णता का रखना।” अ.बापदादा 23.1.70

“आत्मा की असली स्थिति क्या है ? ... वैसे अपनी असली स्थिति का अनुभव करने के लिए यहाँ आये हो। मधुवन में आये हो उस स्थिति की टेस्ट करने। टेस्ट करने के बाद उसे सदा काल के लिए अपनाने का पुरुषार्थ करना है।” अ.बापदादा 23.1.70

“हर एक का चेहरा चैतन्य म्युजियम बन जाये। ... आपके चेतन्य म्युजियम में तीन मुख्य चित्र हैं। भृकुटी, नयन और मुख। उन द्वारा ही आपकी स्मृति, वृत्ति, दृष्टि और वाणी का मालूम पड़ता है।” अ.बापदादा 6.12.69

“इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा यहाँ पांव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर। ... इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता। भले कोई अपना शीश भी उतार कर रख दे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। आगे चलकर जब लोगों का रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम पड़ेगा। ... ड्रामा में इतने ऊंच भाग्य को सदैव सामने रखना।” अ. बापदादा 6.12.69

“मधुबन के फूलों में क्या विशेषतायें होनी चाहिए ? पहली विशेषता है मधुरता। ... मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे। ... तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए, फिर इससे सारी बातें आ जायेंगी। ... ये दो विशेषतायें धारण करनी है - मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहेंगे स्नेह और शक्ति।” अ. बापदादा 9.11.69

“मधुवन निवासियों से मधुबन की शोभा है। फिर भी बहुत लकी हो। अपने को जानो या न जानो फिर भी लकी हो। स्थान के महत्व को, संग के महत्व को, वायुमण्डल के महत्व को भी जानो तो एक सेकेण्ड में महान बन जायेंगे।” अ.बापदादा 22.11.72 मधुबन वासियों से

“आप सभी से श्रेष्ठ स्थान पर हो तो इसका भी असर स्थिति पर होना चाहिए। श्रेष्ठ वरदान भूमि के निवासी हैं तो अपनी स्थिति भी सदा सभी को देने वाली बनानी चाहिए।”

अ.बापदादा 28.7.71

“इस मधुबन का नाम है महायज्ञ, परिवर्तन भूमि और वरदान भूमि। तो जैसा नाम वैसा काम करो।... इस भूमि के महत्व को भी अच्छी रीति जानो। इस भूमि को साधारण भूमि नहीं समझना।... महान बनना अर्थात् महत्व को जानना।” अ.बापदादा 24.10.75

“मधुबन की क्या महिमा करते हो ? कहते हो कि यह परिवर्तन भूमि है। आप सभी परिवर्तन भूमि या वरदान भूमि में आये हुए हो। स्वयं में व अन्य में वरदान का अनुभव करते हो ? यहाँ

आना अर्थात् वरदान पाना, परिवर्तन करना। ... ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने संस्कार भस्म हो जाएँ।"

अ.बापदादा 18.1.75

"बाप समझाते - कोई बात में रूठना नहीं है, शक्ल मुर्दे जैसी नहीं करनी है।... यहाँ रहते भी बहुतों की बुद्धि बाहर में भटकती है, वे तो जैसे खोखले हैं।" सा.बाबा 17.10.05

"अभी मधुबन निवासियों को लक्ष्य रखना है बाप जैसी चलन हो, चेहरा हो, तभी बाप प्रत्यक्ष होगा। ... सेवा का बल चला रहा है लेकिन चारो ही सब्जेक्ट में अपने को चेक करो, फिर अपने को सर्टीफिकेट दो। अभी बाप ने तो आपकी आशा पूर्ण की, अभी बाप की आशा पूर्ण करना।" अ.बापदादा 4.9.05 समर्पित भाई-बहनें

"एक-एक कदम सामने लाओ, उठना-बैठना, चलना, बोलना, सम्बन्ध-सम्पर्क में आना - सब में ब्रह्मा बाप के समान है। ... मधुवन वालों को इसमें सर्टीफिकेट लेना है। ... ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि में रहने वालों के प्रति यह विशेष श्रेष्ठ आश है कि मधुवन की एक-एक ब्राह्मण आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा हर कर्म में ब्रह्मा बाप के कर्म का दर्पण हो।"

अ.बापदादा 24.9.92 मधुबन वालों से

"जो सदा बिजी रहते हैं, वे बहुत लकी हैं, इसलिए अपने को फ्री नहीं करना। ... बिजी रहना खुशनसीबी की निशानी है।" अ.बापदादा 24.9.92 मधुबन वालों से

"मधुबन है लाइट-हाउस, माइट-हाउस ... अव्यक्त स्थिति और अव्यक्त चलन की लाइट-माइट चारों ओर फैलाओ। ... जितने साधन मधुबन में हैं, उतने सेवाकेन्द्रों पर नहीं और जैसा साधना का वायुमण्डल मधुबन में है वैसा सेवाकेन्द्रों पर बनाना पड़ता है।... अलौकिक जीवन बनाने के लिए बोल में, कर्म में, सब में कम खर्च बाला नशीन बनना है।"

अ.बापदादा 18.01.93 पार्टी 6

"मधुबन वालों के लिए बाबा कहते हैं जो चुल पर सो दिल पर। ... लोग तो मधुबन में आते हैं और आप मधुबन में रहते हैं। सिर्फ अलबेले नहीं बनना। ... मेरा बाबा कहते, वह मेरा बाबा चेहरे और चलन से दिखाई दे।" अ.बापदादा 03.02.06 मधुबन वाले

"ब्रह्मा बाप का एक-एक कदम सामने लाओ, उठना-बैठना, चलना, बोलना, सम्बन्ध-सम्पर्क में आना - सब में ब्रह्मा बाप के समान है।... मधुबन वालों को इसमें सर्टीफिकेट लेना है।... ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि में रहने वालों के प्रति यह विशेष श्रेष्ठ आश है कि मधुबन की एक-एक ब्राह्मण आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा हर कर्म में ब्रह्मा बाप के कर्म का दर्पण हो।"

अ.बापदादा 24.9.92 मधुबन वालों से

"मधुवन निवासी अर्थात् न सिर्फ मधुबन बल्कि विश्व की स्टेज पर संकल्प, बोल और कर्म में हीरो पार्टधारी। ... मधुबन सदा जीरो के साथ रहने वाले और सदा हीरो पार्ट बजाने वाले। ... जैसे मधुबन वाला बाबा मशहूर है ऐसे मधुबन वाले भी मशहूर हैं।"

अ.बापदादा 6.4.95

"मधुबन निवासियों के जैसे सेवा की सब्जेक्ट में अच्छे मार्क्स हैं, ऐसे ज्ञान-योग-धारणा की सब्जेक्ट में भी विशेष नम्बर लेवें। ... मधुबन वालों का खज़ानों की बचत का खाता नम्बरवन हो। ... मधुबन निवासी बनना भी एक्स्ट्रा भाग्य का मेडल है।... बापदादा भी मधुबन निवासियों के भाग्य को देख हर्षित होते हैं - वाह भाग्यवान, वाह।" अ.बापदादा 25.3.95

"मधुबन वाले सदा ही अपने को आधारमूर्त और उदाहरणमूर्त समझो। ... हर कर्म में, हर संकल्प में, हर बोल में आधारमूर्त हो। ... इतना बड़ा जिम्मेदारी का ताज मधुबन निवासियों को पड़ा हुआ है।" अ.बापदादा 9.1.95 मधुबन निवासी

"मधुबन निवासी अर्थात् जितना बाप से प्यार है, उतना ही सेवा से प्यार। मधुबन निवासी हर सेकण्ड सेवा की स्टेज पर रहते हैं।... मधुबन बाप की कर्मभूमि, चरित्रभूमि सो तपस्वी भूमि है।... मधुबन निवासी हैं मॉडल।... मधुबन में जिसको देखें, जब देखें, जहाँ देखें गुणमूर्त, शक्तिमूर्त, ज्ञानमूर्त देखें, साधारण नहीं।... जो भी कर्म करो पहले यह स्लोगन याद रखो कि जो कर्म हम करेंगे, वह सब करेंगे। तो स्वत: ही विशेष कर्म होगा।"

अ.बापदादा 1.2.94 मधुबन निवासी

श्रीमत, दैवी मत, आसुरी मत अर्थात् मनुष्य मत

श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत तीन प्रकार की मतों का विशेष गायन है, उनका यथार्थ राज़ परमात्मा ही बताते हैं। श्रीमत है एक परमात्मा की मत, जिससे ही आत्मा पावन बनती है। श्रीमत ही चढ़ती कला की मत है। दैवी मत और आसुरी मत दोंनो ही मनुष्य मतें हैं और दोनों ही उतरती कला की मतें हैं परन्तु दैवी मत में कोई पाप-कर्म नहीं होता है, इसलिए देवतायें सदा सुख-शान्ति में रहते हैं। आसुरी मत से पाप-कर्म होते हैं और आत्मा को पाप कर्मों के फलस्वरूप दुख भोगना होता है। दैवी मत वालों को इस जगत के समस्त भौतिक सुख होते हैं इसलिए उनको दुख की कोई महसूसता हो नहीं सकती। अभी संगमयुग पर देवी-देवतायें तो हैं नहीं, इसलिए दैवी मत मिल नहीं सकती। अभी संगमयुग पर हैं ईश्वरीय मत और आसुरी मत। ईश्वरीय मत से चढ़ती कला और आसुरी मत से गिरती कला होती है। अभी आत्मायें आसुरी सम्प्रदाय और आसरी मत को छोड़कर ईश्वरीय सम्प्रदाय के बनते हैं

और ईश्वरीय मत पर चलते हैं, जिस ईश्वरीय मत से आत्माओं और विश्व का कल्याण होता है।

"भगवानुवाच है भी गीता। ज्ञान का पुस्तक है गीता परन्तु भगवान कोई पुस्तक हाथ में उठाकर नहीं पढ़ाते हैं। यह तो डायरेक्ट भगवानुवाच है। ... इसको 84 के चक्र का नाटक कहा जाता है। यह बना-बनाया खेल है। ये बड़ी समझने की बातें हैं क्योंकि अभी ऊंच ते ऊंच भगवान की मत मिलती है।" सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

"सर्वशास्त्र शिरोमणी श्रीमद्भगवत गीता है ईश्वरीय मत की। ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़ एक ईश्वर ही बताते हैं, राजयोग की नॉलेज देते हैं। ... सतयुग-त्रेता है ज्ञान का फल, ऐसे नहीं कि वहाँ ज्ञान मिलता है। बाप आकर भक्ति का फल ज्ञान देते हैं। अब एक बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे, रचना के आदि-मध्य-अन्त को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे।" सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"गीता में भी है मन्मनाभव परन्तु बाप कोई संस्कृत में नहीं सुनाते हैं। बाप मन्मनाभव का अर्थ बताते हैं। देह सहित देह के सर्व धर्म छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो और मुझ बाप को याद करो।" सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

"अभी तुम बच्चों को श्रीमत मिल रही है, श्रेष्ठ बनने के लिए। मनुष्य मत क्या कहती है, ईश्वरीय मत क्या कहती है तो जरूर ईश्वरीय मत पर चलना पड़े।... तुम आसुरी मत पर थे, अभी तुमको ईश्वरीय मत मिलती है।" सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

"एक ईश्वर की मत को ही लीगल मत कहा जाता है, मनुष्य मत को इल्लीगल मत कहा जाता है। ... सबसे इल्लीगल काम है विकार का भूत। देहाभिमान का भूत तो सब में है ही।... बाप तो है विदेही, बच्चे भी विचित्र हैं। यह समझ की बात है। सा.बाबा 22.10.04 रिवा.

"बाबा अपना भक्ति मार्ग का अनुभव सुनाते हैं ... बुद्धि और तरफ क्यों जाती है ? आखरीन विनाश भी देखा, स्थापना भी देखी। साक्षात्कार की आश पूरी हुई, समझा अब नई दुनिया आती है, हम यह बनेंगे। बाकी यह पुरानी दुनिया तो विनाश हो जायेगी। पक्का निश्चय हो गया। ... यह हुई ईश्वरीय बुद्धि। ईश्वर ने प्रवेश कर यह बुद्धि चलाई। ज्ञान कलष माताओं को मिलता है, तो माताओं को ही सबकुछ दे दिया।'' सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

9"गाया जाता है - मनुष्य मत, ईश्वरीय मत, दैवी मत। अब तुम्हें मिलती है ईश्वरीय मत, जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ... अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जब तुमको श्रीमत मिलती है। सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

"श्रेष्ठ कर्म से श्रेष्ठ जीवन स्वत: ही बनती है, इसलिए हर कार्य के पहले अपनी चेकिंग करनी है कि वह कर्म श्रीमत के अनुसार है ?" अ.बापदादा 24.1.70

"एक बार अपनी कमियों को बाप के आगे रखने के बाद अगर दुबारा कर लिया तो क्षमा के सागर के साथ 100 गुणा सजा भी ड्रामा प्रमाण स्वत: ही मिल जाती है।... हर कार्य और संकल्प को अव्यक्त बल से अव्यक्त रूप द्वारा वेरीफाय कराओ। जैसे साकार में वेरीफाइ कराते थे।" अ.बापदादा 23.10.70

"इनकी एक्टिविटी का मैं ही रेस्पान्सिबुल हूँ। ... कदम-कदम ईश्वरीय डायरेक्शन समझकर चलेंगे तो कभी घाटा नहीं होगा। निश्चय में ही विजय है।" सा.बाबा 17.1.05 रिवा.

"तुमको एक बाप की मत पर ही चलना है। बी.के. की मत मिलती है, सो भी जांच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है ? अब तुम बच्चों को राइट और रांग की समझ मिली है।" सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

"अभी तुम ने अनेक मतों और ईश्वरीय मत को भी समझा है। कितना फर्क है। ... कोई भी दैवी मत वा मनुष्य मत से वापस नहीं जा सकते। दैवी मत से भी तुम उतरते ही हो क्योंकि कलायें कम होती जाती हैं। आसुरी मत से भी उतरते हो। परन्तु दैवी मत में सुख है और आसुरी मत में दुख है। ... श्रीमत ही श्रेष्ठ बनाती है।" सा.बाबा 23.12.04 रिवा.

श्रीमत और दृष्टि, वृत्ति, संकल्प, वायब्रेशन और वातावरण

कहा गया है - मनुष्य अपने वातावरण की उपज है अर्थात् मनुष्य का विकास, स्वभाव-संस्कार उसके के आधार पर ही बनते हैं। वातावरण का निर्माण होता है मनुष्य के संकल्पों और उससे उत्पन्न होने वाले प्रकम्पनों से। मनुष्य के संकल्प और वृत्ति, उसकी दृष्टि से प्रतिबिम्बित होती है। इन सबको कैसे सुधारें, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है और मार्ग-दर्शन किया है।

"तुम्हारी भी नजर आत्मा पर ही पड़नी चाहिए। आत्मा भृकुटी के बीच में है। शरीर पर नजर पड़ने से ही विघ्न आते हैं। आत्मा से बात करनी है, आत्मा को ही देखना है। ... बहुत अच्छे-अच्छे, नामीग्रामी हैं, उनको भी संशय आ जाता है। ...समझ लेना चाहिए संशय-बुद्धि विनश्यन्ति, निश्चय-बुद्धि विजयन्ति।" सा.बाबा 15.12.69 रिवा.

मनुष्य अपने वातावरण की उपज भी है तो उसका निर्माता भी है। हमारे वृत्ति और वायब्रेशन से जो वातावरण बनता है, उससे भी हमारा पाप या पुण्य का खाता प्रभावित होता है क्योंकि उससे अन्य आत्माओं के संकल्प, संस्कार और कर्म भी प्रभावित होते हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि क्लास में किसी का बाहर का चिन्तन चलता है तो वह वातावरण को

दूषित करता है और उससे उसका पाप का खाता बढ़ता है। इसलिए हमको सदा अच्छे संकल्पों द्वारा अच्छे वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

बाबा ने कहा है अगर किसकी अशुभ दृष्टि भी हमारे प्रति जाती है, तो उसका कारण हम हैं। हमारे रहन-सहन, चाल-चलन, दृष्टि-वृत्ति, पहनावा-ओढ़ावा, संकल्प आदि में कहाँ न कहाँ वासना नीहित है, हम अपने आत्मिक स्वरूप में नहीं है, जिससे दूसरों की अशुभ दृष्टि-वृत्ति हमारी तरफ जाती है। स्वरूप में स्थित आत्मा की ओर किसकी भी बुरी दृष्टि जा नहीं सकती। कहाँ न कहाँ हमारे योग की कमी है या पूर्व जन्म का कोई हिसाब-किताब है, जो दूसरों को हमारी तरफ आकर्षित करता है। पवित्र आत्मा के प्रति किसी की अशुभ दृष्टि जाये, यह लॉ नहीं है। इस सत्य को समझकर अपने को ठीक करना है। इसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

"अगर आप श्रेष्ठ वृत्ति में स्थित हो तो कोई भी वायुमण्डल-वायब्रेशन आदि आपको डगमग कर सकते हैं क्या ? वृत्ति से ही वायुमण्डल बनता है। अगर आपकी वृत्ति श्रेष्ठ है तो वृत्ति के आधार से वायुमण्डल को शुद्ध बना सकते हो।" अ.बापदादा 6.8.72

"अभी वृत्ति द्वारा वृत्तियां बदलें, संकल्प द्वारा संकल्प बदल जायें।... यह सूक्ष्म सेवा स्वतः ही कई कमजोरियों से पार कर देगी। ... जब इस सेवा में बिजी रहेंगे तो स्वतः ही वायुमण्डल ऐसा बनेगा जो अपनी कमजोरिया स्वयं को ही स्पष्ट अनुभव होंगी और वायुमण्डल के कारण स्वयं ही शर्मशार हो परिवर्तित हो जायेंगे।" अ.बापदादा 18.1.86

"जैसे दादियों से मधुवन की रौनक है, ऐसे आप एक-एक विश्व में रौनक करने वाली आत्मायें हो। जिस भी स्थान पर हो वह रौनक का स्थान नजर आये। ... आप स्वयं खुशी, शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की रौनक में होंगे तो स्थान भी रौनक में आ जायेगा क्योंकि स्थिति से स्थान में वायुमण्डल फैलता है।" अ.बापदादा 2.11.04

"तीव्र पुरुषार्थ का स्लोगन है - जैसा संकल्प मैं करूँगा, मेरे संकल्प का वैसा ही वातावरण बनेगा। संकल्प का भी आधार वातावरण पर और वातावरण का आधार पुरुषार्थ पर है। ... संकल्प है बीज। ... अब आप सभी में विशेष न्यारापन होना चाहिए। ... स्लोगन याद रखो - सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है।" अ.बापदादा 8.10.75

"अपनी ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपकी वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाये। ... वृत्ति बदल गई है ? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना है। ... कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है ? कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बने हो, बनी हुई है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना-

बनाया ड्रामा। बना हुआ है, सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है।"

अ.बापदादा 7.3.05

"यही प्योरिटी सबसे श्रेष्ठ और सहज पब्लिसिटी है और यही अन्तिम पब्लिसिटी का रुप है। जो अन्य कोई भी आत्माएं कर नहीं सकतीं। विश्व परिवर्तन के कार्य में सबसे पॉवरफुल पब्लिसिटी का साधन आप विशेष आत्माओं का यही है।" अ.बापदादा 24.4.74

"अगर श्रेष्ठ वृत्ति है तो यथार्थ विधि भी है और यथार्थ विधि है तो सिद्धि श्रेष्ठ है ही है। विधि और सिद्धि का बीज है वृत्ति। श्रेष्ठ वृत्ति अर्थात् सदा भाई-भाई की आत्मिक वृत्ति हो। यह है मुख्य बात।" अ.बापदादा 6.12.87

"वृत्ति दृष्टि को बदलती है, दृष्टि सृष्टि को बदलती है। अगर वृत्ति का बीज सदा ही श्रेष्ठ है तो विधि और सिद्धि सफलतापूर्वक है ही।... बीज है वृत्ति, वृक्ष है विधि और फल है सिद्धि।"

अ.बापदादा 6.12.87

"अपनी उन्नति करनी है तो अपना चार्ट रखो।... अपने दिल से पूछना चाहिए अगर हम अन्धों की लाठी न बनें तो क्या ठहरे! अन्धे ही कहेंगे ना।... क्रिमिनल आई को सिविल बनाने के लिए बहुत मेहनत करनी होती है।" सा.बाबा 19.9.05 रिवा.

"ऐसा नेचुरल अभ्यास हो जो सदा चमकते हुए सितारे को देखते रहें, इस प्रैक्टिस को सदा बढ़ाते चलो। जहाँ देखो, जब भी किसको देखो शरीर को देखते हुए नजर सदा चमकते हुए सितारे की तरफ जाये।" अ.बापदादा 28.12.82

"भारत द्वारा ही आध्यात्मिक लाइट मिलेगी, यह भी धीरे-धीरे स्पष्ट होता जा रहा है।... सदा के लिए ऐसी स्थिति बनाओ जो सदा चमकते हुए सितारे को देखें।"

अ.बापदादा 28.12.82

"अपने आपको रियलाइज़ करो। रियलाइज़ अर्थात् मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसे अपने को समझना। चलते फिरते आत्माभिमानी स्थिति रहती है?... एक-एक बात में रियलाइज़ करो। ... दृष्टि लेना अर्थात् दृष्टि में बाप को समाना।" अ.बापदादा 4.9.05 समर्पित भाई-बहनें

"अपने को आत्मा समझकर और दूसरे को भी आत्मा समझकर ज्ञान दो। बाप जो समझाते हैं, उस पर विचार सागर मन्थन करो। जज करो कि क्या यह ठीक है, हमारे फायदे की बात है?" सा.बाबा 21.12.05 रिवा.

"दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना - यह प्रैक्टिस करो।... बाप की दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो, तब समय पर औरों को दे सकेंगे।... अगर साइलेन्स की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त

करने में धोखा खा लेंगे।” अ.बापदादा 23.11.89 ग्रुप 2

“कोई गाली भी दे रहे हो तो भी आपके चेहरे पर दुख की लहर नहीं आनी चाहिए। प्रसन्नचित्त। ... सेकेण्ड भी बोला या सोचा, शकल पर अप्रसन्नता आई तो फेल हो गये।”

अ.बापदादा 22.12.95

“अमृतवेले से रात तक जितनों के भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ तो डायमण्ड बन डायमण्ड देखना है - यह पक्का किया है ... इस वर्ष में बापदादा की सभी बच्चों प्रति विशेष यही शुभ आशा कहो वा श्रेष्ठ श्रीमत कहो कि डायमण्ड के बिना और कुछ नहीं बनना है।”

अ.बापदादा 31.12.95

“आपके नयन चलता-फिरता म्युजियम बन जाये, आपका मस्तक आत्म-साक्षात्कार कराये। आपके होंठ सर्व को मुस्कराना सिखा दें। ऐसे चारो ओर चैतन्य म्युजियम अपने सेवा करते रहें।” अ.बापदादा 6.4.95

“अभी दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता को और भी अण्डरलाइन करो लेकिन मूल फाउण्डेशन है अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ।”

अ.बापदादा 7.11.95

श्रीमत और संकल्प, वृत्ति एवं वायुमण्डल

श्रीमत और वातावरण

मनुष्य अपने वातावरण की उपज भी है तो उसका निर्माता भी है अर्थात् वातावरण का प्रभाव जीवात्मा पर पड़ता है और जीवात्मा का प्रभाव वातावरण को बनाता है। वर्तमान जगत का वातावरण विकारों से युक्त है अर्थात् वातावरण में विकारों के वायब्रेशन्स अधिक है, जो न चाहते भी आत्मा को विकारी, दुखी बना देते हैं। इस वातावरण का प्रभाव हमारे ऊपर न पड़े बल्कि हमारा प्रभाव वातावरण पर पड़े क्योंकि अभी हमको इस विश्व का वातावरण परिवर्तन करना है। इसके लिए भी बाबा ने हमको श्रीमत दी है। वातावरण के विषय में बाबा ने कहा है - तुम क्लास में बैठते हो तो और कहाँ बाहर में बुद्धि नहीं जानी चाहिए, नहीं तो तुम वातावरण को खराब करते हो, उसका पाप चढ़ जाता है। टीचर्स बहनों को भी बाबा कहते तुमको सेन्टर का वातावरण ऐसा योगयुक्त रखना है, जो किसी को आने से ही शान्ति-सुख की अनुभूति हो। सन्दली पर योग कराने वालों के लिए भी बाबा ने कहा है - उसके ऊपर बड़ी जिम्मेवारी है। यदि उसकी बुद्धि बाहर जाती है, तो उस पर बड़ा पाप चढ़ जाता है।

“जब अपने में शक्ति आ जाती है तो फिर वातावरण का भी असर अपने पर नहीं होता है लेकिन हमारा असर वातावरण पर होता है।... अपनी शक्ति को भूलने से ही वातावरण का असर होता है। ... हमको वातावरण बनाना है।” अ.बापदादा 24.1.70

“रचयिता के हर संकल्प अथवा वृत्ति के वॉयब्रेशन्स रचना में स्वत: ही आ जाते हैं। ... सिर्फ यह अटेन्शन नहीं रखना है, लेकिन साथ-साथ “जो मैं संकल्प करूँगी, जैसी मेरी वृत्ति होगी वैसे वायुमण्डल में व अन्य आत्माओं में वॉयब्रेशन फैलेंगे” - यह स्लोगन भी स्मृति में रखना आवश्यक है वरना आप रचयिता की रचना कमज़ोर अर्थात् कम पद पाने वाली बन जायेगी।” अ.बापदादा 6.1.75

“बापदादा ने देखा - बच्चे संकल्प बहुत अच्छे-अच्छे करते हैं ... फिर करने में कमजोर क्यों बन जाते हैं? इसका कारण देखा गया ... कमजोर वातावरण का असर जल्दी पड़ जाता है। ... फिर कहते - यह तो चलता है, यह तो होता है ... ऐसे समय पर इस भाषा को परिवर्तन करो कि बाप का फरमान क्या है?” अ.बापदादा 30.11.05

“ब्राह्मणों की दृष्टि भी सदा ऊपर रहती है क्योंकि आत्मा, आत्माओं को देखती है। ... जब ऐसी स्थिति हो जाती है तो नीचे की बातों से, नीचे के वायुमण्डल से सदा ही दूर रहेंगे, उसके प्रभाव में नहीं आयेंगे। ... प्रभाव में आने वाले नहीं लेकिन अपना श्रेष्ठ प्रभाव डालने वाले।”
अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 1

“बिजी रहना ही सहज पुरुषार्थ है ... बिजी रहेंगे तो माया की हिम्मत नहीं होगी आने की और जितना अपने को बिजी रखेंगे, उतना ही आपकी वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन होता रहेगा। कोई भी ब्राह्मण आत्मा यह नहीं सोच सकती कि क्या करें, वायुमण्डल बहुत खराब है। खराब है तब तो परिवर्तन करते हो ... विश्व-परिवर्तक का काम है - बुरे को अच्छा बनाना।”
अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 1

“कुछ भी हो जाये “नथिंग न्यू”, होना ही है ... मास्टर सर्वशक्तिमान कभी घबराते नहीं हैं ... बाप के साथ हैं तो विजयी बनने की गारन्टी है।” अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 1

“स्मृति अर्थात् वृत्ति बदलने से कर्म भी बदल जाता है। कर्म का आधार है वृत्ति। वृत्ति से ही पवित्र-अपवित्र बनते हैं। ... जब एक बाप से सर्व सम्बन्ध की प्राप्ति की विस्मृति होती है तब ही वृत्ति चंचल होती है। ... जैसी मुझ निमित्त बनी हुई आत्मा की वृत्ति होगी, वैसा वायुमण्डल बनेगा।” अ.बापदादा 26.10.71

“वृत्ति चंचल वा साधारण होने का कारण है कि जो आने से पहला व्रत लेते हो वा प्रतिज्ञा करते हो, उससे नीचे आ जाते हो। पहला-पहला व्रत है - मन, वाणी, कर्म में पवित्र रहेंगे। दूसरा व्रत

है - एक बाप दूसरा न कोई। ... व्रत को हल्का करने से ही वृत्ति चंचल होती है।"

अ.बापदादा 6.8.72

"स्मृति वा वृत्ति में सदा अपना निर्वाणधाम और निर्वाण स्थिति रहनी चाहिए और चरित्र में निर्मान। तो निर्माण, निर्मान और निर्वाण - यह तीनों ही स्मृति में रहने से चरित्र, कर्तव्य और स्थिति तीनों ही समर्थवान हो जाते हैं।" अ.बापदादा 26.10.71

"वायुमण्डल कैसे बन सकता है ? वृत्ति से वायुमण्डल बनता है। ... वायुमण्डल का फाउण्डेशन है वृत्ति। वृत्तियों को जब तक पॉवरफुल नहीं बनाया, तब तक वायुमण्डल में रुहानियत नहीं आ सकती और सर्विस में जैसी वृद्धि चाहते वह हो नहीं सकती।"

अ.बापदादा 9.10.71

"जितना-जितना शक्तिशाली सतोप्रधान वायब्रेशन होंगे तो यह प्रकृति और मनुष्यात्माओं की वृत्ति दोनों ही चेन्ज हो जायेगी। मनुष्यात्माओं को वृत्ति से चेन्ज करना है और प्रकृति को वायब्रेशन द्वारा परिवर्तन करना है। ... ड्रामा में मालूम है, ब्रह्मा को भी मालूम है और था कि नारायण बनना ही है, फिर भी क्या किया ? निमित्त बने ना। जगदम्बा को भी पता था फिर भी निमित्त बनकर दिखाया।" अ.बापदादा 23.12.93 पार्टी 1

"थोड़े समय में सेवा की सफलता ज्यादा हो, उसकी विधि है - वाणी के साथ-साथ पहले अपनी स्थिति और स्थान के वायब्रेशन्स पॉवरफुल बनाओ। ... यह रुहानी वायब्रेशन्स फैलाने के लिए पहले अपने मन-बुद्धि में व्यर्थ वायब्रेशन्स समाप्त करेंगे तब रुहानी वायब्रेशन्स फैला सकेंगे।... ये व्यर्थ वायब्रेशन्स के काले बादल रुहानी वायब्रेशन्स को आत्माओं तक पहुँचने नहीं देंगे।" अ.बापदादा 26.3.93

"दृढ़ संकल्प करो कि करना ही है। बिजी हो जाओ। मन को बिजी रखेंगे तो स्वयं को भी फायदा और आत्माओं को भी फायदा। चलते-फिरते वृत्ति में यही रखो कि विश्व का कल्याण करना ही है। यह वृत्ति वायुमण्डल फैलायेगी क्योंकि समय अचानक होने वाला है। ऐसा न हो कि आपके भाई-बहनें उल्हना दें कि आपने हमें बताया क्यों नहीं। अन्त तक कर लेंगे लेकिन अन्त तक करेंगे तो भी आपको उल्हना देंगे कि हमको कुछ समय पहले बताते तो हम भी कुछ तो बना लेते।" अ.बापदादा 18.1.06

"हर संकल्प अर्थात् स्मृति पावन होने के कारण वृत्ति, दृष्टि स्वत: ही पावन हो जाती है। ... स्वप्न में भी अपवित्रता का छिपा हुआ स्वांस फिर से जीवित नहीं होना चाहिए।"

अ.बापदादा 3.3.88

"साधारणता में महानता समाई हुई हो। जितने ही साधारण हो, उतने ही अन्दर महान हो। ...

भाग्य है ही गरीबों का।... हर कर्म में यह रुहानी नशा अनुभव होना चाहिए - स्वयं को भी और औरों को भी ... जैसे मधुवन के वातावरण से ... ऐसे आप सबके सम्बन्ध-सम्पर्क में अनुभव करें कि ये अलौकिक आत्मायें हैं, भरपूर आत्मायें हैं।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 6

"बिजी रहना ही सहज पुरुषार्थ है... बिजी रहेंगे तो माया की हिम्मत नहीं होगी आने की और जितना अपने को बिजी रखेंगे, उतना ही आपकी वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन होता रहेगा। कोई भी ब्राह्मण आत्मा यह नहीं सोच सकती कि क्या करें, वायुमण्डल बहुत खराब है। खराब है तब तो परिवर्तन करते हो... विश्व-परिवर्तक का काम है - बुरे को अच्छा बनाना।"

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 1

"भक्त माला वालों का सिर्फ गायन होता है, पूजन नहीं। आप पूज्य बनते हो। ... पूज्य आत्मा कभी कोई अपवित्र संकल्प को टच भी नहीं कर सकती।" अ.बापदादा 21.12.89

"कोई भी कार्य करो तो कभी भी कोई हलचल के वातावरण के प्रभाव में नहीं आओ, अपना प्रभाव डालो। ... हिम्मत का बहुत महत्व है। कभी किसी भी बात में घबराओ नहीं। हजार भुजाओं वाले आप भी हो। बाप की भुजायें आपकी भी तो हुई ना।"

अ.बापदादा 10.1.90

"जो हिम्मत रखते हैं, उनको मदद जरूर मिलती है। हिम्मत में हिलना नहीं चाहिए। ... अच्छा होना है और अच्छे ते अच्छा होना है। अच्छा-अच्छा सोचने से अच्छा हो ही जाता है क्योंकि आपकी अच्छी वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर देगी। ... अपनी मन्सा वृत्ति सदा अच्छे की, पॉवरफुल बनाओ तो खराब भी अच्छा हो जायेगा।" अ.बापदादा 7.3.95

"अभी ऐसा प्लेन बनाओ जो कोई भी आत्मा ब्राह्मण परिवार से किनारे नहीं हो जाये। किले को ऐसा मजबूत करना पड़े जो कोई सोचे तो भी जा ही नहीं सके। ... आप योग के वायब्रेशन्स द्वारा करेन्ट की तारें लगा दो, जो उन्होंको स्मृति आ जाये।" अ.बापदादा 18.2.94

श्रीमत और संस्कार-स्वभाव परिवर्तन

बाबा ने हर आत्मा को अपने संस्कार-स्वभाव को परिवर्तन के लिए श्रीमत दी है क्योंकि हर आत्मा का अपना स्वभाव-संस्कार ही उसको धोखा देता है और संस्कार परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन का विधि-विधान है। सबसे मूल संस्कार जो सर्व प्रकार के संस्कारों का मूल है, वह है - स्व-परिवर्तन अर्थात् जब हम अपने को आत्मा समझते हैं तो हमारे में ईश्वरीय

और दैवी संस्कार प्रगट होते हैं और जब हम अपने को अज्ञानतावश अपने मूल स्वरूप को भूलकर देह समझने लगते हैं तो आसुरी संस्कार इमर्ज होते हैं। इसलिए बाबा ने इस मूल संस्कार को परिवर्तन करने की पहली श्रीमत दी है।

"बोझ का फिकर होता है ना! ... सबसे सूक्ष्म बोझ है पुराने संस्कार का। ... व्यर्थ संकल्प का संस्कार अभी भी परसेन्ट में दिखाई देता है। वाचा में, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी कोई संस्कार अभी दिखाई देता है। ...पुराने संस्कार का बोझ मैजारिटी में रहा हुआ है। ... यह रहा हुआ संस्कार समय पर धोखा देता भी है और अन्त में भी धोखा देने के निमित्त बन जायेगा। ... पुराने संस्कार का संस्कार करने के लिए इस नये वर्ष में तीव्रपुरुषार्थ अर्थात् योग-अग्नि से जलाने का दृढ़ संकल्प का अटेन्शन रखो।" अ.बापदादा 31.12.05

"योग को पॉवरफुल बनाओ। एकाग्रता की शक्ति विशेष संस्कार भस्म करने में आवश्यक है। जिस रूप में, जितना समय एकाग्र होना चाहें एकाग्र हो जाये। एकाग्रता से संकल्प किया और भस्म। इसको कहा जाता है योग-अग्नि। ... पुराने संस्कार का रहा हुआ अंश भी वंश पैदा कर देता है।" अ.बापदादा 31.12.05

"किसी के भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते तो अपनी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति को चेक करो और किससे भी मिलते हो तो सदा आत्मा को देखकर बात करो ... कैसा भी हो लेकिन आप अपना स्वभाव श्रेष्ठ रखो। आप श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखो। तब ही कार्य अच्छा होगा और जमा होगा।" अ.बापदादा 31.12.05

"ऐसी अपनी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपकी वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाये। ... वृत्ति बदल गई है ? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना।" अ.बापदादा 07.03.05

"ऐसी प्युरिटी की पर्सनेलिटी हो कि जो मस्तक द्वारा शुद्ध आत्मा और सतोप्रधान आत्मा दिखाई दे अर्थात् अनुभव कर सके, नयनों द्वारा भाई-भाई की वृत्ति अर्थात् शुद्ध-श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वायुमण्डल व वॉयब्रेशन परिवर्तित कर सको। ...ऐसी रॉयल्टी और पर्सनैलिटी स्वयं में प्रत्यक्ष रूप में लाओ।" अ.बापदादा 5.2.75

"मुख्य दो बातें याद रखना है - एक तो मणि को देखना है, देह रूपी सांप को नहीं देखना है और दूसरी बात अपने को अवतरित समझो। इस शरीर में अवतरित होकर कार्य करना है और एक स्लोगन याद रखना है कि बापदादा जो कहेंगे, जो करायेंगे, जैसे चलायेंगे, वैसे ही करेंगे, चलेंगे, बोलेंगे, देखेंगे।" अ.बापदादा 16.10.69

"कमजोर स्वभाव और संस्कार के वश नहीं। वास्तव में "स्वभाव" शब्द का अर्थ है स्व का

भाव।... स्वभाव अर्थात् स्व प्रति और सर्व प्रति आत्मिक भाव।... एकाग्रता की शक्ति से परवश स्थिति को परिवर्तन कर मालिकपन की स्थिति की सीट पर सेट हो जाओ।"

अ.बापदादा 9.12.93

"अगर माया पुराने संस्कार इमर्ज कराती भी है तो सोचो - ये हमारी चीज नहीं है, ये दूसरे की चीज मैं कैसे ले सकता हूँ। ... सदा ये सोचो कि - ब्राह्मण जीवन में बाप ने क्या-क्या दिया। ब्राह्मण जीवन का अर्थात् मेरा निजी स्वभाव-संस्कार, वृत्ति-दृष्टि, स्मृति क्या है?"

अ.बापदादा 7.3.93

"जब मरजीवा बन गये तो पुराने संस्कार की भी मृत्यु हो गई, पुराने संस्कार इमर्ज हो नहीं सकते। बिल्कुल भूल जाओ। ये पुराने जन्म के हैं, ब्राह्मण जन्म के नहीं हैं। ... नया जन्म और नये संस्कार। अगर माया पुराने संस्कार इमर्ज कराती भी है तो सोचो - ये हमारी चीज नहीं है, ये दूसरे की चीज मैं कैसे ले सकता हूँ।" अ.बापदादा 7.3.93

श्रीमत और स्व-परिवर्तन एवं विश्व-परिवर्तन अर्थात् विश्व-कल्याण
श्रीमत और आत्म-कल्याण एवं विश्व-कल्याण
श्रीमत और दृष्टि-वृत्ति और सृष्टि परिवर्तन

आत्मा-कल्याण और विश्व-कल्याण का एकमात्र साधन श्रीमत ही है। जब श्री-श्री शिवबाबा इस धरा पर आते हैं तब आत्माओं का व्यक्तिगत और समग्र विश्व का कल्याण होता है। बाबा ने कहा है - विश्व-परिवर्तन और विश्व-कल्याण का आधार भी तुम बच्चों पर है, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है, जिससे सहज ही उस कार्य को सम्पन्न कर सकें।

व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज, समाज से देश और देश से विश्व परिवर्तन होता है। जब हमारी अपनी दृष्टि-वृत्ति परिवर्तन होगी तो समाज, देश और विश्व स्वत: ही परिवर्तन होगा। बाबा ने कहा है, तुमको न केवल मनुष्यात्माओं को लेकिन तत्वों सहित सर्वात्माओं को परिवर्तन करना है, तुम हो विश्व-परिवर्तक आत्मायें। बाबा ने ये भी श्रीमत दी है- विश्व परिवर्तन के लिए तुमको अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलना है, तब ही सृष्टि का परिवर्तन होगा।

"कहावत है कि दृष्टि से सृष्टि बनेगी। ... आत्मिक दृष्टि बनानी है। ... जिसको देखते हो, वह

आत्मिक स्वरूप में दिखाई दे। ... दृष्टि बदल गई तो कब धोखा नहीं देगी।"

अ.बापदादा 6.8.70

"दृष्टि से सृष्टि बदलती है। यह भी अभी कहावत है। कैसी भी तमोगुणी व रजोगुणी आत्मायें आयें लेकिन आपकी सतोगुणी दृष्टि से उनकी सृष्टि, उनकी स्थिति बदल जाये, उनकी वृत्ति बदल जाये।" अ.बापदादा 20.5.71

"जो अपनी वृत्ति में होगा, वैसा अन्य आपकी दृष्टि से देखेंगे। ... सृष्टि न बदलने का कारण है दृष्टि का न बदलना और दृष्टि न बदलने का कारण है वृत्ति का न बदलना।"

अ.बापदादा 6.8.70

"नयनों की दृष्टि द्वारा उन आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और कृत्ति चेन्ज कर दो। मस्तिष्क द्वारा अपने व सभी के स्वरूपों का स्पष्ट साक्षात्कार कराओ, चेहरे द्वारा वर्तमान श्रेष्ठ पोजीशन और भविष्य पोजीशन का साक्षात्कार कराओ। अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अन्य आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों व विकल्पों को ... शुद्ध संकल्पों में परिवर्तित कर डालो।"

अ.बापदादा 25.5.73

"जिनको राखी बांधते हो, वह पवित्र बनते हैं वा व्रत लेते हैं ? ... बांधने वालों की मन्सा में अपवित्रता आ जाती है। इस कारण जितनी बांधने वाले में कमी है, तो जिनको बांधते हो, उनके ऊपर भी इतना आपकी पवित्रता के आकर्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।"

अ.बापदादा 6.8.72

"जैसे स्थूल नेत्रों के नैन-चैन, रास्ता चलते हुए आत्मा को भी अपनी तरफ आकर्षित कर लेते हैं, ऐसे ही यह तकदीर की तस्वीर भी सर्व आत्माओं को अपनी रुहानी दृष्टि व सदा स्मृति और वृति से अपनी तरफ आकर्षित जरुर करती है।" अ.बापदादा 18.7.74

"तुम बच्चों को सब प्वाइन्ट्स धारण करनी है और फिर सर्विस करनी है।... अभी हम श्रीमत पर विश्व का कल्याण कर रहे हैं, बुद्धि में यह नशा रहना चाहिए।"

सा.बाबा 30.8.05 रिवा.

"शिव जयन्ति है सबसे ऊंच जयन्ति। ...समझाना चाहिए सबसे ऊंच जयन्ति किसकी हुई ? ... शिव है ऊंच से ऊंच आत्मा ... अभी तुम बच्चों को बाप समझाते हैं - तुम औरों पर भी और अपने ऊपर भी आपही रहम करो।" सा.बाबा 23.9.05 रिवा.

"अगर पुरानी दुनिया का कोई भी पुराना संस्कार रह गया तो वह अपनी तरफ खींच लेगा। इसलिए सदा नई जीवन नये संस्कार। श्रेष्ठ जीवन है तो श्रेष्ठ संस्कार चाहिए। श्रेष्ठ संस्कार हैं ही स्व कल्याण और विश्व कल्याण करना। ... स्व-कल्याण और विश्व कल्याण के सिवाए

और कोई संस्कार होंगे तो इस जीवन में विघ्न डालेंगे।" अ.बापदादा 2.5.83

"बेहद की वृति अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की वृति, मास्टर विश्व कल्याणकारी। सिर्फ अपने वा अपने हद के निमित्त बनी हुई आत्माओं के कल्याण अर्थ नहीं, लेकिन सर्व के कल्याण की वृति हो। ...अपने प्रति सन्तुष्टता में राज़ी होकर चल रहे हैं, यह बाप समान बेहद की वृति रखने की स्थति नहीं हैं।" अ.बापदादा 27.3.83

"अभी एक मिनट ऐसा पॉवरफुल सर्वशक्तियां सम्पन्न विश्व की आत्माओं को किरणें दो, जो चारो ओर आपके शक्तियों के वायब्रेशन विश्व में फैल जायें।" अ.बापदादा 21.10.05

"स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन है या अन्य के परिवर्तन से स्व-परिवर्तन है। ... स्वयं प्रति भी कार्य में लगाओ और दूसरों को भी गुण-दान, ज्ञान-दान, शक्तियों का दान करो। अगर कोई निर्बल है तो शक्ति देकर उसको भी सम्पन्न बनाओ। इसको कहा जाता है भरपूर आत्मा।"

अ.बापदादा 30.11.92

"विघ्न-विनाशक अर्थात् सारे विश्व के विघ्न-विनाशक।... विघ्न-विनाशक वही बन सकता है, जो सदा सर्व शक्तियों से सम्पन्न होगा।... सदा स्मृति में रखो कि बाप के सदा साथी हैं और विश्व के विघ्न-विनाशक हैं।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

"स्व-परिवर्तन करना, दूसरे के परिवर्तन की चिन्ता नहीं करना। ... स्व को भूलकर दूसरे के शुभ चिन्तक बनना, इसको शुभ चिन्तक नहीं कहा जाता है। सर्व के साथ स्व होना चाहिए।"

अ.बापदादा 15.4.92

"चेरिटी बिगिन्स एट होम माना पहले-पहले खुद मेहनत करनी है, पीछे दूसरों को कहना है। जब तुम अपने को आत्मा समझ कर आत्मा को ज्ञान देंगे तो तुम्हारी ज्ञान तलवार में जौहर रहेगा। ... निन्दा-स्तुति, मान-अपमान सब सहन करना पड़ता है।"

सा.बाबा 21.12.05 रिवा.

"संगमयुग पर विशेष कर्तव्य ही है कल्याण करना। पहले स्व का कल्याण और साथ-साथ सर्व का कल्याण। ... कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी आप आत्मायें हो और कल्याण-कारी बाप है। ... सदा याद रखो स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी तो इस स्मृति से सदा ही मायाजीत और प्रकृतिजीत रहेंगे।" अ.बापदादा 2.12.93 पार्टी 6

"हर ब्राह्मण आत्मा की श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ दृष्टि और श्रेष्ठ कृत्ति विश्व की सर्वात्माओं को श्रेष्ठ बनाने के निमित्त है। हर ब्राह्मण आत्मा पर यह विशेष जिम्मेवारी है। ... इस जिम्मेवारी को निभाने के लिए एक तो स्वयं के महत्व को जानो और दूसरा समय के महत्व को जानो।"

अ.बापदादा 9.12.93

"नशा रहे - मैं विश्व-कल्याणकारी हूँ। तो इस स्मृति से स्वत: ही समर्थ रहेंगे और सदा सेवा-भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। ... आपकी भावना आत्माओं को फल देगी, शान्ति और शक्ति देगी।" अ.बापदादा 18.01.93 पार्टी 2

"कभी वृक्ष के ऊपर बीज से, कभी सृष्टि-चक्र के ऊपर टॉप पर खड़े होकर सभी को शक्ति दो। जो भिन्न-भिन्न टाइटिल मिलते हैं, उनका भिन्न-भिन्न रूप से रोज अनुभव करो। ... जब यह नेचुरल अभ्यास हो जाये, तब ही विधि-विधाता वा सिद्धि दाता बन विश्व की आत्माओं का कल्याण कर सकेंगे।" अ.बापदादा 19.3.88

"सेवा और स्व-उन्नति दोनों अगर साथ-साथ नहीं हैं तो सेवा के प्लेन में जितनी सफलता चाहिए, उतनी नहीं होती है। ... सेवा की या स्व-उन्नति की सफलता की निशानी है - स्वयं भी स्वयं से भी सन्तुष्ट हो और जिनकी सेवा करते हैं, उन्होंको भी सेवा द्वारा सन्तुष्टता का अनुभव हो। ... सेवा में वा स्व-उन्नति में सफलता सहज प्राप्त करने की गोल्डन चाबी कौनसी है ? ... चलन-चेहरे, सम्बन्ध-सम्पर्क में निमित्त भाव, निर्मान भाव, निर्मल वाणी। जैसे ब्रह्मा बाप और जगदम्बा को देखा।" अ.बापदादा 14.3.06

"बाप श्रीमत देते हैं तो श्रीमत को जानना चाहिए ना। श्रीमत से सारी दुनिया तत्वों आदि सबको श्रेष्ठ बनाते हैं। ... तुमको श्रीमत पर चलकर हर एक को रास्ता बताना है।"

सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

"स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन है या अन्य के परिवर्तन से स्व-परिवर्तन है। ... स्वयं प्रति भी कार्य में लगाओ और दूसरों को भी गुण-दान, ज्ञान-दान, शक्तियों का दान करो। अगर कोई निर्बल है तो शक्ति देकर उसको भी सम्पन्न बनाओ। इसको कहा जाता है भरपूर आत्मा।"

अ.बापदादा 30.11.92

"स्व-परिवर्तन का विशेष संस्कार क्या है ? जो ब्रह्मा बाप के संस्कार वे बच्चों के संस्कार। ब्रह्मा बाप ने अपना संस्कार क्या बनाया, जो साकार शरीर के अन्त में भी याद दिलाया ... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी। ... ये संस्कार नेचुरल हों।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 3

"स्व-परिवर्तन करना, दूसरे के परिवर्तन की चिन्ता नहीं करना। ... स्व को भूलकर दूसरे के शुभ चिन्तक बनना, इसको शुभ चिन्तक नहीं कहा जाता है। सर्व के साथ स्व होना चाहिए।"

अ.बापदादा 15.4.92

"वास्तविक सेवा उसको कहा जाता है, जिसमें स्व और सर्व की सेवा समाई हुई हो।... एक को देखते तो दूसरा ढीला हो जाता है, दूसरे को देखते तो पहला ढीला होता - इसका कारण

क्या है ?... सेवा का प्लेन बनाते तो प्लेन बुद्धि बनकर नहीं बनाते हो।... प्लेन बुद्धि अर्थात् निमित्त और निर्मान भाव। निर्माण करते निर्मान स्थिति की कमी हो जाती।"

अ.बापदादा 8.4.92

"यह सब बातें बुद्धि में बिठाना चाहिए। मुख्य-मुख्य प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी तब याद की यात्रा में रहेंगे। ... श्रीमत पर हर एक को अपना कल्याण करना है।"

सा.बाबा 4.02.06 रिवा.

"सारे विश्व को परिवर्तन करना है। ... पवित्रता ऐसी अग्नि है, जो सेकेण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। ... अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सब भस्म करो। ... सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है, उसे भस्म करने वाले बनो।" अ.बापदादा 21.12.89 पार्टी 1

"आगे जब वृद्धि होगी तो स्वतः ही विधि भी परिवर्तन होती रहेगी। ... वृद्धि होनी ही है और परिवर्तन भी होना ही है। ... सभी ड्रामा के हर दृश्य को देख-देख हर्षित रहने वाले हो ना! वा कभी अच्छे-बुरे के आकर्षण में आ जाते हो? न अच्छे में और न बुरे में, किसी में भी आकर्षित नहीं होना है, सदैव हर्षित रहना है।" अ.बापदादा 11.11.89

"बड़ों-बड़ों को लिखो कि इस नॉलेज के बिगर भारत का वा दुनिया का कल्याण नहीं हो सकता। ... बच्चे बालिग हो गये तो कह सकते हैं कि हमको तो भारत का उद्धार करना है। ... तुम्हारा धर्म है नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाना, भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाना।"

सा.बाबा 29.8.06 रिवा.

"पश्चाताप करना अच्छी चीज है क्योंकि पश्चाताप परिवर्तन कराता है लेकिन उसमें ज्यादा टाइम नहीं लगाओ ... पश्चाताप करना और प्राप्ति की खुशी लाना।... ज्यादा व्यर्थ सोचने से जमा का खाता खत्म हो जाता है।" अ.बापदादा 25.3.95

"अगर स्व-परिवर्तक भी नहीं तो विश्व-परिवर्तक कैसे होंगे। ... नये वर्ष में सेवा भी करनी है और सेवा के पहले स्व-परिवर्तन, दोनों चाहिए।" अ.बापदादा 31.12.94

""मैं" और "मेरे" को परिवर्तन करो। मैं आत्मा हूँ। तो जब भी "मैं" शब्द प्रयोग करते हो तो "मैं" शब्द का ओरिजिनल स्वरूप स्मृति में रखो।... और जब "मेरा" शब्द यूज करते हो तो सबसे पहले मेरा कौन ?... पहले "मेरा बाबा" याद करो।"

अ.बापदादा 31.12.94

"चलते-चलते एक बहुत बड़ी गलती करते हैं, जो दूसरे के जज बन जाते हैं और अपने वकील बन जाते हैं।... स्लोगन है - "स्व परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन"।"

अ.बापदादा 5.12.94

"पांच हजार पर्ष पहले श्रेष्ठाचारी दुनिया थी, यह सबकी बुद्धि में बिठाना चाहिए। मुख्य-मुख्य प्वाइन्ट्स जब बुद्धि में धारण होंगी, तब याद की यात्रा में रहेंगे। ... जितना हो सके पुरुषार्थ करते रहो। श्रीमत पर हर एक को अपना कल्याण करना है। अपनी जांच करनी है कि हम कितना बाप को याद करते हैं और कितनी बाप की सर्विस करते हैं।"

सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

"अभी हम सब मनुष्य मात्र का कल्याण कर रहे हैं। कल्याणकारी जो बनेंगे, उनको ही वर्सा मिलेगा। याद की यात्रा बिगर कल्याण हो न सके। ... बेहद के बाप से ही भारतवासियों को बेहद का वर्सा मिला है। ... शिव-शक्तियां ब्रह्मा कुमार-कुमारियां ही परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर कल्प पहले मुआफिक श्रेष्ठाचारी दुनिया स्थापन करेंगे।"

सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

श्रीमत और विश्व-शान्ति

हर आत्मा शान्ति चाहती है और उसके लिए विश्व-शान्ति की कामना करती है और अपने हिसाब से पुरुषार्थ भी करती है परन्तु विश्व में शान्ति कब थी, कैसी थी, फिर कैसे स्थापन होगी, कौन करेगा आदि आदि बातों का किसको भी पता नहीं है, जिसको विश्व का रचयिता शान्ति का सागर परमात्मा आकर बताते हैं और विश्व में शान्ति स्थापना के लिए अपने सहयोगी बच्चों को श्रीमत भी देते हैं।

"बाबा कहते हैं यह पढ़ा हुआ सब भूलो। अब इन बातों का मनुष्यों को कैसे पता पड़े, इसलिए बाबा कहते ऐसी-ऐसी प्वाइन्ट्स लिखकर एरोप्लेन से गिराओ।... अब तुम जानते हो विश्व में शान्ति तो होती है इस महाभारत लड़ाई के बाद।" सा.बाबा 29.8.05 रिवा.

"विश्व की आत्माओं वा सम्बन्ध, सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को महसूसता हो कि शान्ति की किरणें इन विशेष आत्मा वा विशेष आत्माओं द्वारा मिल रही हैं। हरेक से चलता फिरता "शान्ति यज्ञ कुण्ड" का अनुभव हो।" अ.बापदादा 21.2.83

"स्वमानधारी सदा बाप के दिल तख्तनशीन होता है क्योंकि बेफिकर बादशाह है।... अशान्ति के समय मास्टर शान्ति-दाता बन औरों को भी शान्ति दो, घबराओ नहीं। क्योंकि जानते हो - जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होना है, वह और भी अच्छा होगा।"

अ.बापदादा 09.01.93 पार्टी 4

श्रीमत और दान-पुण्य

भक्ति मार्ग में भी दान-पुण्य का बहुत महत्व गाया हुआ है, इसलिए प्राय: सर्वात्माओं में दान की इच्छा रहती है और सभी यथा शक्ति करते भी हैं परन्तु उस दान का जीवन पर क्या और कैसा प्रभाव होता है, वह भी बाबा ने बताया है कि यथार्थ दान क्या है, जिससे देने वाले की भी चढ़ती कला हो और दान लेने वाले की भी चढ़ती कला हो अर्थात् दोनों जीवन सुखमय हो ? अभी कलियुग के अन्त में दुनिया में सभी मनुष्य पतित हैं, इसलिए पतित, पतित को दान करते और ही पतित बनते जाते हैं। दुनिया में तो कन्या जो पवित्र है, उसको शादी कराकर पतित बनने के रास्ते पर बढ़ाने को भी कन्या-दान कहते हैं और उसमें सहयोग करने को बहुत अच्छा मानते हैं परन्तु बाबा कहते - यदि कन्या पवित्र रहना चाहती, फिर भी उसे पतित बनने के लिए प्रेरित करते तो वह और ही बड़ा पाप का काम है। यथार्थ दान-पुण्य क्या है और किसको देना चाहिए, उसके विषय में भी बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने ये भी कहा है - भक्ति मार्ग की तरह दान करने की तुमको आवश्यकता नहीं है, वह तो दुनिया में बहुत करने वाले हैं। तुम यह ज्ञान रतनों का दान करो और अपना तन-मन-धन इस सेवा में लगाओ, जिससे आत्माओं का चरित्र ऊंचा हो, कर्म-संस्कार श्रेष्ठ हो, मनुष्य पवित्र बनें क्योंकि आज की दुनिया में सबसे बड़ी गरीबी है चरित्र की गरीबी, जिसको ही परमात्मा मिटाते हैं।

"दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।" सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

"अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी धन का। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बनते जाते हो। ... औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा।" सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

"भक्ति की रस्म-रिवाज अलग है और ज्ञान मार्ग की रस्म-रिवाज अलग है। सतयुग में दान-पुण्य होता नहीं है क्योंकि वहाँ कोई गरीब-दुखी होता नहीं है, जिसको दान-पुण्य करें।"

सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

"भक्तिमार्ग में लक्ष्मी को महादानी दिखाते हैं तो महादानी की निशानी कौनसी दिखाई है ?...सम्पति झलकती रहती है। यह शक्तियों का यादगार है। लक्ष्मी अर्थात् सम्पति की देवी। वह स्थूल सम्पति नहीं, नॉलेज की सम्पति, शक्तियों रुपी सम्पति की देवी अर्थात् देने वाली। तो यह चित्र

बनाया है ऐसी सम्पति की देवी बनना है। चाहे नॉलेज देवे, चाहे शक्तियाँ देवे।”

अ.बापदादा 23.1.76

“जिन बच्चों को पुरुषोत्तम संगमयुग की स्मृति रहती है, वे ज्ञान रत्नों का दान करने बिना रह नहीं सकते। जैसे मनुष्य पुरुषोत्तम मास में दान-पुण्य करते हैं, ऐसे इस पुरुषोत्तम संगमयुग में तुम्हें ज्ञान रत्नों का दान करना है।” सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

“बाबा राय देते हैं - बच्चे, गरीबों को दान देने वाले तो बहुत हैं।... दान आदि में भी बहुत खबरदारी चाहिए। ... धन को व्यर्थ नहीं गंवाना है। जो लायक ही नहीं ऐसे पतित को कभी दान नहीं देना चाहिए। नहीं तो दान देने पर भी बोझा आ जाता है।”

सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

“बाप कहते हैं मेरे अर्थ तुम किस-किस को देते रहते हो। दान उसको देना चाहिए, जो पाप न करे। अगर पाप किया तो तुम्हारे ऊपर भी उसका असर आ जायेगा क्योंकि तुमने पैसा दिया।” सा.बाबा 12.5.72 रिवा.

“यह ज्ञान अच्छी रीति बुद्धि में धारण करना है। किसको समझाने में खुशी होती है ना। यह तुम जैसे प्राण-दान देते हो।” सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

“भारत को महादानी कहा जाता है। वह धन दान तो बहुत करते हैं परन्तु यह है अविनाशी ज्ञान रतनों का दान। ... मैं तो हद-बेहद से पार चला जाता है क्योंकि मैं रहने वाला भी वहाँ का हूँ। तुम भी हद-बेहद से पार चले जाओ, संकल्प-विकल्प कुछ भी न आये, इसमें मेहनत चाहिए।” सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

“सर्व की मनोकामनायें पूरी करने वाली कामधेनु हो। जिसकी अपनी सर्व कामनायें पूरी होंगी, वही औरों की कामनायें पूरी कर सकेंगे।... सर्व की इच्छायें पूर्ण करने वाले स्वयं इच्छामात्रम् अविद्या होंगे। ऐसा अभ्यास करना है। प्राप्ति स्वरूप बनने से औरों को प्राप्ति करा सकते हो। .... महाज्ञानी बनने के बाद महादानी का कर्तव्य चलता है। महाज्ञानी की परख महादानी बनने से होती है।” अ.बापदादा 26.6.70

“मधुवन निवासी मोस्ट लकी स्टार्स हैं। जितना लकी हो, उतना सर्व के लवली भी बनो। सिर्फ लक में खुश नहीं होना। लकी की परख लवली से होती है।... ज्ञान का दान ब्राह्मणों को तो नहीं करना है, वह तो अज्ञानियों को करेंगे। ब्राह्मण परिवार में फिर इस दान (लव) के महादानी बनो।” अ.बापदादा 21.4.73

“मुख्य तीन दान बताये। ज्ञान का दान भी करती हो, योग द्वारा शक्तियों का दान भी कर रहे हो और तीसरा दान है कर्म द्वारा गुणों का दान। मनसा द्वारा सर्व शक्तियों का दान, वाणी द्वारा

ज्ञान का दान, कर्म द्वारा सर्वगुणों का दान।" अ.बापदादा 15.4.71

"सिर्फ सुनने और रखने का आनन्द नहीं लो लेकिन बार-बार स्वयं के प्रति और सर्वात्माओं के प्रति काम में लगाओ। ... ईश्वरीय नियम प्रमाण जितना यूज करेंगे, उतनी वृद्धि होगी। गायन है - धन दिये धन न खुटे। देना ही बढ़ना है।" अ.बापदादा 21.9.75

"जैसे भक्तिमार्ग में जिस वस्तु की कमी होती है उसी वस्तु का दान करते हैं - तो दान देने से उस वस्तु की कभी कमी नहीं रहेगी। तो देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे ही जिस सब्जेक्ट में, जिस विशेषता में, जिस गुण की स्वयं में कमी महसूस करते हो, उसी विशेषता व गुण का दान करो, अन्य के प्रति सेवा में लगाओ तो सेवा का रिटर्न प्रत्यक्ष फल मेवे के रुप में स्वयं अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 22.1.76

"तुम जानते हो हमको इस दुनिया को पवित्र बनाना है। योग में रहकर शान्ति और सुख का दान देना है। इसलिए बाबा कहते हैं रात्रि को उठकर योग में बैठो, सृष्टि को योग का दान दो। सवेरे उठकर अशरीरी होकर बैठो, तो तुम भारत को, बल्कि सारी सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो और फिर चक्र का सुमिरन करने से तुम सुख का दान देते हो। सुख होता है धन से।" सा.बाबा 7.1.02 रिवा.

"गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।"

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

"दान पात्र को ही देना चाहिए... भीख मांगने वालों को देना, वह भी कोई दान नहीं है। उन्हों का तो यह धन्धा है। गरीबों को दान करने वाला अच्छा पद पाते हैं।"

सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

"लौकिक जीवन में सदा जो भी नामीग्रामी अच्छे कुल वाली आत्मायें होती हैं वह सदा अपने जीवन के लिए दान पुण्य करने का लक्ष्य रखती हैं। आप सभी सबसे बड़े ते बड़े कुल, श्रेष्ठ कुल के हो। तो श्रेष्ठ कुल वाली ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् सर्व खजानों से सम्पन्न आत्मायें।"

अ.बापदादा 14.5.83

"दाता के बच्चे बन सबके प्रति स्नेह सहयोग, शक्ति देने वाले पुण्य आत्मा होंगे। पुण्य आत्मा कभी भी अपने पुण्य के बदले प्रशंसा लेने की कामना नहीं रखते। क्योंकि पुण्य आत्मा जानते हैं कि यह हद की प्रशंसा को स्वीकार करना सदाकाल की प्राप्ति से वंचित होना है।"

अ.बापदादा 14.5.83

"अपने भाग्य को सदा सामने रखते हुए समर्थ आत्मा बन सेवा में समर्थी लाते रहो। यही बड़ा पुण्य है। जो स्वयं को प्राप्ति हुई है वह औरों को भी कराओ। खजानों को बांटने से खज़ाना और ही बढ़ेगा ऐसे शुभ संकल्प रखने वाली आत्मा हो ना!" अ.बापदादा 11.1.83

"चात्रक, पात्र को परखने की भी बुद्धि चाहिए। जो समझने वाला होगा, उसका चेहरा ही बदल जायेगा। ... किसको भी बहुत प्रेम से समझाना है। ... दान भी हमेशा पात्र को किया जाता है। पात्र तुमको कहाँ मिलेंगे ? शिव के, लक्ष्मी-नारायण के, राम-सीता के मन्दिरों में।"

सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

"अभी तुमको अविनाशी ज्ञान धन मिला है, वह धारण कर फिर दान करना है। यह है सोर्स ऑफ इन्कम। ... जैसे बाप कल्याणकारी है, वैसे तुम बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है, सबको रास्ता बताना है। ... भगवान की ही श्रेष्ठ मत है।" सा.बाबा 22.8.05 रिवा.

"निर्बल को शक्तिवान बनाना - यही श्रेष्ठ दान है वा सहयोग है।... देने में लग जाओ तो लेना स्वत: ही सम्पन्न हो जायेगा क्योंकि बाप ने सभी को सबकुछ दे दिया है।"

अ.बापदादा 9.01.93

"अपने से पूछना है - हमसे कोई पाप तो नहीं होता है, हम पुण्य का काम करते हैं, हम अन्धों की लाठी बने हैं ?" सा.बाबा 14.4.06 रिवा.

"सदा पुण्य का खाता जमा करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... तो पुण्यात्मा हो और सदा ही पुण्यात्मा बन औरों को भी पुण्य का रास्ता बताने वाले। यह पुण्य का खाता अनेक जन्म साथ रहेगा।" अ.बापदादा 27.3.88

"बच्चों को श्रीमत पर पुरुषार्थ करना है, अपनी मत पर चलने से अपने को धोखा देते हैं। ... तुमको क्षीरसागर तरफ जाना है तो विषय सागर तरफ दिल नहीं रहनी चाहिए। जो ज्ञान नहीं लेते, उनके पिछाड़ी पड़कर अपना टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। ... ऐसे थोड़ेही तुमको गरीबों को दान देना है। गरीबों को तो वे लोग दान देते हैं। गरीब तो ढेर हैं।"

सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

"यज्ञ में समर्पण भी सम्भाल कर करना होता है। ऐसा न हो जो यज्ञ में आकर ऊधम मचावे। ... जिस ईश्वरीय यज्ञ से हम अपना शरीर निर्वाह करते हैं, उसका पैसा किसको देना बड़ा पाप है। ये पैसे हैं ही उनके लिए जो कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं, ईश्वरीय सर्विस में हैं। ... गरीबों आदि को देते, उतरते-उतरते पापात्मा ही बनते गये।" सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

"एक है दान करना और दूसरा है पुण्य करना। दान से भी पुण्य का ज्यादा महत्व है। पुण्य कर्म निस्वार्थ सेवाभाव का कर्म है। पुण्य कर्म में दिखावा नहीं होता है लेकिन दिल से होता है।

दान दिखावा से भी होता है और दिल से भी होता है। पुण्य कर्म अर्थात् आवश्यकता के समय किसी आत्मा के सहयोगी बनना।" अ.बापदादा 10.4.91

"तुम्हारे दर पर कोई भी आये, उसको ऐसी भिक्षा दो, जो उसको एकदम विश्व का मालिक बना दो। तुम्हारे पास अथाह धन है। ... तुम्हारे में साहूकार वह है, जिसके बुद्धि में बहुत ज्ञान-रत्न हैं।... बाबा तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भर रहे हैं।"

सा.बाबा 9.6.06 रिवा.

श्रीमत और दानी, महादानी एवं वरदानी

बाबा ने दानी स्थिति, महादानी स्थिति और वरदानी स्थिति का राज़ समझाया है क्योंकि इन पर हमारे भविष्य जीवन का आधार है और उस स्थिति को धारण करने के लिए श्रीमत भी दी है और विधि-विधान भी बताया है और दानी, महादानी और वरदानी बनकर अपने भाग्य को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा दी है।

"भक्ति मार्ग में "महादानी" किसको कहा जाता है ? जो स्वयं के प्रति नहीं बल्कि हर वस्तु, हर समय अन्य को दान-पुण्य करने में लगावे, उसको महादानी कहा जाता है। वरना तो दानी कहा जाता। जो अविनाशी दान करता ही रहे, सदा दान चलता ही रहे, उसको महादानी कहा जाता है।" अ.बापदादा 22.1.76

"ऐसी वरदानी जीवन ड्रामा अनुसार आप विशेष आत्माओं को स्वत: प्राप्त है। ऐसी वरदानी जीवन सर्व को वरदान, महादान देने में लगा रहे हो ? स्वत: प्राप्त हुए वरदान की लकीर श्रेष्ठ कर्म की कलम द्वारा जितनी बड़ी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो।"

अ.बापदादा 27.3.83

"तुमको ज्ञान धन का दान तो जरूर करना चाहिए। धन दिये धन ना खुटे। ... शिवबाबा तुमको पढ़ाकर ऐसा बनाते हैं। शिवबाबा के पास तो हैं ही अविनाशी ज्ञान रत्न। ... तुम बच्चों को तो नशा रहना चाहिए, उदारचित्त भी होना चाहिए।" सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

"चाहे ब्राह्मण आत्मा हो या साधारण आत्मा हो लेकिन जिसके भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ, उन आत्माओं को मास्टर दाता द्वारा प्राप्ति का अनुभव हो।" अ.बापदादा 31.12.90

"जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, उनको गिफ्ट जरूर दो। खाली हाथ नहीं भेजो। आप मास्टर दाता हो। मास्टर दाता के पास आये और खाली हाथ जाये, यह नहीं हो। अखण्ड महादानी बनो। अखण्ड कह रहे हैं। कोई न कोई सेवा करते रहो। चाहे मन्सा करो, चाहे वाणी

करो, चाहे कर्म से करो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से करो।" अ.बापदादा 31.12.05

"सदा हर दिन, हर समय महादानी और वरदानी बनना है। तो यह वर्ष महादानी-वरदानी वर्ष मनाओ। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, उस आत्मा महादानी बन कोई न कोई शक्ति का, ज्ञान का, गुण का दान देना ही है। तीनों खज़ाने भरपूर हो गये हैं।"

अ.बापदादा 31.12.93

"जो भी आत्मा सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, उसको अपनी स्थिति के वायुमण्डल द्वारा और अपने वृत्ति के वायब्रेशन द्वारा सहयोग देना अर्थात् वरदान देना। ... क्रोधी आत्मा परवश है, रहम के शीतल जल द्वारा वरदान दो। ... तो महादानी-वरदानी बनो।"

अ.बापदादा 31.12.93

"चारो ही सब्जेक्ट में नवीनता, स्व की प्रगति में नवीनता, विधि में नवीनता, प्रयोग में नवीनता, औरों को सहज योगी बनाने में और परसेन्टेज बढ़ाना माना नवीनता। ... तो इस वर्ष महादानी-वरदानी मूर्त स्वयं के प्रति भी और सर्व के प्रति भी बनो और हर रोज कोई न कोई नवीनता अर्थात् प्रोग्रेस अवश्य करो।" अ.बापदादा 31.12.93

"आप संगमयुग पर अविनाशी खज़ानों के महादानी बनते हो... मन्सा द्वारा शक्तियों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान का दान, कर्म द्वारा गुणों का दान।... ये दिव्य गुण सबसे श्रेष्ठ प्रभु प्रसाद है। इस प्रसाद को खूब बांटो। ... यह प्रैक्टिस निरन्तर स्मृति में रखो कि मैं दाता का बच्चा अखण्ड महादानी आत्मा हूँ।" अ.बापदादा 2.12.93

"जिस आत्मा को जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस आत्मा को मन्सा द्वारा अर्थात शुद्ध वृत्ति, वायब्रेशन्स द्वारा सहयोग दो, कर्म द्वारा सदा स्वयं जीवन में गुणमूर्त बन, प्रत्यक्ष सेम्पल बन औरों को सहज गुण धारण करने का सहयोग दो। इसको कहा जाता है गुण दान। दान का अर्थ है सहयोग देना।" अ.बापदादा 2.12.93

"बापदादा ने संगमयुग पर सभी बच्चों को "अटल-अखण्ड भव" का वरदान दिया है लेकिन वरदान को जीवन में सदा धारण करने में नम्बरवार बन गये हैं। नम्बरवन बनने के लिए सबसे सहज विधि है - अखण्ड महादानी बनो।... दाता के बच्चे हो, सर्व खज़ानों से सम्पन्न श्रेष्ठ आत्मायें हो। सम्पन्न की निशानी है - अखण्ड महादानी।" अ.बापदादा 2.12.93

"राज़ी रहने वाले बच्चों की निशानी - सदा दाता राज़ी है, इसलिए ऐसी आत्मायें सदा अपने को ज्ञान के खज़ाने, शक्तियों के खज़ाने, गुणों के खज़ाने, सब खज़ानों से अपने को भरपूर अनुभव करेंगी। कभी भी अपने को खज़ानों से खाली नहीं समझेंगी। वह कोई भी गुण वा ज्ञान के गुह्य राज़ से वंचित नहीं होगी।" अ.बापदादा 19.11.89

श्रीमत और देखना, सुनना, पठन-पाठन

मनुष्य के देखने, सुनने, पठन-पाठन का भी जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव होता है, जो उसके भविष्य के कर्म-संस्कार, स्मृति को प्रभावित करते हैं, जिसके फल स्वरूप उसका भविष्य का जीवन प्रभावित होता है। इन सबके विषय में बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने तो कहा है - तुमको एक बाप से ही सुनना है, वह जो पढ़ाता, वही पढ़ना है। यदि किसी सर्विस अर्थ आवश्यकता है तो ही अन्य कुछ पढ़ना, सुनना है। यदि कोई इस भावना से पढ़ता, सुनता है कि वह बहुत अच्छा ज्ञान देता है, बहुत अच्छी बात सुनाता है तो यह भी व्यभिचारीपना है। वास्तव में परमात्मा ने हमको जो सुनाया है, उससे अच्छा दुनिया का कोई भी व्यक्ति सुना नहीं सकता। दुनिया में सभी मनुष्य उतरती कला वाले हैं तो वे जो कुछ भी सुनायेंगे, वह उतरती कला का ही होगा। चढ़ती कला का ज्ञान तो एक परमात्मा ही देता है।

जब किसी व्यक्ति को निश्चय हो जाता है कि अमुख महात्मा या संस्था का साहित्य बहुत अच्छा है, उससे अच्छी बातें सीखने को मिलती है और उन्नति होती है तो उसमें रुचि हो जाती है और उसमें इतना लगाव हो जाता है जो बाबा की मुरली की भी परवाह नहीं करते, मुरली को छोड़ देंगे परन्तु उसका साहित्य अवश्य पढ़ेंगे। परन्तु ये अटल सत्य है कि दुनिया में कोई भी व्यक्ति या उसके द्वारा दिया ज्ञान या उसकी मत चढ़ती का आधार न ही है और न ही हो सकता है तथा न ही किसी व्यक्ति या संस्था का साहित्य चढ़ती कला में ले जा सकता है। मानव जीवन की सफलता और चढ़ती कला का आधार एक परमात्मा ही है और उसके द्वारा दी गई मत ही यथार्थ है, उस मत को ही श्रीमत कहा जाता है।

बाबा ने कहा है - मामेकम् याद करो परन्तु जो जिसका साहित्य पढ़ता है, जिन दृष्यों को देखता है, जिसका प्रवचन सुनता है, उसकी यथार्थता को विचार करें तो सूक्ष्म में उस व्यक्ति की याद अवश्य रहती है और जब किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु की याद है तो वहाँ परमात्मा की याद कैसे हो सकती है - यह विचारणीय तथ्य है।

कभी-कभी कोई दूसरों का साहित्य इसलिए पढ़ते कि उसके प्रवचनों में विशेषता है और उस विशेषता को अपने भाषणों में कापी करते हैं परन्तु परमात्मा के महावाक्य हैं कि यह जैसे परमात्मा को भूलकर पतितों को कापी करते हैं। जिनको अपने स्वमान, अपने ज्ञान का, परमात्मा के महावाक्यों का महत्व नहीं है, वे ही ऐसा कापी करने का प्रयत्न करते हैं।

“समझकर उस ख़ुशी से समझाना चाहिए। परन्तु यह उमंग उनको आयेगा, जो तकदीरवान होंगे। दुनिया के मनुष्य तो रत्नों को भी पत्थर समझकर फेंक देंगे। ... अभी तुम डायरेक्ट ज्ञान सागर से सुनते हो तो फिर और कुछ भी सुनने की दरकार ही नहीं है।”

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

“तुमको दिल में यह आना चाहिए कि हम बेहद के बाप से पढ़ रहे हैं। ... यह बुद्धि में सदा याद रखो कि हम पढ़ रहे हैं। पढ़ाने वाला है शिवबाबा।” सा.बाबा 25.10.05 रिवा.

“अभी तुमको वह शास्त्र आदि नहीं पढ़ना है।... तुमको यहाँ आंखे बन्द करके नहीं बैठना चाहिए। तुम जानते हो - आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है।... अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे।” सा.बाबा 25.10.05 रिवा.

“बाप कहते हैं - अभी मैं जो सुनाता हूँ, वह सुनो। इन आंखों से और कुछ देखो नहीं। यह पुरानी दुनिया ही विनाश होनी है। ... पुरुषार्थ जरूर करना है। ड्रामा अनुसार कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है, वही करेंगे।” सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

“परमात्मा ज्ञान का सागर है, ज्ञान की अथॉरिटी है ... कैसे भगवान आकर ब्रह्मा द्वारा सब शास्त्रों का सार हमको सुनाते हैं। बच्चों को अथाह ख़ुशी होनी चाहिए।... सारा मदार पढ़ाई पर है। जितना पढ़ेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।” सा.बाबा 18.8.06 रिवा.

श्रीमत और संकल्प, बोल एवं कर्म / श्रीमत और प्रतिज्ञा एवं प्रतिज्ञा की दृढ़ता

बाबा ने कहा है बच्चे तुम परमात्मा के बच्चे हो, जो प्यार का सागर है तो तुमको भी मास्टर प्यार का सागर बनना है। हमारा संकल्प, बोल और कर्म कैसा हो, उसके लिए भी बाबा श्रीमत दी है। बाबा ने श्रीमत दी है - तुम्हारे संकल्प सदा शुभ और समर्थ हों, जिससे सर्वात्माओं का कल्याण हो। तुम्हारी वाचा भी बहुत मीठी होनी चाहिए, सुखदायी होनी चाहिए। तुम्हारे मुख से कब भी दुख देने वाले बोल नहीं निकलने चाहिए, तुम्हारी बोली बड़ी मीठी होनी चाहिए। बाबा कहते - तुम रूप-बसन्त हो, तुम्हारे मुख से सदैव रतन निकलने चाहिए। यदि तुम्हारे मुख से पत्थर निकलते हैं तो तुम ईश्वरीय सन्तान कहलाने के अधिकारी नहीं हो। जब संकल्प और बोल शुभ होंगे तो कर्म भी अवश्य ही शुभ होंगे।

“मन्सा, वाचा, कर्मणा कैसे चलते हैं। बाबा हर एक की चलन से समझ जाते हैं। ... बच्चों की

चलन तो बड़ी फर्स्टक्लास होनी चाहिए। मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए।”

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

“बाप कहते हैं - तुम आत्मा रूप-बसन्त बनते हो। तुम्हारे मुख से सदैव रतन ही निकलने चाहिए। अगर पत्थर निकलते हैं तो गोया आसुरी बुद्धि ठहरे।”

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

“ब्रह्मा द्वारा स्थापना, फिर शंकर द्वारा विनाश और फिर पालना... अक्षर भी कायदे सिर बोलने चाहिए। बच्चों की बुद्धि में यह नशा है। ज्ञान है - यह सृष्टि का चक्र कैसे चलता है।”

सा.बाबा 21.9.05 रिवा.

“बापदादा तो मास्टर शिक्षकों को बहुत श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं, वैसे तो सर्व ब्राह्मण श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हैं लेकिन जो मास्टर शिक्षक बन अपने दिल व जान, सिक व प्रेम से दिन रात सच्चे सेवक बन सेवा करते हैं वे विशेष में विशेष और विशेष में भी विशेष हैं। इतना अपना स्वमान सदा स्मृति में रखते हुए संकल्प, बोल और कर्म में आओ।” अ.बापदादा 21.1.83

“वाणी की शक्ति व्यर्थ जाने के कारण वाणी में जो बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर वा शक्ति अनुभव करानी चाहिए, वह कम होता है। ... जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - फरिश्तों के बोल थे। कम बोल, मधुर बोल। जिस बोल का फल निकले, वह है यथार्थ बोल।”

अ.बापदादा 31.3.88

“जैसे याद से मन्सा शक्ति जमा करते हो, साइलेन्स में बैठते हो तो संकल्प-शक्ति जमा करते हो, ऐसे वाणी की शक्ति भी जमा करो। ... इस वर्ष वाचा और कर्मणा - इन दोनों शक्तियों को जमा करने की स्कीम बनाओ। ... जमा करने का साधन है - कम बोलो, मीठा बोलो, स्वमान से बोलो।” अ.बापदादा 31.3.88

“बापदादा के दिल की यही श्रेष्ठ आशा है कि बच्चे बाप समान बनें।... लेकिन बाप के दिल की आश पूर्ण करने वाले कौन, जो बाप ने सुनाया, उसको कर्म में कहाँ तक लाया ? मन्सा-वाचा-कर्मणा ... मन्सा शक्ति का दर्पण क्या है ? बोल और कर्म दर्पण हैं। जिनकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ है, उनकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली वा शुद्ध होगी, शुभ भावना वाली होगी।” अ.बापदादा 31.3.88

“बोल ऐसे हों जो उनको सुनने वाले चात्रक हों कि ये बोलें और हम सुनें। इनको कहा जाता है - अनमोल महावाक्य। महावाक्य ज्यादा नहीं होते ... स्वयं और दूसरों के लिए लाभदायक हैं, वही बोल बोलो।” अ.बापदादा 14.1.90

“रमणीकता का गुण अच्छा माना जाता है लेकिन व्यक्ति, समय, संगठन, स्थान, वायुमण्डल

के प्रमाण रमणीकता अच्छी लगती है। ... स्वयं और दूसरों के लिए लाभदायक हैं, वही बोल बोलो।" अ.बापदादा 14.1.90

"आज का पाठ ये दे रहे हैं - व्यर्थ बोल या किसी को भी डिस्टर्व करने वाले बोल से अपने को मुक्त करो। फिर देखो अव्यक्त फरिश्ता बनने में आपको बहुत मदद मिलेगी। ... अपने बोल की वेल्यू रखो।... ये तो पागल है ... ये किसको श्राप देते हो। किसको श्रापित नहीं करो, सबको सुख दो।... दूसरे को नहीं देखो, अपने को देखो - मैंने बाप की श्रीमत को कितना अपनाया है।" अ.बापदादा 13.12.95

"बहुत व्यर्थ वा मज़ाक के बोल बोलते हैं ... जिसको आप मज़ाक समझते हो लेकिन दूसरे की स्थिति डगमग हो जाती है। तो वह मज़ाक हुआ या दुख देना हुआ ?"

अ.बापदादा 13.12.95

"प्रतिज्ञा का अर्थ ही है कि शरीर चला जाये लेकिन जो प्रतिज्ञा की है, वह प्रतिज्ञा नहीं जाये। ... स्वयं से प्रतिज्ञा करो कि "कभी भी किसी की कमजोरी वा कमी को नहीं देखेंगे, किसी की कमजोरी-कमी को नहीं सुनेंगे और न बोलेंगे" ।" अ.बापदादा 31.12.94

"हर एक के बोल की ऑटोमेटिक टेप भरती जाती है और जिस घड़ी जिसकी बापदादा सुनना चाहे वह सुन सकते हैं। ... तो बोल को भी चेक करो। समर्थ बोल का अर्थ ही है - जिस बोल में किसी आत्मा को प्राप्ति का भाव वा सार हो। ... स्वयं भी समय के महत्व को सदा सामने रखो।" अ.बापदादा 14.12.94

"किसी भी विधि से कमजोरी को मिटाना ही है - यह दृढ़ संकल्प करो। ... स्वयं पर और समय पर कोई भरोसा नहीं है। ... "अब नहीं तो कब नहीं" अर्थात् जो करना सो अभी करना है।" अ.बापदादा 9.3.94 पार्टी 1

"सेल्फ-प्रोग्रेस के लिए स्प्रीचुअल बजट बनाओ अर्थात् बचत की स्कीम बनाओ।... समय, बोल, संकल्प और इनर्जी को बचाओ और वेस्ट से बेस्ट में चेन्ज करो।"

अ.बापदादा 22.1.90

सेवा

श्रीमत और ईश्वरीय सेवा / श्रीमत और मन्सा, वाचा, कर्मणा सेवा

"अभी कम्बाइण्ड सेवा करो। सिर्फ आवाज़ से नहीं लेकिन आवाज़ के साथ अनुभवी मूर्त बन अनुभव कराने की भी सेवा करो। शान्ति का, खुशी का, आत्मिक प्यार ... कोई न कोई अनुभव अवश्य कराओ।" अ.बापदादा 3.02.06

"सर्व खज़ानों से भरपूर आत्मायें ही औरों को दे सकेंगी। अगर ज्ञान का खज़ाना है तो फुल ज्ञान हो, कोई भी कमी नहीं हो तब कहेंगे भरपूर। ... विश्व-कल्याणकारी आत्मायें सदा हर समय चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में हर समय सेवा में बिज़ी रहती हैं।" अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 1

यथार्थ ईश्वरीय सेवा अर्थात् अपनी दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, वातावरण, सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को उनके आत्मिक स्वरूप की अनुभूति करा देना, जिससे वे परमानन्द का अनुभव करें क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। यथार्थ ईश्वरीय सेवा वही आत्मा कर सकती है, जो स्वयं आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी। बाबा ने भी कहा है - जो स्वयं अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगा, वही दूसरों को भी उनके आत्मिक स्वरूप की अनुभूति करा सकेगा। इसलिए बाबा सदैव श्रीमत देते हैं अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की मेहनत करो। सेवा ब्राह्मण जीवन स्वभाविक कर्म है और ईश्वरीय पढ़ाई का मुख्य विषय है। ईश्वरीय सेवा में ज्ञान-सेवा, मन्सा-सेवा, यज्ञ-सेवा, मन-मन-धन से सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क से सेवा सब समाये हुए हैं। हर प्रकार की सेवा की सफलता के लिए बाबा ने अलग-अलग श्रीमत दी है परन्तु हर प्रकार की सेवा की सफलता अपनी योगयुक्त स्थिति से ही है, इसलिए हर सेवा के लिए बाबा ने कहा है कि कोई भी सेवा करते हुए तुम्हारी स्थिति योगयुक्त हो।

जीवात्मा मन्सा, वाचा, कर्मणा से जो भी कर्म करता है, उससे आत्माओं का पाप या पुण्य अवश्य बनता है। हमारे द्वारा मन्सा, वाचा, कर्मणा सदा श्रेष्ठ कर्म होता रहे, जिससे हमारा भी कल्याण हो और दूसरों का भी कल्याण हो, उसके लिए बाबा ने तीनों के विषय में श्रीमत दी है।

"सेवाभाव अर्थात् सदा हर एक आत्मा के प्रति शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भाव। सेवा भाव अर्थात् हर आत्मा को भावना प्रमाण फल देना।... ऐसी सेवा में तपस्या सदा साथ है। तपस्या

का अर्थ सुनाया - दृढ़ संकल्प से कोई भी कार्य करना।… "त्याग-तपस्या-सेवा" इन तीनों का कम्बाइण्ड रूप सच्ची सेवा है। … अनुभूति कराना अर्थात् बाप से सम्बन्ध जुड़वाना, शक्तिशाली बनाना - यह है सच्ची सेवा।" अ.बापदादा 9.4.86

"सच्चे सेवाधारी की निशानी है - त्याग अर्थात् नम्रता और तपस्या अर्थात् एक बाप के निश्चय और नशे में दृढ़ता। … सेवा का विशेष गुण सन्तुष्टता है। जहाँ सन्तुष्टता नहीं, चाहे स्वयं से, चाहे सम्पर्क वालों से, वह सेवा न स्वयं को फल की प्राप्ति करायेगी, न दूसरों को।"

अ.बापदादा 9.4.86

"तपस्या अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न बन दृढ़ स्थिति, दृढ़ संकल्प द्वारा विश्व की सेवा करना। सिर्फ वाणी की सेवा, सेवा नहीं है। जैसे सुख-शान्ति-पवित्रता का आपस में सम्बन्ध है ऐसे त्याग-तपस्या-सेवा का सम्बन्ध है। … इस वर्ष ऐसी सच्ची सेवा का सबूत दे सपूत की लिस्ट में आने का गोल्डन चान्स दे रहे हैं।" अ.बापदादा 9.4.86

"सिर्फ अपने लिए तो नहीं सोचना है ना! बेहद के बाप के बच्चे आप भी बेहद के हो। तो सबका सोचेंगे ना, क्योंकि इस समय बापदादा के साथ आप सभी की भी जिम्मेवारी है। बाप है करावनहार लेकिन करने के निमित्त तो आप हो ना!" अ.बापदादा 31.12.89

"चेक करो - मन्सा में, वाणी में, कर्म में क्या नवीनता लाई है और सेवा-सम्पर्क में क्या नवीनता लाई है? … ऐसे सब बातों का चार्ट चेक करो। नवीनता अर्थात् विशेषता।"

अ.बापदादा 31.12.89

"एक घण्टा किसको समझाने… 15 मिनट में सुनते हुए, बोलते हुए न्यारेपन की स्थिति में स्थित होकर न्यारेपन की स्थिति का वायब्रेशन देकर देखो। जो 15 मिनट में सफलता होगी, वह एक घण्टे में नहीं होगी। ब्रह्मा बाप ने ये प्रैक्टिस करके दिखाई।"

अ.बापदादा 29.12.89

"पहले निमित्त तो टीचर्स हैं। फॉलो फादर करेंगी ना … रुहानी वायब्रेशन, अशरीरीपन की स्थिति के वायब्रेशन, न्यारे और प्यारेपन के शक्तिशाली वायब्रेशन वायुमण्डल में फैलाओ। सेवा में तीव्रगति का साधन भी यही है।" अ.बापदादा 29.12.89

"वाणी से प्रजा बनती है लेकिन ईश्वरीय स्नेह और शक्ति से वारिस बनते हैं। अभी वे वारिस बनाने हैं। … वाणी से किसी को पानी-पानी नहीं कर सकते लेकिन स्नेह और शक्ति से एक सेकण्ड में स्वाहा कर सकते हो।" अ.बापदादा 20.12.69

"उड़ती कला वालों की विशेषता अर्थात् हर समय हर आत्मा के प्रति स्वत: ही शुभ-भावना और शुभ-कामना के शुद्ध वायब्रेशन अपने को और दूसरों को भी अनुभव हों। … ऐसे हर

समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वत: ही होनी चाहिए।" अ.बापदादा 31.12.89

"वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। ... वाणी की इनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।... यह अभ्यास जादू का मन्त्र हो जायेगा।" अ.बापदादा 31.12.89

"जब मन्सा में सदा शुभ-भावना वा शुभ-दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो आपकी मन्सा बिजी हो जायेगी, जिससे मन्सा में जो हलचल होती है, उससे स्वत: ही किनारे हो जायेंगे। ... कब दिलशिकस्त नहीं होंगे।" अ.बापदादा 31.12.89

"क्वालिटी की सेवा के लिए उन्होंको निमित्त बनाने के लिए, उनकी बुद्धि को टच करने के लिए अपनी मन्सा बहुत शक्तिशाली चाहिए। आज की क्वालिटी वाली आत्मायें वाणी में तो पहले ही होशियार होती हैं लेकिन अनुभूति में कमजोर होती हैं... जो जिस बात में कमजोर होते हैं, उसको उसी कमजोरी का ही तीर लग सकता है।... अनुभव करें - परमात्म-आशीर्वाद से इन्हों की जीवन है - यह अनुभूति करानी है।" अ.बापदादा 31.12.89

"श्रीमत जो कहती है, उसमें गफलत न करो। बाप का डायरेक्शन मिलता है कि सबको मैसेज पहुँचाओ। ... बाप का मैसेज मिलना तो सबको है। मैसेज है बहुत सहज। सिर्फ बोलो - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और कर्मेन्द्रियों से भी मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई बुरा काम नहीं करना है।" सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं तुमको ऐसा लक्ष्मी-नारायण बनाता हूँ तो तुम्हें भी औरों पर रहम दिल बनना चाहिए। अपने पर भी कल्याण तब करेंगे जब तुम दूसरों का कल्याण करेंगे।"

सा.बाबा 6.9.05 रिवा.

"बाप के साथ सर्विस में मददगार बनना है। अन्धों की लाठी बनना है। जितना जास्ती बनेंगे, उतना अपना ही कल्याण होगा।" सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"पहले स्व को निर्विघ्न बनाना और फिर औरों को भी निर्विघ्न बनाना है। ... अगर बहुत समय विघ्नों के वश होते रहेंगे तो अन्त में निर्विघ्न नहीं रहेंगे। ... परिचय देना, कोर्स कराना यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आत्माओं को शक्तिशाली बनाना - यह है सच्ची सेवा।"

अ.बापदादा 21.12.89 पार्टी 2

"अलौकिक कर्म वा ईश्वरीय सेवा कब भी स्थिति से नीचे लाने के निमित्त नहीं बन सकते। अगर कोई को ऐसे अनुभव होता है कि अलौकिक कर्म के कारण नीचे आते हैं तो इसका अर्थ है कि उस आत्मा को अलौकिक कर्म करने की कला नहीं आती। ... हर कर्म को न्यारे और प्यारे रहने की कला में करें।" अ.बापदादा 12.11.72

"सबको ये बातें समझानी चाहिए। भल यह जानते हैं कि सभी बन्दरबुद्धि हैं परन्तु मन्दिर लायक बनने वाले भी हैं ना।... तुम सेकण्ड में किसको भी स्वर्गवासी बना सकते हो।"

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

"बच्चों को कितनी अच्छी सर्विस करनी चाहिए। इन लक्ष्मी-नारायण ने यह सर्विस की है ना।... अन्दर में कितना नशा रहना चाहिए। हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप कहते हैं - सबको मेरा परिचय देते रहो। सर्विस से ही शोभा पायेंगे और बाप की दिल पर चढ़ेंगे।"

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

"त्याग और सेवा। सभी से बड़ा बलिदान कौनसा है और सभी से बड़ा त्याग कौनसा है? दूसरों के अवगुणों को त्याग करना है, सबसे बड़ा त्याग। ... एक सेकण्ड में किसको मरजीवा बना देना है सबसे बड़ा बलिदान (सेवा) है।" अ.बापदादा 16.6.69

"हर एक बच्चे का हक है जीवनमुक्ति। तो बच्चों की बुद्धि चलनी चाहिए कि सबको जीवनबन्ध से जीवनमुक्ति में कैसे ले जायें। ... सर्विस का भी शौक चाहिए।"

सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

"सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है। ... निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी - ये तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं।"

अ.बापदादा 1.03.86

"जितना अपना उद्धार करेंगे, उतना औरों का भी उद्धार कर सकेंगे और जितना औरों का उद्धार करेंगे, उतना अपना भी उद्धार करेंगे। अपना ही उद्धार न करेंगे तो औरों का उद्धार कैसे करेंगे।" अ.बापदादा 6.8.70

"अभी-अभी पुरुषार्थ और अभी-अभी प्राप्ति। जब स्वयं प्राप्ति स्वरूप बनेंगे तब अनेक आत्माओं को प्राप्ति करा सकेंगे। अगर स्वयं प्राप्ति स्वरूप नहीं होंगे तो अन्य को कैसे प्राप्ति करा सकेंगे।" अ.बापदादा 6.8.70

"सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता है संगमयुग की डिग्री और दैवी पद है भविष्य की प्रालब्ध। ... जो जितना क्वालीफाइड होगा, वह उतना ही औरों को क्वालीफाइड बनायेगा। ... यहाँ की मुख्य क्वालिटीज में एक तो कहाँ तक नॉलेजफुल बने हैं। नॉलेज के साथ फेथफुल, सक्सेसफुल, पॉवरफुल और सर्विसएबुल कहाँ तक बने हैं।... नॉलेजफुल अर्थात् बुद्धि में फुल नॉलेज की धारणा। जितना नॉलेजफुल होगा, उतना ही वह सक्सेसफुल होगा।"

अ.बापदादा 11.7.70

"आगे चलकर ऐसी सर्विस होगी जिसमें दूरांदेशी बुद्धि और निर्णय शक्ति बहुत चाहिए।

इसलिए ड्रिल करा रहे हैं। ... इस बुद्धि की ड्रिल से बुद्धि शक्तिशाली होगी।"

अ.बापदादा 25.6.70

"सर्विस में सफलता पाने के लिए दो बातें ध्यान में रखना है - एक है निशाना पूरा और दूसरा नशा भी पूरा हो।... अगर अपनी स्थिति का निशाना और दूसरे की सर्विस करने का भी निशाना ठीक होगा और साथ-साथ नशा भी सदैव एकरस रहता होगा तो सर्विस में सफलता ज्यादा पा सकते हो।" अ.बापदादा 2.2.70

"कभी दिल शिकस्त नहीं होना। आज थोड़े हैं, कल ज्यादा होने ही हैं - यह निश्चित है। जहाँ बाप का परिचय मिला है, बाप के बच्चे निमित्त बने हैं, वहाँ अवश्य बाप के बच्चे छिपे हुए हैं। जो समय प्रमाण अपना हक लेने के लिए पहुँच रहे हैं और पहुँचते रहेंगे।"

अ.बापदादा 13.3.86

"सेवा की भावना रखेंगे तो कब तंग नहीं होंगे और अति पापात्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले पर भी नफरत-घृणा, निरादर की भावना नहीं आयेगी लेकिन तरस की भावना आयेगी। जितना होपलेस केस की सेवा करेंगे, उतने ही प्राइज के अधिकारी होंगे।"

अ.बापदादा 31.12.70

"सभी बच्चे अपनी शक्ति प्रमाण सेवा के उमंग में सदा रहते हैं। सेवा ब्राह्मण जीवन का विशेष आक्यूपेशन है। सेवा के बिना यह ब्राह्मण जीवन खाली लगती है। सेवा में बिजी रहने का उमंग देख बापदादा विशेष खुश होते हैं।" अ.बापदादा 13.3.86

"स्नेह भाषा को भी नहीं देखता। स्नेह की भाषा सभी भाषाओं से श्रेष्ठ है। ... सेवा पुण्यात्मा बनाती है। पुण्यात्मा ही पूज्य आत्मा बनती है। अभी पुण्यात्मा नहीं तो भविष्य में पूज्य आत्मा नहीं बन सकते। पुण्यात्मा बनना भी जरूरी है।" अ.बापदादा 27.3.86

"तीनों रूपों अर्थात नॉलेजफुल, पॉवरफुल, लवफुल और तीनों रीति अर्थात् मन्सा-वाचा-कर्मणा से एक ही समय सर्विस करना है। तीनों रूपों से तो सर्विस करनी ही है लेकिन तीनों रीति से भी करनी है। ... जिससे वे स्वयं महसूस करें कि वास्तव में यह ही मेरा असली परिवार है। ... एक ही समय तीनों से इकट्ठी सर्विस हो तो सिद्धि जरूर मिलेगी।"

अ.बापदादा 2.8.73

"जो सर्विस के निमित्त बनते हैं, उनमें भी नॉलेज ज्यादा है और लव भी है लेकिन पॉवर कम है। पॉवरफुल स्टेज की निशानी क्या होगी - वे एक सेकेण्ड में कोई भी वायुमण्डल या वातावरण को माया की कोई भी समस्या को खत्म कर देंगे, वे कभी हार नहीं खायेंगे। ... विधि में कमी होने के कारण ही सिद्धि में कमी है।" अ.बापदादा 2.8.73

"तुम बच्चों को सर्विस करने के लिए उछल आनी चाहिए।... जैसे बाप वैसे बच्चों को बनना चाहिए। बाप का ही परिचय देना है।... सर्विस करने वाले कब भूख नहीं मर सकते।"

सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"अपनी सर्विस फर्स्ट, अपनी सर्विस की तो दूसरों की सर्विस स्वत: हो जाती है। दूसरों की सर्विस में लग जाने से समय और संकल्प ज्यादा खर्च कर लेते हो। इस कारण जो जमा होना चाहिए वह नहीं कर पाते। ...दान करने की खुशी रहती है लेकिन उसको स्वयं में समाने की शक्ति नहीं रहती। खुशी के साथ शक्ति भी चाहिए।" अ.बापदादा 10.5.72

"सेवा का उमंग-उत्साह स्वयं को भी निर्विघ्न बनाता है और दूसरों का भी कल्याण करता है। सेवाभाव में अगर अहम् भाव आ गया तो उसको सेवाभाव नहीं कहेंगे। सेवाभाव सफलता दिलाता है और अहम्-भाव मिक्स होने से मेहनत ज्यादा, समय ज्यादा, फिर भी स्वयं की सन्तुष्टि नहीं होती है।" अ.बापदादा 1.10.87

"साकार बाप के अनुभव का एग्जाम्पुल देखा, आत्माओं की सेवा के सिवाए रुक सके? सिवाए सेवा के कुछ और दिखाई देता था? ऐसे ही आत्माओं को सिद्धि प्राप्त कराने की लगन में मगन बनो।" अ.बापदादा 24.10.71

"बाप के खजाने को अपने अनुभव द्वारा, जो अपना बनाया, ऐसा अपना बनाया हुआ ज्ञान रतन एक-दो को देना चाहिए, जिससे वह आत्मा भी इससे सहज अनुभवी बन जाये।... रॉयल भिखारी कहो। ऐसे भिखारी आत्माओं को भिखारीपन से छुड़ाओ, यह है बेहद की सेवा।"

अ.बापदादा 18.10.71

"जब स्वयं मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभवी होंगे तब ही अन्य आत्माओं को मुक्ति अर्थात् अपने घर और जीवनमुक्ति अर्थात् स्वर्ग के गेट में जाने के पास दे सकेंगे। जब तक आप ब्राह्मण किसी भी आत्मा को गेट पास नहीं देंगे तो वह पास ही नहीं कर सकेंगे।"

अ.बापदादा 24.10.71

"अब हर श्वास, हर संकल्प, हर सेकेण्ड, हर कर्म, सर्व-शक्तियाँ, सर्व ईश्वरीय संस्कार, श्रेष्ठ स्वभाव व सर्व प्राप्त हुए खजाने विश्व की ही सेवा के प्रति हैं। ... रचना स्वयं के प्रति ही होती है, परन्तु रचयिता, रचना के प्रति होता है जो अभी ही मास्टर रचयिता नहीं बनते तो वह भविष्य में भी विश्व के मालिक नहीं बनते।" अ.बापदादा 27.5.74

"पहले-पहले आपकी सूरत से साक्षात्कार अधिक होते थे, देवी का रूप अनुभव करते थे। अभी स्पीकर लगते हो, नॉलेजफुल लगते हो लेकिन पॉवरफुल नहीं लगते हो। ... सबको फोर्स देने के निमित्त आत्मायें हो। उन्होंको अव्यक्त स्थिति में ऐसा चढ़ा दो जो इस धरती की

छोटी-छोटी बातों की आकर्षण उनको खींच न सकें।" अ.बापदादा 9.10.71

"जो स्वयं के भी संस्कारों से मजबूर हैं वे अन्य को उनकी मजबूरियों से स्वतन्त्र कर सकें, यह सदाकाल के लिए नहीं हो सकता। टेम्पेरी प्रभाव तो पड़ सकता है।"

अ.बापदादा 28.4.74

"यह ज्ञान सुनकर फिर औरों को सुनाना है। भल सर्विस तो और भी बहुत है परन्तु वह हुई स्थूल सर्विस। ... उसका भी फल अवश्य मिलता है। समझते हैं ज्ञानी तू आत्माओं की हम सर्विस करते हैं। ... बाकी यह जरूर है कि ज्ञानी तू आत्मा बाप को अति प्रिय लगते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरे प्रिय नहीं हैं।... बाप अविनाशी ज्ञान रतनों का दान देते हैं तो फिर औरों को दान देने की सर्विस करनी चाहिए। सिर्फ मम्मा-बाबा के पिछाड़ी नहीं पड़ना चाहिए। सर्विस पर लगना है तब बाबा राज़ी हो।... समझाने वाले में ही अगर कोई विकार होगा तो किसको तीर नहीं लगेगा। अगर किसको तीर लगता भी है तो वह शिवबाबा समझाते हैं। ... बाप कहते हैं - मुझे बच्चों का शो करना होता है। ऐसे नहीं कि उसका फल उनको मिलेगा। नहीं, बच्चों को अपनी मेहनत का फल मिलेगा।" सा.बाबा 23.1.02 रिवा.

"इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना चाहिए।... पुरानी दुनिया का विनाश न हो तो नई दुनिया कैसे बनेगी। ... यह ड्रामा कैसे शुरू होता है, कौन-कौन मुख्य एक्टर्स हैं, वह जानना चाहिए ना।" सा.बाबा 2.7.05 रिवा.

"बाप भी आये हैं खिदमत करने। पतितों को पावन बनाने की खिदमत करते हैं। ... तुम बच्चे ही सच्चे-सच्चे खुदाई खिदमतगार हो। बाबा सच्चा खुदाई खिदमतगार उसे कहते हैं, जो कम से कम आठ घण्टा आत्माभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते हैं। कोई कर्म-बन्धन न रहे तब खिदमतगार बन सकते हो।" सा.बाबा 19.7.05 रिवा.

"अगर फौरन फल नहीं निकलता है तो अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं। सभी फल फौरन नहीं मिलते हैं। कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से भी नहीं निकलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है।... कोई नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज का फल निकालेगी।" अ.बापदादा 11.7.71

"एक ही समय पर सर्व प्रकार की सेवा करो। मन्सा में शुभ भावना, वाणी में बाप से सम्बन्ध जुड़वाने की शुभ कामना के श्रेष्ठ बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में आने से स्नेह और शान्ति के स्वरूप से आकर्षित करो। ऐसे सर्व प्रकार की सेवा से सफलता को पायेंगे।"

अ.बापदादा 24.2.83

“वह है निराकारी-निर्विकारी दुनिया, इसको कहा जाता है साकारी विकारी दुनिया और सतयुग में यही निर्विकारी दुनिया बनती है। ... बच्चे, इन बातों को अच्छी रीति धारण कर औरों को भी समझाओ।” सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

“जब भी किसको समझाते हो तो बोलो - बाप कहते हैं तुम अशरीरी आये थे, अब अशरीरी बनकर जाना सतयुग में हैं निर्विकारी। सतयुग में रहने वाले देवताओं की तो बहुत महिमा है। ... सन्यासी, उदासी, गृहस्थी जिनका नाम होता है, जरूर उनका यह पहला जन्म है। हर आत्मा का पहला जन्म पवित्र होता है।” सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

“अपने से प्रण करना चाहिए कि सर्विस जरूर करनी है, फिर आदत पड़ जायेगी।... बोलो बाप तो है ही गरीब निवाज। हमारा फर्ज है - घर-घर में पैग़ाम देना।... तुम बच्चों को रात-दिन सर्विस में लग जाना चाहिए, नींद हराम कर देनी चाहिए।” सा.बाबा 25.11.05 रिवा.

“दुनिया में बहुत दुख बढ़ रहा है। आप आवाज़ नहीं सुनते हो ! बापदादा तो सुनता है। सभी बिल्कुल हिम्मतहीन, दिलशिकस्त हो गये हैं। जैसे साइन्स वाले... आप मन्सा सेवा बढ़ाओ। ... जितना मन्सा सेवा में बिजी रहेंगे, उतना समस्याओं से मुक्त हो जायेंगे क्योंकि आपका मन-बुद्धि बिजी रहेगी। ... समस्या हिम्मत नहीं रख सकती।” अ.बापदादा 28.3.06

“अभी तो एक ही समय पर तीन प्रकार की सेवा करनी है। मन्सा भी, वाणी भी और सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा अर्थात् चेहरे द्वारा भी। ... अच्छा सभी को सन्तुष्ट करने का पुण्य जमा कर लिया। सन्तुष्टता द्वारा बहुत पुण्य जमा होता है।” अ.बापदादा 25.2.06

“दधीचि ऋषि का मिसाल है। हड्डियां भी सर्विस में दे दीं। अपने शरीर का भी ख्याल न कर सारा दिन सर्विस में रहना... धन दान करते खुशी में नाचते रहेंगे।... जितना दान देंगे, उतना इकट्ठा होता जायेगा।” सा.बाबा 10.02.06 रिवा.

“योग्य सेवाधारी बनो। जब योग्य सेवाधारी नहीं बनते हो तब डरते हो कि कैसे होगा, चल सकेंगे या नहीं। योग्यता नहीं होती है तो डर लगता है। जो योग्य होता है, वह बेपरवाह बादशाह होता है। चाहे स्थूल योग्यता, चाहे ज्ञान की योग्यता मनुष्य को वेल्यूबुल बनाती है। ... योग्य बनना माना मेरा तो एक बाबा।” अ.बापदादा 27.11.89

“टीचर्स का काम ही है सेवा। टीचर्स का महत्व ही सेवा से है। अगर सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिखाई देता तो उनको योग्य टीचर की लिस्ट में गिनती नहीं किया जाता है।... मुख की सेवा तो करते रहते हो लेकिन मुख और मन के शुभ भावना की सेवा साथ-साथ हो।”

अ.बापदादा 27.11.89

“अभी से अपने मन-बुद्धि के सेवा की लाइन को चेक करो। ... टीचर्स औरों को सिखाती हैं

तो जरूर स्वयं भी जानती हैं तब तो सिखाती हैं ना। योग्य टीचर की विशेषता यह है कि जो निरन्तर चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सेवा में सदा बिजी रहे। तो और बातों से स्वत: ही खाली हो जायेंगे।"

अ.बापदादा 27.11.89

"फॉलो मदर-फादर। जैसे यह पुरुषार्थ करते हैं, तुम भी करो। ... अभी तुमको सारे चक्र का ज्ञान है, इसमें ही तत्पर रहो, औरों को समझाते रहो। इस सर्विस में ही लगे रहेंगे तो और कोई धन्धा आदि याद नहीं आयेगा।"

सा.बाबा 12.7.06 रिवा.

"वाचा का प्रभाव मन्सा पर भी पड़ता है और मन्सा वाचा को भी अपनी तरफ खींचती है।... लेकिन बोल के लिए अलबेलापन ज्यादा है, इसलिए बापदादा इस पर विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं। ... इसके लिए पहले भी बाबा ने कहा है - कम बोलो, धीरे बोलो और मधुर बोलो।"

अ.बापदादा 14.1.90

"सदा जीते रहो, उड़ते रहो और उड़ाते रहो - यह संकल्प सदा रहता है। ... सेवा और तन का बैलेन्स रखो। ... सभी के प्राण आपके शरीरों में हैं। तन ठीक है तो सेवा भी अच्छी होती जायेगी।"

अ.बापदादा 22.3.96 दादियों से

"आपकी मन-बुद्धि अभी एक बाप में एकाग्र हो गयी, इसलिए अभी आपकी बुद्धि जो निर्णय करेगी, वह बहुत यथार्थ करेगी। जिस समय जिसको जो करना चाहिए, वह टच होगा। ... मिनिस्टर की सीट पर नहीं लेकिन विश्व-कल्याण की सीट पर - इस वृत्ति-दृष्टि से कुछ समय सेवा करके देखो। बहुत अच्छे अनुभव करेंगे।"

अ.बापदादा 10.3.96 पार्टी

"सेवा भी एक खेल है। तो खेल में चाहे कोई गिरता है, कोई जीतता है लेकिन खेल में सदा खुशी होती है। यह सेवा भी संगमयुग का खेल है। ... स्व-पुरुषार्थ बढ़ाना। अभी आपको यही खेल करना है और औरों को खेल में अच्छे खिलाड़ी बनाना।"

अ.बापदादा 10.3.96 दादी जानकी के साथ

"बिल्कुल अपने को कर्मेन्द्रियों से न्यारा समझ कर्म कराना। ... बिना कर्म के वा सेवा के तो रह नहीं सकते हो और रहना भी नहीं है। ... सेवा में स्व-पुरुषार्थ का अटेन्शन ज्यादा चाहिए।"

अ.बापदादा 10.3.96

"कई बच्चे सेवा करते हैं लेकिन दिल और दिमाग़ दोनों मिलाकर नहीं करते। ... दिल से करने वाले के दिल बाप की याद भी सदा रहती है और सिर्फ दिमाग़ से करते हैं तो थोड़ा समय दिमाग़ में बाबा याद रहेगा, फिर भूल जायेगा और मैंपन आ जायेगा। इसलिए दिमाग़ और दिल दोनों का बैलेन्स रखो।"

अ.बापदादा 16.2.96

"सेवा करना अर्थात् उत्साह से उत्सव मनाना।... सेवा भी उत्सव है - इस विधि से सेवा करो।

स्वयं भी उत्साह में रहो, सेवा भी उत्साह से करो और अन्य आत्माओं में भी उत्साह लाओ... उत्साह है तो परिस्थिति भी वार नहीं करेगी।" अ.बापदादा 22.2.90

"सेवा में भी बोझ तब लगता है जब बाप साथ नहीं है। मैंने किया, मैं करती हूँ, मैं करता हूँ... बाप का कार्य है और बाप करा रहा है तो बोझ नहीं लगेगा। ... सेवा भी एक डांस समझो, खेल समझो।" अ.बापदादा 23.2.97

ज्ञान सेवा

ज्ञान सेवा के लिए बाबा ने कहा है, जिसके पास धन होता है, वह दान करने के बिना रह नहीं सकता। जिसको यह ज्ञान समझ में आ जाता है और उससे अपने जीवन में श्रेष्ठता और सुख का अनुभव करता है, वह अन्य आत्माओं को भी रास्ता अवश्य बतायेगा। ज्ञान सेवा अर्थात् वाचा से या लेखन प्रतिभा से सेवा करना।

"बहुतों को संशय पड़ता है कि हम कैसे समझें कि परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते हैं।... उनको यह सिद्ध करो कि परमात्मा को ही आना पड़ता है पतित दुनिया और पतित शरीर में।... पहले-पहले किसको भी समझानी देनी है आत्मा और परमात्मा की।"

सा.बाबा 8.4.06 रिवा.

"गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो। ... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना। ... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।" अ.बापदादा 18.1.87

"बाप कहते हैं - बड़े-बड़े दुकान निकालो। यह एक ही तुम्हारा सच्चा दुकान है। ... ज्ञान से होती है सद्गति अर्थात् दिन।" सा.बाबा 10.9.05 रिवा.

"बाप ने समझाया है - जो राइटियस बातें हैं, वे छपाकर एरोप्लेन से सब जगह गिरानी हें। वे प्वाइन्ट्स अथवा टॉपिक्स लिखनी चाहिए।... एकान्त में बैठकर ये काम करो। ... सबको ये सन्देश देना है।" सा.बाबा 30.8.05 रिवा.

"तुमको सिद्ध करना है - ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सर्व का सद्गतिदाता त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव है। ... जिसको बाप रचता और रचना का ज्ञान नहीं तो अज्ञानी ठहरे ना।"

सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

"तुम किसको भी पैग़ाम दे सकते हो। तुम्हारा ज्ञान तो बहुत ऊंचा है।... धर्म स्थापना में सहन

भी करना पड़ता है। धर्म-स्थापकों को कितना सहन करना पड़ता है। क्राइस्ट को क्रास पर चढ़ाया।" सा.बाबा 25.11.05 रिवा.

"तुमको तरस आना चाहिए। बेचारे अन्धे हैं, तो उनको रास्ता बतायें। ... अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है तो तुम सबकुछ जान गये हो। ... बाप कहते हैं - धन दिये धन न खुटे। ये अविनाशी ज्ञान रत्न हैं।" सा.बाबा 18.4.06 रिवा.

"तुम अखबार में लिख सकते हो - यह प्रदर्शनी आज से 5000 वर्ष पहले इस तारीख, इस ही स्थान पर इसी रीति हुई थी। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट हो रही है। ... तुम श्रीमत से पाप कर्मों को जीत कर विकर्माजीत बन जाते हो।" सा.बाबा 19.4.06 रिवा.

"पहले-पहले यह निश्चय बिठाना है कि हम आत्मा हैं, परमात्मा नहीं और न परमात्मा हमारे में व्यापक है। निश्चय बैठे तो कहो - लिखो। ... पहले बाप का, फिर चक्र का परिचय दिया जाता है।... द्वापर से रावण राज्य आता है तो विकार की सिस्टम बन जाती है।"

सा.बाबा 26.1.06 रिवा.

"तुमको किसी से भी ईर्ष्या नहीं रखनी चाहिए। कोई का अवगुण आदि देखकर अपना माथा खराब नहीं होना चाहिए। अपने को देखना चाहिए हमने कितनी आत्माओं को, भाई-बहनों को सुख का रास्ता बताया है।... अगर रास्ता नहीं बताया तो वह बाप के दिल पर चढ़ नहीं सकता।" सा.बाबा 17.8.06 रिवा.

"खुद खुशी में रहेंगे तो दूसरों को भी खुशी में लायेंगे। अन्दर कोई खराबी होगी तो दिल खाती रहेगी। ... अपने को आपही देखना है कि हम कहाँ तक सतोप्रधान बनें हैं, कहाँ तक पावन बनें हैं, कहाँ तक नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने की सेवा करते हैं।"

सा.बाबा 1.8.06 रिवा.

"तुम हो बाबा के मददगार। अकेला बाप भी क्या करेगा, कितनों को मन्त्र दे! हम तुमको मन्त्र देते हैं, तुमको फिर औरों को देना है। कलम लगाना है। ... पतित आत्मा धर्म स्थापन कर न सके। तुम धर्म स्थापन नहीं करते हो, शिवबाबा तुम्हारे द्वारा करते हैं।"

सा.बाबा 1.8.06 रिवा.

"यह हैं ज्ञान बादल। बादलों का काम ही है बरसना और मुरझाये हुए पौधों को रिफ्रेश करना।... अच्छे-अच्छे बादल आपेही सर्विस पर जायेंगे। ... सारा दिन यही ख्यालात रहने चाहिए कि सबको जाकर जगायें।" सा.बाबा 29.8.06 रिवा.

"हर एक का विचार चलना चाहिए कि सबको रास्ता कैसे बतायें। ख्यालात नहीं चलेंगे तो सर्विस कैसे करेंगे।" सा.बाबा 22.8.06 रिवा.

"यह है ज्ञान डांस। यह बिल्कुल सहज है।... यह तो सिर्फ अन्दर में ही ज्ञान डान्स चलता है।... बाबा से कितने अमूल्य ज्ञान रत्न मिलते हैं, जिससे तुम झोली भरते हो।... अपने को देखते रहो कि हम कितना ज्ञान रत्न धारण कर ज्ञान डान्स करते हैं।"

सा.बाबा 21.8.06 रिवा.

"सारी पढ़ाई के चारो सब्जेक्ट्स का आधार भी स्मृति है। ... याद अर्थात् स्मृति अर्थात् मैं कौन, मेरा बाप कौन ? ज्ञान अर्थात् रचता और रचना के ज्ञान की स्मृति ... दिव्य गुणों को भी कार्य में लाने के लिए समय पर स्मृति चाहिए। ... मैं विश्व-कल्याणकारी आत्मा निमित्त हूँ - इस स्मृति-स्वरूप के बिना सेवा में भी सफलता नहीं पा सकते। ... सेवा है ही स्वयं की और बाप की स्मृति दिलाना।"

अ.बापदादा 2.1.90

श्रीमत और वाचा सेवा

वाचा की सेवा के लिए भी बाबा ने कहा है जब वाचा की सर्विस करते हो, कोई भाषण आदि करते हो तो साथ-साथ मन्सा करनी है, तब ही सफलता होगी।

जब भी दूसरों की सेवा करते हो अर्थात् ज्ञान सुनाते हो तो देह को देखते हुए भृकुटी में आत्मा को देखो, देह को देखते हुए भी न देखो, तब ही उनको तीर लगेगा।

बाबा ने कहा है - तुम जब भाषण आदि करते हो तो तुमको पढ़कर नहीं सुनाना है। भाषण करने से पहले विचार सागर मन्थन करके लिखो, चेक करो कि सारी बातें आ गई हैं फिर सारी बातें स्मृति में रखकर भाषण करना है, किसको समझाना है। भाषण करना, किसको समझाना आदि पढ़कर नहीं सुनाना है और भाषण करते समय मन्सा सेवा भी साथ-साथ करो। आत्माओं को वाचा की महानता के साथ-साथ अनुभव भी हो।

बाबा ने कहा है कि सर्व आत्माओं को यह ज्ञान देना है परन्तु आत्मा को परखकर ज्ञान देना, ज्ञान धन और समय शक्ति को व्यर्थ नहीं गंवाना है। रहमदिल बनकर आत्माओं की सेवा करना है।

"ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली कुमारी। जो टीचर्स बनती हैं उन्हों को सिर्फ प्वाइन्ट बुद्धि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रुप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है। अगर स्वयं प्वाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

अ.बापदादा 25.3.71

"आवाज़ में आकर आत्माओं की जो सेवा करते हो, उससे अधिक आवाज़ से परे स्थिति में

स्थित होकर सेवा करने से सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकेंगे। ... जैसे इस साकार सृष्टि में छोटे बच्चों को लोरी देते हैं, वह भी आवाज़ होता है लेकिन वह आवाज़, आवाज़ से परे ले जाने का साधन होता है।" अ.बापदादा 18.1.71

"आप लोगों के भाषण में इतनी पॉवर हो जो सारी सभा के बीच बाप के स्नेह की लहर छा जाये। ... वे लोग सारी सभा को हंसा सकते हैं, रुला सकते हैं लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते, बाप से स्नेह नहीं पैदा करा सकते।" अ.बापदादा 2.8.72

"तुम्हें ही भ्रमरी कहा जाता है। तुम कीड़ों को आप समान ब्राह्मण बनाती हो। तुमको कहा जाता है कि कीड़ों को लाकर भूँ-भूँ करो। भ्रमरी भी भूँ-भूँ करती है फिर कोई को तो पंख आ जाता हैं, कोई मर जाते हैं।" सा.बाबा 8.6.05 रिवा.

"तुम ब्राह्मणों का कर्तव्य है भ्रमरी के मिसल कीड़ों को भूँ-भूँ करके आप समान बनाना और तुम्हारा पुरुषार्थ है सर्प के मिसल पुरानी खाल छोड़ नई लेने का।"
सा.बाबा 16.7.05 रिवा.

"चेहरा ऐसा चमकता हुआ हो जो और भी आपके चेहरे में अपना रूप देख सकें। चेहरा दर्पण बन जाये। ... दान करने से शक्ति मिलती है। अन्धों को आंखे देना कितना महान कार्य है। आप सभी का यही कार्य है - अज्ञानी अंधों को ज्ञान-नेत्र देना और अपनी अवस्था सदैव अचल हो।" अ.बापदादा 26.1.70

"तुम मुरलीधर के बच्चे हो, तुम्हें मुरलीधर जरूर बनना है। औरों का कल्याण करेंगे तब तो नई दुनिया में ऊंच पद पायेंगे। ... बड़ी शीतलता से किसी को भी यह सब राज़ समझा सकते हो।" सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

"बाप का पहला-पहला कहना है - मन्मनाभव। जरूर आगे भी कहा है तब तो अभी भी कहते हैं ना। ... जब कहाँ भी भाषण करने जाते हो तो उनको कहना चाहिए - शिवबाबा कहते हैं, वही पतित-पावन है।" सा.बाबा 18.10.05 रिवा.

"बाबा को याद कर भाषण करो तो बहुतों को आकर्षण हो। तुम लोग बाबा को याद नहीं करते हो, इसलिए किसको तीर नहीं लगता। ... घड़ी-घड़ी शिवबाबा का नाम लेकर समझाओ तो शिवबाबा याद रहेगा।" सा.बाबा 18.10.05 रिवा.

"इस ज्ञान को समझने और समझाने में बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। तुमको धारणा करनी है, कोई किताब आदि पढ़कर नहीं सुनानी है।" सा.बाबा 9.11.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं ही समर्थ हूँ, मेरे साथ धर्मराज भी है। यह सब के क़यामत का समय है। सब सजायें आदि भोगकर वापस घर चले जायेंगे। ड्रामा की बनावट ही ऐसी है। ... ये जो

बातें सुनते हो, सुनकर अखबार में डालो ... बाप का फरमान है - मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी।" सा.बाबा 14.9.06 रिवा.

"बाप देखे या न देखे परन्तु अपने को चेक करना है - हम बाप की सर्विस करते हैं, हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है ... तुम बच्चे जानते हो - हम ब्राह्मण श्रीमत पर अपने ही तन-मन-धन से अपनी और सारे विश्व की सेवा कर रहे हैं।" सा.बाबा 21.8.06 रिवा.

मन्सा सेवा

मन्सा सेवा अर्थात् शुभ-भावना, शुभ कामना से सेवा। मन्सा सेवा के लिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुम्हारी मन्सा हर आत्मा के प्रति शुभ होनी चाहिए और लाइट-हाउस, माइट-हाउस, सर्च-लाइट के समान तुम्हारे मन्सा के वायब्रेशन सर्व आत्माओं के लिए सदा फैलते रहने चाहिए।

मन्सा सेवा विश्व के किसी भी कोने में बैठी हुई आत्मा की कर सकते हो। जब कहीं कोई आपदा आदि आती है तो उन आत्माओं की भी तुमको मन्सा सेवा करनी है, उनके प्रति सुख-शान्ति के वायब्रेशन्स प्रसारित करने हैं।

मन्सा से सेवा किसी व्यक्ति विशेष की भी कर सकते हो अर्थात् उसको सूक्ष्म में इमर्ज करके उसे वायब्रेशन दे सकते हो तो सामूहिक रूप में भी कर सकते हो, जिसको बाबा सर्च-लाइट, लाइट-हाउस के रूप में याद दिलाते हैं। जैसे सूर्य बिना किसी भेदभाव के सर्वात्माओं के लिए, सर्व तत्वों के लिए अपनी लाइट की किरणें विखेरता रहता है ऐसे ही तुम भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्व आत्माओं के प्रति शुद्ध वायब्रेशन्स फैलाते रहो।

बाबा ने कहा है - जब किसी व्यक्ति की सेवा करने के लिए जाते हो तो जाने से पहले और अमृतवेले उसको इमर्ज कर उसको सूक्ष्म में वायब्रेशन दो, फिर जाकर उसकी सेवा करेंगे तो सफलता होगी।

"भारत में शिव का नाम तो बहुत लेते हैं, शिव जयन्ती भी मनाते हैं।...जो भी टाइम मिले, अपने से बातें करनी चाहिए। ... बाप से रूह-रिहान कर फिर जाकर रुहानी सर्विस करनी है।" सा.बाबा 6.11.04 रिवा.

"उठते-बैठते, चलते-फिरते ज्ञान को सुमिरन करते रहो। सारा दिन बुद्धि में यही रहे कि किसको कैसे समझायें, बाप का परिचय कैसे दें।" सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

"बच्चों को सदैव स्मति में रहना चाहिए - हम भारत को बेहद की खुशखबरी सुनाते हैं।...

जैसे बाबा को सारा दिन ख्यालात चलते हैं - कैसे सबको यह सन्देश सुनायें कि बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं।... तुम्हें सभी को इस अज्ञान अंधकार से निकालना है।"

सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

"जैसे बहुत अंधकार होता है तो न अपने को, न दूसरे को देख सकते हैं। तो ऐसे लाइट-हाऊस बनो जो सभी अपने आपको तो देख सकें। जैसे दर्पण के आगे जो भी होता है उसको स्वयं का साक्षात्कार होता है।... तो ऐसे पॉवरफुल दर्पण बनो जो सभी को स्वयं का साक्षात्कार करा सको अर्थात् आप लोगों के सामने आते ही देह को भूल अपने देही रुप में स्थित हो जायें।" अ.बापदादा 9.11.72

"ब्राह्मण जीवन ही सेवा की जीवन है। ब्राह्मण आत्मायें सेवा के बिना जी नहीं सकती। ... सेवा योगयुक्त भी बनाती है लेकिन कौनसी सेवा ? ... सच्ची सेवा अर्थात् जो सेवा मन और मुख से साथ-साथ होती है। मन से अर्थात् मन्मनाभव की स्थिति के साथ मुख की सेवा।"

अ.बापदादा 22.2.86

"मन्सा सेवा फास्ट सेवा है और पॉवरफुल भी है और मेहनत भी कम है। उसके लिए पॉवरफुल स्टेज बनानी है। सदैव एक ही समय में मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों सेवा इकट्ठी कर सकते हो। ... हर वर्ग वाले मन्सा सेवा की भी कोई विधि बनाओ, जिससे आत्माओं की मन्सा सेवा भी कर सको।" अ.बापदादा 15.12.04

"अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है - नजर से निहाल। तो यह दृष्टि और वृत्ति की सर्विस को प्रैक्टिकल में लाना है। वाचा तो एक साधन है। ... यह सर्विस एक स्थान पर बैठे, एक सेकण्ड में अनेकों की कर सकते हो।"

अ.बापदादा 26.3.70

"जितना आवाज से परे होकर सम्पूर्णता का आवाहन अपने में करेंगे, उतना आत्माओं का आवाहन कर सकेंगे। ... सदा हर्षित रहेंगे तो फिर माया की कोई आकर्षण नहीं होगी। यह बाप की गारन्टी है।" अ.बापदादा 22.10.70

"अन्त समय अचानक के मृत्यु, अकाले मृत्यु, समूह रूप में मृत्यु होगी, उन आत्माओं के वायब्रेशन कितने तमोगुणी होंगे, उसको परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूने नाहेक वायुमण्डल-वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग भी देना। ... बेहद की सेवा और अपनी सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना होगा।" अ.बापदादा 18.1.86

"शुभ-चिन्तक बनना - यही सहज रूप की मन्सा सेवा है, जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा

सर्वात्माओं के प्रति कर सकती है। शुभ-चिन्तक बनने के वायब्रेशन वायुमण्डल को वा चिन्तामणी आत्मा की वृत्ति को बहुत सहज परिवर्तन कर देंगे।" अ.बापदादा 10.11.87

"विशेष आत्माओं को साक्षात् बापदादा समान आत्माओं के प्रति अपनी कल्याण की भावना से, अपने रुहानी स्नेह के स्वरुप से, अपने सूक्ष्म शक्तियों द्वारा आत्माओं में बल भरना चाहिए। जैसे अव्यक्त रुप में बापदादा चारों ओर बच्चों की सेवा करते हैं।"

अ.बापदादा 18.10.71

"जैसे आप मन्सा शक्ति के आधार से प्रकृति का परिवर्तन वा कल्याण करते हो तो आकाश अथवा वायुमण्डल आदि को समीप जाकर तो नहीं बोलेंगे। ... वैसे विश्व की अन्य आत्मायें जो आप लोगों के आगे नहीं आ सकेंगी, उनको दूर रहते हुए आप अपनी रुहानियत की शक्ति से बाप का परिचय वा बाप का मुख्य सन्देश है, वह मन्सा द्वारा भी उनकी बुद्धि में टच कर सकते हो।" अ.बापदादा 4.8.72

"बिना साज के राज समझ सकते हो ? ऐसे अभ्यासी बने हो जो राज़ आपके मन में हैं, वे राज़ दूसरों को बिना साज के समझा सकते हो ? पिछाड़ी की सेवा में साज समा जायेगा, बिना साज के राज़ को समझाना पड़ेगा। तो ऐसी प्रैक्टिस चाहिए।" अ.बापदादा 1/31.11.71

"वृत्ति से वायुमण्डल बनाना अर्थात् प्रकृति को परिवर्तन करना... बीमार है तो भी सेवा का चान्स है ... सेवा का चान्स मिले, यह नहीं, चान्स मिला हुआ है।... यहाँ हर सब्जेक्ट महत्व वाली है।" अ.बापदादा 18.1.88 पार्टी

कर्मणा सेवा

कर्मणा सेवा के लिए भी बाबा ने कहा है कि कर्मणा करते भी तुमको बाप की याद में रहना है। खाना बनाते, पहरा देते भी बाप को याद करना है। कर्मणा सेवा में बुद्धि का काम कम होता है, इसलिए उस समय अच्छा बाप को याद कर सकते हो।

यज्ञ की कर्मणा सेवा भी योगी बनकर करो, बुद्धि में याद रखो किसके यज्ञ की सेवा कर रहे हैं। खाना आदि बनाते भी याद रखो कि हम बाबा के बच्चों के लिए खाना बना रहे हैं।

यज्ञ में सफाई भी कर रहे हो तो भी योगी बनकर करो, उस समय भी कोई सामने आ जाये तो उस समय भी उसको ज्ञान सुना सकते हो। स्वमान में रहकर कर्मणा सेवा करो तो उस सेवा का फल बहुत अच्छा होगा। कर्मणा सेवा से भी भाग्य बनेंगा और योग द्वारा सूक्ष्म सेवा भी होगी।

धन नहीं है तो कर्मणा सेवा से भी तुम अपना भाग्य बहुत ऊंच बना सकते हो, उससे धन की बचत करेंगे तो वह धन भी आपके भाग्य में जमा हो जायेगा।

"स्थूल व सूक्ष्म साधनों को अलग करते हो, इसलिए प्रत्यक्ष फल नहीं मिलता। ... वाणी के साथ-साथ मन्सा चाहिए और कर्म साथ-साथ भी मन्सा चाहिए। अभी लास्ट टाइम है ना, लास्ट टाइम में जो भी श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र होते हैं, वे सब यूज किये जाते हैं।"

अ.बापदादा 28.4.74

"भल भोजन बनाते हो, वह है तो स्थूल कार्य लेकिन भोजन में ईश्वरीय संस्कार भरना, भोजन को पॉवरफुल बनाना वह ईश्वरीय सर्विस हुई ना। जैसा अन्न वैसा मन कहा जाता है। तो भोजन बनाते समय ईश्वरीय स्वरुप होगा तब उस अन्न का असर मन पर होगा।"

अ.बापदादा 30.5.71

"जो आलराउण्डर होगा वह एक तो सर्विस में रहेगा, दूसरा स्वभाव व संस्कार में भी सभी से मिक्स हो जाने के गुण वाला होगा, तीसरा कोई भी स्थूल कार्य, जिसको कर्मणा कहा जाता है, उसमें भी हर जगह फिट हो जायेगा।... इस एक-एक बात के आधार पर कर्मों की रेखायें बनती हैं।" अ.बापदादा 4.5.73

"यज्ञ सेवा का फल बहुत बड़ा मिलता है क्योंकि यज्ञ सेवा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं की सेवा, यज्ञ पिता के यज्ञ की सेवा।" अ.बापदादा 15.12.04

"तुम जानते हो कि हम पतित-पावन, सर्व के सद्गतिदाता शिवबाबा की मत पर फिर से सहज राजयोग बल से अपने ही तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाते हैं। ... जितना जो करेंगे, वह अपने भविष्य के लिए बनाते हैं। ... जितना जो तन-मन-धन से सेवा करेंगे, वे ऐसा पायेंगे।"

सा.बाबा 19.8.06 रिवा.

"एक बाप सर्व सम्बन्धी है, इस स्मृति से सहजयोगी बन गये।... जितना माया को विदाई देंगे, उतना परमात्म ब्लेसिंग स्वत: ही मिलेगी।... ड्रामा में विशेष आत्मायें हो, विशेष कर्म कर अनेक जन्मों के लिए विशेष पार्ट बजाने वाले हो।... अपने को आइना बनाओ और आपके आइने में बाप दिखाई दे। ऐसी विशेष सेवा करो।" अ.बापदादा 11.11.89 पार्टी 3

श्रीमत और धन की सेवा

धन की सेवा के लिए बाबा ने कहा है, धन शिवबाबा के भण्डारे में देना है, किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं देना है, तब ही वह शिवबाबा के भण्डारे में जमा होगा। यदि किसी व्यक्ति विशेष के आकर्षण में देते हो, उसके प्रति देते हो तो वह तुम्हारा शिवबाबा के यज्ञ में

जमा नहीं होगा, उस व्यक्ति के साथ ही तुम्हारा हिसाब-किताब बनेगा, शिवबाबा के साथ नहीं। देने के बाद उससे अपनत्व मिट जाना चाहिए, उसमें बुद्धि नहीं जानी चाहिए। कब उससे हमको लाभ मिले, यह संकल्प भी नहीं आना चाहिए।

धन देने के बाद उसको कैसे प्रयोग करना है, वह बाबा जाने। हम जैसे कहें, वैसे ही उसका प्रयोग हो, ऐसा संकल्प भी नहीं आना चाहिए।

"बाप का बच्चों के लिए लव होता है। बेहद के बाप को भी बच्चों के लिए बहुत-बहुत लव है। जो जितना श्रीमत पर सर्विस करते हैं, उस अनुसार लव रहता है। सर्विस में हड्डियां देनी हैं।"

सा.बाबा 8.4.06 रिवा.

"धन का भाग्य अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं को खाने-पीने और आराम से रहने के लिए आवश्यकतानुसार समय पर आराम से मिलेगा ... सेवा के लिए भी धन की खींचातान अनुभव नहीं करेंगे। सेवा के समय पर भाग्यविधाता किसको निमित्त बना ही देते हैं।"

अ.बापदादा 19.11.89

श्रीमत और सौंदर्य प्रसाधन, सौंदर्य प्रदर्शन एवं फैशन / श्रीमत और अंग-प्रदर्शन

आज के जगत में कृत्रिम रूप से सुन्दरता बढ़ाने वाले प्रसाधनों का प्रयोग और कृत्रिम रूप से सुन्दरता को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति बहुत बढ़ती जा रही है। इस विषय में भी बाबा ने अनेक बार मुरलियों में महावाक्य उच्चारण किये हैं। वैसे तो बाबा की श्रीमत के अनुसार सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग और कृत्रिम रूप से सौंदर्य प्रदर्शन करने की मना है, जिसके विषय में बाबा ने श्रीमत भी दी है और यज्ञ के आदि में अनेक बातों को यज्ञ में करके भी सिखाया है परन्तु फिर भी हम देखें तो अनेक प्रकार के सौंदर्य प्रसाधनों का यज्ञ में प्रयोग होता ही है। बाबा के महावाक्यों के अनुसार ये भी अपने प्रति दूसरों की दृष्टि-वृत्ति के द्वारा आकर्षित करना है, दूसरों की काम-वासना को जागृत करना है, जिसके लिए भी बाबा ने कहा है कि यह भी एक प्रकार का पाप है। किन्हीं ऐसे प्रसाधनों का उपयोग उसी सीमा तक उचित है, जहाँ तक उनसे हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है या जीवन के लिए अति आवश्यक है।

क्रीम, पाउडर, बालों को काला करने वाले प्रसाधनों आदि का प्रयोग करने के लिए भी मना की है। बहनों के लिए बालों को काटना आदि के लिए भी बाबा की मना है, जिसके

विषय में हम विचार करें तो यज्ञ की आदि में अर्थात् बाबा के समय कोई भी समर्पित बहनें बाल नहीं काटती थीं। ये तो वर्तमान समय देखादेखी प्रवृत्ति बढ़ गई है, जो योगी जीवन के लिए यथार्थ नहीं है और ये भी सौदर्य प्रदर्शन ही है। ऐसे ही अन्य कई प्रकार की बातों के लिए बाबा ने मना की है और कहा है - यह भी देहाभिमान है, आत्माभिमानी में ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं होगी। लौकिक दृष्टि से देखें तो आध्यात्मिक मार्ग के पुरुषार्थी सन्यासियों आदि में चाहे पुरुष हैं या महिलायें, कोई ऐसे कार्य नहीं करते हैं। जो इस बात का प्रतीक है कि ये आध्यात्मिक मार्ग के पुरुषार्थियों के लिए यथार्थ नहीं है।

वस्त्रों आदि के विषय में जो तंग वस्त्र, जिनसे अंग प्रदर्शन हो या आधे वस्त्रों के लिए भी बाबा ने कहा है, यह भी ब्रह्मा कुमार-कुमारियों में नहीं होना चाहिए। वे चाहे घर-गृहस्थ वाले हों या समर्पित हों। इस प्रसंग में बाबा की यह बात भी ध्यान में अवश्य रखनी होगी कि बाबा ने कहा है - "जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे" । इसीलिए बाबा ने आदर्श में मम्मा-बाबा और दादियों का उदाहरण रखा है।

"आज की दुनिया में फैशन आदि कितना है। सारा दिन बुद्धि फैशन के पिछाड़ी ही रहती है।... यह सब कशिश करने के लिए ही बनाते हैं। आगे पारसी लोगों की स्त्रियां मुँह पर काली जाली पहनती थी कि कोई देखकर आशिक न हो जाये। इसको कहा जाता है वेश्यालय।"

सा.बाबा 7.7.06 रिवा.

श्रीमत और टीचर्स जीवन

टीचर्स के लिए बाबा ने कहा है कि टीचर्स अर्थात् जो मन्सा-वाचा-कर्मणा सदा सेवा करने वाले बाप समान क्योंकि टीचर्स बने ही हैं सेवा के लिए। टीचर्स के लिए बाबा सदा कहते हैं - टीचर्स सदा अपने को स्टेज पर समझो क्योंकि तुम्हारी ऊपर अन्य आत्माओं की भी जिम्मेवारी है। टीचर्स को देखकर या उनके किसी कर्म से कोई अयथार्थ कर्म में प्रवृत्त होती है या ज्ञान से मर जाती है तो उसका बोझा भी टीचर्स पर आता है क्योंकि जो अच्छे बनते हैं, उनका फल भी टीचर्स को मिलता है तो उनको देखकर बुरे बनते तो भी उसका प्रभाव भी उनके भाग्य पर पड़ता है।

टीचर्स वह, जिसका मन्सा-वाचा-कर्मणा हर कर्म सेवा अर्थ हो, जिसका हर सेकेण्ड सेवामय हो। टीचर्स को बाबा हमजिन्स भी कहते हैं क्योंकि जैसे बाबा विश्व की सेवार्थ आये हैं, वैसे टीचर्स का जीवन भी सेवार्थ ही है।

टीचर्स के लिए बाबा ये भी कहते हैं कि तुमको ज्ञान के हर प्वाइन्टस का अनुभवी

बनना है क्योंकि तुम जब अनुभवी होंगे तब ही तुम औरों को भी अनुभवी बना सकेंगे, कोई भी प्रश्न का यथार्थ उत्तर दे सकेंगे। यदि कोई टीचर यथार्थ उत्तर नहीं देती तो भी ज्ञान सागर बाप का नाम बदनाम होता है।

टीचर्स को बापदादा सदा बाप समान ऊंची नज़र से देखते हैं, उनका जीवन विश्व के सामने उदाहरण स्वरूप है, इसलिए उनके प्रति विशेष श्रीमत देते हैं।

"सभी टीचर्स बेफिकर बादशाह हो ? बादशाह अर्थात् सदा निश्चय और नशे में रहने वाले। निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा ऊंचा उड़ाता है। ... असोच बनने से ही सेवा बढ़ेगी, सोचने से नहीं बढ़ेगी।... सोचने में ही बुद्धि बिज़ी रखेंगे तो बाप की टचिंग, बाप की शक्ति ग्रहण नहीं कर सकेंगे।" अ.बापदादा 25.12.89

"टीचर्स अर्थात् नम्बरवन फॉलो फादर।... टीचर्स अर्थात् निमित्त बनने वाले, अनेक आत्माओं के निमित्त हो। तो निमित्त बनने वालों के ऊपर कितनी जिम्मेवारी है ... जो कर्म मैं करूँगी, मुझ निमित्त आत्मा को देख और भी करेंगे।" अ.बापदादा 9.12.89

"टीचर्स ने कन्ट्रेक्ट लिया कि स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करना ही है।... स्व-परिवर्तन के बिना कितनी भी मेहनत करो लेकिन कोई भी आत्मा परिवर्तन नहीं हो सकती।... आज की दुनिया देखना चाहती है। तो टीचर्स का यही विशेष कर्तव्य है कि करके दिखाना अर्थात् बदल करके दिखाना।" अ.बापदादा 15.11.89

"जब कोई बात समझ में आ जाती है तो वह करेगा जरूर। टीचर्स तो हैं ही समझदार। टीचर्स को निमित्त बनने का भाग्य मिला है, इसका महत्व अभी कभी-कभी साधरण लगता है लेकिन यह भाग्य समय पर अति श्रेष्ठ अनुभव करेंगे। किसने हमको निमित्त बनाया, किसने मुझ आत्मा को इस योग्य चुना - यह स्मृति स्वत: ही श्रेष्ठ बना देती है।"

अ.बापदादा 14.1.90

"टीचर्स ... किसी भी प्रकार का बोझ है चाहे अपना, चाहे सेवा का, चाहे सेवा-साथियों का तो वह उड़ने नहीं देगा, सेवा भी ऊंची नहीं उठेगी। इसलिए सदा दिल साफ और मुराद हासिल करते रहो। प्राप्तियां आपके सामने स्वत: ही आयेंगी।" अ.बापदादा 6.1.90

"टीचर्स को विशेष समर्पित होने का भाग्य मिला हुआ है। ... जो सच्चाई और सफाई से बाप की याद और सेवा में सदा लगे रहते हैं, उन्हें कोई और मेहनत करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। योग्य टीचर का भण्डारा और भण्डारी सदा भरपूर रहेगा।"

अ.बापदादा 6.1.90

"टीचर्स तो चारो ही सब्जेक्ट्स में स्मृति-स्वरूप है ना! टीचर्स का अर्थ ही है अपने स्मृति-

स्वरूप फीचर्स से औरों को भी स्मृति-स्वरूप बनाना। ... ऐसे अविनाशी चमकती हुई मणि को देख देहभान स्मृति में नहीं आये। ... टीचर्स अर्थात् सदा नेचुरल निरन्तर स्मृति-स्वरूप सो समर्थ स्वरूप।" अ.बापदादा 2.1.90

"टीचर्स सदा नशा रखो कि हम पूर्वज भी हैं और पूज्य भी हैं। जितने बड़े, उतनी बड़ी जिम्मेवारी है। बड़ा बनना सिर्फ खुश होने वाली बात नहीं है लेकिन नाम बड़ा तो काम भी बड़ा चाहिए।... कोई भी इच्छा होगी तो अच्छा बनने नहीं देगी। अब इच्छा पूर्ण करो या अच्छा बनो, आपके हाथ में है।... मांगने वाला कभी भी सम्पन्न नहीं बन सकता। और कुछ नहीं मांगते हो लेकिन रॉयल मांग तो बहुत है।... लेकिन जब तक मंगता हो तब तक कभी भी खुशी के खज़ाने से सम्पन्न नहीं हो सकते।" अ.बापदादा 13.12.95

"बापदादा की तो दिल होती है - टीचर्स ऐसे रिफ्रेश हो जायें, शक्तिशाली बन जायें, जो किसी भी सेन्टर पर कोई भी जाये तो एक भी आत्मा कमजोर नहीं दिखाई दे। ... ब्राह्मण माना विजयी।... हर एक को मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क में झमेला मुक्त बनना है।"

अ.बापदादा 4.12.95

"जब टीचर्स ऐसा कुछ करती हैं तो बापदादा की, खास ब्रह्मा बाबा की आंखें नीचे हो जाती हैं। इतना टीचर्स को अटेन्शन रखना चाहिए।... टीचर का अर्थ ही है बाप समान। विशेष ब्रह्मा बाबा टीचर्स को दिल से प्यार करते हैं।" अ.बापदादा 7.11.95

"पहले टीचर्स आपस में खिटखिट खत्म करेंगी तब वायब्रेशन फैलेगा। ... किसी ने कुछ किया तो बाबा के सभी सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन खराब किया। इतनी जिम्मेवारी हर एक टीचर के ऊपर है।... टीचर का बैज पहनना बहुत अच्छा लगता है लेकिन बैज की लाज रखना।" अ.बापदादा 7.11.95

"टीचर्स की स्थिति सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न हो और सदा सन्तुष्ट रहें। ... सदा साक्षीपन और सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर खेल देखो। टीचर्स अर्थात् सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट।"

अ.बापदादा 6.4.95

"जैसी टीचर होगी, वैसी विशेषता स्टूडेण्ट्स में भी होगी।... निमित्त भाव, करनकरावनहार की स्मृति टीचर्स को सदा ही सहज आगे बढ़ाती है।... टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स से सेवा करे। ऐसे दिव्य फीचर्स, मुस्कराते हुए फीचर्स, अचल-अडोल के फीचर्स स्वय: सेवा करते हैं।"

अ.बापदादा 25.3.95

"निमित्त टीचर्स का वायुमण्डल अनेकों तक पहुँचता है। ... हाँ जी का एक पाठ तो पक्का कर लिया लेकिन दूसरा पाठ बेहद के वैराग्य वृत्ति का, वह पक्का करके दिखाओ। ... सेवा के

निमित्त बनना, ये श्रेष्ठ भाग्य कम नहीं है। ये भी विशेष वर्सा है।"

अ.बापदादा 5.12.94 टीचर्स

"टीचर्स तो सदा ही ज्ञान स्वरूप और स्मृति स्वरूप हैं ही। ... टीचर्स की विशेषता निमित्त भाव और निर्मान भाव, और निर्मल स्वभाव। ... यही निर्मल स्वभाव निर्मानता की निशानी है। ... निर्मल स्वभाव अर्थात् शीतल स्वभाव।" अ.बापदादा 26.11.94 टीचर्स

"यहाँ बहुत खबरदारी से निश्चयबुद्धि वाले को ही लाना है। अगर यहाँ आकर फिर जाये कोई पतित बना तो दण्ड ब्राह्मणी पर आ जायेगा। इसलिए ब्राह्मणी पर बहुत रेस्पॉन्सिबिलिटी है।"

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

"टीचर्स अर्थात् हर संकल्प, बोल और हर सेकेण्ड सेवा में उपस्थित। ... अपने फीचर्स से सेवा करने वाले। संगमयुग का फ्युचर फरिश्ता है, वह फीचर्स से दिखाई दे। ... आपके फीचर्स से सदा सुख की, शान्ति की, खुशी की झलक अनुभव हो।"

अ.बापदादा 1.3.90

"टीचर्स सदा बेहद का भाव रखो। ... हद की दिल वाले बेहद के बादशाह बन नहीं सकते। ऐसे नहीं समझना कि जितने सेन्टर्स खोलते वा जितनी ज्यादा सेवा करते, उतना बड़ा राजा बनेंगे। इस पर स्वर्ग की प्राइज़ नहीं मिलनी है। सेवा भी हो, सेन्टर्स भी हों लेकिन हद का नाम-निशान न हो। उसको ही नम्बरवार विश्व के राज्य का तख्त प्राप्त होगा।"

अ.बापदादा 22.1.90

"टीचर्स सभी बड़ी दिल वाली हो ना! ... सदा बेहद का भाव रखो। अगर दिल में हद का भाव है तो बेहद का बाप हद की दिल में नहीं रह सकता। ... स्व-परिवर्तन के लिए हद को सर्वंश सहित समाप्त करो। जिसको देखो, जो भी आपको देखे - बेहद के बादशाह का नशा अनुभव हो।" अ.बापदादा 22.1.90

"सभी टीचर्स आर्टिस्ट हो। बड़े-ते-बड़े चित्रकार वे हैं, जो हर कदम में अपने चरित्र का चित्र बनाते रहते हैं। ... अपना भी चित्र बनाते हो और अन्य आत्माओं को भी चित्रकार बना देते हो। ... सदा आज्ञाकारी माना सदा जिम्मेवारी के ताजधारी। इसको कहते हैं योग्य टीचर, योगी टीचर।" अ.बापदादा 17.12.89

"टीचर्स कभी कम्पलेन नहीं कर सकती। औरों को भी कम्पलीट करने वाले हो, कम्पलेन करने वाली नहीं। ... आप सबके पत्रों का उत्तर बापदादा रोज़ की मुरली में देता ही है।"

अ.बापदादा 17.12.89

"टीचर्स का अर्थ ही है अपने फीचर्स से सबको फरिश्ते के फीचर्स अनुभव कराने वाली। ...

यह भी भाग्य है, जो निमित्त बने हो। अभी इस भाग्य को स्वयं अनुभव में बढ़ाओ और दूसरों को भी अनुभव कराओ। अनुभवी मूर्त बनो।" अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 1 टीचर्स

"हेण्ड्स कहाँ से आयेंगे ? जगह-जगह पर ऐसी आत्मायें तैयार करो और फिर तैयार हुए को और उम्मीदवार हेण्ड्स को विशेष समय निकाल कर ट्रेनिंग दो।... सेवा में सफलता या सेवा में वृद्धि का साधन है - स्व और सर्व की कम्बाइण्ड सेवा।" अ.बापदादा 16.3.92

"यह भी बीच-बीच में चान्स मिलता है बुद्धि को और एकाग्र करने का। लेकिन स्टूडेण्ट माना स्टडी जरूर करेंगे। ... टीचर का काम है अपनी योग-शक्ति से अपने एरिया का कर्फ्यू खत्म कराना। यह सीन भी देखने से निर्भयता का अनुभव बढ़ता जाता है।"

अ.बापदादा 18.1.93 पार्टीयों से

"वे सर्विस नहीं, डिस्सर्विस करते हैं। ... टीचर का ही बुद्धियोग भटकता होगा तो वे मदद क्या करेंगे। जो टीचर हो योग कराने बैठते हैं, वे अपने से पूछें कि मैं पुण्य का काम कर रही हूँ ?... जो सामने नेष्टा कराने बैठते हैं, उनको समझना है कि मैं सच्चा टीचर होकर बैठूँ।"

सा.बाबा 6.3.06 रिवा.

श्रीमत और महारथी एवं आदि रत्न / श्रीमत और शिक्षा का स्वरूप

विशेष पुरुषार्थी अग्रणी आत्माओं को बापदादा महारथी कहते हैं और जो यज्ञ की स्थापना के आदि से ही यज्ञ में समर्पित हैं, उनको बापदादा आदि रत्न कहते हैं। उनका जीवन सबके लिए उदाहरण स्वरूप रहे, उसके लिए बापदादा समय-समय पर विशेष श्रीमत देते हैं।

"आदि रत्न अर्थात् हर श्रीमत को जीवन में लाने की आदि करने वाले। सिर्फ सुनने वाले नहीं लेकिन करने वाले। ... यह रुहानी नशा माया के नशों से छुड़ा देता है। यह रुहानी नशा सेफ्टी का साधन है। ... करने में पहले मैं। जो करेगा वह पायेगा।"

अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 1

"अपने को सदा स्व-स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेशी समझने से, इस स्थिति में स्थित रहने से एक सेकेण्ड में किसी भी आत्मा को नजर से निहाल कर सकेंगे। ... अभी सभी सिद्धि चाहते हैं न कि साधना। तो सिद्धि अर्थात् सद्गति। तो ऐसी तड़फती हुई थकी हुई आत्माओं वा प्यासी आत्माओं की प्यास आप श्रेष्ठ आत्माओं के सिवाए कौन बुझायेंगे।"

अ.बापदादा 24.10.71

“तुम बाप को याद करते हो, माया फिर अपनी तरफ खींच लेती है, इस पर ही यह खेल बना हुआ है। ... बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान आना चाहिए। बाप की बुद्धि में भी नॉलेज है ना। तुमको भी सारी नॉलेज दे आप समान बना रहे हैं।” सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

“एक “मैं आत्मा विश्व-कल्याण के श्रेष्ठ कर्तव्य के प्रति सर्वशक्तिवान बाप द्वारा निमित्त बनी हुई हूँ”- यह स्लोगन स्मृति में रहे। ... दूसरा स्लोगन “मैं आत्मा महादानी और वरदानी हूँ“ ... तीसरी बात मुझ आत्मा को अपने चरित्र, बोल व संकल्प द्वारा अपने मूर्त में सभी आत्माओं को बापदादा की सूरत और सीरत का साक्षात्कार कराना है।” अ.बापदादा 25.5.73

“जब अभी से सर्व आत्माओं को बाबा का खजाना देने वाले दाता बनेंगे, अपनी शक्तियों द्वारा प्यासी व तड़फती हुई आत्माओं को जीयदान देंगे, वरदाता बन प्राप्त हुए वरदानों द्वारा उन्हें भी बाप के समीप लायेंगे और बाबा के सम्बन्ध में लायेंगे, तब यहाँ के दातापन के संस्कार भविष्य में 21 जन्मों तक राज्यपद अर्थात् दातापन के संस्कार भर सकेंगे।”

अ.बापदादा 30.5.73

“जिस सेवा-स्थान पर सेवा की वृद्धि होती है और निर्विघ्न रहते हैं, उसका कारण क्या होता है ? जानते हो ? पालना।... दिल से पालना करो, एक-एक की कमजोरी को हटाने की मेहनत करो।” अ.बापदादा 21.10.05

बाबा ने यह भी कहा है कि तुम सभी टीचर्स हो क्योंकि तुम सभी भी दूसरों को ज्ञान देते हो, शिक्षा-सावधानी देते हो परन्तु शिक्षा-सावधानी का स्वरूप क्या होना चाहिए, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है कि किसी को शिक्षा देते हो तो शिक्षा का स्वरूप बनकर शिक्षा दो, क्षमा के सागर बनकर शिक्षा-सावधानी दो। इसी गुण के कारण परमात्मा को परम शिक्षक और क्षमा के सागर कहा जाता है।

“अगर कोई असफल करता है तो बोल द्वारा शिक्षा नहीं दो, अपने शुभ भावना, शुभ कामना और सदा शुभ सम्मान देने की विधि द्वारा सफल कराओ। ... क्षमा और शिक्षा अर्थात् क्षमा रूप बनकर शिक्षा दो। मर्सीफुल बनो, रहमदिल बनो। आपका मर्सीफुल रूप अवश्य ही शिक्षा का फल दिखायेगा।” अ.बापदादा 15.11.05

“यह ईश्वरीय सर्विस है। यह बहुत ऊंच सर्विस है। जो इस सर्विस में बिजी रहते, उनको और कुछ भी मीठा नहीं लगता। कहेंगे हम यह मकान आदि लेकर भी क्या करेंगे। हमको तो पढ़ाना है, यही सर्विस करनी है। मिल्कियत आदि में खिटपिट देखेंगे तो कहेंगे ऐसा सोना ही किस काम का जो कान कटें। ... कोई मकान दे और बन्धन डाले तो ऐसे लेंगे ही नहीं।”

सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

“बाप टीचर है, बच्चे भी टीचर चाहिए। ऐसे नहीं कि टीचर और कोई काम नहीं कर सकते हैं। सब काम करना चाहिए।” सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

“क्लास में जब तुम ब्राह्मणियां बैठती हो तो तुम्हारा काम है पहले-पहले सबको सावधान करना। भाइयो-बहनों अपने को आत्मा समझ कर बैठो।” सा.बाबा 27.11.05 रिवा.

“जो होना नहीं चाहिए, जो करना नहीं चाहते, वह न होना चाहिए और न करना चाहिए - यह है पुण्यात्मा की निशानी। ... तपस्या वर्ष में यह संकल्प करो कि सारा दिन संकल्प, बोल, कर्म द्वारा पुण्यात्मा बन पुण्य करेंगे। ... मधुवन की लहर, निमित्त टीचर्स की लहर प्रवृत्ति वालों तक, गॉडली स्टूडेण्ट्स तक सहज पहुँचती है।” अ.बापदादा 10.4.91

“क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। शिक्षा देते हो तो क्षमा भूल जाते हो। ... क्षमा करनी है, रहमदिल बनना है, सिर्फ शिक्षक नहीं बनना है।... अगर श्रीमत प्रमाण कोई भी कदम उठाते हो तो क्या अनुभव होता है? बाप की दुआयें मिलती हैं ना।”

अ.बापदादा 30.11.92

“क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। शिक्षा देते हो तो क्षमा भूल जाते हो।... क्षमा करनी है, रहमदिल बनना है, सिर्फ शिक्षक नहीं बनना है।... अगर श्रीमत प्रमाण कोई भी कदम उठाते हो तो क्या अनुभव होता है? बाप की दुआयें मिलती हैं ना।”

अ.बापदादा 30.11.92

“अकल्याण करने वाले के ऊपर भी कल्याण की भावना, कल्याण की दृष्टि-वृत्ति-कृत्ति। इसको कहा जाता है - कल्याणकारी आत्मा। ... अभी शिक्षा देने का समय चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो, शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो - यही शिक्षा देने की विधि है। अभी वह विधि पुरानी हो गई।” अ.बापदादा 13.2.91

“आदि रतन अर्थात् हर श्रीमत को जीवन में लाने की आदि करने वाले। सिर्फ सुनने वाले नहीं लेकिन करने वाले। ... यह रुहानी नशा माया के नशों से छुड़ा देता है। यह रुहानी नशा सेफ्टी का साधन है। ... करने में पहले मैं। जो करेगा वह पायेगा।”

अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 1

“अगर महारथी भी मिक्स करता है, चतुराई से चलता है तो उस समय वह महारथी, महारथी नहीं है ... इसलिए बाप ने क्या स्लोगन दिया है - फॉलो फादर या सिस्टर-ब्रदर? साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को आगे रखो, फॉलो करो और अशरीरी बनने में निराकार बाप को फॉलो करो।” अ.बापदादा 27.2.96

श्रीमत और आपघात - महापाप / श्रीमत और जीवघात

आपघात क्या है और आपघात और जीवघात में क्या अन्तर है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है। दुनिया में भी आपघात महापाप कहा जाता है। बाबा ने आपघात की वास्तविकता को भी बताया है और आपघात न हो, उसके लिए श्रीमत भी दी है। दुनिया वाले तो जीवघात को आपघात कहते हैं परन्तु बाबा ने बताया है कि आत्मा तो अजर-अमर है, उसका घात तो कब होता नहीं है, जीवघात होता है और आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा ले लेती है। बाबा का बनकर, बाबा का हाथ छोड़ देना वास्तव में आपघात महापाप है क्योंकि उससे आत्मा का अपना भी अकल्याण होता है और बाप का नाम भी बदनाम होता है। ज्ञान की यथार्थता को जानने वाला कब आपघात कर नहीं सकता।

दूसरों को दुख देना तो पाप है ही परन्तु बाबा ने कहा है - अपने को दुख देना भी पाप है। कोई तंग होकर अपना जीवघात कर लेते हैं, वह भी पाप-कर्म है क्योंकि वह भी अपने कर्मों के फल भोगने से विमुख होना है। जबकि विधान है कि हर आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा, वह चाहे इस जन्म में भोगें या अगले जन्म में भोगें। कोई दुख न होते भी भक्ति मार्ग में भावना से बलि चढ़ जाते हैं, उसको भी बाबा ने महापाप कहा है। मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए कोई जीवित समाधि ले लेते, वह भी पाप कर्म है क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति की इच्छा भी आत्मा को इस जगत के दुख को देख कर ही जाग्रत होती है। “आपघात महापाप“ कहा गया है। आपघात क्या है और जीवघात क्या है और दोनों में क्या अन्तर है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है। आपघात तथा जीवघात दोनों ही महापाप हैं, उनसे बचने के लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

“तीसरे प्रकार की महसूसता है - मन मानता है कि यह ठीक नहीं है, विवेक आवाज भी देता है कि यह यथार्थ नहीं है लेकिन बाहर से ... यह विवेक का खून करना भी पाप है। जैसे आपघात महापाप है, वैसे ही यह भी पाप के खाते में जमा होता है।”

अ.बापदादा 2.11.87

“आत्मा के असली गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना - यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिए कहा जाता है आत्मघाती महापापी। ... माया के वश, परमत के वश, कुसंग के वश या परिस्थिति के वश अपने ईश्वरीय विवेक को दबाते हो तो समझो ईश्वरीय विवेक का खून करते हो।” अ.बापदादा 15.10.75

“सबसे बड़ा धोखा स्वयं को देते हो कि जो जानते हुए, मानते हुए फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ

प्राप्ति से वंचित कर देते हो। ... अपने को अच्छा पुरुषार्थी सिद्ध करना, कोई भी गलती करके छिपाना - यह भी स्वयं को धोखा देना है वा ठगी करना है।"

अ.बापदादा 15.10.75

"शरीर को खत्म करने के लिए जीवघात करते हैं, समझते हैं शरीर छोड़ने से दुखों से छूट जायेंगे। परन्तु यह भी महापाप है, और भी अधिक दुख भोगने पड़ते हैं।"

सा.बाबा 11.01.06 रिवा.

Q. आपघात या जीवघात के लिए दोषी कौन अर्थात् करने वाली आत्मा स्वयं या अन्य कोई आत्मा ? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

श्रीमत और दिव्य-दृष्टि तथा साक्षात्कार

दिव्य-दृष्टि तथा साक्षात्कार की आशा प्राय: सभी आत्माओं को रहती है परन्तु इसका ज्ञान मार्ग में कितना महत्व है और वह हमारे जीवन की सफलता में कहाँ तक सहयोगी है, उसका सारा ज्ञान बाबा ने दिया है और उसको समझकर हमारे लिए क्या कृत्य है, उसके लिए भी श्रीमत दी है, जिससे उसमें हमारा समय और संकल्प व्यर्थ न जाये। बाबा ने कहा साक्षात्कार से कोई फायदा नहीं है, इसलिए कब साक्षात्कार की आश नहीं रखनी चाहिए। उसमें भी समय व्यर्थ जाता है। यह तो पढ़ाई है, जो अच्छा पढ़ेगा, वही ऊंच पद पायेगा। यज्ञ के इतिहास को देखें तो अनेक साक्षात्कार करने वाली, दिव्यदृष्टि वाली आत्मायें भी ज्ञान को छोड़कर चली गई हैं और जिन्होंने कभी भी साक्षात्कार नहीं किया, वे ऊंच पद पाने के लिए श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर रही हैं।

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है। ... सबका विनाश हो जायेगा। नेचुरल कैलेमिटीज भी आने वाली हैं। हमारा रियलाइज किया हुआ है और दिव्य-दृष्टि से भी देखा हुआ है। ... यह ज्ञान सब नहीं लेंगे। जो इस देवी-देवता धर्म के पत्ते होंगे, वे ही लेंगे। बाकी जो और धर्मों को मानने वाले होंगे, वे सुनेंगे नहीं।"

सा.बाबा 5.8.05 रिवा.

"यह है रुहानी ज्ञान, जो रुहानी बाप से ही बच्चों को मिलता है।... आत्मा को सिवाए दिव्य-दृष्टि के कोई देख नहीं सकता।... साक्षात्कार से मिलता कुछ नहीं है। पढ़ाई बिगर कुछ बन थोड़ेही सकेंगे।... जितना श्रीमत पर चलेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।"

सा.बाबा 7.10.05 रिवा.

"ध्यान में आत्मा कहाँ जाती नहीं है। आत्मा निकल जाये तो शरीर ही खत्म हो जाये। यह सब है साक्षात्कार, रिद्धि-सिद्धि द्वारा भी ऐसे साक्षात्कार होते हैं। ... ड्रामानुसार उस समय पर वह साक्षात्कार होता है, जो ड्रामा में पहले से ही नूँध है। ... सूक्ष्मवतन में आने-जाने का साक्षात्कार आदि इस समय होता है।" सा.बाबा 14.11.05 रिवा.

"ध्यान और योग बिल्कुल अलग है। ... बाप की कायदे अनुसार याद चाहिए। ... ध्यान की तो कभी इच्छा नहीं रखनी है। इच्छा मात्रम् अविद्या बनना है। बाप तुम्हारी सब कामनायें बिगर मांगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चलते हो तो।"

सा.बाबा 12.01.06 रिवा.

"साक्षात्कार भूत की बीमारी ऐसी है, जो दोनों जहान से उड़ा देती है। तुम बच्चों को कभी भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि हम साक्षात्कार करें। यह सब भक्ति के ख्यालात हैं। ज्ञान मार्ग को अच्छी रीति समझना है।" सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

"कल्प पहले भी मैंने तुमको स्वर्ग की बादशाही दी थी, अभी फिर आया हूँ देने के लिए। ... अन्त में तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे।... उस समय पछताना पड़ेगा कि यह हमने क्या किया, बाप की श्रीमत पर क्यों नहीं चला परन्तु उस समय कुछ कर नहीं सकेंगे।"

सा.बाबा 23.8.06 रिवा.

श्रीमत और रहम की भावना

श्रीमत और शुभ-भावना, शुभ-कामना एवं सहयोग की भावना

बाबा ने ये ज्ञान दिया है कि तुम आत्मायें इस कल्प वृक्ष की जड़ में और इस विश्व-परिवार के पूर्वज हो, इसलिए तुमको विश्व की सर्व आत्माओं के दुख-दर्द को देखकर रहम आना चाहिए और उनके कल्याण का पुरुषार्थ करना चाहिए। तुम्हारे दिल में रहम आना चाहिए कि हम अपने भाई-बहनों को दुख-दर्द से मुक्त करें। जीवन के हर क्षेत्र में भावना और कामना का बहुत बड़ा महत्व है। हमारी भावना और कामना कैसे सदा सर्व के प्रति शुभ रहे, जिससे हमारा जीवन भी सदा सुखमय हो और अन्य आत्माओं को भी हमारे से सुख मिले, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

"दिलशिकस्त नहीं हो, पोजीशन नहीं छोड़ो। मर्सीफुल होकर वायब्रेशन देते रहो।... पोजीशन छोड़ते हो तो ऑपोजीशन होती है। क्या ब्रह्मा बाप के आगे ऑपोजीशन नहीं हुई। माया की भी हुई, आत्माओं की भी हुई, प्रकृति की भी हुई लेकिन ब्रह्मा बाप ने पोजीशन छोड़ी ? नहीं छोड़ी

ना, तब ही फरिश्ता बना। ... मैं भी फरिश्ता, यह भी फरिश्ता। इसी नज़र से देखो, यह वायुमण्डल फैलाओ।" अ.बापदादा 21.10.05

"किसको शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि है कि क्षमा का रूप बनकर शिक्षा दो। सिर्फ शिक्षा नहीं दो लेकिन रहम-क्षमा भी करो और शिक्षा भी दो। दो शब्द याद रखो - शिक्षा और क्षमा-रहम। ... रहम करने की विधि है - शुभ भावना और शुभ कामना।"

अ.बापदादा 4.9.05

"अपने पर भी कृपा करो और दूसरों पर भी कृपा करो। व्यर्थ को न सोचना, न देखना - यह है अपने ऊपर कृपा करना और जिसने किया वा कहा, उसके प्रति भी सदा रहम करो, कृपा करो ... शुभ भावना शुभ कामना की कृपा करो।" अ.बापदादा 31.12.87

"पुरुषार्थ कर पतित से पावन बनते रहो, रास्ता बताते रहो। कोई भी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं, उन पर तरस पड़ना चाहिए। ... बहुत रहमदिल बनना है। हम सुख की तरफ जाते हैं तो औरों को भी रास्ता बतायें।" सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

"जैसे वाणी की सेवा के साधन चित्र, प्रोजेक्टर, वीडियो आदि बनाते हो, ऐसे शान्ति की शक्ति के साधन शुभ संकल्प, शुभ भावना, नयनों की भाषा है।... अपने मस्तक से बाप का और अपना चमकता हुआ चित्र दिखा सकते हो।" अ.बापदादा 18.11.87

"जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को स्नेह के सहयोग की भावना उत्पन्न कराते हो, ... ऐसे आप जब शुभ भावना, स्नेह की भावना की स्थिति में स्थित होंगे तो जैसी आपकी भावना होगी, वैसी भावना अन्य आत्माओं में भी उत्पन्न होगी।" अ.बापदादा 18.11.87

"वाणी की शक्ति का तीर बहुत करके दिमाग तक पहुँचता है और अनुभूति का तीर दिल तक पहुँचता है। ... शुभ संकल्प से आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देंगे और शुभ भावना से बाप की तरफ स्नेह की भावना भी उत्पन्न करा लेंगे।"

अ.बापदादा 18.11.87

"हर एक को शुभ भावना और शुभ कामना की गिफ्ट सदा देते रहो। विशेषता दो और विशेषता लो, गुण दो ओर गुण लो। ऐसी गॉडली गिफ्ट सभी को देते रहो। चाहे कोई किसी भी भावना वा कामना से आये लेकिन आप शुभ भावना की गिफ्ट दो।"

अ.बापदादा 31.12.82

"वर्तमान समय आप सभी ब्राह्मण सो फरिश्ता आत्माओं को निमित्त भाव और निर्मान भाव - इन दो शब्दों को अण्डरलाइन करना है। ... जितना निर्मान होते हैं, उतना मान मिलता है। ... तो निमित्त भाव और शुभ भावना। भाव और भावना दो चीजें हैं।"

अ.बापदादा 21.10.05

"तो नये वर्ष में सर्व बेहद के ब्राह्मण परिवार के बीच एक-दो के प्रति अपनी शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना द्वारा हर एक, एक-दो के परिवर्तन करने में सहयोगी बनो। चाहे कमजोर है, जानते हो इसके संस्कार में यह कमजोरी है लेकिन आप स्नेह और सहयोग की शक्ति द्वारा सहयोगी बनो।" अ.बापदादा 15.12.05

"संगमयुग में ही वरदाता वरदानों से झोली भरते हैं। ... वरदानों का खजाना ऐसा है, जो जितना औरों को देंगे, उतना आप में भरता जायेगा। ... देने की विधि है - यह सब अपना ही परिवार है, सब पर बाप समान रहम करना है।" अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 3

"अनुभव की अथॉरिटी वाले कभी धोखा नहीं खा सकते। ... जैसे बाप को रहम आता है कि भटकती आत्माओं को ठिकाना दें, तो बच्चों के मन में भी यह रहम आना चाहिए।"

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 5

"अधम से अधम वेश्यायें हैं, उनकी भी सर्विस करनी चाहिए। ... उनको ज्ञान देंगे तो बेचारी बहुत खुश होंगी क्योंकि वे भी अबलायें हैं। ... गरीबों का है ही भगवान। ... गरीब ही कुछ न कुछ भेज देते हैं।" सा.बाबा 23.8.05 रिवा.

"किसी के भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते तो अपनी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति को चेक करो और किससे भी मिलते हो तो सदा आत्मा को देखकर बात करो... कैसा भी हो लेकिन आप अपना स्वभाव श्रेष्ठ रखो। आप श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखो। तब ही कार्य अच्छा होगा और जमा होगा।" अ.बापदादा 31.12.05

"कई बच्चे अशुद्ध भावना वा अशुभ भाव से अलग भी रहते हैं ... ब्राहमण जीवन का कर्तव्य है - शुभ भावना से सेवा-भाव, वह नहीं कर सकते हैं।... कोई किसी भी भाव से बोले वा चले लेकिन आप सदा हर एक के प्रति शुभ भाव, श्रेष्ठ भाव धारण करो।"

अ.बापदादा 9.01.93

"अब स्व-उन्नति द्वारा भिन्न-भिन्न शक्तियों की सकाश उन हिम्मतहीन आत्माओं को दो, हिम्मत के पंख लगाओ। ... उन में सुख का, शान्ति का, प्रेम का, आनन्द का रंग लगाओ। ... उनको भी परमात्म मिलन के मंगल मेले का अनुभव कराओ। भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की राह बताओ।" अ.बापदादा 14.3.06

"बीती को बीती कर ... उस आत्मा को भी शुभ भावना, शुभ कामना देंगे लेकिन जैसे दूसरे की कमजोरी देखने, सुनने, ग्रहण करने की आदत नेचुरल और बहुत काल से हो गई है, यह आदत नहीं रखेंगे लेकिन उसके स्थान पर क्या देखेंगे... विशेषता सामने लाओ।"

अ.बापदादा 3.3.88

“ये सब प्वाइन्ट्स बुद्धि में रखनी हैं। प्वाइन्ट्स तो ढेर हैं, बिगर नोट किये याद रह न सकें।... बाबा दिन प्रतिदिन अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुना रहे हैं। तुम्हारा धन्धा ही है मनुष्यों को सुजाग करना, रास्ता बताना।” सा.बाबा 22.3.06 रिवा.

“बाबा की दिल होती है - सर्विस करें। बच्चों को भी बाप समान रहमदिल बनना चाहिए। ... पहले पापात्मा को पुण्यात्मा बनायें फिर रोटी खायें।” सा.बाबा 6.03.06 रिवा.

“अनुभव की अथॉरिटी वाले कभी धोखा नहीं खा सकते। ... जैसे बाप को रहम आता है कि भटकती आत्माओं को ठिकाना दें, तो बच्चों के मन में भी यह रहम आना चाहिए।”

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 5

“प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है, वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है। ... किसी की बुरी बात को समझना अलग चीज है लेकिन स्वयं में वा अपने चित्त पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई रूप में धारण नहीं करना है।”

अ.बापदादा 21.11.92

“स्वस्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते।... कोई भी ब्राह्मण आत्मायें अगर वशीभूत हैं तो वशीभूत पर रहम आता है, तरस पडता है... ब्राह्मण आत्मा भी वशीभूत है तो उस पर भी रहम की भावना रखो। ... वह सदा साक्षी होकर खेल देखेगा, आकर्षित नहीं होगा।” अ.बापदादा 17.12.89 पार्टी

“अपने भाई-बहनों के ऊपर रहमदिल बनो ... सच्चे रहम में कोई लगाव नहीं होता ... स्वार्थ का रहम नहीं। ... अगर कर्मातीत बनना है तो यह सभी रुकावटें, जो बॉडी कान्शस में ले आती हैं, उनसे मुक्त हो जाओ।” अ.बापदादा 10.3.96

“चाहे कैसी भी आत्मायें हैं लेकिन हैं तो एक ही परिवार के। किसको भी देखेंगे तो महसूस करेंगे कि यह हमारा ही भाई है। ... ब्राह्मण आत्मा को कभी भी किसी आत्मा के प्रति घृणा नहीं आ सकती। ... रहमदिल बाप के बच्चे घृणा नहीं करेंगे। परिवर्तन की भावना रखेंगे, कल्याण की भावना रखेंगे।” अ.बापदादा 6.1.90 पार्टी

“कोई भी विशाल कार्य होता है तो बाप के स्नेह और विशेष आत्माओं की शुभ-भावना, शुभ-कामना बच्चों के साथ है। बुद्धिवानों की बुद्धि किसी को भी निमित्त बनाये अपना कार्य निकाल देते हैं। इसलिए बेफिकर बादशाह बन लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन शुभ-भावना, शुभ-कामना के वायब्रेशन्स फैलाते रहो।” अ.बापदादा 2.1.90

"अगर अपनी श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति है तो सेकण्ड के संकल्प से, दृष्टि से अपने दिल के मुस्कराहट से सेकण्ड में भी किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। कोई गिफ्ट के बिना, खाली हाथ न जाये।" अ.बापदादा 31.12.94

"आप पूर्वज आत्मायें हो। पूर्वज स्वरूप से सदा विश्व की सर्व आत्माओं को रहम की भावना से देखते, वरदानी बन शुभ भावना और शुभ कामना का वरदान देते रहो।... पूर्वज अर्थात् रहमदिल आत्मा।" अ.बापदादा 5.12.94 पंजाब

"छोटी-छोटी आपदायें और तड़पाती हैं ... चिल्लाते-चिल्लाते मरना और एकधक से परिवर्तन होना, फर्क तो है ना। महाविनाश और रिहर्सल का विनाश, फर्क है। ... रहम की भावना इमर्ज करो। चाहे स्व के प्रति, चाहे सर्वात्माओं के प्रति।"

अ.बापदादा 25.1.94 दादियों से

"रहमदिल बनकर खुशी का खज़ाना बांटते जाओ। गाया हुआ है कि भावना का फल मिलता है। चाहे उन आत्माओं में ज्ञान के प्रति, योग के प्रति शुभ भावना नहीं भी हो तो भी आपकी शुभ भावना उनको फल दे देती है। ऐसे नहीं सोचो कि इतनी सेवा की लेकिन फल तो मिला ही नहीं। ... सीज़न का फल सीज़न पर ही फल देगा ना।"

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी 1

"हर बात में चेरिटी बिगिन्स एट होम। पहले स्व से, फिर ब्राह्मण परिवार से, फिर विश्व से सहयोग। हर संकल्प में स्नेह, निस्वार्थ सच्चा स्नेह, दिल का स्नेह।"

अ.बापदादा 11.8.88

"ब्रह्मा बाप को देखा, कैसा भी बच्चा हो लेकिन शिक्षा-दाता बन शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा के साथ प्यार भी दिल से रखते। ... शिक्षा के साथ शुभ भावना, शुभ कामना और रहमदिल - यह सहज काम करता है। ... प्यार में महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती है।"

अ.बापदादा 18.1.97

"जैसे बाप को बेहद के बच्चों को बेहद का वर्सा देने का संकल्प है और निश्चित होना ही है। ऐसे आप सबके दिल में ये शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि सब हमारे भाई-बहनें बेहद के वर्से के अधिकारी बन जायें?" अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और राग-द्वेष, इर्ष्या-घृणा

वास्तव में इस विश्व-नाटक में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, इर्ष्या आदि का कोई स्थान नहीं

है परन्तु अज्ञानतावश आत्मा इनमें फंसकर दुखी होती है, व्यर्थ-चिन्तन आदि से ग्रस्त अनेक प्रकार के विकर्म कर अपने पापों का खाता बढ़ाती है और दुखी होती है। ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक का, कर्म-सिद्धान्त का यथार्थ ज्ञान देकर इन सबसे मुक्त होने का मार्ग दिखाया है, जो उनकी श्रीमत पर यथार्थ रीति चलता है, वह इन सबसे मुक्त हो जीवन का सच्चा सुख पाता है।

बाबा ने श्रीमत दी है - तुमको लगाव या घृणा दोनों से किसी व्यक्ति या वस्तु की याद नहीं आनी चाहिए। दोनों प्रकार की याद परमात्मा पिता की याद को भुलाने वाली है और अहितकर है।

अ.बापदादा 87 की मुरली

"तुमको अन्दर में किसके लिए विरोध, नफरत नहीं होनी चाहिए।... तुम ईश्वरीय सन्तान हो, ईश्वर की महिमा है - ज्ञान का सागर, प्यार का सागर... अपने दिल से पूछो - जैसे बाप भविष्य 21 जन्मों के लिए सुख देते हैं, वैसे हम भी वह कार्य करते हैं।"

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"बच्चों को कभी ईर्ष्या भी नहीं होनी चाहिए कि बाबा बड़े आदमियों की खातिरी क्यों करते हैं। बाप तो हर एक बच्चे की नब्ज देखकर उनके कल्याण अर्थ हर एक को उस अनुसार चलाते हैं। ... बच्चों को कब इसमें संशय नहीं लाना चाहिए।" सा.बाबा 29.11.05 रिवा.

"अभी तुमको इस सारे ड्रामा का पता है ... हमको कोई से नफरत नहीं आती है। यह तो समझाना पड़ता है।... अभी तुमको ईश्वरीय मत मिलती है, उस पर चलना है। ... यह सतोप्रधान और तमोप्रधान का खेल है। ग्लानि की कोई बात नहीं है।"

सा.बाबा 24.11.05 रिवा.

"मास्टर दाता बने हो या दूसरे को देखकर घृणा आती है? रहम आता है, दया भाव आता है, दातापन की स्मृति आती है या क्यों-क्या उत्पन्न होता है? आप सबका टाइटिल है - विश्व कल्याणकारी। तो जो विश्व कल्याणकारी है, उसको हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना होगी ना। उसके अन्दर किसी भी आत्मा के प्रति घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, ग्लानि का भाव उत्पन्न नहीं होगा।" अ.बापदादा 4.12.91 पार्टी 3

"अगर किसी आत्मा के प्रति किसी भी समय ईर्ष्या की भावना है अर्थात् अपनेपन की भावना नहीं है तो उस व्यक्ति के हर बोल, हर चलन से मिस्-अण्डरस्टेण्डिग का भाव अनुभव होगा। ... भावना, भाव को बदलने वाली है। तो चेक करो कि हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ भाव रहती है?" अ.बापदादा 9.01.93

"मास्टर दाता बने हो या दूसरे को देखकर घृणा आती है? रहम आता है, दया भाव आता है,

दातापन की स्मृति आती है या क्यों-क्या उत्पन्न होता है ? आप सबका टाइटिल है - विश्व कल्याणकारी। तो जो विश्व कल्याणकारी है, उसको हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना होगी ना। उसके अन्दर किसी भी आत्मा के प्रति घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, ग्लानि का भाव उत्पन्न नहीं होगा।" अ.बापदादा 4.12.91 पार्टी 3

"चाहे सच्चा है या झूठा है, जिससे आपका कनेक्शन नहीं है, आप कुछ कर नहीं सकते हो ... बुद्धि में गया तो श्रीमत में परमत मिक्स कर दी। क्योंकि बाप की आज्ञा है - सुनते हुए नहीं सुनो। ... जिस व्यक्ति का समाचार सुना, उसके प्रति दृष्टि में वा संकल्प में अंशमात्र भी घृणा भाव नहीं हो।" अ.बापदादा 25.11.95

"वास्तव में अगर दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल है, ज़रा भी खाली नहीं है तो कभी भी किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता।... बाप के साथ आप सब ने भी पान का बीड़ा उठाया है कि पवित्रता द्वारा हम प्रकृति को भी पावन करेंगे।... बापदादा चाहते हैं हर एक बच्चा लगाव-मुक्त बने - चाहे साधनों से, चाहे व्यक्ति से। साधनों को यूज़ करना और चीज है और लगाव अलग चीज़ है।" अ.बापदादा 16.11.95

"रुहानी नशे वाले को कोई गाली देवे तो भी उसके प्रति घृणा नहीं आ सकती ... फुल-स्टॉप लगाने वाले फुल पास होते हैं। फुल-स्टॉप वही लगा सकते हैं, जिनके पास शक्तियों का फुल-स्टॉक होगा।" अ.बापदादा 1.3.90 पार्टी 3

श्रीमत और निर्दोष दृष्टि

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है, इसलिए हर आत्मा निर्दोष है, इसका बाबा ने ज्ञान भी दिया है और इस स्थिति को धारण करने के लिए श्रीमत भी दी है और युक्तियाँ भी बताई हैं क्योंकि अपनी अवस्था को एकरस बनाने और अनेक प्रकार के पापों से बचने के लिए यह बहुत आवश्यक है। बाबा ने इस विश्व-नाटक के यथार्थ सत्य का ज्ञान दिया है, उसके अनुसार - जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुम हर आत्मा को निर्दोष देखो और अपने कर्मों का ध्यान रखो। दूसरे को दोष देना भी अज्ञानता है और अनेक विकर्मों का दरवाजा खोलना है क्योंकि किसी आत्मा को दोषी समझने से उसके प्रति दृष्टि-वृत्ति और व्यवहार बदल जाता है, जिससे अनेक प्रकार के विकर्म होते हैं।

"बाप किसी को दोष नहीं देते हैं। वह तो यह जानते हैं - तुमको पावन से पतित बनना ही है

और हमको पतित से पावन बनाना ही है। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें कोई की निन्दा की बात नहीं। ... बाप तुम बच्चों को कितना समझदार बनाते हैं।”

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

“भारत जो शिवालय था, वही अब वेश्यालय बना है ना। इसमें ग्लानि की तो बात ही नहीं। यह खेल है, जो बाप समझाते हैं। ... यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, वह नॉलेज देते हैं।”

सा.बाबा 19.10.04 रिवा.

“तुम किसके पास भी जाओ। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तो क्या परन्तु हम आत्मा क्या चीज हैं, वह भी नहीं जानते हैं। ... ड्रामानुसार उन्हों का भी कोई दोष नहीं है। ... न आत्मा विनाश होने वाली है और न उनका पार्ट विनाश हो सकता है।” सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

“बच्चे अन्जान हैं, इसलिए उनका कोई दोष दिखाई नहीं पड़ता। ऐसे ही माया भी अगर किस आत्मा के द्वारा समस्या वा विघ्न वा परीक्षा पेपर बनकर आती है तो उन आत्माओं को निर्दोष समझना चाहिए। ... इस दृष्टि से हर आत्मा को देखो तो फिर पुरुषार्थ की स्पीड कब ढीली नहीं हो सकती। 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए यह कला भी आनी चाहिए।”

अ.बापदादा 3.10.71

“प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा। किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर... न ड्रामा के ऊपर... न व्यक्ति पर... न प्रकृति के ऊपर, ... न अपने शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।” अ.बापदादा 5.10.87

“ड्रामा अनादि बना हुआ है। न रावण का दोष है और न मनुष्यों का दोष है। चक्र को फिरना ही है। ...बच्चे अन्तर्मुख होकर अपना चार्ट रखो तो जो भूलें होती हैं, उनका पश्चाताप कर सकेंगे। यह जैसे योगबल से अपने को माफ करते हो। बाबा कोई क्षमा या माफ नहीं करते। ड्रामा में क्षमा अक्षर ही नहीं है।... पाप का दण्ड भोगना ही पड़ता है। क्षमा की बात नहीं।”

सा.बाबा 7.7.05 रिवा.

“जो पास्ट हो चुका है वह फिर से होना है। बनी बनाई ...अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा राज़ है। किसको भी दोष नहीं दे सकते। ड्रामा में पार्ट है। तुमको सिर्फ बाप का पैग़ाम सुनाना है। ... कल्प पहले भी जो निमित्त बने होंगे, वे ही अब बनेंगे और बनाते जायेंगे। बच्चों को विचार सागर मन्थन करना है।” सा.बाबा 26.9.06 रिवा.

श्रीमत और माया का ग्रहण

अभी सभी आत्माओं पर माया का ग्रहण लगा हुआ है। ग्रहण उतारने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चे, दे दान तो छूटे ग्रहण अर्थात् विकारों का दान दो, विकारों का मूल कारण देहाभिमान का दान दो तो माया का ग्रहण छूट जायेगा। इसकी यादगार में ही भक्ति मार्ग में सूर्य-ग्रहण, चन्द्र-ग्रहण के समय विभिन्न प्रकार का दान देते हैं।

"एक हम और दूसरा बाप, तीसरा देखते हुए भी न देखो। ... कोई भी हो, उसकी विशेषता को देखो तो विशेषात्मा बन जायेंगे। कमी को तो बिल्कुल देखना ही नहीं है। जैसे चन्द्रमा अथवा सूर्य को ग्रहण लगता है तो कहते हैं ना कि नहीं देखना चाहिए। नहीं तो ग्रहचारी बैठ जायेगी।" अ.बापदादा 30.7.70

"बाप की श्रीमत पर न चलने से माया वार करती है... अपने पर आपेही तरस आना चाहिए। बाप राय बड़ी सिम्पुल देते हैं। माया के तूफान तो बहुत आते हैं परन्तु महावीर बनना है।"

सा.बाबा 17.8.06 रिवा.

"मायाजीत बनने का सहज साधन है - सदा सर्व प्राप्तियों से भरपूर रहो। ... अगर ज़रा भी कमी होगी तो माया छोड़ेगी नहीं। ... सदा स्लोगन याद रखो - अब नहीं तो कब नहीं।"

अ.बापदादा 13.12.89 पार्टी

"सीता का गायन है। ज़रा संकल्प भी बाहर निकलने का आया तो माया आ जायेगी। सदा दिल तख्त पर रहो तो माया आ नहीं सकती।" अ.बापदादा 13.12.89 पार्टी

"एक बात सदा के लिए याद रखो कि "माया के जाने के अन्तिम चरण हैं, इसलिए विदाई लेते-लेते भी अपना तीर लगाती रहेगी" ... वह आराम से जाने वाली नहीं है। ... माया तो आयेगी लेकिन आपको मायाजीत बनना है।" अ.बापदादा 14.1.90

"भारत ही हेविन था, वही अभी हेल बन गया है, फिर हेल को हेविन बाप के बिगर कोई बना न सके। देवताओं को सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है, यहाँ के मनुष्य तो सम्पूर्ण विकारी हैं, इनको कहा जाता है पतित।... इस समय भारत श्रापित है, बहुत दुखी है। इस रावण पर जीत पानी है। गाया जाता है - दे दान तो छूटे ग्रहण।... पहला दान तो काम विकार का देना है।"

सा.बाबा 18.5.06 रिवा.

श्रीमत और माया, माया से युद्ध एवं माया पर विजय / श्रीमत और उमंग-उत्साह, हिम्मत एवं साहस

जब हम बाबा के बनते हैं तो हमारी माया से युद्ध आरम्भ हो जाती है क्योंकि माया और प्रभु दो विरोधी पार्टियां हैं। अभी हम माया का पक्ष छोड़कर प्रभु के पक्ष में आये हैं, इसलिए माया से युद्ध होती है, उस युद्ध में हम कैसे विजयी बनें, उसके लिए बाबा ने श्रीमत के रूप में अनेकानेक अस्त्र-शस्त्र दिये हैं, जो सदा साथ रहें तो माया से कब हार हो नहीं सकती।

ये कलियुग का अन्त है, अभी हमको अनेक जन्मों के पापों का बोझा खत्म करना है, संस्कारों को बदलना है, इसलिए जीवन में अनेक प्रकार के खराब संकल्प आदि न चाहते भी आ जाते हैं। इसलिए बाबा ने इन सब बातों का ज्ञान देकर श्रीमत दी है कि भले कोई तूफान, संकल्प आदि आयें परन्तु तुमको हार्टफेल नहीं होना है, हतोत्साहित नहीं होना है। युद्ध करके उन पर विजय पानी है।

बाबा की बच्चों को श्रीमत है - बच्चे सदा ही उमंग-उत्साह में रहो, हिम्मतवान होकर माया से लड़ो और विजय प्राप्त करो। विजय तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जो हिम्मतहीन है, उसकी पहले ही हार हो जाती है, इसलिए बाबा कहते - कब हिम्मत नहीं हारो। बाबा कहते- उमंग-उत्साह और हिम्मत वाले को परमात्मा की मदद तो मिलती ही है, साथ ही दैवी परिवार की मदद भी मिल जाती है।

"जब कोई में माया प्रवेश करती है तो पहला रूप आलस्य का धारण करती है। ... ज्ञानी तू वत्सों में छटे विकार सुस्ती के रूप से माया प्रवेश करती है।" अ.बापदादा 25.6.70

"याद की अग्नि जली हुई होगी तो माया आ नहीं सकेगी। यह लगन की अग्नि बुझनी नहीं चाहिए। बाप को साथ रखने से शक्ति आपही आ जायेगी। फिर विजय ही विजय है।"

अ.बापदादा 24.1.70

"सर्व सम्बन्ध किससे हैं? एक से। तो एक से दो भी बनना है तो बाप और बच्चे, तीसरा कोई सम्बन्ध नहीं। ... ऐसी स्थिति में रहने से मायाजीत बनते हैं। ... यह शुद्ध स्नेह सारे कल्प में एक ही बारमिलता है। ऐसे स्नेह को हम ही पाते हैं, जो और कोई को प्राप्त नहीं हो सकता, वह हमको प्राप्त हुआ है। इसी नशे और निश्चय में रहना है।" अ.बापदादा 24.1.70

"सारा मदार है याद की यात्रा पर। याद की यात्रा में ही माया की युद्ध चलती है। तुम युद्ध को भी समझते हो। यह यात्रा नहीं परन्तु जैसे कि लड़ाई है, इसमें ही बहुत खबरदार रहना है।

नॉलेज में माया के तूफान आदि की बात नहीं।" सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

"बाप यह भी बताते हैं कि माया विघ्न जरूर डालेगी क्योंकि उसकी ग्राहकी चली जायेगी।... उनको (बाप) याद करें तो चेहरा ही चमकता रहे।... माया फथकायेगी भी बहुत। माया कोशिश करेगी, तुम्हारी याद को भुलाने की। तुम सदैव ऐसे हर्षित रह नहीं सकेंगे।"

सा.बाबा 20.11.04 रिवा.

"सदैव बड़े से बड़े बाप की बड़ाई करते रहो। इसमें सारी पढ़ाई भी आ जाती है। ... माया के आकर्षण से बचने के लिए एक तो सदैव अपनी शान में रहो, दूसरा माया को खेल समझ सदैव खेल में हर्षित रहो। सिर्फ दो बातें याद रहें तो हर कर्म यादगार बन जाये। जैसे साकार में अनुभव किया।" अ.बापदादा 6.5.71

"जो सारा दिन अलबेले और आलस्य के वश होते हैं और जिनका अटेन्शन कम होता है। ऐसी अलबेली आत्माओं को माया भी विशेष वरदान के समय बाप की आज्ञा पर न चलने का बदला लेती हैं और ऐसी आत्माओं का दृश्य बहुत आश्चर्यजनक दिखाई देता हैं।"

अ.बापदादा 8.7.74

"ऐसे ही भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से भिन्न-भिन्न अपने स्वरूप की स्मृति को इमर्ज कर अनुभव करो तो सदा साथ का अनुभव करेंगे। ... सर्व सम्बन्ध निभाने में इतने बिजी रहेंगे जो माया को आने की भी फुर्सत नहीं मिलेगी।" अ.बापदादा 14.10.87

"माया का धर्म है तुम्हारे योग को तोड़ना। ... माया के तूफान बहुत आते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। सबसे आगे तो यह है, तो इनको सब अनुभव होते हैं। मेरे पास आयें तब तो सबको समझाऊं। ... माया के तूफान न आयें, योग लगा ही रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जाये।"

सा.बाबा 9.6.05 रिवा.

"माया से डरती तो नहीं हो ? जो डरता है, वह हार खाता है। जो निर्भय होता है, उससे माया खुद भयभीत होती है। ... माया के परवश होना भी अपनी कमजोरी है। अपनी किसी कमजोरी के कारण ही परवश होता है।" अ.बापदादा 24.10.75

"चारो ही सेवाओं (स्व-सेवा, विश्व-सेवा, यज्ञ-सेवा और मन्सा-सेवा) में से हर समय कोई न कोई सेवा करते रहो तो सहज ही निरन्तर सेवाधारी बन जायेंगे।... सेवा में बिजी रहने के कारण सहज मायाजीत बन जायेंगे।" अ.बापदादा 6.11.87

"इसको कहा जाता है - युद्ध का मैदान। तुम हरेक इण्डिपेण्डेण्ट युद्ध के मैदान में सिपाही हो। अब हरेक जितना चाहे उतना पुरुषार्थ करे। ... राजाई में ऊंच पद पाना - यह है पुरुषार्थ करना। बाकी बाप सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं।" सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

"अभी तुम माया पर जीत पाने के लिए युद्ध करते हो। युद्ध करते-करते फेल हो जाते हैं तो त्रेता में चले जाते हो।" सा.बाबा 22.11.04 रिवा.

"रावण को जीतने का यह युद्ध का मैदान है। थोड़ा भी देह का अभिमान न आये "मैं ऐसी सर्विस करता हूँ, यह करता हूँ...।" हम तो गॉडली सर्वेन्ट हैं, सबको पैगाम देना ही है।"

सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

"अभी तुम समझते हो - माया से युद्ध कैसे चलती है। ... तुम ही जानते हो अभी हमको माया से युद्ध करनी है। बाप कहते हैं - तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है ही काम विकार। योगबल से इस पर विजय पाते हो।" सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

"विघ्नों का सामना करने के लिए पहले चाहिए परखने की शक्ति, फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति। ... निर्णय के बाद ही सहनशक्ति धारण कर माया का सामना कर सकेंगे।... हार से बचने के लिए परखने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति को बढ़ाना है।... अशरीरी, निराकारी और कर्म में न्यारापन निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए बहुत आवश्यक है।"

अ.बापदादा 26.6.69

"बाप कहते हैं - तुम बच्चे बनेंगे तो देहाभिमान की और काम-क्रोध आदि की बीमारी बढ़ेगी, नहीं तो परीक्षा कैसे हो। ... यह युद्ध का मैदान है, इसमें डरना नहीं है कि पता नहीं तूफानों में ठहर सकेंगे या नहीं।" सा.बाबा 13.12.04 रिवा.

"महारथी अर्थात् इस रथ पर सवार, अपने को रथी समझे।... जैसे योद्धे सर्व व्यक्तियों, सर्व वैभवों से किनारा कर "युद्ध और विजय" - इन दो बातों को सिर्फ बुद्धि में रखते हुए अपने लक्ष्य को पूर्ण करने में लगे हुए होते हैं। ... ऐसे योद्धे बने हो ? ... योद्धे कभी भी आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते। कभी शस्त्रों के बिना रहीं रहते। ... भय के वशीभूत नहीं होते हैं।" अ.बापदादा 13.6.73

"एक तो संग्रह करने की शक्ति और दूसरी संग्राम करने की शक्ति। संग्रह करने की शक्ति भी अति आवश्यक है। ... जिसमें जितनी ज्ञान रतनों को संग्रह करने की शक्ति है उतनी ही उसमें संग्राम करने की भी शक्ति रहती है।" अ.बापदादा 18.3.71

"इसमें कुछ भी खर्चा नहीं है। कुछ भी खर्चा आदि करते हैं सो तो अपने लिए ही करते हैं। इसमें पाई का भी खर्चा नहीं है। ... तुम्हारी लड़ाई है गुप्त, योगबल की। ... बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए परन्तु युद्ध का मैदान है, माया ठहरने नहीं देती है।"

सा.बाबा 24.9.04 रिवा.

"याद का पुरुषार्थ तो इनको भी करना है। ... सबसे जास्ती मेहनत इनको करनी पड़ती है।

युद्ध के मैदान में महारथी से ... जितना बड़ा पहलवान, उतना जास्ती माया परीक्षा लेती है। माया बहुत तूफान लाती है।" सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

"रुस्तम से माया भी रुस्तम होकर लड़ती है। बाबा अपना अनुभव भी बतलाते हैं। मैं रुस्तम हूँ, जानता हूँ मैं बेगर टू प्रिन्स बनने वाला हूँ तो भी माया सामना करती है। माया किसको छोड़ती नहीं है। पहलवानों से तो और ही लड़ती है।" सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

"देह-अहंकार आया और ये फँसा। बाप समझाते हैं - जो भी पहलवान हैं, उन पर माया की चोट लगती है। माया भी बलवान से बलवान होकर लड़ती है।"

सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

"रुस्तम से माया भी अच्छी रीति रुस्तम होकर लड़ती है। कच्चे से क्या लड़ेगी! ... माया भी समर्थ है ना। तुम बच्चों को उस्ताद मिला हुआ है।... माया को पहलवान देखकर हार्ट फेल नहीं होना चाहिए।" सा.बाबा 13.5.05 रिवा.

"बाबा कहते - बच्चे, यह युद्ध का मैदान है, इसमें होपलेस नहीं होना चाहिए। याद के बल से ही माया पर जीत पानी है। ...जो करेगा सो पायेगा।" सा.बाबा 9.7.05 रिवा.

"सदैव हर्षित रहना है। तूफान तो आयेंगे। तूफान आयें तब तो महावीरनी की ताकत देखने में आये। जितना तुम मजबूत बनेंगे, उतना तूफान आयेंगे।" सा.बाबा 24.10.05 रिवा.

"ये बड़ी महीन बातें हैं, जो मोटी बुद्धि वाले तो समझ न सकें।... हार्टफेल भी नहीं होना है। कर्मेन्द्रियों को वश नहीं कर सकते तो गिर पड़ते हैं।... विकार से सबसे जास्ती कट चढ़ती है।" सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

"बच्चे लिखते -मन्सा में अभी बहुत खराब ख्यालात आते हैं, जो आगे नहीं आते थे। बाप कहते हैं - तुम यह ख्याल नहीं करो। आगे तुम युद्ध के मैदान में थोड़ेही थे। अभी तुमको माया पर जीत पानी है।... रुस्तम से माया भी रुस्तम होकर लड़ती है।"

सा.बाबा 23.11.05 रिवा.

"बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल-अडोल स्थित रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं।... प्रकृति के भी पांच खिलाड़ी हैं और माया के भी पांच खिलाड़ी हैं। ... खिलाड़ी खेल के बिना रहेंगे क्या ?... संगमयुगी ब्राह्मण आत्माओं के लिए तो खेल देखना इन्ज्वाय करना है।" अ.बापदादा 16.3.92

"हिम्मत हमारी और मदद बाप की है ही है। इस विधि से प्रतिज्ञा प्रैक्टिकल में लाने में बहुत सहज अनुभव करेंगे। ... विजय की खुशी, विजय का नशा शक्तिशाली बना देगा। ... पाण्डव हो ना। ... सदैव यह स्मृति में रखो कि हम सभी सिद्धि स्वरूप आत्मायें हैं।"

अ.बापदादा 1.3.92

"लिखते हैं - बाबा मन में संकल्प बहुत आते हैं। बाप कहते - खबरदार रहना है। गन्दे स्वप्न, मन्सा में संकल्प आदि बहुत आयेंगे लेकिन इनसे डरना नहीं है। सतयुग-त्रेता में यह बातें होती नहीं। ... तुम सिलवर एज तक पहुँचेंगे तब कर्मेन्द्रियों की चंचलता बन्द हो जायेगी। ... सतयुग-त्रेता में कर्मेन्द्रियां वश थीं ना। ... याद करते-करते आइरन एज से सिलवर एज तक पहुँच जायेंगे तो कर्मेन्द्रियां वश हो जायेंगी।" सा.बाबा 24.12.05 रिवा.

"वायुमण्डल के प्रभाव में नहीं आना है, अपना प्रभाव वायुमण्डल पर डालना है। ... एक बात की तो मुबारक है कि अभी हिम्मत रखकर आ गई हो। आपके हिम्मत के कदम पर बापदादा की पदमगुणा मदद है ही है। इसलिए कब दिलशिकस्त नहीं होना। सदा दिलखुश।"

अ.बापदादा 15.11.05 कुमारियाँ

"एकरस स्थिति जैसे यह आसन हो गया, फरिश्ता स्थिति यह आसन हो गया। ... माया तो अन्त तक आयेगी लेकिन माया का काम है आना और आपका काम है विजय प्राप्त करना। माया आये तब ही तो मायाजीत बनेंगे। तो माया का आना बुरी बात नहीं है लेकिन हार खाना कमजोरी है। सदा यह याद रखो कि अनेक बार के विजयी हैं और सदा विजयी रहेंगे।"

अ.बापदादा 2.12.93 पार्टी 5

"हर दिलखुश मिठाई खाते भी रहना और खिलाते भी रहना। ... गुणों की गिफ्ट देना, शक्तियों की गिफ्ट देना ... सदा उमंग-उत्साह में उड़ते रहना और उड़ाते रहना। नये वर्ष की गुडमॉर्निंग।" अ.बापदादा 31.12.93

"जब ये बन सकते हैं तो आप नहीं बन सकते हो!... जब मूर्ति बन रहे हो तो कुछ तो हैमर लगेंगे ना। नहीं तो ऐसे कैसे मूर्ति बनेंगे।... ये तूफान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की।... आप लोग तो अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यू। खेल लगता है।"

अ.बापदादा 23.12.93 दादियों से

"जितना उमंग-उत्साह अपने में होगा, उतना औरों को भी उमंग-उत्साह में उड़ायेंगे।... तो चेक करो कि कभी भी आलस्य या अलबेलापन तो नहीं आ जाता है? ... जिसको उमंग-उत्साह है, वह कभी थकता नहीं है।" अ.बापदादा 16.12.93 पार्टी 2

"याद और निस्वार्थ सेवा। स्वार्थ की सेवा नहीं, निस्वार्थ सेवा है तो मायाजीत बनना बहुत सहज है। ... सबसे बड़ा धन है अविनाशी धन, जो सदा साथ है। ... तो सभी भरपूर हो कि थोड़ा-थोड़ा खाली हो? ... कोई क्रोध करे तो क्रोध आता है, कोई इन्सल्ट करे तो क्रोध आता ... यह तो ऐसे ही हुआ जैसे दुश्मन आता है तो हार होती है।"

अ.बापदादा 25.11.93 पार्टी 1

"अगर मन-बुद्धि से बिजी हैं तो मायाजीत हो ही गये।... मन-बुद्धि को फ्री रखना माना माया का आवाह्न करना। ... इससे एक तो मायाजीत बन जायेंगे और दूसरा सदा खुशी में नाचते रहेंगे।" अ.बापदादा 7.3.93 पार्टी 1

"ब्राह्मण जीवन का स्वांस है - सदा उमंग और उत्साह। ... चेक करो कि "मुझ ब्राह्मण जीवन के उमंग-उत्साह की गति नार्मल है या कभी बहुत फास्ट और कभी बहुत स्लो हो जाती है।"... एकरस होना चाहिए।" अ.बापदादा 18.02.93

"मीटिंग में सर्विस के प्लॉन भल बनाओ लेकिन इस मीटिंग में सफलता की सेरीमनी का प्लॉन बनाओ। सफलता की सेरीमनी की डेट फिक्स करो। ... जो हिम्मत रखते कि करके दिखायेंगे, वे हाथ उठाओ। ... इसमें दूसरे को नहीं देखना, पहले मैं।"

अ.बापदादा 18.1.06

"यथार्थ शक्तिशाली याद का प्रत्यक्ष प्रमाण समय प्रमाण शक्ति हाजिर हो जाये। ... ऐसे नहीं समझो कि बात ही ऐसी थी ना, सरकमस्टांस ही ऐसे थे, वायुमण्डल ऐसा था ... यही तो दुश्मन हैं। जब दुश्मन आ जाये उस समय कहो - दुश्मन आ गया, इसलिए तलवार नहीं चला सके ... तो तलवार किस लिए?" अ.बापदादा 20.12.92

"माया के तूफान आते हैं, उनका तुम ख्याल नहीं करो। माया के तूफान तो आयेंगे। यह है माया से युद्ध। तूफान तो पास हो जायेगा, सदैव थोड़ेही रहेगा। ... सवेरे उठकर बाप को याद करो।" सा.बाबा 1.7.06 रिवा.

"बाप कहते हैं बाप को याद करो। तूफान तो आयेंगे ... यह भी बॉक्सिग है। ऐसे मत समझो कि माया थप्पड़ नहीं मारेगी।... बाप को याद करना है। माया के विघ्नों से डरना नहीं है।"

सा.बाबा 27.6.06 रिवा.

"ब्रह्मा बाप का फरिश्ता बनना आप ज्यादा से ज्यादा बच्चों के भाग्य खुलने का कारण रहा। ... आप सब सेवा में साथी और माया के परिस्थितियों से साक्षी। ... जब कोई भी विकराल रूप की माया आवे तो सदा साक्षी होकर खेल करो।" अ.बापदादा 18.1.96

"कोई भी परिस्थिति आती है तो उस परिस्थिति को अपना थोड़े समय के लिए शिक्षक समझो। परिस्थिति आपको विशेष दो शक्तियों के अनुभवी बनाती है। एक सहनशक्ति, न्यारापन, नष्टोमोहा और दूसरा सामना करने की शक्ति का।" अ.बापदादा 18.1.96

"श्रीमत से ही तुम श्रेष्ठ बनेंगे, यह भूलो मत।... कुछ अवज्ञा की है तब माया ने जोर से थप्पड़

मारा और चले गये।" सा.बाबा 20.6.06 रिवा.

"कोई बात आती है तो खेल समझते हो तो अपसेट होने के बजाये मनोरंजन समझते हो।... कोई भी बात आये, उसको एक खेल समझो।... नॉलेजफुल तो बन गये लेकिन सिर्फ नॉलेजफुल नहीं चाहिए, नॉलेज के साथ पॉवरफुल भी चाहिए।" अ.बापदादा 7.3.95

"बाप द्वारा जो ज्ञान-बल और योग-बल इतना श्रेष्ठ मिला है, जो माया की शक्ति उसके आगे कुछ नहीं है। ... सदा ये स्मृति में रहे कि विजयी हैं और सदा विजयी रहेंगे।"

अ.बापदादा 25.1.94 पार्टी 4

"माया महसूसता शक्ति को गायब कर देती है ... रॉयल माया रियल को समझने नहीं देती है। रांग को राइट समझते और सिद्ध करने में माया के सुप्रीम कोर्ट का वकील बन जाते हैं। ... इसलिए बाबा अटेन्शन को डबल अण्डरलाइन करा रहे हैं। महसूसता शक्ति को परिवर्तित करने की सूक्ष्म स्वरूप की माया की छाया से सदा अपने को सेफ रखो।"

अ.बापदादा 10.1.94

"तुम हो महावीर और महावीरनियां। तुमको सिवाए एक बाप के और कोई की परवाह नहीं। ... बड़े-बड़े घरों से बच्चियां निकल आई, कोई भी परवाह नहीं की। जिनकी तकदीर में नहीं है तो समझ भी न सकें। पवित्र रहना है तो रहो, नहीं तो जाकर अपना प्रबन्ध करो। इतनी हिम्मत भी तो चाहिए ना। इस बाप के सामने कितने हंगामें हुए। बाबा को कभी रंज हुआ देखा।" सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

श्रीमत और आशा-निराशा

सर्वशक्तिवान परमात्मा हमारे साथ है, कल्प-कल्प के हम विजयी है, इस सत्य को स्मृति में रख कर निराश नहीं होना है। जो दृढ़ निश्चयबुद्धि, आशावान होकर पुरुषार्थ करता है, वह अवश्य ही विजय पाता है।

"निराशा को कुछ सेकेण्ड भी अपने अन्दर स्थान दिया तो वह सहज जाने वाली नहीं है।... इसलिए निराश कभी नहीं बनो। अभिमान भी नहीं और निराशा भी नहीं।... जहाँ अभिमान नहीं होगा, उसको अपमान भी अपमान नहीं लगेगा।" अ.बापदादा 1.3.92

"हर संकल्प में बापदादा की याद से लाइट लेते जाओ और लाइट-हाउस होकर लाइट देते

जाओ। टाइम वेस्ट नहीं करो। बापदादा युद्ध करते हुए देखते हैं तो बापदादा को अच्छा नहीं लगता। मास्टर सर्वशक्तिवान और युद्ध कर रहा है। तो राजा बनो, सफलतामूर्त बनो और निराशा को खत्म कर आशा के दीप जगाओ।" अ.बापदादा 18.1.06

"बापदादा एक विचित्र दीवाली मनाने चाहते हैं।... चारो ओर मनुष्यात्माओं में निराशा बहुत बढ़ती जा रही है... कोई भी सेवा करो लेकिन बापदादा निराश मनुष्यों में आशा का दीप जगाने चाहते हैं।... वायुमण्डल में यह आशा का दीपक जग जाये कि अब विश्व परिवर्तन हुआ कि हुआ, गोल्डन सवेरा आया कि आया। यह निराशा खत्म हो जाये कि कुछ होना नहीं है।" अ.बापदादा 18.1.06

"निराशा को कुछ सेकेण्ड भी अपने अन्दर स्थान दिया तो वह सहज जाने वाली नहीं है। ... इसलिए निराश कभी नहीं बनो। अभिमान भी नहीं और निराशा भी नहीं।... जहाँ अभिमान नहीं होगा, उसको अपमान भी अपमान नहीं लगेगा।" अ.बापदादा 1.3.92

श्रीमत और कर्म / श्रीमत और कर्मयोगी स्थिति / श्रीमत और विकर्मों से मुक्त अर्थात् श्रेष्ठ कर्म

ये सारा विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित है। श्रेष्ठ कर्मों से सुख और विकर्मों के फल स्वरूप आत्मा दुख पाती है। कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती। इसलिए हर आत्मा का कर्तव्य है कि वह विकर्मों से बचे और सुकर्मों में प्रवृत्त हो, जिससे उसका ये जीवन भी सुखमय हो और भविष्य भी सुखमय हो। हम विकर्मों से कैसे बचें और श्रेष्ठ कर्मों को करने में कैसे समर्थ हों, उसके लिए बाबा ने श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान भी दिया है और उनको करने के लिए शक्ति कैसे अर्जित करें, उसके लिए भी श्रीमत दी है। विकर्मों का कारण क्या है, उसका निवारण कैसे करें, उसके लिए भी श्रीमत दी है, मार्ग-दर्शन किया है। अब करना या न करना हर आत्मा के अपने ऊपर है, इसीलिए कहा गया है - "जीवात्मा अपना आपेही मित्र है और आपेही अपना शत्रु है"।

"जो भी कर्म करते हो, वह अलौकिक होना चाहिए, साधारण नहीं। अलौकिक कर्म तब होता है जब अलौकिक स्वरूप की स्मृति रहती है। "एक मेरा" कहने से मेहनत से छूट जायेंगे, बोझ उतर जायेगा।" अ.बापदादा 25.12.89 पार्टी 2

"तुम बहुत देहाभिमानी बन पड़े हो, बहुत विकर्म बन जाते हैं ... एक मुख्य विकर्म यह करते

हो कि बाप फरमान करते हैं कि अपने को आत्मा समझो, वह मानते नहीं हो तो जरूर विकर्म न होगा तब क्या होगा।" सा.बाबा 10.3.69 रिवा.

"कई समझते हैं हम अपने को आत्मा समझ शान्त में बैठते हैं। परन्तु इससे भी कोई पाप भस्म नहीं होंगे। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा निश्चय कर फिर मुझे याद करो। ... जितना प्यार से बाबा को याद करेंगे, उतना विकर्म विनाश होंगे और फिर वर्सा भी मिलेगा।"

सा.बाबा 20.6.72 रिवाइज

"यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के, कर्म फिलॉसाफी के अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।" अ.बापदादा 20.1.86

"कहते हैं - भूल हो गई, क्षमा करो। बाबा कहते हैं - इसमें क्षमा की बात नहीं। ... कोई भी उल्टा-सुल्टा कर्म करते हो, वह जमा होता है, जिसका अच्छा-बुरा फल अवश्य मिलता है।"

सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

"बाप कर्मों की गुह्य गति बैठ समझाते हैं। ... मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। ... मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ, पढ़ाता भी सभी आत्माओं को हूँ। इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर। ... आत्मा को कर्मों अनुसार ही रोगी-निरोगी शरीर आदि मिलता है।"

सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

"63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं - इस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी है तो सत्य की नॉव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।" अ.बापदादा 3.5.77

"इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग। ... कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।" अ. बापदादा 19.3.82

"बाप को जान पहचान उनकी मत पर चलने से तुम श्रेष्ठ बन सकेंगे। नहीं तो बहुत सजायें खायेंगे। जैसे ईश्वर की महिमा अपरम अपार है वैसे सजा खाने की दुर्दशा भी अपरमअपार है। कयामत का समय है। बाबा कहते हैं मैं सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराता हूँ।... कोई भी किसको दुख देते हैं तो दुखी होकर मरेंगे। जो काम कटारी चलाते हैं, वे दुखी होकर मरने वाले हैं - यह पक्का समझ लो।" सा.बाबा 17.4.73 रिवा.

"बाप कहते हैं - यह ड्रामा में नूँध है, जो विकर्म करते हैं, उनको कर्मों की सजा मिलती है।... उसकी कोई लिखत आदि तो होती नहीं है।... बड़े से बड़ा विकर्म है देहाभिमानी बनना।... सबसे बड़ा पाप है काम कटारी चलाना।" सा.बाबा 30.8.05 रिवा.

"दैवी कर्म भी चाहिए। कोई भी भ्रष्ट कर्म नहीं करना चाहिए, टाइम वेस्ट नहीं करना है। ... बाप पढ़ाने आया है, वही पतित-पावन है। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए।"

सा.बाबा 25.8.05 रिवा.

"बिगर पूछे चीज उठाकर खाया तो वह भी पाप बन जाता है।... एक खायेंगे तो और भी ऐसे करने लग पड़ेंगे। वास्तव में यहाँ कोई चीज़ ताले के अन्दर रखने की दरकार नहीं है। लॉ कहता है इस घर के अन्दर, किचिन के सामने कोई अपवित्र आने नहीं चाहिए।"

सा.बाबा 15.8.05 रिवा.

"बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।" सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

"जो बात अच्छी न लगे वह करनी नहीं चाहिए। अच्छे-बुरे को तो अब समझते हो, आगे नहीं समझते थे। ... अब अच्छी रीति पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना है।"

सा.बाबा 11.12.2000 रिवा.

"मन्सा में तूफान जरूर आयेंगे परन्तु कर्मेन्द्रियों से विकर्म नहीं करना है ... देखो कर्मेन्द्रियां धोखा देती हैं तो खबरदार हो जाओ।" सा.बाबा 24.11.05 रिवा.

"ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् पहले सोचे फिर कर्म करे। ज्ञानी-योगी तू आत्मा को समय प्रमाण टच होता है और वह फिर कैच करके प्रैक्टिकल में लाता है। एक सेकण्ड भी पीछे सोचा तो ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे।" अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 2

"लवलीन अर्थात् बाप और मैं समान, स्नेह में समाये हुए।... कर्म-योग की स्थिति में ऐसे लीन का अनुभव कर सकते हो या अलग बैठकर लीन हो सकते हो ?... कर्मयोगी को कर्म में भी साथ होने के कारण एक्स्ट्रा मदद मिल सकती है ... बाप साकार शरीरधारी नहीं है, इसलिए जब चाहे, जहाँ चाहे, सेकेण्ड में पहुँच सकते हैं। ऐसे नहीं समझो कि कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था नहीं हो सकती है।" अ.बापदादा 13.2.92

"यहाँ तुम श्रीमत से श्रेष्ठ पुण्यात्मा बन रहे हो।... बाप कहते हैं कर्म भल करो लेकिन बीच-बीच में यह सब छोड़ अन्तर्मुख हो जाओ। जैसे कि यह सृष्टि है ही नहीं।... बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो।" सा.बाबा 22.8.05 रिवा.

"कर्म में आना और फिर न्यारा हो जाना - यह अभ्यास बहुत पक्का चाहिए। ऐसे न हो कि

आप अशरीरी बनने चाहो और शरीर का बन्धन, कर्म का बन्धन, व्यक्तियों का बन्धन, वैभवों का बन्धन, स्वभाव-संस्कारों का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करे। कोई भी प्रकार का बन्धन अशरीरी बनने नहीं देगा।" अ.बापदादा 29.12.89

"जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। ... कोई कर्म छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की। न्यारापन हर कर्म में सफलता सहज अनुभव कराता है।"

अ.बापदादा 29.12.89

"जहाँ भी आप कर्मयोगी बन कर्म करते हो, वहाँ का वातावरण, वायुमण्डल औरों को भी सहयोग देगा। जैसे मधुवन का वायुमण्डल... तो सभी याद रखना कि हम कर्मयोगी हैं, कर्म और योग को सदा साथ रखने वाले हैं।" अ.बापदादा 16.12.93 पार्टी 3

"बच्चों की बुद्धि में अच्छी तरह से नशा रहना चाहिए।... इस पढ़ाई से हम विश्व के मालिक बनते हैं तो कितनी खबरदारी से पढ़ना और पढ़ाना चाहिए। हमारे से ऐसी कोई बात न हो, जो निन्दा करा दो। ... अभी तुम आत्माभिमानी और परमात्माभिमानी बनते हो। ... कल्प-कल्प बाप पढ़ाने आते हैं, फिर तुम भूल जाते हो। यह भी ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 25.3.06 रिवा.

"तन का भाग्य अर्थात् तन का हिसाब-किताब कभी प्राप्ति वा पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न अनुभव नहीं होगा, तन कभी भी सेवा से वंचित होने नहीं देगा। ... कर्मभोग को चलायेगा लेकिन कर्मभोग के वश चिल्लायेगा नहीं। ... योगी जीवन कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाला है।" अ.बापदादा 19.11.89

"अभी तुम बाप के बने हो तो ऐसा कोई कर्म नहीं करना है, जिससे बाप की निन्दा हो। सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये। ईश्वर की सन्तान होकर आसुरी कर्म से डरना चाहिए।"

सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

"आप कहेंगे - "वाह श्रेष्ठ कर्म"... सदा श्रेष्ठ कर्म हों, साधारण नहीं। कर्मों का कूटना तो खत्म हो गया लेकिन श्रेष्ठ कर्म ही सदा हों - इसमें अण्डरलाइन करना।"

अ.बापदादा 10.1.90

"कर्म का प्रत्यक्ष फल खुशी अनुभव करते जाओ। ... अगर प्रत्यक्ष फल अनुभव नहीं होता तो चेक करो - क्यों फल नहीं मिला ? अगर कर्म में स्वार्थ होगा, सेवा में स्वार्थ होगा तो फल नहीं मिलेगा। ... योगयुक्त कर्म वा योगयुक्त सेवा का फल खुशी, अतीन्द्रिय सुख ... अनुभूति जरूर होगी।" अ.बापदादा 10.1.94 पार्टी 5

श्रीमत और कर्म का विधि-विधान

बाबा ने विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है और विश्व-नाटक में कर्म और फल का क्या विधि-विधान है, उसका भी ज्ञान दिया है तथा उस विधि-विधान को समझकर श्रेष्ठ कर्म करने की श्रीमत दी है और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति कैसे अर्जित करें,उसके लिए भी श्रीमत दी है।

बाबा ने बताया है - कर्म के फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप से भी कर्ता की भावना का महत्वपूर्ण स्थान है। अबोध व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म से जानकार व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म का फल कई गुणा अधिक होता है। ज्ञानी आत्मा को साधारण मनुष्य की अपेक्षा अच्छे कर्म का सौगुणा फल भी मिलता है तो विकर्म का सौगुणा दण्ड भी मिलता है।

एक बाप की याद और उसके द्वारा दिये गये ज्ञान से ही आत्मा सुकर्म करने में समर्थ होती है, अज्ञानता के वश देहाभिमान में आने से आत्मा के कर्म विकर्म ही होते हैं। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुमको कर्मयोगी बनकर कर्म करना है, कर्मेन्द्रियों के वश होकर या कर्म-कान्शस होकर कर्म नहीं करना है।

"धर्मराज के रजिस्टर में सब जमा हो जाता है ऑटोमेटिकली।... बाबा को लिखकर देने से बोझा हल्का हो जायेगा।" सा.बाबा 15.8.05 रिवा.

"निमित्त बनने वाले का एक सेकेण्ड में एक का पद्मगुणा बनना भी है, प्राप्ति का चान्स है और अगर निमित्त बने हुए कोई ऐसा कर्म करते हैं, जिसको देख और सभी विचलित हों, तो उसका पद्मगुणा उल्टी प्राप्ति भी होती है।" अ.बापदादा 16.1.77

"कोई ने हॉस्पिटल बनाई तो दूसरे जन्म में रोग कम होगा। ऐसे नहीं कि पढ़ाई जास्ती मिलेगी, धन भी जास्ती मिलेगा। उसके लिए तो सब कुछ करो। कोई धर्मशाला बनाते हैं तो दूसरे जन्म में महल मिलेगा, ऐसे नही कि तन्दुरुस्त भी रहेंगे। बाप सब बातें समझाते हैं।"

सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

"ब्राह्मण विश्व की किसी भी आत्माओं को देखते हैं, तो उनको सिर्फ कल्याण की ही भावना से देखते हैं। सम्बन्ध और लगाव की भावना से नहीं। सिर्फ ईश्वरीय सेवा के भाव से देखते। पंच तत्वों को देखते हुए, प्रकृति को देखते हुए, प्रकृति के वश नहीं होंगे। ... अभी जो प्रकृति को वश नहीं कर सकते, वे भविष्य में सतोप्रधान प्रकृति के सुख को नहीं पा सकते।"

अ.बापदादा 13.6.73

"पुरुषार्थी को कभी भी यह समझना नहीं चाहिए कि मेरे पुरुषार्थ करने के बाद कोई असफलता भी हो सकती है। सदैव समझना चाहिए कि जो पुरुषार्थ किया, वह कभी व्यर्थ नहीं जा सकता।" अ.बापदादा 27.4.72

"जब बीज अविनाशी है तो फल न निकले, यह तो हो नहीं सकता। कोई पीछे आने वाले हैं तो अभी कैसे आयेंगे ?... कब भी सर्विस करते तो यह नहीं देखना वा सोचना कि जो किया, वह व्यर्थ गया।" अ.बापदादा 11.7.71

"अगर कोई अकर्तव्य कार्य देखता भी है तो देखने का असर हो जाता है। उसका भी हिसाब बन जाता है। ... अशुद्ध संकल्प बुद्धि में भी अगर टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण प्योरिटी नहीं कहेंगे।" अ.बापदादा 22.6.71

सतयुग में जो कर्म करते, खाते-पीते, उसका फल तो होता है परन्तु उससे पाप या पुण्य नहीं होता है, इसलिए उनको न सुकर्म कह सकते और न ही विकर्म, इसलिए उनको अकर्म कहा जाता है। यथार्थ में की भी देहधारी का कोई कर्म अकर्म होता ही नहीं है।

"यह भी तुम बच्चे अभी जानते हो - 21 जन्म तुम पुण्यात्मा रहते हो, फिर पापात्मा बनते हो। जहाँ पाप होता है, वहाँ दुख जरूर होगा। ... ये सब बातें उनकी बुद्धि में ही बैंठेंगी, जिनकी बुद्धि में कल्प पहले बैठीं होंगी।" सा.बाबा 21.8.04 रिवा.

"अपने कर्मों पर खबरदारी रखना है। कोई भी पाप कर्म न करना है। ... अगर अपने घाटे और फायदे का पोतामेल न रखेंगे तो फेल हो जायेंगे। माया ऐसी है जो बहुतों को फेल कर देगी। युद्ध है ना। ... जो कर्म दिल को खाता हो, उसे छोड़ते जाओ।"

सा.बाबा 3.8.68

"दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए, जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।" सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

"गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।"

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

"जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता रहता है। बाप इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।" सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

“बाप को जान पहचान उनकी मत पर चलने से तुम श्रेष्ठ बन सकेंगे। नहीं तो बहुत सजायें खायेंगे। जैसे ईश्वर की महिमा अपरम अपार है वैसे सजा खाने की दुर्दशा भी अपरम अपार है। कयामत का समय है। बाबा कहते हैं मैं सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराता हूँ। … कोई भी किसको दुख देते हैं तो दुखी होकर मरेंगे। जो काम कटारी चलाते हैं, वे दुखी होकर मरने वाले हैं - यह पक्का समझ लो।” सा.बाबा 17.4.73 रिवा.

“दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज (नियम) भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि-अविनाशी लॉ कौन सा है ? ड्रामा के प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना वा इस कर्म की ये सजा है, लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। … इसलिए गाया हुआ है - “कर्मों की गति अति गुह्य है” ।” अ.बापदादा 3.5.77

“इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग। … कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।” अ.बापदादा 19.3.82

“श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल शुद्ध होता है, तो व्यर्थ से दूषित होता है, जिसका बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है।” अ.बापदादा 5.7.74

“बाप (परमात्मा) को छोड़कर दूसरे को याद करना - यह भी विकर्म है।”

सा.बाबा 5.1.69 रात्रि क्लास

“अगर बाप (परमात्मा) का बनकर कोई पाप कर्म किया तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।”

सा.बाबा 3.10.97 रिवा.

“बुरा कर्म करने से सौगुणा दण्ड हो जाता है। ज्ञान नहीं तो एक पाप का एक दण्ड। ज्ञान में आने के बाद फिर ऐसे कोई विकर्म करते हैं तो सौगुणा पाप लगता है।”

सा.बाबा 24.11.69 रिवा.

“अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है।… शुभ भावना के बजाये और कोई भी भावना है तो यह पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दुख देना है।” अ.बापदादा 3.12.78

"बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।" सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

"बाबा हमेशा कहते मांगो मत।... दाता के बच्चे हो... और किससे लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि वह शिव बाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिव बाबा के भण्डारे में।"

सा.बाबा 25.1.72 रिवा.

"बुरा काम हुआ तो फौरन बताओ तो आधा माफ हो जायेगा। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा। क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने आपको सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे और पास्ट का भी योगबल से कटता जायेगा।" सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

"कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है। ...ज्ञानस्वरुप होने के बाद वा मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो योगयुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमागुणा ज्यादा है। ... इसलिए इसमें भी अनजान नहीं रहना है कि यह छोटी-छोटी गलतियाँ हैं। यह तो होंगी ही।" अ.बापदादा 20.5.72

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।" सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

ईर्ष्या-द्वेष एक मानसिक विकर्म है, जिसका फल आत्मा को मानसिक दुख-अशान्ति के रूप में भोगना ही पड़ता है। यदि कोई ईर्ष्या-द्वेष की भावना से यज्ञ का हित समझकर भी किसी आत्मा के साथ व्यवहार करता है तो भी उसको अपनी ईर्ष्या-द्वेष का फल मानसिक दुख-अशान्ति के रूप में भोगना ही पड़ता है, भले उसने यज्ञ के हित के लिए जो कार्य किया, उसका अच्छा फल भी उसको मिलेगा।

"एक का पदम देने की विधि इस समय की है। बाप भी अन्त में हिसाब-किताब चुक्तू करने वाले अपने साथी से काम लेंगे। ... फिर हिसाब-किताब शुरू हो जायेगा। ... बाप भोलानाथ तो है लेकिन महाकाल भी है।" अ.बापदादा 14.12.87

"यहाँ उस रीति से माफी नहीं लेनी होती। महसूसता की विधि ही माफी है। दिल से महसूस करना ... बिना विधि के सिद्धि नहीं मिलेगी।" अ.बापदादा 14.12.87

"बाप आकर बुद्धि का ताला खोलते हैं। ताला उनका खुलेगा, जो श्रीमत पर चलने लग पड़ेंगे और पतित-पावन बाप को याद करेंगे। बाप ज्ञान भी देते हैं और याद भी सिखलाते हैं।"

सा.बाबा 31.8.05 रिवा.

"बाप (परमात्मा) को छोड़कर दूसरे को याद करना - यह भी विकर्म है।"

सा.बाबा 5.1.69 रात्रि क्लास

"अगर बाप (परमात्मा) का बनकर कोई पाप कर्म किया तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।"

सा.बाबा 3.10.97 रिवा.

"सिर्फ लकीर के ऊपर लकीर खींच रहे हो। ड्रामा की लकीर खींची हुई है, नई लकीर नहीं खींच रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं सीधी होगी या नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रारब्ध को सिर्फ बनाते हो क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है। ... यह है अटल निश्चय।"

अ.बापदादा 11.4.86

"हर कर्म में श्रेष्ठ और सफल रहना - इसको कहते हैं नॉलेजफुल। शरीर की भी नॉलेज और आत्मा की भी नॉलेज। दोनों नॉलेज हर कर्म में चाहिए।" अ.बापदादा 11.4.86

"किसी की बुरी बात को समझना अलग चीज है लेकिन स्वयं में वा अपने चित्त पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई रूप में धारण नहीं करना है।" अ.बापदादा 21.11.92

"अभी कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान मर्ज हो गया है, इसलिए अलबेलापन है। ... आप लोगों की अपनी स्थिति तो न्यारी और प्यारी है लेकिन दूसरों की बातों में समय तो देना पड़ता है।... यही समय लाइट-हाउस माइट-हाउस बन वायब्रेशन्स फैलाने में जाये तो क्या हो जायेगा ?"

अ.बापदादा 21.11.92 दादियों से

"अगर किसी की कोई बुराई चित्त पर है तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगी।... लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो।" अ.बापदादा 21.11.92

"कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलासाफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की तो आपकी कल कोई दुगुनी ग्लानि करेगा।... तो कर्मों की गति क्या हुई ? बुराई लौटकर कहाँ आई ?" अ.बापदादा 21.11.92

"कर्मों की गहन गति क्या हुई ? ... कई कहते हैं - हमने किसको कहा नहीं लेकिन वे कह रहे थे तो मैंने भी हाँ में हाँ कर दिया। ... हाँ में हाँ मिलाना, यह भी कर्मों की गति के प्रमाण पाप में भागी बनना है।" अ.बापदादा 21.11.92

"यह छोटे-छोट सुक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्नरूप बनते हैं... ये अति सूक्ष्म व्यर्थ कर्म बुद्धि को, मन को ऊंचा अनुभव करने नहीं देते।... अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो, सदाकाल

की रुहानी मौज में रहो। … कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बनो।”

अ.बापदादा 21.11.92

“यह है इन्द्र सभा। इन्द्र शिवबाबा है, जो ज्ञान वर्षा बरसाते हैं।… इस सभा में कोई भी विकार में जाने वाले को नहीं ला सकते हो … लाते हैं तो बहुत भारी सज़ा मिल जाती है।”

सा.बाबा 21.7.06 रिवा.

श्रीमत और धर्मराज एवं धर्मराज की सजायें

बाबा ने ये भी ज्ञान दिया है कि धर्मराज पुरी की सजायें क्या हैं और कैसे धर्मराज की सजाओं से बच सकते हैं, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए, उसकी भी श्रीमत दी है।

कर्म का फल तो हर आत्मा को मिलता ही है, यह इस विश्व-नाटक का अनादि नियम है परन्तु जो आत्मा जानते हुए, परमात्मा के मना करने पर भी कोई गलत कर्म करता है, उसके लिए ट्रिबुनल बैठती है और उसका कई गुणा दण्ड मिलता है। जिसके लिए बाबा ने कई बार कहा है कि ट्रिबुनल उन बच्चों के लिए बैठेगी, जिनको बाबा ने ज्ञान दिया है, सावधान किया है फिर भी वे विकर्म करते हैं, बाप का नाम बदनाम करते हैं। बाबा ने ये भी कहा है कि उस समय धर्मराज ये सब साक्षात्कार करायेगा कि तुमको ब्रह्मा द्वारा अमुख रूप से, अमुख स्थान पर सावधान किया, फिर भी तुमने पाप कर्म किये, अब उन कर्मों की सजा खानी ही पड़ेगी। कर्म के विधि-विधान अनुसार विधान को जानते हुए विकर्म करना, परमात्मा के मना करने पर भी विकर्म करना, उसकी सजा अधिक मिलती है, यह राज़ भी ड्रामा में नूँधा हुआ है कि ऐसे कर्मों का अन्त समय साक्षात्कार होता है, जिससे पश्चाताप की महसूसता बढ़ जाती है।

“बाबा का बनकर और फिर बाबा के आगे जाकर सजा खायें, यह तो बड़ी दुर्गति की बात है। अभी याद की यात्रा में नहीं रहेंगे तो फिर बाप के आगे सजा खाने के समय बहुत लज्जा आयेगी।”

सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

“पुरुषार्थ सजाओं से बचने का करना है। नहीं तो बाप के आगे सजा खानी पड़ेगी। … बाप के साथ धर्मराज भी तो है ना। वह तो जन्मपत्री जानते हैं।… बाप का बनने के बाद यह विचार हर बच्चे को आना चाहिए कि हम बाप का बने हैं तो स्वर्ग में चलेंगे ही परन्तु हम स्वर्ग में क्या बनेंगे।”

सा.बाबा 1.3.05 रिवा.

“स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं, स्वयं का जज बनता है, वह धर्मराजपुरी की सजा से बच जाता है।… सोच-समझ कर कर्म करो।… कर्म से पहले

संकल्प उत्पन्न होता है। यह संकल्प बीज है। ... यह संकल्प जीवन का श्रेष्ठ खजाना है।"
अ.बापदादा 27.9.75

"शरीर तो जड़ है, उसमें जब चेतन्य आत्मा प्रवेश करती है, उसके बाद गर्भ में सजा खाने लगती है। आत्मा सजा खाती है। सजायें भी कैसे खाती है? भिन्न-भिन्न शरीर धारण कर जिन-जिन को जिस रूप से दुख दिया है, वह साक्षात्कार करते जाते हैं और दण्ड मिलता जाता है। त्राहि-त्राहि करते हैं, इसलिए गर्भ जेल कहते हैं। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है।"
सा.बाबा 19.5.72 रिवा.

"जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर है। साक्षात्कार कराते सजा देते जायेंगे। बहुत सजायें हैं, जिनका पारावार नहीं। एक-एक जन्म के पापों का साक्षात्कार कराकर सजा देते हैं। वह तो जैसे जन्म-जन्मान्तर की सजायें हो गई। होता बिजली मुआफिक है परन्तु उसकी भासना ऐसी होती है जैसे कि सेकण्ड में हजारों वर्ष की सजा खाते हैं।" सा.बाबा 5.12.73 रिवा.

"तुम्हारे लिए तो ट्रिब्युनल बैठेगी। खास उन बच्चों के लिए जो सर्विस लायक बनकर फिर ट्रेटर बन जाते हैं।... दान देकर फिर बहुत खबरदार रहना है। फिर ले लिया तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है।"
सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

"बाप कहते हैं - एक-दो से सेवा मत लो। कोई अहंकार नहीं आना चाहिए। दूसरे से सेवा लेना, यह भी देह-अहंकार है। बाबा को समझाना तो पड़े ना। नहीं तो जब ट्रिबुनल बैठेगी तब कहेंगे, हमको पता थोड़ेही था कायदे-कानून का। इसलिए बाप समझा देते हैं, फिर साक्षात्कार कराये सजा देंगे।"
सा.बाबा 5.3.2001 रिवा.

"श्रीमत पर न चलते तो नाम बदनाम करते हैं। भल बच्चे हैं परन्तु बच्चों को ऐसे थोड़ेही छोड़ेंगे। हाँ ट्रिबुनल बैठती है बच्चों को तो और ही कड़ी सजा मिलती है क्योंकि धोखा देते हैं। ... बाप तो उस समय मुस्कराते हैं। कहते हैं इनको कुल्हाड़ी से टुकड़ा-टुकड़ा करो। फांसी की सजा देने वाले रोते हैं क्या? ऐसे थोड़ेही बच्चों पर दया कर देंगे।"
सा.बाबा 22.11.73 रिवा.

"देखना हाथ उठाया है, फिर धर्मराजपुरी में भी यह हाथ उठेगा। बाप का साथी धर्मराज भी देख रहा है कि सभी ने हाथ उठाया है।... स्व-परिवर्तन करना, दूसरे के परिवर्तन की चिन्ता नहीं करना।"
अ.बापदादा 15.4.92

"बाप आकर पढ़ाते हैं, उनकी भी इज्ज़त नहीं रखते तो सजा जरूर मिलेगी। सबसे कड़ी सज़ा उनको मिलेगी, जो विकार में जाते हैं या शिवबाबा की बहुत ग्लानि कराने के निमित्त बनते हैं।"
सा.बाबा 13.01.06 रिवा.

"जो बच्चे बाप का बनकर डिस्सर्विस करते हैं, उनके लिए ट्रिब्युनल बैठती है। भक्ति मार्ग में इतनी कड़ी सजा नहीं मिलती है परन्तु बाप का बनकर फिर डिस्सर्विस करते हैं तो बाप का राइटहेण्ड है धर्मराज। ... यह कर्मों के अनुसार ड्रामा बना हुआ है। जो जैसा कर्म करता है, वैसा फल पाता है।" सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

"मेरी निन्दा कराते हैं, उनके लिए ट्रिब्युनल बैठती है। बाप से प्रतिज्ञा कर फिर डिस्सर्विस करेंगे तो कड़ी सजा मिलेगी। ... गाया हुआ है - सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये।"

सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

"कोई भी कर्म करते हो तो पहले त्रिकालदर्शी बनकर फिर कोई कर्म करो। ... पहले परिणाम को सोचो फिर कर्म करो तो सदा श्रेष्ठ परिणाम निकलेगा।... त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर कर्म करने से कब कोई व्यर्थ कर्म नहीं होगा, साधारण नहीं होगा।"

अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

"त्रिकालदर्शी के स्मृति की स्थिति रूपी तख्त पर स्थित होकर कोई भी कर्म करो, फिर कर्म फल नहीं देवे, यह हो नहीं सकता। बीज अगर शक्तिशाली होगा तो फल अवश्य मिलेगा।... अभ्यास में कभी भी अलबेले नहीं बनो।" अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

श्रीमत और निष्काम कर्म

गीता में भी है "कर्मण्ये वा धिकारस्ते, मां फलेषु कदाचन" अर्थात् तुम कर्म करो, फल की इच्छा नहीं रखो क्योंकि कर्म करने का ही तुमको अधिकार है, फल तो कर्मानुसार मिलना ही है। बाबा ने कहा है - वास्तव में कोई भी आत्मा निष्काम कर्म नहीं करती है क्योंकि हर आत्मा को कर्म का फल मिलता ही है और निष्काम कर्म करने की कामना भी तो कामना ही है। जो मनुष्य निष्काम कर्म करने का संकल्प रखते हैं, भी निष्काम कर्म भविष्य कल्याण या मोक्ष आदि की कामना रखकर ही करते हैं।

"राइट हेण्ड सेवाधारी अर्थात् सदा निष्काम सेवाधारी। ... गुप्त सेवाधारी अर्थात् निष्काम सेवाधारी। तो एक हैं निष्काम सेवाधारी, दूसरे हैं नामधारी सेवाधारी। ... जो निष्काम सेवाधारी हैं, वे अविनाशी नाम कमाने वाले सेवाधारी हैं, उनके दिल का आवाज दिल तक पहुँचता है।"

अ.बापदादा 22.2.86

बाबा के कहने का अर्थ कोई स्थूल चीज या मान-शान की कामना रखकर सेवा नहीं करनी है। कर्म करना हमारा कर्तव्य है, फल परमात्मा या प्रकृति के द्वारा मिलेगा ही, इसलिए

हमको फल इच्छा नहीं रखनी है क्योंकि इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी। वास्तव में एक परमात्मा के सिवाए किसी भी आत्मा के कर्म निष्काम हो नहीं सकते। हर कर्म के पीछे शुभाशुभ कामना समाई ही रहती है।

"ललकार न होने का कारण क्या है ? ... कई बातों को अंगीकार कर लेते हैं चाहे स्थूल में चाहे सूक्ष्म में। ... मैंपन निकलकर बाबा-बाबा शब्द आयेगा तब ललकार होगी। परमात्मा में ही परम बल होता है। ... साकार रूप में कब कहा कि मैं यह चला रहा हूँ, मैंने मुरली अच्छी चलाई।" अ.बापदादा 2.4.70

"स्नेह और शक्ति दोनों की आवश्यकता है। शक्ति रूप से विजयी बनते हो और स्नेह रूप से सम्बन्ध में आते हो। ... बाप को भी सर्वशक्तिवान और प्यार का सागर कहते हैं। ... अपने को सदा सफलता का सितारा समझना है। प्रत्यक्षफल की भी कामना नहीं रखने वाले सफलता को पाते हैं।" अ.बापदादा 5.4.70

"सभी आत्माओं का बाप एक है, वह अभी आया हुआ है परन्तु सब तो मिल भी नहीं सकेंगे। इम्पॉसिबुल है। ... याद फिर भी पतित-पावन को ही करते हैं। ... एक बाप ही है जो तुम बच्चों को पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाते हैं, खुद नहीं बनते हैं। इसलिए उनको कहा जाता है - निष्काम सेवाधारी। मनुष्य कहते हैं - हम फल की आश नहीं रखते, निष्काम सेवा करते हैं परन्तु ऐसे होता नहीं है। ... कर्म का फल अवश्य मिलता है।"

सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

"सच्ची सेवा, प्यार से सेवा, सभी की दुआओं से सेवा, उसका प्रत्यक्ष फल खुशी होती है। ... एक होती है कल्याण की भावना से सेवा और दूसरी होती है स्वार्थ से सेवा। मेरा नाम आ जायेगा, मेरा अखबार में फोटो आ जायेगा... जब बाप के दिल पर नाम है तो और क्या चाहिए।" अ.बापदादा 25.11.95

"धर्मराज का खाता कोई कम नहीं है। बहुत सूक्ष्म हिसाब-किताब है। इसलिए निस्वार्थ सेवाधारी बनो। अपना स्वार्थ नहीं हो लेकिन कल्याण का स्वार्थ हो।... बाप को कुछ करना नहीं पड़ता है, ऑटोमेटिक है।" अ.बापदादा 25.11.95

श्रीमत और जमा का खाता

वर्तमान संगमयुग आत्मा के जमा के खाते को जमा करने और विकर्मों के खाते को

खत्म करने का युग है। हमारे संकल्प, कर्म, बोल से हमारे जमा के खाते पर कैसे प्रभाव होता है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है और जमा का खाता बढ़ाने तथा पुराने विकर्मों के खाते को खत्म करने के लिए भी श्रीमत दी है।

बाबा ने श्रीमत दी है - अभी तुमको अपनी आत्मिक शक्ति का, दुआओं का, शुभ कर्मों का खाता जमा करना है और आत्मा पर जो विकर्मों का दुखदायी खाता जो आत्मा पर चढ़ा हुआ है, उसको योगबल से, खुशी से बीमारी आदि को सहन करके, दूसरों के सम्बन्ध-सम्पर्क में भी कोई कड़ुआहट आती है तो उसको सहन करते हुए पुराने खाते को खत्म करना है, जिससे वह अन्त समय हमारी अवस्था को प्रभावित न करे क्योंकि सर्व विकारी खातों को खत्म करके ही आत्मा घर जा सकती है। बाबा ने श्रीमत दी है - तुमको अभी कोई विकारी या दुखदायी खाता नहीं बनाना है।

इस सन्दर्भ में बाबा ने समय-समय पर अनेक प्रकार से समझाया है और श्रीमत दी है। जैसे बाबा ने कहा है - अभी संगमयुग पर एक का लाख गुणा जमा भी होता है तो ना अर्थात् खत्म भी होता है। इसलिए तुमको कोई बुरा संकल्प, वचन, कर्म नहीं करना है। अपने संकल्प, वचन, कर्म से सबको सुख देना है।

खाता जमा करने में संकल्प, वचन, कर्म का स्थान, समय, परिस्थिति का विशेष महत्व है। उसके लिए भी बाबा ने समय-समय पर मुरलियों में श्रीमत दी है। यथा - बाबा ने कहा है जो समय पर यज्ञ में मदद करता है, उसका खाता अधिक जमा होता है। क्लास में, योग के समय कोई का संकल्प भटकता है तो उसका प्रभाव अधिक होता है अर्थात् अधिक घाटा होता है। इसलिए दुनिया में भी ऐसी अभिधारणा है कि किसी मन्दिर, तीर्थ स्थान, आश्रम आदि में विकारी संकल्प नहीं आना चाहिए, उसको बड़ा पाप माना जाता है।

संगमयुग पर आत्मा जो श्रेष्ठ कर्म करके आत्मिक शक्ति का खाता जमा करती है, जिससे आधा कल्प तक आत्मा भरपूर रहती है, भले ही आत्मा जो सुखों का उपभोग करती है, पार्ट बजाती है, उससे जमा की हुई आत्मिक शक्ति का खाता कम होता है परन्तु आत्मा का कोई विकर्म न होने के कारण ओवरड्रॉन नहीं होता है। द्वापर से जब देहाभिमान आता है, जिससे विकर्म आरम्भ होते हैं तो ओवरड्रॉन आरम्भ होता है, जो आत्मा पर बोझ है। जमा करने के दो विधि-विधान है। एक मन्सा, वाचा, कर्मणा की बचत करके शक्ति को बढ़ाना और दूसरा आत्मिक शक्तियों को सेवा में लगाकर अर्थात् इन्वेस्ट करके शक्ति को बढ़ना अर्थात् जमा करना।

अभी संगमयुग पर बाबा ने श्रीमत दी है कि अभी तुम बच्चों को श्रेष्ठ कर्म करके

आधे कल्प के लिए आत्मिक शक्ति का खाता जमा करना है और आधे कल्प का आत्मा पर विकर्मों का बोझ (Overdrawn) चढ़ा हुआ है, वह योगबल से खत्म करना है।

"विनाशी खजाने खर्च करने से कम होते हैं, खुटते हैं और यह सब खजाने जितना स्व के प्रति और औरों के प्रति शुभ वृत्ति से कार्य में लगायेंगे, उतना जमा होता जायेगा, बढ़ता जायेगा। यहाँ खजानों को कार्य में लगाना जमा की विधि है और वहाँ रखना जमा करने की विधि है। ... खजानों को लॉकप करके नहीं रखो, यूज करो।" अ.बापदादा 3.4.91

"स्टॉक जमा करो। जिसके पास जितना जमा होता है, उतना उसके चेहरे पर खुशी और नशा रहता है। आप कहो न कहो लेकिन आपकी सूरत बोलेगी। ... ब्रह्मा कुमार-कुमारियों की निशानी है - सदा खुश रहना।" अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 3

"सेवा कितनी भी करते हो लेकिन जमा का खाता हुआ या नहीं हुआ, उसकी निशानी या गोल्डन चाबी है - निमित्त भाव और निर्मान भाव, निर्मल वाणी। तीनों में से एक भी कम है तो सेवा कितनी भी करो लेकिन जमा का खाता नहीं होता। नाममात्र जमा होता है। ... मैंपन आया तो जमा नहीं हुआ।" अ.बापदादा 31.12.05

"सेवा करना और सेवा का फल जमा होना, उसमें अन्तर है।... सेवा के बाद स्वयं अपने मन में अपने से सन्तुष्ट हैं और साथ में जिनकी सेवा की, जो सेवा के साथी बनें वा सेवा करने वाले को देखते हैं, सुनते हैं वे भी सन्तुष्ट हैं, तो समझो जमा हुआ।... निमित्त भाव, निर्मान भावना और निर्मल स्वभाव, निर्मल वाणी ... चारो ही सब्जेक्ट में अपने आपको चेक करो कि चारो ही सब्जेक्ट में हमारा खाता जमा हुआ है ?" अ.बापदादा 28.3.06

"हर खज़ाने को चेक करो - ज्ञान का खज़ाना अर्थात् जो भी संकल्प-कर्म किया, वह नॉलेजफुल होकर किया ... योग अर्थात् सर्व शक्तियों का खज़ाना भरपूर हो ... समय पर शक्ति इमर्ज हो ... धारणा की निशानी है - हर कर्म गुण सम्पन्न होगा ... गुण इमर्ज होना चाहिए। ऐसे ही सेवा में सेवाधारी की निशानी - सदा हल्का। सेवा का फल है खुशी। अगर खुशी गायब हो जाती तो सेवा का खाता जितना जमा होना चाहिए, उतना जमा नहीं होता। समय लगाया, मेहनत की तो थोड़ा जमा होता है।" अ.बापदादा 28.3.06

"समय, संकल्प, ज्ञान, स्थूल तन सर्व खज़ानों को अगर योग के प्रयोग की रीति से प्रयोग करो तो हर खजाना बढ़ता रहेगा। ... प्रयोग अर्थात् एक-एक खज़ाने का प्रयोग करो।... प्रयोग की रीति अर्थात् कम खर्च बालानशीन। ... योग का प्रयोग यही है - कम खर्च और सफलता ज्यादा। ... जैसे बापदादा कम समय में प्राप्ति की अनुभूति ज्यादा कराता है।"

अ.बापदादा 26.10.91

"सिर्फ एक ही मेरा बाबा - यह अनुभव होता रहे, यही फुल नॉलेज है। एक 9बाबा" शब्द में सारा आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान समाया हुआ है क्योंकि बाबा बीज है ना। ... इसलिए उड़ो और औरों को भी उड़ाते चलो। इसकी विधि है - वेस्ट अर्थात् व्यर्थ को बचाओ, बचत का खाता, जमा का खाता बढ़ाते चलो।" अ.बापदादा 3.4.91

"विनाशी खजाने खर्च करने से कम होते हैं, खुटते हैं और यह सब खजाने जितना स्व के प्रति और औरों के प्रति शुभ वृत्ति से कार्य में लगायेंगे, उतना जमा होता जायेगा, बढ़ता जायेगा। यहाँ खजानों को कार्य में लगाना जमा की विधि है और वहाँ रखना जमा करने की विधि है। ... खजानों को लॉकप करके नहीं रखो, यूज करो।" अ.बापदादा 3.4.91

"स्टॉक जमा करो। जिसके पास जितना जमा होता है, उतना उसके चेहरे पर खुशी और नशा रहता है। आप कहो न कहो लेकिन आपकी सूरत बोलेगी।... ब्रह्मा कुमार-कुमारियों की निशानी है - सदा खुश रहना।" अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 3

"आगे अपनी वरदानी और महादानी दृष्टि द्वारा वरदान और महादान देंगे। दृष्टि द्वारा सुख-शान्ति, प्रेम, आनन्द की शक्ति सब प्राप्ति होती है।... तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना - यह प्रैक्टिस करो। ... बाप की दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो, फिर जमा किया हुआ समय पर दे सकेंगे।" अ.बापदादा 11.11.89 पार्टी 2

"जमा के खाते की तरफ विशेष अटेन्शन दो क्योंकि आप विशेष आत्माओं का जमा करने का समय इस छोटे से जन्म के सिवाए सारे कल्प में कोई समय नहीं है। और आत्माओं का हिसाब अलग है।" अ.बापदादा 11.11.89

"चेक करो - वेस्ट नहीं किया लेकिन बेस्ट कितना बनाया ? ... दुख नहीं दिया, इससे वर्तमान अच्छा बनाया लेकिन सुख देने से जमा होता है। ... सिर्फ यह नहीं चेक करो कि दुख नहीं दिया लेकिन सुख कितना दिया ? ... चेकिंग भी साधारण नहीं, गुह्य चेकिंग करो। हर समय यह स्मृति रखो कि इस एक जन्म में 21 जन्मों का खाता जमा करना है।"

अ.बापदादा 11.11.89

"बाप की श्रीमत दिव्य कर्म करने की मिलती है, इसलिए चेक करो कि सारे दिन में साधारण बोल और कर्म कितना समय रहा और दिव्य अलौकिक कितना समय रहा ? ... दिव्य वा अलौकिक कर्म कितना किया ? क्योंकि साधारण बोल-कर्म जमा नहीं होता। उससे न मिटता है और न बनता है परन्तु वर्तमान का दिव्य संकल्प वा दिव्य बोल और कर्म भविष्य का जमा करता है।" अ.बापदादा 11.11.89

"बापदादा तो न देखते हुए भी बच्चों की रिजल्ट देख लेते हैं।... विनाश को जल्दी लाना है

तो इस वर्ष मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क, इन चारो बातों में जमा खाता बढ़ाओ।... मैजारिटी का वेस्ट का खाता बहुत है।" अ.बापदादा 31.12.96

"समय और संकल्प अपना भी बचाओ और दूसरों का भी बचाओ। बचत का खाता जमा करो।... अपने निश्चय और जन्मसिद्ध अधिकार की शान में रहो तो परेशान नहीं होंगे।"

अ.बापदादा 22.3.96

"चतुराई से चलने वालों का अगर आप खाता देखेंगे तो जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो... यहाँ आगे बढ़ने में आत्माओं को कापी करते हो उस समय के लिए आपका नाम होता है, शान मिलता है ... लेकिन सारे कल्प की प्रालब्ध नहीं बनती।"

अ.बापदादा 27.2.96

"श्रेष्ठ संकल्प, शुभ-भावना, शुभ-कामना के संकल्प जमा होते हैं। तो सारे दिन का जमा का खाता नोट करो। ... दिलशिकस्त नहीं होना क्योंकि अभी भी जमा करने का समय है।"

अ.बापदादा 16.2.96

"जमा का खाता चेक करो। सारा कल्प चाहे राज्य करेंगे, चाहे पूजे जायेंगे लेकिन जमा अभी करना है। ... अलबेलेपन का पश्चाताप बहुत-बहुत-बहुत बड़ा है।... बापदादा को बहुत रहम आता है कि पश्चाताप की घड़ियाँ कितनी कठिन होंगी।" अ.बापदादा 31.12.95

"किसने अच्छा किया और बोल दिया तो आधा फल खत्म हो जाता है, आधा जमा होता है। जो गम्भीर रहता होता है, उसका फुल जमा होता है। ... बापदादा कहते हैं - गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो, वर्णन करने से खत्म हो जाती है। चाहे अच्छा वर्णन करते हो या बुरा वर्णन करते हो। अच्छा अपना अभिमान और बुरा किसका अपमान कराता है।"

अ.बापदादा 7.11.95

"बापदादा ने देखा - व्यर्थ का हिसाब ज्यादा है। ... एक तो बचत करो, वेस्ट के बजाये बेस्ट के खाते में जमा करो और दूसरा अगर बचत नहीं कर सकते हो तो व्यर्थ को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करो।... जमा होगा तो जमा का खाता परीक्षा के समय पर काम में आयेगा।"

अ.बापदादा 25.3.95

"आप सभी हो रिचेस्ट इन कल्प। इस समय का जमा किया हुआ खज़ाना सारा कल्प साथ में चलता है।... हिसाब निकालो - जमा का खाता कितना तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है?... जमा करने का सबसे सहज साधन है - बिन्दी लगाते जाओ और बढ़ाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी लगाना।" अ.बापदादा 14.12.94

व्यर्थ, साधारण, समर्थ - बोल, कर्म, संकल्प, देखना, सुनना इन सबके आधार पर

खाता जमा होता है और खाता खत्म होता है। व्यर्थ से तीव्र गति से ना, साधरण से हल्का ना होता है और समर्थ से ही खाता जमा होता है।

"व्यर्थ सुनने, देखने और फिर सोचने की आदत न चाहते भी आकर्षित कर लेती है। इस कारण समय का खजाना वेस्ट के खाते में चला जाता है।... दूसरी बात व्यर्थ बोल में भी समय वेस्ट करते हैं।... बोल से भाव और भावना दोनों अनुभव होती है।"

अ.बापदादा 14.12.94

"तो पहली कमजोरी स्वरूप का परिवर्तन, दूसरा स्वभाव का परिवर्तन और तीसरा संकल्प का परिवर्तन। सेकेण्ड में व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करो। व्यर्थ संकल्प चलता है तो... जमा में तो हिसाब अच्छा रखते हो कि कदम में पदम जमा हो गया लेकिन गँवाने का भी तो हिसाब रखो। ... जो बात बार-बार होती है, वह संस्कार रूप में भर जाती है। तो संकल्प परिवर्तन करो। ... तो सदा चेक करो - कितना गँवाया और कितना जमा किया।"

अ.बापदादा

26.11.94

"ट्रैफिक कन्ट्रोल का अटेन्शन रहेगा तो कमाई जमा होगी। ... घड़ी के आधार पर भी क्यों चलो। अपनी बुद्धि ही घड़ी है, दिव्य-बुद्धि की घड़ी को यूज करो। जिस बात की आदत पड़ जाती है तो वह न चाहते भी अपनी तरफ खींचेगी।... चेक करो और चेन्ज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी।" अ.बापदादा 18.1.90 पार्टी

श्रीमत और पाप-पुण्य एवं पाप-पुण्य का विधि-विधान

श्रीमत और पाप-पुण्य का खाता

बाप पतित-पावन है, वही आकर हमको अपने पापों का बोझा उतारने और पुण्य का खाता जमा करने का रास्ता बताते हैं, उसके लिए श्रीमत देते हैं, जिस पर चलने से हमारा पापों का बोझा खत्म होता है और पुण्य का खाता जमा होता है। सतयुग में पाप-पुण्य दोनों नहीं होता है। द्वापर-कलियुग में पाप-पुण्य दोनों होता है लेकिन पाप अधिक और पुण्य कम होता है। संगमयुग पर बाबा हमको सृष्टि-चक्र का ज्ञान, कर्म का ज्ञान और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति प्राप्त करने का ज्ञान देते हैं और श्रेष्ठ कर्म करने की श्रीमत देते हैं। इस समय जो ये सब ज्ञान बुद्धि में रखकर कर्म करते हैं, उनका पुण्य का खाता जमा होता है। पुण्य का खाता जमा

करने का विधि-विधान बाप ही बताते हैं और सदा पुण्य का खाता जमा करने के लिए श्रीमत देते हैं।

"जन्म-जन्मान्तर का पापों का बोझा सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े।... देखना है - बाप से हमारी दिल लगती है या देहधारियों से। कर्म सम्बन्धियों आदि की याद आती है तो समझना चाहिए हमारे विकर्म बहुत हैं। ... बाप को याद कर अपने सिर से पापों का बोझा उतारना है।" सा.बाबा 30.4.05 रिवा.

"अगर कोई भी कमजोर वा पतित वायुमण्डल का वर्णन भी करते हैं तो यह भी पाप है, क्योंकि उस समय बाप को भूल जाते हैं।...वायुमण्डल का वर्णन करना - यह भी व्यर्थ हुआ ना। जहां व्यर्थ है वहां समर्थ की स्मृति नहीं।...कितना भी कोई माफी ले लेवे लेकिन जो कोई पाप कर्म वा व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं। निशान पड़ ही जाता है।"

अ.बापदादा 10.5.72

"जैसा संकल्प वैसा स्वरूप बनने वाले सच्चे वैष्णव हो, ऐसे सच्चे वैष्णवों को क्या कोई छू सकने का साहस कर सकता है ? अगर छू लेते हैं, तो छोटे मोटे पाप बनते जाते हैं। ऐसे सूक्ष्म पाप, आत्मा को ऊंच स्टेज पर जाने से रोकने के निमित्त बन जाते हैं क्योंकि पाप अर्थात् बोझा, वह फरिश्ता बनने नहीं देते बीज रूप स्थिति व वानप्रस्थ स्थिति में स्थित नहीं होने देते।"

अ.बापदादा 23.5.74

"पाँच विकारों के वश किये हुए कर्म, विकर्म या पाप कहे जाते हैं - यह है पापों का मोटा रूप। ऐसे ही महीन पुरूषार्थ अर्थात् महारथी के सामने पाँच तत्व अपनी तरफ भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित कर महीन पाप बनाने के निमित्त बनते हैं। पाँच विकारों को समझना और उन्हों को जीतना सहज है लेकिन पाँच तत्वों के आकर्षण से परे रहना, यह महारथियों के लिए विशेष पुरूषार्थ है।" अ.बापदादा 23.5.74

परमधाम की शान्ति या स्थिति पाप-पुण्य दोनों से परे है, सतयुग-त्रेतायुग की शान्ति और स्थिति सुखमय है परन्तु वह भी पाप-पुण्य से परे हैं क्योंकि वहाँ न सुकर्म करते और न ही विकर्म करते। द्वापर-कलियुग की स्थिति पाप-पुण्य दोनों से युक्त है लेकिन उसमें पाप की स्थिति अधिक है, पुण्य की कम। संगमयुग की अर्थात् हमारी वर्तमान स्थिति ही पुण्यमय है। संगमयुग अर्थात् जब हमारी बुद्धि का कांटा परमधाम में परमपिता परमात्मा के साथ लटका हुआ हो और हमारे संकल्प कर्म विश्व-कल्याण के कार्य में रत हों। उसके अतिरिक्त समय की स्थिति तो कलियुग की ही है अर्थात् पापमय ही है। ये पुरुषोत्तम संगमयुग का समय ही परमानन्दमय है।

"कोई चीज छिपाकर खा लेते हैं। समझते थोड़ेही हैं कि यह भी पाप है। यह भी चोरी हुई ना। सो भी शिवबाबा के यज्ञ की चोरी करना बहुत खराब है।" सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

"विकार में जाने से ही पापात्मा बनते हैं। ... मनुष्यों को पता नहीं है कि देवतायें, जो पुण्यात्मा हैं, वे ही फिर पुनर्जन्म में आते-आते पापात्मा बनते हैं। ... तुम बच्चों को यह बात सबको समझानी है, सर्विस करनी है।" सा.बाबा 1.11.04 रिवा.

"अभी बच्चे चलते-फिरते अथवा यहाँ बैठे-बैठे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर हैं, उन पापों को याद की यात्रा से विनाश करते हैं। ... बच्चे समझते हैं - हम याद की यात्रा से अपने पाप काट रहे हैं, गोया अपना कल्याण कर रहे हैं।" सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

"यह भी तुम जानते हो - कब से पाप शुरू किये हैं, जब से काम चिता पर चढ़े हो। तो तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। ... तुम बाजोली वा 84 के चक्र को भी जानते हो।... यह चक्र बुद्धि में सदैव फिरता रहना चाहिए। यह नालेज अभी तुम ब्राह्मणों के पास ही है, न शूद्रों के पास और न देवताओं के पास है।" सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

"तुम जानते हो हम ही पहले पुण्यात्मा थे, फिर पापात्मा बने, अब फिर पुण्यात्मा बनते हैं। यह तुम बच्चों को नॉलेज मिल रही है, फिर तुम औरों को दे आप समान बनाते हो। ... अभी तुमको सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है।" सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

"स्मृति से है फायदा और विस्मृति से है घाटा। अपनी यह चांच करनी है। ... चेक करो हमने जीवन में क्या-क्या किया, कोई भी बात दिल अन्दर खाती तो नहीं है ? ... यहाँ तो पाप होते ही हैं। मनुष्य जिसको पुण्य का काम समझते हैं, वह भी पाप ही है। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। यहाँ तुम्हारी लेन-देन भी पापात्माओं के साथ ही है।"

सा.बाबा 18.11.04 रिवा.

"सन्यासियों को कहेंगे पवित्र-आत्मा और जो दान आदि करते हैं, उनको कहेंगे पुण्यात्मा। ... आत्मा निर्लेप नहीं है।" सा.बाबा 12.7.05 रिवा.

"मुख्य यह तीनों खजाने - संकल्प, समय और श्वांस आज्ञा प्रमाण सफल होते हैं ? व्यर्थ तो नहीं जाते ? ... जमा का खाता इस संगम पर ही जमा करना है।... सारे कल्प के लिए जमा इस संगम पर ही करना है। ... इस छोटे से जन्म के संकल्प, समय और स्वांस कितने अमूल्य हैं!" अ.बापदादा 15.11.99

"जमा करने की विधि बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ।... आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका, वह भी फुल-स्टॉप अर्थात् बिन्दी।... जमा का खाता बढ़ाने की विधि है "बिन्दी" और गँवाने का रास्ता है क्वेश्चन मार्ग, आश्चर्य की मात्रा लगाना।"

अ.बापदादा 30.11.99

"इस समय जो कुछ करते हैं, वह ईश्वरीय सर्विस में शिवबाबा को देते हैं। ब्रह्मा को नहीं देते हो। तुम शिवबाबा को देते हो। बाबा कहते हैं - इनको देने से तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं होगा। जमा वह होता है, जो तुम शिवबाबा को याद कर इनको देते हो।"

सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"अभी तो अनेक आत्माओं के अनेक जन्मों के बने हुए खाते, जिसको पाप-कर्मों का खाता कहा जाता है, उसको भस्म कराने के आप निमित्त हो। जो अन्य के व्यर्थ खाते को भस्म कराने वाले हैं, वे स्वयं अपना ऐसा खाता बना नहीं सकते। यह तो पुराने खाते हैं। आप तो पुराने खाते समाप्त कर नया जन्म, नये खाते बनाने वाले हो। पुराने खाते सब खत्म हो रहे हैं - ऐसा अनुभव होता है?" अ.बापदादा 4.2.75

"बुद्धि को अपनी तरफ क्या खींचता है, क्यों खींचता है? बोझा है कोई, जो अपनी तरफ खींचता है? हल्की चीज कभी भी नीचे नहीं आयेगी, वह चढ़ती कला में ही होगी। किसी भी प्रकार का बोझ है तो कितना भी ऊपर करना चाहें तो ऊपर नहीं जायेगा, बल्कि नीचे ही आयेगा। ऐसे ही सारे दिन में मन्सा, वाचा, कमर्णा में, सम्पर्क और सेवा - इन बातों से चेक करो।" अ.बापदादा 4.2.75

"सिर्फ घर को याद करेंगे तो पाप विनाश नहीं होंगे। बाप को याद करेंगे तो पाप विनाश हो और तुम अपने घर चले जायेंगे।" सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

"दूसरों को देना, वह खर्चा नहीं है। यह तो एक देना फिर लाख पाना है।...जब अपने विघ्नों के प्रति शक्ति का प्रयोग करते हो, वह होता है खर्च।... अब बचत की स्कीम बनाओ। खर्चे को फुल स्टॉप लगाओ। अभी तो देते रहो, अभी लेने को कुछ रहा है क्या? अगर रहा हुआ है तो सिद्ध होता है कि बाप ने पूरा वर्सा दिया नहीं है। बाप ने अपने पास कुछ रखा नहीं है। वह तो एक सेकेण्ड में ही पूरा वर्सा दे देते हैं। जो कुछ लेने को रहता ही नहीं है।"

अ.बापदादा 8.7.73

"अभी के समय प्रमाण मास्टर रचयिता को कौनसा पोतामेल देखना है? क्या-क्या गलती की - यह तो बचपन का पोतामेल है ... आप मास्टर रचयिता हर शक्ति को सामने रखते हुए यह पोतामेल देखो कि आज के दिन सर्व शक्तियों में से कौनसी शक्ति और कितनी परसेन्टेज में जमा की।" अ.बापदादा 8.7.73

"ऐसे ही स्थूल धन भी अगर ईश्वरीय कार्य में, हर आत्मा के कल्याण के कार्य में वा अपनी उन्नति के कार्य में न लगाकर अन्य कोई स्थूल कार्य में लगाया तो व्यर्थ लगाया ना।... यज्ञ

निवासियों के लिए यज्ञ की सेवा, यज्ञ की वस्तु की एकानॉमी रुपी धन स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है।" अ.बापदादा 15.3.72

"यहाँ तुम श्रीमत से श्रेष्ठ पुण्यात्मा बन रहे हो।... बाप कहते हैं कर्म भल करो लेकिन बीच-बीच में यह सब छोड़ अन्तर्मुख हो जाओ। जैसेकि यह सृष्टि है ही नहीं।... बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो।" सा.बाबा 22.8.05 रिवा.

"मनुष्य विकार को पाप नहीं समझते हैं। अभी बाप ने बताया है - यह बड़े से बड़ा पाप है, इन पर जीत पाना है ... बाप की याद में रहकर जो कर्म करते हैं, वे अच्छे कर्म होते हैं।"

सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"अभी तुम जानते हो - याद की यात्रा से हमको पूरा पुण्यात्मा बनना है। ... बाप की श्रीमत पर चलना है। बाप मुख्य बात कहते हैं - एक तो याद की यात्रा में रहो और काम महाशत्रु है, उस पर जीत पानी है।" सा.बाबा 26.8.05 रिवा.

"बाप को सुनायेंगे तो बाबा सावधान करेंगे। ... पाप कर लेते, सुनाते नहीं, छिपा लेते तो फिर करते ही रहेंगे। श्राप मिल जाता है। ... अन्त में सबको साक्षात्कार होगा - यह-यह बनेंगे।"

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"पूज्य आत्माओं अर्थात् अलौकिक परिवार की आत्माओं के प्रति अगर कोई भी अपवित्र दृष्टि जाती है तो यह स्मृति का फाउन्डेशन कमज़ोर है और यह महा-महा महापाप है। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है तो वह महापाप है।"

अ.बापदादा 9.5.83

"सबको पूरा ग्रहण लगा हुआ है। अब बाप कहते हैं - याद से ही ग्रहण उतरेगा। अभी कोई पाप नहीं करो। ... देहाभिमान में आना कड़ा पाप है।" सा.बाबा 17.10.05

"बिगर पूछे कोई चीज उठाना, उसको चोरी कहा जाता है। ऐसे काम मत करो, कड़ुवा मत बोलो। ... काम महाशत्रु है। काम कटारी चलाए एक-दो को दुख देते हैं।"

सा.बाबा 10.12.05 रिवा.

"तुम यहाँ बैठे हो पापों को भस्म करने तो फिर आगे कोई पाप नहीं करना चाहिए। नहीं तो वह सौगुणा बन जायेगा। विकार में गये तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।... बाप कहते हैं - खबरदार रहना, हमारा बच्चा बनकर कोई क्रिमिनल काम नहीं करना, नहीं तो पत्थरबुद्धि बन जायेंगे। इन्द्र सभा की कहानी भी है ना।" सा.बाबा 7.12.05 रिवा.

"एक है दान करना और दूसरा है पुण्य करना। दान से भी पुण्य का ज्यादा महत्व है। पुण्य कर्म निस्वार्थ सेवाभाव का कर्म है। पुण्य कर्म दिखावा नहीं होता है लेकिन दिल से होता है।

दान दिखावा से भी होता है और दिल से भी होता है। पुण्य कर्म अर्थात् आवश्यकता के समय किसी आत्मा के सहयोगी बनना।”
अ.बापदादा 10.4.91

“दादियों को भले ही पता नहीं लेकिन आपके रजिस्टर में ऑटोमेटिक नोट हो जाता है... दादियां नहीं देखती, और कोई नहीं देखते लेकिन रजिस्टर देख रहा है।... इन विघ्नों को स्वयं से समाप्त करो। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ, इनको चेन्ज करो तो हम चेन्ज होंगे - यह भाषा यथार्थ है ?”
अ.बापदादा 15.4.92

“अगर कोई असत्य बात देखते भी हो, सुनते भी हो तो भी असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ।... व्यर्थ बातों का फैलाव करना, यह भी पाप का अंश है। यह छोटे-छोटे पाप अपनी उड़ती कला के अनुभव को समाप्त कर देते हैं क्योंकि पाप सबसे भारी है।... समाचार सुनने वालों पर भी पाप और सुनाने वालों के ऊपर और ज्यादा पाप हो जाता है।”
अ.बापदादा 15.4.92

“कोई चोरी करते तो अन्दर दिल में खाना चाहिए कि हम पाप करते रहते हैं तो क्या पद पायेंगे। ... कोई देहाभिमान के कारण नाम-रूप में फँस पड़ते हैं। ... फिकरात तो रहती है। फिर भी यहाँ दुख की कोई बात नहीं है। जानते हैं कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था।”
सा.बाबा 18.03.06 रिवा.

“समझाने में बड़ा सहज है परन्तु समझते नहीं हैं तो समझा जाता है कि तकदीर में नहीं है। ड्रामा को साक्षी होकर देखा जाता है। बच्चों को यज्ञ की बहुत रेस्पेक्ट होनी चाहिए। बिगर पूछे यज्ञ का एक पैसा भी उठाना, मात-पिता की छुट्टी बिगर किसको देना - यह महान पाप है।”
सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

“अगर कोई असत्य बात देखते भी हो, सुनते भी हो तो भी असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ। ... व्यर्थ बातों का फैलाव करना, यह भी पाप का अंश है। यह छोटे-छोटे पाप अपनी उड़ती कला के अनुभव को समाप्त कर देते हैं क्योंकि पाप सबसे भारी है। ... समाचार सुनने वालों पर भी पाप और सुनाने वालों के ऊपर और ज्यादा पाप हो जाता है।”
अ.बापदादा 15.4.92

“जो होना नहीं चाहिए, जो करना नहीं चाहते, वह न होना चाहिए और न करना चाहिए - यह है पुण्यात्मा की निशानी। ... तपस्या वर्ष में यह संकल्प करो कि सारा दिन संकल्प, बोल, कर्म द्वारा पुण्यात्मा बन पुण्य करेंगे। ... मधुवन की लहर, निमित्त टीचर्स की लहर प्रवृत्ति वालों तक, गॉडली स्टूडेण्ट्स तक सहज पहुँचती है।”
अ.बापदादा 10.4.91

“ऐसी निमित्त बनी हुई आत्माओं के प्रति कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प नहीं उठाना चाहिए। ...

कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है। ... इन गुह्य बातों को बाप जाने और जो समझदार बच्चे हैं, वे जानें। निमित्तबनी हुई आत्माओं के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना क्योंकि निमित्त बाप ने बनाया है ना।" अ.बापदादा 10.1.90

"पाप का खाता अलग है लेकिन ये खज़ाने व्यर्थ गँवाने का खाता है। पाप तो स्पष्ट दिखाई देता है तो महसूस कर लेते हो ... यदि संकल्प का खज़ाना जमा नहीं होगा तो गँवाने का खाता होगा ना। ... तो चेक करो कि आज क्या-क्या खज़ाना जमा किया ? अपने को अन्दर से देखना होता है।" अ.बापदादा 25.3.95

श्रीमत और पापी एवं पापकर्म

घृणा पाप कर्म से करनी है, पापी से नहीं अर्थात् हमको उसके जैसा पाप-कर्म नहीं करना है परन्तु उस पाप-कर्म करने वाले से घृणा नहीं करनी है क्योंकि हमको बाबा ने ज्ञान दिया है कि हर आत्मा अपने मूल स्वरूप में पवित्र है, परमात्मा की प्रिय सन्तान है, हमारे प्रिय भाई हैं और वे इस विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं। इसलिए कर्म के विधि-विधान और ड्रामा के पार्ट को जानते हुए हर आत्मा के प्रति हमारी शुभ भावना, शुभ कामना, रहम की भावना रहनी ही चाहिए।

"बाप का बनकर फिर बाप को छोड़ा तो बहुत पापात्मा हो जाते हैं। यह जैसे कोई किसका खून करते हैं तो पाप लगता है। वह पाप भी थोड़ा है। यहाँ जो बाप का बनकर फारकती दे देते हैं, प्रतिज्ञा कर फिर विकारी बन पड़ते हैं तो बहुत पाप लगता है। अज्ञान काल में इतना नहीं लगता, जितना ज्ञान में लगता है।" सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

श्रीमत और दुख-सुख

बाबा ने दुख-सुख के विधि-विधान को बताकर दुखों से मुक्त होकर सदा सुखी रहने के लिए हम आत्माओं को श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है अर्थात् उसका अपना कर्म ही उसके सुख-दुख का मूलाधार है। बाबा ने कहा है - सुख दोगे तो सुख पाओगे और दुख दोगे तो दुख अवश्य पाओगे, ये इस सृष्टि का अटल विधि-विधान है। इसलिए न दुख दो, न दुख लो। सदा सुख दो, सुख लो।

वास्तविकता ये है कि दुख लेते हैं, तब ही दुख देने का संकल्प उठता है या फिर उदण्डता के वशीभूत किन्ही निरीह असहाय जीवों को दुख देते हैं या फिर अपने सुख के लिए निरीह प्रणियों की हत्या करते हैं। इन सबका हमारे सुख-दुख से क्या सम्बन्ध है, इस सबका ज्ञान भी दिया है और इससे बचने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - यदि तुम किसको दुख देंगे तो तुमको भी दुख अवश्य मिलेगा, तुम दुखी होकर मरेंगे। बाबा ये कोई श्राप नहीं देते हैं परन्तु कर्म का लॉ बतलाते हैं।

इस सत्य का ज्ञान भी बुद्धि में अवश्य रखना चाहिए कि इस सृष्टि में कोई भी क्रिया बिना कारण के नहीं होती है। यदि हमको किसी भी प्रकार दुख हो रहा है तो उसका कारण हमारे विकर्म हैं, इस सत्य को समझकर हमको और विकर्मों से बचने और सुकर्म करने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए।

"बाप आया हुआ है, दुख हरने की युक्ति बता रहे हैं। ... तुम मेरे बने हो तो तुमको किसको दुख नहीं देना है।" सा.बाबा 17.9.05 रिवा.

"सुखदाता बाप के बच्चे बनकर भी अगर दुख की फीलिंग आती है तो बाप कहते हैं - बच्चे, यह तुम्हारा बड़ा कर्मभोग है। जब बाप मिला तो दुख की फीलिंग आनी नहीं चाहिए। जो पुराने कर्मभोग हैं, उसे योगबल से चुक्तू करो।" सा.बाबा 12.8.05 रिवा.

"अपने को ईश्वरीय सम्प्रदाय कहलाकर फिर एक-दो को दुख देते तो उनको असुर कहा जाता है। ... तुमको किसको दुख देने का ख्याल नहीं आना चाहिए।"

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"अभी तुम डबल अहिंसक बनते हो। ... तुमको मन्सा-वाचा-कर्मणा किसको दुख नहीं देना है। ... पुरुषार्थ ऐसा करो, जो नम्बरवन में जाओ। टीचर का काम है सावधान करना।"

सा.बाबा 12.10.05 रिवा.

"जितना बाप ऊंच ते ऊंच गाया जाता है, उतना ही बच्चों को भी ऊंच बनना है।... ड्रामा बड़ा विचित्र वण्डरफुल है। ... हम कांटे से फूल बन रहे हैं। फूल हमेशा सबको सुख देते हैं। ... फूल बनाने वाला बाप है।" सा.बाबा 24.10.05 रिवा.

"महावीर आत्मा के पास दुख की लहर स्वप्न में भी नहीं आ सकती। सुख के सागर के बच्चे बन गये। ... सदा सुख के झूले में झूलते रहो।" अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 1

"तुम ही पूज्य राव थे, फिर तुम ही 84 जन्म ले पूरे रंक बने हो। ऐसी-ऐसी बातें घड़ी-घड़ी सुमिरन करनी चाहिए। सुमिरन करते रहेंगे तो तुम कभी भी अपने को दुखी नहीं समझेंगे। ... यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी कोई भी नहीं जानते हैं।" सा.बाबा 26.8.06 रिवा.

श्रीमत और दुखी होना या रोना

भगवान के बच्चे बनकर दुखी होना या रोना भी सुखदाता बाप का नाम बदनाम करना है। दुखी होना या रोना भी विकर्म बन जाता है। इसलिए बाबा की श्रीमत है - बच्चे तुमको कब रोना नहीं है। रोना प्रत्यक्ष भी होता है तो अप्रत्यक्ष भी होता है अर्थात् कोई बाहर से रोते हैं और कोई मन से रोते हैं। दोनों प्रकार से रोना नहीं है।

"बापदादा आये हुए बच्चों को एक वरदान देता है ... वरदान है - अगर आपको कोई दुख दे तो भी आप दुख लेना नहीं। ... लेने वाला ज्यादा दुखी होता है। ... आप उसको दुख के बजाये सुख देंगे तो आपको दुआयें मिलेंगी। तो खुशी भी रहेगी और दुआओं का खज़ाना भी भरपूर होता जायेगा।" अ.बापदादा 4.9.05

"तुम बच्चों को विचार सागर मन्थन कर प्वाइन्ट्स निकालकर समझाना है और निडर भी बनना है। ... यह एम एण्ड आब्जेक्ट का चित्र घर-घर में होना चाहिए। हम पढ़कर यह बन रहे हैं, फिर रोना थोड़ेही चाहिए।" सा.बाबा 23.11.05 रिवा.

"कहते हैं - न्यारा सो प्रभु का प्यारा। दुख की लहर से भी न्यारा बनेंगे, तब प्रभु का प्यारा बनेंगे। जितना न्यारा, उतना प्यारा। ... तो रोज चेक करो कि कितने न्यारे रहे और कितने प्यारे रहे। ... दुखी को खुशी देना - यह सबसे बड़े से बड़ा पुण्य है।"

अ.बापदादा 2.12.93 पार्टी 1

"मन का रोना तो सबको आ सकता है। श्रीमत है - सदा खुश रहो। ... दुख की लहर आना, यह भी रोना है। सुखदाता के बच्चे हो तो दुख की लहर आ नहीं सकती। यह भूल जाते हो तब दुख की लहर आती है।" अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

"यह खुशी बच्चों को अन्दर रहे तो कभी कोई बात में रोना नहीं आये। तुम समझते हो ना कि हम प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे तो तुमको क्यों नहीं अन्दर में खुशी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 7.9.06 रिवा.

"ब्राह्मण का अर्थ ही है शीतल संस्कार वाले।... प्यार ऐसी चीज है जो पत्थर को भी पानी कर देता है।... "स्वराज्य अधिकारी आत्मायें हैं" - यह निश्चय और नशा सदा ही हो। ...

परमात्मा के बच्चे कभी रो नहीं सकते। रोना बन्द। न आँखों का रोना और न मन का रोना। जहाँ खुशी होगी, वहाँ रोना नहीं होगा। ... विघ्न को विघ्न न समझ खेल समझेंगे तो पास हो जायेंगे।"

अ.बापदादा 6.1.90 पार्टी 2

श्रीमत और ईश्वरीय प्राप्तियां एवं उनका नशा और खुशी

श्रीमत और रुहानी नशा एवं खुशी

ईश्वरीय प्राप्तियाँ अनन्त हैं और बाप ने सभी बच्चों को समान रूप से दी हैं परन्तु जो उनको धारण करता है, उसको उनकी खुशी और नशा अनुभव होता है और उसकी प्राप्तियाँ निरन्तर बढ़ती जाती हैं। बाबा ने श्रीमत दी है - तुम अपनी प्राप्तियों को देखो, उनका सदुपयोग करो और उनका नशा और खुशी अनुभव करो। तुम दूसरों की प्राप्तियों को नहीं देखो क्योंकि जो दूसरों की प्राप्तियों को देखता है, वह अपनी प्राप्तियों का नशा और खुशी अनुभव नहीं कर सकता है क्योंकि ये विश्व एक विविधतापूर्ण ड्रामा है और हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है तथा हरेक ने ईश्वरीय प्राप्तियों को अपने अनुसार धारण किया है।

बाबा की बच्चों को श्रीमत है - तुमको सदा रुहानी नशा और आन्तरिक खुशी होनी चाहिए क्योंकि तुमको रुहानी बाप मिला है, सत्य रुहानी ज्ञान मिला है, भविष्य श्रेष्ठ जीवन का अधिकार मिला है। इन सब बातों की याद रहे, अनुभूति रहे तो सदा ही रुहानी नशा और खुशी रहेगी।

"पहला खज़ाना है ज्ञान का ... दूसरा खज़ाना है योग अर्थात् याद का, जिससे शक्तियों की प्राप्ति होती है और शक्तियों के आधार से सर्व समस्याओं और सर्व विघ्नों को सहज पार कर लेते हैं। तीसरा खज़ाना है - धारणाओं का, जिससे सर्व गुणों की प्राप्ति होती है और चौथा खज़ाना है सेवा का, जिससे दुआयें मिलती है और खुशी प्राप्त होती है।"

अ.बापदादा 4.9.05

"बाप सभी को एक जैसे ही खज़ाने देते हैं... लेकिन लेने वालों में फर्क हो जाता है। कोई बच्चे खज़ाने को प्राप्त कर खाते-पीते और मौज करते खत्म कर देते हैं, कोई खाते-पीते, मौज करते जमा भी करते और कोई बच्चे कार्य में भी लगाते, जिससे खज़ाने को बढ़ाते जाते। बढ़ाने की चाबी है - खज़ाने को स्व के प्रति और दूसरों के प्रति यूज करना।"

अ.बापदादा 4.9.05

"जिसके पास यह ज्ञान, योग, धारणा, सेवा का खज़ाना जमा है वह सदा भरपूर रहता है। ...

भरपूर नहीं तो हलचल होती है। ... खुशी कम रहती है तो उसका कारण क्या होता है ? बाप ने तो खजाने दिये हैं लेकिन एक हैं सुनने वाले, दूसरे हैं समाने वाले। जो समाने वाले हैं वे नशे में रहते हैं।" अ.बापदादा 4.9.05

"बाप सभी को एक जैसे ही खजाने देते हैं ... लेकिन लेने वालों में फर्क हो जाता है। कोई बच्चे खजाने को प्राप्त कर खाते-पीते और मौज करते खत्म कर देते हैं, कोई खाते-पीते, मौज करते जमा भी करते और कोई बच्चे कार्य में भी लगाते, जिससे खजाने को बढ़ाते जाते। बढ़ाने की चाबी है - खजाने को स्व के प्रति और दूसरों के प्रति यूज करना।"

अ.बापदादा 4.9.05

"तुमको यही नशा चढ़ना चाहिए। यह एम एण्ड आब्जेक्ट का चित्र तो सदैव छाती से लगा होना चाहिए। ... सारा दिन सर्विस का ही नशा रहना चाहिए। ... श्री-श्री शिवबाबा, जो ऊंच ते ऊंच है, वह हमको पढ़ाते हैं।" सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

"दिल में बड़ी खुशी और उमंग होना चाहिए। हम आत्मायें भगवान के बच्चे हैं। हम आत्माओं को भगवान पढ़ाते हैं। ... तुम अभी पद्मापदम भाग्यशाली बन रहे हो। ब्राह्मण जो बनते हैं, उनके पांव में पद्म हैं। ... बड़े नशे से बताना चाहिए - शिवबाबा कहते हैं, मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप मिट जायेंगे।" सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

"यह सब समझने की बातें हैं। बच्चे बड़ी खुशी में डूबे हुए रहने चाहिए। सबकुछ बाबा से मिला है, कोई तमन्ना नहीं। जानते हैं कल्प पहले मिसल हमारी सब कामनायें पूरी होती हैं, इसलिए पेट भरा रहता है। जिनको ज्ञान नहीं है, उनका थोड़ेही पेट भरा रहेगा। कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं।" सा.बाबा 5.12.05 रिवा.

"शिवबाबा समझाते हैं तो क्या यह नहीं समझा सकते। यह भी सुनते तो हैं ना। क्या यह ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन नहीं करता होगा। बाप तुमको विचार सागर मन्थन करने की प्वाइन्ट्स सुनाते रहते हैं। ... तुम बच्चों को नॉलेज मिलती है, उसमें मस्त रहना चाहिए। ... खुशी जैसी खुराक नहीं।" सा.बाबा 28.11.05 रिवा.

"प्राप्ति वाला कभी थकता नहीं है। ... प्राप्ति को भूलना अर्थात् थकना। ... सदा अपनी प्राप्तियों को सामने रखो। सिर्फ पुरुषार्थ नहीं करो लेकिन पुरुषार्थ के पहले प्राप्तियों को सामने रखो।" अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 2

"साधारणता में महानता समाई हुई हो। जितने ही साधारण हो, उतने ही अन्दर महान हो। तो यह नशा रहता है कि बाप ने क्या से क्या बना दिया और क्या-क्या दे दिया। ... गरीब को साहूकार बनाना - यह है कमाल।... विनाशी धन के साहूकारों का भाग्य नहीं है। भाग्य है ही

गरीबों का।" अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 6

"संगमयुग पर सबसे बड़े ते बड़ी आप ब्राह्मणों की शान कौनसी है? ... हम ऊंचे ते ऊंचे भगवान के बच्चे ऊंचे ते ऊंचे हैं। ... सदा अपनी प्राप्तियों की स्मृति में रहो।... अगर प्राप्तियों की लिस्ट सामने रहे तो सदा अपना श्रेष्ठ शान स्वत: स्मृति में रहेगा।"

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 5

"बाप के खज़ाने को अपना खज़ाना बनाया है या भूल जाता है ... जितना खज़ाना याद रहेगा, उतना नशा रहेगा और यह रुहानी नशा औरों को भी अनुभव करायेगा कि इनके पास कुछ है।" अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 1

""मेरा बाबा" स्मृति में आना और सर्व प्राप्तियों के भण्डार अनुभव होना। ... बाप के खज़ाने सो मेरे खज़ाने हैं। तो जितना भरपूर रहेंगे, उतना हलचल में नहीं आयेंगे। भरपूर चीज हलचल में नहीं आती। ... बुद्धि कभी चंचल हो नहीं सकती।" अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 2

"कोई समय मुरझाइस आती है तो बाबा ने समझाया है - कई ऐसे रिकार्ड हैं, जो तुमको फौरन खुशी में ला देंगे। सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। ... तुमको कितना नशा होना चाहिए - हम बेहद के बाप के वारिस हैं।" सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

"तुम बच्चों को कितना गद्गद होना चाहिए। तुम्हीं कल्प-कल्प बाप से वर्सा लेते हो अर्थात् माया पर जीत पाते हो और फिर हारते हो। यह है बेहद की हार-जीत का खेल। ... तुम्हारी आत्मा कहती है - हम अभी बाबा की श्रीमत पर चल रहे हैं, हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं।"

सा.बाबा 19.10.05 रिवा.

"ब्राह्मण अर्थात् सब-कुछ मिला। प्राप्ति की निशानी है खुशी। खुश रहने वाले भी हो और खुशी बांटने वाले भी। बांटेगा कौन? जिसके पास स्टॉक होगा।... तो सदैव अपना स्टॉक चेक करो कि इतना भरपूर है?" अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 2

"बाप की छत्रछाया है, जो आत्मा को हर समय सेफ रखती है। आत्मा कोई भी अल्पकाल की आकर्षण में आकर्षित नहीं होती, सेफ रहती है। ... सदा छत्रछाया के अन्दर रहने की मौज का अनुभव करो।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 5

"इस स्वराज्य अधिकारी, बेगमपुर के राज्य अधिकारी के आगे वह विश्व का राज्य भी कुछ नहीं है। ... सदा रुहानी नशे में बेग़मपुर के बादशाह हैं - इस अधिकार में रहो, नीचे नहीं आओ। ... बाप ने हर ब्राह्मण बच्चे को तख्तनशीन राजा बना दिया है।"

अ.बापदादा 12.11.92

"कर्म बन्धन मुक्त। कर्म का बन्धन खींचे नहीं, मालिक होकर कर्म करायें। ... ऐसी आत्मा

स्वयं भी सदा खुश रहेगी और दूसरों को भी खुशी देगी।”

अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

“मन का रोना तो सबको आ सकता है। श्रीमत है - सदा खुश रहो। ... दुख की लहर आना, यह भी रोना है। सुखदाता के बच्चे हो तो दुख की लहर आ नहीं सकती। यह भूल जाते हो तब दुख की लहर आती है।” अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

“इतनी खुशी जमा की है? ... इतनी सेवा करनी है, जो कोई भी खाली हाथ नहीं जाये। जितनी खुशी बांटेंगे, उतनी खुशी बढ़ती जायेगी। यह देना, देना नहीं है लेकिन लेना है।”

अ.बापदादा 16.3.92 पार्टी

“सर्विस तो बच्चों को करनी है, सबको पैगाम देना है। इतना नशा चाहिए कि हमको भगवान पढ़ाते हैं, हम भगवान के साथ रहते हैं। ... बच्चे, अच्छे गुण धारण करो, कुल का नाम बाला करो।” सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

“नॉलेज बड़ी गुह्य है, जो अभी तुम सम्मुख पढ़ रहे हो तो वह नशा चढ़ना चाहिए। ... स्टूडेण्ट्स को एम एण्ड आब्जेक्ट की खुशी होनी चाहिए। ... तुम हो ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी। देवताओं से भी ऊंच तुम प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हो।”

सा.बाबा 12.12.05 रिवा.

“तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् संकल्प और कर्म समान हो तब ही बाप समान कहेंगे ... रोज़ अमृतवेले यह पाठ पक्का करो कि कुछ भी हो जाये परन्तु खुश रहना है और खुश करना है।”

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 1

“जो दिल तख्तनशीन होगा, वह सब बातों में बेफिकर होगा ... तख्तनशीन बनने के लिए तिलकधारी भी बनना पड़े। ... बार-बार स्मृति को इमर्ज करते रहना। सदा यह नशा रहे कि हम साधारण आत्मायें नहीं हैं लेकिन विशेष आत्मायें हैं।” अ.बापदादा 7.3.93 पार्टी 3

“ऐसे हर रोज भिन्न-भिन्न स्थिति के आसन पर वा सीट पर सेट होकर बैठो। ... स्वमान की लम्बी लिस्ट निकल आयेगी। लेकिन हर समय जो जानते हो, वह अपने को मानो। ... मानकर चलने से नशा रहता है।” अ.बापदादा 19.3.88

“स्मृति में रखो कि बाप करावनहार हर कर्म करा रहा है तो बोझ नहीं होगा। ... करावनहार बाप के डायरेक्शन प्रमाण हर कर्म करते चलो तो कर्म भी श्रेष्ठ और कर्म का फल सदा खुशी, सदा हल्कापन, फरिश्ता जीवन का अनुभव होगा।” अ.बापदादा 7.3.88

“गाया हुआ है - “खुशी” सबसे बड़ी खुराक है। खुशी जैसी और कोई खुराक नहीं। ... सुखदाता के बच्चे को दुख कहाँ से आया! ... यह भाग्य जितना बांटेंगे, उतना बढ़ेगा। ...

अभी ही सन्तुष्टता का मजा है। सन्तुष्ट हैं तो खुश हैं।" अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 3

"प्राप्ति वाला कभी थकता नहीं है। ... प्राप्ति को भूलना अर्थात् थकना। ... सदा अपनी प्राप्तियों को सामने रखो। सिर्फ पुरुषार्थ नहीं करो लेकिन पुरुषार्थ के पहले प्राप्तियों को सामने रखो।" अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 2

"खुशी है तो सबकुछ है और खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। ... अखुट प्राप्तियों के आगे यह थोड़ा-बहुत नुकसान क्या बड़ी बात हैं। जब प्राप्तियों को भूल जाते हैं तब उदास होते हैं। ... शरीर चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

"फिदा होने के बाद फिर चक्र नहीं काटना पड़ेगा। ... बापदादा को भी ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी रतनों को देख हर्ष होता है। ... सिर्फ रुहानी नशे को हद का नशा नहीं बनाना।"

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 6

"संगमयुग पर सबसे बड़े ते बड़ी आप ब्राह्मणों की शान कौनसी है? ... हम ऊंचे ते ऊंचे भगवान के बच्चे ऊंचे ते ऊंचे हैं। ... सदा अपनी प्राप्तियों की स्मृति में रहो। ... अगर प्राप्तियों की लिस्ट सामने रहे तो सदा अपना श्रेष्ठ शान स्वतः स्मृति में रहेगा।"

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 5

"इतनी खुशी जमा की है? ... इतनी सेवा करनी है, जो कोई भी खाली हाथ नहीं जाये। जितनी खुशी बांटेंगे, उतनी खुशी बढ़ती जायेगी। यह देना, देना नहीं है लेकिन लेना है।"

अ.बापदादा 16.3.92

"यह कभी भूलो मत कि हम ब्राह्मण हैं और देवता बनने वाले हैं। ... ब्राह्मण कभी अपनी जाति को भूलते हैं क्या? ... तुम श्रीमत पर विश्व को पवित्र स्वर्ग बनाते हो, इसलिए तुम्हारा गायन है। तुम्हारी पूजा नहीं हो सकती। गायन सिर्फ तुम ब्राह्मणों का है, न कि देवताओं का। ... पूजन देवताओं का होता है क्योंकि उनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र है।"

सा.बाबा 6.02.06 रिवा.

"खुशी अपनी चीज है, परिस्थिति या समस्या पराई चीज है। पराई चीज तो आयेगी भी और जायेगी भी। परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है। लेकिन अपनी चीज खुशी को खोना नहीं।"

अ.बापदादा 11.11.89 पार्टी 2

"जो नाम-मान के पीछे सेवा करते हैं... यह मान नहीं है लेकिन अभिमान है। जहाँ अभिमान है, वहाँ प्रसन्नता रह नहीं सकती। सबसे बड़ा शान बापदादा के दिल में शान प्राप्त करो।"

अ.बापदादा 22.3.96

"बाप की आज्ञा है - सहनशील बनो। तो बाप की आज्ञा मानते हो, तो परमात्मा की आज्ञा

मानना तो खुशी की बात है ना।... लेकिन यह मरना नहीं है लेकिन अधिकार पाना है।"

अ.बापदादा 13.12.95

"सदा सन्तुष्ट रहने की सबसे सहज विधि है - सदा अपने सामने कोई न कोई विशेष प्राप्ति को रखो। ... तो आप अपनी प्राप्तियों को देखो - ज्ञान के ख़ज़ाने की प्राप्ति कितनी है, योग से शक्तियों की प्राप्ति कितनी है, दिव्य गुणों की प्राप्तियां कितनी हैं।" अ.बापदादा 16.3.95

"बापदादा आप सभी बच्चों के दिल में जो बाप के स्नेह का झण्डा लहरा रहा है, उसको देख हर्षित हो रहे हैं। ... ऐसे ही सदा स्नेह में ऊंचे ते ऊंचा लहराते रहो। यह झण्डा भी बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा है। ... सब बहुत-बहुत खुशनसीब हो, इसलिए सदा खुशी बांटते रहना। खुश रहना और खुशी बांटते रहना।" अ.बापदादा 18.1.95

"तुम जानते हो - हम जीते जी मरकर बेहद के बाप के आकर बनें हैं, नई दुनिया में जाने के लिए। तो तुमको स्थाई खुशी रहनी चाहिए। ... बाप स्मृति दिलाते हैं कि तुम स्वर्ग के मालिक थे, अब फिर से पुरुषार्थ कर स्वर्ग के मालिक बनो।" सा.बाबा 8.6.06 रिवा.

"सम्बन्ध और प्राप्ति दो बातें मुख्य हैं।... सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं... और बाप ने शक्तियों, ज्ञान, गुणों, सुख-शान्ति, आनन्द, प्रेम सब ख़ज़ाने दिये हैं। तो कितनी प्रापतियां हैं।... प्राप्तियों को सामने रखो। प्राप्ति को इमर्ज करने से प्राप्ति की खुशी की अनुभूति होगी।... अपने इस श्रेष्ठ भाग्य को कर्म करते हुए भी स्मृति में रखो।"

अ.बापदादा 9.3.94 पार्टी 5

"कोटों में कोई और कोई में भी कोई हो तो लाड़ले हुए ना!... बापदादा बच्चों को सदा खुशी में देखना चाहते हैं।... वर्तमान समय विश्व को बच्चों की इस सेवा की आवश्यकता है जो चेहरे से, नयनों से, दो शब्द से हर आत्मा के दुख दूर कर खुशी दे दो।"

अ.बापदादा 23.2.97

"आप जैसी खुशनसीब आत्मायें सारे कल्प में कोई नहीं हैं। इतना नशा चेहरे और चलन से अनुभव कराओ।... उदास होना अर्थात् माया के दास।... आपकी कमजोरी भिन्न-भिन्न माया के रूप बन जाती है।... बापदादा सदा हर एक बच्चे को खुशनसीब के नशे में, खुशनुमा चेहरे में और खुशी की खुराक से तन्दुरुस्त और सदा खुशी के खजानों से सम्पन्न देखने चाहते हैं।... आपका खुशी का ख़ज़ाना जितना खर्चो उतना बढ़ता है।"

अ.बापदादा 23.2.97

श्रीमत और आनन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख

अतीन्द्रिय सुख या आनन्द संगमयुग की विशेष प्राप्ति है। सुख और सुख के साधन तो सतयुग में अपार होंगे परन्तु अतीन्द्रिय सुख या आनन्द पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही मिलता है। इसलिए बाबा सदैव कहते हैं - तुम सतयुग का इन्तजार नहीं करो लेकिन वर्तमान के आनन्द या अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करो। वर्तमान का सुख ही भविष्य सुख का आधार है। जिसने वर्तमान के अतीन्द्रिय सुख का अनुभव न किया तो वह भविष्य के भौतिक सुखों का अनुभव क्या करेगा क्योंकि वर्तमान के अतीन्द्रिय सुख का भविष्य के भौतिक सुखों से घनिष्ट सम्बन्ध है। वास्तव में वर्तमान का अतीन्द्रिय सुख ही बाबा यथार्थ वर्सा है क्योंकि बाबा अभी आया है तो वर्सा भी अभी ही मिलेगा। इसलिए भविष्य के इन्तजार में न जियो लेकिन वर्तमान के आनन्द का अनुभव करो। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुम आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर ज्ञान का चिन्तन कर बाबा की अव्यभिचारी याद में रह सदा इस जीवन के परमानन्द का अनुभव करो और कराओ।

“अभी भगवान श्रेष्ठ काम कराते हैं और श्रेष्ठ मत देते हैं कि ऐसे छी-छी काम नहीं करो।... तुमको ऐसा बाप मिला है तो बहुत खुशी होनी चाहिए।” सा.बाबा 17.10.05 रिवा.

“तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए - हम आत्मा इस शरीर द्वारा बाबा को भी देखते हैं। ... आत्मा-परमात्मा को देखा नहीं जा सकता।... बाबा तुमको भाकी पहनते हैं, तुम भाग्यशाली हो ना। ... तुम उनको भाकी पहन सकते हो। मैं कैसे पहनूँ। इसलिए तुम लकी सितारे हो।” सा.बाबा 14.11.05 रिवा.

“अब तुमको यथार्थ रीति बाप का परिचय सबको देना है। तुमको भी बाप ने दिया है। ... तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। तब तो गायन भी है - अतीन्दिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो।” सा.बाबा 7.11.05 रिवा.

“हम स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं तो कितनी खुशी रहनी चाहिए।... तुम बच्चों को अपने भाग्य पर शुक्रिया मानना चाहिए। हम पद्मापदम भाग्यशाली हैं।” सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

“कभी सोचा था कि इतना विशेष पार्ट इस ड्रामा में हमारा नूँधा हुआ है!... जब त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होते हो तो कितना मज़ा आता है ... यह संगमयुग टॉप प्वाइन्ट है। तो इस पर खड़े होकर देखो तो मज़ा आयेगा।” अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 6

“तो चेक करो - सुख-शान्ति, सम्पत्ति अर्थात् सदा हद की प्राप्तियों के आधार पर सुख है या आत्मिक अतीन्द्रिय सुख परमात्म सुखमय राज्य है? ... स्वराज्य की सम्पत्ति ज्ञान-गुण, शक्तियां हैं। ... सम्पन्नता की निशानी है - सदा सन्तुष्ट, अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं। हद की इच्छाओं की अविद्या।” अ.बापदादा 18.11.93

श्रीमत और हिसाब-किताब

हमारे हर कर्म का कैसे हिसाब-किताब बनता है और उसका शुभाशुभ परिणाम क्या होता है, उसके विषय में भी ज्ञान दिया है और हमारा सबके साथ सुखदायी हिसाब-किताब बने, उसके लिए भी श्रीमत दी है। आत्मा जो भी कर्म करती है, उसका प्रभाव अन्य आत्माओं और प्रकृति को अवश्य ही प्रभावित करता है। आत्मा का प्रभाव वातावरण पर और वातावरण का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है, जिसके आधार पर आत्मा का भविष्य का सुख-दुख निर्भर करता है। इसलिए बाबा कहते हैं - न दुख दो न दुख लो, सुख दो सुख लो। दुआयें दो और दुआयें लो।

बाबा ने श्रीमत दी है अभी तुमको योग द्वारा अपना पुराना कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब चुक्ता करना है और कोई ऐसा कर्म नहीं करना है, जिससे नया कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब बनें। अभी तुमको श्रेष्ठ कर्मों द्वारा सतयुग के लिए श्रेष्ठ कर्म-सम्बन्ध का हिसाब-किताब बनाना है।

"कयामत का समय भी इसको कहा जाता है। आसुरी बन्धन का सब हिसाब-किताब चुक्तू कर फिर वापस चले जाते हैं।... तुम ही इस चक्र में आते हो। बुद्धि में यह नॉलेज सदैव रहनी चाहिए और फिर समझाना भी है। धन दिये धन न खुटे।... जो कुछ होता है, कल्प पहले मुआफिक। ऐसे समझ शान्त रहना होता है।" सा.बाबा 13.11.05 रिवा.

"एक-दो के प्रति दिल में बिल्कुल सफाई हो। ... जहाँ सच्चाई-सफाई होती है, वहाँ समीपता होती है। ... वहाँ भी आपस में समीप सम्बन्ध में कैसे आयेंगे ? जब यहाँ दिल समीप होगी।"

अ.बापदादा 9.10.71

"शक्तियों के भक्त और बाप के भक्त अलग-अलग हैं। ... जिन आत्माओं को जिन श्रेष्ठ आत्माओं वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा साक्षात्कार होता है या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, उस आधार पर वे उनकी प्रजा वा भक्त बनते हैं।" अ.बापदादा 14.7.74

"पिछले हिसाब को भी खुशी से चुक्तू करो, चिन्ता से नहीं... अन्त में अगर बन्धन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवान्स पार्टी में सेवा के लिए जायेंगे। ... सदा अतीन्द्रिय सुख अर्थात आत्मिक सुख में रहो।"

अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 2

"इस ज्ञान की खुशी में तुम्हारे गम, दुख आदि सब मर्ज हो जाते हैं। ... खुशी की दुनिया याद रहने से गम-दुख आदि सब भूल जाने चाहिए।... कर्मभोग का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। खुशी में यह सब मर्ज करते जाओ।" सा.बाबा 24.8.06 रिवा.

श्रीमत और ज्ञान का वर्णन, मनन एवं मगन स्थिति

ज्ञान को समझकर उसका वर्णन करना तो सहज है परन्तु उसको मनन कर अनुभव करना और उसमें मगन रहना ज्ञानी स्वरूप आत्मा का लक्षण है। इसलिए बाबा श्रीमत देते कि ज्ञान का वर्णन भी करना है तो मनन करके मगन भी रहना है। ज्ञान केवल वर्णन करने के लिए बाबा ने नहीं दिया है लेकिन मनन करके मगन रहने के लिए दिया है। जो स्वयं ज्ञान का सुख अनुभव करके मगन होगा, वह वर्णन भी अवश्य करेगा।

"बापदादा वतन में तीन प्रकार के बच्चों को देख रहे थे। एक वर्णन करने वाले, दूसरे मनन करने वाले और तीसरे अनुभव में मगन रहने वाले।... अनुभव में मगन रहने वाले उससे भी कम संख्या में देखे।" अ.बापदादा 23.12.87

"वर्णन करने वाले वर्णन करने तक खुशी वा शक्ति अनुभव करते हैं, ... मनन करने वाले जो भी सुनते हैं, उसको मनन कर स्वयं भी हर ज्ञान की प्वाइन्ट का स्वरूप बनते ... बुद्धि द्वारा ज्ञान के भोजन को हज़म करना है ... शक्तिशाली बन जाते हैं। ... तीसरे बच्चे सदा सर्व अनुभवों में मगन रहते।" अ.बापदादा 23.12.87

"मनन करने वाले सदा स्व-चिन्तन में बिजी रहने के कारण माया के अनेक विघ्नों से सहज मुक्त हो जाते हैं। ... मनन शक्ति वाला अन्तर्मुखी सदा सुखी रहता है। ... मनन करना सेकेण्ड स्टेज है लेकिन मनन करते हुए मगन रहना फर्स्ट स्टेज है।"

अ.बापदादा 23.12.87

"जो मनन शक्ति वाले होते हैं, उनको बाप की भी मदद मिलती है, जिससे जो मुश्किल काम होता है, वह सहज हो जाता है। ... इसलिए हिम्मत और बाप का साथ ये नहीं छोड़ना।"

अ.बापदादा 16.2.96 पार्टी

"बाप का फरमान है एक भी स्वांस वा संकल्प, सेकेण्ड व्यर्थ नहीं गँवाना। ... ब्रह्मा बाप को देखा - अपना आराम का समय भी विचार-सागर मन्थन कर बच्चों के प्रति लगाया। रात्रि को भी जागकर बच्चों को शक्ति देते रहे।" अ.बापदादा 26.1.95

"ज्ञान दाता एक है... एक है फिर भी नम्बरवार क्यों ?... नम्बरवार होने का विशेष आधार है एक ही शब्द प्वाइन्ट। प्वाइन्ट स्वरूप को अनुभव करना और दूसरा - कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म व्यर्थ है तो उसको प्वाइन्ट लगाना अर्थात् बिन्दी लगाना। तीसरा ज्ञान की वा धारणा की अनेक प्वाइन्ट्स को मनन कर स्व प्रति वा सेवा के प्रति समय पर कार्य में लगाना।" अ.बापदादा 10.1.94

श्रीमत और व्यक्त में अव्यक्त मिलन तथा अव्यक्त होकर अव्यक्त मिलन

वर्तमान समय साकार बाबा भी अव्यक्त हो गये हैं, इसलिए साकार मिलन का पार्ट तो पूरा हुआ परन्तु अव्यक्त मिलन का पार्ट चल रहा है तो हम उस अव्यक्त मिलन का कैसे सुख अनुभव कर सकते हैं और कैसे करें, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है।

"आज मैं आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वे ही इसको समझ सकेंगे। ... अगर व्यक्त में देखेंगे तो बाप को नहीं देख सकेंगे।... अभी भी ऐसा नहीं समझना कि बाप है दादा नहीं है या दादा है तो बाप नहीं है। हम दोनों एक-दो से एक पल भी अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही आप अपने को त्रिमूर्ति (बाप, दादा और मैं) ही समझो।" अ.बापदादा 23.1.69

"व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन, यह सभी तीव्रता से परिवर्तन होने हैं। इस कारण अव्यक्त मिलन का विशेष अनुभव विशेष रूप से कराया है और आगे भी अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन के विचित्र अनुभव बहुत करेंगे।" अ.बापदादा 23.1.73

"अव्यक्त मिलन का मूल्य है - व्यक्त भाव को छोड़ना।... उनके हर कर्म में एक तो अलौकिकता और हर कर्मेन्द्रिय से अतीन्द्रिय सुख की महसूसता आयेगी।"

अ.बापदादा 17.5.69

"जैसे बाप अव्यक्त है वैसे अव्यक्त बनकर ही अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सकते हो। यह अलौकिक अनुभव करने के लिए सदा व्यक्त भाव से, व्यक्त देश की स्मृति से उपराम अर्थात् साक्षी बनने से ही हर समय साथी का अनुभव कर पायेंगे।"

अ.बापदादा 29.4.71

"यह अवस्था ऐसी है जैसे बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ होता है, वैसे ही इस अव्यक्त स्थिति

में जो भी संगमयुग के विशेष गुणों की महिमा करते हो वह सर्व विशेष गुण उस समय अनुभव में आते हैं।" अ.बापदादा 9.4.71

"बापदादा के पास सारे दिन में पाँच प्रकार की क्यू लगती है एक क्यू होती हैं भिन्न-भिन्न प्रकार की अर्जी ले आने वालों की। कभी स्वयं के प्रति हमें शक्ति दो, सहयोग दो। कभी... दूसरी क्यू होती है कम्पलेन्ट करने वालों की, उन्हों की भाषा ही ऐसी होती है - यह क्यों, यह कैसे, कब और क्यों होगा ? ... तीसरी क्यू बाप-दादा को ज्योतिषी समझकर क्यू लगाते हैं। क्या हमारी बीमारी मिटेगी, क्या सर्विस में सफलता होगी ? ... चौथी क्यू होती है उल्हना देने वालों की आप ऐसे टाइम पर क्यों आये जब हम बूढ़ी बन गई।... पाँचवी क्यू भी होती है वह अब कम होती जा रही है वह है रॉयल रूप से मांगने की।" अ.बापदादा 8.7.74

"अभी अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाते चलो। अव्यक्त भी ड्रामा अनुसार व्यक्त में आने के लिए बांधे हुए हैं लेकिन समय प्रमाण सरकमस्टांस प्रमाण अव्यक्त मिलन का अनुभव बहुत काम में आने वाला है।... समय पर यह अव्यक्त मिलन भी साकार समान ही अनुभव होगा।"

अ.बापदादा 4.12.91

"ऐसे नहीं कि साकार मिलन के बिना अव्यक्त मिलन नहीं मना सकते हो। अव्यक्ति मिलन मनाने का अभ्यास समय प्रमाण बढ़ना ही है और बढ़ाना ही है। ... नये-नये बच्चों के लिए ही बापदादा विशेष यह साकार में मिलन का पार्ट बजा रहे हैं लेकिन यह भी कब तक ?"

अ.बापदादा 3.4.91

"ब्रह्मा बाप ने अव्यक्त होते भी व्यक्त में क्यों पार्ट बजाया ? समान बनाने के लिए। ब्रह्मा बाप अव्यक्त से व्यक्त में आये, तो बच्चों को रिटर्न में क्या करना है ? व्यक्त से अव्यक्त बनना है। समय प्रमाण अव्यक्त मिलन मनाने के लिए और अव्यक्त रूप से सेवा अति आवश्यक है।" अ.बापदादा 13.12.90

"ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता - यह पहेली हल कर ली है ना।... जो इस पहेली को हल करते हैं, उन्हें ही प्राइज़ मिलती है।... तो पहेली और प्राइज़ दोनों ही स्मृति में रहें तो सदा आगे बढ़ते रहेंगे।" अ.बापदादा 27.3.88

"अभी अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाते चलो। अव्यक्त भी ड्रामा अनुसार व्यक्त में आने के लिए बांधे हुए हैं लेकिन समय प्रमाण सरकमस्टांस प्रमाण अव्यक्त मिलन का अनुभव बहुत काम में आने वाला है। ... समय पर यह अव्यक्त मिलन भी साकार समान ही अनुभव हो।"

अ.बापदादा 4.12.91

श्रीमत और महान एवं मेहमान

बाबा ने कहा है - बच्चे अपने को इस दुनिया में मेहमान समझो। मेहमान समझने से महान बनेंगे। जैसे बाप मेहमान बनकर आते हैं, ऐसे ही तुम भी मेहमान बनकर हर कार्य करो और कार्य पूरा होने पर अपने घर परमधाम चले जाओ। मेहमान समझने से सहज ही नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप बन जायेंगे।

"महान और मेहमान - इन दोनों स्मृति में रहने से स्वत: और सहज ही जो भी कमजोरियां वा लगाव के कारण उपराम स्थिति न रह आकर्षण में आ जाते हैं वह आकर्षण समाप्त हो उपराम हो जायेंगे। ...मेहमान सिर्फ इस सृष्टि में भी नहीं लेकिन इस शरीर रुपी मकान में भी मेहमान हो।"

अ.बापदादा 2.4.72

श्रीमत और देह और देह के सम्बन्ध / श्रीमत और परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्ध एवं उनका अनुभव

बाबा की श्रीमत है कि देह और देह के सर्व सम्बन्धों को भूल अपने को आत्मा समझना और सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ जोड़ने हैं। परन्तु बाबा ने सम्बन्धों को बुद्धि से भूलने के लिए कहा है। बुद्धि से भूले हुए भी सर्व के साथ अपने आवश्यक कर्तव्य को अवश्य निभाना है। देह को भी यथोचित रूप से सम्भालना है, जिससे इस देह के द्वारा अभीष्ट पुरुषार्थ किया जा सके। परमात्मा के साथ हम आत्माओं के सर्व सम्बन्ध हैं और परमात्मा आत्माओं को सर्व सम्बन्धों का सुख अनुभव कराते हैं। परन्तु जो उनको सर्व सम्बन्धों से याद करते हैं, उनको अभी ही परमात्मा स्वयं ही उन सर्व सम्बन्धों की अनुभूति कराते हैं। अभी की अनुभूति के आधार पर ही भक्ति मार्ग में उन सम्बन्धों से आत्मा परमात्मा को याद करती है। ये सब ज्ञान भी अभी परमात्मा ने दिया है। परमात्मा के साथ कैसे सर्व सम्बन्धों का अनुभव करें और कैसे सर्व सम्बन्ध निभायें, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

अभी संगमयुग पर परमात्मा हमारा सर्व सम्बन्धी बना है और हमको श्रीमत दी है कि तुम मेरे साथ सर्व सम्बन्धों का सुख अनुभव करो, जिससे अन्त समय तुमको किसी भी सम्बन्धी की याद न आये। बाबा ने ये भी कहा है कि तुमको बीमारी के समय भी किसी भी लौकिक सम्बन्धी की याद नहीं आनी चाहिए, एक बाप ही याद आना चाहिए।

“बाप इस रथ द्वारा कहते हैं - मुझे याद करो, मैं ही पतित-पावन तुम्हारा बाप हूँ। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से रास रचाऊं - यह यहाँ के लिए गायन है, ऊपर में कैसे होगा।”

सा.बाबा 2.12.04 रिवा.

“बाप के सम्बन्ध में स्लोगन है - “सन शोज फादर”, ... शिक्षक के रूप में स्लोगन है - “जब तक जीना है तब तक पढ़ना है”... और गुरु के रूप में स्लोगन है “जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये ... चलाये”। साजन के रूप में स्लोगन क्या है - तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊं और तुम्हीं संग श्वांसो श्वांस साथ रहूँ।” अ.बापदादा 21.7.73

“सर्व सम्बन्ध से सर्व-प्राप्ति कर सकते हो तो सिर्फ एक-दो सम्बन्ध से मिलन व प्राप्ति करने में राजी नहीं हो जाना है। थोड़े में राजी होने वाले भक्त कहलाये जाते हैं। बच्चे सर्व-सम्बन्ध और सर्व-प्राप्ति के अधिकारी हैं। इसी अधिकार को प्राप्त करने वाली आत्मायें ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा बाप को प्रिय बने हो ?” अ.बापदादा 8.7.74

“सच्चा स्नेह व एक द्वारा सर्व-सम्बन्धों का स्नेह प्राप्त करने के लिए, मुख्य कौन-सा साधन व अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए, कौन-सी मुख्य बात आवश्यक है ? 9एक बाप दूसरा न कोई“ क्या यह बात जीवन में, संकल्प में और साकार में है ?” अ.बापदादा 20.5.74

“हर सम्बन्ध की प्राप्ति को ही सम्पन्न जीवन समझते हैं। तो यह ब्राह्मण जीवन भगवान से सर्व सम्बन्ध अनुभव करने वाली सम्पन्न जीवन है। भगवान से एक भी सम्बन्ध का अनुभव कम होगा तो वही सम्बन्ध अपनी तरफ खींच लेगा।... जहाँ सर्व है वहीं सम्पन्नता है।... इसलिए सर्व सम्बन्धों के सर्व स्मृति-स्वरूप बनो।” अ.बापदादा 14.10.87

“विदेही को युगल बनायेंगे तो विदेही बनने में सहयोग मिलेगा। विदेही बनने में सहयोग कम मिलता है, सफलता कम देखने में आती है तो समझना चाहिए कि विदेही को युगल नहीं बनाया है।” अ.बापदादा

18.1.70

“भक्त पुकारते रहते हैं और आप बच्चे बाप के प्यार में समा जाते हो। समा जाना ही समान बनाता है। ... बापदादा सर्व सम्बन्ध ऑफर कर रहे हैं तो सर्व सम्बन्धों का सुख लो।”

अ.बापदादा 3.3.2000

“याद रहे तो कापारी खुशी रहनी चाहिए।... बाप तुम बच्चों को कितने राज़ समझाते हैं परन्तु फिर भी फाइनल रीति बाप, टीचर, सतगुरु समझना अभी हो नहीं सकता। घड़ी-घड़ी भूल जायेंगे।” सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

“बापदादा और जो निमित्त बने हुए हैं और जो दैवी परिवार है, उन सबसे आज्ञाकारी-वफादार

बनकर चलना है, यह है बाप के रूप में शिक्षा की सौगात।... टीचर के रूप में ज्ञान-ग्रहण और गुण-ग्राहक बनना। गुरु के रूप में एकमत, एकरस और एक की ही याद में रहना।”

अ.बापदादा 16.6.69

“शिवबाबा बच्चों को आप समान बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ, वैसे बच्चे भी बनें। ... शिवबाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी है। परन्तु वह जो है, जैसा है वैसा उनको जानना मुश्किल है। ... बाप जो पढ़ाते हैं वह अच्छी रीति पढ़ते हैं गोया टीचर का रिगार्ड रखते हैं।” सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

“जब तक तुम मेरी श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो कट कैसे उतरेगी।... बाप कहते हैं - देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ो, अपने को आत्मा समझकर मुझ बाप को याद करो।”

सा.बाबा 18.10.05 रिवा.

“जब एक है तो एकरस स्थिति स्वत: और सहज है। सर्व सम्बन्धों की डोर जोड़ी है ना। अगर एक भी सम्बन्ध कम होगा तो हलचल होगी।” अ.बापदादा 22.1.86

“सर्व सम्बन्ध किससे हैं ? एक से। तो एक से दो भी बनना है तो बाप और बच्चे, तीसरा कोई सम्बन्ध नहीं। ... ऐसी स्थिति में रहने से मायाजीत बनते हैं।... यह शुद्ध स्नेह सारे कल्प में एक ही बारमिलता है। ऐसे स्नेह को हम ही पाते हैं। जो कोई को प्राप्त नहीं हो सकता, वह हमको प्राप्त हुआ है। इसी नशे और निश्चय में रहना।” अ.बापदादा 24.1.70

“गायन है - धरत परिये पर धर्म न छोड़िये। कौनसा धर्म और कौनसा धरत ? एक बार वायदा कर लिया, बापदादा को हाथ दे दिया फिर उस धर्म को छोड़ना नहीं है। ... बाप बच्चों को फरमान नहीं करते, शिक्षा देते हैं। अगर फरमान करे और न मानें तो वह भी अच्छा नहीं।”

अ.बापदादा 6.7.69

“प्रवृत्ति के सम्बन्ध में वृत्ति चंचल होती है। परन्तु सर्व सम्बन्ध का अलौकिक अनुभव सर्व सम्बन्ध निभाने वाले बाप से प्राप्त करो तो जब प्राप्ति की पूर्ति हो जायेगी तो फिर चंचलता की निवृत्ति हो जायेगी।” अ.बापदादा 26.10.71

“बापदादा और जो निमित्त बने हुए हैं और जो दैवी परिवार है, उन सबसे आज्ञाकारी-वफादार
बनकर चलना है, यह है बाप के रूप में शिक्षा की सौगात। ... टीचर के रूप में ज्ञान-ग्रहण और गुण-ग्राहक बनना। गुरु के रूप में एकमत, एकरस और एक की ही याद में रहना।”

अ.बापदादा 16.6.69

“शिवबाबा बच्चों को आप समान बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ, वैसे बच्चे भी बनें। ... शिवबाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है और सत्गुरु भी है। परन्तु वह जो

है, जैसा है वैसा उनको जानना मुश्किल है। ... बाप जो पढ़ाते हैं वह अच्छी रीति पढ़ते हैं गोया टीचर का रिगार्ड रखते हैं।" सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

"बाप से सर्व सम्बन्धों के अनुभव को बढ़ाओ। सर्व सम्बन्धों की अनुभूति कम होने के कारण कहीं न कहीं अल्पकाल का सम्बन्ध जुट जाता है।... बाप से हर सम्बन्ध को साकार रूप में अनुभव कर सकते हो। इस अनुभूति को गहराई से समझो और स्वयं को इसमें मजबूत करो।" अ.बापदादा 16.12.93

"अगर संकल्प में भी एक बाप के सिवाए और कोई व्यक्ति या प्रकृति के साधन को सहारा स्वीकार किया तो ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी बहुत फास्ट गति से कार्य करती है।... सेकेण्ड में मन-बुद्धि का बाप से किनारा हो जाता है।" अ.बापदादा 24.9.92

"अभी तुम जानते हो कि हमने अपनी जीवन डोर एक परमात्मा के साथ बाँधी हुई है। ... तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए। यह है रुहानी डोर। रूह ही श्रीमत लेती है।"

सा.बाबा 3/5.02.06 रिवा.

श्रीमत और बाप का वर्सा

बाप का वर्सा है सर्व प्राप्तियां और प्राप्तियां ही सन्तुष्टता और प्रसन्नता का आधार हैं। इसलिए बाप की श्रीमत है - बाप और वर्से को याद करो तो तुम सदा सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करेंगे, यही ब्राह्मण जीवन की परम-प्राप्ति है।

"ब्राह्मण जीवन की विशेषता सन्तुष्टता है। ... सन्तुष्टता का आधार है बाप द्वारा सर्व प्राप्त हुई प्राप्तियां की सम्पन्नता अर्थात् भरपूर आत्मा। असन्तुष्टता का कारण अप्राप्ति होती है। ... बापदादा सदैव बच्चों को कहते हैं - बाप और वर्से को याद करो। बाप का वर्सा है सर्व प्राप्तियां।" अ.बापदादा 17.3.91

"श्रीमत पर नहीं चलते तो अपना ही खाता खराब करते हैं ... इनकी दिल से गिरा तो शिवबाबा की दिल से भी गिरा। ऐसे नहीं कि हम डायरेक्ट शिवबाबा से ले सकते हैं। ... हम शिवबाबा से इनके द्वारा वर्सा लेते हैं। बाप बिगर दादे का वर्सा मिल नहीं सकता।"

सा.बाबा 29.3.06 रिवा.

"बच्चों का काम है बाप से पूरा वर्सा लेना। बाप का मददगार बन सहयोग देना पड़ता है। बाप का भी सहयोग है, बच्चों का भी सहयोग है। कैसे सहयोग देवें, वह बाप को देखकर फॉलो करो। सभी को पुरुषोत्तम बनने के लिए मेरा मन्त्र देते जाओ।" सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - यू आर माई बिलवेड सन्स, हमारा आनन्द, प्रेम, सुख तुम्हारा है क्योंकि तुमने वह दुनिया छोड़कर हमारी आकर गोद ली है। ... जो बिलवेड सन बन जाते हैं, उनको जन्म-जन्मान्तर के लिए वर्सा मिल जाता है। ... प्रजा तो साथ नहीं रहती है, वे कहाँ-कहाँ कर्मबन्धन में चले जाते हैं।" सा.बाबा 11.10.06 रिवा.

श्रीमत और बाप का वारिस बनना एवं बाप को वारिस बनाना

शिवबाबा के हम बच्चे वारिस हैं परन्तु वारिस कौन बन सकता है, उसका राज़ भी बाबा ने बताया है। जो शिवबाबा को पहले अपना वारिस बनाता है, वही शिवबाबा का वारिस बनता है। श्री-श्री शिवबाबा की श्रीमत पर कैसे ब्रह्मा बाबा ने अपना सब कुछ बाबा को अर्पण कर दिया, शिवबाबा को वारिस बना लिया और शिवबाबा ने उनको अपना वारिस बना दिया। श्रीमत द्वारा पुरुषार्थ करके ब्रह्मा बाबा शिवबाबा को वारिस बनाने और वारिस बनने का उदाहरण हम सभी के सामने रखा।

"यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए, जो कोई को भी समझा सको। ... यह लक्ष्मी-नारायण शिवबाबा के पूरे वारिस हैं। आगे जन्म में शिवबाबा को सब कुछ दे दिया। बाबा ने कहा - मुझे वारिस बनाओ, फिर दूसरा कोई नहीं। कहते - बाबा यह सब कुछ आपका है। आप हमको सारे विश्व की बादशाही का वर्सा देते हो। ... कभी कोई से कुछ पूछा नहीं। गुप्त सब कुछ दे दिया। इसको कहा जाता है गुप्त दान महापुण्य।" सा.बाबा 21.9.04 रिवा.

"एक है स्नेह, दूसरा है सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सर्वशक्तियों का खजाना।... बापदादा ने सभी बच्चों को एक जैसी सर्वशक्तियां दी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया है।... सर्वशक्तियाँ बापदादा का वर्सा है, तो अपने वर्से पर अधिकार है? सदा है?... क्योंकि बाप ने वर्सा दिया और वर्से को आपने अपना बनाया, तो अपने पर अधिकार होता है।... अधिकारी जिस शक्ति को आर्डर करे और वह शक्ति हजूर हाजिर कहे।" अ.बापदादा 2.11.04

"कहते तो सब हैं - बाबा, हम आपके हो चुके हैं परन्तु यथार्थ रीति हमारे होते थोड़ेही हैं। बहुत हैं, जो वारिस बनने के राज़ को भी नहीं जानते हैं। ... कई बच्चे समझते हैं - हम तो वारिस हैं परन्तु बाबा समझते हैं कि यह वारिस है नहीं। वारिस बनने के लिए भगवान को अपना वारिस बनाना पड़े। यह राज़ समझना और समझाना भी मुश्किल है। ... सब मिल्कियत देनी पड़े, फिर बाप भी वारिस बनायेंगे।" सा.बाबा 5.1.05 रिवा.

"सदा बाप और वर्सा दोनों याद रहता है? बाप की याद स्वत: ही वर्से की भी याद दिलाती है और वर्सा याद है तो बाप की स्वत: याद है। बाप और वर्सा दोनों साथ-साथ हैं। ... सागर सदा सम्पन्न है तो आप सभी सदा सम्पन्न आत्मायें हो ना! खाली होंगे तो लेने के लिए कहाँ

हाथ फैलाना पड़ेगा।" अ.बापदादा 16.2.86

"अव्यक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए आदि से लेकर एक स्लोगन सुनाते आते हैं, अगर वह याद रहे तो कब भी कोई माया के विघ्नों में हार नहीं हो सकती है। "स्वर्ग का स्वराज्य हमारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है और संगम के समय बाप का खजाना जन्मसिद्ध अधिकार है।"... अधिकारी समझेंगे तो कब माया के अधीन नहीं होंगे।"

अ.बापदादा 17.5.69

"रुहानी बाप से एक तो तुमको ज्ञान का वर्सा मिल रहा है। ... बाप शान्ति का सागर है तो बच्चों को शान्ति भी धारण करनी चाहिए।... अशान्त होना भी अवगुण है। अवगुणों को निकालना है और हर एक से गुण ग्रहण करना है।" सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

"शिवबाबा के वर्से का पूरा अधिकारी अपने को समझते हो ? जो वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्हों का सर्व के ऊपर अधिकार होता है, वे कोई भी बात के अधीन नहीं होते हैं। अगर देह के, देह के सम्बन्धियों के, देह की कोई भी वस्तुओं के अधीन होते हैं तो ऐसे अधीन होने वाले अधिकारी नहीं हो सकते।" अ.बापदादा 24.1.70

"बापदादा विश्व की सर्व आत्माओं अर्थात् बच्चों को बाप का वर्सा प्राप्त कराने के अधिकारी जरूर बनायेंगे। चाहे कैसे भी हैं लेकिन हैं तो बच्चे ही। चाहे मुक्ति का चाहे जीवनमुक्ति का, दोनों ही वर्सा हैं। बाप वर्सा देने के लिए ही आये हैं। अन्जान हैं ना। उन्हों का भी दोष नहीं है। इसलिए आप सभी को भी रहम आता है ना।" अ.बापदादा 13.3.86

"मुक्ति-जीवनमुक्ति जन्मसिद्ध अधिकार है। इसको आप लोगों ने पाया है ?... मुक्ति-जीवन मुक्ति को यहाँ ही पा लिया है या मुक्तिधाम में मुक्ति और स्वर्ग में जीवनमुक्ति लेना है। ... जब बाप अभी मिला है तो वर्सा भी अभी मिला है।... प्रैक्टिकल जो वर्सा है, वह अभी प्राप्त होता है। जीवन-बन्ध के साथ ही जीवनमुक्त का अनुभव होता है। वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं, वहाँ तो सिर्फ उसकी प्रारब्ध में होंगे।" अ.बापदादा 11.7.72

"वर्सा सदैव अपनी प्राप्ति होती है। दान-पुण्य तो कब-कब की प्राप्ति होती है। वारिस हो तो वारिस निशानी है अतीन्द्रिय सुख के वर्से के अधिकारी।" अ.बापदादा 30.5.71

"बाप समान बनो। जैसे ब्रह्मा बाप ने पहला-पहला कदम क्या उठाया ? मैं और मेरापन का समर्पण समारोह मनाया माना किसी भी बात में मैं के बजाये सदा नेचुरल भाषा में भी बाप शब्द ही सुना। बाबा करा रहा है, बाबा कहता है। ... बलि चढ़ना अर्थात् महाबली बनना।"

अ.बापदादा 7.03.86

"सच्ची सती बनना है। सती बनना अर्थात् पूरा ही बलि चढ़ना। स्थिति नष्टोमोहा चाहिए।

नष्टोमोहा तब बनेंगी जब कि सच्ची स्नेही होगी।" अ.बापदादा 15.9.69

"बलिहार जाना कोई मासी का घर नहीं है। बड़े-बड़े आदमी तो बलिहार जा न सकें। वे बलिहार जाने का अर्थ भी नहीं समझते हैं। ... मिलकियत आदि से भी ममत्व निकल जाये।" सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

"खज़ाना सबको एक जैसा मिला है लेकिन खज़ाने को कार्य में लगाकर बाप खज़ाना सो अपना खज़ाना अनुभव करना, इसमें नम्बरवार हैं। ... जितना कार्य में लगायेंगे, उतना बढ़ता जायेगा।" अ.बापदादा 3.10.92

"108 पक्के सन्यासी विजय माला के दाने बनने वाले हैं ... घर में योग लगाते-लगाते कोई फिर अन्दर आ जाते हैं तो प्रजा से वारिस बन जाते हैं।... जो सन्यास करते हैं, वे वारिस बन जाते हैं। उनको रॉयल घराने में अवश्य ले जाना है। लेकिन अगर ज्ञान इतना नहीं उठाया तो पद नहीं पायेंगे।" सा.बाबा 11.10.06 रिवा.

श्रीमत और मरजीवा जीवन / श्रीमत और जीते जी मरना

ये हमारा मरजीवा जीवन है। मरजीवा का अर्थ भी बाबा ने बताया है और मरजीवा जीवन कैसे सफल हो, उसके लिए कैसे अभ्यास करें, उसके लिए भी श्रीमत दी है। जीते जी मरना क्या होता है, उसका जीवन महत्व क्या है, वह सब राज़ परमात्मा ने आकर बताये हैं और हमको जीते जी मरकर परमात्मा का बनने के लिए श्रीमत दी है। जीते जी मरने का विधि-विधान दुनिया में भी है, जिसको गोद का बच्चा (Adoptataion) बनाना कहा जाता है।

अभी परमात्मा ने हमको अपनी गोद का बच्चा बनाया है तो उनकी श्रीमत है कि तुमको पुराने जन्म और जीवन को भूल जाना है, अब नये जन्म और नये जीवन में जीना है, नये जीवन के कर्तव्य करके इस जीवन को सफल करना है।

जीते जी मरने के का विधि-विधान और महत्व जो बाबा ने बताया है, उसकी यादगार में हठयोग में भी शवासन का विधि-विधान है और हठयोगी भी उसका अभ्यास करते हैं। साकार बाबा ने भी इसका अभ्यास कराया है। साकार बाबा पहाड़ी पर बच्चों को ले जाते थे और शमशान या मुर्दाघाट बनाते थे अर्थात् देह से न्यारी स्थिति का अभ्यास कराते थे। बाबा ने जो करके दिखाया या करवाया, वह भी हमारे लिए श्रीमत है।

"अभी तुमको जीते जी मरना है। सारी दुनिया को भूल जाना है। अपने को आत्म समझ

शिवबाबा का बाबा का बन जाना है। ...बाप के बने हैं तो बाप के सिवाए दूसरा कोई याद न रहे।" सा.बाबा 26.8.05 रिवा.

"तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनकर बाप की याद में रहना है।... अपने को शरीर से अलग समझना चाहिए। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझो, देह को भूलते जाओ।... जीते जी मौत की अवस्था में रहना है।" सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

"बाबा भी ऐसे-ऐसे प्रैक्टिस करते हैं, फिर बतलाते हैं, तुम भी ऐसे-ऐसे करो। जितना तुम बाप की याद में रहेंगे तो स्वत: ही नींद फिट जायेगी। कमाई में आत्मा को बहुत मजा आयेगा। ... यह अविनाशी धन आधा कल्प के लिए इकट्ठा करना है। विचार सागर मन्थन करके रत्न निकालने हैं।" सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

"जीते जी मरना अर्थात् पुराने संस्कारों से मरना। पुराने संस्कार, पुराने संसार की आकर्षण से मरना - यह है जीते जी मरना। ... संकल्प और स्वप्न में भी पुराने संसार और पुराने संस्कार से मरना।" अ.बापदादा 3.11.92

"ऐसे ही शरीर से परे होने का भी अभ्यास चाहिए और बहुत समय का अभ्यास चाहिए। ... बार-बार यह प्रैक्टिस करो - अभी-अभी शरीर में हैं, अभी-अभी शरीर से न्यारे अशरीरी हैं।" अ.बापदादा 18.01.93 पार्टी 5

"मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, यह समझना गोया जीते जी मरना। ... अपनी आपही जांच करनी है कि हमारे ऊपर विकर्मों का जो बोझा है, वह कैसे उतरे।"

सा.बाबा 17.4.06 रिवा.

"जीते जी मरना अर्थात् पुराने संस्कारों से मरना। पुराने संस्कार, पुराने संसार की आकर्षण से मरना - यह है जीते जी मरना।... संकल्प और स्वप्न में भी पुराने संसार और पुराने संस्कार से मरना।" अ.बापदादा 3.11.92

"तुमको सफेद कपड़ों का बन्धन नहीं है परन्तु सफेद अच्छा है। ... मनुष्य मरते हैं तो भी सफेद चादर डालते हैं। तुम भी अभी मरजीवा बने हो तो सफेद ड्रेस पहनना अच्छा है।"

सा.बाबा 3.01.06 रिवा.

"तुम तन-मन-धन सब बेहद के बाप के अर्थ देते हो, जिसको बलिहार जाना कहा जाता है। ... बाप कहते हैं - पहले तुम बलिहार जाते हो, तब फिर 21 जन्मों के लिए बाप की बलिहारी मिलेगी अर्थात् बाप बलिहार जायेंगे।" सा.बाबा 29.7.06 रिवा.

श्रीमत और जीवन एवं मृत्यु

मृत्यु इस विश्व-नाटक में जीवन की सबसे अच्छी और सुखदायी घटना है परन्तु अज्ञानता जनित विकारों के वशीभूत विकर्मों के फलस्वरूप जीवन की सबसे दुखदायी एवं बुरी घटना हो गयी है। वास्तव मृत्यु ही नवजीवन का सन्देश देती है अर्थात् विश्व-नाटक के नये पार्ट के लिए पुराने वस्त्र को उतार कर नया वस्त्र धारण करने की एक प्रक्रिया है। मृत्यु के विषय में बाबा ने अनेकानेक प्रेरणास्पद बातें कहीं हैं और मृत्यु सुखदायी हो, उसके लिए श्रीमत भी दी है। लौकिक गीता में भी ऐसा ही वर्णन है, परन्तु उसमें विश्व-नाटक का स्पष्ट ज्ञान न होने के कारण आत्मा इस सत्य को अनुभव करने समर्थ नहीं होती, जो बाबा ने अभी दिया है और उसको प्रत्यक्ष में स्पष्ट भी किया है कि कैसे आत्मा शरीर से अलग है, कैसे प्रवेश करती और कैसे अलग हो जाती है।

बाबा ने कहा है - जैसे सर्प एक खाल (केचुली) को छोड़कर नई खाल धारण करता है, मक्खन से बाल सहज ही अलग हो जाता है, सहज ही एक वस्त्र उतार कर नया वस्त्र धारण कर लेते हैं, ऐसे ही तुमको देह का त्याग करना है। यह अभ्यास अभी से ही करेंगे, तब ही अन्त में मृत्यु के समय ऐसे बैठे-बैठे देह का त्याग कर सकेंगे। इसके लिए तुमको देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से नष्टोमोहा बनना है।

बाबा ने ये भी कहा है कि मृत्यु से भयभीत नहीं होना है बल्कि इसे विश्व-नाटक की एक अभिन्न घटना और अति आवश्यक घटना समझ सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है, जो उसको बजाना ही है। इसीलिए बाबा देह से न्यारे होने का अभी से ही अभ्यास करते हैं।

बाबा ने श्रीमत दी है - मृत्यु के समय तुमको एक बाप की याद रहे, सृष्टि-चक्र का ज्ञान बुद्धि में रहे और अपना खाता ऐसा पाक-साफ रहे, जो अन्त समय कोई भी बात दिल को खाये नहीं। हमारी बुद्धि कहाँ भी अटके या लटके नहीं।

"मुख्य है निर्भयता का गुण। निर्भयता कैसे होगी, उसके लिए मुख्य साधन क्या है ? निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय शरीर के कारण ही होता है।" अ.बापदादा 26.5.69

"हम आत्मायें ऊपर से कैसे आती हैं, फिर कब जायेंगी ? ... यहाँ तो बाप ने कहा है - तुम इस शरीर को भूलते जाओ। बाप तुमको जीते जी मरना सिखलाते हैं, जो और कोई सिखला न सके। ... घर वापस कैसे जाना है - यह ज्ञान अभी ही मिलता है। ... यह पुरुषोत्तम संगमयुग जब आता है तब ही वापस जाना होता है।" सा.बाबा 30.8.04 रिवा.

"बाबा की याद में इस पुरानी दुनिया का सब कुछ भुलाना है। याद की टेव पड़ जायेगी तो जैसे याद में बैठे2 अन्कान्शस हो जायेंगे, अशरीरी हो जायेंगे, शरीर का भान नहीं रहेगा। .. पिछाड़ी में शरीर खुशी से हर्षित मुख होकर छोड़ना चाहिए। बस, हम कहाँ जा रहे हैं।"

सा.बाबा 9.7.71 रिवा.

"मरना भी जरूर है। सबकी अभी वानप्रस्थ अवस्था है। तुमको कोई काल नहीं खायेगा। तुम खुशी से जाते हो। ... ड्रामा की ये बड़ी वण्डरफुल बात है, इसमें मूँझने की कोई बात ही नहीं है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी हू-ब-हू रिपीट होती है। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता है।"

सा.बाबा 13.10.04 रिवा.

"पुराना घर छोड़ नया घर लिया, इसमें मरने की क्या बात हुई। रोने पीटने की कोई बात ही नहीं। अफसोस करने की दरकार ही नहीं। खुशी से पुराना चोला छोड़ नया लेते हैं तो उसको कहा जाता है - काया कल्पतरु।" सा.बाबा 14.8.71 रिवा.

"इतनी छोटी सी आत्मा शरीर से निकल जाती है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता। बस कहेंगे मर गया, जाकर दूसरा शरीर लिया। एक शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाती है। फिर उसमें रोने की क्या दरकार है। जब ड्रामा को जाने तब ऐसे कहे कि इसमें रोने पीटने की दरकार ही नहीं। अब तुमको ज्ञान है हम यह पुराना शरीर छोड़ अपने निर्वाणधाम में जायेंगे।"

सा.बाबा 24.7.72 रिवा.

"पिछाड़ी में खुशी से हर्षितमुख स्थिति में शरीर छोड़ना चाहिए। बस, हम जा रहे हैं। ऐसी अवस्था जब होगी, तब विजय माला में पिरोने लायक बनेंगे।" सा.बाबा 26.7.06 रिवा.

श्रीमत और मृत्यु-विजय

श्रीमत और मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय और उनसे मुक्ति

मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय सबसे बड़ा दुख है, जो प्राणीमात्र में व्याप्त है और देहाभिमान जनित अज्ञानता है। इसके लिए रामायण में तुलसीदास ने भी कहा है - जन्मत-मरत दुसह दुख होई। बाबा ने मृत्यु का राज़ समझाकर मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त होने के लिए श्रीमत भी दी है, जिसका यथार्थ रीति पालन करके हम इस भय और दुख से सहज ही मुक्त हो सकते हैं। इस पर कैसे विजयी बनें, उसके लिए बाबा ने बताया है - आत्मा तो अजर-अमर-अविनाशी है, देह विनाशी है। देह तो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए वस्त्र

मात्र है, जो भिन्न-भिन्न पार्ट बजाने के लिए अति आवश्यक क्रिया है और हर आत्मा को बदलना ही पड़ता है। विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर जब हम अपने मूल स्वरूप में स्थित होंगे तो न मृत्यु का भय होगा और न मृत्यु का दुख अनुभव होगा। सहज ही आत्मा इस देह को त्याग कर दूसरी देह को धारण कर कर पार्ट बजायेगी। लौकिक गीता में भी मृत्यु की ऐसी ही परिभाषा है। बाबा ने बताया है - सतयुग में देवतायें भी देह का त्याग करते थे परन्तु उनको मृत्यु का दुख या भय अनुभव नहीं होता था, इसलिए देवताओं को अमर कहा जाता है। इसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है - अपने को देह से न्यारी आत्मा समझो और इसका गहन अभ्यास करो।

"सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज तुमको अच्छी तरह है। ... पहले अपने घर जाना है तो खुशी से जाना है। जैसे सतयुग में देवतायें खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं, वैसे इस पुराने शरीर को भी खुशी से छोड़ना है। इससे तंग नहीं होना है। यह बहुत वेल्युबुल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से लॉटरी मिलती है।"

सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

"व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो वह निभा नहीं सकते। तो आप सब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों परे और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करो, तब ही विजयी बनेंगे।"

अ.बापदादा 5.12.74

भक्त कवि तुलसीदास ने भी कहा है - जन्मत-मरत दुसह दुख होई। अर्थात् आत्मा को जन्मते और मरते समय असहनीय दुख होता है, उससे छूटने का रास्ता बाप ही आकर बताते हैं, जिसके फलस्वरूप सतयुग-त्रेता में आत्मा को किसी भी प्रकार का दुख नहीं होता है। इन दोनों प्रकार के दुखों का मूल कारण देहाभिमान और उससे जनित मोह और मोह के कारण अनेक प्रकार के विकर्म हैं।

मृत्यु-दुख आत्मा को दो प्रकार से सताता है। एक तो जब वह स्वयं का देह त्याग करती है तो देह को छोड़ने, मित्र-सम्बन्धियों से बिछुड़ने के कारण मृत्यु-दुख को अनुभव करती है और दूसरा जब कोई प्रिय सम्बन्धी देह का त्याग करता है तो उसके विछोह का दुख आत्मा को सताता है। इन दोनों प्रकार के दुखों से कैसे मुक्त हो, उसके लिए बाबा विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है और उससे मुक्त होने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार से श्रीमत दी है, जो

हमारी बुद्धि में रहे, हमारे प्रैक्टिकल जीवन में रहे तो हम सहज ही इस दुख से मुक्त हो सकते हैं।

"तुम फिर से देवता बनते हो तो वह नशा रहना चाहिए। ... ज्ञान अमृत हज़म ही नहीं होता है। जिनको नशा चढ़ा हुआ होगा, वे किसका कल्याण करने के सिवाए और कोई बात करना भी अच्छा नहीं समझेंगे।" सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

"सतयुग को कहा जाता है अमरलोक और कलियुग को कहा जाता है मृत्युलोक। दुनिया में यह कोई नहीं जानते कि अमरलोक था, वह फिर मृत्युलोक कैसे बना। अमरलोक अर्थात् अकाले मृत्यु होती नहीं।" सा.बाबा 17.3.05 रिवा.

"बाबा की याद में इस पुरानी दुनिया का सब कुछ भुलाना है। याद की टेव पड़ जायेगी तो जैसे याद में बैठे2 अन्कान्शस हो जायेंगे, अशरीरी हो जायेंगे, शरीर का भान नहीं रहेगा। .. पिछाड़ी में शरीर खुशी से हर्षित मुख होकर छोड़ना चाहिए। बस, हम कहाँ जा रहे हैं।"

सा.बाबा 9.7.71 रिवा.

श्रीमत और देह-त्याग / श्रीमत और अन्त मति सो गति

अन्त में हम कैसे देह का त्याग करें, अन्त मति सो गति का जीवन क्या महत्व है, उस सबका ज्ञान बाबा ने दिया है। अन्त में जैसी स्थिति होती है, उसके आधार पर ही भविष्य की गति होती है। हमारी अन्त में मति अच्छी हो और भविष्य गति भी अच्छी हो, उसके लिए भी बाबा ने पहले से ही श्रीमत दी है और उसके लिए सारा विधि-विधान बताया है।

"अब तक भी स्मृति-स्वरूप नहीं बने हो ? ...अन्त में विजयी बनेंगे व अन्त में निर्विघ्न और विघ्न-विनाशक बनेंगे - यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है।" अ.बापदादा 6.1.75

"इस फाइनल पेपर का पहले ही एनाउन्स कर रहे हैं। इसमें पास होने के लिए हर समय निर्बन्धन। सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन। ... इस पेपर में पास वे होंगे, जिनकी अव्यक्त स्थिति होगी। शरीर के भान से भी परे हुए तो बाकी क्या बड़ी बात है।"

अ.बापदादा 20.12.69

"लास्ट का पेपर सेकेण्ड का आना है और अचानक आना है। ... यह अभ्यास बहुत-बहुत-बहुत आवश्यक है। ... यह भी पता नहीं पड़े कि मैं सोल-कान्सेस, पॉवरफुल स्थिति में नेचुरल हो। ... हूँ ही आत्मा।" अ.बापदादा 15.2.2000

"पढ़ते-पढ़ते आखरीन तन्त बुद्धि में आ जाता है। यह भी ऐसे है। अन्त में फिर बाप कहते हैं

मन्मनाभव, तो देह का अभिमान टूट जायेगा। मन्मनाभव की आदत पड़ी होगी तो पिछाड़ी में भी बाप और वर्सा याद रहेगा।" सा.बाबा 8.2.05 रिवा.

"जो पवित्र नहीं बनेंगे, वे सजायें खायेंगे। इसमें मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र रहना है। ... पिछाड़ी में मन्सा में कोई व्यर्थ ख्याल न आये, एक बाप के सिवाए कोई भी याद न आये।" सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

"याद ऐसी पक्की होनी चाहिए जो पिछाड़ी में एक बाप के और कोई भी याद न पड़े। ... तुम बच्चों को जो कुछ चाहिए वह यज्ञ से लेना है। ओर कोई से लेकर पहनेंगे तो वह याद आता रहेगा। इसमें बुद्धि की लाइन बड़ी क्लीयर चाहिए।" सा.बाबा 1.12.05 रिवा.

"मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति में रहने वाले कभी घबरा नहीं सकते।... एवर-रेडी, सम्पूर्णता का बहुत समय का अभ्याय चाहिए। अगर उस समय कोशिश करेंगे तो मुश्किल है, हो नहीं सकेंगे, टिक नहीं सकेंगे।" अ.बापदादा 23.12.93 पार्टी 3

"अन्त मति सो गति ... अन्त अच्छी तो भविष्य आदि भी अच्छा होता है।... तो चेक करो कि हर सेकेण्ड, हर संकल्प विशेष है? ... देही-अभिमानी अवस्था नेचुरल और नेचर हो जाये।" अ.बापदादा 16.12.93 पार्टी

"हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझते हुए एवर-रेडी रहो। ... विनाश की अन्तिम घड़ी को नहीं देखो लेकिन अपनी अन्तिम घड़ी का कोई भरोसा नहीं है, इसलिए एवर-रेडी। ... सदा निर्मोही और निर्विकल्प, निर-व्यर्थ। व्यर्थ भी नहीं, इसको कहा जाता है एवर-रेडी।" अ.बापदादा 2.12.93 पार्टी 3

"अन्त में हर एक को अपने कर्मों का साक्षात्कार तो होता है, फिर क्या कर सकेंगे। ज़ार-ज़ार रोना पड़ेगा। इसलिए बाबा समझाते रहते हैं कि ऐसा कोई भी कर्म नहीं करो, जो अन्त में सज़ा के भागी बनो, पश्चाताप करना पड़े।" सा.बाबा 7.4.06 रिवा.

"कोई बेकायदे काम करते हैं ... चीज तो तुमको कभी भी मिल सकती है ... अन्त समय जो पाप किये होंगे, वह सब किचड़पट्टी सामने आयेगी। इसलिए बाबा हमेशा समझाते हैं - अन्दर में कोई दुविधा नहीं रहनी चाहिए। दिल साफ होगी तो अन्त घड़ी कुछ भी सामने नहीं आयेगा। ... तुम्हारा अन्जाम है - बाबा जो खिलायेंगे ... फिर भी उस पर नहीं चलते हैं तो दुर्गति को पा लेते हैं।" सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

"न वो हमसे जुदा होंगे ... यह प्रतिज्ञा ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण ही कर सकते क्योंकि उनकी प्रीति एक बाप से जुटी है। ... विनाश काल में जिनकी प्रीति एक बाप के साथ होगी, वे ही विजय पायेंगे अर्थात् सतयुग के मालिक बनेंगे, ऊंच पद पायेंगे।"

सा.बाबा 4.5.06 रिवा.

"अन्त मते सो गते - यह क्यों गाया हुआ है ? क्योंकि बाप चक्र के अन्त में ही आकर श्रेष्ठ मत देता है। जो अन्त समय पर श्रेष्ठ मत लेते हैं वे अनेक जन्म सद्गति को प्राप्त करते हैं। यह है बेहद की अन्त मते सो गते।" अ.बापदादा 9.12.89 पार्टी

"जैसे यह पुराना वस्त्र अपनी इच्छा से बदली करते हो, मजबूरी से नहीं। ऐसे ही यह शरीर रूपी वस्त्र भी अपनी इच्छा से बदली करें। ... आतंकवादी भी प्रेम और शान्ति की शक्ति के आगे परिवर्तन हो जायेगा।" अ.बापदादा 19.11.89 पार्टी 2

"तंग होकर यह तो नहीं सोचते कि अभी तो चले जायें। ... तंग होकर नहीं जाना। एडवान्स पार्टी में सेवा का पार्ट है और ड्रामा अनुसार गये तो परेशान होकर नहीं जायेंगे, शान से जायेंगे।... सदा यही वरदान स्मृति में रखना कि 9हम सदा अपने श्रेष्ठ शान में रहने वाले हैं, परेशान होने वाले नहीं।" औरों की भी परेशानी मिटाने वाले हैं।"

अ.बापदादा 15.11.89 दिल्ली ग्रुप

श्रीमत और अचानक के पेपर / श्रीमत और एवररेडी स्थिति

बाबा ने कहा है - बच्चे ये विश्व-नाटक है और इसमें सब अचानक होता भी है और होना भी है। इस अचानक के पेपर में हम सदा पास हों, उसके लिए बाबा ने कहा है - बच्चे इस जीवन के हर क्षण को अन्तिम घड़ी समझो और उसको पास करते चलो, तब जीवन के अन्तिम घड़ी के पेपर में सहज पास हो सकेंगे।

बाबा ने श्रीमत दी है - न सिर्फ घर या स्वर्ग में जाने के लिए एवर-रेडी परन्तु बाबा की हर श्रीमत को पालन करने के लिए एवर-रेडी बनो। न कोई वस्तु-व्यक्ति खींचे और न ही समय पर सेवा का बन्धन भी खींचे। कर्मभोग भी नहीं खींचे, तो कर्म-सम्बन्ध भी नहीं खीचे। कर्म-बन्धन को भी साक्षी होकर चुक्ता करो।

"बच्चे देखते हो विनाश सामने खड़ा है। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि कब होगा, क्या होगा। आयेगा तो अचानक। उनके पहले अपने बाप से वर्सा ले लो। ऐसे नहीं बतायेंगे कि फलानी तारीख को होगा। अचानक भंभोर को आग लगनी है।... योग में रह विकर्म विनाश करने में टाइम लगता है।" सा.बाबा 8.3.72 रिवा.

"अन्त मति सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जायें, यह है पास विद् ऑनर की निशानी लेकिन वह तब होगी जब अपना चोला टाइट नहीं होगा। ... प्रैक्टिकल में

देखा ना एक सेकण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया।"

अ.बापदादा 20.12.69

"एवर-रेडी बनना है। ... जो सभी के संकल्प में है, वह कभी नहीं होना है। होगा फिर भी अनायास ही। यह ब्राह्मण कुल की रीति-रस्म चालू हो चुकी है।" अ.बापदादा 6.12.69

"ऐसे रुहानी ड्रिल के अभ्यासी हो, जो एक सेकेण्ड में बुद्धि को जहाँ चाहें, जब चाहें, उसी स्टेज में उसी परसेन्टेज में स्थित कर सकते हो ? ऐसे एवर-रेडी रुहानी मिलिट्री बने हो ? एक सेकेण्ड में इस देह के आकर्षण से परे हो सकते हो ? हार और जीत का आधार एक सेकण्ड पर होता है।" अ.बापदादा 31.11.71

"जैसे बाप एवर-रेडी अर्थात् सर्वशक्तियों से सम्पन्न हैं, तो क्या वैसे फालो-फादर हो ?... एक तो विजय माला में पिरोने वालों का है- एवर-रेडी ग्रुप।... "सदा विजय" माला की यही पहली निशानी है। ऐसे एवर-रेडी बच्चे इसी स्मृति से सदा श्रृंगारे हुए होंगे, दूसरी निशानी सदा साक्षी और सदा साथीपन के कवचधारी होंगे।" अ. बापदादा 30.5.74

"जैसे दुनियावी लोग कहते हैं, कि जो होगा सो देखा जायेगा, ऐसे ही आप इन्तज़ाम करने के निमित्त बनी हुई आत्माएं भी, यह तो नहीं सोचती हो कि जो होगा सो देखा जायेगा ? इसको ही अलबेलापन कहा जाता है।" अ.बापदादा 3.2.74

"एवररेडी अर्थात् अभी-अभी किसी भी परिस्थिति व वातावरण में आर्डर मिले व श्रीमत मिले कि एक सेकेण्ड में सर्व-कर्मेन्द्रियों की अधीनता से न्यारे हो कर्मेन्द्रियजीत बन एक समर्थ संकल्प में स्थित हो जाओ, तो श्रीमत मिलते ही मिलना और स्थित होना साथ-साथ हो जाये। बाप ने बोला और बच्चों की स्थिति ऐसी ही उस घड़ी बन जाये, उसको कहते हैं एवररेड़ी।"

अ.बापदादा 1.9.75

"एवर रेडी अर्थात् अपना निजी-स्वरूप व वरदानी-स्वरूप सदा स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता का और विस्मृति का नाम-निशान भी न रहे। इसको कहा जाता है - वरदान का कोर्स करना।" अ.बापदादा 18.1.75

"अगर कुछ होना भी होगा तो बताकर नहीं होगा। साकार बाप अव्यक्त हुए तो बताकर गये क्या ? जो अचानक होता है, वह अलौकिक और प्यारा होता है। इसलिए बापदादा कहते हैं सदा एवर-रेडी रहो। जो होगा, वह अच्छे ते अच्छा होगा।" अ.बापदादा 6.12.87

"प्रकृति एवर-रेडी है, सिर्फ आर्डर के लिए रुकी हुई है। ड्रामा का समय ही आर्डर करेगा ना। ... विनाश के बाद स्थापना होनी ही है। तो स्थापना के निमित्त बने हुए अभी समय के प्रमाण एवर-रेडी होने चाहिए। बापदादा यही देखना चाहते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप अर्जुन बना ना,

एग्जॉम्पुल बना। ऐसे ब्रह्मा बाप को फॉलो करने वाले कौन बनते हैं। स्वयं को भी देखो और समय को भी देखो।" अ.बापदादा 21.10.05

"प्रकृति, माया सब लास्ट दाँव लगाने के लिए अपने तरफ कितना भी खींचे लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। इसको कहा जाता है देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। ऐसा अभ्यास हो। ... लास्ट ट्रायल सब करेंगे। प्रकृति में भी जितनी शक्ति होगी, माया में भी जितनी शक्ति होगी ट्रायल करेगी। उनकी भी लास्ट ट्रायल और आपकी लास्ट कर्मातीत, कर्म-बन्धनमुक्त स्थिति होगी।" अ.बापदादा 16.3.86

"सेकण्ड में मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा लेना सभी का अधिकार है, तो समाप्ति के समय भी नम्बर मिलना थोड़े समय की बात है। लेकिन जरा भी हलचल न हो। बस बिन्दी कहा और बिन्दी में टिक जायें, बिन्दी हिले नहीं।" अ.बापदादा 16.3.86

"सभी ने वायदा किया है - साथ रहेंगे, साथ चलेंगे... जो साथ चलने के लिए तैयार हैं, वे हाथ उठाओ।... कौन साथ चलेगा ? समान ही साथ चलेगा ना।... एवर-रेडी।... कम्पलेन नहीं करेंगे, कम्पलीट।... कोई मेरा-मेरा नहीं, मैं नहीं, मेरा भी नहीं। सब खत्म।"

अ.बापदादा 15.11.05

"जितने वायदे करते हो, उतना फायदा नहीं उठाते। ... बापदादा यही चाहते हैं कि सब बच्चे समय से पहले एवर-रेडी बन जाओ, समय आपका मास्टर नहीं बनें।... समय के पहले सम्पन्न बन विश्व की स्टेज पर बाप के साथ-साथ आप बच्चे भी प्रत्यक्ष हो।"

अ.बापदादा 30.11.05

"जब देह भी अपनी नहीं तो और क्या अपना है। तन-मन-धन सब बाप को दिया ना! तो एवर-रेडी हो गये। दृढ़ संकल्प कर लिया कि मैं बाप का और बाप मेरा।"

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 5

"अन्त समय बाप भी रहम करना चाहे तो भी नहीं कर सकते। ... अटेन्शन रखना है लेकिन नेचुरल अटेन्शन आदत बन जाये। अटेन्शन का टेन्शन नहीं।... तो सदैव अलर्ट माना सदा एवर-रेडी। ... विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का इन्तजार नहीं करो।"

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 1

"एवर-रेडी, नष्टोमोहा, स्मृति-स्वरूप - इसमें पास हो ? एवर-रेडी का अर्थ ही है - नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप। ... देखना अचानक ही पेपर होगा। सदा न्यारा और प्यारा बनना, यही बाप समान बनना है। ... निमित्त समझने से पेपर में पास हो जायेंगे।"

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 5

"समय से पहले तैयार होने वाले हो ना। समय का इन्तजार नहीं करना है लेकिन समय आप श्रेष्ठ आत्माओं का आवाह्न कर रहा है।" अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 6

"अगर समय मिलता है तो संगमयुग की मौज मनाओ लेकिन एवर-रेडी रहो। क्योंकि फाइनल विनाश की डेट कभी भी पहले से मालूम नहीं पड़ेगी, अचानक होना है।... सदा याद रखो कि हम और बाप सदा साथ हैं। तो जैसे बाप सम्पन्न है तो साथ रहने वाले भी सम्पन्न हो जायेंगे।" अ.बापदादा 09.01.93 पार्टी 5

"अन्त समय बाप भी रहम करना चाहे तो भी नहीं कर सकते।... अटेन्शन रखना है लेकिन नेचुरल अटेन्शन आदत बन जाये। अटेन्शन का टेन्शन नहीं।... तो सदैव अलर्ट माना सदा एवर-रेडी। ... विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का इन्तजार नहीं करो।"

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 1

"पास विद् ऑनर अर्थात् धर्मराज भी उसको ऑनर देगा। ... सब बातों में कम्पलीट बनना अर्थात् पास विद् ऑनर बनना। ... अगर ब्राह्मणों की कमियों का विनाश नहीं हुआ तो विश्व का विनाश अर्थात् परिवर्तन कैसे होगा। विश्व-परिवर्तन के आधारमूर्त आप ब्राह्मण हो।... एवर-रेडी माना सदा रेडी रहने वाले।" अ.बापदादा 19.11.89 पार्टी 1

"कई बच्चे बार-बार चाहे निमित्त बच्चों से या रूह-रिहान में बापदादा से एक क्वेश्चन पूछते हैं - बाबा विनाश की डेट बता दो। ... बाबा डेट बता दे तो डेट कान्शस बनेंगे या सोल कान्शस बनेंगे ? ... इसलिए बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि डेट कान्शस नहीं बनो लेकिन हर समय अन्तिम घड़ी है, इतना एवर-रेडी रहो।" अ.बापदादा 31.12.96

"एवर-रेडी का अर्थ क्या है ? ... सृष्टि के विनाश की बात अलग है परन्तु अपने को एवर-रेडी रखना, यह अलग बात है। इसलिए इसको उससे नहीं मिलाना। ... एवर-रेडी रहो, फिर चाहे 20 वर्ष जिन्दा रहो - कोई हर्जा नहीं।" अ.बापदादा 6.1.90

"ऐसी प्रैक्टिस करो - एक सेकेण्ड में आत्मा शरीर से परे होने के लिए एवर-रेडी बन जाये। ... तो चेक करो और अभ्यास करो कि सेकण्ड में अशरीरी बन सकते हैं ? ... सोचा और गया। जरा भी संकल्प नहीं चले।" अ.बापदादा 31.3.95

श्रीमत और वैजन्ती माला

माला को भक्ति मार्ग में सुमिरन करते हैं परन्तु वह माला क्या है, उसका अर्थ नहीं जानते, जो बाबा ने अभी बताया है। वैजन्ति माला उन विजयी आत्माओं की माला है, जिन

आत्माओं ने परमात्मा के दिये ज्ञान को धारण कर, उनकी श्रीमत पर चलकर अपनी कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त की है, अन्य आत्माओं को विजयी बनाने में सहयोगी बने हैं, जिसके फलस्वरूप वे वैजन्ती माला का दाना बने हैं। बाप हमको वैजन्ति माला का ज्ञान देकर, उसका दाना बनने के लिए श्रीमत देते हैं, जिससे हम भी उस माला का दाना बनने का पुरुषार्थ कर सकें।

"कल्प पहले भी ऐसे निकले थे, जो विजय माला के दाने बने थे। तुम जो ब्राह्मण कुल के हो, उनकी ही विजय माला बनती है, जिन्होंने बहुत गुप्त मेहनत की है।"

सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

"बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम ही सबसे जास्ती पतित बने हो। पहले-पहले तुम ही आये हो पार्ट बजाने, तुमको ही पहले जाना पड़ेगा। चक्र है ना। पहले-पहले तुम ही माला में पिरोये जायेंगे। ... रुद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है।" सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"रुद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है, प्रजापिता ब्रह्मा की माला नहीं। ... यूँ तो प्रजापिता ब्रह्मा का भी सिजरा है। जब पास हो जाते हैं तो कहेंगे ब्रह्मा की भी माला है!"

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

"पहले स्व पर विजयी, फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। ये तीनों विजय आपको विजय माला का मणका बनायेंगी।" अ.बापदादा 1.03.86

"रत्नों में सभी से फर्स्ट नम्बर है नूरे रत्न। वह कौन बनते हैं? जिनके नयनों में सिवाए बाप के और कुछ भी देखते हुए भी देखने में नहीं आता है। ... जो गले द्वारा सर्विस करते हैं, वे गले की माला का रत्न बनते हैं। ... जो किस न किस रूप में मददगार बनते हैं, वे बाहों के कंगन के रत्न बनते हैं।" अ.बापदादा 6.5.71

"बापदादा सर्व ब्राह्मण कुल बच्चों में से उन विशेष आत्माओं को चुन रहे थे जो सदा सन्तुष्टता द्वारा स्वयं भी सदा सन्तुष्ट रहे हैं और औरों को भी सन्तुष्टता की अनुभूति अपनी दृष्टि, वृति, और कृति द्वारा सदा कराते आये हैं। तो आज ऐसी सन्तुष्टमणियों की माला बना रहे थे।"

अ.बापदादा 5.10.87

"बापदादा बार-बार सन्तुष्टमणियों की माला देख हर्षित हो रहे थे क्योंकि ऐसी सन्तुष्टमणियाँ ही बापदादा के गले का हार बनती है, राज्य अधिकारी बनती है और भक्तों के सिमरण की माला बनती हैं।" अ.बापदादा 5.10.87

"पूर्णमासी की रात की रास का गायन है। गोप-गोपियों की तीन विशेषतायें क्या है ... रात को दिन बनाया .. दूसरी जागती ज्योति थे .. तीसरा हाथ में हाथ और ताल में ताल मिला हुआ था

अर्थात् संस्कार मिले हुए थे। मरना पड़ेगा, सुनना पड़ेगा, झुकना पड़ेगा - ऐसे कहने से भक्त बनते हो। ... ऐसे रास मिलाने वाले ही माला के मणके बनते हैं।"

अ.बापदादा 30.9.75

"बाबा हमको अपनी माला का मणका बना रहे हैं। तुम रुद्र माला का मणका बनने वाले हो। ... जब दौड़ी में विन करेंगे तो तुम विष्णु के गले का हार बनेंगे।"

सा.बाबा 24.10.05 रिवा.

"एक है 108 की माला, दूसरी है फिर उससे बड़ी 16108 की माला। वह है चन्द्रवंशी घराने की रॉयल प्रिन्स-प्रिन्सेज की माला। जो इतना ज्ञान नहीं उठा सकते, पूरा प्योरीफाय नहीं बनते हैं तो सजायें खाकर चन्द्रवंशी घराने की माला में चले जायेंगे। ... यह राज़ भी तुम अभी सुनते हो, जानते हो। वहाँ यह ज्ञान की बातें नहीं रहती हैं। यह ज्ञान सिर्फ अब संगमयुग पर मिलता है। ... जो पूरा कर्मेनद्रियों को नहीं जीतेंगे, वे चन्द्रवंशी घराने की माला में चले जायेंगे। जो जीतेंगे, वे सूर्यवंशी घराने में आयेंगे।" सा.बाबा 11.10.06 रिवा.

श्रीमत और आशुक-माशुक

आत्मा परमात्मा को याद करती है, उस याद की तुलना बाबा ने आशुक-माशुक की याद से की है। हमारी याद सदा ऐसी रहे, जैसे आशुक-माशुक एक-दूसरे को याद करते हैं। उसके लिए भी बाबा श्रीमत दी है।

"सारे कल्प में इस समय ही रुहानी माशुक और आशिकों का मिलन होता है। ... सदैव सोचो - हम किसके आशिक हैं! जो सदा सम्पन्न है, ऐसे माशुक के हम आशिक हैं।"

अ.बापदादा 13.3.87

"सच्चे आशिक की विशेषतायें जानते हो ? एक माशुक द्वारा सर्व सम्बन्धों की समय प्रमाण अनुभूति करना। ... दूसरा सच्चे आशिक हर परिस्थिति में, हम कर्म में सदा प्राप्ति की खुशी में होते, ... जिस आशिक को अनुभूति है, प्राप्ति है, वह सदा तृप्त रहेंगे। ... तृप्ति आशिक की विशेष विशेषता है। ... सन्तुष्टता तृप्ति की निशानी है। ... सच्चे आशिक हद की चाहना से परे, सदा सम्पन्न और समान होंगे।" अ.बापदादा 13.3.87

"सदा हाथ और साथ ही सच्चे आशिक-माशुक की निशानी है। ... सदा बुद्धि का साथ हो और बाप के हर कार्य में सहयोग का हाथ हो।" अ.बापदादा 13.3.87

"यह माशुक और आशिकों की महफिल है। बगीचा भी है तो सागर का किनारा भी है। यह

ऐसी वण्डरफुल प्राइवेट बीच (Beach) है जो हजारों के बीच (मध्य) भी प्राइवेट है। हर एक अनुभव करते हैं कि मेरे साथ माशुक का पर्सनल प्यार है। ... अधिकार में नम्बर नहीं हैं लेकिन अधिकार प्राप्त करने में नम्बर हो जाते हैं।" अ.बापदादा 13.3.87

"आत्मा अपने माशुक को आधा कल्प से याद करती आई है। अब वह माशूक आया हुआ है। कहते हैं - तुम काम चिता पर बैठ काले बन गये हो, अभी हम सुन्दर बनाने आये हैं। उसके लिए है यह योग-अग्नि। ज्ञान को चिता नहीं कहेंगे।" सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

"आशिक-माशुक एक दो को याद करते हैं तो याद करते ही वह सामने खड़ा हो जाता है। ... ऐसे सदा बाप सामने रहे।" सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"यहाँ तो घमसान की बात नहीं, न गीत गाने, न तालियां बजाने की बात है। यहाँ तो तुम बच्चों को सिर्फ याद करना है। ... तुम कभी हे राम वा हाय भगवान भी नहीं कह सकते ... तुमको और कुछ भी नहीं करना है, सिर्फ आशिक-माशुक के समान बाप को याद करना है।"

सा.बाबा 11.8.06 रिवा.

श्रीमत और शमा-परवाने

बाबा ने आत्मा और परमात्मा की शमा और परवाने से तुलना की है, जिसका गायन भक्ति मार्ग में भी होता है। परमात्मा रुहानी शमा है, आत्मायें परवाने बन उस पर फिदा होकर जल मरते हैं अर्थात् उसके बन जाते हैं। तो सच्चा परवाना किसको कहा जाता है और वह गुण हमारे में कहाँ तक आये हैं और कैसे हम सच्चे परवाने बनें, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

"आज रुहानी शमा रुहानी परवानों को देख रही है। ... जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है, लाइट-माइट स्वरूप है, वैसे स्वयं भी शमा के समान लाइट-माइट स्वरूप बने हो ? ... फर्स्ट नम्बर हैं लव-लीन परवाने अर्थात् बाप के स्वरूप और शक्तियां धारण करने वाले ... समा जाने अर्थात् मर मिटने वाले।" अ.बापदादा 1.2.76

"भले चले गये परन्तु ऐसे मत समझना कि वे स्वर्ग में नहीं आयेंगे। परवाने बनें, आशिक हुए, फिर माया ने हरा दिया तो भी स्वर्ग में आयेंगे परन्तु पद कम पायेंगे।"

सा.बाबा 30.4.04 रिवा.

"यह रुहानी शमा और रुहानी परवानों की अलौकिक महफिल है।... इस रुहानी आकर्षण के आगे माया की अनेक प्रकार की आकर्षण तुच्छ लगती है।... यह आकर्षण अनेक प्रकार की दुख-अशान्ति की लहरों से किनारा कराने वाली है।" अ.बापदादा 14.11.87

श्रीमत और लव एण्ड लॉ

बाबा प्यार का भी सागर है तो लॉफुल धर्मराज भी है। दोनों गुणों का उसमें अद्वतीय सन्तुलन है। हमारे में भी वह सन्तुलन रहे, उसके लिए बाबा ने ज्ञान भी दिया है तो उस स्थिति को धारण करने के लिए श्रीमत भी दी है क्योंकि दुनिया में किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए इन दोनों गुणों का सन्तुलन अति आवश्यक है।

“लव ने आप सबको भी एक सेकेण्ड में 5000 वर्ष की विस्मृत हुई बातों को स्मृति में लाया है, सर्व सम्बन्ध में लाया है, सर्वस्व त्यागी बनाया है। ... जितना-जितना बापदादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है।” अ.बापदादा 18.1.73

“लव, लक के लॉक को खोलने की चाबी है। ... इस चाबी को सदा कायम रखना है। लव अनेक वस्तुओं में होता है। यदि कोई भी वस्तु में लव है तो बाप से लव परसेन्टेज में हो जाता है। ... अपनेपन को मिटाना ही बाप की समानता को लाना है।” अ.बापदादा 18.1.73

“विधाता द्वारा आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं विधान बनाने वाली बनी हो। ... क्योंकि इस समय तुम ब्राह्मणों का जो श्रेष्ठ कर्म है वही विश्व के लिये सारे कल्प के अन्दर विधान बन जाता है। ऐसे अपने को विधान के रचयिता समझ कर हर कर्म करना है।” अ.बापदादा 24.12.72

श्रीमत और मधोगरी अर्थात् शिवबाबा की भण्डारी

बाबा ने श्रीमत दी बच्चे कब किससे मांगो नहीं, तुम दाता के बच्चे हो। तुमको इस सत्य का ज्ञान और उस पर निश्चय रखो कि जिन्होंने कल्प पहले भी अपना भाग्य बनाया है, वे अभी भी अवश्य बनायेंगे। तुम सबको सत्य का ज्ञान अवश्य दो परन्तु मांगो नहीं। जिनको अपना भाग्य बनाना होगा, वे मुरली से समझकर भी अपना भाग्य अवश्य बनायेंगे। मांगना न पड़े, इसलिए बाबा ने यज्ञ में भण्डारी प्रथा रखी है। सेवाकेन्द्र या व्यक्तिगत रूप से मांगने के सन्दर्भ में बाबा ने कई कहावतें भी याद दिलाई हैं। बाबा ने याद दिलाया है - मांगने से मरना भला, बिनु मांगे मोती मिलें, मांगे मिले न भीख। आप मिले सो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी, खैंच लिया सो खून बराबर, ये है अकथ कहानी। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों को मांगना अच्छा नहीं लगता है और दोनों की श्रीमत है कब किससे मांगो नहीं।

“बड़े-बड़े सेन्टर्स खोलो तो बड़े-बड़े आदमी आयेंगे। कल्प पहले भी हुण्डी भरी थी।

सांवलशाह बाबा हुण्डी जरूर भरेंगे।" सा.बाबा 24.10.05 रिवा.

"बाबा कहते हैं - बच्चे, तुम्हें किसी देहधारी को गुरु आदि करने की दरकार नहीं है। तुमको किससे भी कुछ मांगना नहीं है। कहा भी जाता है - मांगने से मरना भला। ... अभी तुमको अपना तन-मन-धन प्रभु के आगे अर्पण करना है।" सा.बाबा 2.11.05 रिवा.

"अखबार में भी डाला जाये, कार्ड भी सबको भेजो - हम आपको सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आदि से अन्त तक की समझाते हैं। ... समझो कोई मिला और आपको प्रेजेन्ट करते हैं तो हम ले नहीं सकते हैं। सर्विस करने के लिए काम में लायेंगे, बाकी हम नहीं ले सकते हैं। बाप कहते हैं - मैं तुमसे दान लेकर क्या करूँगा, जो फिर भरकर देना पड़े।"

सा.बाबा 27.3.06 रिवा.

"गरीब आत्मा का स्थूल धन आठ आना साहूकार के आठ सौ के बराबर है क्योंकि आठ आने में सच्चे दिल की भावना आठ सौ से भी ज्यादा है। ... संकल्प का खज़ाना, ज्ञान-धन का खज़ाना, सर्वशक्तियाँ, सर्व गुणों का खज़ाना वेस्ट नहीं करेंगे।" अ.बापदादा 18.12.91

"अभी बाप स्वयं आये हैं। बाप बच्चों की कितनी इज्ज़त रखते हैं।... मैं ट्रस्टी हूँ, हम श्रीमत पर ही चलकर खर्चा आदि करते हैं - ऐसे जो समझते हैं और करते हैं, वे भी शिवबाबा के भण्डारे से ही खाते हैं।" सा.बाबा 12.8.06 रिवा.

"बाबा हमेशा कहते हैं - कोई से मांगो नहीं। सब यह समझ सकते हैं कि बीज नहीं बोयेंगे तो मिलेगा क्या ? ... अभी तो मैं डायरेक्ट आया हूँ। अभी देने से तुमको 21 जन्म के लिए रिटर्न मिलेगा। ... मौत सामने खड़ा है, इसलिए अपना सब सफल करो। ... जो बहुतों का कल्याण करेंगे, वे बहुत ऊंच पद पायेंगे।" सा.बाबा 26.6.06 रिवा.

श्रीमत और शिवबाबा का भण्डारा

जैसे ब्रह्मा भोजन का गायन है, वैसे ही शिवबाबा के भण्डारे का भी गायन है। शिवबाबा भोला भण्डारी गाया हुआ है अर्थात् जो उसके भण्डारे में एक डालता है, वह उसको पदम गुणा देता है। शिवबाबा का भण्डारा कौनसा है, उसमें हम अपना तन-मन-धन कैसे सफल करें, उसका सारा विधि-विधान बाबा ने बताया है और अपना सब तन-मन-धन शिवबाबा के भण्डारे में सफल करने के लिए श्रीमत दी है। जो करेगा, वह पायेगा।

"कभी भी यह संकल्प नहीं करना चाहिए कि हम किसी मनुष्य से लेवें। बोलो - शिवबाबा के भण्डारे में भेज दो, इनको देने से तो कुछ नहीं मिलेगा, और ही घाटा पड़ जायेगा। इनसे तो

शिवबाबा के भण्डारे में डालने से पदम गुणा हो जायेगा। अपने को भी घाटा थोड़ेही डालना है।"
सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"अगर ब्रह्मा को याद कर दिया तो तुम्हारा जमा ही नहीं होगा। ब्रह्मा को तो लेना है शिवबाबा के खजाने से, जिससे शिवबाबा ही याद पड़ेगा। तुम्हारी चीज क्यों लेवें। ब्रह्माकुमार-कुमारियों को देना भी रांग है। बाबा ने समझाया है - तुम कोई से भी चीज लेकर पहनेंगे तो उनकी याद आती रहेगी।"
सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

"चण्डिका देवी का भी मेला लगता है। ... चण्डाल का जन्म भी यहां के ही लेते हैं। यहाँ रहकर, खा-पीकर, कुछ देकर फिर कहते हैं - हमने जो दिया वह हमको वापस दो, हम नहीं मानते। संशय पड़ जाता है।... कुछ समय भी मददगार बनें तो स्वर्ग में जरूर आयेंगे।"
सा.बाबा 15.11.04 रिवा.

"यह है शिवबाबा का भण्डारा। शिवबाबा के भण्डारे में तुम सर्विस करते हो। सर्विस नहीं करेंगे तो पाई-पैसे का पद पायेंगे।... यह राजधानी स्थापन हो रही है।"
सा.बाबा 12.2.05 रिवा.

"मैं कुछ लेता नहीं हूँ। पैसे आदि जो कुछ है वह इसमें सफल करो। ... भूख कोई मर नहीं सकता। बाबा ने सब कुछ दिया, फिर क्या भूख मरते हैं।... शिवबाबा का भण्डारा सदा भरपूर है।"
सा.बाबा 16.2.05 रिवा.

"जो डायरेक्ट नहीं देते, उनका शिवबाबा के पास जमा नहीं होता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है तो उनके द्वारा सब कुछ करना है। बीच में कोई खा गया तो शिवबाबा के पास तो जमा नहीं हुआ। शिवबाबा को देना है तो थ्रू ब्रह्मा। सेन्टर भी थ्रू ब्रह्मा ही खोलो।"
सा.बाबा 2.11.01 रिवा.

"आप लोगों को भी शक्ति देने का लंगर लगाना पड़ेगा। उसके लिये आप को अपने में पहले से ही स्टॉक जमा करना पड़ेगा। जो गायन है- द्रोपदी के देगड़े का। द्रोपदियाँ तो आप सब हो ना! द्रोपदी अर्थात् यज्ञमाता का देगड़ा दोनों बातों में प्रसिद्ध है। एक तो स्थूल साधनों की कोई कमी नहीं और दूसरे सर्वशक्तियों की कोई कमी नहीं। सर्व-शक्तियों से सम्पन्न देगड़ा कब खाली नहीं होता।"
अ.बापदादा 13.9.74

"ऐसा कभी नहीं कहना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं। नहीं, शिवबाबा से पद्म लिया, दिया नहीं। शिवबाबा तो दाता है, तुम उनको क्या देंगे।"
सा.बाबा 17.10.05

"अभी बाप तुमको कितना समझदार बनाते हैं। तुम कितना धनवान बनते हो। शिवबाबा का भण्डारा भरपूर है। शिवबाबा का भण्डारा कौनसा है? गायन है - शिवबाबा का भण्डारा

भरपूर काल कंटक दूर। बाप तुम बच्चों को ज्ञान रत्न देते हैं। वह है ज्ञान रत्नों का सागर।"

सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

"मैं तो निराकार अभोक्ता हूँ... शिवबाबा को भोग तो जरूर लगाना है। यह जैसे उनका रिगार्ड रखना है। यह शिवबाबा का भण्डारा है ना। जिसका भण्डारा है, उसको भोग जरूर लगाना पड़े।" सा.बाबा 31.7.06 रिवा.

"धन के भाग्यवान कभी भी अपने नाम, मान, शान की इच्छा के कारण सेवा नहीं करेंगे। यदि नाम-मान-शान की इच्छा है तो ऐसे समय पर भाग्यविधाता सहयोग नहीं दिलायेगा।... सच्ची दिल वालों की और सच्चे साहेब के राज़ी होने की निशानी है - भण्डारा भी भरपूर और भण्डारी भी भरपूर।" अ.बापदादा 19.11.89

"शिवबाबा तो निराकार दाता है ना। तुम देते हो तो तुमको 21 जन्मों के लिए फल देते हैं। ... चावल मुट्ठी का भी गायन है ना। गरीब अपनी हिम्मत अनुसार जितना देते हैं, उतना उनका भी बनता है, जितना साहूकार का। इसलिए बाप को गरीब निवाज़ कहा जाता है।"

सा.बाबा 10.10.06 रिवा.

"कोई समझते हैं - हम शिवबाबा को देते हैं, यह तो शिवबाबा की बड़ी इन्सल्ट करते हैं। बाप तुमको कितना ऊंच बनाते हैं। तुम 5 रुपया शिवबाबा के खज़ाने में देते हो, बाबा तुमको 5 करोड़ देते हैं। ... शुद्ध विचार से नहीं दिया तो स्वीकार कैसे होगा। सब बातों की समझ बुद्धि में रखनी चाहिए।" सा.बाबा 7.10.06 रिवा.

Q. विचार करो - परमात्मा ने हमको क्या दिया है और क्या नहीं दिया है ?

"चाहे प्रवृत्ति वाले, चाहे सेन्टर वाले ... सदा शिव बाप की भण्डारी है और ब्रह्मा बाप का भण्डारा है - इस स्मृति से भण्डारी भी भरपूर रहेगी और भण्डारा भी भरपूर रहेगा। मेरापन लाया तो भण्डारा वा भण्डारी में बरक्कत नहीं होगी। ... कोई कमी होती है तो इसका कारण बाप के बजाये मेरेपन की खोट है।" अ.बापदादा 18.1.92

श्रीमत और गोबर्धन पर्वत में अंगुली का सहयोग

बाबा ने कहा है - यह कलियुग गोबर्धन पर्वत है, बाबा इसको उठाने के लिए आया है परन्तु बाबा अकेला क्या करेगा, आप सब बच्चों का सहयोग चाहिए। इसीलिए भागवत में

गोबर्धन पर्वत में सर्व गोप-गोपियों की अंगुली के सहयोग का गायन है। ये सब अभी की बात है। सभी बच्चों को अपनी अंगुली के सहयोग के लिए श्रीमत बाबा ने दी है।

"इस कलियुगी पहाड़ को उठाने के लिए हरेक की अंगुली की दरकार है। अभी वह अंगुली पूरी रीति नहीं है।... अंगुली देकर कलियुगी दुनिया को खत्म करना है और सतयुगी दुनिया को लाना है।" अ.बापदादा 18.5.69

"ऐसे संगठित रूप में एक ही शुद्ध संकल्प अर्थात् एकरस स्थिति बनाने का अभ्यास करना है। तब ही विश्व में शक्ति सेना का नाम बाला होगा। ... विजय का नगाड़ा तब बजेगा जब सभी के सर्व संकल्प, एक संकल्प में समा जायेंगे। ... यह जो चित्र में सभी की एक ही अंगुली दिखाते हैं, उसका अर्थ भी संगठन रूप में एक संकल्प, एकमत, एकरस स्थिति की निशानी है।"

अ.बापदादा 14.4.73

"सभी का सहयोग, सभी का स्नेह और सभी का एकरस स्थिति में स्थित रहने का चित्र भी है ना। जैसे गोवर्धन पर्वत में अंगुली दिखाते हैं, तो अंगुली को बिल्कुल सीधा दिखायेंगे। ... सीधा और स्थिर, उसकी निशानी इस रुप में दिखाई है। ऐसे ही अपने पुरुषार्थ को भी बिल्कुल ही सीधा रखना है।" अ.बापदादा 9.11.72

श्रीमत और परमात्मा की छत्रछाया

परमात्मा की छत्रछाया माया से बचने का सबसे श्रेष्ठ साधन है। इसलिए बाबा सदैव श्रीमत देते कि सदा अपने को बाबा की छत्रछाया में अनुभव करो। जहाँ परमात्मा की छत्रछाया है, वहाँ माया की छाया पड़ नहीं सकती, माया आ नहीं सकती।

वास्तव में परमात्मा तो सबका पिता है और ब्रह्मा बाबा भी सृष्टि का आदि पिता है अर्थात् सर्व मनुष्य मात्र का पिता है। दोनों का स्नेह सर्व आत्माओं से सदा है और दोनों की छत्रछाया सदा ही आत्माओं के ऊपर है परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार जो उनकी छत्रछाया को अपने ऊपर अनुभव करते हैं, उनके लिए ही वह छत्रछाया, छत्रछाया का काम करती है।

"माया से बचने का साधन है बाप की छत्रछाया। ... खुशी गुम हुई, कमजोर हुए तो माया की छाया का प्रभाव पड़ ही जाता है। आत्मिक कमजोरी माया का आवाह्न करती है, जैसे शारीरिक कमजोरी बीमारियों का आवाह्न करती है।" अ.बापदादा 25.1.94 पार्टी 1

"माया की छाया से निकल अपने मन-बुद्धि को बाप की छत्रछाया में लाओ ... इसके लिए विशेष साधन है बहुत सहज, जो पहले भी सुनाया - प्वाइन्ट... (प्वाइन्ट लगाकर, प्वाइन्ट बनकर, प्वाइन्ट बाप को याद करना और ज्ञान की प्वाइन्ट्स को चिन्तन करना)"

अ.बापदादा 10.1.94

श्रीमत और परमात्मा की मदद /
श्रीमत और बाप की मदद एवं बाप के मददगार

परमात्मा की मदद आत्माओं को सदा मिलती है और परमात्मा सदा मददगार भी है परन्तु परमात्मा की मदद का विधि-विधान है कि एक कदम हमारा और हजार कदम बाप की मदद। इस विधि-विधान को ध्यान में रखकर जो जितने कदम उसके बताये गये मार्ग पर उनकी श्रीमत अनुसार उठाता है, उसको उतने गुणा परमात्मा की मदद अवश्य मिलती है। उसका विधि-विधान भी परमात्मा ने बताया है और उसकी मदद लेकर जीवन को सफल बनाने के लिए श्रीमत भी दी है। परमात्मा की मदद के लिए गायन है - हिम्मते बचचे मदद दे भगवान।

"स्नेह से झुकाव हो या हिसाब-किताब चुक्तू होने के कारण ईर्ष्या-घृणा से झुकाव (याद) हो, दोनों प्रकार का झुकाव नीचे ले आता है। योग में स्थिर होने नहीं देता है।... फिर बाप के आगे अर्जी डालते हैं... हिसाब बनाया आपने और चुक्तू बाप कराये।... करनकरावनहार कराने के लिए बांधा हुआ है लेकिन करना तो आपको ही पड़ेगा।" अ.बापदादा 6.1.88

"जिस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लेना। तो ऐसा अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ विशेष शक्ति है। स्वप्न पूरा हो जायेगा। जहाँ बाप है वहाँ चाहे कितने भी तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति यह टाइटिल याद रखना कि मैं निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हूँ।" अ.बापदादा 15.2.83

"बेपरवाह, निर्भय होकर सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो बाप की पदमगुणा मदद भी मिलती है।" अ.बापदादा 27.2.86

"दिल से, मुहब्बत से कहो - 9मेरा बाबा", तो मेहनत मोहब्बत में बदल जायेगी। मेरा बाबा कहने से ही बाप के पास आवाज पहुँच जाता है और बाप एक्स्ट्रा मदद देते हैं। लेकिन है दिल का सौदा, जबान का सौदा नहीं है। दिल का सौदा है।" अ.बापदादा 15.10.04

"हिम्मत से बाप की मदद भी मिल जाती है। नाउम्मीद में भी उम्मीदों के दीपक जग जाते हैं।

... हिम्मत और उमंग के पंख जब लग जाते हैं तो जहाँ भी उड़ना चाहें उड़ सकते हैं। बच्चों की हिम्मत पर बापदादा सदा बच्चों की महिमा करते हैं।" अ.बापदादा 4.03.86

"जितना आप अपने में निश्चय रखते हैं, उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं। स्नेही को सहयोग अवश्य मिलता है। किससे भी सहयोग लेना है तो स्नेही बनना है। ... कब भी हिम्मतहीन बोल नहीं बोलने चाहिए।" अ.बापदादा 28.9.69

"जो मददगार हैं, उनको मदद तो सदैव मिलती है। ... यह लेन-देन का हिसाब ठीक रहता है। इस संगम समय पर ही अनेक जन्मों का सम्बन्ध जोड़ना है। स्नेह है सम्बन्ध जोड़ने का साधन। ... ईश्वरीय स्नेह भी तब जुड़ सकता है जब अनेकों के साथ स्नेह समाप्त हो जाता है।" अ.बापदादा 26.1.70

"एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को बाप का एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। ... ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेल पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी मुश्किल की वेला आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है ... यह एक्स्ट्रा गिफ्ट ड्रामा में नूँधी हुई है।" अ.बापदादा 18.1.86

"अगर एक बार समय पर, बिना कोई संकल्प के, आज्ञा समझकर जो सहयोगी बन जाते हैं, ऐसे समय के सहयोगियों को बाप-दादा भी अन्त तक सहयोग देने के लिए बाँधा हुआ है। एक बार का सहयोग देने का जम्प अन्त तक सहयोग लेने का अधिकारी बनाता है। एक का सौ गुणा मिलने से मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा होती है।" अ.बापदादा 24.12.74

"दिल से कहना मेरा बाबा ... तो बाप हज़ूर हाज़िर हो जायेगा।... एक कदम आपका हिम्मत का और हजार कदम बाप की मदद का है ही है।... हिम्मत नहीं हारना, दृढ़ संकल्प करना, सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है।" अ.बापदादा 4.9.05

""बाबा" शब्द सर्व खजानों की, श्रेष्ठ भाग्य की चाबी है।... चाबी लगाने आती है? चाबी लगाने की विधि है - दिल से जानना और मानना।... दिल से कहा "बाबा" तो खजाने सदा हाजिर हैं। अखुट खजाने हैं।... जितना लेना हो, खुली दिल से ले लो। दाता के पास कमी नहीं है।" अ.बापदादा 21.1.87

"ईश्वर ने तो मत दी है कि ऐसे-ऐसे करो तो तुम्हारी दैवी बुद्धि बन जायेगी। अब हर एक को अपने को आपही मदद करनी है। ... यह ईश्वरीय मत अर्थात् श्रीमत तुम बच्चों को ही मिलती है, जिससे तुम श्रेष्ठ बनते हो।" सा.बाबा 6.12.05 रिवा.

"व्यर्थ संकल्प स्वप्न-मात्र भी नहीं आयें, ऐसा दृढ़ संकल्प करेंगे तो सफलता सहज अनुभव करेंगे। ... अटेन्शन रखो लेकिन अटेन्शन का टेन्शन नहीं हो।... सदा यह स्मृति में रखो कि

बापदादा की मदद अर्थात् सहयोग का हाथ सदा मेरे सिर पर है। यह चित्र सदा इमर्ज रूप में रखो।" अ.बापदादा 18.02.93 पार्टी 3

"बच्चों की बुद्धि में सब प्वाइन्ट्स रहनी चाहिए। योग में रहने वालों को समय पर मदद अवश्य मिलती है। ... सर्विस करने से मदद भी मिलेगी। जितना किसी को सुख का रास्ता बतायेंगे, उतना खुशी रहेगी।" सा.बाबा 20.02.06 रिवा.

"हिम्मत हमारी और मदद बाप की है ही है। इस विधि से प्रतिज्ञा प्रैक्टिकल में लाने में बहुत सहज अनुभव करेंगे। ... विजय की खुशी, विजय का नशा शक्तिशाली बना देगा।... पाण्डव हो ना। ... सदैव यह स्मृति में रखो कि हम सभी सिद्धि स्वरूप आत्मायें हैं।"

अ.बापदादा 1.3.92

"बाप मददगार जरूर है और अन्त तक रहेंगे, यह गारण्टी है लेकिन किसके मददगार ? जो पहली हिम्मत का पांव आगे करते हैं। ... हिम्मत का पांव बढ़ाया और मदद नहीं मिले, यह असम्भव है।" अ.बापदादा 31.12.96

"बाप की मदद उसको मिलती है, जो हिम्मत रखते हैं। पहले बच्चे की हिम्मत फिर बाप की मदद है। ... मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो।" अ.बापदादा 18.1.96

"ज्ञानी अर्थात् समझदार। समझदार की निशानी है कभी भी धोखा नहीं खाना और योगी की निशानी है - सदा क्लीन और क्लियर बुद्धि। ... सेवाधारी की निशानी है - सदा निमित्त और निर्माण भाव। ... सदा अनुभव करो - सर्वशक्तिवान बाप साथ है। बस एक बात भी अनुभव किया तो सबमें पास हो जायेंगे।" अ.बापदादा 4.12.95

"हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। बाप सदा मददगार है। सिर्फ हिम्मत का एक कदम बढ़ाओ और बाप हजार कदम बढ़ाने के लिए बंधा हुआ है।... बाप को शुद्ध दिल वाले प्रिय लगते हैं और आपको बाप प्रिय लगता है।... ये हंसने वाले कल आपको नमस्कार करने वाले हैं।"

अ.बापदादा 31.12.94 सिन्धी ग्रुप

श्रीमत और "एक बल, एक भरोसा" एवं एकरस स्थिति

भक्ति मार्ग में भी एकबल, एक भरोसे का गायन है अर्थात् जो एक परमात्मा के आधार पर रहता है, उनकी ही श्रीमत पर चलता है, उसका सर्व कार्य परमात्मा सिद्ध करते हैं। इस स्थिति का राज़ और उस पर स्थित रहने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है। जब एक का ही

बल और एक का ही भरोसा होगा, तब ही एक बाप की याद स्थिर रहेगी और हमारी स्थिति एकरस रहेगी और हम सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कर सकेंगे।

““एक बल, एक भरोसा” - यह है मुख्य सब्जेक्ट। हर समय एक की ही याद में एक-रस रहना। इसी पुरुषार्थ में ही सदा सफल हो तो मंजिल पर पहुँच ही जायेंगे। जो अटूट स्नेह में रहते हैं, उनको सहयोग भी स्वत: प्राप्त होता है।” अ.बापदादा 23.10.75

“जितना योगी उतना सर्व का सहयोगी, वह सर्व के सहयोग का अधिकारी स्वत: ही बन जाता है।... जो जितना योगी होगा, उतना उसको सहयोग अवश्य ही प्राप्त होता है। अगर सर्व से सहयोग प्राप्त करना चाहते हो तो योगी बनो। योगी को सहयोग क्यों प्राप्त होता है क्योंकि बीज से योग लगाते हो।” अ.बापदादा 13.3.71

“एक बीज से योग अर्थात् कनेक्शन होने के कारण सर्व आत्मायें अर्थात् पूरे वृक्ष के साथ कनेक्शन हो ही जाता। तो कनेक्शन का अटेन्शन रखो। तो सहयोगी बनने के लिए पहले अपने आप से पूछो कि कितना और कैसा योगी बना हूँ। अगर सम्पूर्ण योगी नहीं तो सम्पूर्ण सहयोगी नहीं बन सकते।” अ.बापदादा 13.3.71

इसलिए भक्ति मार्ग में भी गायन है - जा पर कृपा राम की होगी, ता पर कृपा करें सब कोई। एकै साधे सब सधैं, सब साधे सब जाहिं।

“अगर साकार शरीरधारी के सहारे की आदत होगी तो अव्यक्त बाप और निराकार बाप पीछे याद आयेगा, पहले शरीरधारी याद आयेगा। ... सहयोग लेना अलग बात है लेकिन सहारा बनाना अलग बात है। यह बहुत गुह्य बात है, इसको यथार्थ रीति से जानना पड़े।... संगठन में रहना है, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई।”

अ.बापदादा 20.2.87

“मल्ल-युद्ध करते हैं तो उसमें भी कितनी मेहनत करनी पड़ती। लेकिन खेल समझ करते तो खुश होते हैं। ... जो एक बल एक भरोसे में रहता है, वह कभी भी संकल्प मात्र भी नहीं सोच सकता है कि क्या होगा, कैसे होगा ?” अ.बापदादा 18.01.93 पार्टी 3

“सदैव एक का पाठ पक्का रखो। एक बाप, एक ही संगम का समय है, एकरस स्थिति में रहना है और एक बाप से ही सर्व प्राप्ति करनी हैं।... अगर लक्ष्य कमजोर होगा तो लक्षण भी कमजोर होंगे।” अ.बापदादा 21.12.89 पार्टी 2

“अकाल तख्तनशीन बाप के दिल तख्तनशीन भी बनते हैं। ... बाप की दिल में ऐसे बच्चे ही रहते हैं, जो “एक बाप दूसरा न कोई”, सदा इसी स्मृति से समर्थ बनो।... सदा याद रखना कि कि डबल तख्तनशीन सो डबल ताजधारी बनने वाले हैं।”

अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 1

"एकव्रता आत्मा के पास ऐसी बोझ की बातें इकट्ठी नहीं होती हैं, जो हल्का होने के लिए किसको सुनानी पड़ें।... जब वायदा है साथ रहेंगे, साथ चलेंगे ... फिर साकार में कोई विशेष साथी क्यों चाहिए।" अ.बापदादा 23.11.89

श्रीमत और हिंसा-अहिंसा

बाबा ने हिंसा-अहिंसा का राज़ भी समझाया है और हिंसा से कैसे बचें और अहिंसा की धारणा कैसे हो, उसके लिए भी श्रीमत दी है। दुनिया में तो किसी को मारना या दुख देने को ही हिंसा कहा जाता है लेकिन बाबा ने हिंसा की यथार्थता को बताया है। बाबा ने कहा है हिंसा दो प्रकार की होती है। एक है किसी को दैहिक रूप से दुख देना और दूसरी है आत्मिक रूप में किसको दुख देना। काम-कटारी चलाना ऐसी ही हिंसा है, जिससे आत्मा की शक्ति का पतन होता है और आत्मा महान दुख को पाती है। बाबा ने किसी भी कीमत पर इस काम-कटारी की हिंसा से बचने के लिए कहा है और उसके लिए श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - काम विकार से बचने के लिए तुम मर भी जाते हो तो भी श्रेष्ठ पद पायेंगे, इसलिए इस नियम में कब ढीला नहीं होना है।

"तुम हो अहिंसक। तुम राज्य लेते हो अहिंसा से। हिंसा दो प्रकार की होती है ना। एक है काम कटारी चलाना और दूसरी हिंसा है किसको मारना-पीटना।" सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

"माया से युद्ध होते हुए भी इसको अहिंसा क्यों कहते हैं? क्योंकि इस युद्ध का परिणाम सुख और शान्ति का निकलता है। हिंसा अर्थात् जिससे दु:ख अशान्ति की प्राप्ति हो। लेकिन इससे शान्ति और सुख की वा कल्याण की प्राप्ति होती है इसलिए इसको हिंसा नहीं कहते हैं।"

अ.बापदादा 18.4.71

"असली सतोप्रधान संस्कार वा जो अपने ओरिजिनल ईश्वरीय संस्कार आत्मा के हैं उनको दबाकर दूसरे संस्कारों को प्रैक्टिकल में लाते हैं तो मानों जैसे कि किसका गला दबाया जाता है तो वह हिंसा मानी जाती है। तो अपने ओरिजिनल अथवा सतोप्रधान स्थिति के सस्कारों को दबाना, यह भी हिंसा है।" अ.बापदादा 18.4.71

किसी आत्मा को अपने व्यवहार से इस ज्ञान मार्ग से विमुख कर देने को भी बाबा ने हिंसा कहा है क्योंकि उस आत्मा को पतन के रास्ते पर ढकेलने के निमित्त बनते हो।

श्रीमत और सम्पूर्णता

हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है सम्पूर्णता क्योंकि सम्पूर्णता में ही सम्पन्नता और प्रसन्नता समाई हुई है। सम्पूर्णता क्या है, उसके लिए क्या पुरुषार्थ है और वह कैसे करना चाहिए, उसका ज्ञान और उसकी धारणा के लिए बाबा श्रीमत दी है, जिस श्रीमत पर चलने वाले ही इस जीवन में सम्पूर्णता का परम सुख प्राप्त करते हैं।।

"जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। ... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है, जो सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उनका लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते।" अ.बापदादा 29.6.70

"समय के अनुसार अगर सम्पूर्ण बने तो उसकी इतनी प्राप्ति नहीं होती है। समय के पहले सम्पूर्ण बनना है। समय पर सम्पूर्ण बने तो सम्पूर्णता क्या चीज है, उसका अनुभव कब करेंगे? ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख निरन्तर क्या होता है, उसका अनुभव यहाँ ही करना है। ... अगर अब न करेंगे तो फिर कब करेंगे? फिर कब हो न सकेगा।" अ.बापदादा 18.6.70

"जितना दूसरों को सन्देश देते हैं, उतना अपने को भी सम्पूर्णता का सन्देश मिलता है क्योंकि दूसरों को समझाने से अपने को सम्पूर्ण बनाने का न चाहते हुए भी ध्यान जाता है। यह सर्विस करना भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बन्धन है।" अ.बापदादा 24.1.70

"निन्दा-स्तुति, मेरा-तेरा ... कुछ भी अंगीकार न करना तब ललकार होगी। आप मन में संकल्प पीछे करते हो, आपके मन में संकल्प आते ही वहाँ बाबा के पास पहुंच जाता है। क्यों पहले पहुंचता है, यह गुह्य पहेली है। ... क्योंकि सम्पूर्ण बनने से ड्रामा की हर नूँध स्पष्ट देखने में आती है।" अ.बापदादा 2.4.70

"बापदादा कब व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं। ... पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है। ... साकार रूप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया। सम्पूर्णता साकार रूप में सम्पन्न (स्पष्ट) देखने में आती थी। सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में आता था! ... इस स्थिति को कहा जाता है उपराम। उपराम और साक्षी-दृष्टा।" अ.बापदादा 26.3.70

"सुनाया था ना कि अन्त के समय नई-नई परीक्षायें आयेंगी, जिन परीक्षाओं को पास कर सम्पूर्णता की डिग्री लेंगे। अगर यह पहला पाठ ही स्मृति में नहीं होगा तो सम्पूर्णता की डिग्री भी नहीं ले सकेंगे। ... पहली सीढ़ी अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित।"

अ.बापदादा 28.7.71

"सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने की निशानी का डबल नशा उत्पन्न होता है? पहला नशा

है - कर्मातीत अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। ऐसे कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा। न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार नहीं करना पड़ेगा। सहज और स्वत: ही अनुभव होगा कि कराने वाला और करने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ स्वयं से हैं ही अलग।" अ.बापदादा 4.7.74

"जब तीनों ही लाइट जगमगाती हुई दिखाई दें, तब ही सबको साक्षात्कार करा सकेंगे। प्योरिटी की लाइट, सतोप्रधान दिव्य-दृष्टि की लाइट और मस्तक मणि की लाइट - यह तीनों ही सम्पूर्ण बनाने की मुख्य बातें हैं।" अ.बापदादा 24.4.74

""अशरीरी भव" - यह वरदान प्राप्त कर लिया है? जिस समय संकल्प करो कि मैं अशरीरी हूँ, उसी सेकण्ड स्वरूप बन जाओ। ऐसा अभ्यास सहज हो गया है? यह सहज अनुभव होना ही सम्पूर्णता की निशानी है।" अ.बापदादा 8.12.75

"सम्पूर्ण स्टेज की निशानियां - पहली निशानी पुरानी दुनिया के किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्पमात्र वा स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा ... सर्व आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे। ... हर परिस्थिति वा परीक्षा में सदा स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे। ... सदा साक्षीपन की सीट पर सेट होंगे।" अ.बापदादा 7.10.75

"सम्पूर्ण स्टेज वा सम्पूर्ण स्थिति जब आत्मा की बन जाती है तो इसका प्रैक्टिकल कर्म में क्या गायन है? समानता का। निन्दा स्तुति, जय-पराज़य, सुख-दु:ख सभी में समानता रहे, इसको कहा जाता है सम्पूर्णता की स्टेज।" अ.बापदादा 8.6.72

"अब ऐसी मीटिंग करो कि कब तक सम्पन्न बनेंगे?... आज की विशेष टॉपिक है - कब तक? ... ब्राह्मण परिवार के आगे, विश्व के आगे सम्पन्न और सम्पूर्ण।"

अ.बापदादा 21.10.05

"व्यर्थ का तरफ कोई-कोई समय शुद्ध श्रेष्ठ संकल्प से भारी हो जाता है। तपस्या अर्थात् व्यर्थ संकल्प की समाप्ति, क्योंकि यह समाप्ति ही सम्पूर्णता को लायेगी।"

अ.बापदादा 13.2.91

"सदैव यह स्मृति में रहे कि हर समय एवर-रेडी रहना है। किसी भी समय कोई भी परिस्थिति आ जाये लेकिन हम सदा एवर-रेडी हैं ... ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है - सम्पूर्ण बनना। एवर-रेडी अर्थात् सम्पूर्ण। ... भाग्य विधाता के बच्चे हैं - यह स्मृति में रखना माना भाग्य को बढ़ाना।" अ.बापदादा 7.3.93 पार्टी 4

"अभी समय समीप आना नहीं है, आपको लाना है। कई पूछते... कितना समय लगेगा।... समय को समीप लाने वाले कौन? ड्रामा है लेकिन निमित्त कौन? आपका एक गीत भी है -

किसके रोके रुका है सवेरा। विनाशकारी तो तड़फ रहे हैं कि विनाश करें... लेकिन नव-निर्माण करने वाले इतना रेडी हैं? पुराना खत्म हो जाये परन्तु नया निर्माण नहीं हो तो क्या होगा। ... अपने आपसे पूछो - सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज कहाँ तक बनी है? क्या आवाज़ में आना और आवाज़ से परे हो जाना दोनों ही समान हैं?... ऐसे मन-बुद्धि द्वारा जब चाहो जहाँ चाहो, वहाँ आ-जा सकते हो? क्योंकि अन्त में उसको ही पास मार्क्स मिलेगी जो सेकण्ड में जो चाहे, जैसा चाहे, जो आर्डर करना चाहे, उसमें सफल हो जाये।" अ.बापदादा 28.3.06

"सम्पन्नता, सम्पूर्णता की निशानी है। सम्पूर्णता की चेकिंग अपनी सम्पन्नता से कर सकते हो। ... ज्ञान, योग, धारणा, सेवा सभी में सम्पन्न। ... तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि समीप हैं, सम्पन्न हैं।" अ.बापदादा 11.11.89 पार्टी 1

श्रीमत और सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता एवं प्रसन्नता

सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता एवं प्रसन्नता का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। प्रसन्नता मानव जीवन का लक्ष्य है परन्तु प्रसन्नता के लिए आत्मा की सम्पूर्णता परम आवश्यक है। परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है और आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। हम कैसे सदा प्रसन्न रह सकते हैं, इसलिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

"बन्धन वाला विनाशी प्राप्तियाँ होते भी अल्पकाल के लिए उन प्राप्तियों का सुख अनुभव करेगा। ... भरपूर होते भी अपने को खाली-खाली अनुभव करेगा। सबकुछ होते भी कुछ और चाहिए, ऐसे अनुभव करता रहेगा और जहाँ चाहिए-चाहिए है, वहाँ कभी सन्तुष्टता नहीं रहेगी।" अ.बापदादा 18.12.87

"संगमयुग पर बाप आते हैं तो जरूर वह भी पुरुषोत्तम युग हुआ।... बाबा कितनी गुह्य-गुह्य बातें सुनाते हैं। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए।" सा.बाबा 10.9.05 रिवा.

"किसी भी बच्चे को, चाहे देश वाले को, चाहे विदेश वाले को, किसी भी सब्जेक्ट में मेहनत लगती है, उसका मूल कारण है दिल का स्नेही कम। स्नेह माना लवलीन।... अगर मेहनत करनी पड़ती है तो कारण है दिल के स्नेह को चेक करो। कहाँ लीकेज तो नहीं है? लगाव कोई व्यक्ति से या साधन से तो नहीं है। ... कहाँ भी लीकेज होगी तो सदा जीवन में सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं होगी। ... जहाँ सन्तुष्टता है, उसकी निशानी है सदा प्रसन्नता।"

अ.बापदादा 15.11.05

"सम्पन्न और सम्पूर्ण, एवर-रेडी, सफल कर सफलतामूर्त बनने का ... जो वायदा किया है तो अभी एक मिनट के लिए अपने दिल से इस वायदे को दृढ़ता का अण्डरलाइन लगाओ। अपने मन में पक्का करो।" अ.बापदादा 15.11.05

"संस्कार मिटाना, मिलाना और मनाना। सभी बातें हुई। अभी खूब सारा साल हर्षित रहना और सभी को हर्षित करना। मैं सन्तुष्ट आत्मा हूँ, सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है। यही मनाना है, यही बाप का प्यार है, यही दुआयें हैं, यही यादप्यार है।" अ.बापदादा 31.12.05

"अगर ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियों की लिस्ट निकालो तो कितनी लम्बी है। ... और प्राप्तियां भी अविनाशी हैं। ... तो सदा सर्व प्राप्तियों की स्मृति में रहो और स्मृति स्वरूप रहो।... सन्तुष्टता सबसे बड़ा खज़ाना है। जिसके पास सनतुष्टता है, उसके पास सबकुछ है और जिसके पास सन्तुष्टता नहीं है तो सबकुछ होते हुए भी कुछ नहीं है क्योंकि असन्तुष्ट आत्मा सदा ही इच्छाओं के वश होगी।" अ.बापदादा 16.12.93 पार्टी 5

"अब चेक करो कि इन सबमें सर्वगुण सम्पन्न भी हो, सम्पूर्ण निर्विकारी भी हो, सम्पूर्ण अहिंसक और मर्यादा पुरुषोत्तम भी हो, 16 कला सम्पन्न भी हो ? ... इन पांचो बातों में सम्पन्न बनना अर्थात् मालिक बनना।" अ.बापदादा 25.2.91

"प्रसन्नता का आधार है - सम्पन्नता। जो स्व से प्रसन्न रहते हैं, वे औरों से भी प्रसन्न रहेंगे, सेवा से भी प्रसन्न रहेंगे। ... सबसे बड़े ते बड़ी सेवा आपकी प्रसन्न मूर्त करेगी।"

अ.बापदादा 5.12.89

"लक्ष्य रखो तो लक्षण जरूर आयेंगे। जैसी स्मृति वैसी स्थिति हो जायेगी। ... जितनी सेवा में वृद्धि, उतनी ही स्व-उन्नति में भी वृद्धि हो। दोनों साथ-साथ हों।... तो सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना - यह है विशेष वरदान।" अ.बापदादा 23.11.89 ग्रुप 1

"कई बच्चे प्रशंसा के आधार पर प्रसन्नता अनुभव करते हैं लेकिन वह प्रसन्नता अल्प काल की है। ... चेक करो कि मेरी प्रसन्नता प्रशंसा के आधार पर तो नहीं है ?... बाबा ने पहले भी सुनाया है कि रॉयल रूप की इच्छा का स्वरूप नाम, मान और शान है।"

अ.बापदादा 22.3.96

"बिना चक्कर के चक्रवर्ती राजा नहीं बनेंगे।... चक्कर लगाना अर्थात् अपने अनुभवी मूर्त में और मार्क्स बढ़ाना। ... सदा सन्तुष्ट रहना, चाहे कर्मणा हो, चाहे वाचा हो, चाहे मन्सा हो लेकिन सन्तुष्ट रहना, इसमें ही मार्क्स मिलनी है ... कोई भी सेवा करो लेकिन सच्चे दिल से, मैं और मेरापन नहीं हो।" अ.बापदादा 7.3.95 दादियों से

"अगर सोये हो तो भी सोने का कर्म तो कर रहे हो ना। ... कर्मयोगी आत्मा का हर कर्म

योगयुक्त, युक्तियुक्त होगा। ... श्रेष्ठ कर्म की निशानी है - स्वयं सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। ... स्व से सन्तुष्ट, बाप सन्तुष्ट और लौकिक-अलौकिक परिवार सन्तुष्ट। तीनों सर्टीफिकेट लेना है।" अ.बापदादा 10.1.94 पार्टी 4

श्रीमत और मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति
श्रीमत और फीलिंग का फ्लू
श्रीमत और अचल-अडोल, एकरस स्थिति

बाबा ने कहा है - तुमको मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा सब में समान रहना है, तब ही इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे। परन्तु वह स्थिति कैसे बनायें, उसके लिए भी श्रीमत दी है और ज्ञान भी दिया है। वास्तव में इस विश्व-नाटक मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा का कोई स्थान ही नहीं है क्योंकि हर आत्मा का पार्ट है और ये एक खेल है।

"कितना वण्डरफुल ड्रामा है। यह बेहद का नाटक है, जो सिवाए तुम्हारे और कोई की बुद्धि में नहीं है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। ... तुम बच्चे जानते हो कि यह हार-जीत का वण्डरफुल खेल बना हुआ है, इसको देखकर खुशी होती है, घृणा आ नहीं सकती। तुम ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो, इसलिए घृणा की बात ही नहीं।"

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

"मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् फीलिंग से परे। जो जितना फुल बनते जायेंगे, उतना फीलिंग का फ्लो या फ्लू खत्म हो जायेगा। ... जिन्होंने हाथ नहीं उठाया है वे भी मास्टर सर्वशक्तिवान हैं क्योंकि सर्वशक्तिवान को अपना बना लिया है।" अ.बापदादा 30.11.70

"रुहानी बच्चो ! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपरामचित्त होना है। ... स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराज्य सभी में सन्तुष्ट रहना है और रहमदिल बनना है।"

अ. बापदादा 9.11.69

"आठ को समझाया, उनमें से दो-तीन आपकी महिमा करते हैं और दूसरे ना महिमा, ना ग्लानि करते हैं, गम्भीरता से चलते हैं। फिर देखेंगे कि आठ में से आपका अटेन्शन एक-दो परसेन्टेज में उन दो-तीन तरफ ज्यादा जायेगा, जिन्होंने महिमा की।... वास्तव में है यह सूक्ष्म फल को स्वीकार करना।" अ.बापदादा 19.7.72

"वास्तव में ना महिमा का नशा, ना ग्लानि से घृणा आनी चाहिए। दोनों में बैलेन्स ठीक रहे, तो फिर स्वंय ही साक्षी हो अपने आपको देखोगे तो कमाल अनुभव होगी। अपने आपसे सन्तुष्टता का अनुभव होगा, और भी आपके इस कर्म से सन्तुष्ट होंगे।" अ.बापदादा 8.6.72

"जितना-जितना योगयुक्त उतना ही सर्वबन्धन मुक्त बनते जाते हैं। तो योगयुक्त की निशानी है ही बन्धनमुक्त होना।...अब जज करो कि कितने बन्धन रह गये हैं और कौन-कौन से रह गये हैं?... जो गायन है निन्दा-स्तुति, हार-जीत, महिमा वा ग्लानि में समान अर्थात् बुद्धि में नॉलेज रहेगी कि यह हार है यह जीत है, यह महिमा है यह ग्लानि है लेकिन एकरस अवस्था वा स्थिति से डगमग नहीं होंगे।" अ.बापदादा 29.8.71

"तुम बच्चों को दुख-सुख, मान-अपमान... सब सहन करना है।... अगर कोई बात है तो बाप को रिपोर्ट करनी चाहिए। रिपोर्ट नहीं करते तो बड़ा पाप लगता है।... इस काम के कारण ही कितने पाप होते हैं।" सा.बाबा 10.6.05 रिवा.

"बाप को बच्चों की मेहनत पर रहम आता है। वरदानी, सदा वर्से के अधिकारी कभी मेहनत नहीं कर सकते। ... मेहनत करने के दो कारण हैं - या तो माया के विघ्नों से फेल हो जाते हैं या ब्राह्मणों के या अज्ञानियों के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते छोटी-छोटी बातों में व्यर्थ फील कर लेते हैं। ... जिससे कमजोरी आ जाती है। इसलिए न फेल हो और न फील करो।"

अ.बापदादा 21.12.89

"तुम 21 जन्म के लिए अपना राज्य-भाग्य पा रहे हो। यह थोड़ी बहुत तकलीफ तो सहन करनी ही है। कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।" सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

"विघ्न के निमित्त बनी आत्मा को विघ्नकारी नहीं समझो, अनुभवी बनाने वाले शिक्षक समझो। जब कहते हो निन्दा करने वाले हमारे मित्र हैं तो वह विघ्नों को पास कराकर अनुभवी बनाने वाला शिक्षक हुआ ना।" अ.बापदादा 20.2.87

"अभी तो स्तुति-निन्दा, मान-अपमान ... सब सामने आता है। जानते हैं कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। जो सेकेण्ड पास हो गया, उसका चिन्तन नहीं करना होता है। ... कोई भूल हो गई, ड्रामा में नूँध थी, पास्ट हो गई। अब फिर आगे नहीं हो, उसके लिए पुरुषार्थ करते रहते हैं।"

सा.बाबा 10.12.05 रिवा.

"बच्चे कोई बेकायदे काम नहीं करो। स्तुति-निन्दा ... सबमें धीरज धारण करना है। ... इस समय सब देहाभिमानी हैं। अब बाप कहते हैं - बच्चे देही-अभिमानी बनो।"

सा.बाबा 5.12.05 रिवा.

"देखते हुए फिर भी तुम अपनी अडोलता में खड़े रहो। मंजिल को भूलना नहीं है। ... तुम

समझते हो - तुम हो महावीर, जो माया पर जीत पाते हो। अभी तुम समझते हो - यह हार और जीत का चक्र है, जो फिरता रहता है। कितना वण्डरफुल ज्ञान है बाबा का।”

सा.बाबा 28.11.05 रिवा.

“अब इस पुरानी दुनिया से ममत्व निकालना है, अब तो नई दुनिया में जाना है। यह बुद्धि में रखना चाहिए, चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए।... जब पुरानी दुनिया को छोड़ दिया, अभी हम संगमयुग पर हैं फिर पिछाड़ी में देखें ही क्यों! ... नई दुनिया सामने खड़ी है, बाप पुरानी दुनिया से वैराग्य दिलाते हैं। ... बच्चे बीती को चितवो नहीं और पुरानी दुनिया में कोई आश नहीं रखो।” सा.बाबा 28.11.05 रिवा.

“कहाँ ठहरना नहीं है, कहाँ देखना नहीं है। बीती को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं - तुम आगे बढ़ते जाओ, पिछाड़ी को नहीं देखो। तब ही तुम अचल-अडोल, स्थिर अवस्था में रह सकेंगे। ... यही विचार सागर मन्थन करते रहना है।” सा.बाबा 28.11.05 रिवा.

“अचल-अडोल स्थित के लिए कुछ भी हो जाये परन्तु नथिंग न्यू। कोई नई बात नहीं है। ... ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं है। ... इसलिए ही तो ब्राह्मण जीवन मौजों की जीवन है।”

अ.बापदादा 31.12.90 पार्टी 1

“खुशी है तो सबकुछ है और खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। ... अखुट प्राप्तियों के आगे यह थोड़ा-बहुत नुकसान क्या बड़ी बात हैं। जब प्राप्तियों को भूल जाते हैं तब उदास होते हैं। ... शरीर चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये।” अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

“सदा अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ।... नथिंग न्यू, फुल स्टॉप भी बिन्दी।... तो अचल रहने का साधन है - अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ।... त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चिन्त रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है।”

अ.बापदादा 09.01.93 पार्टी 2

“ब्रह्मा बाबा ने कभी यह नहीं कहा कि मैं राय देता हूँ, मैं राइट हूँ ... बाबा करा रहा है। ... जगत अम्बा भी यही कहती थी - हुक्मी हुक्म चलाये रहा है। मैं नहीं, चलाने वाला बाप चला रहा है। करावनहार बाप करा करा रहा है। तो पहले सभी अपने अन्दर से यह अभिमान और अपमान की “मैं” को समाप्त कर आगे बढ़ो। हर बात में नेचुरल बाबा-बाबा निकले।”

अ.बापदादा 14.3.06

“अचल-अडोल स्थित के लिए कुछ भी हो जाये परन्तु नथिंग न्यू। कोई नई बात नहीं है। ... ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं है।... इसलिए ही तो ब्राह्मण जीवन मौजों की जीवन है।”

अ.बापदादा 31.12.90 पार्टी 1

"बच्चों ने इन्द्रिरा गांधी की टी.वी. देखी। समय पर देखी, नॉलेज के लिए देखी, समाचार के लिए देखी इसमें कोई हर्जा नहीं है लेकिन क्या हुआ, क्या होगा, इस रूप से नहीं देखना। नॉलेजफुल बनकर हर दृश्य को कल्प पहले की स्मृति से देखो।"

अ.बापदादा 19.11.84

Q. हम योग स्थिति में बैठे हैं और उस किसी के चीखने की कि बचाओ-बचाओ या पास ही किसी शेर के दहाड़ने की आवाज़ आ जाये तो हमको क्या करना चाहिए? या हमारा क्या कर्तव्य है?

यदि हम सही योग की स्थिति में हैं तो बाबा ने कहा है योग में तो सुनना भी बन्द हो जाता है, इसलिए हमको वह सुनाई ही नहीं देगा। दूसरी बात यदि हम सही योग में बैठे हैं तो उसके वायब्रेशन के अन्दर ऐसी कोई घटना हो नहीं सकती। तीसरी बात बाबा ने कहा है - अन्त समय ये सब होगा, उस समय तुम्हारी अचल-अडोल स्थिति रहे, उसके लिए अभी से ही तैयार रहना है। चौथी बात अब आत्मा अपनी यथार्थ आत्मिक स्थिति में होती है तो कृत्य का संकल्प स्वत: आता है, शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, उसके लिए अभी से सोचने की आवश्यकता नहीं है। अभी आवश्यकता है देह से न्यारी अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित होने के सफल अभ्यास की। इसलिए बाबा की श्रीमत है - तुमको चिन्ता और चिन्तन दोनों से परे आत्मिक स्वरूप में स्थित रहने का अभ्यास करना है।

"जो रीयल शान है, रुहानी शान है, वह कभी भी अभिमान की फीलिंग नहीं देगी। ... अभिमान वाले को अपमान बहुत जल्दी फील होगा। ... तो स्वमान और अभिमान के अन्तर को भी चेक करो। बेहद का नाम, मान और शान को सदा इमर्ज रखो, मर्ज नहीं।"

अ.बापदादा 16.3.95

श्रीमत और स्वराज्य अधिकारी / श्रीमत और सच्ची स्वतन्त्रता

"अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं रखो लेकिन नेचुरल अटेन्शन हो।... ओरिजनल अभ्यास आत्मा को न्यारे हाने का है। सिर्फ अटेचमेन्ट न्यारा बनने नहीं देता है। वैसे आत्मा की ओरिजनल नेचर शरीर से न्यारे रहने की है।" अ.बापदादा 29.12.89

"अगर लास्ट में आये हो तो फास्ट जाना है। चाहे लास्ट में आये लेकिन सम्पन्न होने का और समाप्ति का समय सबका एक ही है। इसलिए चाहे नये हो या पुराने हो लेकिन मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ - सदा इस स्मृति का तिलक लगा हुआ ही है।... विश्व कल्याण की

जिम्मेवारी का ताजधारी हूँ।" अ.बापदादा 31.3.95

"भविष्य के राज्य अधिकारी से भी अब का सेवाधारी जीवन श्रेष्ठ है क्योंकि अभी बाप और बच्चों का साथ है। ... युक्तियुक्त सेवा करते हो तो कितनी खुशी होती है। ... सेवा में ये हलचल ही परिपक्व बनाती है, अनुभवी बनाती है।" अ.बापदादा 26.2.95

श्रीमत और कर्मेन्द्रियजीत

बाबा ने कहा है - स्वराज्य तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। अब उस अधिकार की अनुभूति कैसे करें अर्थात् स्वराज्य अधिकारी बनकर इस विश्व-नाटक का आनन्द कैसे लें, उसके लिए भी श्रीमत दी है और सदा स्वराज्य अधिकारी बनकर रहने की भी श्रीमत दी है क्योंकि स्वराज्य अधिकारी ही विश्व का राज्य अधिकारी बन सकता है और अभी संगमयुग पर परमानन्द का अनुभव कर सकता है।

बाबा ने आत्मिक स्वरूप का ज्ञान देकर देह से न्यारे होने की प्रक्रिया का जो ज्ञान दिया है और उसका जो विधि-विधान बताया है, वही स्वराज्य अधिकारीपन की अनुभूति का एकमात्र साधन है। उसका सही रीति से अभ्यास हो तो आत्मा का सहज ही अपनी कर्मेन्दियों पर शासन होगा और आत्मा किसी भी देश-काल-परिस्थिति में परमानन्द का अनुभव करेगी। ऐसे परमानन्द का अनुभव करने वाली आत्मा किसी भी परिस्थिति में इस संगमयुग पर तंग होकर शरीर छोड़ने का संकल्प नहीं करेगी, शरीर छोड़ने के लिए उतावली नहीं होगी। वह सदा इस संगमयुगी स्वराज्य का सुख अनुभव करेगी।

"पराधीन हर बात में मन्सा-वाचा-कर्मणा दुख की प्राप्ति में रहते हैं और जो अधिकारी हैं, वे अधिकार के नशे और खुशी में रहते हैं।" अ.बापदादा 17.5.69

"जमींदार अपने को इन्डिपेन्डेण्ट समझ बड़ा नशे में रहते हैं, नौकरी नाम तो नहीं है ना। ... बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं विश्व का मालिक बनाने के लिए, नौकरी के लिए नहीं पढ़ाते हैं।" सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

"जो संगमयुग पर अपना राजा बनता है, वह प्रजा का भी राजा बन सकता है।... संगमयुग पर ही सभी संस्कारों का बीज पड़ता है।" अ.बापदादा 18.6.69

"शिवबाबा के वर्से का पूरा अधिकारी अपने को समझते हो ? जो वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्होंका सर्व के ऊपर अधिकार होता है, वे कोई भी बात के अधीन नहीं होते हैं। अगर देह के, देह के सम्बन्धियों के, देह की कोई भी वस्तुओं के अधीन हैं तो ऐसे अधीन होने वाले अधिकारी नहीं हो सकते।" अ.बापदादा 24.1.70

"सदा स्वराज्य अधिकारी स्थिति में आगे बढ़ते चलो। स्वराज्य अधिकारी स्थिति ही निशानी है विश्व-राज्य अधिकारी बनने की।... अपने आपको एक दिन भी चेक करो तो मालूम पड़ जायेगा कि मैं राजा बनूँगा वा साहूकार बनूँगा वा प्रजा बनूँगा।... चेक करो - मन-बुद्धि-संस्कार इन तीनों पर स्व का राज्य है वा इन्हों के अधिकार से आप चलते हो ?"

अ.बापदादा 21.1.87

"बहुत काल के स्वराज्य अधिकारी बनने के संस्कार बहुत काल का भविष्य राज्य-अधिकारी बनायेंगे। ... अपने ही दर्पण में अपने तकदीर की सूरत को देखो। यह नॉलेज दर्पण है। यदि अभी ... तो अन्त में भी धोखा मिल जायेगा अर्थात् दुख की लहर जरूर आयेगी। अन्त में भी पश्चाताप के दुख की लहर आयेगी।" अ.बापदादा 21.1.87

"एक होते हैं राज्य-अधिकारी बनाने वाले, जिनको टीचर कहते हैं। वे राज्य कारोबार सिखलाने वाले बनेंगे लेकिन राज्य करने वाले नहीं बनेंगे। ... राज्य अधिकारी वे बनेंगे जो अभी से अपने स्वभाव, संस्कार और संकल्प के अधीन नहीं बनेंगे।"

अ.बापदादा 23.9.73

"राजयोग अर्थात् अभी राज्य चलाने वाले बनते हो। राज्य करने के संस्कार व शक्ति अभी से धारण करते हो। भविष्य 21 जन्म में राज्य करने की धारणा प्रैक्टिकल रूप में अभी आती है। संकल्प को आर्डर करो - स्टॉप तो स्टॉप कर सकते हो ? बुद्धि को डायरेक्शन दो कि शुद्ध संकल्प व अव्यक्त स्थिति व बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ तो क्या स्थित कर सकते हो ? ऐसे जो राजयोगी हैं, उनको कहा जाता है - फॉलो फादर।"

अ.बापदादा 30.6.73

"हर एक को अपनी जिम्मवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर जिम्मेवार है तो इससे सिद्ध होता है कि आप को भविष्य में उनकी प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। ये भी अधीन रहने के संस्कार हुए ना!... अधीन रहने वाला अधिकारी नहीं बन सकता है।" अ.बापदादा 30.5.73

"अधिकारी बनेंगे और अधीनता को मिटायेंगे"... चाहे लौकिक चाहे ईश्वरीय सम्बन्ध की भी अधीनता में न आना। सदा अधिकारी बनना है। यह स्लोगन सदैव याद रखना।"

अ.बापदादा 25.3.71

"राजतिलक भी यहाँ भृकुटी में दिया जाता है। ... तुम स्वराज्य कैसे प्राप्त कर सकते हो, वह रास्ता बाप बताते हैं। उसका नाम रख दिया है - राजयोग। ... बाप अभी हमको ज्ञान दे रहे हैं, हम अभी राजयोग सीखते हैं।" सा.बाबा 27.5.05 रिवा.

"जिनका अपनी आवश्यक और समीप की चेतन शक्तियों, संकल्पों अर्थात् मन और बुद्धि पर कन्टोल नहीं, अधिकार नहीं या विजय नहीं तो क्या वे विश्व के स्वराज्य का अधिकारी व विजयी रत्न बन सकते हैं ? जिस राज्य के मुख्य अधिकारी अपने अधिकार में न हों, क्या वह राज्य अटल, अखण्ड और निर्विघ्न चल सकता है ?" अ.बापदादा 2.5.74

"रोज अपने कर्मचारियों की दरबार लगाओ और चेक करो कि स्थूल कर्मेन्द्रियां और सूक्ष्म शक्तियाँ कन्ट्रोल में रहे ? ... रचना वा साधनों को निर्लेप होकर कार्य में लायें, ऐसे बेहद के वैरागी, सच्चे राजऋषि बने हो ?" अ.बापदादा 27.11.87

"जैसे साइन्स की शक्ति धरनी की आकर्षण से परे कर लेती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति इन सब हद की आकर्षणों से दूर ले जाती है। इसको कहते हैं बाप समान सम्पूर्ण सम्पन्न स्थिति।... कर्मेन्द्रियजीत अर्थात् मन-बुद्धि-संस्कार पर भी विजयी बनना।"

अ.बापदादा 27.11.87

"सदा स्वराज्य अधिकारी स्थिति में आगे बढ़ते चलो। स्वराज्य अधिकारी - यही निशानी है विश्व-राज्य अधिकारी बनने की। ... अपने आपको एक दिन भी चेक करो तो मालूम पड़ जायेगा कि मैं राजा बनूँगा वा साहूकार बनूँगा वा प्रजा बनूँगा। ... चेक करो मन-बुद्धि-संस्कार इन तीनों पर स्व का राज्य है वा इन्हों के अधिकार से आप चलते हो ?"

अ.बापदादा 21.1.87

"बहुत काल के स्वराज्य अधिकारी बनने के संस्कार बहुत काल का भविष्य राज्य-अधिकारी बनायेंगे। ... अपने ही दर्पण में अपने तकदीर की सूरत को देखो। यह नॉलेज दर्पण है। ... अन्त में भी धोखा मिल जायेगा अर्थात् दुख की लहर जरूर आयेगी। अन्त में भी पश्चाताप के दुख की लहर आयेगी।" अ.बापदादा 21.1.87

"बाबा बच्चों को जनरल में डायरेक्शन देंगे। एक-एक पर्सनल भी आकर कोई पूछे तो भी राय दे सकते हैं। ... बाप बच्चों को बहुत सहज युक्ति बताते हैं। बाप को याद करना है और शरीर का भान खत्म करना है।... मैं आत्मा शरीर से अलग हूँ - यह है डेड साइलेन्स।"

सा.बाबा 10.11.05 रिवा.

"तुम्हारा काम है कीड़े जैसे मनुष्यों को भूँ-भूँ कर मनुष्य से देवता बनाना, विषय सागर से क्षीर सागर में ले जाना। ... देहाभिमान आने से ही कर्मेन्द्रियों में शैतानी आती है। ... देही-अभिमानी बनने से चंचलता होती नहीं।" सा.बाबा 10.11.05 रिवा.

"अपने को चेक करो - कोई भी छोटी सी कर्मेन्दियां बन्धन में में तो नहीं बांधती ? अपना स्वमान याद है - मास्टर सर्वशक्तिवान, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, स्वदर्शन चक्रधारी ... समय की

समीपता को देखते हुए अपने को देखो - सेकेण्ड में सर्व बन्धनों से मुक्त हो सकते हो ?”

अ.बापदादा 30.11.05

“पहली स्वतन्त्रता है - देहभान से स्वतन्त्र। जब चाहे तब देह का आधार लें, जब चाहें तब देह से न्यारा जो जायें। देह की आकर्षण में नहीं आये। दूसरी बात - स्वतन्त्र आत्मा कोई भी पुराने स्वभाव और संस्कार के बन्धन में नहीं होगी।... साथ-साथ किसी भी देहधारी आत्मा के सम्बन्ध-सम्पर्क में आकर्षित नहीं होगी।” अ.बापदादा 30.11.05

“युक्तियुक्त राज्य दरबार लगाओ। ... रोज दिन समाप्त होते अपने सहयोगी कर्मचारियों को चेक करो। ... इसलिए पहले सदा कर्मेन्द्रियों को नॉलेज की शक्ति से चेन्ज करो। ... यह सफल राज्य अधिकारी की निशानी है।” अ.बापदादा 25.2.91

“मास्टर सर्वशक्तिमान राजा आत्मा को एक भी कर्मेन्दिय धोखा नहीं दे सकती। ... सदा चेक करो कि मैं सदा अकाल-तख्तनशीन स्वराज्य चलाने वाली राजा आत्मा हूँ ?”

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 3

“इस समय स्वराज्य के समय भी आपको बापदादा किस नीति से चलाते हैं ? स्नेह और श्रीमत। श्रीमत पर चलते रहते तो कोई भी सख्त ऑर्डर करने की आवश्यकता नहीं है। अगर स्वराज्य की नीति को भूलते हैं तो स्वयं, स्वयं को कलियुगी नीति में चलाते हैं।”

अ.बापदादा 12.11.92

“एक गीता में ही है श्रीमत भगवानुवाच है और कोई शास्त्र में श्रीमत भगवानुवाच नहीं है। ... जितना निश्चय है, उतनी खुशी बढ़ती है। बाप की मत पर चलना होता है। श्रीमत पर हमको यह स्वराज्य पद पाना है।” सा.बाबा 8.03.06 रिवा.

“मास्टर सर्वशक्तिमान राजा आत्मा को एक भी कर्मेन्दिय धोखा नहीं दे सकती। ... सदा चेक करो कि मैं सदा अकाल-तख्तनशीन स्वराज्य चलाने वाली राजा आत्मा हूँ ?”

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 3

“इस समय स्वराज्य के समय भी आपको बापदादा किस नीति से चलाते हैं ? स्नेह और श्रीमत। श्रीमत पर चलते रहते तो कोई भी सख्त ऑर्डर करने की आवश्यकता नहीं है। अगर स्वराज्य की नीति को भूलते हैं तो स्वयं, स्वयं को कलियुगी नीति में चलाते हैं।”

अ.बापदादा 12.11.92

“डबल तख्तधारी। आत्मा का अकालतख्त भी याद है और दिलतख्त भी याद है। ... बीच-बीच में चेक करो - मैं मालिकपन की सीट पर सेट हूँ ?... स्वयं भगवान आपको स्थिति की सीट पर बिठाता है।” अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 4

“युक्तियुक्त राज्य दरबार लगाओ। ... रोज दिन समाप्त होते अपने सहयोगी कर्मचारियों को चेक करो। ... इसलिए पहले सदा कर्मेन्द्रियों को नॉलेज की शक्ति से चेन्ज करो। ... यह सफल राज्य अधिकारी की निशानी है।” अ.बापदादा 25.2.91

“अभी तुमको कोई विकर्म नहीं करना है। भल मन्सा तूफान बहुत आयेंगे। अपनी आपेही परीक्षा लेनी है कि हमारी कर्मेन्द्रियां चलायमान तो नहीं होती हैं?... कर्मेन्द्रियों में चलायमानी होना भी देहाभिमान हुआ ना। तुमको कोई से भी डरना नहीं है, निर्भय बनना है। कभी भी कहाँ जाओ तो साक्षी होकर देखना है।” सा.बाबा 25.7.06 रिवा.

“फालो फादर। ब्रह्मा बाप ने सदा सारथी बन सारथी जीवन में अति न्यारी और प्यारी स्थिति का अनुभव कराया। ... चलते-फिरते चेक करो कि मैं सारथी अर्थात् सर्व कर्मेन्द्रियों को चलाने वाली न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित हूँ।” अ.बापदादा 9.12.89

“मन, बुद्धि वा संस्कार के वश हो जाते हो।... मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान “करावनहार“ मालिक हूँ। बिल्कुल अपने को कर्मेन्द्रियों से न्यारा समझ कर्म कराना।... आत्मा अलग मालिक और कर्मेन्द्रियां कर्मचारी अलग - यह अभ्यास जब चाहो तब होना चाहिए।”

अ.बापदादा 10.3.96

“बालक का अर्थ ही है मालिक। बाप समान स्वराज्य के भी मालिक बनो। सिर्फ वर्से को देखकर खुश नहीं हो लेकिन स्वराज्य अधिकारी बनो।... अधिकारी कभी अधीन नहीं रहेगा।” अ.बापदादा 9.1.96

“आपको श्रीमत की मज़बूत लगाम मिली हुई है। अगर लगाम ठीक है तो कुछ भी हलचल नहीं हो सकती। ... मन-बुद्धि साइट सीन के तरफ लग गई तो क्या होगा? लगाम ढीला होगा ना! लगाम ढीला होने से मन चंचलता करेगा। इसलिए श्रीमत का लगात सदा अपने अन्दर स्मृति में रखो।” अ.बापदादा 9.1.96

“बाप की श्रीमत हर कदम के लिए मिली है। श्रीमत सिर्फ ब्रह्मचारी बनो, ये नहीं है। हर कर्म के लिए श्रीमत है। चलना, खाना-पीना, सुनन-सुनाना सबकी श्रीमत मिली है। ... पहले मन के राजा बनो।” अ.बापदादा 9.1.96

“पहले मन के राजा बनो। चेक करो - अन्दर ही अन्दर ये मन्त्री अपना राज्य तो नहीं स्थापन कर रहे हैं? ... देखो ब्रह्मा बाप आदि में रोज़ ये दरबार लगाते थे ... ब्रह्मा बाप ने भी मेहनत की है ना! अटेन्शन रखा तब स्वराज्य अधिकारी सो विश्व के राज्य अधिकारी बने। ... सारी जीवन अपने पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध प्राप्त की। तो ब्रह्मा बाप को फॉलो करो।”

अ.बापदादा 9.1.96

"राज्य अधिकारी अर्थात् हर कर्मेन्द्रिय जीत। ... जो स्वयं पर विजय नहीं पा सकते हैं, वे विश्व पर कैसे विजय प्राप्त करेंगे ... इसलिए चेक करो - कर्मेन्द्रिय जीत, मन जीत कहाँ तक बने हैं ?"

अ.बापदादा 17.11.94

श्रीमत और स्वमान एवं सम्मान

बाबा ने हमको अपने स्वमान में रहने और सर्व का सम्मान करने की श्रीमत दी है। कैसे हम अपने स्वमान में रहें और सर्व का सम्मान करें, उसके लिए क्या धारणा आवश्यक है, उसका ज्ञान भी दिया है और उस स्थिति में रहने की श्रीमत भी दी है।

स्वमान अर्थात् आत्मा के अपने स्व-स्वरूप में स्थित होना। आत्मा, परमात्मा की वंशधर है, इसलिए आत्मा जब अपने स्व-स्वरूप में स्थित होती है तो सर्व ईश्वरीय गुण-धर्म उससे परलच्छित होते हैं। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है - अपने स्वमानों की लिस्ट निकालो, उनको याद कर उनमें स्थित हो तो सदा खुशी रहेगी और बाबा की याद रहेगी।

स्वमान में स्थित होने से इन्द्रियों की सर्व चंचलता खत्म हो जाती है, आत्मा सर्व प्रकार के कर्मभोग की वेदना से मुक्त होती है, उसको स्व-पिता परमात्मा, स्व-देश ब्रह्मलोक, स्व-धर्म शान्ति, स्व-कर्म सर्वात्माओं के प्रति स्नेह की आकर्षण स्वत: होगी।

"यह वेस्ट संकल्प का वज़न भारी होता है और बेस्ट थॉट्स का वज़न कम होता है। ... वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेकर रात तक दो शब्द याद रखो - स्वमान और सम्मान। स्वमान में रहना है और सम्मान देना है। ... दोनों का बैलेन्स चाहिए।"

अ.बापदादा 15.10.04

"जैसे आंखों में बिन्दी है ... ऐसे आत्मा वा बाप की स्मृति की बिन्दी दृष्टि-वृत्ति से गायब नहीं हो। फॉलो फादर करना है ना, तो जैसे बाप की दृष्टि-वृत्ति में हर बच्चे के लिए स्वमान है, सम्मान है, ऐसे ही अपनी दृष्टि-वृत्ति में भी हो। ... जो मन में आता है कि यह बदल जाये ... वह वृत्ति से बदलेंगे, बोलने से नहीं।"

अ.बापदादा 15.10.04

"सबको सम्मान देने वाले ही बापदादा की श्रीमत मानने वाले आज्ञाकारी बच्चे हैं। सम्मान देना ही ईश्वरीय परिवार का दिल का प्यार है। सम्मान देने वाला स्वमान में सहज ही स्थित हो सकता है क्योंकि जिन आत्माओं को सम्मान देता है, उन आत्माओं द्वारा जो दिल की दुआयें मिलती हैं, वह दुआओं का भण्डार स्वमान की याद सहज और स्वत: ही दिलाता है। इसलिए बापदादा चारो ओर के बच्चों को विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं - सम्मान दाता बनो।"

अ.बापदादा 2.11.04

"जहाँ स्वमान होता है, वहाँ अभिमान नहीं होता है। ... सदा यह स्मृति में रहता है कि इस समय एक बाप से लेने के और सभी को देना है। तुम आत्माओं को आत्माओं से लेना नहीं है परन्तु उनको देना है। ... जरा भी किसी प्रकार की लेने की इच्छा अपने स्वमान से गिरा देती है।"
अ.बापदादा 8.5.73

"अपने स्वमान की लिस्ट निकालो तो लिस्ट कितनी बड़ी है! उन एक-एक बात को लेकर अनुभव करते जाओ तो माया की छोटी-छोटी बातों में कमजोर नहीं बनेंगे।... जैसे समझते हो- "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ" तो संकल्प करने से स्थिति बन जाती है ना। लेकिन बनेगी उनकी जिनको अनुभव होगा।"
अ.बापदादा 21.1.72

"आज अल्पकाल का सुख भोगने वाली आत्मायें भी प्रकृति दासी के शो के रूप में दिखाई देती हैं। ... प्रख्यात हो रही हैं, इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए या हमें भी इन्हों के प्रमाण अपने में परिवर्तन करना चाहिए - यह संकल्प भी अगर आया तो उनको क्या कहेंगे ? क्या दाता के बच्चे भिखारियों की कापी करते हैं ?... लेकिन अन्चलि लेने वालों को देख सागर के बच्चे क्या हो जाते हैं - प्रभावित।"
अ.बापदादा 27.9.71

"जब कलियुग अन्त की आत्मायें भी अपनी सत्यता को प्रसिद्ध करने में निर्भय होकर स्टेज पर आते हैं तो पुरुषोत्तम संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ आत्मायें अपने को सत्य प्रसिद्ध करने में वायुमण्डल प्रमाण रूपरेखा क्यों बनाती हैं। ... फलक भी हो और झलक भी हो।"
अ.बापदादा 27.9.71

"डीटी से भी इस समय का गॉडली पोजीशन हाइएस्ट है। तो एक पोजीशन है कि हम गॉडली चिल्ड्रेन हैं और ब्रह्मा कुमार-कुमारियां भी हैं। यह हुआ साकारी पोजीशन और दूसरा है निराकारी पोजीशन। हम सभी सोल्स में हीरो पार्टधारी सोल्स श्रेष्ठ आत्मायें हैं।"
अ.बापदादा 20.8.71

"स्वमान को छोड़ मान प्राप्ति की इच्छा से सफलता नहीं होती है। मान की इच्छा को छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान आपके पिछाड़ी आयेगा।"
अ.बापदादा 11.7.71

"एक घड़ी का रोब सारे दिन की रूहानियत को गँवा देता है, इससे तो फौरन किनारा करना चाहिये। पुरूषों का यह रोब क्या जन्मसिद्ध अधिकार है ? हैं तो सब आत्मा ही ना! स्नेह की भी उत्पति तब होगी जब समझोंगे कि मैं आत्मा हूँ।"
अ.बापदादा 20.2.74

"एक स्वमान शब्द प्रैक्टिकल जीवन में धारण हो जाये तो सहज ही सम्पूर्णता को पा सकते हैं।... स्वमान में स्थित होना ही जीवन की पहेली को हल करने का साधन है।... "मैं कौन हूँ"

इस एक शब्द के उत्तर में सारा ज्ञान समाया हुआ है।" अ.बापदादा 22.9.75

"ऊंचे ते ऊंचे बाप के साथ ऊंच से ऊंच पार्ट बजाने वाले हो। सबसे बड़े स्वमान की बात तो यह है कि जो संगमयुग पर बाप को भी अपने स्नेह और सम्बन्ध की डोर में बांधने वाले हो।"
अ.बापदादा 22.9.75

"एक होती है अभिमान की वृत्ति, दूसरी है अपमान की वृत्ति। जो स्वमान में स्थित होता है और दूसरे को स्वमान देने वाला दाता होता है, उसमें यह दोनों वृत्तियां नहीं होती हैं।"
अ.बापदादा 6.12.87

"संकल्पमात्र भी स्वमान के प्राप्ति की इच्छा से स्वमान नहीं मिलेगा। निर्माण बनना अर्थात् 9पहले आप" कहना। निर्माण स्थिति स्वत: ही स्वमान दिलायेगी।... साकार ब्रह्मा बाप के जीवन में देखा - 9जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख सभी करेंगे।" अ.बापदादा 6.12.87

"जैसे आदि देव ब्रह्मा और आदि आत्मा श्रीकृष्ण, दोनों का अन्तर दिखाते हो और दोनों का साथ-साथ दिखाते हो ऐसे ही आप सब भी अपना ब्राह्मण स्वरूप और देवता स्वरूप दोनों को सामने रखते हुए देखो कि आदि से अन्त तक हम कितनी श्रेष्ठ आत्मायें रही हैं। तो बहुत नशा और खुशी रहेगी।" अ.बापदादा 11.3.83

"बाप ने बच्चों को अपने से भी ऊंचा स्वमान दिया। तो हरेक अपने को इतना स्वमानधारी समझते हो ? स्वमानधारी का विशेष लक्षण क्या होता है ? जितना स्वमानधारी होगा, उतना ही सर्व को सम्मान देने वाला होगा, उतना ही निर्मान और सर्व का स्नेही होगा। स्वमानधारी की निशानी है - बाप का प्यारा साथ में सर्व का प्यारा। हद का प्यारा नहीं लेकिन बेहद का प्यारा।" अ.बापदादा 15.11.05

"जैसे बाप ने सर्व बच्चों को स्वमान दिया, ऐसे ही स्वमानधारी बच्चे हर आत्मा को स्वमान से देखेंगे। सिर्फ देखेंगे नहीं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे। क्योंकि स्वमान देहाभिमान को मिटाने वाला है। ... देहाभिमान मिटाने का बहुत सहज साधन है - सदा स्वमान में रहना और सदा हर एक को स्वमान से देखना।" अ.बापदादा 15.11.05

"स्वमानधारी हर आत्मा की विशेषता को देख स्वमान देते हैं। उनकी दृष्टि, वृत्ति, कृत्ति में हर एक की विशेषता समाई हुई होती है। जो भी बाप का बना, वह विशेष आत्मा है। ... तो सदा स्वमान में स्थित रहना है, देहाभिमान में नहीं स्वमान में।" अ.बापदादा 15.11.05

"पूज्य आत्मा की निशानी है, वह कभी भी किसी भी वस्तु या व्यक्ति के पीछे झुकेगा नहीं।... उसका एक बाप के सिवाए कहाँ भी मन-बुद्धि का झुकाव नहीं होगा। रिगार्ड या नम्रता अलग चीज है लेकिन प्रभावित होना और चीज है।" अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 4

"तुमको बड़ा युक्ति से चलना है। एक-दो को रिगार्ड देना अच्छा है। लौकिक से भी तोड़ निभाना है परन्तु बुद्धि चली जानी चाहिए ऊपर। ... हमारा वह बेहद का बाप है, यह सब हमारे भाई-बहन हैं। बाकी लौकिक सम्बन्ध अनुसार कहना तो पड़ेगा ना।"

सा.बाबा 3.01.06 रिवा.

श्रीमत और अधिकार एवं कर्तव्य

अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जो समानान्तर चलते हैं तब ही गाड़ी सफलता पूर्व अपने गन्तव्य पर पहुँच सकती है। अधिकार की प्रधानता मानव को उदण्ड बना देती है और अधिकार की अनभिज्ञता और कर्तव्य प्रति अत्यधिक रुझान मनुष्य में दासता के बीज बोता है। वर्तमान समय जगत में मनुष्य अधिकार के प्रति अधिक जागरूक हो गये हैं और कर्तव्य से विमुख होते जा रहे हैं, जिससे जगत में परेशानियां बढ़ती जा रही हैं। परमात्मा पिता ने हमको दोनों का ज्ञान दिया है और दोनों के सन्तुलन के लिए श्रीमत दी है।

अपने कर्तव्य का ज्ञान देते हुए बाबा ने श्रीमत दी है जिन लौकिक मां-बाप ने जन्म दिया है, उनको और कोई सम्भालने वाला नहीं है तो उनकी भी सेवा करनी है। बच्चों आदि को जन्म दिया है तो उनकी भी पालना करनी है परन्तु सब श्रीमत अनुसार ही करना है, लगाव से नहीं।

"आप लॉ मेकर हो। आप जो कदम उठाते हो वह मानो लॉ बन रहा है। ... आप जो कदम उठायेंगे, आपको देखकर सारा विश्व फॉलो करेगा। ... ऐसी जिम्मेवारी समझकर सदा याद रखो - "जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देखकर सभी करेंगे"।" अ.बापदादा 14.5.70

"अधिकार भी सामने रखना है और निरहंकारिता का गुण भी सामने रखना है और उपकार करने का कर्तव्य भी सामने रखना है। ये तीनों ही बातें सदैव याद रखना है। ... तब यह ताज और तख्त सदैव कायम रहेगा।" अ.बापदादा 14.5.70

"सभी आत्माओं का एक ही समय यह जन्मसिद्ध अधिकार लेने का पार्ट नहीं है। परिचय तो जरूर मिलना है, पहचानना भी है लेकिन कोई का पार्ट अभी है, कोई का पीछे। ... बिन्दी रूप में न होने के कारण फर्ज भी मर्ज हो जाता है।" अ.बापदादा 26.1.70

"यह वेस्ट संकल्प का वज़न भारी होता है और वेस्ट थॉट्स का वजन कम होता है। ये वेस्ट थाट्स दिमाग को भारी कर देते हैं, पुरुषार्थ को भी भारी कर देते हैं। इसलिए शुभ-संकल्प जो स्व-उन्नति की लिफ्ट है, वह कम होने के कारण मेहनत की सीढ़ी चढ़नी पड़ती है।... वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेकर रात तक दो शब्द याद रखो - स्वमान और सम्मान। स्वमान में रहना है और सम्मान देना है।... दोनों का बैलेन्स चाहिए।"

अ.बापदादा 15.10.04

"सर्व शक्तियां बाप का वर्सा और वरदाता का वरदान हैं। बाप और वरदाता - इन डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। ... सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है।" अ.बापदादा 29.10.87

"समझने और करने इन दोनों में हकदार बनो, तब ही विश्व के, इस ईश्वरीय परिवार की प्रशंसा के हकदार बनेंगे। कोई भी बात के मांगने वाले मंगता नहीं बनो, दाता बनो। मान, शान, प्रशंसा, बड़ापन आदि मांगने की इच्छा मत करो।" अ.बापदादा 16.5.74

"सर्विस तो बच्चों को करनी है, सबको पैगाम देना है। इतना नशा चाहिए कि हमको भगवान पढ़ाते हैं, हम भगवान के साथ रहते हैं। ... बच्चे, अच्छे गुण धारण करो, कुल का नाम बाला करो।" सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

"त्रिमूर्ति शिवबाबा कहना है, सिर्फ शिव नहीं।... ऐसे-ऐसे नशे से बोलो तब काम कर सकते हो। नहीं तो देह-अभिमान में बैठ भाषण करते हैं तो किसको तीर नहीं लगता है।" सा.बाबा 18.10.05 रिवा.

"तुम बच्चों का फर्ज है सब बच्चों को शान्ति देना।... निश्चय न होने के कारण दूसरों को आप समान बना नहीं सकते। जो निश्चयबुद्धि हैं, वे समझते हैं - बाबा से हमको वरदान मिल रहा है।... कहने से आशीर्वाद नहीं मिलती है, पुरुषार्थ करो तो सबकुछ मिलेगा।" सा.बाबा 19.10.05 रिवा.

"तुम्हारे इन चित्रों में सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ आ जाता है। ... पढ़कर पढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। ... बाप कहते हैं - मैं तदवीर तो कराता हूँ परन्तु तकदीर भी हो ना। हर एक ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करते रहते हैं।" सा.बाबा 22.10.05 रिवा.

"बच्चों के सर्विस के ख्यालात चलने चाहिए। तुम्हारे ऊपर बहुत रेस्पान्सिबुलिटी है। अहिल्याओं, कुब्जाओं, भीलनियों, गणिकाओं सबका उद्धार करना है। ... तुम बच्चों को बहुत विशाल बुद्धि बनना है।" सा.बाबा 22.10.05 रिवा.

"बच्चों को लौकिक माँ-बाप का कर्जा भी उतारना है। लॉफुल चलना है। ... भाई-बहन विकार में तो जा नहीं सकते, इसलिए वह क्रिमिनल दृष्टि निकल जानी चाहिए।" सा.बाबा 29.11.05 रिवा.

"अनादि बाप ने आदि देव ब्रह्मा द्वारा आदि ब्राह्मणों की रचना की और आदि ब्राह्मणों ने अनेक ब्राह्मणों की वृद्धि की। ... अपने अनादि-आदि नाम, रूप, गुण और अब ब्राह्मण जीवन के सर्व

गुणों के स्मृति स्वरूप बनो। ऐसे ही कर्तव्यों की स्मृति इमर्ज करो।"

अ.बापदादा 18.1.91

"वर्तमान समय अशान्त आत्माओं को शान्ति देना - यही सभी का विशेष कार्य है।... इससे स्व की स्थिति भी स्वत: ही शक्तिशाली हो जायेगी।... चाहे अन्य धर्म की आत्मायें हों लेकिन हैं तो अपनी वंशावली। ... इसलिए अटेन्शन प्लीज़।"

अ.बापदादा 10.12.92 दादियों से

"किसी भी घटना का समाचार तो सब इन्ट्रेस्ट से सुनते हो... अशान्ति के समय आप पूर्वज आत्माओं का और विशेष कार्य स्वत: ही हो जाता है। ... अपनी वृत्ति द्वारा, मन्सा-शक्ति द्वारा विशेष सेवा की ? ... ऐसे समय पर सेकण्ड में अपनी सेवा पर अलर्ट हो जाना चाहिए।"

अ.बापदादा 10.12.92

"अभी भी विश्व में हलचल है और यह हलचल तो समय प्रति समय बढ़नी ही है। ऐसे समय आप आत्माओं का फर्ज है आत्माओं में विशेष शान्ति की, सहन-शक्ति की हिम्मत भरना, लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट देना। ... श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा परिस्थितियों को पार करने की शक्ति अनुभव कराओ।" अ.बापदादा 10.12.92

"इस बेगमपुर के राज्य अधिकारी के आगे वह विश्व का राज्य भी कुछ नहीं है। ... सदा रुहानी नशे में बेग़मपुर के बादशाह हैं - इस अधिकार में रहो, नीचे नहीं आओ। ... बाप ने हर ब्राह्मण बच्चे को तख्तनशीन राजा बना दिया है।" अ.बापदादा 12.11.92

"संगमयुग की विशेषता है कि तीन रूप की प्राप्ति - एक वर्से के रूप में, दूसरा पढ़ाई को सोर्स ऑफ इन्कम कहते हैं ... और तीसरा है वरदान के रूप में। तो वर्सा भी है, इन्कम भी है और वरदान भी हैं। ... तो अधिकार को सदा स्मृति में रख हर कदम उठाओ।"

अ.बापदादा 14.12.94

श्रीमत और अहंकार-हीनता

अहंकार और हीनता दोनों आत्मा के बड़े शत्रु है, जिनसे ग्रसित आत्मा व्यर्थ चिन्तन में आकर अनेकानेक विकर्म करके दुख को पाती है। बाबा ने इन दोनों से मुक्त होने के लिए मुरलियों में अनेकानेक रूप से श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - तुमको अपनी प्राप्तियों, गुण-विशेषताओं का भी कोई अहंकार नहीं होना चाहिए क्योंकि ये सब तुमको ईश्वर प्रदत्त हैं, प्रभु-प्रसाद हैं..., साथ ही ये भी कहा है - कब भी तुम्हारे जीवन में हीनता नहीं आनी चाहिए। तुम सर्वशक्तिवान परमात्मा की अविनाशी सन्तान हो और विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी

पार्टधारी हो। हर आत्मा का ड्रामा में अपना पार्ट है, जो वह बजा रही हैं।

श्रीमत और साइलेन्स एवं साइन्स

साइलेन्स के बल से नये विश्व की स्थापना होती है और साइन्स के बल से पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया का निर्माण (Construction) होता है। बाबा ने दोनों के कार्य और महत्व का ज्ञान दिया है, साइलेन्स का साइन्स के साथ क्या सम्बन्ध है, उसका भी ज्ञान दिया है और साइलेन्स बल को बढ़ाने के लिए श्रीमत भी दी है।

"उन्हों की है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। तुम जितना साइलेन्स में जायेंगे, उतना वे विनाश के लिए अच्छी-अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे। ... कमाल है बाप के स्वर्ग स्थापन करने की।"

सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

"अगर कोई सही रीति से एक मिनट भी साइलेन्स का अनुभव करे तो वह एक मिनट की साइलेन्स का अनुभव बार-बार उनको स्वत: ही खींचता रहेगा क्योंकि सभी को शान्ति चाहिए लेकिन उसकी विधि नहीं आती है।" अ.बापदादा 4.03.86

"यह है साइलेन्स बल, इसमें तुमको कुछ बोलना नहीं है। याद के बल से तुम बाबा से विश्व की बादशाही लेते हो। साइन्स बल से विनाश होता है, फिर उसी साइन्स से सतयुग में सुख देखेंगे। ... ये साइन्स वाले भी आकर कुछ ज्ञान लेंगे।" सा.बाबा 15.8.06 रिवा.

"सभी धर्म की आत्माओं को एक परिवार में लाना - यह है आप ब्राह्मणों का वास्तविक कार्य। ... साइन्स की शक्ति का प्रभाव और साइलेन्स की शक्ति का प्रभाव दोनों जब प्रत्यक्ष हों तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना।" अ.बापदादा 4.03.86

"साइन्स वालों का है हाईएस्ट जिस्मानी हुनर, तुम्हारा है हाईएस्ट रुहानी हुनर। इससे तुम शान्तिधाम जाते हो। ... अभी तुम इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को, ड्युरेशन आदि को जानते हो। तो तुमको अन्दर फखुर होना चाहिए कि बाबा हमको क्या सिखलाते हैं।" सा.बाबा 19.11.04 रिवा.

"साइन्स वाले एक स्थान पर बैठे अपने अस्त्रों द्वारा एक सेकण्ड में विनाश कर सकते हैं तो क्या आप शक्तियों का यह साइलेन्स बल कहाँ भी बैठे एक सेकण्ड में काम नहीं कर सकता ? ... आपका शुद्ध संकल्प आत्माओं को खींचकर सामने लायेगा।"

अ.बापदादा 2.7.70

"संगम पर कौनसा श्रृंगार है ? सफलता की माला यथायोग्य तथा शक्ति हरेक के गले में पड़ी

हुई है। ... बापदादा आप से क्या बोलने वाले हैं, यह कैच कर सकती हो ? आजकल बाप बुद्धि की ड्रिल कराने आते हैं।" अ.बापदादा 2.7.70

"प्रदर्शनी में आप लोग चित्र दिखाते हो ना कि रावण ने पांचों तत्वों पर विजय प्राप्त की है, उसमें काल भी दिखाते हो ना ! जब रावण ने अर्थात् रावण की शक्ति साइंस ने अभी भी काफी हद तक तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है, तो साइंस आपसे पॉवरफुल हुई ना ! जब साइंस की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत दे रही है तो साइलेन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत क्या अन्त में देगी ?" अ.बापदादा 5.12.74

"साइंस वाले, समय को और अपनी एनर्जी अर्थात् मेहनत को, साधनों के विस्तार को, सूक्ष्म और शार्ट कर रहे हैं। कम-से-कम एक सेकेण्ड तक पहुंचने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और सफलता को पा रहे हैं ... तो ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिये।" अ.बापदादा 30.6.74

"विशेष अन्तर यह होगा कि जो महारथी होगा, वह कोई भी समस्या या आने वाले परीक्षा को आने से पहले ही कैच करेगा। विघ्नों को पहले ही से कैच करने के कारण वह तूफान व समस्या को सामने आने न देगा। जैसे आजकल साइंस ...पहले से ही मालूम पड़ जाता है।"
अ.बापदादा 6.2.74

"जैसे साइंस वाले हर वस्तु की गुह्यता में जाते हैं और नई-नई इन्वेन्शन (खोज) करते हैं। ऐसे ही अपने निजी स्वरूप और उसके अनादि गुण व संस्कार इन एक-एक गुण की डीपनेस (गहराई) में जाना चाहिए।जैसे आनन्द स्वरूप कहते हैं, तो आनन्द स्वरूप की स्टेज क्या है। जैसे वे लोग सागर के तले में जाते हैं और जितना अन्दर जाते हैं, उतने ही उन्हे नये-नये पदार्थ प्राप्त होते हैं ऐसे ही आप जितना अन्तर्मुख होकर स्वयं में खोये हुए रहोगे तो आपको बहुत नये-नये अनुभव होंगे।" अ.बापदादा 25.1.74

"उनका है साइन्स बल, तुम्हारा है साइलेन्स बल। उनका भी बुद्धि-बल है और तुम्हारा भी बुद्धि-बल है। ... वह है साइन्स बुद्धि, तुम्हारी है साइलेन्स बुद्धि। वे विनाश के निमित्त बनते हैं। ... तुम बाप को याद करने और स्वदर्शन चक्रधारी बनने से चक्रवर्ती राजा बनते हो।"
सा.बाबा 21.6.05 रिवा.

"बहुत समय की प्राप्ति के लिए बहुत समय से पुरूषार्थ भी करना हैं। क्या ऐसे बहुत समय का पुरूषार्थ है ? साइन्स वालों को महाविनाश के लिये ऑर्डर करें ? एक सेकण्ड की ही तो बात हैं, इशारा मिला और किया। क्या ऐसे ही शक्ति सेना तैयार है ? एक सेकेण्ड का इशारा है - सदा देही-अभिमानी। अल्पकाल के लिये नहीं, सदा काल के लिए। ऐसा इशारा मिले तो

आप क्या देही अभिमानी हो जायेंगे या फिर उस समय साधन ढूंढेंगे।"

अ.बापदादा 23.1.74

"साइलेन्स की शक्ति से किसके वायब्रेशन द्वारा स्पष्ट समझ में आ जायेगा कि उसके मन में क्या है। ... आत्म ज्ञानियों को भी यह सिद्धि होती है कि कोई जबान से न भी बोले लेकिन वह क्या बोलना चाहते हैं, वह समझ जाते हैं।" अ.बापदादा 8.12.75

"जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए किसी का दुख-दर्द समाप्त कर लेती है, तो पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति दुख-दर्द समाप्त नहीं कर सकती !"

अ.बापदादा 14.11.87

"जीते जी अशरीरी बन जाओ, इसको डेड साइलेन्स कहा जाता है।... तुम भी जीते जी मर जाओ, शान्त हो जाओ। ... हठयोगी हठ से प्राणायाम चढ़ा लेते हैं तो जैसे मर जाते हैं। वह है आर्टिफिशियल शान्ति। तुम जानते हो - हमारा स्वधर्म ही शान्त है।"

सा.बाबा 20.7.06 रिवा.

श्रीमत और वॉयसलेस (VOICELESS) एवं वाइसलेस (Viceless) स्थिति

वॉयसलेस अर्थात् आवाज़ से परे और वाइसलेस अर्थात् निर्विकारी स्थिति अन्तिम विजय का आधार है, परमात्मा के डायरेक्शन को कैच कर उस अनुसार कार्य करके सफलता को पाने का आधार है। इसलिए बाबा अन्तर्मुख होकर मनन-चिन्तन और निर्विकारी बनने के लिए सदा श्रीमत देते हैं।

"वायरलेस सेट की सेटिंग कैसे होगी ? बिल्कुल वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। ज़रा अंश के भी अंश-मात्र विकार, वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा। इसलिए महीन रूप से स्वयं के स्वयं ही चेकर बनो। तब ही प्रकृति और पाँच विकारों की अन्तिम विदाई के वार को विजयी बन सामना कर सकेंगे।" अ.बापदादा 14.9.75

"मास्टर सर्वशक्तिवान का नशा कम रहता है, इसलिए एक सेकेण्ड में आवाज में आना और एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जाना - इस शक्ति की प्रैक्टिकल झलक चेहरे पर नहीं देखते हैं। ... जब यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा तब समझो सम्पूर्णता आई है।"

अ.बापदादा 2.4.70

श्रीमत और त्याग एवं भाग्य

सच्चा त्याग क्या है और त्याग से कैसे भाग्य बनता है और बना सकते हो, उसके लिए बाबा श्रीमत देकर भाग्य बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं और ब्रह्मा बाबा का उदाहरण भी हमारे सामने रखा है। वास्तव में संगमयुग पर त्याग भी भाग्य है अर्थात् जिन आत्माओं में त्याग करने की इच्छा-शक्ति है, सच्चे दिल से त्याग करते हैं, वे उसी समय भाग्य को अनुभव करते हैं, भाग्य का सुख अनुभव करते हैं।

"जैसे स्थूल धन वा स्थूल पद के प्राप्ति की चमक चेहरे से मालूम होती है। ... ऐसे ही स्वराज्य अधिकारी बच्चों के चमकते हुए चेहरे दिखाई दें, मेहनत के चिन्ह नहीं दिखाई दें, प्राप्ति के चिन्ह दिखाई दें। ... अभी त्याग दिखाई देता है, भाग्य नहीं दिखाई देता है।"

अ.बापदादा 9.10.87

"इस भाग्य को अभी से भी समय आने पर ज्यादा समझेंगे कि हम आत्मायें कितनी भाग्यवान हैं। ... जब विधाता के बच्चे, वरदाता के बच्चे बन गये। विधाता अर्थात् देने वाला।"

अ.बापदादा 9.10.87

वास्तव ये सृष्टि कर्म और फल का खेल है। जो जिस भावना से त्याग करता है, उसको उस अनुरूप फल अवश्य ही प्राप्त होता है।

"राजऋषि अर्थात् एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग्य का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य, उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स।... बेहद अर्थात् मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों के राज्य अधिकारी।"

अ.बापदादा 27.11.87

"कोई भी तस्वीर की विशेषता नयन और मुस्कराहट से होती है।... नयन अर्थात् रुहानी विश्व-कल्याणी, रहमदिल, परोपकारी दृष्टि। अगर दृष्टि में यह विशेषतायें हैं तो भाग्य की तस्वीर श्रेष्ठ है। ... तस्वीर बनाने की कलम बाप ने सबको दी है। वह कलम है - श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान।" अ.बापदादा 11.4.86

"सदा वाह-वाह के गीत गाओ। वाह बाबा, वाह तकदीर, वाह मीठा परिवार, वाह श्रेष्ठ संगम का सुहावना समय।" अ.बापदादा 31.12.86

"दादियों ने खुशी-खुशी से जो त्याग किया, उसी के भाग्य का फल अभी खा रही हो।... अभी ऐसे फलस्वरूप क्वालिटी निकालो। ... क्वालिटी और क्वान्टिटी दोनों 9 लाख तक तो जाना ही चाहिए।" अ.बापदादा 5.12.89

श्रीमत और त्याग-तपस्या-सेवा

त्याग-तपस्या और सेवा का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। तीनों साथ-साथ कैसे हों और तीनों में सफलता कैसे हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है और ब्रह्मा बाबा का उदाहरण भी हमारे सामने रखा अर्थात् ब्रह्मा बाबा के द्वारा तीनों का प्रैक्टिकल स्वरूप भी दिखाया।

"स्वयं भी आगे बढ़ो और पीछे वालों को भी आगे बढ़ाओ, इसी को ही कहते हैं पर-उपकारी। ... हर परिस्थिति में, हर कार्य में, हर सहयोगी संगठन में जितना निःस्वार्थपन होगा, वह उतना ही पर-उपकारी होगा। ... जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, लास्ट समय की स्थिति "उपराम और पर-उपकार" यह विशेषता सदा देखी। स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया। न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की और न रहने का स्थान स्वीकार किया।... यही सम्पन्नता और सम्पूर्णता की निशानी है।" अ.बापदादा 11.4.86

"ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक प्रैक्टिकल रूप में करके दिखाया। ... लास्ट दिन तक महावाक्य उच्चारण किये। ... त्याग भी लास्ट दिन तक किया। अपना पुराना कमरा नहीं छोड़ा। ... सदा अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत अव्यक्त बने, फरिश्ता बने। ... लास्ट तक अपने कर्तव्य में पूर्ण रहे, पत्र भी लिखे ... अखण्ड महादानी का प्रैक्टिकल रूप दिखाया। लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे। ... आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है।"

अ.बापदादा 31.12.05

"प्रतिज्ञा का अर्थ ही है कि जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा न जाये। कुछ भी त्याग करना पड़े। ..., बाडी-कॉन्सेस का "मैं" रॉयल रूप में यह मैंपन प्रतिज्ञा को कमजोर करता है। ... शिवरात्रि पर यह मैंपन की बलि चढ़ानी है।... तो प्रतिज्ञा मन से करो और दृढ़ करो।"

अ.बापदादा 18.2.93

"कुर्बान सभी हुए हैं लेकिन स्नेह के पीछे जो बाप ने कहा, वह करने के लिए कुर्बानी करनी पड़ती है अर्थात् अपनापन छोड़ना पड़ता है। अपनेपन में चाहे अभिमान हो वा कमजोरी हो, दोनों का त्याग करना पड़ता है, इसको कहते हैं कुर्बानी।" अ.बापदादा 31.3.88

"ब्रह्मा बाप का पहला कदम है आज्ञाकारी और दूसरा कदम है सर्वंश त्यागी। ... देह के सम्बन्धों का त्याग बड़ी बात नहीं है लेकिन देह के पुराने स्वभाव-संस्कार का त्याग जरूरी है। ... स्वभाव-संस्कार का सर्व वंश सहित त्याग करना, इसको कहा जाता है सर्वंश त्यागी। ... "मैं त्यागी हूँ", इस अभिमान का भी त्याग।" अ.बापदादा 19.1.95

श्रीमत और बाप का दिल-तख्त एवं विश्व के राज्य का तख्त

बाबा नई दैवी दुनिया का रचता है, हम उनके बच्चे बनते हैं तो उस नई दुनिया का राज्य तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है परन्तु बाबा ने कहा है - जो अभी बाप के दिल-तख्तनशीन बनते हैं, वे ही भविष्य रत्न जड़ित तख्त के अधिकारी बनते हैं। वर्तमान का बाप का दिल-तख्त भविष्य राजतख्त से पद्मगुणा श्रेष्ठ और सुखदायी है। जो अभी बाप के दिलख्तनशीन नहीं बना, वह भविष्य के राज्य-अधिकारी भी नहीं बन सकता है।

"पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्युचर - इन तीनों का ही खेल चलता रहता है। ... आपकी बीती यादगार स्वरूप बन जाये, कीर्तन अर्थात् कीर्ति गाते रहें। ... प्रजेन्ट, प्रजेन्ट (उपहार) बन जाये। ... स्नेह की दृष्टि, स्नेह का सहयोग, स्नेह की भावना, मीठे बोल, दिल के श्रेष्ठ संकल्प का साथ - यही प्रजेन्ट्स बहुत हैं। ... फ्यूचर को अपने फीचर्स से प्रत्यक्ष करो। ... जो भी देखे, उसको आपका ताज और तख्त अनुभव हो। लाइट (हल्का और प्रकाश) का ताज दिखाई दे। तख्तधारी की निशानी है ही "निश्चिन्त" और "नशा"। निश्चित विजयी का नशा और निश्चिन्त स्थिति - यह है बाप के दिलतख्तनशीन आत्मा की निशानी।"

अ.बापदादा 31.12.86

"जो बाबा की दिल पर हैं, वे ही ताउसी तख्त पर बैठते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ... अपनी जांच करनी है कि मैं बाबा के दिल पर चढ़ा हुआ हूँ? माला का दाना बन सकता हूँ?"

सा.बाबा 6.12.05 रिवा.

"एक अकाल तख्त और दूसरा बाप का दिल तख्त। जो अभी सदा डबल तख्त नशीन है, वह सदा विश्व का भी तख्तनशीन होता है। तो चेक करो - सारे दिन में डबल तख्तनशीन रहे?"

अ.बापदादा 25.2.91

"भगवान के दिल तख्तनशीन बनने का भाग्य मिला है, इससे बड़ा भाग्य कोई हो सकता है? ... सदा यह याद रखो कि हम दिलाराम के दिल तख्तनशीन हैं। यह स्मृति ही तिलक है। ... स्मृति ही नशा दिलाती है। ... ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ कर्म सेवा है।"

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 2

"सदैव समझो - हम ब्राह्मण परिवार के ताज के हीरे हैं। ... इतना अपना महत्व समझो, साधारण नहीं समझो। महान हो। ... जो भी बाप के साथी हैं, वे सब बाप के दिल-तख्त के अधिकारी हैं।"

अ.बापदादा 31.12.95

"हद के नाम के पीछे नहीं जाओ। बाप के दिल में आपका नाम सदा ही श्रेष्ठ है। ... मैजारिटी को यही नाम-मान-शान गिराता भी है और यही नाम-मान-शान नशा चढ़ाता भी है। ... तो सदा अपने नाम की महिमा याद रखो कि मेरा नाम बाप के दिल पर है, विजय माला में है। ... परमात्मा के दिल तख्तनशीन हैं, इससे बड़ी शान क्या है!" अ.बापदादा 16.3.95

श्रीमत और बलि-प्रथा एवं यथार्थ बलि

भक्ति मार्ग में शिव पर और देवियों पर बलि चढ़ाते हैं, काशी कलवट भी खाते थे। अभी बाबा ने बलि का अर्थ भी बताया है और सच्चा-सच्चा बलि चढ़ने के लिए श्रीमत भी दी है। बाबा ने कहा है जो बलि चढ़ेगा, वही महाबलि बनेगा।

"भक्ति मार्ग में कुर्बान जाते हैं, बलि चढ़ते हैं। यहाँ बलि चढ़ने की बात तो है नहीं। हम तो जीते जी मरते हैं गोया बलि चढ़ते हैं। ... जीते जी बलि चढ़ना, वारी जाना वास्तव में अभी की बात है। ... यहाँ जीवघात की बात नहीं।" सा.बाबा 24.1.05 रिवा.

"जब कोई भी प्रतिज्ञा करनी होती है तो हाथ में जल उठाते हैं... जो जितना स्वयं न्योछावर बने हैं, वे उतना ही औरों को बनाते हैं।... उसका यादगार है काशी कलवट खाने का।"

अ.बापदादा 5.3.70

"आगे जब काशी कलवट खाते थे तो बहुत प्रेम से खाते थे। बस, हम मुक्त हो जायेंगे, ऐसे समझते थे। अभी तुम बाप को याद करते-करते चले जाते हो शान्तिधाम। ... इस याद के बल से पाप कटते हैं।" सा.बाबा 2.6.05 रिवा.

"मेरेपन और मैंपन को समर्पण करना, इसको ही कहते हैं बलि चढ़ना।"

अ. बापदादा 7.3.86

"अभिमान को ही स्वमान समझ लेते हो लेकिन इस अल्पकाल की विजय में बहुत काल की हार समाई हुई है। ... इसलिए देहाभिमान के अंशमात्र सहित समर्पित हो। इसको कहा जाता है शिव बाप के ऊपर बलि चढ़ना।" अ.बापदादा 1.3.92

श्रीमत और स्वर्ग-नर्क

स्वर्ग और नर्क क्या है, उनकी वास्तविकता क्या है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है

और हम कैसे नर्क में रहते हुए स्वर्ग के लायक बनें, उसके लिए श्रीमत भी दी है। स्वर्ग में आत्माओं का जीवन सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म होता है तो हमको बाबा की श्रीमत पर चलकर ऐसा बनने का पुरुषार्थ करना है।

बाबा ने बताया है स्वर्ग-नर्क केवल कल्पना नहीं है, जैसा कि दुनिया में बहुत से लोग समझते हैं परन्तु वास्तविकता है परन्तु स्वर्ग और नर्क इस दुनिया के परे नहीं है लेकिन यह दुनिया ही पहले स्वर्ग होती और बाद में नर्क बनती है, फिर बाप आकर श्रीमत देकर इसे ही स्वर्ग बनाते हैं।

"हम आत्मायें श्रीमत पर इस भारत में स्वर्ग की स्थापना कर रही हैं। यह मनुष्य को देवता बनाने का हुनर सीखना होता है। ... समझाने में बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"शिवबाबा की श्रीमत से स्वर्ग बनता है और आसुरी रावण की मत से नर्क बनता है। अब फिर से स्वर्ग बनना है, श्रीमत से। जरूर जो कल्प पहले आये होंगे, वे ही आयेंगे, श्रीमत से ऊंच बनेंगे।" सा.बाबा 12.10.06 रिवा.

श्रीमत और स्वर्ग की राजाई

श्रीमत और सतयुग के राजा-रानी, दास-दासी एवं साहूकार प्रजा

शिवबाबा अभी आकर गीता ज्ञान देकर पतित दुनिया का विनाश और सतयुगी दुनिया की स्थापना करते हैं और सतयुगी दुनिया की राजाई की स्थापना के लिए राजयोग सिखाते हैं। सतयुग में राजा-रानी, दास-दासी, प्रजा कैसे और कौन-कौन बनेंगे, उसका भी ज्ञान देते हैं। राजाई पद कैसे पा सकते हैं, उसके लिए भी श्रीमत देते हैं।

"श्रीमत पर चलना चाहिए। बाप कहते हैं - एक तो देही-अभिमानी बनो और बाप को याद करो। ... यह याद रहना चाहिए कि हम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं।"

सा.बाबा 6.9.05 रिवा.

"बाप को तो रहम पड़ता है परन्तु दास-दासियाँ बनने की भी नूँध है। कोई तो विचार भी नहीं करते - हमको ऐसा बनना है। दास-दासियां बनने से तो साहूकार बनें तो अच्छा है तो दास-दासियां भी रख सकेंगे।" सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

"विश्व का राजा वे बनेंगे जो विश्व की हर आत्मा से सम्बन्ध जोड़ेंगे और सहयोगी बनेंगे। जैसे

बापदादा विश्व के स्नेही और सहयोगी बनें वैसे बच्चों को भी फॉलो फादर करना है। तब विश्व महाराजन की जो पदवी है, उसमें आने के अधिकारी बन सकते हो।”

अ.बापदादा 2.7.70

“जो जितना चेकर होगा, वह उतना ही मेकर बन सकता है। इस समय आप लॉ मेकर भी हो और न्यू वर्ल्ड के मेकर भी हो तथा पीस मेकर भी हो।... जो जितना चेकर और मेकर बनता, वही फिर रूलर भी बनता है।” अ.बापदादा 25.6.70

“यह नॉलेज भी सभी एकरस धारण नहीं कर सकते। कोई एक परसेन्ट, कोई 95 परसेन्ट धारण करते हैं। यह तो समझ की बात है कि सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी घराना होगा तो उसमें राजा-रानी, प्रजा सभी प्रकार के होंगे। प्रजा में भी सभी प्रकार के होते हैं।”

सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

“हर कार्य में विश्व-कल्याणकारी बन कार्य करते हो या अपने ही कल्याण में लगे हुए हो ? ... बहुत समय के संस्कार वालों को ही बहुत समय का राज्यभाग्य प्राप्त होगा। यह स्लोगन सदा याद रखना - “अभी नहीं तो कभी नहीं” ।” अ.बापदादा 6.6.73

“जो समीप आत्मायें होती हैं, जिनका बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फैमिली में आते हैं। ... प्रजा और भक्त में क्या अन्तर होगा ? प्रजा ज्ञान और योग की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी ... भक्त जो होंगे, वे कभी भी अपने को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे।... उनमें मांगने के संस्कार होंगे, भक्त कभी भी डायरेक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते।”

अ.बापदादा 14.7.74

“जो स्वयं, स्वयं का राजा नहीं बनता वा स्वयं को राजा नहीं मानता, उसको विश्व राजा कैसे मानेंगे।... जब सर्व कर्मेन्द्रियों पर राज्य है अर्थात् सारी प्रजा पर राज्य है तो समझो विश्व-राजन हैं।” अ.बापदादा 11.10.75

“जो ज्ञान वा स्थूल धन सेवा अर्थ लगाने वाले हैं लेकिन प्रजा (स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों) पर राज्य नहीं करते अर्थात् उनमें रूलिंग पॉवर नहीं है तो समझो वे साहूकार प्रजा बनने वाले हैं, राजा नहीं। ... दास बन जाते, उदास हो जाते तो समझो दास-दासी बनने वाले हैं। यह कर्मों की गुह्य गति है।” अ.बापदादा 11.10.75

“तुमको आपही अपने को राजतिलक देना है, श्रीमत पर चलना है। ... बाप कहते हैं - बच्चे सर्विसएबुल और कल्याणकारी बनो। ... सूर्यवंशी डिनायस्टी में जाना, यही बड़ी स्कॉलरशिप है।” सा.बाबा 17.9.05 रिवा.

“मिलीटरी वालों को बाबा समझाते थे - तुम लड़ाई करते शिवबाबा की याद में रहेंगे तो स्वर्ग में आ सकेंगे। बाकी ऐसे नहीं कि स्वर्ग में राजा बनेंगे।... फिर जो ज्ञान सिखाया जाता है, वह पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे तो स्वर्ग की राजाई मिल जायेगी।” सा.बाबा 17.9.05 रिवा.

“बच्चे जब यहाँ बैठते हो तो ऐसे भी नहीं कि सिर्फ शान्ति में रहना है। शान्ति के साथ स्वदर्शन चक्रधारी बन राजाई को भी याद करना है। तुमको शान्ति भी चाहिए तो सुख भी चाहिए।”

सा.बाबा 31.8.05 रिवा.

“सतयुग में कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहती है, जिसकी प्राप्ति की चिन्ता हो। ... ये बड़ी समझने की बातें हैं। जितना समझेंगे, जितना जास्ती औरों को समझायेंगे, उतना प्रजा बनती जायेगी और ऊंच पद पायेंगे।” सा.बाबा 7.10.05 रिवा.

“बच्चों को पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए नई दुनियां में ऊंच पद पाने का।... आत्मा ने शरीर छोड़कर जाकर दूसरा जन्म लिया फिर चिन्ता क्यों करनी चाहिए।... अब तुम्हारा काम है पढ़ने से। कैसे मरेंगे, क्या होगा... और बातों में क्यों जाना चाहिए।”

सा.बाबा 1.11.05 रिवा.

“बाप को और 84 के चक्र को याद करना है तो चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। आप समान बनायेंगे तब तो प्रजा पर राज्य करेंगे। ... धन्धे आदि से कुछ टाइम निकाल कर बगीचे में एकान्त में बैठना चाहिए।” सा.बाबा 10.11.05 रिवा.

“यह ईश्वरीय मत अर्थात् श्रीमत तुम बच्चों को ही मिलती है, जिससे तुम श्रेष्ठ बनते हो।... सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनेंगे। जो नापास होते हैं वे चन्द्रवंशी बन जाते हैं। किसमें नापास होते ? योग में।” सा.बाबा 6.12.05 रिवा.

“अगर एक बाप बिन्दु को याद करो तो अन्य दोनों बिन्दु सहज ही याद आ जायेंगे।... स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।... तो अपने सर्व खज़ानों से भण्डारे भरपूर करते जाओ, जो कोई भी आये तो खाली हाथ नहीं जाये, भरपूर होकर जाये।”

अ.बापदादा 26.3.93 पार्टी 5

“सभी राजयोगी हो तो प्रजा कहाँ से आयेगी ? ... सिर्फ भविष्य का राज्य नहीं, भविष्य से पहले अब स्वराज्य अधिकारी बने हो। अपने स्वराज्य के राज्य कारोबार को चेक करते हो ? ... आपके कोई भी कर्मेन्द्रियों रूपी राज कारोबारी आपको परवश तो नहीं बना देते हैं ?”

अ.बापदादा 18.11.93

“बाप की राय पर नहीं चलेंगे तो सौतेले ठहरे, वे प्रजा में चले जायेंगे। ... राजधानी में आना

चाहते हो तो श्रीमत पर चलना पड़े।... अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत।"

सा.बाबा 19.4.06 रिवा.

"बापदादा कहते हैं - हर एक बच्चे को बाप ने विचित्र दर्पण दिया है, उस दर्पण में अपने भविष्य का चित्र देख सकते हो कि मैं कौन! ... वह दर्पण है - वर्तमान समय की स्वराज्य स्थिति का दर्पण। जितना वर्तमान समय स्वराज्य अधिकारी हैं, उस अनुसार ही विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे।... अपने वर्तमान स्थिति के स्वराज्य अधिकारी के दर्पण में चेक करो।"

अ.बापदादा 18.1.06

"सिर्फ सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानना भी कम्पलीट नॉलेज नहीं है। पहले तो मूलवतन को जानना पड़े, जहाँ आत्मायें रहती हैं। ... ये सब समझने और समझाने की बातें हैं। तुमको जो धन मिलता है, वह फिर दान करना है। ... सारा मदार है धारणा पर। जितनी धारणा करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।" सा.बाबा 25.3.06 रिवा.

"ऐसे श्रेष्ठ बाप की श्रीमत पर कोई चले तो गॉरन्टी है कि वह जरूर ऊंच वर्सा पायेंगे। ... बच्चों में इतनी ताकत नहीं है, जो श्रीमत पर चल सकें। श्रीमत पर नहीं चलते तो जरूर रावण मत पर हैं।" सा.बाबा 18.03.06 रिवा.

"सतयुग में है ही वाइसलेस, सम्पूर्ण निर्विकारी। वहाँ बच्चे योगबल से पैदा होते हैं, विकार वहाँ होता ही नहीं। ... जो श्रीमत पर पवित्र रहते हैं, वे ही बाप की मत पर चल विश्व की बादशाही का वर्सा पाते हैं।" सा.बाबा 21.02.06 रिवा.

"डीटी वर्ल्ड सावरन्टी तुमको बाप से वर्से में मिल सकती है, अगर बाप की मत पर यह अन्तिम जन्म पवित्र बनेंगे तो। ... बच्चों को अपने कल्याण के लिए खर्चा तो करना ही है। बिगर खर्चे राजधानी स्थापन नहीं हो सकती।" सा.बाबा 20.02.06 रिवा.

"तुम विश्व के मालिक महाराजा-महारानी थे... अभी तुम सीख रहे हो कि हम राजाई कैसे चलायेंगे। ... अभी जो श्रीमत मिलती है, वह सतयुग में भी कायम रहती है।"

सा.बाबा 23.01.06 रिवा.

"बुद्धि में सदैव यही रहना चाहिए कि कैसे बहुतों का कल्याण करें। बाहर वाले प्रजा में दास-दासी बनेंगे, यहाँ वाले फिर राजाओं के दास-दासी बनेंगे।... बाप रहमदिल, दुख हर्ता सुख कर्ता है तो बच्चों को भी बनना है। सबको बाप का परिचय देना है।"

सा.बाबा 12.9.06 रिवा.

"पतित राजाई मिलती है दान-पुण्य करने से। यहाँ तो इस संगमयुग पर ज्ञान और योग बल से 21 जन्म के लिए राज्य पाते हो।... जो बहुत मेहनत करेंगे, बहुतों को नॉलेज देंगे, वे

राजा-रानी बनेंगे।”   सा.बाबा 12.10.06 रिवा.

श्रीमत और नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करना

बाबा हमको नर्क से स्वर्ग में जाने का रास्ता बताते हैं तो हमारा पुरानी दुनिया का सबकुछ नई दुनिया में ट्रान्सफर भी करते हैं, करने के लिए श्रीमत देते हैं। उसके आधार पर ही हमको सतयुग में सबकुछ प्राप्त होता है।

“बच्चे, अपने धन से थोड़ा स्टॉक रखो युक्ति से, बाकी सब वहाँ के लिए ट्रान्सफर कर दो। सब तो ट्रान्सफर नहीं कर सकते हैं। गरीब ही जल्दी ट्रान्सफर कर देते हैं।... बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज।”   सा.बाबा 9.9.04 रिवा.

“बाप गरीब बच्चों को साहूकार बनने की युक्ति बताते हैं। मीठे बच्चे, तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह ट्रान्सफर कर दो। यहाँ तो कुछ भी रहना नहीं है। यहाँ जो ट्रान्सफर करेंगे, वह नई दुनिया में तुमको सौगुणा होकर मिलेगा। ... घर-घर में युनिवर्सिटी कम हास्पिटल खोलो, जिससे हेल्थ और वेल्थ मिलेगी।”   सा.बाबा 27.3.05

“दान किया तो फिर उससे ममत्व मिटा देना चाहिए क्योंकि तुम जानते हो हम भविष्य 21 जन्मों के लिए बाप से लेते हैं। ... धनी शिवबाबा है, वह इनके द्वारा यह कराते हैं। ... जितना हो सके अपना बैग-बैगेज ट्रान्सफर कर दो।”   सा.बाबा 26.4.05 रिवा.

“यह ड्रामा में नूँध है कि जो जितना करते हैं, वह उतना पाते हैं। अभी सब कुछ नई दुनिया में ट्रान्सफर करना है। इनको देखो, कितनी बहादुरी की। ... बाबा ने तो फट से दे दिया, सोचा नहीं। फुल पॉवर दे दी।... बच्चों आदि का कुछ भी ख्याल नहीं किया। देने वाला ईश्वर है तो फिर हम किसी का रेस्पान्सिबुल थोड़ेही रहेंगे।”   सा.बाबा 13.4.05 रिवा.

“यहाँ तो बाप ऐसे नहीं कहेंगे कि तुम फण्ड्स (चन्दा) इकट्ठा करो। नहीं, यहाँ तो जो बीज बोयेंगे, 21 जन्म के लिए उसका फल पायेंगे।”   सा.बाबा 29.8.05 रिवा.

“बोलो - हम ब्रह्मा कुमार-कुमारियां अपने ही तन-मन-धन से श्रीमत पर सेवा कर रामराज्य स्थापन कर रहे हैं।... अपना पैसा भी सफल कर अपना कल्याण करो तो भारत का भी कल्याण होगा। तुम जानते हो - हम श्रीमत पर फिर से अपनी राजधानी स्थापन करते हैं।”

सा.बाबा 16.8.05 रिवा.

“जैसे बाप का पार्ट है सबका कल्याण करना, वैसे हमारा भी पार्ट है सबका कल्याणकारी

बनना। बाबा ने कल्याणकारी बनाया है। ... यह भी जानते हो कि यह सब विनाश हो जाना है तो क्यों नहीं बहुतों के कल्याण अर्थ काम में लगा दो।" सा.बाबा 26/28.3.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - बच्चे तुम अपना सब कुछ एक्सचेन्ज करो। तुम्हारा कखपन हमारा, हमारा सब तुछ तुम्हारा देह सहित जो कुछ है, वह सब मेरे को दे दो। मैं तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों को पवित्र बना दूँगा और फिर राजाई पद भी दूँगा। ... तुम सिर्फ मेरी मत पर चलो।"

सा.बाबा 19.6.06 रिवा.

"सारी दुनिया पर ब्लिस करना, यह बाप का ही काम है। ... बाप समझाते हैं - यह तुम्हारा सब मिट्टी में मिल जाना है, इसलिए इसको सफल कर लो। तुम यह रुहानी हॉस्पिटल-कम-युनिवर्सिटी खोलते जाओ, जहाँ सब एवरहेल्दी-एवरवेल्दी बनेंगे। इनसे बहुत इन्कम होती है।" सा.बाबा 20.5.06 रिवा.

श्रीमत और समय का ज्ञान और उसका महत्व

वर्तमान समय क्या है, उस समय का जीवन में क्या महत्व है, उसको हम कैसे सदुपयोग करें, यदि हम समय को बर्बाद करते हैं तो उसका परिणाम क्या होगा - यह सब ज्ञान परमात्मा ने दिया है और उसको सफल करने के लिए श्रीमत दी है, जिससे हमारे में समय को सफल करने का शक्ति आई है। इस पुरुषोत्तम संगमयुग का एक-एक क्षण कितना महान है, इसका आभास भी परमात्मा ने ही कराया है, तब ही हमारा समय और स्वांस सफल हो रहा है। ब्रह्मा बाबा ने अपना हर सेकेण्ड कैसे सफल किया, इसलिए बाबा ने ब्रह्मा बाबा को फॉलो करने की श्रीमत दी है।

"ऐसे भी नहीं सोचना कि अभी समय पड़ा है, पुरुषार्थ कर लेंगे। लेकिन समय के पहले समाप्ति करके और इस स्थिति का अनुभव प्राप्त करना है। अगर समय आने पर इस अव्यक्त स्थिति का अनुभव किया ... समय समाप्त तो अव्यक्त स्थिति का अनुभव भी समाप्त हो जायेगा।" अ.बापदादा 24.1.70

"अगर समय के आधार पर ठहरे तो प्राप्ति कुछ भी नहीं होगी। समय के पहले बदलने से अपने किये का फल मिलेगा। जो करेगा वह पायेगा। समय प्रमाण किया तो वह हुई समय की कमाल। ... सारे कल्प की तकदीर इस घड़ी बनानी है। ऐसे ध्यान देकर चलना है। सारे कल्प की तकदीर बनने का समय अब है।" अ.बापदादा 25.1.70

"समय और स्वयं दोनों की रफ्तार को देखो।... फिर यह नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, समय इतना तेज चला गया। कई बच्चे समझते हैं कि अभी थोड़ा ढीला पुरुषार्थ है तो

अन्त में तेज कर लेंगे लेकिन बहुत काल का अभ्यास अन्त में सहयोगी बनेगा।"

अ.बापदादा 15.12.04

"वर्तमान समय भी बहुत बड़ा खजाना है क्योंकि वर्तमान समय में जो कुछ प्राप्त करना चाहो, जो वरदान लेना चाहो, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाना चाहो, उतना बना सकते हैं। अब नहीं तो कब नहीं।" अ.बापदादा 15.12.04

"समय की रफ्तार तेज है। जैसे समय किसके लिए भी रुकता नहीं, चलता ही रहता है। वैसे ही अपने आपसे पूछो कि स्वयं भी कोई माया के रुकावट में रुकते तो नहीं हो?"

अ.बापदादा 18.7.72

"हम आत्मा हैं और बेहद के बाप के बच्चे हैं - यह कब भूला न देना। ... पहले-पहले बाप का ही परिचय देना चाहिए। वह आत्माओं का बाप है, वही गीता का भगवान है। ... बाप तुम बच्चों को कहते हैं - तुम अपना वेल्युबुल टाइम मत गँवाओ। नॉलेज पात्र को ही देनी है।"

सा.बाबा 13.11.05 रिवा.

"अगर कोई कहे, यह तुम्हारी कल्पना है तो एकदम छोड़ देना चाहिए। कल्पना समझने वाला कुछ भी समझेगा नहीं। ... बहुत प्यार और नम्रता से समझाकर रवाना कर देना चाहिए।"

सा.बाबा 13.11.05 रिवा.

"इसमें गफलत वा टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। ... इसमें अन्तर्मुखता बहुत चाहिए, इसलिए कछुए का भी मिसाल दिया जाता है।" सा.बाबा 28.11.05 रिवा.

"समय की समीपता प्रमाण स्वयं को हद के बन्धनों से मुक्त कर सम्पन्न और समान बनो।"

अ.बापदादा 30.11.05

"समय, संकल्प, ज्ञान, स्थूल तन सर्व खज़ानों को अगर योग के प्रयोग की रीति से प्रयोग करो तो हर खजाना बढ़ता रहेगा। ... प्रयोग की रीति अर्थात् कम खर्च बालानशीन। ... जैसे बापदादा कम समय में प्राप्ति की अनुभूति ज्यादा कराता है।"

अ.बापदादा 26.10.91

"दैवी कर्म भी चाहिए। कोई भी भ्रष्ट कर्म नहीं करना चाहिए, टाइम वेस्ट नहीं करना है। ... बाप पढ़ाने आया है, वही पतित-पावन है। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए।"

सा.बाबा 25.8.05 रिवा.

"यह परमात्म-श्रीमत ही पालना है। बिना श्रीमत अर्थात् परमात्म-पालना के एक कदम भी नहीं उठा सकते। ऐसी पालना सिर्फ अभी ही प्राप्त है, सतयुग में भी नहीं मिलेगी।"

अ.बापदादा 3.10.92

"अपने को हर कदम में पद्मों की कमाई करने वाले पद्मापद्म भाग्यवान समझते हो ? ... संगमयुग बड़े-ते-बड़ी कमाई के सीज़न का युग है। ... जो समय के महत्व को जानते हैं, वे स्वत: ही महान बनते हैं। स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है।"

अ.बापदादा 18.1.90 पार्टी

श्रीमत और सफल कर सफलतामूर्त बनना

श्रीमत और संग्रह-वृत्ति अर्थात् संग्रह का संस्कार

गायन है - किसकी दबी रही धूल में, किसकी राजा खाये। किसकी लूटे चोर, किसकी जलाये आग। वर्तमान समय महाविनाश का है, जिसमें इन आंखों से जो भी देखते हैं, वह सब खत्म हो जाने वाला है। हम अपने तन-मन-धन को, समय-स्वांस-संकल्प सबको हम कैसे सफल करें, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा की श्रीमत पर सफल करने वाले ही इस जीवन में भी सफलतामूर्त बनते हैं और उसके फलस्वरूप बाबा से भविष्य 21 जन्म के लिए भी मिलेगा।

संग्रह का संस्कार आत्मा को धन को सफल करने नहीं देता है परन्तु बाबा ने सृष्टि के विधि-विधान का जो ज्ञान दिया है, उसके अनुसार जैसे नदी का पानी बहता है तो एक तरफ जाता है तब ही दूसरी तरफ से आता है। यदि जाना बन्द हो जाये तो पानी रुक जाता है और समयान्तर में गन्दा हो जाता है। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है - तुम अपना तन-मन-धन सब सफल करो। धन भी सफल करोगे तो आपेही आवश्यकतानुसार समय पर आपको अवश्य मिलेगा।

"कोई जो कुछ करता है सो अपने लिए ही करता है। बाप भी कोई मेहर नहीं करते हैं। बाबा बच्चों को डायरेक्शन देते हैं, उनके ही कल्याणार्थ। यही उनकी मेहर है। ... बाप तो आये ही हैं मदद करने।" सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

"समय प्रमाण इस नये वर्ष में सभी को विशेष यह लक्ष्य रखना है कि जो भी खजाने प्राप्त हैं- समय है, संकल्प है, गुण हैं, ज्ञान है, शक्तियाँ हैं ... सबसे बड़ा खजाना संकल्प है। श्रेष्ठ संकल्प, शुद्ध संकल्प सभी प्राप्तियों का आधार है। इन सभी खजानों को हर रोज सफल करना है। खूब बांटो। दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो। सफल करना अर्थात् सफलता को

प्राप्त करना।” अ.बापदादा 31.12.2000

“भगवान को तुम्हारे पैसे की क्या दरकार रखी है। बाप तो जानते हैं इस पुरानी दुनिया में जो कुछ है, सब भस्म हो जायेगा। बाबा क्या करेंगे ? बाबा के पास तो फुरी-फुरी से तलाव हो जाता है। बाप के डायरेक्शन पर चलो, हॉस्पिटल कम युनिवर्सिटी खोलो।”

सा.बाबा 5.2.05 रिवा.

“तुम बच्चों को बाप श्रीमत देते हैं - मीठे बच्चे, अपना सब कुछ धनी के नाम पर सफल कर लो। ... यह दुनिया ही खत्म होनी है इसलिए धनी के नाम जितना हो सके सफल करो। धनी है शिवबाबा। ... जिनकी तकदीर में है, वे खर्च करते रहते हैं। ... इनको फॉलो करो।”

सा.बाबा 14.7.05 रिवा.

“बच्चों को विचार-सागर मन्थन करना चाहिए कि कैसे सर्विस बढ़े। ... शुभ कार्य आपही करना है। ... बाबा तो दाता है, बाबा थोड़ेही किसको कहेंगे कि यह करो, इस कार्य में इतना लगाओ।” सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

“70 वर्ष मना रहे हो। बापदादा सिर्फ एक शब्द चाहता है - एक शब्द है - सफल करो और सफलमूर्त बनो। जो भी खजाने हैं, शक्तियाँ हैं, संकल्प हैं, बोल हैं, कर्म भी शक्ति है, समय भी खजाना है। सबको सफल करना है। चाहे स्थूल धन चाहे अलौकिक खज़ाने, सबको सफल करना है।” अ.बापदादा 15.11.05

“संस्कार को भी सफल करो। आत्मा के जो आदि-अनादि ओरिजिनल संस्कार हैं, उनको इमर्ज करो, उल्टे संस्कारों का संस्कार करो।” अ.बापदादा 15.11.05

“अभी बाप कहते हैं - तुम कौड़ियों के पिछाड़ी टाइम वेस्ट मत करो। यह कहते हैं - हम भी टाइम वेस्ट करते थे। हमको भी बाबा ने कहा - अब तो तुम मेरा बनकर यह रुहानी धन्धा करो, तो सब कुछ झट छोड़ दिया और इस रुहानी धन्धे में लग गये।”

सा.बाबा 21.11.05 रिवा.

“व्यर्थ नहीं गंवाया, वह अलग बात है लेकिन यह चेक करो कि सफल कितना किया ? ... ज्ञान, गुण, शक्तियां, स्वांस, समय, संकल्प बाप की देन हैं ... प्रभु-प्रसाद को अपना मानना - यह अभिमान और अपमान करना है ... अपने ईश्वरीय संस्कारों को भी सफल करो तो व्यर्थ संस्कार स्वत: ही चले जायेंगे।” अ.बापदादा 3.4.91

“आपोजीशन पोजीशन को दृढ़ बनाती है। ... अन्तिम दिन तक तन से पत्र-व्यवहार द्वारा सेवा की, मुख से महावाक्य उच्चारण किये। अन्तिम दिवस भी समय, संकल्प, शरीर को सफल किया।” अ.बापदादा 31.12.92

"सदा सफलता का विशेष साधन है - हर सेकण्ड, हर श्वांस, हर खज़ाने को सफल करना। ... सफल करना अर्थात् वर्तमान के लिए सफलता और भविष्य के लिए जमा करना है।"

अ.बापदादा 31.12.92

"अभी जितना समय, स्वांस, संकल्प, ज्ञान, गुण, शक्तियों के सफल करते हो, उतना ही उस रूप में ये सब सुखदायी रूप में प्राप्त होते हैं।" अ.बापदादा 31.12.92

"इस नये वर्ष में जो भी खजाने हैं - ज्ञान का, शक्तियों का, गुणों का, श्रेष्ठ संकल्प का, सब एक तो सफल करो और दूसरा जमा करो।" अ.बापदादा 31.12.05

"सर्व खज़ानों को सफल करते जाओ तो सफलता आपही आपके आगे आयेगी। सफल करना ही सफलता प्राप्त करना है। ... जितना सफल करेंगे, उतना बढ़ता जायेगा। ... ब्राह्मण जीवन का सबसे बड़े ते बड़ा खजाना है सन्तुष्टता। जहाँ सन्तुष्टता है, वहाँ सबकुछ है।"

अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 5

"संगमयुग का सेकेण्ड गँवाना अर्थात् पदम गँवाना। इस वेल्यू को सदा सामने रखते हुए सफल करते जाओ। ... सफलता का आधार है - व्यर्थ न गँवाकर सफल करना। ऐसे नहीं कि व्यर्थ नहीं गँवाया लेकिन सफल किया। ... मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क से सफल जरूर करना है।" अ.बापदादा 18.02.93 पार्टी 2

"अगर स्वयं सन्तुष्ट हो तो खर्चा सफल हुआ। घबराओ नहीं। ... बाकी कोई सीजन का फल है, कोई हर समय का फल है। ... श्रीमत प्रमाण कार्य किया, तो ये श्रीमत को मानना भी एक सफलता है।" अ.बापदादा 27.2.96 पार्टी

श्रीमत और लाइट-माइट हाउस एवं सर्च-लाइट स्थिति

श्रीमत और डबल लाइट स्थिति

बाबा हमको ज्ञान देते हैं और विश्व-कल्याण की सेवा के लिए श्रीमत भी देते हैं और प्रेरणा भी देते हैं। अपनी स्थिति द्वारा सेवा के लिए दो बातें विशेष बोलते हैं - बच्चे, लाइट-हाउस, माइट-हाउस, सर्च-लाइट बनो। सर्च-लाइट, माइट-हाउस, लाइट-हाउस स्थिति क्या है, उसका बाबा ने ज्ञान भी दिया है और हमारी ये स्थिति कैसे बनें, उसके लिए बाबा अनेक प्रकार की युक्तियाँ बतायी हैं।

"तुमको लाइट हाउस भी कहा जाता है, बाप को भी लाइट हाउस कहा जाता है। ... बाप को कहते हैं - हमको लिबरेट करो, सेलवेज करो। तो बाप कहते हैं - इस याद की यात्रा से तुम

पार हो जायेंगे।" सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

"तुम जब यहाँ बैठते हो तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का स्वदर्शन चक्र फिराना चाहिए। तुम लाइट हाउस हो ना।... लाइट हाउस बनने से तुम अपना भी कल्याण करते हो और दूसरों को भी रास्ता बताते हो। ... वास्तव में सच्ची सेवा यह है - सभी का बेड़ा पार करना है।" सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

"अभी सर्च-लाइट, लाइट-हाउस बनना है। ... सर्च-लाइट वे बन सकेंगे, जो स्वयं को सर्च कर सकते हैं। जितना स्वयं को सर्च कर सकेंगे, उतना ही सर्च-लाइट बनेंगे। इसके लिए विलपॉवर चाहिए।" अ.बापदादा 2.7.70

"बाप को याद करने से ज्ञान आप ही इमर्ज हो जाता है। जो बाप को याद करता है, उनको हर कार्य में बाप की मदद मिल ही जाती है। ... अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं तो वह नॉलेज ही किस काम की! ... ईश्वरीय नॉलेज क्या बनायेगी ? ईश्वरीय स्थिति।"

अ.बापदादा 24.1.70

"जैसे कि आइने में देखते हो तो स्पष्ट रूप दिखाई देता है, वैसे ही नॉलेज रूपी दर्पण में, अपना यह रूप स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव हो। चलते-फिरते और बात करते, ऐसे महसूस हो कि "मैं लाइट-रूप हूँ, मैं फरिश्ता चल रहा हूँ और मैं फरिश्ता बात कर रहा हूँ", तो ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा।" अ.बापदादा 15.9.74

"लाइट और माइट देने वाले दाता हाउस तब बन सकेंगे जब उनके अपने पास इतना स्टॉक जमा हो। अगर स्वयं सदा लाइट स्वरूप नहीं बन सकते व लाइट स्वरूप में सदा स्थित नहीं हो सकते, तो वह अन्य आत्माओं को लाइट हाउस बन लाइट नहीं दे सकते, सर्वशक्तियों को यूज नहीं कर सकते तो वे माइट हाउस बन अन्य आत्माओं को र्सवशक्तियों का दान कैसे कर सकते हैं?" अ.बापदादा 18.6.74

"इस समय तुम चेतन्य लाइट-हाउस हो। तुम्हारी एक आंख में मुक्तिधाम और दूसरी आंख में जीवनमुक्तिधाम है।... तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम ज्ञानवान होकर सबको रास्ता दिखाते हो।... यह तुम्हारा मोस्ट वैल्युबुल टाइम है।... सबको रास्ता बताना तुम्हारा फर्ज है।" सा.बाबा 3.6.05 रिवा.

"लाइट और माइट हाउस दोनों में अन्तर है। .. बेहद के त्यागी .. बेहद के निरन्तर सेवाधारी .. सदैव बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले। .. इन तीनों स्टेजेज से पार करने वाले ही लाइट हाउस और माइट हाउस बन सकते हैं।" अ.बापदादा 27.9.75

"मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। ... आप

सबका वायदा क्या है ? एक बाप, दूसरा न कोई।... एक बाप में संसार है, एक बाप से सर्व सम्बन्ध, एक बाप से सर्व प्राप्तियाँ हैं। ... परिवार में भी एक-दो में आत्मिक स्नेह, स्नेह नहीं, आत्मिक स्नेह।" अ.बापदादा 30.11.05

"ये बेहद का खेल है, जिसको कहते हैं ड्रामा और इस ड्रामा के आप सभी हीरो एक्टर हो। ... डबल लाइट का अर्थ ही है सबकुछ बाप हवाले करना। तन-मन-धन सब तेरा। ... तो कितने लकी हो, जो परमात्म प्यार के पात्र बन गये।"

अ.बापदादा 23.12.93 पार्टी 2

"जैसे लाइट-हाउस, माइट-हाउस ... ऐसे आप सेकेण्ड में लाइट हाउस बन चारो ओर लाइट फैला सकते हो ... तीसरे नेत्र द्वारा चारो ओर वरदाता-विधाता बन नजर से निहाल कर सकते हो। तीसरा नेत्र इतना क्लीन और क्लीयर है। कमजोरी है - "मैं और मेरा" ... एक होमवर्क - दो मैं समाप्त कर एक मैं रखनी है। ... दूसरा होमवर्क - क्रोध को छोड़ना है।"

अ.बापदादा 28.3.06

"तुम बच्चों को ज्ञान रत्नों से झोली भरनी चाहिए। कोई भी प्रकार का संशय नहीं आना चाहिए।... बाप जो श्रीमत देते हैं, उस पर चलना चाहिए। ... तुम जैसे लाइट हाउस हो। अभी तुम बच्चों को और सबको रास्ता बताना है।" सा.बाबा 23.01.06 रिवा.

"अगर श्रीमत पर हैं तो बाप के हवाले हैं। सच्ची दिल से बाप के हवाले सबकुछ कर दिया तो उसकी निशानी वे सदा डबल लाइट होंगे, कोई बोझ नहीं होगा। ... तन-मन-धन सब ट्रान्सफर कर दो।" अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 3

"आन्ध्र प्रदेश कोई ऐसी इन्वेन्शन करो जो थोड़े समय में आत्मायें अनुभूति की प्राप्तियां ज्यादा अनुभव करें ... लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन ऐसा प्रकाश फैलाओ, जो सबको दिखाई दे कि मैं आत्मा हूँ और बाप आ चुका है।" अ.बापदादा 14.12.94 आन्ध्र प्रदेश

श्रीमत और विश्व-बन्धुत्व अर्थात् ईश्वरीय परिवार

"यह बेहद के बाप की फेमिली है ... तुम ईश्वरीय फेमिली, गुप्त दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हो। ... यह है रुहानी प्रवृत्ति मार्ग। सतयुग में ईश्वरीय फेमिली नहीं कहेंगे, वहाँ दैवी फेमिली हो जाती है। ... ऐसे-ऐसे अपने से बातें करते विचार सागर मन्थन करना चाहिए।"

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

"तुम्हें सवेरे-सवेरे उठकर ऐसे-ऐसे ख्याल करने चाहिए, फिर देखो तुमको कितनी खुशी

रहती है। जो भी श्रीमत मिलती है, उस पर चलने से तुमको बहुत खुशी होगी। ईश्वरीय फैमिली की याद आयेगी तो आसुरी फैमिली से दिल हट जायेगी।" सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

श्रीमत और आत्मिक स्नेह / श्रीमत और अपकारी पर उपकार

विश्व बन्धुत्व की भावना भारतीय सभ्यता का प्राण है। इस भावना का आधार क्या है, यह अभी बाप ने बताया है और ऐसी स्थिति धारण करने के लिए अनेकानेक प्रकार से श्रीमत दी है। बाबा ने ज्ञान दिया है - आत्मायें सभी आपस में भाई-भाई हैं, सबका बाप एक परमपिता परमात्मा है। अन्तर्निहित ये भावना ही भक्ति मार्ग में भी काम करती है। विश्व इतिहास को देखें तो भारत ही एक ऐसा देश है, जिसने कभी किसी पर चढ़ाई नहीं की है। ये संस्कार कहाँ से आया, ये अभी पता पड़ा है। बाबा ने हमारे अन्दर जो भाई-भाई का संस्कार भरा, वही हमको ऐसा करने के लिए सारे कल्प प्रेरता रहता है। इस स्थिति के लिए बाबा की श्रीमत है।

"इस गोल्डन जुबली से क्या श्रेष्ठ गोल्डन संकल्प किया ? ... हर सेकेण्ड गोल्डन हो, हर संकल्प गोल्डन हो, सदा हर आत्मा के प्रति स्नेह के खुशी के सुनहरे पुष्पों की वर्षा करते रहो। चाहे दुश्मन भी हो लेकिन स्नेह की वर्षा दुश्मन को भी दोस्त बना देगी।"

अ.बापदादा 16.2.86

"जैसे द्वापर में आप सबने बाप की ग्लानि की, लेकिन बाप ने ग्लानि भी गायन समझ कर स्वीकार की और ग्लानि के रिटर्न में भक्ति का फल-ज्ञान दिया, न कि घृणा की। ... ऐस श्रेष्ठ तकदीरवार बच्चे बाप समान हर आत्मा को अपने से भी आगे बढ़ाने की शुभ भावना रखते हुए विश्व-कल्याणकारी बनेंगे।" अ.बापदादा 9.9.75

"जब अपकारियों पर भी उपकार करना है तो संगठन में भी एक-दूसरे के प्रति रहम की भावना रहे। अभी रहम की भावना कम रहती है क्योंकि आत्मिक स्थिति का अभ्यास कम है।" अ.बापदादा 9.12.75

"देह की दृष्टि के बजाय देही की दृष्टि परिवर्तन करना, व्यक्त सम्पर्क को अव्यक्त-अलौकिक सम्पर्क में परिवर्तन करना - इसी में ही कमी होने से सम्पूर्ण स्टेज को नहीं पा सकते। ... कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के रुप में आपके सामने परीक्षा के रुप में आवे लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार वा स्वभाव धारण कर सकते हो।" अ.बापदादा 24.12.72

"ब्राह्मण कथा वा ज्ञान सुना कर स्थापना तो बहुत जल्दी कर लेते हो, लेकिन विनाश और पालना का जो कर्तव्य है उसमें और अटेन्शन चाहिए। पालना करने के समय कल्याणकारी भावना वा वृत्ति रख कर कोई भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा पर अपनी पालना से उसको उपकारी बना सकते हो।" अ.बापदादा 12.3.72

"अपकारी पर उपकार करने वाले का गायन है। उपकारी पर उपकार करना - यह बड़ी बात नहीं है। आपको गिराने की कोशिश करे ... फिर भी आपको उसके प्रति सदा शुभचिन्तक का अडोल भाव हो, बात पर भाव न बदले।" अ.बापदादा 19.7.72

"संस्कारों की समानता वाली सखी और ग्लानि करने वाली दोनों के लिए अन्दर स्नेह और सहयोग में अन्तर न हो। इसको कहा जाता है। अपकारी पर उपकार की दृष्टि अथवा विश्व कल्याणकारी बनना।" अ.बापदादा 29.8.71

"हमारी गलती कोई दूसरा फैलायेगा तो बुरा लगेगा। इसी प्रकार दूसरे की गलती को भी अपनी गलती समझ फैलाना नहीं चाहिए। व्यर्थ संकल्प नहीं चलाने चाहिए बल्कि उनको भी समा देना चाहिए। इतना एक-दो में फेथ हो।" अ.बापदादा 9.12.75

"गायन है - निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सो।... बेहद का बाप कहते हैं - हमारी निन्दा तुम बच्चों ने सबसे जास्ती की है, सबसे नजदीक वाले मित्र भी तुम बच्चे ही बनते हो। अपकारी भी तुम बच्चे बनते हो, बाप उपकार भी तुम पर ही करते हैं। यह ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह विचार सागर मंथन करने की बातें हैं।" सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

"गाली तो खानी ही है, यह भी खाते हैं ना। गाली देने वालों पर कोई पाप नहीं है क्योंकि पहचानते नहीं हैं। यह है ही तमोप्रधान दुनिया।" सा.बाबा 5.8.71 रिवा.

"मुझ परमात्मा को कण-कण में कह दिया है, यह भी है ड्रामा। जो बात पास्ट हो जाती है, उसको कहा जाता है ड्रामा। ... बाप की सर्विस में जरा भी धोखा नहीं देना है। सबको पैगाम पहुँचाना ही है।" सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

"माया के तूफान बहुत आयेंगे परन्तु बाप की ईश्वरीय सर्विस में धोखा नहीं देना है। ... तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियां तो सारी दुनिया के मित्र हो क्योंकि तुम बाप के मददगार हो।" सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

"जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, वह अनुभव करे कि यह मेरा है। ... सब अपने हैं और मैं सबका हूँ। ... राज्य का अर्थ यह नहीं कि तख्त पर बैठे, राजधानी में रॉयल फेमिली में भी राज्य अधिकार है राज्य का।" अ.बापदादा 21.10.05

"जैसे बाप को याद करते ही खुशी में नाचते हैं, वैसे हर एक ब्राह्मण आत्मा को हर ब्राह्मण

याद करते रुहानी खुशी का अनुभव करे। ... इसको कहते हैं बाप समान बनना।”

अ.बापदादा 31.12.87

“वास्तव में सभी धर्म की आत्माओं को एक परिवार में लाना - यह है आप ब्राह्मणों का वास्तविक कार्य।” अ.बापदादा 4.3.86

“बाप को हर एक बच्चे से प्यार क्यों है? क्योंकि बाप जानते हैं कि मेरे को पहचान, मेरे बने हैं।... सभी समझते हो कि बाप के स्नेह ने अपना बना लिया। बाप का स्नेह चुम्बक है। ... दिल का स्नेह इस ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है।... इतना ही स्नेह आप में ब्राह्मणों में है? ... जो दिल से बाप के स्नेही होंगे, वे सर्व के स्नेही अवश्य होंगे।” अ.बापदादा 15.11.05

“दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। कितना भी ज्ञानी हो ... स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। उनको याद की मेहनत नहीं करनी पड़ती। सिर्फ ज्ञानी हैं, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। ... ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है।”

अ.बापदादा 15.11.05

“अगर ज्ञान बिना स्नेह के है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं।... ज्ञान सागर के तले में अनुभव के मोती अनुभव करो। ... लवलीन रहो।” अ.बापदादा 15.11.05

“बाप कहते हैं मैं आत्माओं से बात करता हूँ। ... सब आत्मायें हैं। जाति-पान्ति का कोई भेद नहीं रहना चाहिए। अपने को आत्मा समझो। ... सभी आत्माओं का बाप तो एक ही है। देखना भी आत्मा को है। सभी आत्माओं का स्वधर्म शान्त है।”

सा.बाबा 5.12.05 रिवा.

“न दुख दो और न दुख लो, तब ही पुण्यात्मा बनेंगे, तपस्वी बनेंगे। ... ग्लानि करने वाले को भी गले से लगाओ, तब कहेंगे पुण्यात्मा। लेकिन मन से, बाहर से नहीं।”

अ.बापदादा 10.4.91

“अकल्याण करने वाले के ऊपर भी कल्याण की भावना, कल्याण की दृष्टि-वृत्ति-कृत्ति। इसको कहा जाता है - कल्याणकारी आत्मा। ... अभी शिक्षा देने का समय चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो, शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो - यही शिक्षा देने की विधि है। अभी वह विधि पुरानी हो गई।” अ.बापदादा 13.2.91

“सभी बच्चों को नथिंग न्यू का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ... ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है, घबराने की बात नहीं है। आपका कर्तव्य है अपने शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। आपके अपने भाई-बहनें हैं, तो अपने ईश्वरीय

परिवार के सम्बन्ध से सहयोगी बनो। ... इसलिए और विशेष समय निकाल कर शान्ति का सहयोग दो। यह है आप ब्राह्मण आत्माओं का कर्तव्य।" अ.बापदादा 18.1.91

"आतंकवादियों को भी शान्ति का दान देने वाले हो। कोई भी आये शान्ति लेकर जाये, खाली हाथ नहीं जाये। चाहे ज्ञान नहीं दो लेकिन शान्ति के वायब्रेशन भी शान्त कर देते हैं।"

अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 1

"आप सारे विश्व की आत्माओं के पूर्वज हो या सिर्फ ब्राह्मण आत्माओं के पूर्वज हो ? जो जड़ वा तना होता है, वह सारे वृक्ष के लिए होता है। ... तो कितनी सेवा करनी है। हर एक एक पत्ते को पानी देना है अर्थात् सर्वात्माओं की पालना करनी है।"

अ.बापदादा 10.12.92

"सर्वात्माओं के पूर्वज हैं - इस स्मृति को प्रैक्टिकल लाइफ में अनुभव करना है और कराना है। सर्वात्माओं की पालना करनी है ... अलौकिक पालना का स्वरूप है - स्वयं में बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व शक्तियां अन्य आत्माओं में भी भरना।" अ.बापदादा 10.12.92

"कोई आपका कल्याण करे और कोई आपका अकल्याण करे तो दोनों समान लगेगा या थोड़ा फर्क होगा ? ... अपकारी पर भी उपकार, यही ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। ... ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ ही है सर्व के प्रति कल्याण की भावना, अकल्याण संकल्प मात्र भी नहीं हो।" अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 2

"बापदादा देख रहे हैं, आपके ही अनेक भाई-बहनें, ब्राह्मण नहीं अज्ञानी आत्मायें, अपनी जीवन से हिम्मत हार चुकी हैं।... विश्व की आत्माओं के इष्टदेव आत्मायें रहमदिल बन अपनी शुभ भावना, रहम की भावना, आत्मिक भावना द्वारा उन्होंकी भावना पूर्ण करो।"

अ.बापदादा 14.3.06

"सब पुकार रहे हैं - दुखियों पर कुछ रहम करो। ... आपकी वंशावली हैं तो आपको रहम नहीं आता... अभी अपने पुरुषार्थ में ज्यादा समय नहीं लगाओ, देने में लगाओ तो देना लेना हो जायेगा।" अ.बापदादा 25.2.06

"हमको जो नॉलेज मिली है, जिससे बेहद की खुशी का पारा चढ़ा है, वह औरों को भी अनुभव करायें। ड्रामा अनुसार यह भी पुरुषार्थ चलता रहता है।... यह चक्र तुम्हारी बुद्धि में सदैव फिरता रहना चाहिए, जिससे सदैव खुशी में रहो। औरों को समझाने का भी नशा रहे। हम बाप से नॉलेज ले रहे हैं। तुम्हारे और भाई-बहनें जो नहीं जानते हैं, उनको भी रास्ता बताना तुम्हारा धर्म है।" सा.बाबा 26/28.3.06 रिवा.

"वर्तमान समय अशान्त आत्माओं को शान्ति देना - यही सभी का विशेष कार्य है। ... इससे

स्व की स्थिति भी स्वत: ही शक्तिशाली हो जायेगी। … चाहे अन्य धर्म की आत्मायें हों लेकिन हैं तो अपनी वंशावली। … इसलिए अटेन्शन प्लीज़।”

अ.बापदादा10.12.92 दादियों से

“आप सारे विश्व की आत्माओं के पूर्वज हो या सिर्फ ब्राह्मण आत्माओं के पूर्वज हो ? जो जड़ वा तना होता है, वह सारे वृक्ष के लिए होता है। … तो कितनी सेवा करनी है। हर एक एक पत्ते को पानी देना है अर्थात् सर्वात्माओं की पालना करनी है।”

अ.बापदादा 10.12.92

“सर्वात्माओं के पूर्वज हैं - इस स्मृति को प्रैक्टिकल लाइफ में अनुभव करना है और कराना है। सर्वात्माओं की पालना करनी है … अलौकिक पालना का स्वरूप है - स्वयं में बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व शक्तियां अन्य आत्माओं में भी भरना।” अ.बापदादा 10.12.92

“संगमयुग में ही वरदाता वरदानों से झोली भरते हैं। … वरदानों का खजाना ऐसा है, जो जितना औरों को देंगे, उतना आप में भरता जायेगा। … देने की विधि है - यह सब अपना ही परिवार है, सब पर बाप समान रहम करना है।” अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 3

“सभी बच्चों को नथिंग न्यू का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। … ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है, घबराने की बात नहीं है। आपका कर्तव्य है अपने शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। आपके अपने भाई-बहनें हैं, तो अपने ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध से सहयोगी बनो। … इसलिए और विशेष समय निकाल कर शान्ति का सहयोग दो। यह है आप ब्राह्मण आत्माओं का कर्तव्य।” अ.बापदादा 18.1.91

“ब्राह्मण परिवार के प्रति सदा शुभ भावना, शुभ कामना क्यों नहीं रहती, इसका कारण है जैसे बाप के प्रति दिल का स्नेह, जिगर का स्नेह है … अटूट है … ऐसे ही ब्राह्मण परिवार के प्रति सदा ही ऐसा दिल का स्नेह हो। … बाप और बच्चों के स्नेह का बैलेन्स रहे, यही ब्रह्मा बाप की दूसरी शुभ आशा है।” अ.बापदादा 3.2.88

श्रीमत और परस्पर एकमत

बाबा अभी श्रीमत देकर एक-धर्म, एक-राज्य, एक-मत, एक-भाषा की स्थापना करता है, इसलिए स्थापना के लिए सहयोगी बच्चों को श्रीमत देते हैं कि तुमको अभी ही एकमत होकर रहना है, तब तुम ऐसे अटल-अखण्ड राज्य की स्थापना कर सकेंगे। अगर आपस में एकमत नहीं रहते, लून-पानी होते तो वे ईश्वरीय सेवा में विघ्नरूप बनते हैं, बाप का

नाम बदनाम करते हैं।
“एक तरफ यह सर्विस है और दूसरी बात गीता की - इन बातों को मिलकर उठाओ। ... यहाँ तुम बच्चों का आपस में कोई मतभेद नहीं रहना चाहिए।”

सा.बाबा 26.10.05 रिवा.

श्रीमत और संगठन / श्रीमत और संगठन की सफलता
श्रीमत और परस्पर व्यवहार

बाबा ने कहा है - हम सन्यासी नहीं है अर्थात ये निवृत्ति मार्ग नहीं है। यह है प्रवृत्ति मार्ग, ईश्वरीय परिवार। इस संगठन में सदा सफलता हो, परस्पर प्रेम हो, उसके लिए परस्पर प्यार हो, बालक सो मालिक की स्थिति हो, निस्वार्थ भाव हो, तब ही सफलता होगी और ये जीवन सुखमय होगा।

बाबा ने व्यक्तिगत सफलता और संगठन दोनों की सफलता के लिए श्रीमत दी है। बाबा ने व्यक्तिगत जीवन की सफलता के लिए कहा है - संगठन में रहते भी अपने को अकेला समझो अर्थात् जब चाहें तब संगठन में होते भी देह से न्यारा हो आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें। साथ ही अकेले होते भी सदा याद रखो हमको सारा संसार देख रहा है, हम अकेले नहीं है। सदा ऐसे समझकर हर कर्म करो तो विकर्म नहीं होगा। बाबा हमारे साथ है - यह स्मृति रहेगी तो कब अपने को अकेला अनुभव नहीं करेंगे।

संगठन में रहने और संगठन की सफलता के लिए बाबा ने श्रीमत दी है - संगठन में सदा बालक और मालिक बन कर रहो। राय देने के समय मालिक बनकर राय दो और फाइनल होने पर उसे बालक बनकर स्वीकार करो। कभी भी किसकी बात को सीधा नहीं काटो। पहले उसे स्वीकार करके फिर आवश्यक हो तो समझाओ, तो वह मानेगा भी और आपको मान-सम्मान भी देगा।
“मैं तुमको फरमान करता हूँ - मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कटेंगे। ... तुम्हारी आपस में कोई खिट-खिट नहीं होनी चाहिए। ... तुम बच्चों को आपस में बैठकर राय करनी चाहिए।”

सा.बाबा 24.11.05 रिवा.

“बाप ने पहले भी कहा था कि सिर्फ बाप से सर्टीफिकेट नहीं लेना है लेकिन ब्राह्मण परिवार से भी लेना है क्योंकि बाप इस समय धर्म और राज्य दोनों साथ-साथ स्थापन कर रहे हैं। ... स्वमान में रहना और सम्मान देना - यह दोनों जरूरी हैं। ... आधा कल्प राज्य अधिकारी का

सम्मान मिलता है और आधा कल्प भक्ति में भक्तों द्वारा सम्मान मिलता है। लेकिन सारे कल्प का आधार है - इस एक जन्म में सम्मान देना और सम्मान लेना।”

अ.बापदादा 15.11.05

“जैसे बाप का सभी से स्नेह है, ऐसे ही बच्चों का भी सर्व से स्नेह, सर्व के स्नेही। कब दूसरे की कमजोरी को देखों नहीं। विशेषता ही देखो।” अ.बापदादा 15.11.05

“सब बातों का सार है - निस्वार्थ, निर्विकल्प स्थिति से सेवा करना सफलता का आधार है। ... अगर निस्वार्थ, निर्विकल्प भाव से निर्णय करेंगे तो कभी किसी को कुछ व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा क्योंकि सेवा के बिना भी रह नहीं सकते, याद के बिना भी रह नहीं सकते।”

अ.बापदादा 20.2.87

“शिक्षा नहीं दो, स्नेह भरा सहयोग दो। न्यारा नहीं बनो, किनारा नहीं करो, सहारा बनो क्योंकि आपका यादगार विजयमाला है। ... सन्देश देने का कार्य तो बहुत किया, कर रहे हैं, करते रहेंगे लेकिन अब सन्देश-वाहकों के सहयोग और स्नेह की रूपरेखा स्टेज पर लाओ। महादानी बनो, अपने गुणों का सहयोगी बनो। ... अपने गुणों की शक्ति से उन्होंकी कमजोरी दूर करो।” अ.बापदादा 15.12.05

“आपका टाइटिल ही है - मास्टर सर्वशक्तिवान। तो सर्वशक्तिवान का कर्तव्य क्या है? शक्ति की लेन-देन करना। बाप द्वारा मिले हुए गुणों की आपस में लेन-देन करो। यही सहयोग की गिफ्ट एक-दो में दो। ... कल्याण की वृत्ति द्वारा, कल्याण के वायुमण्डल द्वारा गुणों की गिफ्ट दो, शक्तियों की गिफ्ट दो।” अ.बापदादा 15.12.05

“सदा यह प्रभु-प्यार के पात्र है, कोटों में कोई आत्मा है, विशेष आत्मा है, विजयी बनने वाली आत्मा है - यह दृष्टि रखो। ... कमजोरी देखते हुए भी देखो नहीं, उमंग दो, सहयोग दो। ... अभी उन्हों का इन्तजार समाप्त करो और प्रत्यक्ष होने का इन्तजाम करो।”

अ.बापदादा 15.12.05

“जब आप तपस्वी सम्पन्न, सम्पूर्ण स्थिति से विश्व परिवर्तन का संकल्प करेंगे तो यह प्रकृति भी सम्पूर्ण हलचल की डांस करेगी। ... संगठित रूप से सबका एक संकल्प उत्पन्न हो।”

अ.बापदादा 17.3.91

“अकेला रहकर निविघ्न रहना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन बड़े संगठन में भी हो और निर्विघ्न भी हो। ... फॉलो फादर करने वाले हो।” अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 5

“सेवा में संगठित रूप में सदा सन्तुष्ट रहने से तीन प्रकार की सेवा होती है। एक अपनी सन्तुष्टता अर्थात् स्व की सेवा, दूसरी संगठन में सन्तुष्टता अर्थात् परिवार की सेवा और तीसरी

विश्व की आत्माओं की सेवा। … तीनों निर्विघ्न रहें तब कहेंगे सेवा की नम्बरवन सफलता।”

अ.बापदादा 31.3.88

“जो सहयोगी होते हैं, सहयोग देते हैं, उनको सहयोग मिलता भी बहुत है। इच्छा न होते हुए भी चारो ओर से सहयोग देने वाले को सहयोग मिलता है। करके देखना।”

अ.बापदादा 7.3.95

“युनिटी का अर्थ ही है बेहद की वृत्ति, बेहद की दृष्टि। अगर बेहद की दृष्टि और वृत्ति नहीं है तो युनिटी नहीं हो सकती है। … वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल बनेगा तो प्रैक्टिकल में भी होगा। … हिम्मत बच्चों की और मदद बाप की है ही है। ये वरदान है।”

अ.बापदादा 7.3.95

“जैसे खुशी से अपने विचार देते हो, ऐसे दूसरे के विचार भी खुशी से लो। … दूसरे की राय को, दूसरे की बात को भी इतना ही रिगार्ड दो, जितना अपनी बात को रिगार्ड देते हो। … दूसरों के विचारों को भी अपने विचारों के माफिक सोचना-समझना - यह है दूसरे के विचारों को रिगार्ड देना।” अ.बापदादा 7.3.95

“मालिक बनकर प्लैन दो और जब मैजारिटी फाइनल करे तो बालक बन जाना। … तो बालक और मालिक। … किनारा नहीं करो, प्लैन दो लेकिन बालक भी बनो, मालिक भी बनो।” अ.बापदादा 31.12.94

“कोई भी कार्य करो संगठित होकर करो, जिससे एक भी यह नहीं कहे कि हमने कार्य नहीं किया। … सबको खुशी होनी चाहिए कि हम प्रोग्राम कर रहे हैं। … चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सबको सेवा में सहयोग की अंगुली देनी ही है। … जहाँ संगठन की शक्ति है, वहाँ विजय है।” अ.बापदादा 23.2.97

श्रीमत और कर्मातीत स्थिति

कर्मातीत स्थिति हमारे जीवन का परम लक्ष्य है परन्तु कर्मातीत स्थिति क्या और कैसी होती है, उसका ज्ञान और उस स्थिति में स्थित होने के लिए बाबा ने श्रीमत भी दी है।

यथार्थ कर्मातीत स्थिति तो आत्मा की परमधाम में ही होती है। यहाँ के लिए भी बाबा ने कहा है - जब तुम्हारी कर्मातीत स्थिति हो जायेगी तो आत्मा यह शरीर छोड़ देगी। लेकिन इस कर्मक्षेत्र पर कर्मातीत स्थिति का अनुभव करने के लिए बाबा ने कहा है - ये कर्मक्षेत्र है, यहाँ पर कर्म करना ही है लेकिन कर्म करते भी कर्म का बन्धन न हो, कर्म हमको खींचे नहीं। निमित्त बनकर कर्म करें।

आत्मा का मूल स्वरूप कर्मातीत है, इसलिए जब तक आत्माओं का इस जगत में पार्ट नहीं है, तब तक सभी आत्मायें कर्मातीत स्थिति में होती हैं परन्तु परमात्मा इस जगत में पार्ट बजाते भी कर्मातीत स्थिति में ही रहते हैं क्योंकि उनको अपना शरीर नहीं है, इसलिए इस जगत का कोई कर्म उनको प्रभावित नहीं करता है। परमात्मा ही आकर कर्मातीत स्थिति का राज़ बताते हैं कि तुम आत्मायें जब परमधाम से आये थे तो कर्मातीत स्थिति में आये थे और अब फिर वापस घर जाना है तो कर्मातीत बनकर ही जाना है। कर्मातीत कैसे बनें, उसका विधि-विधान भी परमात्मा ने बताया है और उस स्थिति को धारण करने के लिए अभीष्ट आदेश-निर्देश और श्रीमत दी है, जिसका पालन करके ही आत्मायें कर्मातीत बनती है। बाबा ने ये भी बताया है कि जो आत्मायें अपने पुरुषार्थ से विनाश के पहले कर्मातीत बन सकती हैं। वास्तव में हर आत्मा कर्मातीत बनेगी परन्तु जो अपने पुरुषार्थ से विनाश के पहले कर्मातीत बनती हैं या उसके निकट तक पहुँचती हैं, वे कर्मातीत स्थिति का परमानन्द अनुभव करती है अर्थात् इस विश्व-नाटक का परम-सुख अनुभव करती है और जो अपने पुरुषार्थ से कर्मातीत नहीं बनती हैं, वे समयानुसार विनाश के समय सजायें खाकर कर्मातीत बनती है और घर चली जाती हैं।

ये विश्व-नाटक एक कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें आकर कर्म करती हैं और कर्मानुसार उसका फल अवश्य पाती हैं, इसीलिए बाबा ने ये भी कहा है कि जब आत्मा पूर्ण कर्मातीत बन जाती है तो इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती, वह शरीर छोड़ देगी और परमधाम चली जायेगी। इसलिए अभी तक कोई कर्मातीत बना नहीं है, सब यथा शक्ति कर्मातीत बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं।

"कर्मातीत अर्थात् 1- लौकिक और अलौकिक कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त, 2- पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब और वर्तमान जीवन के कमजोर स्वभाव-संस्कार... इस बन्धन से भी मुक्त, 3- पुरानी दुनिया में इस पुराने अन्तिम शरीर में किसी प्रकार की व्याधि, जो श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये, उससे भी मुक्त।"

अ.बापदादा 18.1.87

"आज के दिन ब्रह्मा बच्चे ने सारे कल्प के कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त होने का सबूत दिया। ... सेवा में हद की रॉयल इच्छायें भी हिसाब-किताब के बन्धन में बांधती हैं। लेकिन सच्चे सेवाधारी इस हिसाब-किताब से भी मुक्त हैं। इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है।"

अ.बापदादा 18.1.87

"आपके और बाप के मेहमान समझने में फर्क है। मेहमान उसको कहा जाता है जो आता है

और जाता है। ... जितना ऊपर की स्थिति में जायेंगे, उतना उपराम होते जायेंगे। शरीर में होते हुए भी इस उपराम अवस्था तक पहुँचना है। बिल्कुल देह और देही अलग महसूस हो। ... ऐसी स्थिति की स्टेज को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।"

अ.बापदादा 26.1.70

"मन अमन तब हो जब शरीर में नहीं हो। बाकी मन अमन तो कभी होता ही नहीं है। देह मिलती है कर्म करने के लिए तो फिर कर्मातीत अवस्था में कैसे रहेंगे ? कर्मातीत अवस्था कहा जाता है मुर्दे को। जीते जी मुर्दा बनना अर्थात् शरीर से डिटैच। बाप तुमको शरीर से न्यारा बनने की पढ़ाई पढ़ाते हैं।" सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

"अभी-अभी शरीर में आये, फिर अभी-अभी अशरीरी बन गये, यह प्रैक्टिस करनी है। इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। ... शरीर और आत्मा दोनों का न्यारापन चलते-फिरते भी अनुभव होना है। ... शरीर की दुनिया, सम्बन्ध वा अनेक जो भी वस्तुयें हैं, उनसे बिल्कुल डिटेच होंगे, जरा भी लगाव नहीं होगा, तब न्यारा हो सकेंगे।"

अ.बापदादा 21.1.72

"तुम बच्चों को अपनी इस लाइफ से कभी तंग नहीं होना चाहिए क्योंकि यह हीरे जैसा जन्म गाया हुआ है। इसकी सम्भाल भी करनी होती है। ... बीमारी में भी नॉलेज सुन सकते हैं, बाप को याद कर सकते हैं। जितने दिन जियेंगे कमाई होती रहेगी, हिसाब-किताब चुक्तू होता रहेगा। ... कर्मातीत बनना है।" सा.बाबा 10.2.05 रिवा.

"ऐसे ही समझकर चलो कि अभी-अभी अल्पकाल के लिए नीचे उतरे हैं कार्य करने अर्थ लेकिन सदाकाल की ओरिजिनल स्थिति वही है। फिर कितना भी कार्य करेंगे लेकिन कर्मयोगी के समान कर्म करते हुए भी अपनी निजी स्थिति और स्थान को भूलेंगे नहीं। यह स्मृति ही समर्थी दिलाती है। ... सर्व शक्तियां ही मास्टर सर्वशक्तिवान का जन्मसिद्ध अधिकार हैं।"

अ.बापदादा 22.6.71

"यह कब भी नहीं समझना कि अन्तिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अन्त में ही आवेगी। लेकिन अभी से उस सम्पूर्ण स्टेज को जब प्रैक्टिकल में लाते जायेंगे तब अन्तिम स्टेज को अन्त में पा सकेंगे। अगर अभी से उस स्टेज को समीप नहीं लाते रहेंगे तो दूर ही रह जायेंगे, पा न सकेंगे। इसलिये अब पुरुषार्थ में जम्प लगाओ।" अ.बापदादा 9.11.72

"कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचने की निशानी जानते हो ? समीपता की निशानी "समानता" है। किस बात में ? आवाज़ में आना व आवाज़ से परे हो जाना, साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे न्यारे निराकारी स्थिति में स्थित होना, सुनना और स्वरूप होना

… इन सभी बातों में समानता। उसको कहा जाता है - कर्मातीत अवस्था की समीपता।”
अ.बापदादा 1.9.75

“माया पर जीत पाकर कर्मातीत अवस्था में जाना है। पहले-पहले तुम आये हो कर्म सम्बन्ध में। उसमें आते-आते फिर आधा कल्प बाद तुम कर्म बन्धन में आ गये। पहले-पहले तुम पवित्र थे। न सुख का कर्म-बन्धन, न दुख का। … मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप मिट जायेंगे और तुम मेरे पास घर में आ जायेंगे।” सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

“तुम्हारी याद की यात्रा पूरी तब होगी जब तुम्हारी कोई भी कर्मेन्दियां धोखा न दें। कर्मातीत अवस्था हो जाये। … तुमको पूरा पुरुषार्थ करना है।” सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

“अगर ज्ञान की धारणा हो तो वह नशा सदा चढ़ा रहे। नशा कोई को बहुत मुश्किल चढ़ा रहता है। मित्र सम्बन्धी आदि सब तरफ से याद निकालकर एक बेहद की खुशी में ठहर जायें, यह है बड़ी कमाल। हाँ, यह भी अन्त में होगा, पिछाड़ी में सब कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं।” सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

“बाप ने याद की यात्रा सिखलाई है, जिससे हम कर्म-बन्धन से न्यारे हो कर्मातीत हो जायेंगे। … अन्त में सब साक्षात्कार होंगे, फिर कुछ कर नहीं सकेंगे। … अफसोस करेंगे, फिर भी सजा तो खानी ही पड़ेगी।” सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

“ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दुखी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जायें और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज़ होनी चाहिए क्योंकि इस संकल्प से और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।” अ.बापदादा 3.2.74

“जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत। क्या ऐसी स्टेज रहती है ? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो, इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे।” अ.बापदादा 3.2.74

“स्टडी पूरी तब होगी, जब विनाश के लिए सामग्री तैयार होगी। फिर समझ जायेंगे कि आग जरूर लगेगी। … पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। इस समय किसकी कर्मातीत अवस्था होना असम्भव है। कर्मातीत अवस्था हो जाये फिर तो यह शरीर भी न रहे।”
सा.बाबा 29.6.05 रिवा.

“कर्मातीत अर्थात् कर्म के वश न होकर मालिक बन अथॉरिटी बन कर्मेन्दियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराये।… आत्मा को कर्मेन्द्रियां अपने

आकर्षण में आकर्षित न करें।" अ.बापदादा 18.12.87

"आत्मा मालिक, करने वाली कर्मेन्द्रियों के वश हो जाये, इसको कहते हैं कर्म-बन्धन। ... कर्मातीत आत्मा सम्बन्ध में आती है लेकिन बन्धन में नहीं रहती।... सम्बन्ध न्यारा और प्यारा अनुभव कराने वाला है।" अ.बापदादा 18.12.87

"अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करो तो इस योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे। ... हम आत्मा हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते हैं - यह पक्का अभ्यास चाहिए।" सा.बाबा 12.9.05 रिवा.

"कर्मातीत अर्थात् देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थ, लौकिक-अलौकिक दोनों सम्बन्ध से, बन्धन से अतीत अर्थात् न्यारे। ... सम्बन्ध में भी अगर अधीनता है तो सम्बन्ध भी बन्धन बन जाता है। ... दुख की लहर जरूर अनुभव करायेगा।" अ.बापदादा 18.12.87

"नाराज़ अर्थात् राज़ को नहीं समझा। ... कर्मातीत कभी नाराज़ नहीं होगा क्योंकि वह कर्म-सम्बन्ध और कर्म-बन्धन के राज़ को जानता है।" अ.बापदादा 18.12.87

"कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन कर्मभोग को चुक्तू करना, कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तू करना। ... कर्मातीत स्थिति वाला देह के मालिक होने के कारण कर्मभोग होते हुए भी न्यारा बनने का अभ्यासी होने के कारण बीच-बीच में अशरीरी स्थिति का अनुभव बीमारी से परे कर देता है। ... बीच-बीच में यह अशरीरीपन का रुहानी इन्जेक्शन लग जाता है।" अ.बापदादा 18.12.87

"घबराओ नहीं, कर्म को देख कर्म के बन्धन में नहीं फँसो। ... व्यर्थ संकल्प ही कर्मबन्धन की सूक्ष्म रस्सियां हैं। कर्मातीत आत्मा कहेगी - जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा और ड्रामा भी अच्छा। यह बन्धन को काटने की कैंची का काम करती है।" अ.बापदादा 18.12.87

"जैसे कर्मों की गति गहन है, ऐसे कर्मातीत स्थिति की परिभाषा भी बड़ी महान है... ब्रह्मा बाप को देखा - कैसे कर्मातीत स्थिति को प्राप्त किया। कर्मातीत बनने में फॉलो करना अर्थात् साथ चलने योग्य बनना।" अ.बापदादा 18.12.87

"श्रीमत जो कहे, सो करते रहो। ... निश्चय पूरा बैठ जाये तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। ... वह अवस्था होगी अन्त में। ... शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की मुरली को भी बड़ा अच्छी रीति समझना है। ... मुख्य बात है ही शिवबाबा की याद की।" सा.बाबा 19.1.06 रिवा.

""करन-करावनहार"... "करावनहार" शब्द की डबल रूप से स्मृति चाहिए। एक तो "करावनहार" बाप है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ। इस

स्मृति से कर्म करते भी कर्म के अच्छे-बुरे प्रभाव में नहीं आयेंगे। इसको कहते हैं कर्मातीत अवस्था।" अ.बापदादा 10.3.96

"ब्रह्मा बाबा विचार करते हैं - इतने ढेर बच्चे कहाँ आकर रहेंगे। शिवबाबा कहते हैं - तुम फिकर क्यों करते हो, "वेट एण्ड सी", तुम पढ़ते रहो। मन्मनाभव। तुम बच्चों को यही ख्याल में रखना है कि हमको कर्मातीत अवस्था में जाना है।" सा.बाबा 13.6.06 रिवा.

"मन के मालिक हो ना! तो सेकेण्ड में स्टॉप, तो स्टॉप हो जाये। ... फौरन ब्रेक लगनी चाहिए। यही अभ्यास कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा। संकल्प करने के कर्म में भी फुल पास। ... आर्डर दिया मन बुद्धि को कि न्यारे होकर खेल देखो तो परिस्थिति आपके इस अचल स्थिति के आसन के नीचे दब जायेगी।" अ.बापदादा 6.3.97

श्रीमत और कर्म-बन्धन एवं कर्म-सम्बन्ध

कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध दोनों ही परमात्मा की याद में बाधक हैं क्योंकि दोनों में ही किसी न किसी देहधारी की याद आती ही है और उतरती कला का कारण बनते हैं परन्तु कर्म-बन्धन दुखदायी होता है, कर्म-सम्बन्ध सुखदायी होता है। सतयुग में कर्म-सम्बन्ध होते हैं फिर भी आत्मा की उतरती कला होती है। अभी बाबा की श्रीमत है कि दोनों से बुद्धि निकाल कर अपने को निराकार आत्मा निश्चय कर मुझ निराकार बाप को याद करो। जब तक अपने को निराकार नहीं समझेंगे तब तक मुझ निराकार बाप को याद नहीं कर सकेंगे।

"तीसरे नेत्र में कमजोरी आने की भी वही दो बातें हैं ... एक लगाव और दूसरा पुराना स्वभाव। ... अगर अपनी किसी विशेषता में भी लगाव है तो वह भी बन्धन-युक्त कर देगा, बन्धन-मुक्त नहीं करेगा क्योंकि लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा।"

अ.बापदादा 15.7.73

"अनेक संकल्पों की समाप्ति होकर एक शुद्ध संकल्प रह जाये, इस स्थिति का अनुभव कर रही हो? इस स्थिति को ही शक्तिशाली, सर्व कर्म-बन्धनों से न्यारी और अति प्यारी स्थिति कहा जाता है।" अ.बापदादा 22.6.71

"दो शब्द हैं एक साक्षी और साथी। एक तो साथी सदैव साथ रखो। दूसरा साक्षी बनकर हर कर्म करो। तो साथी और साक्षी ये दो शब्द प्रैक्टिस में लायो। तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है।" अ.बापदादा 13.3.71

"इस देह के भान को भी अर्पण करने से जब अपनापन मिट जाता है तो लगाव भी मिट जाता है। ...ऐसे समर्पण होने वालों की निशानी क्या रहेगी? एक तो सदा योगयुक्त और दूसरा

सदा बन्धनमुक्त। जो योगयुक्त होगा, वह बन्धन मुक्त जरुर होगा। योगयुक्त का अर्थ ही है देह के आकर्षण के बन्धन से भी मुक्त।" अ.बापदादा 25.3.71

"कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाये लेकिन वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा कि इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले, यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता।... इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखो।" अ.बापदादा 18.4.82

"बाप कितना सहज समझाते हैं। तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। बाकी किसका कर्मभोग का हिसाब-किताब है, कुछ भी है, वह तो भोगना ही है। उसमें बाबा आशीर्वाद नहीं करते।... अभी हमको बाप का, सृष्टि-चक्र का पूरा ज्ञान मिल गया है।"

सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

"मेरा मन नहीं लगता, मेरा योग नहीं लगता, मेरी बुद्धि एकाग्र नहीं होती। यह मेरा शब्द हलचल पैदा करता है। मेरा है कहाँ। मेरापन मिटाना ही सर्व बन्धन मुक्त बनना है।"

अ.बापदादा 19.5.83

"सभी का कल्याण चाहते हो तो स्वयं शक्तिरूप बन सर्वशक्तिवान के साथी बन शुभ भावना रख चलते चलो। चिन्तन वा चिन्ता मत करो, बन्धन में नहीं फँसो। अगर बन्धन है तो उसको काटने का तरीका है याद। कहने से नहीं छूटेंगे, स्वयं को छुड़ा दो तो छूट जायेंगे।"

अ.बापदादा 13.4.83

"संगमयुग का ही सर्व श्रेष्ठ कर्म है ना। यह श्रेष्ठ कर्म ही हीरे की डाली है। चाहे संगमयुगी कैसा भी श्रेष्ठ कर्म हो लेकिन श्रेष्ठ कर्म के भी बन्धन में फँस गया, जिसको दूसरे शब्दों में आप सोने की जंजीर कहते हो। श्रेष्ठ कर्म में भी हद की कामना, यह सोने की जंजीर है। चाहे डाली हीरे की है, जंजीर भी सोने की है लेकिन बन्धन तो बन्धन है ना!"

अ.बापदादा 3.4.83

"जैसे अन्य आत्माओं को सेवा की भावना से देखते हो, बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो। हद में नहीं आओ। मेरा बच्चा, मेरा पति...अगर मेरापन है तो आत्मिक दृष्टि, कल्याण की दृष्टि दे नहीं सकेंगे।"

अ.बापदादा 7.4.83

"सतयुग में पहले नाता अच्छा होता है, सतोप्रधान फिर नीचे उतरते जाते हैं। फिर जो सुख का नाता है, वह आहिस्ते-आहिस्ते कम होता जाता है। ... अभी बाप कहते - श्रीमत पर चलो और

जो भी देह के नाते हैं, वे सब छोड़ दो।" सा.बाबा 12.4.06 रिवा.

"घर में रहने वाली, घर की सेवा करने वाली साधारण मातायें हैं, यह याद रहता है या जगत माता हैं, जगत का कल्याण करने के निमित्त यह कार्य कर रही हूँ - यह याद रहता है ?... जिसको यह रुहानी नशा होगा वह कर्म करेगा लेकिन कर्म के बन्धन में नहीं आयेगा, न्यारा और प्यारा होगा।" अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

"कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना, इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप लगाने नहीं देगा। ... न्यारे होकर कर्म के सम्बन्ध में आना, यह अण्डरलाइन करना।" अ.बापदादा 7.3.95

श्रीमत और कर्म-भोग अर्थात् दैहिक एवं मानसिक व्याधियाँ

तन-मन की आरोग्यता में हमारे संकल्पों का प्रभाव

बाबा ज्ञान का सागर है और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता होने के कारण हमारे अनेक जन्मों की कर्म-कहानी को भी जानता है। हमारी दैहिक और मानसिक व्याधियों का कारण जानते हुए हम उससे कैसे सहज मुक्त हो सकें, उसके विषय में भी बाबा ने श्रीमत दी है, उस श्रीमत को पालन करने से हम सहज उनसे मुक्त हो सकते हैं। शूली जैसा कर्मभोग कांटा बन जाता है।

बाबा ने ये भी बताया है कि अनेक जन्मों के विकर्मों के फलस्वरूप मानसिक या दैहिक व्याधि का आना स्वभाविक है क्योंकि अभी आत्मा के प्रकृति और आत्माओं के साथ के सर्व हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं। कर्मभोग की वेदना से मुक्त होने का सहज उपचार वैद्यराज परमात्मा ने हमको बताया है, जिससे हम उसकी वेदना से मुक्त हो सकते हैं। सर्व मानसिक और दैहिक व्याधियों की वेदना से मुक्त होने का एकमात्र सफल उपचार है देह से न्यारे अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाना क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व व्याधियों से मुक्त है। बहुत समय पहले से जब कर्मभोग की वेदना नहीं है, उस समय का देह से न्यारे होने का अभ्यास ही कर्मभोग के समय उसकी वेदना से राहत देता है, वेदना या कर्मभोग के समय ये अभ्यास सम्भव नहीं है।

वास्तविकता को देखा जाये तो व्याधि का आना और वेदना की महसूसता ही हमको उसके उपचार के लिए बाध्य करती है, जो बाध्यता अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब को चुक्ता करने का साधन है। सबके साथ के हिसाब-किताब चुक्ता होने के बाद ही

उसका पूर्ण निदान सम्भव है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना के वायब्रेशन देना भी एक सफल उपचार है, हिसाब-किताब चुक्ता करने का पुरुषार्थ है।

बाबा ने ये भी कहा है - ये कर्मभोग हमारे कर्मों का ही फल है और हमको ही उसको चुक्ता करना है - इस सत्य का ज्ञान बुद्धि में होगा तो भी कर्मभोग की वेदना कम हो जायेगी। जब दूसरों को उसका कारण समझते हैं या ऐसे ही कर्मभोग आ गया, ये अभिधारणा होती तो थोड़ा कर्मभोग भी बड़ा महसूस होता है। बाबा ने हमको कर्मभोग का कारण और निवारण दोनों बताये हैं।

हमारे तन के आरोग्यता में, रोगों में और उनके निदान में हमारे मन के संकल्पों और हमारी स्थिति का बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव है। जैसे हमारे संकल्प होते हैं, उस अनुसार शरीर की ग्रन्थियों से रस-स्राव होते हैं, जो हमारे दैहिक स्वाथ्य के कारण भी बनते हैं और अनेकानेक रोगों के निदान का आधार भी बनते हैं। जब मनुष्य भय-चिन्ता, राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति, काम-वासना आदि से ग्रसित होता है तो उस समय जो रस-स्राव होता है, वह अनेकानेक रोगों का कारण बनता है और जब मनुष्य विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, प्रभु-स्मृति, योग-साधना के द्वारा आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होता है तो वह निर्भय-निश्चिन्त, शान्त, पवित्रता, आत्मिक-प्रेम आदि से भरपूर होता है, उस समय उसकी ग्रन्थियों से जो रस-स्राव होते हैं, उनसे अनेकानेक रोगों का निदान होता है। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि यह जीवन अनेक जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप अस्तित्व में आया है और इस कल्प में अन्तिम जन्म है, जिसमें हमारे अनेक जन्मों में अनेक आत्माओं और प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब हैं, वे भी पूरे होने हैं और ड्रामा का पार्ट भी है तथा समयानुसार वर्तमान वातावरण में अनेक प्रकार के जो संक्रमण हैं, वातावरण में वृत्तियों का जो संक्रमण है वह भी आत्मा को उसके कर्मों अनुसार प्रभावित करते हैं और दैहिक बीमारियों का कारण बनते हैं। इसलिए किसी व्यक्ति के या अपने जीवन के रोगों आदि को देखकर भ्रमित नहीं होना है, अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना है, आश्चर्यचकित नहीं होना है। सत्य सदा ही सत्य है। अति आशावान भी नहीं होना है और निराशा को भी जीवन में नहीं लाना है। विश्व-नाटक में देह रूपी वस्त्र बदलना अनिवार्य और स्वभाविक क्रिया है, जिसका कोई न कोई निमित्त कारण तो बनता ही है, इसलिए तमोप्रधान समय के अनुसार बीमारी-कर्मभोग तो आता ही है और आना ही है। निदान के लिए यथोचित उपचार भी करना है और योगबल से चुकता भी करना है। मम्मा-बाबा के उदाहरण हमारे सामने हैं और अनेक मुरलियों में बाबा ने इसके लिए श्रीमत भी दी है

और ब्रह्मा बाबा का उदाहरण भी दिया है।

"ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रैक्टिकल की।... सदा अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत बनें, फरिश्ता बनें ... लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे, आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है।" अ.बापदादा 31.12.05

"बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए। यह भी बाप ने समझाया है - कर्मभोग की बीमारी उथल खायेगी, माया सतायेगी परन्तु मूँझना नहीं चाहिए। बीमारी में तो मनुष्य और ही भगवान को जास्ती याद करते हैं।... तुम और सब बातें भूल मुझे याद करो।"

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

"वाह-वाह के गीत गाओ। ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह-वाह! यह भी बोझ उतरता है। ... मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है।" अ.बापदादा 30.11.99

"कोई बीमारी वा दुख आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है।... गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।" सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

"इस समय के इस एक जन्म (पुरुषार्थ का फल) का अनेक जन्मों तक चलता है और वह अनेक जन्मों का (खाता) एक जन्म में खत्म होता है। तो अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कब-कब वह फोर्स रूप में आता है।... जब साक्षी होकर देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है।"

अ.बापदादा 23.3.70

"मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारो ही आवश्यक हैं। ... तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते। ... बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।" अ.बापदादा 29.10.87

"यह पुराना शरीर है, कुछ न कुछ कर्मभोग चलता रहता है। इसमें बाबा मदद करे, यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।... बाप कहेंगे यह तुम्हारा हिसाब-किताब है। अपनी आप ही मेहनत करो, कृपा मांगो नहीं। जितना बाप को याद करेंगे, इसमें ही कल्याण है।"

सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

"जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण

करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। ... ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं।" अ.बापदादा 4.12.72

"इस अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दुरुस्ती आवश्यक है। जब आत्मा स्वस्थ है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग शूली से से कांटा बन जाता है।... उसके लिए वरदान अर्थात् दुआ दवाई का काम कर देती है। ... तन की शक्ति आत्मिक शक्ति के आधार पर सदा अनुभव कर सकते हो।" अ.बापदादा 29.10.87

"बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है।... कर्मयोगी परिवर्तन की शक्ति से कष्ट को सन्तुष्टता में परिवर्तन कर सन्तुष्ट रह औरों में भी सन्तुष्टता की लहर फैलायेगा।... अर्जी डालने वाले कभी भी सदा राजी नहीं रह सकते हैं।"

अ.बापदादा 29.10.87

"निराकारी और साकारी दोनों स्वरुप की स्मृति से स्वत: ही समर्थी-स्वरुप बन जायेंगे अर्थात् हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का अनुभव हर समय होगा। चाहे शरीर का कर्मभोग शूली से कितना भी बड़े रुप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग शूली से कांटे समान अनुभव होगा।" अ.बापदादा 27.1.76

कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से मुक्त होगा। इसीलिए कहा गया है -Events can't be changed but we can change our attitude towards events. अर्थात् जब यथार्थ ज्ञान होता है और आत्मिक स्थिति होती है तो कर्मभोग होगा परन्तु उसकी वेदना की महसूसता नहीं होगी या कम से कम होगी।

"अशरीरीपन का अभ्यास होने के कारण शूली से कांटा अनुभव होता है और फालो फादर होने के कारण विशेष आज्ञाकारी बनने के कारण प्रत्यक्ष फल के रूप में बाप से विशेष दिल की दुआयें प्राप्त होती है। ... जो कर्मभोग को शूली से कांटा बना देती हैं।"

अ.बापदादा 18.12.87

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।" सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

"शरीर बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो। सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनों एक्सरसाइज हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों होने से सहज हो

जायेगा।" अ.बापदादा 9.1.83

"बीमारी में भी खुशी से इतना तो कह सकते हो कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बीमारी में ही अवस्था की परख होती है।" सा.बाबा 21.11.05 रिवा.

"दुनिया वाले डरते हैं और आप और ही निर्भय होते हैं। ... ड्रामा अनुसार यह सभी और ही मजबूत करते हैं।... बीमारी बापदादा को तो खेल लगता है। जब ब्रह्मा बाप ने क्रास किया है तो आप सबको भी क्रास तो करना ही है। ... ये क्रास करेंगे तो क्रास पर नहीं चढ़ेंगे।"

अ.बापदादा 20.12.92 दादियों से

"तन का प्रभाव मन पर आ गया तो डबल बीमार हो गये।... कभी भी मन में बीमारी का संकल्प नहीं लाना चाहिए।" अ.बापदादा 22.12.95

"दवाइयां कलियुग के सीज़न का शक्तिशाली फल है। इसलिए घबराओ नहीं ... इसलिए बीमारी से कभी घबराना नहीं। बीमारी आई और उसको थोड़ा फ्रूट खिला दो और विदाई दे दो।" अ.बापदादा 22.12.95

श्रीमत और आध्यात्मिक जीवन की सफलता

यह आध्यात्मिक जीवन सदा सफल और सुखमय हो, उसके लिए भी बाबा ने सारा ज्ञान दिया है और अनेकानेक रूप में श्रीमत दी है, जिनका पालन करने वाले को ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है और उनको पालन करने वाले को सदा ही अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है। आध्यात्मिक जीवन की सफलता का मूलाधार परमात्मा और परमात्मा के द्वारा दिया गया ज्ञान है, इसलिए सदा उनके चिन्तन में ही रहना है, जिससे अन्त समय एक बाप की ही याद रहे। इसलिए ही कहा गया है - अन्त भला तो भला। उस पर ही आत्मा का भविष्य निर्भर करता है। आत्मा स्वत: में सच्चिदानन्द स्वरूप है अर्थात् जब हम आत्मिक स्वरूप में स्थित होते हैं तो स्थिति सदा आनन्दमय होती है। इसलिए बाबा ने अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए श्रीमत दी है।

""मैं कर रहा हूँ" होगा तो सहयोगी नहीं बनेंगे लेकिन "करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है" रहेगा तो सहयोगी बनेंगे।... जहाँ उमंग-उत्साह है वहाँ सफलता स्वयं समीप आकर गले की माला बन जाती है।" अ.बापदादा 14.10.87

"योगी तू आत्मा, ज्ञानी तू आत्मा और बाप समान कर्मातीत आत्मा - इन तीनों में से अगर एक भी विशेषता में कमी है तो ब्राह्मण ... सम्पूर्ण ब्राह्मण जीवन का सुख वा प्राप्तियों से वंचित रहना है।" अ.बापदादा

14.12.87

“तीन शब्द याद रखना - विधि, विधान और वरदान। विधि से सहज सिद्धि स्वरूप हो जायेंगे, विधान से विश्व-निर्माता और वरदान से वरदानी मूर्त बन जायेंगे।”

अ.बापदादा 25.12.82

“बाप सभी बच्चों को एक साथ एक जितने ही ज्ञान रतन दिये हैं लेकिन यह ज्ञान-रत्न जितना स्व प्रति व अन्य आत्माओं के प्रति कार्य में लगाते हैं, उतना बढ़ते जाते हैं।... कोई सदा कार्य में लगाकर एक का पदमगुणा बढ़ा रहे हैं।... कोई इन रत्नों की वैल्यू को जितना समझना चाहिए, उतना समझ नहीं रहे हैं।” अ.बापदादा 10.1.88

“सदा बेफिकर रहेंगे तो बुद्धि निर्णय अच्छा करेगी। निर्णय अच्छा हुआ तो सफलता हुई पड़ी है। ... निर्णय शक्ति यथार्थ काम तब करेगी, जब बुद्धि खाली होगी। ... जिसकी बुद्धि स्वच्छ होगी, वहीं सदा बेफिकर रह सकता है। ... जो सदा बिजी रहता है, वह व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने के कारण बेफिकर और डबल लाइट रहता है।” अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 6

“स्नेह से झुकाव हो या हिसाब-किताब चुक्तू होने के कारण ईर्ष्या-घृणा से झुकाव (याद) हो, दोनों प्रकार का झुकाव नीचे ले आता है। योग में स्थिर होने नहीं देता है।... फिर बाप के आगे अर्जी डालते हैं ... हिसाब बनाया आपने और चुक्तू बाप कराये।... करनकरावनहार कराने के लिए बांधा हुआ है लेकिन करना तो आपको ही पड़ेगा।” अ.बापदादा 6.1.88

“सभी कहें विजयी हो गये। होना है, हो रहे हैं। नहीं, हो गये। सबके मस्तक में चमकता हुआ सितारा स्पष्ट अनुभव हो। यही अनुभव की आंख दूसरों को भी अनुभव करायेगी। हर शक्ति, हर गुण के अनुभवी बनें, तब ही दूसरों को अनुभव करा सकेंगे।”

अ.बापदादा 28.3.06 दादियों से

“सभी मधुवन निवासी हो और आगे भी भारत पर ही राज्य करने वाले हो। भारत ही सबसे महान और सबसे सुन्दर बनेगा।... ज्ञान और योग के दोनों पंख मजबूत होंगे तो सदा उड़ते रहेंगे। ज्ञान अर्थात् हर कदम श्रीमत पर चलने की समझ।”

अ.बापदादा 20.12.92 डबल विदेशी

“उत्साह सफलता को भी खींचकर लायेगा। ... उत्साह होगा तो आपका प्रभाव उस आत्मा पर पड़ेगा, उसका प्रभाव आपके ऊपर नहीं आयेगा।... आपके जड़ चित्र भी औरों को उत्साह-हिम्मत दिला रहे हैं। पाण्डवों का महावीर का चित्र कितना प्रसिद्ध है।”

अ.बापदादा 22.2.90

“किसके स्वभाव-संस्कारों को सेवा के समय देखो ही नहीं। ... स्वभाव-संस्कार वैराइटी हैं

और रहने भी हैं। ... बाबा का काम है, बाबा करा रहा है। बाबा को देखो।"

अ.बापदादा 23.2.97

श्रीमत और गरीबी (स्थूल धन से)

परमात्मा को गरीब निवाज़ क्यों कहा जाता है, इसके विषय में भी परमात्मा ने अनेक प्रकार की श्रीमत दी है, जिससे गरीब भी साहूकारों जैसा या कहें उससे भी श्रेष्ठ जीवन का अनुभव कर सकते हैं और करते भी हैं। गरीबों को तो कहते हैं कि ये गरीबी भी तुम गरीबों को ईश्वरीय वरदान है कि तुम संगम पर गरीब बने हो क्योंकि गरीब ही परमात्मा को याद करते हैं और उनका बनते हैं। गरीब ही परमात्मा की श्रीमत पर चलकर, ज्ञान-धन धारण कर सच्चे साहूकार बनते हैं।

"कभी अपने को गरीब नहीं समझना। सबसे साहूकार हम हैं। क्योंकि सच्चा धन आपके पास है। ... अविनाशी धन आपके पास है। ... आत्माओं का घर परमधाम है लेकिन ब्राह्मणों का घर मधुबन है। बाकी सब सेवा स्थान हैं।" अ.बापदादा 19.11.89 पार्टी 2

श्रीमत और भाग्य, भाग्य विधाता एवं विश्व-नाटक

"ऐसे ही सेवा की लकीर ... तो निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - इन तीनों वरदानों को सदा सेवा में प्रैक्टिकल में लाना। इसको कहते हैं अखण्ड भाग्य की रेखा। अब चारो ही भाग्य की रेखाओं को चेक करो कि अखण्ड हैं या खण्डित हैं, स्पष्ट हैं या अस्पष्ट हैं?"

अ.बापदादा 13.12.89

"प्रसन्न रहने के लिए सदा एक बात बुद्धि में रखो कि ड्रामा के नियम प्रमाण संगमयुग पर हर एक ब्राह्मण आत्मा को कोई न कोई विशेषता अवश्य मिली हुई है।... अपने ब्राह्मण जन्म के भाग्य की विशेषता को पहचानों और पहचान कर कार्य में लगाओ।... कार्य में लगाने से एक विशेषता और विशेषताओं को भी लायेगी।" अ.बापदादा 5.12.89

"अगर बाप से प्रतिज्ञा करके फिर अगर अलबेले होते हैं तो नुकसान किसको होगा? ब्राह्मण परिवार में तो एक जाते हैं, 10 आते हैं। ... यह भाग्य की बात है, इसलिए तकदीर की लकीर को कभी भी कम नहीं करना, तकदीर की लकीर को बड़ा करना।"

अ.बापदादा 25.11.95

श्रीमत और दाता, विधाता, वरदाता - परमात्मा
श्रीमत और दाता-विधाता-वरदाता - आत्मा

भाग्य-विधाता परमात्मा को भी कहते हैं तो ब्रह्मा को भी कहते हैं क्योंकि शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा एक ही तन के द्वारा कर्तव्य करके बच्चों का भाग्य बनाते हैं और भाग्य बनाने की श्रीमत भी देते हैं, जिस श्रीमत पर चलकर ही आत्मायें अपना भाग्य बनाती हैं।

परमात्मा दाता, विधाता, वरदाता भी है, उसने हमको अनेकानेक वरदान देकर हमारा भाग्य बनाया है और हमको भी अन्य आत्माओं के दाता, विधाता, वरदाता बनने के लिए श्रीमत दी है। हमको भी कहा है कि तुम भी बाप समान दाता, विधाता, वरदाता बन अन्य आत्माओं का भाग्य बनाओ। परमात्मा हमको ज्ञान, गुण, शक्तियों से सम्पन्न बनाकर दूसरी आत्माओं के प्रति यह कर्तव्य करने के लिए निमित्त बनाता है।

भाग्य, भाग्य-विधाता के साथ विश्व-नाटक के पार्ट का भी गहरा सम्बन्ध है, जिस सीमा तक ही कोई भी आत्मा अपना भाग्य बनाती है। संगमयुग पर आत्मिक सुख के अनुभूति में रहना भी बहुत बड़ा भाग्य है, इसलिए बाबा सदैव कहते हैं - बच्चे, सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहो, शरीर चला जाये परन्तु खुशी न जाये।

"बाप भाग्यविधाता बन नॉलेजफुल बनाये, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान स्पष्ट समझाये भाग्य की लकीर खींचने का कलम आपके हाथ में देते हैं ... सर्व खुले खजानों की चाबी आपके हाथ में दी है।"

अ.बापदादा 14.12.87

"अपने महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति की किरणों की अनुभूति कराओ। इसके लिए पहले जमा का खाता बढ़ाओ। ऐसे नहीं कि याद से वा ज्ञान के मनन से स्वयं को श्रेष्ठ बनाया, मायाजीत, विजयी बनाया, इसी में सिर्फ खुश नहीं रहना है लेकिन सर्व खजानों से सारे दिन में कितनों के प्रति विधाता बनें।" अ.बापदादा 7.4.86

"विशेष हर एक इतना अटेन्शन रखना कि सदा बिन्दु लगाना है अर्थात् बीती को बीती करने का बिन्दु लगाना है और बिन्दु स्थिति में स्थित हो राज्य अधिकारी बन कार्य करना है। ... तो बिन्दु बनना, सिन्धु बनना - यही सर्व बच्चों प्रति वरदाता का वरदान है।"

अ.बापदादा 7.4.86

"सदा इस भाग्य को सामने रखो अर्थात् स्मृति में रखो - मैं कौन हूँ, किसका हूँ और हमको क्या मिला है ... स्मृति आने से सहज ही जैसी स्मृति वैसी स्थिति हो जाती है। ... क्या भी होता रहे लेकिन हम मौज में रहने वाले हैं।" अ.बापदादा

30.11.92 पार्टी 1

“भाग्यविधाता बाप अपना बन गया है। तो जब भाग्यविधाता के बच्चे बन गये तो इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा।... कैसी भी परिस्थिति आये लेकिन अपनी स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो।” अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 1

“भाग्यविधाता और भाग्य - दोनों याद रहते हैं ना। क्या-क्या भाग्य मिला है, उसकी स्मृति सदा इमर्ज रूप में रहे। ... सतयुग के भाग्य और इस समय के भाग्य में क्या अन्तर है? अभी का भाग्य सतयुग के भाग्य से श्रेष्ठ है ना। अभी हीरे तुल्य हो और सतयुग में सोने तुल्य हो जायेंगे।” अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 3

“प्रेसीडेण्ट, प्राइम-मिनिस्टर ... यह सब पद आपके आगे क्या हैं। ... साधारणता में महानता दिखाई दे। ... तो ऐसे अपनी पढ़ाई के भाग्य को इमर्ज रूप में अनुभव करो। ... मजबूरी उनके आगे आ नहीं सकती। अपना श्रेष्ठ भाग्य मर्ज नहीं रखो, इमर्ज रखो।”

अ.बापदादा 3.10.92

“जो जन्म ही भाग्यविधाता द्वारा हुआ है, वह जन्म कितना भाग्यवान हुआ। ... लेकिन हर चलन और चेहरे से भाग्यवान का स्मृति-स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में स्वयं को भी अनुभव हो और दूसरों को भी दिखाई दे।” अ.बापदादा 3.10.92

“बहुत काल से भाग्य की अनुभूति करने वाले अन्त में भी पद्मापदम भाग्यवान प्रत्यक्ष होंगे।... सम्पूर्णता की जीवन का अनुभव अभी से आरम्भ होगा तब अन्त में प्रत्यक्ष रूप में आयेंगे।... स्वयं को भी अनुभव हो और औरों को भी अनुभव हो।” अ.बापदादा 3.10.92

“बाप की मदद चाहिए, आशीर्वाद चाहिए, सहयोग चाहिए, शक्ति चाहिए तो ये चाहिए-चाहिए नहीं। चाहिए शब्द दाता, विधाता, वरदाता के बच्चों के आगे शोभता नहीं है। अभी विधाता और वरदाता बनकर विश्व की हर आत्मा को कुछ न कुछ दान करना है वा वरदान देना है।”

अ.बापदादा 31.11.71

“अगर कोई को यह भी संकल्प आता है कि मैंने इतना किया, मुझे इससे कुछ मान-शान वा महिमा मिलनी चाहिए। यह भी लेना हुआ, लेने की भावना हुई। दाता के बच्चे अगर यह भी संकल्प करते हो तो दाता नहीं हुए। ... जो निष्कामी होगा, वही विश्व का कल्याणकारी बनेगा।” अ.बापदादा 15.9.71

“अन्त में नॉलेज देने की सर्विस कम हो जायेगी और वरदान देने की सर्विस ज्यादा होगी। इसलिए अन्त के समय वरदान लेने वाली आत्माओं में वे ही संस्कार मर्ज हो जायेंगे और मर्ज हुए वे ही संस्कार द्वापर में भक्त के रूप में इमर्ज होंगे।”। अ.बापदादा 20.5.71

"समझने और करने इन दोनों में हकदार बनो, तब ही विश्व के, इस ईश्वरीय परिवार की प्रशंसा के हकदार बनेंगे। कोई भी बात के मांगने वाले मंगता नहीं बनो, दाता बनो। मान, शान, प्रशंसा, बड़ापन आदि मांगने की इच्छा मत करो।" अ.बापदादा 16.5.74

"सदा अपने आपको चेक करो की मैंने एवर हेल्दी का वरदान प्राप्त किया है ? वरदाता बाप द्वारा तीनों वरदान - एवर हेल्दी, वेल्दी और हैपीनेस को प्राप्त किया है ? सदाकाल का वर्सा प्राप्त किया है या अल्पकाल का ? किसी भी मायावी बीमारी के वश हो अपना सदाकाल का एवर हेल्दी का वर्सा गँवा तो नहीं देते हो ?" अ.बापदादा 27.1.76

"महादानी अर्थात् त्याग और तपस्यामूर्त होना। इसी कारण त्याग, तपस्या और महादान का प्रत्यक्ष फल उनका संकल्प और शब्द वरदान रूप हो जाता है।" अ.बापदादा 27.10.75

"बच्चों को विचार-सागर मन्थन करना चाहिए कि कैसे सर्विस बढ़े।... शुभ कार्य आपही करना है। ... बाबा तो दाता है, बाबा थोडेही किसको कहेंगे कि यह करो, इस कार्य में इतना लगाओ।" सा.बाबा 30.7.05 रिवा.

"कोई आत्मा भल कैसा भी व्यवहार करे लेकिन आप उसको बधाई दो, खुशी दो। ... सुखदाता के बच्चे जैसे से वैसे नहीं बन जाओ, अज्ञानी से अज्ञानी नहीं बन सकते ... आप सभी दाता अर्थात् देवता हो, देने वाले हो।" अ.बापदादा 31.12.87

"ऐसे मत समझो हम कुछ देते हैं। तुम तो रिटर्न में बहुत लेते हो। यह फीस नहीं है। ... भक्ति मार्ग में इन्डायरेक्ट देते हैं, उसका फल दूसरे जन्म में मिलता है परन्तु वह नीचे उतरने वाले जन्म में मिलता है। ... तुम करते हो अभी चढ़ती कला में जाने के लिए।"

सा.बाबा 19.12.05 रिवा.

"जितना स्मृति होगी, उतनी समर्थी होगी। ... सबसे बड़ी पालना है ज्ञान की पालना, मुरली की पालना। ... अमृतेले से लेकर रात तक अपने भिन्न-भिन्न भाग्य को स्मृति में लाओ। ... जो सदा अपने भाग्य के स्मृति में रहेंगे, वे औरों को भी भाग्यवान बनायेंगे ना।"

अ.बापदादा 16.12.93 पार्टी 4

"दुनिया वाले दुखधाम में हैं लेकिन आप संगमयुग पर हो, दुखधाम में नहीं। संगमयुग अर्थात् खुशियों का युग, मौजों का युग, उसमें हो। ... सदा यही याद रखना कि हम भाग्य-विधाता के बच्चे हैं। सदा अपना भाग्य याद आने से खुश रहेंगे और खुशियां बांटेंगे।"

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 4

"सभी अपने भाग्य को देखकर सदा हर्षित रहते हो ?... भाग्य विधाता ने भाग्य बनाया, ऊंचे ते ऊंचे भगवान ने भाग्य बनाया। ... सदा अपने भाग्य का सितारा चमकता हुआ दिखाई दे।"

अ.बापदादा 2.12.93 पार्टी 3

"बापदादा हर एक बच्चे को पदम-पदम गुणा भाग्यवान चलन और चेहरे में देखना चाहते हैं। ... कोई भी आपको देखे तो चेहरे से, चलन से भाग्यवान दिखाई दें। तब आप बच्चों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होगी।" अ.बापदादा 03.2.06

"सदा इस भाग्य को स्मृति में रखो, इमर्ज करो। ... हद का नशा भी जब तक पीते नहीं तब तक नशा नहीं चढ़ता। ... यह भी बुद्धि में समाया हुआ है लेकिन इसको यूज़ करो। स्मृति में लाना अर्थात् पीना, इमर्ज करना।" अ.बापदादा 7.3.88

"अमृतवेले से अपने भाग्य की लिस्ट निकालो... अमृतवेले स्वयं बाप उठाते भी हैं... अमृतवेला शक्तिशाली होगा तो सारा दिन स्वत: ही मदद मिलेगी।... भगवान स्वयं शिक्षक बन आपके पास पढ़ाने आते हैं।" अ.बापदादा 7.3.88

"सहजयोग का अर्थ ही है - एक को याद करना। एक बाप, दूसरा न कोई।... तो सहज विधि क्या हुई ? एक को याद करना, एक में सब-कुछ अनुभव करना। ... सदा सहजयोगी अर्थात् सदा खुश रहने वाले। ... तो भाग्य और भाग्यविधाता याद रहे, इसको ही कहा जाता है सहज याद।" अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 3

"भाग्यविधाता बाप अपना बन गया है। तो जब भाग्यविधाता के बच्चे बन गये तो इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा।... कैसी भी परिस्थिति आये लेकिन अपनी स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो।" अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 1

"भाग्यविधाता और भाग्य - दोनों याद रहते हैं ना। क्या-क्या भाग्य मिला है, उसकी स्मृति सदा इमर्ज रूप में रहे। ... सतयुग के भाग्य और इस समय के भाग्य में क्या अन्तर है ? अभी का भाग्य सतयुग के भाग्य से श्रेष्ठ है ना। अभी हीरे तुल्य हो और सतयुग में सोने तुल्य हो जायेंगे।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 3

"जो जन्म ही भाग्यविधाता द्वारा हुआ है, वह जन्म कितना भाग्यवान हुआ।... लेकिन हर चलन और चेहरे से भाग्यवान का स्मृति-स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में स्वयं को भी अनुभव हो और दूसरों को भी दिखाई दे।" अ.बापदादा 3.10.92

"प्रेसीडेण्ट, प्राइम-मिनिस्टर ... यह सब पद आपके आगे क्या हैं। ... साधारणता में महानता दिखाई दे। ... तो ऐसे अपनी पढ़ाई के भाग्य को इमर्ज रूप में अनुभव करो।... मजबूरी उनके आगे आ नहीं सकती। अपना श्रेष्ठ भाग्य मर्ज नहीं रखो, इमर्ज रखो।"

अ.बापदादा 3.10.92

"कलियुग में सबकी तकदीर सोई हुई है।... सोई हुई तकदीर को जगाने वाला और श्रीमत

देने वाला अथवा तदबीर कराने वाला एक ही बाप है। वही बैठकर बच्चों की तकदीर जगाते हैं।"
सा.बाबा 8.2.06 रिवा.

"दाता, भाग्यविधाता और वरदाता ... वरदाता को राज़ी करने की सबसे सहज विधि जानते हो ? उनको सबसे प्रिय कौन लगता है ? उनको "एक" शब्द सबसे प्रिय लगता है। जो बच्चे "एकव्रता" आदि से अब तक हैं, वे ही वरदाता को अति प्रिय हैं।"

अ.बापदादा 23.11.89

"दूसरा कोई कुछ भी दे लेकिन आप रुहानी स्नेह देना।... कोई आपकी ग्लानि करे लेकिन आप स्नेह देना। स्नेह की शक्ति एक चुम्बक है।... स्नेह की शक्ति से जो बाप से दूर हैं, उन्होंको समीप लाना और आपस में स्नेह का लेनदेन करना।" अ.बापदादा 7.3.95

श्रीमत और बालकपन-मालिकपन अर्थात् बालक सो मालिक

ब्रह्मा कुमार-कुमारी जीवन एक संगठित जीवन है और संगठन में सफलता के लिए बाबा ने बालकपन और मालिकपन का राज़ समझाया है। बाबा ने बालकपन और मालिकपन की जो श्रीमत दी है, उसका पालन करने से ही संगठन की सफलता हो सकती है।

"बुद्धि में ज्यादा ज्ञान आ जाता है तो उससे फिर ज्यादा अलबेलापन आ जाता है। ... तीनों कालों का ज्ञान बुद्धि में आने से अपने को ज्यादा समझदार समझते हैं। जहाँ बालक बनना चाहिए वहाँ मालिक बन जाते हैं और जहाँ मालिक बनना चाहिए वहाँ बालक बन जाते हैं।"

अ.बापदादा 19.6.69

"यज्ञ की प्रत्यक्षता के लिए एक सेकेण्ड में मालिक और एक सेकेण्ड में बालकपन की आवश्यकता है। ... मालिकपने की बुद्धि बनाकर राय देकर फट से बालकपने की बुद्धि बना लेनी चाहिए।" अ.बापदादा 23.7.69

"बालक सो मालिक। मालिकपन की विशेषता है - जितना ही मालिकपन का नशा, उतना ही विश्व-सेवाधारी के संस्कार सदा इमर्ज रूप में हों। दोनों समान हों। यह है बाप समान मालिक बनना।" अ.बापदादा 31.3.86

"जिस समय विचारों को देते हो तो मालिक बनकर देना चाहिए। लेकिन जिस समय फाइनल होता है उस समय फिर बालक बन जाना है। सिर्फ मालिकपना भी नहीं। सिर्फ बालकपना भी नहीं।" अ.बापदादा 10.6.71

"दवाई के साथ परहेज भी चाहिए।... पहली परहेज व मर्यादा है - एक बाप दूसरा न कोई।

... यह मूल परहेज निरन्तर चाहिए। दूसरी परहेज है - बाप ने जो अधिकार दिया है अपने आपका मालिक बनने का ... वह अधिकारीपन की स्मृति स्वरूप रहने की परहेज निरन्तर नहीं करते। तीसरी परहेज है - ट्रस्टीपन की। इस तन के भी ट्रस्टी, संकल्प के भी ट्रस्टी। ... इसलिए अब परहेज को अपनाओ तो सर्व प्राप्तियां सदा अनुभव हों। ऐसे बालक सो मालिक।" अ.बापदादा 20.10.75

"मालिक के साथ बालक भी हो और बालक के साथ मालिक भी हो। बालक बनने से सदा बेफिकर, डबल-लाइट और मालिक अनुभव करने से मालिकपन का रुहानी नशा रहता है। ... अभी-अभी मालिक और अभी-अभी बालक ... यह सीढ़ी है। कभी चढ़ो और कभी उतरो। इससे सदा हल्के रहेंगे।" अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 4

"मालिक के साथ बालक भी हो और बालक के साथ मालिक भी हो। बालक बनने से सदा बेफिकर, डबल-लाइट और मालिक अनुभव करने से मालिकपन का रुहानी नशा रहता है।... अभी-अभी मालिक और अभी-अभी बालक... यह सीढ़ी है। कभी चढ़ो और कभी उतरो। इससे सदा हल्के रहेंगे।" अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 4

श्रीमत और मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति

बाबा ने हमको सर्वशक्तियों का ज्ञान और उनको धारण करने का विधि-विधान बताया है। जो उनकी श्रीमत पर चलकर सर्वशक्तियों को धारण करता है, वही मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति का अनुभव करता है, जो संगमयुग की विशेष प्राप्ति है।

"हिम्मत से बाप की मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है। ... कोशिश करेंगे। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते हैं। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय की होगी।" अ.बापदादा 24.1.70

"भट्ठी में किन शक्तियों को धारण करके जाना है। मुख्य है सहनशक्ति, परखने की शक्ति, विस्तार को सार और फिर छोटे को बड़ा करने की शक्ति भी चाहिए। समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सामना करने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति भी चाहिए। ... धारण करने से मास्टर सर्वशक्तिवान बन जायेंगे।" अ.बापदादा 27.7.70

"मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् जो किसके भी सूरत में उसकी स्थिति और संकल्प स्पष्ट समझ सको। शक भी न रहे। ... जितना-जितना जिसका पुरुषार्थ स्पष्ट होता जाता है, उतना ही उनकी प्रालब्ध स्पष्ट होती जाती है और अन्य भी उनके आगे स्पष्ट होते जाते हैं।"

अ.बापदादा 2.4.70

"अधिकारी जिस शक्ति को आर्डर करे और वह शक्ति हजूर हाजिर कहे। ... सदा और सहज हो, नेचुरल हो, नेचर हो, उसकी विधि है - जैसे बाप को हजूर भी कहा जाता है तो जो बच्चा हजूर की हर श्रीमत पर हाजिर हजूर कर चलता है, उसके आगे सर्व शक्तियां भी हजूर हाजिर करती हैं।... अगर हर श्रीमत में जी हाजिर नहीं है तो हर शक्ति भी हर समय हाजिर हजूर नहीं कर सकती।... उस समय अधिकारी के बजाये अधीन बन जाते हैं।"

अ.बापदादा 2.11.04

"अपने में सर्वशक्तिवान का प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करो।... मास्टर सर्वशक्तिवान हो, न कि दो चार शक्तिवान की सन्तान हो? मास्टर सर्वशक्तिवान बन सर्वशक्तिवान को प्रत्यक्ष करो।"

अ.बापदादा 19.4.73

"जब सर्वशक्तियों से अपने को सम्पन्न करेंगे तब ही भविष्य में सदा सर्व गुणों से भी सम्पन्न, सर्व पदार्थों से भी सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज को पा सकेंगे।... सभी से पॉवरफुल स्टेज है अपना अनुभव क्योंकि अनुभवी आत्मा में विल पॉवर होती है।"

अ.बापदादा 31.11.71

"अब कोई एक शक्ति की भी कमी नहीं होनी चाहिए क्योंकि अब जिस भी शक्ति की कमी होगी, वही परीक्षा के रूप में आयेगी अर्थात् हरेक के सामने ड्रामानुसार पेपर में वही क्वेश्चन आयेगा। इसलिए सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण और मास्टर सर्वशक्तिवान बनो। अगर एक शक्ति की भी कमी है, तो फिर शक्तिवान कहेंगे न कि सर्वशक्तिवान।"

अ.बापदादा 13.9.74

"सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है।...सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट - इसको ही दूसरे शब्दों में स्व के राजे अर्थात् राजयोगी कहा जाता है। राजाओं के भण्डार सदा भरपूर रहते हैं।"

अ.बापदादा 29.10.87

"ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है कर्मातीत स्थिति को पाना। तो लक्ष्य को प्राप्त करने के पहले अभी से इसी अभ्यास में रहेंगे तब ही लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। इसी लक्ष्य को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने की शक्ति समाने की शक्ति आवश्यक है।"

अ.बापदादा 17.4.83

"सदा हर्षित रहो, तो आपका चेतन्य चित्र सेवा के निमित्त बन जाये। ... अगर आप मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट हो तो कोई भी शक्ति ऑर्डर न मानें, यह हो नहीं सकता।"

अ.बापदादा 18.1.91 पार्टी 2

"जो हज़ूर अर्थात् बाप के हर कदम की श्रीमत पर हर समय "जी हाजिर" वा हर आज्ञा में 9जी हाजिर" प्रैक्टिकल में करते हैं ... उनके आगे हर शक्ति भी "जी हाजिर" करती है।"

अ.बापदादा 20.12.92

"यथार्थ शक्तिशाली याद का प्रत्यक्ष प्रमाण समय प्रमाण शक्ति हाजिर हो जाये। ... ऐसे नहीं समझो कि बात ही ऐसी थी ना, सरकमस्टांस ही ऐसे थे, वायुमण्डल ऐसा था ... यही तो दुश्मन हैं। जब दुश्मन आ जाये उस समय कहो - दुश्मन आ गया, इसलिए तलवार नहीं चला सके ... तो तलवार किसलिए ?" अ.बापदादा 20.12.92

"बाप की याद ही छत्रछाया है।... छत्रछाया में रहना अर्थात् मायाजीत विजयी बनना। ... आपकी आत्मा में अनगिनत बार विजयी बनने के संस्कार भरे हुए हैं। ... कैसी भी परिस्थिति आये लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान कभी हलचल में नहीं आ सकते।"

अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 1

"अभी एक सेकेण्ड में अपने मन से सब संकल्प समाप्त कर एक सेकेण्ड में बाप के साथ परमधाम में ऊंचे ते ऊंचे स्थान, ऊंचे ते ऊंचे बाप, उनके साथ ऊंची स्थिति में बैठ जाओ और बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान बन विश्व की आत्माओं को सर्व शक्तियों की किरणें दो।"

अ.बापदादा 14.3.06

"सर्वशक्तिवान बाप के साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है। ... ये साथ का अनुभव बढ़ाओ। ... माया और कुछ नहीं है, आपकी कमजोरी माया बनकर सामने आती है।" अ.बापदादा 17.11.94

श्रीमत और मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी

बाबा ऑलमाइटी अथॉरिटी है, उसने हमको भी मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी बनाया है। अथॉरिटी सम्पन्न आत्मा के क्या-क्या गुण होते हैं और बाप ने हमको क्या-क्या अथॉरिटी दी हुई हैं, उसको हमने कहाँ तक धारण किया है। हम ऑलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी हैं तो हमारी स्थिति क्या और कैसी होनी चाहिए, यह सब राज़ बाबा ने बताये हैं और उसकी धारणा कैसे हो, उसके लिए श्रीमत दी है।

"कोई भी अथॉरिटी वाले होते हैं, साधारण अथॉरिटी वालों में भी तीन बातें होती हैं - एक निश्चय, दूसरा नशा और तीसरा निर्भयता। ... कोई भी किस भी रीति से हार खिलाने की कोशिश करे लेकिन निर्भयता, निश्चय और नशे के आधार पर कब हार खा सकेंगे ? नहीं, सदा विजयी होंगे। ... जब यह तीनों बातें हर कर्म, बोल मे आ जायेंगी तब ही आपके हर

बोल और कर्म ऑलमाइटी अथॉरिटी को प्रत्यक्ष करेंगे।" अ.बापदादा 27.5.72

"ऑलमाइटी की कोई भी एक्टिविटी साधारण कैसे हो सकती है? परमात्मा के अथॉरिटी और आत्माओं के अथॉरिटी में रात-दिन का फर्क होना चाहिए।... आपके हर बोल से अथॉरिटी प्रसिद्ध होनी चाहिए। फाइनल स्टेज तो यही है ना। बोल से, चेहरे से, चलन से, सभी से अथॉरिटी का मालूम पड़ना चाहिए।" अ.बापदादा 27.5.72

"सदा बुद्धि में रहना चाहिए कि मैं सर्व आत्माओं के पतित संकल्पों, वृत्तियों वा दृष्टि को भस्म करने वाली मास्टर ज्ञानसागर, मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ।" अ.बापदादा 15.9.71

"पहले अपने आप से पूछो मेरे संकल्प मेरे लॉ एण्ड ऑर्डर में हैं? मेरा स्वभाव लॉ एण्ड ऑर्डर मे है? अगर लॉ-लेस है तो क्या मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं? मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी कभी किसी के वशीभूत नहीं हो सकते। क्या ऐसे बने हो? चेकिंग के समय चेक नहीं करेंगे तो अपनी तकदीर को चेंज नहीं कर सकेंगे।"

अ.बापदादा 21.6.74

"साधारण आत्मायें भी अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त कर लेती हैं तो कितनी अथॉरिटी में रहती हैं।... तो ऐसी सर्व-सिद्धियों को विधि द्वारा प्राप्त करने वाली आत्मायें कितने नशे में रहनी चाहिए?... जो स्वयं ही लेने वाला है, वह देने वाला दाता नहीं बन सकता। जैसे भिखारी, भिखारी को सम्पन्न नहीं बना सकता।" अ.बापदादा 26.6.74

"सबसे बड़े से बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है। ... सत् अर्थात् सत्य और सत् अर्थात् अविनाशी। ... दुनिया में भी कहते हैं - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। साथ-साथ परमात्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप भी कहते हैं। आत्माओं को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं।"

अ.बापदादा 20.3.87

"सत्य के लिए गायन है - सत्य की नाव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो - सच तो बीठो नच। ... सत्यता की शक्ति वाला शक्तिशाली होगा, उसमें सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए कब घबरायेगा नहीं।" अ.बापदादा 20.3.87

"सत्यता की शक्ति वाले विजयी अवश्य बनते हैं। सत्यता की प्राप्ति खुशी और निर्भयता है। ... सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियाँ सर्व प्राप्ति है। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है?... सत्यता की अथॉर्टी वाले की वाणी में स्नेह और नम्रता होगी।" अ.बापदादा 20.3.87

"सत्यता की अथॉर्टी वाले निरहंकारी होते हैं। तो अथॉर्टी भी हो, नशा भी हो और निरहंकारी भी हो। इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप।" अ.बापदादा 20.3.87

"जैसे ब्रह्मा बाप को देखा ... सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन स्नेह से बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं - स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स। तो सेवा में इस बैलेन्स को अण्डरलाइन करो।" अ.बापदादा 20.3.87

"निर्भयता की अथॉर्टी जरूर रखो। एक ही बाप का नया ज्ञान सत्य ज्ञान है और नये ज्ञान से नई दुनिया की स्थापना होती है, यह अथॉर्टी और नशा स्वरूप में इमर्ज हो।... धरनी, नब्ज, समय यह सब देखकर ज्ञान देना - यही नॉलेजफुल की निशानी है।"

अ.बापदादा 20.3.87

"कोई भय न हो। निर्भय होकर धरनी भल बनाओ।... यह जरूर है कि जैसा व्यक्ति वैसी रूपरेखा बनानी पड़ती है लेकिन व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आ सकते। अपने सत्य ज्ञान की अथॉर्टी से व्यक्ति को परिवर्तन करना है - यह लक्ष्य नहीं भूलो।" अ.बापदादा 20.3.87

"जितना-जितना मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट होंगे, उतना सर्व शक्तियां सदा आर्डर में रहेंगी। ... जब अभी से सर्व शक्तियां आपके आर्डर में होंगी तब ही अन्त में भी आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। इसका बहुतकाल का अभ्यास चाहिए।"

अ.बापदादा 31.12.90 पार्टी 3

"मास्टर सर्वशक्तिवान का टाइटिल सभी बच्चों को बाप द्वारा मिला हुआ है। ... जिस समय जिस शक्ति को आवाह्न करते हो, उस समय चेक करो कि मैं मालिक बनकर सीट पर सेट हूँ?... तो "अथॉरिटी और अधिकार" इस स्थिति में स्थित होकर कोई भी शक्ति को ऑर्डर करो तो वह जी हजूर, जी हजूर करेगी। सर्व शक्तियां, माया, प्रकृति, संस्कार-स्वभाव सब दासी बन जायेंगे।" अ.बापदादा 18.1.06

श्रीमत और सत्य ज्ञान एवं सत्य ज्ञान की अथॉरिटी अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुभव की अथॉरिटी

श्रीमत और परमात्म प्यार एवं परमात्म-प्यार के अनुभव की अथॉरिटी

श्रीमत और परमात्म पालना

ज्ञान सागर बाबा ने हमको जो सत्य ज्ञान दिया है, वह विश्व में न कोई आत्मा को है और न कोई दे सकता है, इसलिए बाबा ने कहा है तुमको सत्य ज्ञान की अथॉरिटी है और सभी को ये सत्य ज्ञान सत्य ज्ञान की अथॉरिटी की स्थिति में स्थित होकर समझाओ। साथ-साथ

बाबा ने ये भी श्रीमत दी है कि तुमको ज्ञान का भी अहंकार नहीं होना चाहिए।

ज्ञान शिवबाबा ने दिया है और वह ज्ञान अपने सर्व भाइयों को समझाना है। सभी आत्मायें परमात्मा के बच्चे हैं, हमारे प्रिय भाई हैं। अथॉरिटी के साथ नम्रता और स्नेह सदा रहे, ये बाबा की श्रीमत है। दुनिया में भी कहा गया है - भरपूर व्यक्ति नम्र होता है। जैसे पेड़ फलों से भरा होता है तो वह झुक जाता है। संस्कृत में भी कहा गया है - विद्या ददाति विनयम्।

बाबा ने हमको सारा ज्ञान दिया है परन्तु जो उस ज्ञान को मनन-चिन्तन करके अनुभव में लाते हैं, वह उनका बन जाता है। इसलिए बाबा कहते अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़ी अथॉरिटी है। बाबा हमको चेलेन्ज भी करते कि बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसको तुम चेक करो कि सत्य है। जब तुम उसकी सत्यता को अनुभव करेंगे, तब ही तुम दूसरों के सामने अथॉरिटी से वर्णन कर सकेंगे और उन को भी अनुभव करा सकेंगे। इसलिए बाबा श्रीमत देते कि ज्ञान की हर प्वाइन्ट को मनन-चिन्तन कर अनुभव कर अपना बनाओ, तब तुम उस ज्ञान सुख स्वयं भी अनुभव करोगे और दूसरों को भी करा सकोगं। तब ही तुम इस सत्य ज्ञान के महत्व को अनुभव करोगे।

“सत्यता की अथॉरिटी वाले निरहंकारी होते हैं। तो अथॉरिटी भी हो, नशा भी हो और निरहंकारी भी हो। इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप।”

अ.बापदादा 20.3.87

“झूठ खण्ड में ब्रह्मा बाप को सत्यता की अथॉरिटी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा ना। ... अथॉरिटी के बोलों में स्नेह समाया हुआ है, निर्मानता है, निरहंकार है, इसलिए अथॉरिटी के बोल प्यारे लगते हैं। ... तो सेवा में, कर्म में फॉलो ब्रह्मा बाप है।”

अ.बापदादा 20.3.87

“जैसे ब्रह्मा बाप को देखा ... सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन स्नेह से बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं - स्नेह और सत्यता की अथॉरिटी का बैलेन्स। तो सेवा में इस बैलेन्स को अण्डरलाइन करो।” अ.बापदादा 20.3.87

“निर्भयता की अथॉरिटी जरूर रखो। एक ही बाप का नया ज्ञान सत्य ज्ञान है और नये ज्ञान से नई दुनिया की स्थापना होती है, यह अथॉरिटी और नशा स्वरूप में इमर्ज हो।... धरनी, नब्ज, समय यह सब देखकर ज्ञान देना - यही नॉलेजफुल की निशानी है।”

अ.बापदादा 20.3.87

“कोई भय न हो। निर्भय होकर धरनी भल बनाओ।... यह जरूर है कि जैसा व्यक्ति वैसी रूपरेखा बनानी पड़ती है लेकिन व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आ सकते। अपने सत्य ज्ञान की

अथॉरिटी से व्यक्ति को परिवर्तन करना है - यह लक्ष्य नहीं भूलो।"

अ.बापदादा 20.3.87

"इस मधुबन की धरनी पर आने से उनको यह जरूर मालूम पड़ना चाहिए ... यह उल्हना न दे कि ऐसी धरनी पर भी मैं पहुँचा लेकिन यह मालूम नहीं पड़ा कि परमात्म ज्ञान क्या है? परमात्म-भूमि पर आकर परम-आत्मा की प्रत्यक्षता का सन्देश जरूर ले जाये।"

अ.बापदादा 20.3.87

"नम्बरवन सौदागर खजानों को मनन कर अनुभव की अथॉरिटी बन दूसरों को भी बांटते। कार्य में लगाना अर्थात् खजानों को बढ़ाना।... इस खजाने की कन्डीशन यह है कि जितना औरों को देंगे, जितना कार्य में लगायेंगे, उतना बढ़ेगा।... समझा मनन शक्ति का बहुत महत्व है।"

अ.बापदादा 10.12.87

"एक बच्ची को पेपर मिला था, जिसमें गीता के भगवान की बात पूछी गई थी। उसने लिख दिया गीता का भगवान शिव है ... यह लिखा तो फेल हो गई। मां-बाप को कहा - मैं यह नहीं पढूँगी, अभी इस रुहानी पढ़ाई में लग जाऊंगी।... सच तो लिखना है ना। आगे चलकर समझेंगे - बरोबर इस बच्चे ने जो लिखा था, वह सत्य है।"

सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

"वास्तव में युनिवर्सिटी यह एक ही है, इन द्वारा ही सब मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाते हैं।... बाबा कहते हैं - तुम डरो मत। यह तो समझाने की बात है।"

सा.बाबा 23.9.05 रिवा.

"यह नया ज्ञान देने वाले अथॉरिटी हैं। यह अथॉरिटी प्रसिद्ध हो। इसी से ही शक्तिशाली आत्मायें आगे आयेंगी जो आपके तरफ से ढिंढोरा पिटवायेंगी। आपको ढिंढोरा नहीं पीटना पड़ेगा लेकिन ऐसी आत्मायें सेटिसफाय हो नई बात जान नये उमंग में आकर ढिंढोरा पीटेंगी। धर्म युद्ध भी तो अभी रही हुई है ना। अभी गुरूओं की गद्दी को कहाँ हिलाया है।"

अ.बापदादा 1.6.83

"अनुभव सबसे बड़े से बड़ी अथॉरिटी है। अनुभव की अथॉरिटी से बाप समान मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी की स्थिति का अनुभव करते हैं।... अनुभव के आधार से औरों को भी निर्विघ्न बनाने के एग्गजॉम्पुल बनते हैं।... मगन रहने वाली आत्मायें सदा कर्मातीत अर्थात् कर्म-बन्धन से न्यारी और सदा बाप की प्यारी हैं।"

अ.बापदादा 23.12.87

"अनुभव में मगन आत्मा सदा तृप्त आत्मा, सन्तुष्ट आत्मा, सम्पन्न आत्मा, सम्पूर्णता के अति समीप आत्मा है।... अनुभवी के बोल दिल में समा जाते हैं और वर्णन करने वाले के बोल दिमाग तक बैठते हैं।... तो अनुभव को बढ़ाओ लेकिन पहले वर्णन से मनन में आओ। ...

मनन करते-करते अनुभव स्वत: ही बढ़ता जायेगा। मनन का अभ्यास अति आवश्यक है।”

अ.बापदादा 23.12.87

“मनन शक्ति वाले, मगन रहने वाले सदा पूज्य बनते, वर्णन करने वाले सिर्फ गायन योग्य होते हैं। तो सदा अपने को गायन-पूजन योग्य बनाओ।” अ.बापदादा 23.12.87

“अनुभव की अथॉरिटी की सीट पर अभी सेट हो रहे हैं। स्पीकर की सीट ले ली है लेकिन “सर्व अनुभवों की अथॉरिटी का आसन”, अभी यह लेना है। सुनाया ना, दुनिया वालों का है सिंहासन और आप सबका है अथॉरिटी का आसन। इस आसन पर सदा स्थित रहो। तो सहज योगी, सदा के योगी, स्वत: योगी हैं ही।” अ.बापदादा 30.3.83

“सबसे बड़ी परमात्म अनुभति की अथॉरिटी है। अनुभव की अथॉरिटी से श्रेष्ठ और सहज किसी को भी परिवर्तन कर सकते हो। तो आप सबके पास यही विशेष अनुभव की अथॉरिटी है।” अ.बापदादा 13.3.86

“ज्ञान का अर्थ यह नहीं कि प्वाइन्ट रिपीट करना या बुद्धि में रखना लेकिन ज्ञान अर्थात् समझ। त्रिकालदर्शी बनने की समझ, सत्य-असत्य की समझ, समय प्रमाण कार्य करने की समझ - इसको ज्ञान कहा जाता है।... चेक करो - ऐसे ज्ञानी तू आत्मा कहाँ तक बने हैं?”

अ.बापदादा 30.11.92

“सेवा के लक्ष्य में ज्ञानी-योगी तू आत्माओं के तरफ अटेन्शन ज्यादा चाहिए। ऐसी आत्माओं की वृद्धि आवश्यक है। ... भावुक नहीं बनो, ज्ञानी भी बनो। प्रकृति के भी ज्ञानी बनो, सिर्फ आत्मा का ज्ञान नहीं। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का भी ज्ञान। उसमें ड्रामा भी आ जाता है।” अ.बापदादा 1.4.92

“पहले सोचे फिर कर्म करे। ज्ञानी-यागी तू आत्मा को समय प्रमाण टच होता है और वह फिर कैच करके प्रैक्टिकल में लाता है। एक सेकेण्ड भी पीछे सोचा तो ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे।”

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 2

“कोई अच्छी जगह हो तो जाकर भाषण करो। तुमको हाथ में पुस्तक नहीं लेना है। तुमको तो अन्दर सारा ज्ञान है। बाकी समझाने के लिए झाड़-त्रिमूर्ति, सृष्टि-चक्र का सबको राज़ समझाना है।” सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

“यह नया हॉल और नया वर्ष है तो इसमें क्या करेंगे? ... यह वर्ष अनुभवी मूर्त बनकर औरों को भी अनुभव कराने का वर्ष है। हर बच्चे को हर शक्ति का, हर गुण का अनुभव करना है। ... ज्ञान का अर्थ ही समझना और अनुभव करना।” अ.बापदादा 31.12.96

“जैसे अभी इस समय सकार रूप में बाप के साथ उमंग-उत्साह और खुशी में झूम रहे हो,

ऐसे ही नये वर्ष में सदा अव्यक्त रूप में साथी समझना, अनुभव करना। यह साथ का अनुभव बहुत प्यारा है।" अ.बापदादा 31.12.96

"आपके अच्छे बनने के वायब्रेशन कैसी भी नेगेटिव सीन को पॉजिटिव में बदल देगी, इतनी शक्ति आप बच्चों में है, सिर्फ यूज़ करो। शक्तियां बहुत हैं, समय पर यूज़ करके देखो तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव करेंगे।" अ.बापदादा 31.12.96

"आपने ब्रह्मा बाप को देखा, साकार है ना ... स्टूडेण्ट भी रहे और सत्यता व पवित्रता के लिए कितनी ऑपोजीशन हुई तो क्या चालाकी से चला ?... सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की भी आवश्यकता है।... उस समय के लिए हार लगती है लेकिन है सदा की विजय।" अ.बापदादा 27.2.96

"परमात्म प्यार में खोई हुई आत्मा की झलक और फलक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समीप आना तो दूर है लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। ... बाप बच्चों को कहते हैं - प्राप्तियों की अनुभूतियों के सागर में समाये रहो। सागर में समाना अर्थात् सागर समान बेहद के प्राप्ति स्वरूप बन कर्म में आना।"

अ.बापदादा 5.12.94

"सारे कल्प में यही थोड़ासा समय परमात्म-पालना मिलती है।... एक बात भी स्मृति में रखो कि अमृतवेले आपको उठाने वाला कौन ?... जिसका आदि इतना श्रेष्ठ है तो मध्य और अन्त क्या होगा ? श्रेष्ठ होगा ना !" अ.बापदादा 26.11.94

"स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप। सोचना - यह समर्थी स्वरूप नहीं है। स्मृति समर्थी है। ... अनादि आत्मा, जब आप परमधाम से आई तो आप विशेष आत्माओं के संस्कार स्वत: ही स्मृति स्वरूप हैं और अन्त में संगम पर भी स्मृति स्वरूप बनते हो... यह स्मृति में रखो कि हम परमात्म पालना की अधिकारी आत्मायें हैं।" अ.बापदादा 26.11.94

"कमजोरी का विशेष कारण जो सुनते हो, जो कहते हो, उस एक-एक गुण, शक्ति, ज्ञान के प्वाइन्ट्स का अनुभव कम है। ... सबसे बड़ी अथॉरिटी अनुभव की होती है। ... यदि अनुभव नहीं होता है तो उसका कारण है कि जो समय प्रति समय विधि मिलती है, उस विधि से उस पर अटेन्शन कम है।" अ.बापदादा 17.11.94

"बाप की छत्रछाया के अन्दर बैठे रहो। ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है झूलना। ... माया भी झूला झुलाती है लेकिन आप माया के झूले में नहीं झूलना। ... खुशी के झूले में, शक्तियों की अनुभूतियों के झूले में झूलो। ... अनगिनत झूले मिले हुए हैं।" अ.बापदादा 6.3.97

श्रीमत और मास्टर नॉलेजफुल एवं पॉवरफुल

किसी कार्य में सफलता के लिए ज्ञान भी आवश्यक है तो उसको करने की शक्ति भी आवश्यक है इसलिए इस ज्ञान मार्ग में मनवांछित सफलता को प्राप्त करने के लिए मास्टर नॉलेजफुल और पॉवरफुल दोनों बनना है। बाबा ने हमको दोनों ही स्थितियों का ज्ञान भी दिया है और उनको धारण करने का विधि-विधान भी बताया है और बनाने के लिए श्रीमत भी दी है।

"पहला ज्ञान की सब्जेक्ट में प्रवीण आत्मा का टाइटल हैं मास्टर ज्ञान सागर वा नॉलेजफुल वा स्वदर्शन चक्रधारी कहो तो भी एक ही बात है। दूसरा याद की यात्रा में जो यथार्थ युक्ति-युक्त योग-युक्त है उनका टाइटल है - पॉवरफुल। ... तीसरा सब्जेक्ट है - दिव्य-गुण। उनका टाइटिल है ... इसेन्सफुल" अ.बापदादा 18.6.74

"जितना नॉलेजफुल क्या उतना ही साथ-साथ पॉवरफुल भी हो ? यह बैलेन्स ठीक न होने के कारण जानते हुए भी कर नहीं पाते हो। जो चेकिंग नहीं कर पाते उन आत्माओं का बैलेन्स में रहने वाले ब्लिसफुल का टाइटल कट हो जाता है, वह न स्वयं को ब्लिस दे सकते हैं और न बाप से ब्लिस ले सकते हैं।" अ.बापदादा 18.6.74

"महारथी को कोई बात मुश्किल अनुभव हो, वह महारथी ही नहीं। महारथी अपने सहयोग से और बाप के सहयोग से औरों की मुश्किल भी सहज करेगा। महारथियों के संकल्प में भी कभी यह कैसे, ऐसे क्यों ? यह प्रश्न नहीं उठ सकता। कैसे के बजाए ऐसे शब्द आयेगा क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल, त्रिकालदर्शी हो ना ?" अ.बापदादा 16.5.74

"जैसे बाप को अव्यक्त से व्यक्त में लाते हो, क्या इसी प्रकार हर शक्ति को कार्य में व्यक्त कर सकते हो ? क्योंकि अब समय है सर्व-शक्तियों को व्यक्त करने का तथा प्रसिद्ध करने का। जब प्रसिद्धि होगी तब ही शक्ति सेना के विजय का नारा बुलन्द होगा। इसमें सफलता का मुख्य आधार है - परखने की शक्ति।" अ.बापदादा 6.2.74

"नॉलेजफुल और पॉवरफुल आत्मा की रिजल्ट है सक्सेसफुल। याद अर्थात् पॉवरफुल और ज्ञान अर्थात् नॉलेज, इन दोनों सब्जेक्ट्स का ऑब्जेक्ट है सक्सेसफुल। इसी को प्रत्यक्ष फल कहा जाता है।" अ.बापदादा 10.9.75

"नालेजफुल का अर्थ क्या है ? नॉलेजफुल का अर्थ है हरेक कर्मेन्द्रियों में नॉलेज समा जाए। क्या करना है और क्या नहीं करना है - स्पष्ट होगा तो धोखा खाने की बात रहेगी ? ऑखें और वृत्ति धोखा नहीं खायेंगी। जब आत्मा में नॉलेज आ जाती है तो सर्व इन्द्रियों में नॉलेज समा जाती है। जैसे भोजन से शक्ति भर जाती है तो शक्ति के आधार से काम होता है। अभी

नॉलेज को समाना है। हरेक कर्मेन्द्रियाँ को नॉलेजफुल बनाओ।" अ.बापदादा 18.1.75

"आप बच्चे जानते हो कि आत्माओं के कर्मों में भ्रष्टाचार पापाचार बढ़ना ही प्रकृति को हिला रहा है लेकिन आप बच्चे तो हलचल में भी अचल-अडोल साक्षी-दृष्टा बन ड्रामा के भिन्न-भिन्न दृश्यों को जानते हुए ... नॉलेजफुल पॉवरफुल की शान में रहते परेशान नहीं होते ... विश्व-कल्याणकारी बनो।" अ.बापदादा का सन्देश 30.7.05

"वायदा किया - तन-मन-धन सब आपका है ... आप मुझे याद करो तो सर्व प्राप्तियों के अधिकारी हो ही। ... बाप कहते हैं - सर्व खजानों को सदा स्व प्रति और सर्वात्माओं के प्रति कार्य में लगाओ। ... सिर्फ बुद्धि में नॉलेज नहीं रखो।" अ.बापदादा 30.11.05

"सबसे बड़ा खज़ाना इस संगमयुग के समय का खज़ाना है।... भरपूर आत्मा कभी हिलेगी नहीं। तो इन खज़ानों को चेक करो कि सर्व खज़ाने स्वयं में समाये हैं?... जितना खज़ाने को स्व के कार्य और अन्य की सेवा के कार्य में यूज करते हो, उतना खज़ाना बढ़ता है।... सुनना माना लेना नहीं है लेकिन समाना और समय पर कार्य में लगाना - यह है लेना।"

अ.बापदादा 30.11.92

"ज्ञान का अर्थ यह नहीं कि प्वाइन्ट रिपीट करना या बुद्धि में रखना लेकिन ज्ञान अर्थात् समझ। त्रिकालदर्शी बनने की समझ, सत्य-असत्य की समझ, समय प्रमाण कार्य करने की समझ - इसको ज्ञान कहा जाता है। ... चेक करो - ऐसे ज्ञानी तू आत्मा कहाँ तक बने हैं?"

अ.बापदादा 30.11.92

"जैसे बाप नॉलेजफुल, वैसे हम भी नॉलेजफुल हैं ... जो नॉलेजफुल है, उसे कोई भी संस्कार, सम्बन्ध, पदार्थ वार नहीं कर सकता। ... बेहद की वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो।"

अ.बापदादा 3.4.96

"झमेला मुक्त होने की सबसे सहज विधि है कि पहले स्वयं को झमेले मुक्त करो, दूसरे के पीछे नहीं पड़ो। ... अमृतवेले से स्वयं से ये संकल्प करो कि मुझे झमेला मुक्त बनना है। बाकी तो है ही झमेलों की दुनिया, झमेले तो आयेंगे ही।... अन्जान रहना भी अन्धकार है। तो अन्धकार में नहीं रह जाना।" अ.बापदादा 4.12.95

"बस बीज को याद करो और ड्रामा के चक्र को याद करो। जो ज्ञान बाबा के पास है, वह ज्ञान हमारी आत्मा में भी है। वह है ज्ञान का सागर, हम आत्मा भी मास्टर ज्ञान सागर बनते हैं। ... बाप को याद करते-करते सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है।"

सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

"बाप की नॉलेज से नॉलेजफुल और माया के भी नॉलेजफुल, ऐसे नॉलेजफुल कितने निकले

होंगे। माया की नॉलेज से भी नॉलेजफुल बनना पड़े, जो माया को दूर से ही पहचान लें ... पहले से ही समर्थ हो जायें। ... अभी सभी के मस्तक पर विजय का तिलक ऐसा स्पष्ट दिखाई दे, जो दूसरे भी अनुभव करें।" अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और बाप समान स्थिति / श्रीमत और फॉलो फादर

शिवबाबा ज्ञान का सागर है इसलिए वे हमको ज्ञान, गुणों और शक्तियों में आप समान बनाते हैं, आप समान निराकारी स्थिति का अनुभव कराकर उस स्थिति में स्थित होने का रास्ता बताते हैं और हम बच्चों को भी शिक्षा और प्रेरणा देते हैं कि तुम ऐसा बनकर औरों को भी आप समान बनाओ।

ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है, इसलिए वे भी अपने लौकिक और अलौकिक जीवन के अनुभवों से हमको अनुभवी बनाते, अपने समान पुरुषार्थ करने की विधि बताते हैं और रहमदिल होकर औरों को भी यह रास्ता बताने की शिक्षा देते हैं, जिससे वे भी पुरुषार्थ करके बाप से सुख-शान्ति का वर्सा ले लेवें।

यह एक रहस्यमय पहेली है कि शिवबाबा ब्रह्मा बाप समान बनने की श्रीमत और प्रेरणा देते हैं और ब्रह्मा बाप शिवबाबा के समान बनने की श्रीमत और प्रेरणा देते हैं क्योंकि शिवबाबा और ब्रह्मा बाप एक ही तन में दोनों आत्मायें विराजमान हैं। ब्रह्मा बाबा शिवबाबा की श्रीमत को पालन का प्रत्यक्ष स्वरूप है, उनको पालन करने वाला श्रीमत पर चलने वाला होगा और श्रीमत पर चलने वाला ब्रह्मा बाबा को फॉलो करने वाला होगा।

हमको सम्पूर्ण पवित्र बनना है क्योंकि सम्पूर्णता ही सम्पन्नता का आधार है और सम्पन्नता प्रसन्नता का आधार है। बाबा ने सम्पूर्णता का महत्व भी बताया है और सम्पूर्ण बनने के लिए श्रीमत भी दी है, जिस श्रीमत का यथार्थ रीति पालन करके हम सहज ही सम्पूर्ण बन सकते हैं। बाबा ने कहा है - तुमको स्थिति में शिवबाबा को को फॉलो करना है और पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाप को फॉलो करना है क्योंकि शिवबाबा तो सदा सम्पूर्ण है, वे तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं।

"तुम बाप को याद करते हो, माया फिर अपनी तरफ खींच लेती है, इस पर ही यह खेल बना हुआ है। ... बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान आना चाहिए। बाप की बुद्धि में भी नॉलेज है ना। तुमको भी सारी नॉलेज दे आप समान बना रहे हैं।" सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

"तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें सूर्य के समान चारो ओर फैलती हुई अनुभव में आयें। ... ऐसे महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ।"

अ.बापदादा 7.4.86

"स्नेह और शक्ति वाली अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है। जिसके लिए स्नेह है, उसके समान बनना है, यही स्नेह का सबूत है। ... जितना समानता में समीप होंगे, उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप होंगे।" अ. बापदादा 9.11.69

"एक "मैं आत्मा विश्व-कल्याण के श्रेष्ठ कर्तव्य के प्रति सर्वशक्तिवान बाप द्वारा निमित्त बनी हुई हूँ" - यह स्लोगन स्मृति में रहे। ... दूसरा स्लोगन "मैं आत्मा महादानी और वरदानी हूँ" ... तीसरी बात मुझ आत्मा को अपने चरित्र, बोल व संकल्प द्वारा अपने मूर्त में सभी आत्माओं को बापदादा की सूरत और सीरत का साक्षात्कार कराना है।" अ.बापदादा 25.5.73

"जब अभी से सर्व आत्माओं को बाबा का खजाना देने वाले दाता बनेंगे, अपनी शक्तियों द्वारा प्यासी व तड़फती हुई आत्माओं को जीयदान देंगे, वरदाता बन प्राप्त हुए वरदानों द्वारा उन्हें भी बाप के समीप लायेंगे और बाबा के सम्बन्ध में लायेंगे, तब यहाँ के दातापन के संस्कार भविष्य में 21 जन्मों तक राज्यपद अर्थात् दातापन के संस्कार भर सकेंगे।"

अ.बापदादा 30.5.73

"हर संकल्प और हर कर्म की करेक्शन करो और बापदादा के कर्मों से कनेक्शन जोड़ो, फिर देखो कि बाप समान हैं?... "नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप" इस लास्ट क्वेश्चन को पूर्ण रीति से प्रैक्टिकल में करने के लिए यही दो शब्द प्रैक्टिकल में लाने हैं। ...पास होने के लिए पास शब्द को स्मृति में रखो। पास हो गया, पास रहना है और पास होना है।"

अ.बापदादा 16.5.73

"बाबा ने सम्पन्न बनने के लिए आज सभी को एक शब्द याद दिलाया, वह शब्द है - "करावनहार"। ... मैं बाप समान करावनहार हूँ, मालिक बनकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाली। ये स्मृति रहेगी तो मन, बुद्धि, संस्कार जो सूक्ष्म कर्मचारी हैं, वे आपके आर्डर में चलेंगे।" अ.बापदादा का सन्देश 30.5.04 गुल्जार दादी के द्वारा

"तो एक मेहमान, दूसरा महान अन्तर और तीसरा महिमा। ... महान अन्तर को सामने रखने से कभी भी देह अहंकार वा क्रोध का अंश वा वंश नहीं रह सकता। तीसरी बात बाप के वा हर आत्मा के गुणों और कर्तव्य की महिमा करते रहने से किसी द्वारा किसी बात की फीलिंग नहीं आ सकती।" अ.बापदादा 25.8.71

"समान वाले की निशानी-एक सेकेण्ड में जहाँ और जैसे चाहें, जो चाहें वह कर सकते हैं व करते हैं। ... समान वाले कर्मों को, संस्कार और स्वभाव को जानने वाले स्वरूप होते हैं।"

अ.बापदादा 23.5.74

“ऐसे महादानी, वरदानी, सर्वगुण दानी, सर्वशक्तियों के दानी, संग से रुहानी रंग लगाने वाले, नजर से निहाल करने वाले, अन्धों को तीसरा नेत्र देने वाले, भटकी हुई आतमाओं को मंजिल बतलाने वाले, तड़पती हुई आत्माओं को शीतल, शान्त और आनन्दमूर्त बनाने वाली आत्मा बने हो ? ... इसको ही बाप-समान कहा जाता है।” अ.बापदादा 3.2.74

“फास्ट पुरुषार्थ करने वालों की सूरत और सीरत बाप-समान सदा रुहानी नजर आती है। सिवाये रुहानियत के अन्य कोई भी संकल्प व स्मृति नहीं रहती अर्थात् बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्वशक्तियाँ स्वरुप में दिखाई देती है। उनकी हर नजर में हर आत्मा को नजर से निहाल करने की रुहानीयत दिखाई देगी।” अ.बापदादा 27.1.76

“बाप समान स्टेज प्राप्त करने के लिए सदैव दो बातें याद रखो। एक स्वयं को अकालमूर्त समझो, दूसरी स्वयं को सदा त्रिकालदर्शी मूर्त समझो। निराकारी स्टेज अकाल तख्त नशीन, अकालमूर्त है, साकार कर्मयोगी की स्टेज में त्रिकालदर्शी मूर्त त्रिमूर्ति बाप के तख्त-नशीन। हर संकल्प को स्वरुप में लाने से पहले यह दोनों बातें चेक करो। निराकारी और साकारी।”

अ.बापदादा 27.1.76

“सेवा की सफलता स्व-सेवा से ही होती है। स्व की सेवा विश्व की सेवा का आधार है। ... संकल्प, बोल, कर्म करने से पहले बाप समान है या नहीं है - यह चेक करो, फिर प्रैक्टिकल में लाओ। जब आपका विवेक हाँ करे, तब ही प्रैक्टिकल में लाओ।”

अ.बापदादा 15.11.05

“समान बनना है तो समान करना भी है और चलना भी है।... अवश्य बनना ही है। सिर्फ दो शब्द याद रखना - निमित्त और निर्मान। इससे मैं और मेरा दोनों ही खत्म हो जायेगा। निमित्त हूँ और निर्मान बनना है।” अ.बापदादा 15.11.05

“लक्ष्य सभी का बाप समान बनने का ही है।... बाप बच्चों से पूछते हैं कि बाप और दादा दोनों के समान संस्कार कौनसे हैं ? सदा बाप हर आत्मा के प्रति उदारचित्त रहे हैं। हर आत्मा के प्रति स्नेह और सम्मान स्वरूप से सहयोगी रहे।” अ.बापदादा 15.12.05

“यह बूढ़ा बाबा पढ़कर इतना ऊंच पद पाते हैं तो हम क्यों नहीं बनेंगे। यह भी पढ़ाई है।... कहते सब थोड़ेही राजा बनेंगे। ... क्या स्कूल में ऐसे कहते सब थोड़ेही स्कॉलरशिप पायेंगे ? पढ़ने लग पड़ते हैं।” सा.बाबा 15.6.05 रिवा.

“ब्रह्मा बाप की विशेषता - निर्णय-शक्ति सदा फास्ट रही। ... जब साथ चलना ही है तो फॉलो ब्रह्मा बाप। कर्म में फॉलो ब्रह्मा बाप और स्थिति में निराकारी शिव बाप को फॉलो करना है। ... मन स्वच्छ और बुद्धि क्लीयर।” अ.बापदादा 15.2.2000

"क्या फॉलो करना है ? गुरु रूप से मुख्य फॉलो यही करना है - अशरीरी, निराकारी, न्यारा बनना है। ... जैसे पढ़ाई के समय टीचर साथ रहते हैं, वैसे अभी साथ नहीं हैं। अभी ऊपर से अच्छी रीति देख रहे हैं। ... दूर से ही सकाश देते हैं।" अ.बापदादा 26.6.69

"साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी-दृष्टा, यह साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी होंगे। जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है, वही भविष्य में विश्व-महाराजन बनता है।"

अ.बापदादा 2.4.70

"जब समय बदल गया तो अपने पुरुषार्थ को भी बदलेंगे ना। अब बाप ने सफलता का रूप दिखला दिया तो बच्चे भी ... स्मृति शक्तिवान है तो स्थिति और कर्म भी शक्तिवान होंगे।"

अ.बापदादा 26.1.70

"जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के, अव्यक्त प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को भी अनुभव कराने के लिए आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपनी अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ।" अ.बापदादा 24.1.70

"शुरू में वाणी का बल नहीं था लेकिन अलौकिक स्थिति का बल था। अभी तुमको वाणी का बल है लेकिन अलौकिक स्थिति का बल गुप्त हो गया है। ... जैसे साकार रूप के लिए वर्णन करते हैं। कोई भी अन्जान समझ सकता था कि यह कोई अलौकिक व्यक्ति है। हजारों के बीच में वह हीरा चमकता था। तो फॉलो फादर।" अ.बापदादा 20.12.69

"ब्रह्मा बाबा सदैव बच्चों को पहले लाये, इस दृष्टि-वृत्ति को आगे रखा। इस प्रकार "फॉलो फादर" करने वाली हर आत्मा इस बात में फॉलो फादर करेगी तो सफलता सौ प्रतिशत गले की माला बनेगी।" अ.बापदादा 23.9.73

"किसी बात में फेल न हों, इसके लिए एक बात याद रखना - फॉलो फादर। साकार रूप में जो करके दिखाया वह फॉलो करो तो कोई भी बात में फेल नहीं हो सकते।"

अ. बापदादा 25.10.69

""मैं कौन हूँ ?" - जानना, मानना और चलना। ... लास्ट स्टेज को अण्डरलाइन करके एवर-लास्टिंग बनाओ। ... जैसा बाप वैसे बच्चे। जो स्वभाव-संस्कार या संकल्प बाप का है क्या वही बच्चों का है ? ... लायक बच्चे का फर्ज कौनसा होता है - फॉलो फादर।"

अ.बापदादा 30.6.73

"विष्णु का सिम्बल तो है भविष्य का लेकिन संगम का सिम्बल तो साकार बाप ही है ना। तो सिम्बल को सामने देखते हुए समानता लाते रहते हैं ना। सर्विसएबुल, सेन्सीबुल और इसेन्सफुल

तीनों गुणों में समानता अनुभव करते हो ?” अ.बापदादा 4.8.72

“साकार रुप में देखा मस्तक से और नयनों से प्युरिटी के क्राउन का साक्षात्कार अनेकों को हुआ। तो फालो फादर करना है। अगर ऐसे ही स्वरुप का साक्षात्कार आत्माओं को कराओ तो सर्विस में सफलता आप के चरणों में झुकेगी।” अ.बापदादा 18.4.71

“जब आत्मा कमाई में जागृत होती है तो उसे थकावट भी नहीं होती। तो जैसे मां-बाप ने नींद को योग में बदला तो आप भी फर्स्ट ग्रेड के महारथियों को ऐसा ही फॉलो करना है। अब ऐसा अनुभव तो करते हो कि नींद कम होती जाती है, लेकिन ऐसी अवस्था बनानी है।”

अ.बापदादा 24.6.74

“सब प्रश्नों का जबाब ब्रह्मा बाप की जीवन है।... आप साइलेन्स वालों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्यूटर है। इसलिए क्या-कैसे के बजाये जीवन के कम्प्युटर से देखो।... साकार रचना के निमित्त साकार श्रेष्ठ जीवन का सेम्पुल ब्रह्मा ही बनता है।”

अ.बापदादा 19.12.85

“सदा शान में रहने का, सदा प्राप्ति स्वरूप स्थिति में स्थित होने का सहज साधन है - “फॉलो फादर”।... सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही बात है - “फॉलो फादर”।... कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को चुक्तू करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने।” अ.बापदादा 19.12.85

“अखबार में समाचार बहुत आते हैं। बाबा अखबार पढ़ते हैं, रेडियो सुनते हैं। कारण होगा ना। बच्चों को शौक नहीं अखबार पढ़ने का। फॉलो करना चाहिए। परन्तु फॉलो करने का भी अकल नहीं है। अखबार पढ़कर उससे फिर सर्विस करनी है। पूछते हैं - बाबा आप तो मालिक हो फिर रेडियो क्यों सुनते हो ? अब मालिक तो शिव बाबा है, हमको कैसे पता पड़े वायुमण्डल क्या है ?” सा.बाबा 19.4.72 रिवा.

“पीछे ऐसे-ऐसे अनोखे मृत्यु बच्चों के होने हैं, जो सन शोज फादर करेंगे। सभी का एक जैसा नहीं होगा। कई ऐसे बच्चे भी हैं जिन्होंका ड्रामा में इस मृत्यु के अनोखे पार्ट का गायन है - सन शोज फादर।” अ.बापदादा 20.12.69

“फॉलो फादर कहा जाता है। जैसे बाप (ब्रह्मा बाबा) याद करते हैं, ऐसे याद करो। यह (शिव बाबा) तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं। ये करते हैं, इसलिए इनको फॉलो करने वाले ही ऊंच पद पाते हैं।” सा.बाबा 4.12.68

“अर्जुन को साक्षात्कार कराया।... इनको भी शुरू में साक्षात्कार कराया तो खुशी का पारा

चढ़ गया। ड्रामा में पार्ट था।... बाप कहते - मैं जो राय देता हूँ, उसको फॉलो करो। इसने क्या किया सो भी बताते हैं। बाबा ने अचानक ही सब कुछ छोड़ दिया।”

सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

“यह तो जानते हो - जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया है, वे ही लेंगे।... बाबा ने बताया है - हमारा अपना घरघाट, मित्र-सम्बन्धी आदि कुछ भी नहीं। हमको सिवाए बाप और तुम बच्चों के और क्या याद पड़ेगा। सब कुछ एक्सचेन्ज कर दिया। रथ भी बाबा को दे दिया। ... बाप को, सृष्टि-चक्र को याद करना है और पुरानी दुनिया को बुद्धि से भूलना है।”

सा.बाबा 22.10.05 रिवा.

“जैसे बाप निमित्त तो बनता है ना। लेकिन निमित्त बनते भी न्यारा है, इसलिए बेफिकर है। ऐसे फालो फादर।... एक शब्द याद करो “मेरा बाबा”, बस। मेरा बाबा कहा और सब खजाने मिले।” अ.बापदादा 4.3.86 पार्टी 1

“हर संकल्प में दृढ़ता। जैसे ब्रह्मा बाप ने दृढ़ संकल्प से हर कार्य में सफलता प्राप्त की, तो दृढ़ता सफलता का आधार बना। ऐसे फॉलो फादर करो। ... ब्रह्मा बाप समान अर्थात् कभी दिलशिकस्त नहीं बनना, सदा दिलखुश रहना।” अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 2

“जो भी संकल्प, बोल, कर्म करो तो पहले चेक करो कि यह ब्रह्मा बाप समान है? ... ब्रह्मा बाप की विशेषता विशेष यही है - जो सोचा, वह किया। जो कहा, वह किया। चाहे नया ज्ञान होने के कारण आपोजीशन कितनी भी रही लेकिन अपने स्वमान की स्मृति से, बाप के साथ की समर्थी से और दृढ़ता से, निश्चय के शस्त्रों से, शक्ति से अपनी पोजीशन की सीट पर सदा अचल-अटल रहे।” अ.बापदादा 31.12.92

“कदम पर कदम रखना है। कदम है श्रीमत। ... ब्रह्मा बाप कर्म का सेम्पुल है। ब्रह्मा बाप ने हर कदम श्रीमत पर उठाये। तो फॉलो फादर।” अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 2

“इस समय की रॉयल्टी भविष्य की रॉयल फेमिली में आने के अधिकारी बनाती है। ... रॉयल दृष्टि अर्थात् सदा फरिश्ता रूप से औरों को भी फरिश्ता रूप देखे।... ब्रह्मा बाप के बोल, चाल, चेहरे और चलन की रॉयल्टी को देखा। ऐसे फॉलो ब्रह्मा बाप।... ब्रह्मा को फॉलो किया तो शिव बाप को फॉलो हो ही जायेगा।” अ.बापदादा 3.11.92

“कहते हैं - कौन बना है, सब चलता है... यह अलबेलेपन के बोल हैं, यथार्थ नहीं हैं। यथार्थ क्या है? फॉलो ब्रह्मा बाप। ... नम्बरवन आत्मा की निशानी है - हर श्रेष्ठ कार्य में मुझे निमित्त बन औरों को सिम्पल करने के लिए सेम्पल बनना है। ... उनको व्यर्थ देखने, सुनने वा करने की फुर्सत ही नहीं।” अ.बापदादा 2.12.93

"अच्छा अभी लक्ष्य रखो कि चलते-फिरते चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सेवा के बिना नहीं रहना है, याद के बिना भी नहीं रहना है। याद और सेवा सदा ही साथ है। इतना अपने को बिजी रखो। ... फिर जो लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का, वह सहज हो जायेगा।"

अ.बापदादा 18.1.06

"बापदादा सभी बच्चों का सदा अथॉरिटी की सीट पर सेट हुआ स्वराज्य अधिकारी राजा रूप देखना चाहता है। ... फरिश्ते की ड्रेस में दिखाई दें। फरिश्ते की ड्रेस है चमकीली, लाइट की ड्रेस। यह शरीरभान के मिट्टी की ड्रेस नहीं पहनना।... जैसे बाप अशरीरी है, ब्रह्मा बाप चमकीली ड्रेस में है, फरिश्ता है, ऐसे फॉलो फादर।" अ.बापदादा 18.1.06

"जो महिमा बाप की है, वह तुम बच्चों की भी होनी चाहिए। तुमको भी मास्टर ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, सुख का सागर बनना है।" सा.बाबा 21.03.06 रिवा.

"ब्रह्मा बाप का सबसे ज्यादा प्यार मुरली से रहा ना, तब तो मुरलीधर बना।... मुरली से प्यार रहा तब ही भविष्य में श्रीकृष्ण के रूप में भी मुरली की निशानी दिखाते हैं। तो जिससे बाप का प्यार रहा, उससे प्यार रहना ही प्यार की निशानी है।" अ.बापदादा 31.12.92

"जो भी संकल्प, बोल, कर्म करो तो पहले चेक करो कि यह ब्रह्मा बाप समान है ? ... ब्रह्मा बाप की विशेषता विशेष यही है - जो सोचा, वह किया। जो कहा, वह किया। चाहे नया ज्ञान होने के कारण ऑपोजीशन कितनी भी रही लेकिन अपने स्वमान की स्मृति से, बाप के साथ की समर्थी से और दृढ़ता से, निश्चय के शस्त्रों से, शक्ति से अपनी पोजीशन की सीट पर सदा अचल-अटल रहे।"

अ.बापदादा 31.12.92

"कदम पर कदम रखना है। कदम है श्रीमत। ... ब्रह्मा बाप कर्म का सेम्पुल है। ब्रह्मा बाप ने हर कदम श्रीमत पर उठाये। तो फॉलो फादर।" अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 2

"इस समय की रॉयल्टी भविष्य की रॉयल फेमिली में आने के अधिकारी बनाती है। ... रॉयल दृष्टि अर्थात् सदा फरिश्ता रूप से औरों को भी फरिश्ता रूप देखे।... ब्रह्मा बाप के बोल, चाल, चेहरे और चलन की रॉयल्टी को देखा। ऐसे फॉलो ब्रह्मा बाप।... ब्रह्मा को फॉलो किया तो शिव बाप को फॉलो हो ही जायेगा।" अ.बापदादा 3.11.92

"हर संकल्प में दृढ़ता। जैसे ब्रह्मा बाप ने दृढ़ संकल्प से हर कार्य में सफलता प्राप्त की, तो दृढ़ता सफलता का आधार बना। ऐसे फॉलो फादर करो।... ब्रह्मा बाप समान बनो, कभी दिलशिकस्त नहीं बनना, सदा दिलखुश रहना।" अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 2

"सेवा श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं के पीछे-पीछे आने वाली है।... ऐसे आप डबल लाइट हो तो आपके पीछे सेवा भी परछाई के समान आयेगी।... सिर्फ हर कर्म को बाप से मिलान करते

चलो और यही याद रखो कि बाप समान अवश्य बनना ही है।" अ.बापदादा 28.2.88

"जो बाप का रूप वही बच्चों का रूप, जो बाप के गुण, वे ही बच्चों के गुण। ... जो बाप का कार्य, वही बच्चों का कार्य। सब बातों में समान बनना है। ... अपने को चेक करो - सब बातों में कहाँ तक बाप समान बने हैं?" अ.बापदादा 24.2.88

"ब्रह्मा बाप का पहला कदम हिम्मत का है, सब बात में समर्पणता। सब कुछ समर्पण किया। कुछ सोचा नहीं कि क्या होगा, कैसे होगा। एक सेकेण्ड में बाप की श्रेष्ठ मत प्रमाण किया। बाप ने इशारा दिया और ब्रह्मा का कर्म वा कदम। इसको कहते हैं - हिम्मत का पहला कदम। ... धन को बिना कोई भविष्य की चिन्ता के निश्चिन्त बन समर्पित किया क्योंकि निश्चय था कि यह देना नहीं लेकिन पद्मगुणा लेना है।" अ.बापदादा 22.1.88

"बापदादा द्वारा प्राप्त हुए स्नेह, शक्तिशाली पालना, अखुट अविनाशी खज़ानों का रिटर्न अवश्य करना है। रिटर्न में क्या देंगे?... बाप समान बनना, यही रिटर्न है, जो सभी कर सकते हैं।" अ.बापदादा 22.1.88

"ब्रह्मा बाप का चौथा कदम - वफादार। कभी भी मन, बुद्धि से, संकल्प से बाप के बेवफा नहीं बनना। बफादार का अर्थ है सदा एक बाप, दूसरा न कोई। संकल्प में भी देह, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ वा देहधारी आकर्षित न करें। जैसे पति-पत्नी ... स्वप्न में भी दूसरे की याद न आये।" अ.बापदादा 26.1.95

"ब्रह्मा बाप का तीसरा कदम - सदा बाप, शिक्षक और सत्गुरु के फरमानबरदार बनें। ... प्रत्यक्ष देखा कि सर्व खज़ाने ज्ञान, शक्तियां, गुण, श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना पहले दिन से लेकर लास्ट दिन तक कार्य में लगाया। ... इसको कहा जाता है फरमानबरदार नम्बरवन बच्चा। तो स्नेह की निशानी है - फॉलो फादर।" अ.बापदादा 26.1.95

"ब्राह्मण अर्थात् सदा ब्रह्मा समान ब्रह्माचारी। जो ब्रह्मा बाप का आचरण वही सर्व ब्राह्मणों का आचरण अर्थात् कर्म। ... ब्रह्मा बाप के हर कदम पर कदम रखना, इसको कहा जाता है - फॉलो फादर। तो ब्रह्मा बाप ने बाप की श्रीमत पर पहला कदम क्या उठाया? पहला कदम आज्ञाकारी बने। तो चेक करो कि आज्ञाकारी के पहले कदम में फॉलो फादर हैं?"

अ.बापदादा 19.1.95

"एक शब्द में इतनी ताक़त है जो देहाभिमान और देहभान सदा के लिए समाप्त हो जाता है, वह एक शब्द है - करनकरावनहार बाप करा रहा है।... ब्रह्मा बाप फरिश्ता किस आधार से बना? सदा करनकरावनहार की स्मृति से समर्थ बन फरिश्ता बनें। तो फॉलो फादर।"

अ.बापदादा 23.12.94

"साकार में ब्रह्मा बाप को फॉलो करने के लिए 5 विशेष कदम - सर्वंश त्यागी अर्थात् मन-बुद्धि में हर समय बाप और श्रीमत की हर कर्म स्मृति रही।... सदा आज्ञाकारी रहे - स्थापना का कार्य विशाल होते हुए भी किसी भी आज्ञा का उलंघन नहीं किया।... वफादार। हर संकल्प में भी वफादार। जैसे पतिव्रता नारी एक पति के सिवाए और किसी को स्वप्न में भी याद नहीं करती, ऐसे एक बाप, दूसरा न कोई।... विश्व-सेवाधारी। एक तरफ अति निर्माण, वर्ल्ड सर्वेन्ट, दूसरे तरफ नये ज्ञान की अथॉर्टी।... कर्म-बन्धन मुक्त, कर्म-सम्बन्ध मुक्त अर्थात् शरीर के बन्धन से मुक्त फरिश्ता, कर्मातीत। सेकेण्ड में नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप।"

अ.बापदादा 22.1.90

"अब अपने से पूछो - ब्रह्मा बाप को कितने कदमों में फॉलो किया है ? ... अपने को समर्पित कहलाते हो लेकिन सर्वंश समर्पण। इसमें मेरा, तेरा हो जाता है। ... एक-दो को फॉलो नहीं करना, बाप को फॉलो करना है।" अ.बापदादा 22.1.90

"निराकार बाप ने साकारी बच्चों को साकार रूप में फॉलो करने के लिए साकार ब्रह्मा बाप को बच्चों के आगे निमित्त रखा ... और सर्व बच्चों को यही श्रेष्ठ श्रीमत दी कि हर कदम में फॉलो फादर।" अ.बापदादा 22.1.90

"ब्रह्मा बाप ने कल को देखा ? तुरत दान महादान किया। कल को नहीं देखा ... जो आज हो रहा है वह अच्छा है और जो कल होगा, वह भी अच्छा होगा। ... बस ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो, कापी करो। फॉलो फादर करो।" अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और बापदादा की बच्चों से आशायें और उन आशाओं को पूरा करने के लिए श्रीमत

बापदादा की बच्चों से यही आशा है कि सर्व बच्चे बाप समान सम्पूर्ण बन जायें और सदा सुख-शान्ति और सम्पन्नता का अनुभव करें, जिसके लिए ही बाबा भिन्न-भिन्न रूप में अपनी आशायें प्रगट करते हैं। बाप के तो सर्व आत्मायें बच्चे हैं, इसलिए जिनको बाप का परिचय मिला है, रास्ता मिला है, उनका पावन कर्तव्य है कि वे वह रास्ता सभी को बतायें और विश्व के कल्याणकारी बनें क्योंकि बाप आये ही हैं विश्व का कल्याण करने, सर्व आत्माओं को सुखी बनाने।

"बाप की आश... ब्रह्मा बाप समान हर कर्म में एग्जॉम्पुल हो क्योंकि एग्जॉम्पुल बनने वाला ही फाइनल एग्जाम में एक्स्ट्रा नम्बर लेकर स्कॉलरशिप लेने वाला बनेगा। हर सब्जेक्ट में विन

करें। हर ब्राह्मण अनुभव करे कि यह बाप समान हमारे सहयोगी हैं ... चलन और चेहरे से बेहद की स्थिति, बेहद के सेवाधारी, बेहद के सम्बन्ध-सम्पर्क वाले अनुभव हों।"

बापदादा का सन्देश 26.5.05

"बाप की उम्मीद पूरी करना ही, उम्मीदवार बनना है। बाप की उम्मीदें पूरी करना, बच्चों के लिए मुश्किल होता है क्या ? बच्चे का जन्म होता ही हैं, बाप की उम्मीदें पूरी करने के लिए। बच्चे का अपने जीवन का लक्ष्य ही यह होता है, बाप की उम्मीदें पूरी करना। इसको ही दूसरे शब्दों में सन शोज फादर कहते हैं।" अ.बापदादा 16.5.74

"सदाकाल की शान्ति व आनन्द का अनुभव एक सेकण्ड में अपनी अनुभवी-मूर्त द्वारा दिखाओ व कराओ तो क्या यह "कम खर्च बाला नशीन" सर्विस नहीं है ? सपूत बच्चों का, सहयोगी बच्चों का और सर्विसएबुल बच्चों का हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म में यही फर्ज और यही एक सबसे बड़ी जिम्मेवारी है।" अ.बापदादा 28.4.74

"बाप की जो शुभ आश है, वह अभी तक पूर्ण नहीं की है।... वी.आई.पी. न रहें लेकिन ब्राह्मण जीवन का अनुभव करें।... 1-1-1 की प्रजा भी मालिक का अधिकार रखेगी। पहले जन्म की शोभा और भभका अलग होता है ना। ... सब जोन नये-नये वारिस क्वालिटी तैयार करो।" अ.बापदादा 15.11.05

"खुशी हमारे जीवन का विशेष परमात्म गिफ्ट है। ... कुछ भी हो जाये लेकिन ब्राह्मण जीवन की खुशी, उत्साह, उमंग जा नहीं सकता। बापदादा हर बच्चे का चेहरा सदा खुशनुमः देखने चाहते हैं क्योंकि आप जैसा खुशनसीब न कोई बना है और न बन सकता है।"

अ.बापदादा 14.3.06

"बापदादा इस ब्राह्मण परिवार का बाप समान मुखड़ा देखना चाहते हैं।... जिसमें सहनशक्ति है, समाने की शक्ति है, वह क्रोध-मुक्त सहज हो सकता है।" अ.बापदादा 25.2.06

"बापदादा हर एक बच्चे से क्रोधमुक्त, काम विकार मुक्त इन दो की हिम्मत दिलाकर स्टेज पर विश्व को दिखाना चाहते हैं। ... मधुबन वालों को पसन्द है ... ऐसा नक्शा दिखाई दे कि यह ब्राह्मण परिवार दुआयें देने वाला और दुआयें लेने वाला परिवार है।"

अ.बापदादा 25.2.06

"बापदादा यही चाहते हैं - स्वमान। न अभिमान और न अपमान। ... बापदादा हर बच्चे को डबल मालिकपन के निश्चय और नशे में देखना चाहते हैं। ... एक तो बाप के खजानों के मालिक और दूसरा स्वराज्य के मालिक।" अ.बापदादा 3.02.06

"बाप के खज़ाने पर सभी बच्चों को सदा ही अधिकार है। बाप और खज़ाना सदा साथ हैं और

सदा ही साथ रहेगा। ... हर एक अनुभव करे कि यह फरिश्तों के बोल हैं, फरिश्तों के कर्म कितनी अलौकिक होते हैं। बापदादा यह परिवर्तन देखना चाहते हैं। ... इजर्नी जमा करो तो आपके दो बोल आशीर्वाद के एक घण्टे के भाषण का काम करेंगे।"

अ.बापदादा 31.3.88

""दिल के स्नेह" और "स्नेह" अन्तर है। स्नेह सभी का है। स्नेह के कारण ही तो कुर्बान हुए हैं। दिल के स्नेही, बाप के दिल की बातों को वा दिल की आशाओं को जानते भी हैं और पूर्ण करते हैं। ... दिल के स्नेही अर्थात् जो बाप के दिल ने कहा, वह बच्चों ने दिल में समाया और जो दिल में समाया, वह कर्म में स्वत: ही होगा।" अ.बापदादा 31.3.88

"आज सभी के दिल में विशेष ब्रह्मा बाप की याद इमर्ज है क्योंकि ब्रह्मा बाप का इस ड्रामा में विशेष पार्ट है। सभी का ब्रह्मा बाप से दिल का स्नेह है क्योंकि ब्रह्मा बाप का भी एक-एक बच्चे से अति प्यार है। ... अब बाप यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा अपनी मूर्त से बाप की सीरत दिखाये।" अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार

हम परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा बाबा के बच्चे हैं तो ये हमारा परम कर्तव्य है कि हम उनके साथ वफादार और ईमानदार और फरमान-बरदार रहें। हम बाबा के हर फरमान का दिल से पालन करें, इसमें ही हमारे जीवन की सच्ची सफलता है और हमारा कल्याण है।

"मुख्य फरमान कौनसा है? निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरिटी हो। ... एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी फरमान के सिवाए न चले। इसको कहते हैं फरमान बरदार और वफादार।... स्वप्न में भी बाप, बाप के कर्तव्य, बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे।" अ.बापदादा 22.6.71

"चार धारणायें हैं - बाप के सम्बन्ध में "फरमान बरदार", शिक्षक के सम्बन्ध में "ईमानदार", गुरु के सम्बन्ध में "आज्ञाकारी" और साजन के सम्बन्ध में "वफादार" बनना है।"

अ.बापदादा 21.7.73

"अभी हम बेहद के बाप के बच्चे बने हैं तो बाप की श्रीमत पर भी चलना है। ... बाप के साथ सदैव फरमानबरदार, वफादार बनना है, सर्विसएबुल बनना है ... सदैव बुद्धि में स्वदर्शन चक्र फिरता रहना चाहिए। ... बच्चे, कोई भी गफलत नहीं करा, सदैव बाप की श्रीमत पर चलो।"

सा.बाबा 7.03.06 रिवा.

"जो हज़ूर अर्थात् बाप के हर कदम की श्रीमत पर हर समय "जी हाजिर" वा हर आज्ञा में "जी हाजिर" प्रैक्टिकल में करते हैं ... उनके आगे हर शक्ति भी "जी हाजिर" करती है।"

अ.बापदादा 20.12.92

"जो बाप का डायरेक्शन हो, श्रीमत हो, उसको उसी रूप में पालन करना, इसको कहते हैं सच्चा आज्ञाकारी बच्चा। बाप जानते हैं मधुबन में बिठाना है वा सेवा पर भेजना है। ब्राह्मण बच्चों को हर बात में एवर-रेडी रहना है। ... संकल्प मात्र भी मनमत मिक्स न हो, इसको कहते हैं श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा।" अ.बापदादा 20.2.88

"बाप का फरमान है पवित्र जरूर बनना है। कभी-कभी पतित भी यहाँ छिपकर आ जाते हैं, वे अपना ही नुकसान करते हैं। अपने को ठगते हैं, बाप को तो ठगने की बात ही नहीं है।"

सा.बाबा 2.02.06 रिवा.

"जो हर कर्म में सपूत बन बाप का सबूत दे, उसको सपूत बच्चा कहा जाता है। ... सपूत बच्चे अर्थात् सदा बाप के श्रीमत का हाथ और साथ अनुभव करने वाले। तो श्रीमत का हाथ सदा अपने ऊपर अनुभव करते चलो। बाप की श्रीमत हाथ अर्थात् वरदान का हाथ। जहाँ बाप का हाथ है, वहाँ सफलता है ही है।" अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 3

"साथी और साक्षी ... जब बापदादा साथ है तो साक्षीपन की सीट सदा मज़बूत रहती है। ... बापदादा सदा साथ है - ऐसे मानते भी हो, अनुभव भी करते हो या सिर्फ कहते हो। ... जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ।" अ.बापदादा 23.2.97

श्रीमत और एकनामी-एकॉनामी स्थिति

आध्यात्मिक जीवन की सफलता और जीवन का सच्चा सुख अनुभव करने के लिए एकनामी और जीवन के हर खज़ाने में एकॉनामी करना अति आवश्यक है, इसलिए बाबा सदैव हमको एकनामी और हर खजाने को एकॉनामी से उपयोग करने की प्रेरणा देते हैं और उसके महत्व का राज़ समझाते तथा उसके लिए श्रीमत देते रहते हैं। बाबा अपना जमा का खाता बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं, जो एकनामी और एकॉनामी से ही बढ़ सकता है अर्थात् एकनाम से कमाई होगी और एकॉनामी से बचत होगी।

"संकल्प में भी एकॉनामी, समय में भी एकॉनामी, तो चलन में सभी प्रकार की एकॉनामी हो। यह तीनों ही बातें अर्थात् एक मति, एक का नाम अर्थात् एकनामी और फिर एकॉनामी। यह

तीनों ही बातें सदैव स्मृति में रख फिर कदम उठाना वा संकल्प को वाणी में लाना है।"

अ.बापदादा 10.6.71

"आज बाबा के पास संदेशी भोग लेकर आई तो बाबा ने कहा कि बच्चे तो यहाँ पर बैठे ही प्रिन्स बन गये हैं, बाबा की बेगरी टोली भूल गई है। वैभव तो वहाँ मिलने हैं, संगम पर तो बेगरी टोली याद पड़ती है, वह ही बाप को प्यारी लगती है। बाप के लिए सुदामा के चावलों की वेल्यू है ना।" अ.बापदादा 27.8.69

"साधारणता में महानता। जैसे बाप साकार सृष्टि में सिम्पल रहते हुए आप सभी के आगे सेम्पुल बने ना। ... जैसे देखो गाँधी को सिम्पल कहते थे लेकिन सिम्पल बनकर के एक सेम्पुल बनकर तो दिखाया ना। उसकी सिम्पल एक्टिविटी ही महानता की निशानी है।"

अ.बापदादा 19.7.71

"जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं लेकिन सभी बातों की। निरंहकारी बनना अर्थात् सिम्पुल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पुल। निर्लोभी अर्थात् सिम्पुल। यह सिम्पलिसिटी प्युरिटी का साधन है।" अ.बापदादा 11.3.71

"जो पहले स्वयं करके और फिर कहता है, उसका प्रभाव अलग होता है ... एकॉनामी, एकनामी और एकान्तवासी। ज्यादा बोल में नहीं आओ। ... एक के अन्त में चले जाओ अर्थात् बाप से जो प्राप्तियाँ हैं, उनमें खो जाओ।" अ.बापदादा 25.3.95

श्रीमत और सच्ची दिल एवं साफ दिल

श्रीमत और सच्चाई-सफाई

गायन है सच्ची दिल पर साहेब राज़ी अर्थात् जो सच्ची दिल वाला होता है, वह सदा ही बाप के दिल तख्तनशीन होता है। बाबा ने यज्ञ में सदा सच्चा और साफ दिल बनकर रहने के लिए अनेक प्रकार से श्रीमत दी है। यथार्थ सच्चाई-सफाई क्या है, वह भी बाबा ने बताया है।

ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव करने के लिए अन्दर और बाहर दोनों प्रकार की सफाई चाहिए। बाबा ने हमको दोनों प्रकार की सफाई सिखाई है और बाप से और अन्य आत्माओं से भी सच्चा रहने की श्रीमत दी है। बाबा ने लॉ बताया है - जो दूसरों को धोखा देता है, वह पहले अपने को धोखा देता है।

"जीवन में सच्चाई और सफाई चाहिए। इनका भी बड़ा गुह्य रहस्य है। सच्चाई अर्थात् जो

सोचें, जो करें, वही वर्णन करें। बनावटी रूप नहीं हो। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों रूप समान चाहिए। ... सफाई अर्थात् अन्दर में कोई भी विकर्म का किचरा नहीं हो। कोई भी भाव-स्वभाव, पुराने संस्कारों का भी किचरा न हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वही सच्चा होगा।"

अ.बापदादा 28.9.69

"जो सच्चाई और सफाई वाला होगा, उसकी परख क्या होती है? वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले तो वह प्रभु-प्रिय होगा। सच्चे पर साहब राज़ी होता है। जो पहले प्रभु-प्रिय होगा, वह दैवी परिवार का भी प्रिय होगा ही।" अ.बापदादा 28.9.69

"सच्चा हीरा कब छिप नहीं सकता है। ... जो सच्चे और पक्के होते हैं, वे दूर होते हुए भी अपनी परख छिपा नहीं सकते। कोई कितना भी दूर हो लेकिन बापदादा के नजदीक जरूर होगा और जो बाप के नज़दीक हैं, वे सबके नज़दीक हैं।" अ.बापदादा 28.9.69

"जो बच्चे सच्ची दिल वाले हैं, उन पर बाप का बहुत प्यार रहता है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी रहते हैं। ... अपनी दिल से पूछना है - हम सच्ची-सच्ची सर्विस करते हैं, सच्चे बाप के संग में रहते हैं?" सा.बाबा 17.2.05 रिवा.

"सत्यनारायण की कथा में भी है, जिसको अमूल्य चीज समझकर छिपाया वह कखपन हो गई। यहाँ भी सत्य बाप जो सत्यनारायण बनाने वाला है, उनसे अगर जरा भी दिल का टुकड़ा छिपा कर रखा तो इस जीवन की नैया का क्या हाल होगा। कखपन हो जायेगा।"

अ.बापदादा 6.6.73

"सेवा में सदैव स्वच्छ बुद्धि, स्वच्छ वृत्ति और स्वच्छ कर्म सफलता का सहज आधार है। ... बीती हुई बातों को वा वृत्तियों आदि सबको समाप्त करना - यह है स्वच्छता। बीती का संकल्प करना भी कुछ परसेन्ट में हल्का पाप है।" अ.बापदादा 20.2.87

"बाप तो दाता है, सागर है। जो जितना लेना चाहे बापदादा के भण्डारे से ले सकता है। बापदादा के भण्डारे में ताला-चाबी नहीं है, पहरेदार नहीं है। बाबा कहा, जी हाजिर। दाता भी है और सागर भी है तो क्या कमी होगी। कमी दो बातों की होती है - एक सच्ची दिल, साफ दिल और बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर और क्लीन।" अ.बापदादा 30.3.2000

"ऑनेस्ट आत्मा स्वत: ही हर कदम श्रीमत के इशारे प्रमाण उठाती है, उनका हर कदम ऑटोमेटिक श्रीमत के इशारे पर ही चलता है। ... ऑनेस्ट आत्मा की पहली निशानी है - हर सेकेण्ड हर कदम श्रीमत पर एक्यूरेट चलना। ... उस आत्मा को श्रीमत स्पष्ट सदा स्मृति में रहने के कारण समर्थ है। ... वह कभी किसी भी खज़ाने को वेस्ट नहीं करेगा।"

अ.बापदादा 18.12.91

“गरीब आत्मा का स्थूल धन आठ आना साहूकार के आठ सौ के बराबर है क्योंकि आठ आने में सच्चे दिल की भावना आठ सौ से भी ज्यादा है। ... संकल्प का खज़ाना, ज्ञान-धन का खज़ाना, सर्वशक्तियाँ, सर्व गुणों का खज़ाना वेस्ट नहीं करेंगे।”

अ.बापदादा 18.12.91

“चेक करो - ऐसे प्योरिटी की रॉयलिटी कहाँ तक आई है ? रुहानी रॉयलिटी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है - रॉयलिटी अर्थात् रियलिटी अर्थात् सत्यता। ... सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। ... सच्ची आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी।” अ.बापदादा 11.12.91

“सदा बेफिकर रहेंगे तो बुद्धि निर्णय अच्छा करेगी। निर्णय अच्छा हुआ तो सफलता हुई पड़ी है। ... निर्णय शक्ति यथार्थ काम तब करेगी, जब बुद्धि खाली होगी। ... जिसकी बुद्धि स्वच्छ होगी, वहीं सदा बेफिकर रह सकता है। ... जो सदा बिजी रहता है, वह व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने के कारण बेफिकर और डबल लाइट रहता है।” अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 6

“ऑनेस्ट आत्मा स्वत: ही हर कदम श्रीमत के इशारे प्रमाण उठाती है, उनका हर कदम ऑटोमेटिक श्रीमत के इशारे पर ही चलता है। ... ऑनेस्ट आत्मा की पहली निशानी है - हर सेकेण्ड हर कदम श्रीमत पर एक्यूरेट चलना। ... उस आत्मा को श्रीमत स्पष्ट सदा स्मृति में रहने के कारण समर्थ है। ... वह कभी किसी भी खज़ाने को वेस्ट नहीं करेगा।”

अ.बापदादा 18.12.91

“अगर बाप का बनकर छी-छी बना तो फिर वह खुशी आयेगी नहीं। भल कितना भी माथा मारे। वह जैसे हमारा जाति भाई नहीं। ... विकार में जाते हो तो आते ही क्यों हो... न जाने कब कोई ऐसा तीर लग जाये। आप बिगर सद्गति कौन करेंगे।... फिर भी सच तो बोलता था, अब जरूर सुधर गया होगा।” सा.बाबा 9.01.06 रिवा.

“यह निश्चय जानो कि जो कोई भी इस ईश्वरीय यज्ञ में छिपकर काम करता है तो उनको जानी जाननहार बाबा देख लेता है, वह फिर अपने साकार स्वरूप बाबा को टच करता है, सावधानी देने अर्थ। भल भूलें होती हैं परन्तु उनको बताने से ही आगे के लिए बच जायेंगे, इसलिए बच्चे सावधान रहना। कोई भी बात छिपानी नहीं चाहिए।” सा.बाबा 4.01.55

“सच्ची दिल पर साहेब राजी होता है। दधीचि ऋषि मिसल सेवा में हड्डियां देनी हैं। ... अगर दुनियावी बातों में लग गये तो फिर यह सर्विस कब करेंगे।” सा.बाबा 4.5.06 रिवा.

“ब्राह्मण जीवन भी विशाल दिमाग़ और सच्ची दिल दोनों चाहिए। सच्ची दिल वाले को दिमाग़ की लिफ्ट मिल जाती है, इसलिए सदा यह चेक करो कि सच्ची दिल से साहेब को राज़ी किया

है या सिर्फ अपने मन को या सिर्फ कुछ आत्माओं को राज़ी किया है ?”

अ.बापदादा 15.11.89

“चेक करो - मैं विशाल दिमाग़ के कारण याद और सेवा में आगे बढ़ रहा हूँ वा सच्ची दिल और यथार्थ दिमाग़ से आगे बढ़ रहा हूँ। दिमाग़ से सेवा करने वाले का तीर औरों के भी दिमाग़ तक लगता है और दिल वालों का तीर दिल तक लगता है।... आदि की पहेली - “मैं कौन” अब तक चल रही है। तो अपने आपसे पूछो मैं कौन ?” अ.बापदादा 15.11.89

“सपूत बच्चे वे हैं, जो मात-पिता को फॉलो कर तख्तनशीन बनें। ... श्रीमत पर नहीं चलते क्योंकि अन्दर सच्चाई नहीं है। दिल सच्ची हो तो श्रीमत पर चलते, बाप को याद करते रहें। श्रीमत पर ही तुमको दादे से वर्सा मिलता है।” सा.बाबा 16.5.06 रिवा.

श्रीमत और सत्यता एवं सभ्यता

सत्यता और सभ्यता दोनों जीवन के उत्थान के लिए अति आवश्यक हैं। सत्यता और सभ्यता धारण करने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है।

“जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, ऐसे सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता और न कोई व्यक्ति छिपा सकता। ... सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वत: ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है।”

अ.बापदादा 11.12.91

“रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों सत्यता की सभ्यता का अनुभव करायेंगे।... ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं।... सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा।” अ.बापदादा 11.12.91

“बापदादा ने पहले भी सुनाया ... मैजारिटी बच्चों की दूर की नज़र तेज़ है, नज़दीक की नज़र कुछ ढीली है।... अपनी बड़ी बात को छोटा करेंगे और दूसरों की छोटी बात को बड़ा करेंगे।” अ.बापदादा 15.4.92

“अगर वह असत्य है और आपको असत्य को देखकर जोश आता है तो जोश सत्य है या असत्य है ?... जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, यह लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। ... सत्यता की निशानी है सभ्यता।” अ.बापदादा 15.4.92

"सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आप में है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे। सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्वक।... असभ्यता की निशानी है जिद्द और सभ्यता की निशानी है निर्मान।" अ.बापदादा 15.4.92

"असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ।... बड़ों के आगे बात रखना, इसके लिए सबको हक है लेकिन सत्यता और सभ्यतापूर्वक।... व्यर्थ समाचार बिल्कुल समाप्त होने चाहिए।"

अ.बापदादा 15.4.92

"कहावत है - सत्य की नांव डूबती नहीं है लेकिन डगमग अवश्य होती है। तो विश्वास की नांव सत्यता है। ऑनेस्टी है तो डगमग होगी लेकिन अविश्वासपात्र बनना अर्थात् डूबेगी नहीं। ... सत्य को सिद्ध नहीं किया जाता है। सत्य स्वयं में ही सिद्ध है। सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्धि स्वरूप बन जाओ।" अ.बापदादा 18.12.91

"जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, ऐसे सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता और न कोई व्यक्ति छिपा सकता। ... सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वत: ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है।"

अ.बापदादा 11.12.91

"थोड़ी-बहुत कमी तो नामीग्रामियों में भी है। यह है विशाल दिमाग़ वालों का अलबेलाई का चश्मा। दूसरा है स्व-उन्नति का यथार्थ चश्मा। वह है सच्ची दिल वालों का। वे देखते हैं - जो दिलवाला बाप को सदा पसन्द है, वही संकल्प, बोल और कर्म करना है। वे सिर्फ बाप और आप को देखते हैं, और क्या करते हैं, वह वे नहीं देखते।" अ.बापदादा 15.11.89

"कुछ भी सहन करना पड़े लेकिन घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। कहते भी हो ना कि सत्य की नाव डोलती है लेकिन डूबती नहीं। निर्भय बनो। अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो।... सब परिस्थितियाँ होते हुए भी सत्यता की स्व-स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया।" अ.बापदादा 27.2.96

"गायन है - "सच तो बिठो नच" अर्थात् सच्चा सदा खुशी में नाचता रहेगा।... तो चेक करो सम्पन्न और सम्पूर्ण का जो गायन है, वह कहाँ तक बने हैं ? अगर ड्रामा अनुसार आज भी इस शरीर का हिसाब समाप्त हो जाये तो कितने परसेन्टेज में पास होंगे ?"

अ.बापदादा 6.1.90

श्रीमत और दुआयें अर्थात् सुख देना और सुख लेना

बाबा ने अनेक बार श्रीमत दी है - न दुख दो और न दुख लो, सुख दो और सुख लो। दुआयें दो और दुआयें लो। बाबा ने दुख का कारण भी बताया और उससे निदान के लिए श्रीमत भी दी है। साथ-साथ सुख का खाता जमा करने के लिए भी श्रीमत दी है क्योंकि हमको अपना आधा कल्प का दुख का खाता खत्म भी करना है और आधे कल्प के लिए सुख का खाता भी जमा करना है।

दुआओं का जीवन में क्या महत्व है, वह भी बाबा ने बताया है और दुआयें कैसे दे सकते हैं और दुआयें कैसे ले सकते हैं, उसके लिए श्रीमत भी दी है। बाबा ने बताया है कि दुआयें केवल वाचा से नहीं दी जाती है बल्कि दुआयें मन्सा, वाचा, कर्मणा भी होती हैं।

"संकल्प के खजाने को व्यर्थ गंवाना अर्थात् अपनी प्राप्तियों को गंवाना। ऐसे ही समय के एक सेकण्ड को भी व्यर्थ गंवाया, सफल नहीं किया तो बहुत गंवाया। साथ में ज्ञान का खजाना, गुणों, शक्तियों का खजाना और साथ में हर आत्मा और परमात्मा द्वारा दुआओं का भी खजाना है।" अ.बापदादा 15.12.04

"सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआयें दो और दुआयें लो, सुख दो और सुख लो, न दुख दो न दुख लो। ऐसे नहीं कि दुख दो नहीं लेकिन ले लो। दुख ले लिया तो भी दुखी तो होंगे ना। ... अगर लेना भी आता है और देना भी आता है फिर और क्या चाहिए। दुआयें लेते जाओ, दुआयें देते जाओ तो सम्पन्न हो जायेंगे।" अ.बापदादा 15.12.04

"अगर कोई बद्-दुआ दे तो क्या करेंगे ? लेंगे ?... अगर बद्-दुआ मानो ले लिया तो आपके अन्दर स्वच्छता रही ? अन्दर स्वच्छ तो नहीं रहा ना। अगर जरा भी डिफेक्ट है तो परफेक्ट नहीं बन सकते हैं। ... अगर कोई बद्-दुआ दे तो भी आप मन में धारण नहीं करो। नहीं तो डिफेक्ट हो जायेगा।" अ.बापदादा 15.12.04

"जो रेग्यूलर गॉडली स्टूडेण्ट हैं, अपने को ब्राह्मण समझते हैं, वे अगर समझते हैं कि करना ही है (दुआयें देना और दुआयें लेना ही है), वे हाथ उठाओ। ... अभी करना ही है कुछ भी हो जाये। हिम्मत रखो, दृढ़ संकल्प रखो। अगर मानो कभी बद्-दुआ का प्रभाव पड़ भी जाये तो 10 गुणा ज्यादा दुआयें देकर उसको खत्म कर देना। फिर हिम्मत आ जायेगी।"

अ.बापदादा 15.12.04

"बद्-दुआ अन्दर समा लेने से नुकसान तो अपने को ही होता है ना। दूसरा तो बद्-दुआ देकर चला गया लेकिन जिसने बद्-दुआ अन्दर समा ली तो दुखी कौन होता है ? लेने वाला या देने वाला ? देने वाला भी होता है लेकिन लेने वाला ज्यादा होता है। देने वाला तो अलबेला होता है।" अ.बापदादा 15.12.04

"विश्व का कल्याण करने के श्रेष्ठ कार्य में निमित्त बनी आप श्रेष्ठ आत्माएं हो, आपकी विश्व में विशेष स्थिति है। आपको यह भी चेक करना है कि मेरे द्वारा जो भी बोल निकलते हैं, क्या वे सर्व के व स्वयं के प्रति कल्याणकारी हैं? व्यर्थ की तो बात ही छोड़ दो।"

अ.बापदादा 27.5.74

"आप लोग साधारण रीति से बोलेंगे लेकिन आप महान आत्माओं के बोल सत्य होने के कारण उनसे कई आतमाओं का अकल्याण हो जाता है। इसलिए भक्ति में भी वरदान के साथ-साथ श्राप का भी गायन है। आप श्राप देते नहीं हैं, लेकिन ऐसी व्यर्थ चलन व व्यर्थ बोल अकल्याण के निमित्त ऑटोमेटिकली बन जाते हैं।" अ.बापदादा 27.5.74

"महसूसता हो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, स्व-स्थिति श्रेष्ठ है, परिस्थिति पेपर है। यह महसूसता सहज परिवर्तन करा लेगी और पास कर लेंगे।... महसूसता में एक है सच्चे दिल की महसूसता और दूसरी है चतुराई की महसूसता।... दिल की महसूसता दिलाराम की आशीर्वाद प्राप्त कराती है।" अ.बापदादा 2.11.87

"बाप पुरुषार्थ की सहज विधि बताते हैं। सहज विधि है - अमृतवेले से लेकर सबको जो भी मिले, उससे दुआयें लो और दुआयें दो।... अमृतवेले बाप से सहज याद से दुआयें लो और सरा दिन दुआयें दो और दुआयें लो।... आप परमात्मा दाता के बच्चे मास्टर दाता हो। दाता का काम है देना।" अ.बापदादा 4.9.05

"जो भी कर्म करो, हर कर्म में दुआयें लो और दुआयें दो। ... जो स्वयं खुश रहता है, उससे अन्य स्वतः ही खुश होते हैं। ... मधुबन का अर्थ ही है मौज।"

अ.बापदादा 26.10.91 मधुबन निवासी

"मियां मिट्ठू नहीं लेकिन यथार्थ अनुभव द्वारा सन्तुष्ट आत्मा बनो। सन्तुष्टता अर्थात् दिल-दिमाग़ सदा आराम में। ... वह दुआयें मांगेगा नहीं लेकिन दुआयें स्वयं उसके आगे स्वतः ही आयेंगी।" अ.बापदादा 17.3.91

"दुआयें किसको मिलती हैं? जो सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करे। ... सब बातें छोड़ दो लेकिन एक बात यह धारण करो कि दुआयें सबको देनी हैं और सबसे दुआयें लेनी हैं।"

अ.बापदादा 30.11.92

"आप भी जब आत्माओं को रोशनी द्वारा ठिकाना दिखाते हो, दिखाने का अनुभव कराते हो तो आत्माओं द्वारा दुआयें निकलती हैं और जिसको दुआयें मिलती हैं, वह सदा आगे बढ़ता जाता है। ... एक तो बाप की दुआयें और आत्माओं की भी दुआयें मिलती हैं।"

अ.बापदादा 15.4.92

पार्टियों से

"अपने से पूछो - बाप की दुआयें और आत्माओं की दुआयें अनुभव होती हैं। ... बाप का वर्सा है - खुशी ... विघ्न आया और चला जायेगा लेकिन आपकी खुशी तो नहीं ले जाये। खुशी सदा साथ रहे।" अ.बापदादा 15.4.92 पार्टियों से

"हर सेकेण्ड दुआयें लेते जाओ और दुआयें देते जाओ। आपकी दुआओं से सदा सर्व आत्मायें सुखी हो जायेंगी।" अ.बापदादा 18.02.93 पार्टी 5

"देही-अभिमानी बनो, मामेकम् याद करो। बस, ... कभी भी एक-दो के दिल को नहीं दुखाना चाहिए। एक-दो को सुख देना चाहिए। तुम्हारा धन्धा यही है।... एक-दो की देह में फंसे रहते हैं, सारा दिन एक-दो को याद करते रहते हैं।... याद की ही बहुत मुश्किलात है। अच्छे-अच्छे बच्चे इसमें फेल हो जाते हैं। बाबा फिर कह देते हैं - ड्रामा।"

सा.बाबा 12.03.06 रिवा.

"दुआयें किसको मिलती हैं ? जो सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करे।... सब बातें छोड़ दो लेकिन एक बात यह धारण करो कि दुआयें सबको देनी हैं और सबसे दुआयें लेनी हैं।"

अ.बापदादा 30.11.92

"अपने से पूछो - बाप की दुआयें और आत्माओं की दुआयें अनुभव होती हैं। ... बाप का वर्सा है - खुशी ... विघ्न आया और चला जायेगा लेकिन आपकी खुशी तो नहीं ले जाये। खुशी सदा साथ रहे।" अ.बापदादा 15.4.92 पार्टियों से

"आत्मिक दृष्टि-वृत्ति ... दुख होता है शरीर भान से। अगर शरीर भान को भूलकर आत्मिक स्वरूप में रहते हैं तो सदा सुख ही सुख है।... जो कहते इसने मेरे को बहुत दुखी किया, ये बहुत दुख देने वाला है - ब्राह्मणों के ये बोल नहीं।... ब्राह्मणों का काम है - सुख देना और सुख लेना।" अ.बापदादा 11.12.91 पार्टी 2

"जो भी कर्म करो, हर कर्म में दुआयें लो और दुआयें दो। ... जो स्वयं खुश रहता है, उससे अन्य स्वत: ही खुश होते हैं।... मधुबन का अर्थ ही है मौज।"

अ.बापदादा 26.10.91 मधुबन निवासी

"न दुख दो और न दुख लो, तब ही पुण्यात्मा बनेंगे, तपस्वी बनेंगे। ... ग्लानि करने वाले को भी गले से लगाओ, तब कहेंगे पुण्यात्मा। लेकिन मन से, बाहर से नहीं।"

अ.बापदादा 10.4.91

"ब्रह्मा बाप देखते हुए भी और बातें नहीं देखते लेकिन हर एक की विशेषता ही देखते हैं, इसलिए सबसे प्यार है। तो इसमें फॉलो फादर करो।... विशेषता सिर्फ देखना नहीं लेकिन

देखकर अपने में धारण करना और धारण करने के साथ-साथ उनकी विशेषता से सेवा लो, उनको भी महत्व बताकर सेवा में लगाओ तो दुआयें मिलेंगी।... आपको भी शेयर मिलेगा। ... अभिमान में नहीं आना क्योंकि विशेषता बाप की देन है। बाप का दिया हुआ वरदान है। इसमें अगर अभिमान किया तो विशेषता गायब हो जायेगी।"

अ.बापदादा 31.12.89 पार्टी

"बाप की आज्ञा है - "मुझ एक को याद करो", अगर आज्ञा पालन करते हैं तो आज्ञाकारी बच्चे को बाप की दुआयें मिलती हैं, जिससे और सब सहज हो जाता है।... ये एक जन्म की दुआयें अनेक जन्म साथ रहेंगी।" अ.बापदादा 15.11.89 दिल्ली ग्रुप

"बाप है ही दुख हर्ता सुख कर्ता। तुम उनके बच्चे हो, तो तुमको किसको दुख नहीं देना है। सबको रास्ता बताना है, बाप से सुख का वर्सा पाने का।... इस समय जो बाप के गुण हैं, वे ही तुम्हारे हैं। बाप है ज्ञान का सागर, प्यार का सागर।" सा.बाबा 13.7.06 रिवा.

"कोई आपको दुख देने की बातें भी करे लेकिन हम सदा सुख देंगे और सुख लेंगे - इस दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ नये वर्ष को आरम्भ किया?" अ.बापदादा 31.12.94 नये वर्ष में

"ऊंच ते ऊंच बाप श्रीमत देते हैं। बाकी सब मनुष्य मात्र आसुरी मत पर एक दो को दुख ही देते हैं। तुम्हें श्रीमत पर सबको सुख देना है।" सा.बाबा 13.5.06 रिवा.

श्रीमत और सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, ... मर्यादा पुरुषोत्त्म की स्थिति

श्रीमत और ईश्वरीय कुल अर्थात् ब्राह्मण कुल की मर्यादायें

श्रीमत और दैवी कुल की मर्यादायें

श्रीमत और १६ कला सम्पूर्ण जीवन

ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही है - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म मर्यादा पुरुषोत्त्म बनना, उसके लिए बाबा अनेक प्रकार से श्रीमत दी है।

16 कला सम्पूर्ण कहा गया है परन्तु 16 कलायें कोई अलग-अलग नाम से कलायें नहीं हैं परन्तु ये सम्पूर्णता की निशानी है। पूर्णमासी के चन्द्रमा को 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है। मर्यादाओं के विषय में भी बाबा ने श्रीमत दी है और ईश्वरीय कुल की मर्यादाओं और दैवी कुल की मर्यादाओं की लकीर क्या है, उसके विषय में भी श्रीमत दी है।

"निर्दोष आत्मा है। अगर उस दृष्टि से हर आत्मा को देखो तो फिर पुरुषार्थ की स्पीड कब ढीली हो सकती है ? हर सेकण्ड में चढ़ती कला का अनुभव करेंगे। सिर्फ चढ़ती कला में जाने के लिए इसे समझने की कला आनी चाहिए। सोलह कला सम्पूर्ण बनना है ना।"

अ.बापदादा 3.10.71

"सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है तो सर्व कलायें अभी भरेंगी ना। ... यह सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है।" अ.बापदादा 5.10.71

"जैसे साकार के बोलने में, चलने में, सभी में विशेषता देखी ना।... हर चलन सम्पूर्ण कला के रूप में दिखाई दे, इसको कहते हैं 16 कला सम्पूर्ण।... जिसको कला के रूप में देख औरों में भी प्रेरणा भरती है। उनके कर्म भी सर्विसएबुल होते हैं।" अ.बापदादा 5.10.71

"जबकि अभी सागर की सन्तान हो, तो सागर समान सम्पन्न अभी होंगे या भविष्य में होंगे ? ज्ञानसागर बाप बच्चों को सब में सम्पन्न अभी बनाते हैं। तब ही लास्ट स्टेज का गायन किया जाता है - सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी और सम्पूर्ण अहिंसक।"

अ. बापदादा 2.5.74

"जैसे श्रृंगार में सोलह श्रृंगार प्रसिद्ध हैं, तो क्या ऐसे ही सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण बने हो ? या समय पर जिस कला की आवश्यकता हो, क्या उस समय वह कला स्वरूप में नहीं ला सकते हो ? यदि स्मृति में आता है लेकिन स्वरुप में नहीं आ पाता है तो आपको सफलता कैसे होगी ? यदि युद्ध स्थल में समय पर शस्त्र उपयोग में न ला सको, तो क्या विजय होगी ? पहले स्वयं को सम्पन्न बनाने के प्रैक्टिकल प्लैन बनाओ, तो सहज सफलता आपके सम्मुख आ जायेगी।" अ.बापदादा 24.4.74

"सवेरे से रात तक कौन-कौन सी मर्यादायें किस-किस कर्म में रखनी हैं, वह सभी नॉलेज स्पष्ट होनी चाहिए।... सीता समझ कर इस लकीर के अन्दर रहो अर्थात् जो केयरफुल होगा, मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहेगा, वही पुरुषोत्तम बन सकता है।"

अ.बापदादा 27.4.72

"जब मर्यादाओं का उल्लंघन होता है तब ही केयरलेस होते हो। आप लोगों की सम्पूर्ण स्टेज का जो गायन है - "सर्वगुण सम्पन्न ... अहिंसा परमोधर्म" जैसे सीता को मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने की आज्ञा दी। और कोई लकीर नहीं थी लेकिन यह मर्यादायें ही लकीर हैं।"

अ.बापदादा 27.4.72

Q. मर्यादाओं का उलंघन होता तो केयरलेस होते या केयरलेस होते तो मर्यादाओं का उलंघन होता है ?

वास्तविकता को विचार करें तो केयरलेस होते हैं तो मर्यादाओं की लकीर से बाहर जाते हैं, मर्यादाओं का उलंघन होता है और जब मर्यादाओं की लकीर का उलंघन होता है तो केयरलेस हो जाते हैं। दोनों ही बातें चक्रवत (Cyclic) हैं एक का उलंघन होने से दूसरे का स्वत: ही उलंघन हो जाता है।

Q. सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी अहिंसा परमोधर्म सर्व आत्मायें बनेंगी या कुछ आत्मायें ही बनेंगी या एक ही आत्मा बनेगी ?

हर आत्मा इस स्थिति को प्राप्त करती है परन्तु इस कर्मक्षेत्र पर उसका अनुभव करने के लिए पार्ट के अनुसार सबकी समय सीमा और प्रभाव में अन्तर अवश्य होगा। कोई आत्मा दीर्घ काल के लिए बनेगी और कोई आत्मा एक मिनट या एक सेकण्ड के लिए बनेगी और अनुभव करेगी क्योंकि आत्मा अपने मूल स्वरूप में सर्व गुण सम्पन्न ... अहिंसा परमोधर्म ही है। आत्मा जब इस धरा पर पार्ट बजाने आती है या इस धरा से पार्ट पूरा करके वापस जाती है तो उसकी स्थिति सम्पूर्ण ही होती है। परमधाम में कोई भी आत्मा अपूर्ण नहीं होती है या नहीं रह सकती है।

"मुख्य सब्जेक्ट है - व्यक्त में रहते, कर्म करते भी अव्यक्त स्थित रहे। इस सब्जेक्ट में पास होना है। ... सर्वगुण सम्पन्न बनने के लिए बाप के गुण सामने रख अपने को चेक करो कि कहाँ तक बने हैं।" अ.बापदादा 25.1.70

"रुहानियत कायम न रहने का कारण है कि अपने को और दूसरों को, जिनकी सर्विस के लिए निमित्त हो, उनको बापदादा की अमानत नहीं समझते। ... मन भी एक अमानत है। ... जिज्ञासु हैं, सेन्टर है, व कोई स्थूल वस्तु है लेकिन अमानत मात्र है। अमानत समझने से ही अनासक्त होंगे।" अ.बापदादा 25.12.69

"त्रेता में 2 कला कम हो गई। सम्पूर्ण शान्ति सतयुग में होती है। 25 परसेन्ट पुरानी होगी तो कुछ न कुछ खिट-खिट होगी।... अभी तुम हो ईश्वरीय सन्तान, तुमको बहुत-बहुत खीरखण्ड होकर रहना चाहिए।" सा.बाबा 21.9.05 रिवा.

"सुख के सागर के बच्चे, बेगमपुर के बादशाह फिर दुख की लहर कहाँ से आई! अवश्य सुख के संसार की बाउन्ड्री से बाहर चले जाते हैं। ... जैसे कल्प पहले के यादगार कथाओं में दिखाते हैं - सीता आकर्षित हो गई और मर्यादा की लकीर अर्थात् सुख के संसार की बाउन्ड्री पार कर ली, तो कहाँ पहुंच गई ?" अ.बापदादा 7.5.83

"संगमयुग की मर्यादायें ही पुरूषोत्तम बनाती हैं। इसलिए मर्यादा पुरूषोत्तम कहा जाता है। इन तमोगुणी मनुष्य आत्माओं और तमोगुणी प्रकृति के वायुमण्डल, वायब्रेशन से बचने का सहज

साधन यह मर्यादायें हैं। ... मेहनत तब करनी पड़ती है जब मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से बाहर निकल आते हैं।" अ.बापदादा 21.4.83

"श्रेष्ठ आत्माओं की पहली मुख्य बात स्मृति उत्तम है। स्मृति उत्तम है तो वृति और दृष्टि, स्थिति स्वत: ही श्रेष्ठ है। स्मृति के मर्यादा की लकीर जानते हो ? मैं भी श्रेष्ठ आत्मा और सर्व भी एक श्रेष्ठ बाप की श्रेष्ठ आत्मायें ... इस श्रेष्ठ स्मृति के समर्थपन के वायब्रेशन फैलाने के निमित्त बन जाते हैं, और भी निर्विघ्न बन जाते हैं।" अ.बापदादा 21.4.83

"अब चेक करो कि इन सबमें सर्वगुण सम्पन्न भी हो, सम्पूर्ण निर्विकारी भी हो, सम्पूर्ण अहिंसक और मर्यादा पुरुषोत्तम भी हो, 16 कला सम्पन्न भी हो ?... इन पांचो बातों में सम्पन्न बनना अर्थात् मालिक बनना।" अ.बापदादा 25.2.91

"तुम भी फूल-हार स्वीकार नहीं कर सकते हो। कायदे अनुसार यह देवताओं का हक है क्योंकि उनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं। ... जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, वे अब भी करते हैं और करने लग पड़ेंगे।" सा.बाबा 28.6.06 रिवा.

श्रीमत और प्रश्न एवं प्रश्नों से परे स्थिति

एक प्रश्न होता है किसी बात को समझने के लिए और कोई प्रश्न होता है आश्चर्य के कारण, किसी उल्झन के कारण या किसी को मुझाने की भावना से। समझने के लिए जो प्रश्न होता है, वह तो सही है और जब हम ज्ञान की गुह्यता को समझेंगे, तब ही दूसरों को भी समझा सकेंगे परन्तु आश्चर्य या उल्झन के कारण हमारे अन्दर कोई प्रश्न नहीं उठना चाहिए। बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थ रीति धारणा हो तो हमारे अन्दर कोई प्रश्न उठ नहीं सकता। बाबा ने इसके विषय में भी श्रीमत दी है कि आत्मा अपने मूल स्वरूप में प्रश्नों से परे है क्योंकि आत्मा जब सम्पूर्ण और सम्पन्न होती है तो उसको किसी भी प्रकार का प्रश्न नहीं उठता।

"कहा जाये कि एक सेकेण्ड में साकारी से निराकारी बन जाओ तो बन सकेंगे ?... प्रश्न का उत्तर देने वाले कौन हैं ? वह तो बहुत नाम सुनाये, फिर प्रश्न-उत्तर से पार जाने वाले कौन हैं ?... बाप समान भी बनना है और प्रजा भी बनानी है।" अ.बापदादा 20.10.69

"कोई प्रश्न पूछते तो बोलो हम बाप की श्रीमत पर चल रहे हैं। वह बेहद का बाप आकर बेहद का सुख देते हैं। ... बाकी प्रश्नों से कोई फायदा नहीं है।... शिवबाबा ने कल्प पहले मुआफिक फरमान दिया है कि अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो।... तुमको किससे

आरग्यू नहीं करना है।" सा.बाबा 12.9.05 रिवा.

"तुम बाप से कोई भी प्रकार की मांगनी नहीं कर सकते हो, कुछ भी पूछने की दरकार नहीं रहती। बाप सबकुछ आपही समझाते रहते हैं। ... हर बात में योगबल से काम लो।"

सा.बाबा 2.9.05 रिवा.

"बाप एक ही दवाई देते हैं। कहते हैं - योग से तुम भविष्य 21 जन्म के लिए निरोगी बन जायेंगे। तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे, तुम मुक्तिधाम चले जायेंगे। ... बच्चे कई प्रकार के प्रश्न पूछते हैं। बाप करके दिल लेने के लिए कुछ कह भी देते हैं परन्तु बाप कहते - मेरा काम ही है पतित से पावन बनाना।" सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

"बच्चों को ज्ञान रत्नों से झोली भरनी चाहिए। कोई भी प्रकार का संशय नहीं आना चाहिए। देहाभिमान आने से फिर अनेक प्रकार के प्रश्न आदि उठते हैं।" सा.बाबा 5.8.06 रिवा.

"आदि रत्न है मुख-वंशावली और आप हो संकल्प की वंशावली। इसलिए ब्रह्मा की दो रचना गाई हुई हैं। एक मुख-वंशावली और दूसरी संकल्प द्वारा सृष्टि रची।... अब क्यों-क्या का गीत खत्म करो और वाह-वाह के गीत गाओ।" अ.बापदादा 18.1.90

श्रीमत और सन्तुलन (Balance) / श्रीमत और साधन एवं साधना

बाबा ने कहा है - जीवन में सफलता के लिए हर बात में सन्तुलन रखना अति आवश्यक है और उन बातों में सन्तुलन कैसे स्थापित करें, उसके लिए भी श्रीमत दी है। बैलेन्स रखने से कैसे ब्लेसिंग्स मिलती है, उसका भी ज्ञान दिया है। बाबा ने अनेक प्रकार की समानान्तर बातें बताई हैं, जिनमें सन्तुलन रखना अति आवश्यक है।

ऐसे ही बाबा ने साधन और साधना का जीवन में महत्व भी बताया है और इसमें भी विशेष साधन एवं साधना के सन्तुलन के लिए ध्यान रखने के लिए कहा है। बाबा ने साधनों के उपयोग के लिए मना नहीं किया है लेकिन साधना में रहते साधनों का उपयोग करने के लिए कहा है। बाबा ने कहा है - साधना को भूल कर साधनों के आधार पर चलना तो बालू के ढेर पर भवन बनाना है।

बाबा ने जिन बातों के विषय में श्रीमत दी है, उनमें विशेषकर न्यारे और प्यारे, अधिकार और कर्तव्य, साधन और साधना, स्व-सेवा और विश्व-सेवा, कर्म और योग आदि-आदि हैं।

"साधनों के आधार पर साधना ऐसे समझो जैसे रेत के फाउण्डेशन के ऊपर बिल्डिंग खड़ी कर रहे हो। ... विनाशी साधन के आधार पर अविनाशी साधना हो नहीं सकती। ... साधन को

महत्व नहीं दो लेकिन साधना को महत्व दो। ... साधना ही सिद्धि को प्राप्त करायेगी।"

अ.बापदादा 31.12.70

"पहले की सेवा से वारिस निकले ... मूल कारण है उस समय अपनापन नहीं था, विश्व के कल्याण अर्थ अपना सभी कुछ देना है, वह भावना थी। ... अभी पहले अपने साधन सोचेंगे, पीछे सर्विस।"

अ.बापदादा 8.5.73

"अब फिर से वही महादानी बनने का संस्कार व सदा सर्व प्राप्ति होते हुए भी और सर्व साधन होते हुए भी साधनों में न आओ, साधना में रहो। अभी साधना कम है, साधन ज्यादा हैं। पहले साधन कम थे, साधना ज्यादा थी। ... साधन होते हुए भी त्याग वृत्ति में रहो।"

अ.बापदादा 8.5.73

"अब आपके सामने सेवा का फल साधनों के रुप में और महिमा के रुप में प्राप्त होने का समय है। इसी समय अगर यह फल स्वीकार कर लिया तो फिर कर्मातीत स्टेज का फल, सम्पूर्ण तपस्वीपन का फल और अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति का फल प्राप्त न हो सकेगा।"

अ.बापदादा 28.1.74

"जैसे याद का अटेन्शन रखते हो कि निरन्तर रहे, सदा याद का लिंक जुटा रहे, वैसे ही सेवा में भी सदा लिंक जुटा रहे। ... इसको कहते हैं बैलेन्स से ब्लेसिंग्स प्राप्त होने का अनुभव। ... विजय हुई पड़ी है - यह निश्चय और नशा सदा अनुभव होगा। यही ब्लेसिंग की निशानियां हैं।"

अ.बापदादा 6.11.87

"याद और सेवा का बैलेन्स सदा ब्राह्मण जीवन में बापदादा और सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं द्वारा ब्लेसिंग्स का पात्र बनाता है। संगमयुग पर ब्राह्मण जीवन में परमात्म-आशीर्वादें और ब्राह्मण परिवार की आशीर्वादें प्राप्त होती हैं।... इसलिए इसे महान युग कहते हैं।"

अ.बापदादा 6.11.87

बाबा ने साधन और साधना, याद और सेवा, परमार्थ और व्यवहार में बैलेन्स रखने के लिए श्रीमत दी है। बाबा जीवन व्यवहार के लिए भी कहा है - तुमको न बहुत ऊंचा जीवन-व्यवहार अपनाना है और न ही बहुत नीचा, तुम्हारी साधारणता में ही महानता है।

"वैभवों के साधन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यह प्राप्तियां बाप के बनने का फल मिल रहा है, तो फल को खाते बीज को नहीं भूल जाना। ... ये साधन बिना साधना के यूज करेंगे तो ये स्वर्ण-हिरण का काम करेंगे।"

अ.बापदादा 6.1.88

"प्वाइन्ट बुद्धि में रखना, यह है एक विधि और दूसरा है प्वाइन्ट बनकर प्वाइन्ट को कार्य में लगाओ। प्वाइन्ट रूप भी हो और प्वाइन्ट्स भी हो। दोनों का बैलेन्स हो।"

अ.बापदादा 25.2.91

"वास्तविक सेवा उसको कहा जाता है, जिसमें स्व और सर्व की सेवा समाई हुई हो। ... एक को देखते तो दूसरा ढीला हो जाता है, दूसरे को देखते तो पहला ढीला होता - इसका कारण क्या है ? ... सेवा का प्लेन बनाते तो प्लेन बुद्धि बनकर नहीं बनाते हो। ... प्लेन बुद्धि अर्थात् निमित्त और निर्मान भाव। निर्माण करते निर्मान स्थिति की कमी हो जाती।"

अ.बापदादा 8.4.92

"सदा अचल-अटल स्थिति का अनुभव ज्ञान-स्वरूप योगी तू आत्मायें ही करती हैं ... भावना स्वरूप आत्माओं को भावना का फल समय प्रमाण बाप द्वारा प्राप्त हो ही जाता है लेकिन समान बनने में ज्ञानी-योगी तू आत्मायें ही समीप हैं। इसलिए भावना और ज्ञान-स्वरूप बनने का लक्ष्य रखो।... सिर्फ भावना वा सिर्फ ज्ञान यह भी सम्पूर्णता नहीं है। ज्ञान-युक्त भावना और स्नेह-सम्पन्न योगी आत्मा - इन दोनों का बैलेन्स सहज उड़ती कला का अनुभव कराता है।"

अ.बापदादा 1.4.92

"आजकल पुरुषोत्तम आत्माओं को प्रकृति साधनों और सेलवेशन के रूप में प्रभावित करती है। साधन वा सेलवेशन के आधार पर योगी जीवन है। ... साधन साधना का आधार नहीं हों लेकिन साधना साधनों को स्वत: आधार बनायेगी। इसको कहा जाता है प्रयोगी।"

अ.बापदादा 25.11.93

"सदा अचल-अटल स्थिति का अनुभव ज्ञान-स्वरूप योगी तू आत्मायें ही करती हैं ... भावना स्वरूप आत्माओं को भावना का फल समय प्रमाण बाप द्वारा प्राप्त हो ही जाता है लेकिन समान बनने में ज्ञानी-योगी तू आत्मायें ही समीप हैं। इसलिए भावना और ज्ञान-स्वरूप बनने का लक्ष्य रखो।... सिर्फ भावना वा सिर्फ ज्ञान यह भी सम्पूर्णता नहीं है। ज्ञान-युक्त भावना और स्नेह-सम्पन्न योगी आत्मा - इन दोनों का बैलेन्स सहज उड़ती कला का अनुभव कराता है।"

अ.बापदादा 1.4.92

"हर समय अपने कर्म-योग का बैलेन्स चेक करो।... कर्मयोगी कैसा भी कर्म होगा, उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे। ... कर्मयोगी आत्मा को सर्व प्रकार की मदद स्वत: ही बाप द्वारा मिलती है। ... ऐसे नहीं सोचना कि यह काम पूरा करेंगे फिर योग लगायेंगे। कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 3

"सेवा में खुशी भी मिलती है, शक्ति भी मिलती है और प्रत्यक्ष फल भी मिलता है लेकिन बेहद का वैराग्य खत्म भी सेवा में ही होता है। ... चाहे कितने भी साधन प्राप्त हैं और साधन तो आपको दिन प्रतिदिन ज्यादा ही मिलने हैं लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति की साधना मर्ज नहीं हो,

इमर्ज हो। साधन और साधना का बैलेन्स हो।" अ.बापदादा 3.4.96

"सब आधार हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं ... साधनों को देखते साधना को नहीं भूल जाना क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है।" अ.बापदादा 26.2.95

"बापदादा अण्डरलाइन करा रहे हैं कि स्व-स्थिति और सेवा दोनों का बैलेन्स सदा स्मृति में रहे। ... योग और सेवा इकट्ठा-इकट्ठा होना चाहिए।" अ.बापदादा 26.2.95

"अभी साधनों ने आराम पसन्द बना दिया है। अपने आदि के पुरुषार्थ को चेक करो - ... साधन सेवा के प्रति हैं, साधन स्वयं को आराम पसन्द बनाने के लिए नहीं हैं।... देखो, आदि सेवा के समय में साधन नहीं थे लेकिन साधना कितनी श्रेष्ठ रही। जिस आदि की साधना ने ये सारी वृद्धि की है। ... साधना है बीज, साधन हैं विस्तार। तो साधना के बीज को छिपनें नहीं दो, अभी फिर से बीज को प्रत्यक्ष करो।" अ.बापदादा 26.1.95

"जितना ज्ञान को, शक्तियों को, गुणों को रिवाइज़ करते रहेंगे तो रियलाइज़ सहज होगा।... कर्म और योग का बैलेन्स चाहिए। कर्म में बिजी रहना योग नहीं है।... कर्म में योग का अनुभव होना, इसको कहा जाता है कर्मयोगी।... एक-एक गुण, शक्ति, ज्ञान की प्वाइन्ट के अनुभव में खो जाओ। स्वरूप बन जाओ।" अ.बापदादा 17.11.94

"याद और सेवा का बैलेन्स हो। सेवा करने से जो खज़ाने मिले हैं, वे बढ़ते हैं ... याद की शक्ति का अर्थ है कि बुद्धि को जहाँ लगाना चाहो, वहाँ लग जाये... कहना तो सहज है लेकिन एकाग्रता की शक्ति है वा नहीं है, वह समय पर मालूम पड़ता है।... यह अभ्यास सदा करते रहो तो समय पर शक्ति कार्य में ला सकते हो।" अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी 5

"बापदादा सभी को यही कहते कि सदा स्व-सेवा और औरों की सेवा साथ-साथ करो। ... सर्वशक्तिवान बाप मददगार है, इसलिए हिम्मत से दोनों का बैलेन्स रख आगे बढ़ो।"

अ.बापदादा 22.1.90

श्रीमत और भौतिक साधन-सम्पत्ति एवं ईश्वरीय प्राप्तियां

ये विश्व एक विविधतापूर्ण नाटक है, जिसमें हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है और उसके अनुसार अपनी-अपनी प्राप्तियाँ हैं। इसलिए भौतिक प्राप्तियां अर्थात् साधन-सम्पत्ति में समानता करना भी निरर्थक है।भौतिक प्राप्तियों की एक सीमा है परन्तु ईश्वरीय प्राप्तियां अनन्त-अखुट-अखण्ड हैं। जो अपनी भौतिक एवं ईश्वरीय प्राप्तियों को देखता है और उनका सुख लेता है, वही इस संगमयुगी जीवन का सच्चा सुख पाता है और जो दूसरों की प्राप्तियों को देखता है, ईर्ष्या-द्वेष में आता है, वह कभी भी इस संगमयुगी जीवन का सच्चा सुख अनुभव

नहीं कर सकता। इसलिए बाबा की श्रीमत है - तुम दूसरों को न देख, अपने को देखो, अपनी प्राप्तियों का सुख लो, कब ईर्ष्या-द्वेष में मत आओ। ईर्ष्या-द्वेष के वशीभूत आत्मा से अनेक प्रकार के विकर्म होते हैं, जो उसको कभी सुख-शान्ति का अनुभव नहीं करने देते। ईर्ष्या-द्वेष स्वत: में एक विकर्म है, जो आत्मा के दुख का बड़ा कारण है।।

भूल से भी ये संकल्प नहीं करना चाहिए कि हमको ज्ञान में 50 साल हो गये हैं, हमको यज्ञ में समर्पित हुए 40 साल हो गये हैं, इसलिए हमको ये चीज अर्थात् स्कूटर, कमरा आदि मिलना चाहिए, जब नयों को मिल सकती तो हमको क्यों नहीं मिल सकती। यह जैसे हम अपनी 50 साल की तपस्या के बदले ये चीज मांगते हैं और उसका मूल्य हम अपनी 50 साल की तपस्या से चुका रहे हैं। अपने कार्य की आवश्यकतानुसार किसी चीज के लिए मांगना अलग बात है। हमने 50 साल तपस्या या यज्ञ में समर्पण किसी वस्तु विशेष के लिए नहीं किया है। बाबा हमको जो देने आया है, उसका सुख लेने के लिए किया है और सेवा से अपना भाग्य बनाने के लिए किया है। इस देह से न्यारी आत्मिक स्थिति परमानन्दमय है, परमात्मा के साथ ईश्वरीय सेवा परमानन्दमय है और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का खेल देखना परमानन्दमय है, हमको उसका उपभोग करना है। उसके लिए किसी भौतिक साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता नहीं है। इसलिए बाबा की श्रीमत है अपना समय, स्वांस, संकल्प इस स्थिति के लिए लगाना है।

"चैलेन्ज करते हो कि हम भगवान के बच्चे हैं, तो जहाँ भगवान है, वहाँ कोई अप्राप्ति हो सकती है?... कभी-कभी दुख की लहर आ जाती है ... अभी फुल स्टॉप लगाओ। ऐसा श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ प्राप्तियां, श्रेष्ठ सम्बन्ध सारे कल्प में नहीं मिलेगा। पहले स्व-परिवर्तन करो। यह स्व-परिवर्तन का वायब्रेशन ही विश्व-परिवर्तन करायेगा।"

अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 1

"हम पद्मापदम भाग्यवान आत्मायें हैं - यह सदा स्मृति में रखो और खज़ानों को सदा सामने इमर्ज रूप में रखो। ... यह खज़ाने सदा खुशी को बढ़ाने वाले हैं, इसलिए कभी भी खुशी कम नहीं होनी चाहिए।... ब्राह्मण जीवन अर्थात् खुश रहना और दूसरों को भी खुशी बांटना।"

अ.बापदादा 7.3.93 पार्टी 2

"विनाशी साधनों की मौज अल्पकाल की होती है। सदाकाल की मौज को छोड़कर अगर अल्पकाल के साधनों की मौज में रहना चाहते हो तो बापदादा क्या कहेगा ... अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो, अविनाशी प्राप्तियों के झूलों में झूलो। ड्रामा को देखो, माया का पार्ट भी विचित्र है, जो अभी ही ऐसे साधन निकले हैं।... साधन जीवन की उड़ती कला का साधन नहीं

हैं, आधार नहीं है। साधना आधार है।... आधार बनाया तो रिजल्ट क्या होगी ?"

अ.बापदादा 28.3.06

"तुम हो राजऋषि। पैसा है तो घूमो-फिरो, खाओ-पिओ, सिर्फ बाप को याद करो। बाबा कोई मना नहीं करते हैं। साहूकार जरूर अच्छी रीति खायेंगे। वे तो अपनी कमाई का फल खाते हैं।" सा.बाबा 15.8.06 रिवा.

श्रीमत और वर्तमान एवं भविष्य प्राप्ति

बाबा ने वर्तमान प्राप्तियों का ज्ञान दिया है, उनका महत्व बताया है और उनका भविष्य प्राप्तियों से क्या सम्बन्ध है, उसका ज्ञान भी दिया है और वर्तमान प्राप्तियों का कैसे सुख लें और दूसरों को भी उस सुख का अनुभव करायें, उसके लिए श्रीमत भी दी है।

जो वर्तमान में स्वराज्य अधिकारी होगा, वही भविष्य में राज्य अधिकारी बन सकता है।

जो वर्तमान में विश्व सेवा का ताजधारी होगा, वही भविष्य में ताजधारी बनेगा।

जो वर्तमान में अपनी प्राप्तियों से सम्पन्न-सन्तुष्ट होगा, वही भविष्य में भी सम्पन्नता का अनुभव करेगा।

जो वर्तमान में आत्माओं की सेवा करेगा, वे ही भविष्य में उसकी प्रजा में आयेंगे।

जो वर्तमान में अपनी कर्मेन्द्रियों पर शासन करेगा, वही भविष्य में विश्व पर शासन कर सकेगा।

जो वर्तमान में ज्ञान-रत्नों से सम्पन्न होगा, वही भविष्य स्थूल-रत्नों से सम्पन्न होगा।

""भविष्य किसने देखा"... यह है असत्य की जजमेन्ट। भविष्य तो वर्तमान की परछाई है, बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता।... अल्पकाल के मान-शान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्वात्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं पा सकते।"

अ.बापदादा 24.9.92

"भविष्य भी वर्तमान भाग्य के हिसाब से मिलता है। महत्व इस समय के भाग्य का है। बीज इस समय डालते हो और फल अनेक जन्म प्राप्त होता है। महत्व तो बीज का गिना जाता है। यह है बीज बोना।... इस समय के पद्मापदम भाग्य की स्मृति सदा इमर्ज रूप में रहे।"

अ.बापदादा 26.1.88 पार्टी 3

"कोच-कुर्सियां हैं ... लेकिन ऐसा अभ्यास जरूर करो कि कोई भी समय साधन नहीं हो तो साधना में विघ्न नहीं पड़ना चाहिए।... जितना साधन बढ़ायेंगे, उतनी संख्या डबल-ट्रिपल बढ़ेगी।" अ.बापदादा 9.1.95

श्रीमत और पैगम्बर-मैसेन्जर

बाबा स्वर्ग का पैगाम लेकर आता है और हम सबको भी कहते हैं - तुम सब पैगम्बर-मैसेन्जर हो क्योंकि तुम बाप का पैगाम सर्वात्माओं तक पहुँचाने के निमित्त हो। सर्वात्माओं तक सहज ही बाप का पैगाम पहुँच जाये, जिससे वे भी बाप से सुख-शान्ति का अपना जन्मसिद्ध अधिकार ले लेवें, उसके लिए क्या-क्या और कैसे करना है, उसके लिए श्रीमत दी है। पैगाम क्या देना है, उसको भी बताया है।

"तुम सब सन्देशी हो। तुमको खास भारत और आम सारी दुनिया को यह सन्देश पहुँचाना है कि भारत अब फिर से स्वर्ग बन रहा है अथवा स्वर्ग की स्थापना हो रही है। बाप को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, वह भारत में स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं। ... तुमको अन्दर में यह खुशी रहनी चाहिए।" सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

"तुम जानते हो हम अभी वर्सा ले रहे हैं, और भी बहुतों को वर्सा लेना है। हमारे ऊपर फर्ज-अदाई है घर-घर में बाप का पैगाम देने की। वास्तव में मैसेन्जर एक बाप ही है। बाप अपना परिचय तुमको देते हैं, तुमको फिर औरों को बाप का परिचय देना है, बाप की नॉलेज देनी है।" सा.बाबा 11.2.05 रिवा.

"शास्त्रों में भी है कि घर-घर में सन्देश दिया। कोई एक रह गया तो उसने उल्हना दिया कि मुझे कोई ने बताया नहीं। बाप आये हैं तो पूरा ढिंढोरा पीटना चाहिए। एक दिन जरूर सबको पता पड़ेगा कि बाप आये हैं, शान्तिधाम-सुखधाम का वर्सा देने।"

सा.बाबा 19.1.05 रिवा.

"यह मैसेज सबको देना है। अपनी दिल से पूछो - मैं कहाँ तक मैसेन्जर बना हूँ? जितना बहुतों को जगायेंगे, उतना इनाम मिलेगा।... मूल बात है बाप का परिचय देना।"

सा.बाबा 30.6.05 रिवा.

"यह है रुहानी युनिवर्सिटी, जहाँ सारे युनिवर्स की आत्मायें आकर पढ़ती हैं।... तुम्हारा यह पैग़ाम कोई न कोई प्रकार से सबको जरूर पहुँचना चाहिए।... जो भी विश्व में जीवात्मायें हैं, वे उस माशूक को याद जरूर करती हैं। ये प्वाइन्ट्स अच्छी रीति धारण करनी हैं।"

सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

"अब बाप तुम बच्चों को समझा रहे हैं - हर एक की बुद्धि में आना चाहिए कि हम सबको बाप का परिचय कैसे दें।... सबको पहली-पहली बात यह सुनाओ कि निराकार शिवबाबा कहते हैं- मुझे याद करो, मैं पतित-पावन हूँ, मेरी याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 24.11.05 रिवा.

"जो इन बातों को अच्छी रीति समझ लेते हैं, उनको आन्तरिक खुशी रहती है। ... बाबा कहते इस नाम-रूप से न्यारा होना है। ... तुम बच्चे भी सर्विस पर हो, बाबा भी सर्विस पर है। बाबा सर्विस बिगर रह नहीं सकते।" सा.बाबा 18.12.05 रिवा.

"यह वैरायटी धर्मों का झाड़ है। और कोई को पता नहीं कि क्राइस्ट कैसे आता है। ... बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह पैगाम सभी को देना है।"

सा.बाबा 18.12.05 रिवा.

श्रीमत और ईश्वरीय वरदान एवं स्वमान

बाबा ने हर आत्मा को ब्राह्मण बनते ही दिव्य-बुद्धि का वरदान दिया है, जिसके आधार पर ही वह स्वयं को और परमात्मा को पहचानती है और पहचान कर अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा के सम्बन्ध जोड़कर अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करती है। इसके आधार से परमात्मा से अनेक प्रकार के वरदान आत्मा को प्राप्त होते हैं। इसके लिए बाबा श्रीमत देते हैं - बाबा ने वरदान तो दिये हैं, उन वरदानों को कार्य में लगाकर उनका सुख अनुभव करना तुम आत्माओं के ऊपर है। वरदानों को कार्य में लगाकर उनको बढ़ाना तुम आत्माओं का काम है। कार्य में न लगाने से वरदानों की शक्ति खत्म हो जाती है। जैसे बाप ने तुमको वरदान दिये हैं, वैसे तुम भी वरदानी मूर्त बनकर अन्य आत्माओं को वरदान दो।

"बाप और वरदाता - इन डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। बाप जन्म से ही सर्व शक्तियों का जन्म-सिद्ध अधिकार का अधिकारी बना देता है और वरदाता के नाते से जन्म होते ही मास्टर सर्वशक्तिवान बनाये, "सर्व शक्तिवान भव" का वरदान दे देते हैं।" अ.बापदादा 29.10.87

"श्रेष्ठ संकल्प शक्ति अर्थात् मन को जहाँ चाहो, जब चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो।... यह है मन की शक्ति, जो अलौकिक जीवन में वर्से वा वरदान में प्राप्त है।"

अ.बापदादा 29.10.87

"इन तीन स्वरूपों से विशेष तीन वरदान कौन-से हैं? निराकार स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान कौनसा है? कर्मातीत भव। आकारी स्वरूप अथवा फरिश्तेपन का वरदान कौनसा है? डबल-लाइट भव! ... साकार स्वरूप का विशेष वरदान है - साकार समान निरहंकारी और निर्विकारी भव।" अ.बापदादा 29.1.75

"अब ऐसे वरदान को साकार रूप में लाओ अर्थात् स्वयं को ज्ञान-मूर्त, याद-मूर्त, और साक्षात्कार-मूर्त बनाओ। जो भी सामने आये, उसे मस्तक द्वारा मस्तक-मणि दिखाई दे, नैनों द्वारा ज्वाला दिखाई दे और मुख द्वारा वरदान के बोल निकलते हुए दिखाई दें। जैसे अब तक बाप-दादा के महावाक्यों को साकार स्वरूप देने के लिए निमित्त बनते आये हो, अब इस स्वरूप को साकार बनाओ।" अ.बापदादा 18.1.75

"कार्य में दिव्यता ही सफलता का आधार है। दिव्य बुद्धि की निशानी है - हर कर्म में दिव्यता। ... दिव्य बुद्धि प्राप्त करने वाली आत्मायें सदा अदिव्य को भी दिव्य बना देती हैं। ... दिव्य बुद्धि अर्थात् पारस बुद्धि।... अभी दिव्य बुद्धि के वरदान को कार्य में लगाओ।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 4

"बाप का श्रेष्ठ मत का वरदान रूपी हाथ सदा बच्चों के ऊपर है।... इसी वरदान को विधिपूर्वक चलाते चलो तो कभी भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।... वरदानी आत्मा अर्थात् सदा निश्चिन्त और निश्चित विजय का अनुभव करना।... बाप वरदानी हाथ सदा मेरे ऊपर है, इस अनुभव को सदा स्मृति में रखो।" अ.बापदादा 24.2.88

"मन्सा-वाचा-कर्मणा बचत की स्कीम का मॉडल पहले मधुवन में बनाओ।... वैसे तो हर एक बच्चे के प्रति हर कदम में वरदान हैं। जो दिल के स्नेही आत्मायें हैं, वे चलते ही हर कदम वरदान से हैं। बाप का वरदान सिर्फ मुख से नहीं लेकिन दिल से भी है। दिल का वरदान सदा ही दिल में खुशी, उमंग-उत्साह का अनुभव कराता है। ... खुशी, उमंग-उत्साह में रहते हैं।"

अ.बापदादा 31.3.88

"बाप को दाता के रूप में याद करो तो रुहानी अधिकारीपन का नशा रहेगा, शिक्षक के रूप में याद करो तो गॉडली स्टूडेण्ट अर्थात् भगवान के स्टूडेण्ट हैं - इस भाग्य का नशा रहेगा। सतगुरु हर कदम में वरदानों से चला रहा है। हर कर्म में श्रेष्ठ मत, वरदाता का वरदान है।"

अ.बापदादा 21.12.89

"जो हर कदम श्रेष्ठ मत से चलते हैं, उनको हर कदम में कर्म की सफलता का वरदान सहज, स्वत: और अवश्य प्राप्त होता है। ... श्रेष्ठ मत और श्रेष्ठ गति।"

अ.बापदादा 21.12.89

"कितने लकी हो, जो भगवान रोज़ वरदान देते हैं।... एक है वरदान याद रहना और दूसरा है वरदान को काम में लगाना। वरदान ऐसी चीज़ है, जो कैसी भी परिस्थिति को आग से पानी बना देती है। ... जितना वरदान को कार्य में लगाते जायेंगे, उतना और बढ़ता जायेगा।"

अ.बापदादा 7.3.95

"बच्चे देहभान को छोड़ने की बहुत मेहनत करते हैं ... जहाँ स्वमान है, वहाँ देहभान आ ही नहीं सकता। तो छोड़ने की मेहनत नहीं करो लेकिन स्वमान में स्थित रहने का अटेन्शन रखो और संगमयुग पर स्वयं बाप द्वारा कितने अच्छे-अच्छे स्वमान प्राप्त हैं।"

अ.बापदादा 18.2.94

"वास्तव में अगर एक मास्टर सर्वशक्तिमान का स्वमान भी याद हो तो मेहनत की कोई बात ही नहीं। ... जब बोर होते हो तो अपने स्वमान की लिस्ट को सामने लाओ, अपने प्राप्तियों की लिस्ट को सामने लाओ।"

अ.बापदादा 18.2.94

"बाप से अधिकार में क्या-क्या मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो कितनी है ?... बच्चा बनना अर्थात् अधिकार लेना।... हद के अधिकार के पीछे अगर कोई जाता है तो बेहद का अधिकार गंवाता है। सदा बेहद के अधिकार की खुशी में रहो।... सिर्फ वर्से के नहीं लेकिन वरदानों के भी - डबल अधिकार है।... सदा स्मृति में रखो कि अनेक बार की अधिकारी आत्मायें हैं।"

अ.बापदादा 1.2.94 पार्टी 1

"अपनी पढ़ाई, अमृतवेला, सेवा के जो कायदे बने हुए हैं, नियम बने हुए हैं, उनको कभी भी मिस नहीं करना।... बाप, शिक्षक, सत्गुरु के रूप में वरदान सबको मिले हैं लेकिन समय पर वरदान को कार्य में लगाना- इसको कहते हैं - वरदान से लाभ लेना। यह तीनों ही बातें चेक करना कि आदि से अब तक इन तीनों में कितना पास रहे।"

अ.बापदादा 22.2.90 पार्टी 1

"अविनाशी आत्मिक स्वमान वाले की बुद्धि विनाशी स्वमान की तरफ आकर्षित नहीं हो सकती। ... जिसके नयनों में बाप समाया है, उसके नयनों में और कोई समा नहीं सकता। ... चरित्र के आधार पर ही भकति मार्ग में चित्र बने हैं। संगम पर प्रैक्टिकल चरित्र दिखाया है तब चित्र बने हैं।"

अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

श्रीमत और आशीर्वाद एवं अभिषाप

बाबा ने कहा है बाप न किसी को आशीर्वाद देता है और न ही अभिषाप देता है। बाप तो टीचर बन पढ़ाता है, जो जैसा पढ़ता है, उस अनुसार वह स्वयं ही स्वयं करे आशीर्वाद या श्राप देता है। बाप आशीर्वाद दे तो सबको दे।

बाबा ने ये भी कहा है - तुमको भी किसी को न आशीर्वाद देनी है और न ही श्राप देना है। तुमको सबको रास्ता बताना है। बाबा ने ये भी ज्ञान दिया है कि तुम किसी आत्मा की निन्दा

करते हो तो ये भी तुम उसको श्राप देते हो अथवा किसकी महिमा करते हो तो उसको आशीर्वाद देते हो। बाबा ने कहा है - तुमको कब परचिन्तन नहीं करना है क्योंकि जो किसकी निन्दा करता है या महिमा करता है तो सूक्ष्म में उसकी याद अवश्य रहती है, इसलिए उस समय बाबा की याद रह नहीं सकती। तुमको तो बाबा को याद करना है। साथ-साथ बाबा ने ये भी कहा है - तुमको दुखियों पर रहम करना है, उनके प्रति योगदान करना है परन्तु उसमें भी बीच में बाबा को अवश्य रखना है, नहीं तो वह भी पाप हो जायेगा।

"तुमको याद में रहकर पापों को विनाश करना है। ऐसे नहीं कि बाप हमारे ऊपर रहम वा कृपा करते हैं। ... बाप कहते हैं - मुझे तो पार्ट मिला हुआ है पढ़ाने का, सो तो पढ़ाना ही है।"

सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

"माया की बॉक्सिग भी ड्रामा में नूँध है। मैं थोड़ेही माया को कहूँगा कि विकल्प न लाओ। बहुत लिखते हैं - बाबा कृपा करो। मैं थोड़ेही किस पर कृपा करूँगा। यहाँ तो तुमको श्रीमत पर चलना है। मैं कृपा करूँ फिर तो सभी महाराजा बन जायें। ड्रामा में भी यह है नहीं।"

सा.बाबा 4.01.06 रिवा.

"अमृतवेले से रात सोने तक के लिए जो आज्ञायें मिली हुई हैं,... आज्ञाकारी को सर्व सम्बन्धों से परमात्म-दुआयें मिलती है। यह नियम है। ... परमात्म-दुआओं के कारण आज्ञाकारी आत्मा सदा डबल लाइट उड़ती कला वाली होती है। साथ-साथ आज्ञाकारी आत्मा को आज्ञा पालन करने के रिटर्न में बाप द्वारा विल पॉवर विशेष वरदान और वर्से के रूप में मिलती है।"

अ.बापदादा 17.12.89

"ज्ञान मार्ग है ही पढ़ाई। टीचर कोई पर कृपा थोड़ेही करेगा। हर एक को पढ़ना है। बाप श्रीमत देते हैं, उस पर चलना चाहिए ना।" सा.बाबा 2.9.06 रिवा.

"इसमें भगवान को तरस नहीं खाना है और न कृपा करनी है। वास्तव में तरस वा कृपा अपने ऊपर आपही करनी होती है। ... यहाँ तो पढ़ाई है, कृपा आदि की बात नहीं है।"

सा.बाबा 29.5.06 रिवा.

"तुम जितना बाप को याद करेंगे, उतना पवित्र बनेंगे और औरों को भी आप समान बनायेंगे तो बहुतो की आशीर्वाद मिलेगी। ऊंच पद पा लेंगे।" सा.बाबा 27.9.06 रिवा.

श्रीमत और स्थूल और सूक्ष्म भोजन

हम जो भी स्थूल व सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से ग्रहण करते हैं, उसका प्रभाव हमारे जीवन पर होता है। यह भी एक प्रकार का भोजन आत्मा ग्रहण करती है। हम सदा श्रेष्ठ भोजन ग्रहण

करें, जिससे आत्मा सदा शक्तिशाली रहे और श्रेष्ठ जीवन-पथ पर अग्रसर रहे, उसके लिए भी बाबा ने अनेकानेक तरह से श्रीमत दी हैं। बाबा ने कहा है कि तुम्हारी दृष्टि सदा आत्मा पर रहे, संकल्प सदा शुद्ध भोजन ग्रहण करो, कोई अशुद्धि मन-बुद्धि को टच न करे, तब ही तुम्हारी सदा उन्नति होगी। जैसे स्थूल भोजन की परहेज रखते हो, वैसे इस सूक्ष्म भोजन की भी परहेज रखनी है। स्पर्श से भी आत्मा जो वायब्रेशन ग्रहण करती है, उसका भी असर जीवन पर पड़ता है।

"वर्तमान समय रुहानी दृष्टि और वृत्ति के अभ्यास की बहुत आवश्यकता है। ... व्यक्ति व वैभव कभी न कभी अपने वश कर लेता है। ... ब्राह्मण आत्मा अगर संकल्प में भी विकारी दृष्टि-वृत्ति रखती है अर्थात् चमड़ी को देखती है तो महापापी की लिस्ट में आ जाते हैं।"

अ.बापदादा 19.9.75

"ब्राह्मण जीवन में बड़े से बड़ा पाप व दाग इस विकारी भावना का गिना जाता है।... शुद्ध संकल्प रूपी आहार अर्थात् भोजन को स्वीकार करते हो ? संकल्प में भी अशुद्ध... मलेच्छ अर्थात् आत्मघाती महापापी कहलायेंगे।... इस महापाप का दण्ड बहुत कड़े रूप में भोगना पड़ेगा।"

अ.बापदादा 19.9.75

इसलिए ही बाबा एक-दूसरे को टच करना, एक दूसरे के बिस्तर आदि पर बैठना भी मना करते हैं।

"जिस बात में कोई रस नहीं, कोई सम्बन्ध नहीं हो, वह सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए भी नहीं देखो। देखते-सुनते हुए सोचो नहीं। सुनो तो बाप की बातें, देखो तो बाप के श्रेष्ठ कर्म और बाप को फॉलो करने वालों के श्रेष्ठ कर्म। यही विधि है डबल लाइट रहने की।"

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 6

श्रीमत और प्रत्यक्षता

सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता, सत्य बाप की प्रत्यक्षता, स्वयं की प्रत्यक्षता - तीनों की प्रत्यक्षता हो, तब कहेंगे प्रत्यक्षता अर्थात् तब प्रत्यक्षता होगी।

प्रत्यक्षता अर्थात् सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता, बाप की प्रत्यक्षता, स्वयं की प्रत्यक्षता। भगवानुवाच - परमात्मा की प्रत्यक्षता भी तब होगी, जब ज्ञान प्रत्यक्ष होगा, ब्राह्मण प्रत्यक्ष होंगे। जब बच्चे प्रत्यक्ष होंगे, तब बाप प्रत्यक्ष होगा। इसलिए बाबा कहते तुम्हारी चलन, बोल, व्यवहार ऐसा हो, जो सबके मन में स्वत: संकल्प उठे, इनको ऐसा बनाने वाला कौन है ?

सत्य ज्ञान क्या है, सत्य ज्ञान की परख क्या है, वह परमात्मा स्वयं ही आकर बताते हैं, जिसके आधार पर हम सत्य ज्ञान और सत्य ज्ञान-दाता परमात्मा को और स्वयं को

पहचानने में समर्थ होते हैं।

सत्य ज्ञान के अनुभव की अथॉरिटी कितनी महान है, इसका यथार्थ आभास भी परमात्मा ही कराते हैं, जिससे आत्माओं में आत्मिक बल भर जाता है और अपनी महानता का आभास होता है।

सत्य ज्ञान की परख है - सत्य ज्ञान को पाने वाले की भटक या खोज मिट जायेगी और उसको प्राप्ति का सुख अनुभव होगा, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ चलेगा। जब तक आत्मिक सुख की अनुभूति नहीं है, तब तक उसकी खोज रहती ही है। जब तक सत्य को प्राप्त करने की इच्छा है तब तक समझो सत्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई है। जिसको सत्य ज्ञान की प्राप्ति हो जायेगी, वह अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करेगा और वह दूसरों को भी वह सत्य बताये बिगर रह नहीं सकेगा। सत्य ज्ञान की धारणा वाले में अहंकार हो नहीं सकता। उसमें सत्य ज्ञान का भी अहंकार नहीं होगा। इसीलिए कहा है - विद्या ददाति विनयम्।

बाप की, सत्य ज्ञान की और अपने आत्मिक स्वरूप की प्रत्यक्षता करना, सर्वात्माओं को अनुभव कराना हर ब्राह्मण आत्मा का पावन कर्तव्य है परन्तु प्रत्यक्षता कब और कैसे होगी, उसके लिए भी बाबा ने बताया है और उसके लिए क्या करना है, उसकी भी श्रीमत दी है। हमको भी बाबा कहते - बाबा जो ज्ञान देते हैं, वह जज करो कि वह सत्य है? क्योंकि जब तुम्हारी बुद्धि में उसकी सत्यता होगी, तब ही तुम औरों को भी उसकी सत्यता की अनुभूति करा सकोगे।

"जो भारी-भारी भूलें हैं, उन पर जोर देना है। एक तो ईश्वर को सर्वव्यापी कहना, दूसरा फिर गीता का भगवान श्रीकृष्ण को कहना, कल्प लाखों वर्ष का कहना। ... भल कहा जाता है - शंकर की प्रेरणा से बॉम्बस आदि बनाते हैं परन्तु यह सारी ड्रामा में नूँध है। इस यज्ञ से ही यह विनाश ज्वाला निकली है।" सा.बाबा 10.03.06 रिवा.

"अभी तपस्या द्वारा सर्व प्राप्तियों को स्वयं अपने जीवन में और सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में प्रत्यक्ष करो। ... चलन और चेहरे तक लाओ, सम्बन्ध-सम्पर्क में लाओ।... तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा।" अ.बापदादा 17.3.91

"ब्राह्मण आत्मा अर्थात् हर कर्म में बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली। कर्म की कलम से हर आत्मा के दिल पर, बुद्धि पर, बाप का चित्र वा स्वरूप खींचने वाली रूहानी चित्रकार बने हो ना। ... हर बच्चा अपने कर्मों के दर्पण द्वारा बाप का साक्षात्कार करावे।"

अ.बापदादा 25.5.83

"नई दुनिया का आधार- यह नई नॉलेज है। पहली अथारिटी तो नॉलेज की है ना! बाप की

महिमा में भी पहली महिमा क्या आती है ? ज्ञान का सागर कहते हो ना। तो जो पहली महिमा है ज्ञान, उस नये ज्ञान को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष किया है ?" अ.बापदादा 1.6.83

"गीता में भी ये बातें नहीं हैं। यह है बिल्कुल न्यारा ज्ञान। ड्रामा में यह सब नूँध है। एक सेकेण्ड का पार्ट न मिले दूसरे सेकेण्ड से।... कम बुद्धि वाले तो इतनी धारणा कर न सकें।"

सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

"सबसे बड़े से बड़ी अथॉरिटी आपके साथ है। ... आप सभी के पास कौनसी अथॉरिटी है ? सबसे बड़ी परमात्म अनुभूति की अथॉरिटी है। अनुभव की अथॉरिटी से श्रेष्ठ और सहज किसी को भी परिवर्तन कर सकते हो।" अ.बापदादा 13.3.86

"अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं तो वह नॉलेज ही किस काम की !... जब ज्ञान बुद्धि में समा जाता है तो बुद्धि के डायरेक्शन अनुसार कर्मेन्द्रियाँ भी वैसा ही कर्म करती हैं। ... भोजन खाना और चीज है, हजम करना और चीज है। खाने से शक्ति नहीं आयेगी, हजम करने से शक्ति आती है।" अ.बापदादा 24.1.70

सत्य ज्ञान को पाकर ही आत्मा मृत्यु-भय से भी मुक्त निर्भय होकर सत्य कर्मों में प्रवृत्त होती है।

"परमात्म-ज्ञान का प्रूफ है आपकी प्रैक्टिकल लाइफ है। एक तरफ धर्म-युद्ध की स्टेज, दूसरी तरफ प्रैक्टिकल धारणामूर्त की स्टेज। ... प्रैक्टिकल में ज्ञान अर्थात् धारणामूर्त, ज्ञानमूर्त, गुणमूर्त। मूर्त से ही वह ज्ञान और गुण दिखाई दें। आजकल डिस्कस करने से अपनी मूर्त को सिद्ध नहीं कर सकते। लेकिन मूरत से उनको एक सेकेण्ड में शान्त करा सकती हो।"

अ.बापदादा 11.4.73

"सर्विस की रिजल्ट में स्नेह और प्योरिटी तो स्पष्ट दिखाई देता है अथवा आने वाले अनुभव करते हैं लेकिन जो नवीनता वा नॉलेज की विशेषता है, वह है नॉलेजफुल स्टेज वा मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज वा सर्वशक्तिवान बाप के प्रैक्टिकल कर्तव्य की विशेषता, जो विशेष रूप से अनुभव करने की है, वह अभी कमी है।" अ.बापदादा 20.11.72

"आपके जीवन से, स्नेह और सहयोग से प्रभावित हुए हैं लेकिन श्रेष्ठ नॉलेज और नॉलेजफुल बाप के ऊपर इतना प्रभावित नहीं हुए हैं। जितना निमित्त बने हुए ब्राह्मण स्वयं शक्ति रूप का स्वयं में अनुभव करते हो। ... वह स्नेह और सहयोग की तुलना में कम है।"

अ.बापदादा 20.11.72

"पाण्डवों का गायन क्या है ? गुप्त रहने के बाद प्रत्यक्ष हुए ना। ... जब रिवाजी आत्मायें भी निर्भय होकर अपने सिद्धान्त को सिद्ध करने का कितना पुरुषार्थ करते हैं तो आप लोगों को

अपने सिद्धान्तों को सिद्ध करने का कितना जोश होना चाहिए।" अ.बापदादा 9.10.71

"साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे जब अपना अव्यक्त आकृति रूप दिखायेंगे।... सिर्फ मस्तक की लाइट नहीं लेकिन सारे शरीर द्वारा लाइट के साक्षात्कार होंगे। जब लाइट ही लाइट देखेंगे तो स्वयं भी लाइट रूप हो जायेंगे।" अ.बापदादा 26.6.70

"जितना स्वयं प्रत्यक्ष होगें, उतना बापदादा को प्रख्यात करेंगे।... जितना आपके मुख पर बापदादा का नाम होगा, उतना ही सभी के मुख पर आपका नाम होगा।"

अ.बापदादा 2.7.70

"साकार ब्रह्मा बाप को देखा! ... आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा। यह भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है लेकिन प्रत्यक्षता तब होगी, जब अनुभव करेंगे - इनको बनाने वाला कौन! रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।"

अ.बापदादा 15.12.03

"अभी कोई ऐसी निमित्त आत्मा बनाओ जो कोई विशेष कार्य करके दिखाये, जो आपकी तरफ से आपके समान बाप को प्रत्यक्ष करे। परमात्मा की पढ़ाई है, यह मुख से निकले, बाबा-बाबा शब्द दिल से निकले।... यही एक है, यही एक है... यह आवाज फैले... बेधड़क होकर बोले। जिस परमात्मा बाप को सभी पुकार रहे हैं, यह वह ज्ञान है।"

अ.बापदादा 15.10.04

"अनुभवों के सागर में तले में जाओ। ... और अन्तर्मुखी बन गुह्य अनुभवों के रत्नों से बुद्धि को भरपूर बनाओ क्योंकि प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है। सम्पन्न बनो, सम्पूर्ण बनो तो सर्व आत्माओं के आगे से अज्ञान का पर्दा हट जाये।" अ.बापदादा 08.1.86

"जब आपको अपने बदलने की महसूसता आयेगी तब आप दुनिया को बदल सकेंगे।... वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं थोड़े समय के लिए। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा।"

अ.बापदादा 16.10.69

"वे भाषण करने वाले भले ही सभा को हँसा लेते हैं या रुला देते हैं लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते हैं और न बाप से स्नेह पैदा करा सकते हैं।... हम आत्मा हैं और वह परमात्मा है - जब तक यह अनुभव नहीं कराओ तब तक यह बात सिद्ध कैसे होगी ?"

अ.बापदादा 2.8.73

"प्रत्यक्षता का आधार है सत्यता और निर्भयता - जब आत्म ज्ञान वाली आत्मायें ... अपनी अल्प मत को प्रत्यक्ष करने में निर्भय होती हैं। झूठ को सच करके सिद्ध करने में अटल और

अचल रहती हैं तो सर्वज्ञ बाप के श्रेष्ठ मत व अनादि आदि सत्य को प्रत्यक्ष करने में संकोच करना भी भय है।" अ.बापदादा 28.12.78

"आपकी जीवन परिवर्तन को देखकर उन्हों में भी परिवर्तन की प्रेरणा आ रही है। प्रत्यक्ष प्रमाण देखा ना। शास्त्र प्रमाण से भी, सबसे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण के आगे और सब प्रमाण समा जाते हैं।" अ.बापदादा 1.10.87

"नास्तिक भी अनुभव करते हैं अलौकिक प्यार है वा ईश्वरीय स्नेह है।... ईश्वरीय प्यार है तो वह कहाँ से आया ? किरणें सूर्य को स्वतः ही सिद्ध करती हैं। ईश्वरीय प्यार, अलौकिक स्नेह, निस्वार्थ स्नेह स्वतः ही दाता बाप को सिद्ध करता है।" अ.बापदादा 1.10.87

"प्रत्यक्षता वर्ष मनाने का अर्थ है, स्वयं को बाप के समान बनाना। यह स्थूल साधन तो निमित मात्र साधन हैं। सदाकाल का साधन सिद्धि स्वरुप का है। सिद्धि स्वरुप स्वतः सिद्ध करेगा कि ऐसा ऊंचा बनाने वाला ऊंचा भगवान है। तो साधनों के साथ-साथ सिद्धि स्वरुप को अपनाओ।"

अ.बापदादा 23.1.76

"जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रूप में सदैव श्रीकृष्ण दिखाई देता था।... जो सदा बाप की याद में होंगे और मैं-पन की त्याग-वृत्ति में होंगे, उन्हों से ही बाप दिखाई देगा।"

अ.बापदादा 28.10.75

"ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनैलिटी, रूहानी रॉयल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनैलिटी की ओर आकर्षित हों। ... जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे।" अ.बापदादा 24.4.83

"इस मधुबन की धरनी पर आने से उनको यह जरूर मालूम पड़ना चाहिए ... यह उल्हना न दे कि ऐसी धरनी पर भी मैं पहुँचा लेकिन यह मालूम नहीं पड़ा कि परमात्म ज्ञान क्या है ? परमात्म-भूमि पर आकर परम-आत्मा की प्रत्यक्षता का सन्देश जरूर ले जाये।"

अ.बापदादा 20.3.87

"यह लक्ष्य जरूर रखो कि नई दुनिया का नया ज्ञान प्रत्यक्ष जरूर करना है। अभी स्नेह और शान्ति प्रत्यक्ष हुई है। बाप का प्यार के सागर का स्वरूप, शान्ति के सागर का स्वरूप प्रत्यक्ष किया है लेकिन ज्ञान स्वरूप आत्मा और ज्ञान सागर बाप है, यह प्रत्यक्ष कम हुआ है।"

अ.बापदादा 20.3.87

"अभी उतरती कला और चढ़ती कला का राज़ तुम्हारी बुद्धि में है। ... भक्ति मार्ग है उतरती कला का मार्ग, ज्ञान है चढ़ती कला का मार्ग। यह समझाने में तुम डरो मत। ... परन्तु तुमको किससे भी शास्त्रवाद नहीं करना है। बोलो - शास्त्र, वेद ... तीर्थ आदि करना यह सब भक्ति

काण्ड है।" सा.बाबा 7.12.05 रिवा.

"विश्व के आगे ताली बजे, सबके मुख से यह आवाज़ निकले - हमारे इष्ट आ गये, हमारे पूज्य आ गये। ... आप प्रत्यक्ष हो गये तो विश्व-शान्ति स्वत: हो जायेगी।"

अ.बापदादा 15.12.05

"बाबा प्वाइन्ट्स तो बहुत देते रहते हैं। कोई आये तो तुम भेंट करके बताओ कि कहाँ यह होलिएस्ट ऑफ दि होली और कहाँ वे होली।... ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करो कि कैसे किसको समझायें।" सा.बाबा 14.12.05 रिवा.

"गीता का भगवान सिद्ध करने के लिए पहले आपस में राय करो... कोई ऐसे अथॉरिटी वालों को भी साथ मिलाओ, ... गीता के अथॉरिटी रखने वालों को साथी बनाओ। अच्छा है। प्लेन बनाओ, फिर दिखाना।" अ.बापदादा 31.12.05 जूरिस्ट

"सूर्य ईस्ट से ही निकलता है, ज्ञान सूर्य की प्रवेशता भी ईस्ट से ही हुई! बाकी क्या रहा? ... ऐसा प्लेन बनाओ जो प्रत्यक्षता का झण्डा आरम्भ ही ईस्ट से हो।... ऐसा आवाज हो जो कोई भी रेडियो खोले, टी.वी का स्वीच ऑन करे तो आवाज आये "हमारा शिवबाबा आ गया"।"

अ.बापदादा 31.12.05 ईस्टर्न सेवा ग्रुप

"हर सेन्टर इस संगठित योगाभ्यास का ऑफीशियल प्रोग्राम रखे और लक्ष्य रखे कि एक ही तारीख पर देश-विदेश का समय मिलाकर रखो और अखबार में निकले कि ब्रह्माकुमारियों के इतने सेन्टर्स में एक ही समय यह प्रोग्राम होना है।... योग नहीं कराओ, अनुभव कराओ।... ऐसे अनुभवी बनाओ, अभी अखण्ड सेवा करो।" अ.बापदादा 31.12.05

"धर्म वाले और साइन्स वाले दोनों को साइलेन्स का चमत्कार नहीं लेकिन साइलेन्स का कार्य सिद्ध करके दिखाना पड़ेगा। धर्म वालों को परमात्मा एक है और परमात्मा का कार्य चल रहा है। ... सब तरफ से आवाज़ आये - हमारा बाबा आ गया। ... आपका सम्पन्न बनना और प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना - दोनों का कनेक्शन है।" अ.बापदादा 3.02.06 विंग्स

"सभी पूछते हैं कि अभी आगे के लिए क्या नवीनता करें?... अब तक यह आवाज़ नहीं फैला है कि यह परमात्म ज्ञान है। ब्रह्मा कुमारियां अच्छा कार्य कर रही हैं, ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान बहुत अच्छा लेकिन यही परमात्म ज्ञान है, परमात्म कार्य चल रहा है - यह आवाज़ फैले।... परमात्म कार्य स्वयं परमात्मा करा रहा है, यह बहुत कम अनुभव करते हैं। ... अनुभवी मूर्त बन अनुभव कराओ।" अ.बापदादा 03.2.06

"अभी तपस्या द्वारा सर्व प्राप्तियों को स्वयं अपने जीवन में और सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में प्रत्यक्ष करो। ... चलन और चेहरे तक लाओ, सम्बन्ध-सम्पर्क में लाओ। ... तब प्रत्यक्षता

का नगाड़ा बजेगा।" अ.बापदादा 17.3.91

"अनुभव करके बोलने वाले निकलेंगे। सिर्फ महिमा करने वाले नहीं लेकिन ज्ञान की गुह्य प्वाइन्ट को स्पष्ट करने वाले, परमात्म-ज्ञान को सिद्ध करने वाले - ऐसे निमित्त बनेंगे। लेकिन उसके लिए ऐसे-ऐसे लोगों को स्नेही-सहयोगी बनाओ और सम्पर्क में लाते सम्बन्ध में लाओ।" अ.बापदादा 31.3.88

"सबके दिल से यह आवाज निकले कि हमारा बाप आ गया है, तब ही समय की समाप्ति होगी। ... कार्य की महिमा है लेकिन इस बात का अभी स्पष्टीकरण नहीं हुआ है कि बापदादा आ गये। ... स्वयं वर्सा लेने की उमंग में आयें।... जैसे कार्य की महिमा करते हैं, ऐसे करन-करावनहार बाप की महिमा झूम-झूम कर गायें।" अ.बापदादा 18.1.97

श्रीमत और भारत एवं विश्व

महाभारत अर्थात जिससे भारत महान बनता है। भारत में ही भगवान आकर श्रीमत देकर खास भारत और सारे विश्व को स्वर्ग बनाते हैं, जो श्रीमत अभी दे रहे हैं। बाबा ने श्रीमत दी है कि ये राज़ सभी भारतवासियों और विश्व की सर्वात्माओं को समझाओ कि ये भारत भगवान का जन्म-स्थान है, अभी भारत में भगवान आये हुए हैं और भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। भारतवासियों को यह बताओ कि भारत अभी जो नर्क बन गया है, वही स्वर्ग बनता है।

जब यह भारत स्वर्ग होगा, उस समय भारत नाम नहीं होगा क्योंकि उस समय सारा विश्व ही एक होगा और सारा विश्व ही स्वर्ग होगा, उसका केन्द्र-बिन्दु यह वर्तमान भारत होगा। भारत नाम तो बाद में पड़ा जब अनेकता आई और लोभ-अहंकार के वश विभाजन की प्रक्रिया आरम्भ हुई। स्वर्ग में विभाजन की कोई सीमा रेखा ही नहीं होगी तो भारत नाम की आवश्यकता भी क्यों होगी। वहाँ तो एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा, एक मत होगी। इस सत्य को सभी मानेंगे क्योंकि सभी धर्म वाले स्वर्ग को तो मानते ही हैं।

बाबा कहते - तुम बच्चों में ये स्वाभिमान होना चाहिए कि हम परमात्मा की अवतरण भूमि के निवासी हैं और भारत को स्वर्ग बनाने में परमात्मा के साथ सहयोगी हैं।

"ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों के सिवाए और कोई स्वर्ग का मालिक बन न सके। ... नई दुनिया में नया भारत था, उसमें देवी-देवताओं का राज्य था। ... बाप समझाते हैं - मीठे-मीठे बच्चो, मैं इस सृष्टि का मालिक नहीं हूँ। ... बाप आकर विश्व का मालिक बनाते हैं।"

सा.बाबा 22.7.05 रिवा.

"ये चित्र साथ में रहना चाहिए। बताना है भारत में इनका राज्य था और कोई धर्म नहीं था। ... तुम सिद्ध कर सकते हो पहले एक ही भारत था, एक ही राज्य था, एक ही भाषा थी। ... सिद्ध कर सकते हो आज का नक्शा यह है, कल का नक्शा यह है। ... भारत अविनाशी खण्ड है। ... और कोई में भी यह बताने की ताकत नहीं है। ... इसमें मूँझने की दरकार नहीं है।"

सा.बाबा 24.11.04 रिवा.

"भारत की ही बात है। बाप आते ही भारत में हैं। भारत ही इस समय पतित बना है, भारत ही पावन था। ... भारत को सचखण्ड कहा जाता है। झूठखण्ड ही फिर सचखण्ड बनता है। सच्चा बाप ही आकर सचखण्ड बनाते हैं।" सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

"भारत ने विदेश को हेण्ड्स दिये हैं। भारत भी बहुत बड़ा है। स्वर्ग तो भारत को ही बनाना है, विदेश तो पिकनिक स्थान बन जायेगा। ... बाप द्वारा आर्डर होना ही है। कब करेंगे, वह डेट नहीं बतायेंगे। डेट बतायें तो सब नम्बरवन पास हो जायें। अचानक ही क्वेश्चन आयेगा। एवर-रेडी हो ना।" अ.बापदादा 27.2.86

"कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत ही था, उसको स्वर्ग कहा जाता था।... इस चक्र में सारा ज्ञान भरा हुआ है।... 5000 वर्ष का हिसाब तुम क्लीयर समझाते हो।... चक्र की भी सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है तो इतनी खुशी रहनी चाहिए।"

सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

"यूरोपवासी भी इसको समझना चाहते हैं। भारत पैराडाइज़ था, तो किसका राज्य था? यह पूरा कोई नहीं जानते हैं। भारत ही हेविन स्वर्ग था। तुम सबको समझा सकते हो। यह सहज राजयोग है, जिससे भारत स्वर्ग बनता है। ... स्वर्ग के देवी-देवताओं की राजाई सहज राजयोग से भारत को ही प्राप्त होती है।" सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

"तुम सब सन्देशी हो। तुमको खास भारत और आम सारी दुनिया को यह सन्देश पहुँचाना है कि भारत अब फिर से स्वर्ग बन रहा है अथवा स्वर्ग की स्थापना हो रही है। भारत में बाप को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, वह स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं। ... तुमको अन्दर में यह खुशी रहनी चाहिए।" सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

"भारत बाप की अवतरण भूमि है और भारत प्रत्यक्षता का आवाज बुलन्द करने के निमित्त भूमि है। आदि से अन्त तक भारत में ही पार्ट है। विदेश का सहयोग भारत में प्रत्यक्षता करायेगा और भारत की प्रत्यक्षता का आवाज विदेश तक पहुँचेगा। ... भारतवासी बच्चों के भाग्य का सभी गायन करते हैं।" अ.बापदादा 10.11.87

"एक भारत ही है, जिसने कोई का राज्य छीना नहीं है क्योंकि भारत असल में अहिंसक है ना।

सारी दुनिया का भारत मालिक था। वह संस्कार तो आत्मा में हैं इसलिए थोड़े राज्य के लिए कब भारत लड़ता नहीं है। तुम भारतवासियों को बाप विश्व का मालिक बनाते हैं।”

सा.बाबा 7.9.69 रिवा.

“यह है सबसे बड़ा तीर्थ, जहाँ बेहद का बाप बैठकर बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं और सबकी सद्गति करते हैं। भारत की महिमा अपरमपार है परन्तु यह भी तुम समझ सकते हो। भारत है वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड। ... भारतवासी ही चाहते हैं कि विश्व में शान्ति भी हो और सुख भी हो। स्वर्ग में दोनो होते हैं।” सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

“सीढ़ी के चित्र से तुम किसको भी समझायेंगे कि भारत की यह गति है। लिखा हुआ भी है भारत के उत्थान और पतन की कहानी।... भारत के लिए सीढ़ी का चित्र मुख्य है। भारत में ज्ञान था तो बहुत धनवान था, अभी भारत में अज्ञान है तो कितना कंगाल है।”

सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

“ऐसे नहीं कि सतयुग में चीन, योरोप आदि नहीं होंगे। होंगे परन्तु वहाँ मनुष्य नहीं होंगे। सतयुग में सिर्फ देवता धर्म वाले ही होंगे, अन्य धर्म वाले होते नहीं हैं।”

सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

“इस दुखधाम से वैराग्य हो। ऐसे भी नहीं सन्यासियों मिसल घरबार छोड़ना है। बाप समझाते हैं उनका वैराग्य एक तरफ अच्छा है तो दूसरी तरफ बुरा भी है। तुम्हारा तो अच्छा ही अच्छा है। जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो भारत को थमाने के लिए पवित्रता जरूर चाहिए। उसमें वे मदद करते हैं।” सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

“भारत ही अविनाशी खण्ड है, जहाँ बेहद का बाप आते हैं। यह सबसे बड़ा तीर्थ हो गया। सर्व की सद्गति बाप ही आकर करते हैं, इसलिए भारत ऊंच से ऊंच देश है। ... क्रिश्चियन डायनेस्टी का कृष्ण डायनेस्टी से कनेक्शन है।” सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

“बाप भी भारत में ही आते हैं। दुनिया में पीस कब थी फिर वह पीस कब और कैसे होगी - यह बात तो तुम बच्चे ही बता सकते हो। नई दुनिया में भारत ही पैराडाइज़ था। ... सबसे जास्ती पत्थरबुद्धि ये भारतवासी ही बने हैं। यह गीता शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के।”

सा.बाबा 1.10.04 रिवा.

“सर्व का सद्गति दाता आबू में ही आते हैं, इसलिए बड़े से बड़ा तीर्थ आबू ठहरा। जो भी धर्म-स्थापक अथवा गुरु आदि हैं, सबकी सद्गति बाप यहाँ ही आकर करते हैं।”

सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

“गीता में भी कोई सार नहीं है। भल गीता को सर्व शास्त्रमई शिरोमणी कहते हैं। ... वैसे ही

सर्व तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ आबू है। सारे वर्ल्ड के तीर्थों में यह है सबसे बड़ा तीर्थ है, जहाँ बाप बैठ सबकी सद्गति करते हैं। ... तुमको यहाँ बैठे दिल में बड़ी खुशी होनी चाहिए कि हम हेविन की स्थापना कर रहे हैं।" सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

"बहुत कुछ समझने का है। बाप ने आबू की महिमा पर समझाया है, इस पर ख्याल करना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि में आना चाहिए - तुम यहाँ बैठे हो। तुम्हारा यादगार देलवाड़ा मन्दिर कब बना, कितने वर्ष बाद बना है। ... इन बातों पर सोच तो चलता है ना।... बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए।" सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

"यहाँ आबू में ही बाप सारे विश्व को नर्क से स्वर्ग बना रहे हैं तो यही सबसे ऊंच ते ऊंच तीर्थ ठहरा। ... अब दुनिया को कैसे पता पड़े कि यह आबू सबसे ऊंच तीर्थ है।"

सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

"भारत अभी कितना कंगाल है, रावण राज्य है। कितना ऊंच नम्बरवन था, अभी लास्ट नम्बर है। लास्ट में न आये तो नम्बरवन में कैसे जाये। ये भी हिसाब है ना। अगर धीरज से विचार सागर मंथन करें तो सब बातें आपेही बुद्धि में आ जायेंगी।" सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

"बाबा ने कहा था - हर एक चित्र के ऊपर लिखा हुआ हो - "शिव भगवानुवाच" ... यह भी लिखना चाहिए कि भारत जो स्वर्ग था सो नर्क जैसा कैसे बना, आकर समझो।... भारत में रक्त की नदियां बहने के बाद फिर दूध की नदियां बहेंगी।" सा.बाबा 9.9.05 रिवा.

"हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम श्रीमत पर इस भारत-भूमि को पतित से पावन बनायेंगे। ... यह ख्यालात हर एक को अपनी बुद्धि में रखना है। ... तुम समझते हो हम सब बच्चे बाप की श्रीमत पर भारत की रुहानी सर्विस करते हैं, अपने ही तन-मन-धन से।"

सा.बाबा 28.9.05 रिवा.

"नई दुनिया का सेपलिंग भारत से ही लगता है। ... परमत आसुरी मत हो गई। बाप की है श्रीमत। ... यहाँ तुम जो सेवा करते हो, यह है तुम्हारी नम्बरवन सेवा।"

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

"शक्ति देना आप विशेष आत्माओं का कर्तव्य है ना। दिन प्रतिदिन यह अनुभव करेंगे कि कहाँ से शान्ति की किरणें आ रही हैं। फिर ढूँढेंगे, सबकी नज़र भारत भूमि पर जायेगी।"

अ.बापदादा 18.1.91 दादियों से

"नये भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, अभी उसी भारत पर रावण का राज्य है। ... शिवबाबा भारत में ही आते हैं। तुम थोड़े बच्चे उनके मददगार, खुदाई खिदमतगार बनते हो, उनकी ही भक्त लोग सालिग्राम बनाकर पूजा करते हैं।" सा.बाबा 31.7.06 रिवा.

“बाप ने भारतवासी पतितों को आकर राजयोग सिखलाकर पावन बनाया था, अभी फिर बाप बच्चों के पास आया हुआ है। ... तुम हो शिव शक्ति भारत मातायें, जो श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाती हो। ... भारत ही परिस्तान था, जो अब कब्रिस्तान बना है, अभी फिर परिस्तान होगा।” सा.बाबा 3.03.06 रिवा.

“यह सारा खेल भारत के ऊपर ही बना हुआ है। भारत ही पावन और भारत ही पतित बनता है। ... तुम ब्राह्मणों ने ही श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाया है। यह है ही भारत का प्राचीन राजयोग, जिसका गीता में भी वर्णन है।” सा.बाबा 1.03.06 रिवा.

“शक्ति देना आप विशेष आत्माओं का कर्तव्य है ना। दिन प्रतिदिन यह अनुभव करेंगे कि कहाँ से शान्ति की किरणें आ रही हैं। फिर ढूँढेंगे, सबकी नज़र भारत भूमि पर जायेगी।”

अ.बापदादा 18.1.91 दादियों से

“तुमको शुद्ध अहंकार होना चाहिए कि हम आत्मायें बाबा की श्रीमत पर इस भारत को स्वर्ग बना रहे हैं, जिस स्वर्ग में फिर हम राज्य करेंगे।” सा.बाबा 6.02.06 रिवा.

“कल्प पहले मुआफिक जो विघ्न पड़ने होंगे, वे पड़ेंगे। पहले से थोड़ेही पता पड़ता है। ... अब कल्याण तो सबका होना है। गोया हम मनुष्य मात्र का कल्याण कर रहे हैं। भारत खास और दुनिया आम। सबका हम श्रीमत पर कल्याण कर रहे हैं।” सा.बाबा 4.02.06 रिवा.

“बच्चे जानते हैं कि हम श्रीमत पर इस भारत को फिरसे स्वर्ग बना रहे हैं। ... भारत का ही उत्थान और पतन गाया हुआ है। ... तुम बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान होना चाहिए। नॉलेज से ही ऊंच पद मिलता है। नॉलेज होगी तब तो औरों को भी देंगे।”

सा.बाबा 10.01.06 रिवा.

“अभी भारत का बहुत बड़ा कल्याण हो रहा है। सब आत्मायें पवित्र होकर मुक्तिधाम चली जायेंगी। तुम हो ही भारत की सेवा पर। भारत खास, दुनिया आम सारी दुनिया।... तुम्हारे पास जो कुछ है, वह दैवी राजधानी स्थापन करने में लगाओ।” सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

“वृक्षपति बाप आकर मनुष्य मात्र पर बृहस्पति की दशा बिठाते हैं। खास भारत, आम विश्व पर इस समय राहू का ग्रहण लगा हुआ है। ... मैं ही आकर खास भारत, आम सारी दुनिया की गति-सद्गति करता हूँ। ... मेरे लाड़ले बच्चो, तुम्हारे ऊपर अभी वृक्षपति की दशा है। दे दान तो छूटे ग्रहण।” सा.बाबा 14.7.06 रिवा.

“यह सारी कहानी भारत की ही है। सतयुग-त्रेता में भारतवासी राजायें थे। ... इसमें डरने की बात नहीं, कहानी खुशी से सुनाई जाती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है।”

सा.बाबा 7.9.06 रिवा.

"भारत के इस समय के मनुष्यों और भारत के प्राचीन मनुष्यों में ह्यूज कान्ट्रॉस्ट है ना। ... मोहम्मद गज़नवी कितने ऊंट भरकर ले गये। भारत में अथाह धन था। ... देवी-देवताओं के हीरे-जवाहरों के मन्दिर बनाते थे। तुम ही पूज्य राव थे, फिर तुम ही 84 जन्म ले पूरे रंक बने हो। ऐसी-ऐसी बातें घड़ी-घड़ी सुमिरन करनी चाहिए।" सा.बाबा 26.8.06 रिवा.

श्रीमत और दैनिक चार्ट एवं स्व-चेकिंग

बाबा प्राय: सभी मुरलियों में अपना रोज का चार्ट रखने की श्रीमत देते हैं और कहते हैं - चार्ट रखने से तुम्हारी बहुत उन्नति हो सकती है परन्तु जो सच्चा-सच्चा चार्ट लिखेगा। चार्ट को लिखो और समय-समय पर चेक करो, हमने कितना उन्नति को पाया है। बाबा कहते केवल ये चार्ट नहीं लिखो कि हमने किसको दुख तो नहीं दिया। दुख नहीं दिया परन्तु ये भी चेक करो कि किसको सुख कितना दिया, हमने अपना सुख का, दुआओं का खाता कितना जमा किया ?

"अपनी आपही जांच करनी है - हम सम्पूर्ण निर्विकारी हैं, हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं है ?" सा.बाबा 13.9.05 रिवा.

"अपनी जांच करनी है। नारद का मिसाल भी है। यह सब दृष्टान्त ज्ञान सागर बाप ने ही दिये हैं। ... बाप के दिये हुए दृष्टान्त भक्तिमार्ग में फिर रिपीट करते हैं। भक्ति मार्ग है ही पास्ट का, इस समय प्रैक्टिकल होता है।" सा.बाबा 13.8.05 रिवा.

"मुख्य बात है याद की। ... कोई सच्चाई से अगर चार्ट लिखे तो बहुत फायदा हो सकता है। ... सबसे बड़ा कांटा है काम विकार का। बाप कहते हैं - इस पर जीत पहन जगतजीत बनो।"

सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

"कब अपने हाथ में लॉ नहीं लेना है। इसलिए बाबा कहते - रोज़ अपनी कचहरी करो।... अपनी आपही कचहरी करना अच्छा है। तुम अपने को आपही राजतिलक देते हो। बाप श्रीमत देते हैं - ऐसे-ऐसे करो, दैवीगुण धारण करो। जो करेंगे, वे पायेंगे।"

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"बाप कहते हैं अपना चार्ट रखो। चार्ट रखने से मालूम पड़ेगा - हमारा रजिस्टर सुधरता जाता है या नहीं। ... निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, ठण्डी-गर्मी सब सहन करना है।"

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"तुम जानते हो हमारी आत्मा बेहद के बाप को याद करती है या नहीं ? यह हरेक को अपने से पूछना है। ... यह है अजपाजाप।... अपने को आत्मा समझ अपने बाप को याद करना है।"
सा.बाबा 22.9.05 रिवा.

"अभी तुम बच्चों को बाप का परिचय मिला है तो औरों को भी देना है। ... तुम अपने लिए ही विश्व में स्वर्ग की बादशाही की स्थापना करते हो। अपने को देखना है, हम क्या बनेंगे ?"
सा.बाबा 22.9.05 रिवा.

"चेक करो - मैं समर्थ आत्मा हूँ, वह याद रहता है वा व्यर्थ समर्थ के ऊपर विजयी हो जाता है ? ... हद की कोई भी इच्छा, इच्छामात्रम् अविद्या के निश्चय से नीचे ले आती है।"
अ.बापदादा 27.12.87

"अपने आपसे पूछो - ज्ञान के साथ-साथ दिल का स्नेह है ? दिल में लीकेज तो नहीं है ? ... अगर एक बाप के सिवाए और किसी व्यक्ति, वैभव से संकल्प मात्र भी स्नेह है ... इसको लीकेज कहा जायेगा। ... शक्ति नहीं बढती, मेहनत लगती है। मेहनत होने के कारण सन्तुष्टता नहीं रहती है।"
अ.बापदादा 6.1.88

"अच्छा कल विनाश हो जाये तो ?... वन-वन-वन में नहीं आयेंगे।... देख तो रहे हो, जानते भी हो कि हो जाना ही है। हो जायेंगे नहीं, होना ही है।... जो भी संकल्प करो, चेक करो कितनी परसेन्ट निश्चय और सफलतापूर्वक है ? अभी चेक करने की स्पीड तीव्र करो। पहले चेक करो फिर कर्म में आओ।"
अ.बापदादा 21.10.05

"अपना उमंग-उत्साह, संगठन की शक्ति ... स्नेह की शक्ति, सहयोग की शक्ति हो तो सफलता उसी अनुसार होती है। यह है धरनी। जैसे धरनी ठीक होती है तो फल भी ऐसा ही निकलता है।... सफलता के फल के पहले सदा धरनी को चेक करो।"
अ.बापदादा 10.1.88

"आपने को आपही देखना है - माया हमको कहाँ धोखा तो नहीं देती है, मेरी क्रिमिनल आई तो नहीं बनती है ? ... सच बाप के आगे सच न बताया, झूठ बोला तो बहुत दण्ड पड़ जायेगा। ... अगर कोई बात बाप से छिपाते हो, सच नहीं बताते हो तो भी अपना ही नुकसान करते हो। और ही सौगुणा पाप चढ़ जाता है।"
सा.बाबा 26.10.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - हे आत्माओं, अपने अन्दर जांच करो - कहाँ तक दैवी गुणों की धरणा हुई है... कोई आसुरी गुण तो नहीं है ?"
सा.बाबा 27.10.05 रिवा.

"समझाना भी ऐसे है - हम भारत को फिर से ऊंच से ऊंच भगवान की श्रीमत पर वाइसलेस बना रहे हैं।... भारत जो सम्पूर्ण निर्विकारी स्वर्ग था, वह अब विकारी नर्क बन गया है। हम

फिर से श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बना रहे हैं।" सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

"पहले अपने को देखना है - हम निर्विकारी बने हैं? मैं ईश्वर को ठगता तो नहीं हूँ? ऐसे नहीं कि ईश्वर हमको देखता थोड़ेही है। तुम्हारे मुख से यह अक्षर निकल न सकें। ... तुम जानते हो यह सब कब्रदाखिल होने हैं, इसलिए हम उनको याद क्यों करें। ज्ञान से सबकुछ समझना है।" सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

"चेक करो कि खुशी किसी साधन के आधार पर, किसी हद की प्राप्ति के आधार पर, थोड़े समय की सफलता के आधार पर, मान्यता वा नामाचार के आधार पर, मन के हद की इच्छाओं के आधार पर .. इन आधारों से खुशी की प्राप्ति - यह कोई वास्तविक खुशी नहीं है, अविनाशी खुशी नहीं है। आधार हिला तो खुशी भी हिल जाती।... यह तो दुनिया वालों के पास भी है।" A.B.D.-13.1.86

"होली अर्थात् पवित्रता की प्रत्यक्ष निशानी है - हैपी अर्थात् खुशी। खुशी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगी। अगर खुशी नहीं है तो अवश्य कोई अपवित्रता अर्थात् संकल्प वा कर्म यथार्थ नहीं है, तब खुशी नहीं है। .. वर्तमान समय के प्रमाण व्यर्थ और साधारण कर्म न हों। इसमें भी चेकिंग और चेन्ज चाहिए।" A.B.D.-13.1.86

"वायदा तो करते हो लेकिन वायदे का फायदा नहीं उठाते हो ... रोज एक तो रियलाइजेशन और दूसरा रिवाइज करो वायदे को। ... अमृतवेले मिलने के बाद वायदा और फायदा दोनों के बैलेन्स का चार्ट बनाओ। ... रियलाइज करो, रिवाइज करो। बैलेन्स हो जायेगा तो ठीक हो जायेगा।" अ.बापदादा 15.11.05

"यह तो हैं ज्ञान रतन। याद को रत्न नहीं कहा जाता है। याद से ही तुम्हारे करेक्टर्स सुधरते हैं। ... पहले तो खुद को देखना है कि मैं कहाँ तक धारणा करता हूँ, कितना याद करता हूँ, मेरे करेक्टर्स कैसे हैं। अगर मेरे में ही रोने की आदत होगी तो दूसरों को खुशमिज़ाज कैसे बना सकेंगे।" सा.बाबा 21.11.05 रिवा.

"शिवबाबा के डायरेक्शन तो अभी ही मिलते हैं, जिसको श्रीमत कहते हैं। बाप की श्रीमत से ही हम श्रेष्ठ बनते हैं। अपनी जांच करनी है - कहाँ हम श्रीमत के बरखिलाफ तो कुछ करते नहीं हैं? जो बात अच्छी न लगे, उसको नहीं करना चाहिए।" सा.बाबा 1.12.05 रिवा.

"पहले स्वयं अपना साक्षी बनकर चेक करो - स्व के चार्ट से, स्वयं सच्चे मन, सच्चे दिल से सन्तुष्ट हैं? दूसरा जिस विधिपूर्वक बापदादा याद के परसेन्ट को चाहते हैं, उस विधिपूर्वक मन-वचन-कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में सम्पूर्ण चार्ट रहा अर्थात् बाप भी सन्तुष्ट हो, तीसरा ब्राह्मण परिवार हमारे श्रेष्ठ योगी जीवन से सन्तुष्ट रहा?" अ.बापदादा 31.12.91

"अपने से पूछो लवलीन कहाँ तक रहते हैं। लवलीन बच्चों की निशानी है, वे सदा परमात्म फरमान में सहज चलते हैं, फरमान में भी रहते और देहभान से कुर्बान भी रहते। क्योंकि प्यार में कुर्बान होना मुश्किल नहीं है। बाप का पहला फरमान है - योगी भव, पवित्र भव।"

अ.बापदादा 15.12.05

"ये अलौकिक जन्म मेहनत से मुक्त हो अतीन्द्रिय सुख की मौज मनाने का है। तो मौज मना रहे हो या मेहनत करनी पड़ती है। ... अगर मेहनत करनी पड़ती है तो प्यार की परसेन्टेज कम है। कहाँ न कहाँ प्यार में कुछ न कुछ लीकेज है। दो बातों की लीकेज मेहनत कराती है। एक पुराने संसार की आकर्षण, संसार में सम्बन्ध, पदार्थ सब आ जाता है और दूसरा है पुराने संस्कार की आकर्षण।" अ.बापदादा 15.12.05

"चेक करो - इन दोनों लीकेज (पुराने संसार और पुराने संस्कारों की आकर्षण) से मुक्त हैं? आप आत्मा के अनादि-आदि संस्कार क्या थे और अभी अन्त के ब्राह्मण जीवन के संस्कार क्या हैं? ... लक्ष्य सभी का बाप समान बनने का ही है।" अ.बापदादा 15.12.05

"डबल तख्तधारी। आत्मा का अकालतख्त भी याद है और दिलतख्त भी याद है।... बीच-बीच में चेक करो - मैं मालिकपन की सीट पर सेट हूँ? ... स्वयं भगवान आपको स्थिति की सीट पर बिठाता है।" अ.बापदादा 17.3.91 पार्टी 4

"कन्ट्रोलिंग पॉवर की ब्रेक चेक करो। ... जब समझते हैं कि यह रांग है तो उसी समय रांग को राइट में परिवर्तन होना चाहिए। इसको कहा जाता है कन्ट्रोलिंग पॉवर।"

अ.बापदादा 12.11.92

"इस रुहानी रॉयल्टी का फाउण्डेशन क्या है? सम्पूर्ण प्योरिटी। ... हर एक नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे, चलन में रॉयल्टी दिखाई देती है?"

अ.बापदादा 3.11.92

"चेक करो - अगर बार-बार किसी भी बात में स्थिति नीचे-ऊपर होती है अर्थात् बार-बार पुरुषार्थ में मेहनत करनी पड़ती है, इससे सिद्ध है कि ज्ञान की मूल सब्जेक्ट के दो शब्द - 9रचता और रचना" की पढ़ाई को स्वरूप में नहीं लाया।" अ.बापदादा 13.10.92

"अपने को चेक करो परन्तु दूसरे को चेक करने लगते हो ... बाप ने तो अपने प्यार का प्रत्यक्ष सबूत दे दिया - जो हो, जैसे हो मेरे हो लेकिन अब बच्चों को अपने प्यार का सबूत देना है। ... आप कहेंगे - जो है, वह सब आप हो।" अ.बापदादा 24.9.92

"चेक करो - निश्चय के फाउण्डेशन के चारो ओर (बाप, आप, परिवार, संगम का समय) मज़बूत है ... पहली बात प्यार का सबूत है - समान बनना। दूसरी बात क्या करनी है - निश्चय

के फाउण्डेशन को पक्का करो। ... हलचल समाप्त होगी तब निश्चय और विजय दोनों की समानता हो जायेगी।" अ.बापदादा 15.4.92

"इन तीन मास में हर एक अपना चार्ट चेक करना । मास्टर सर्वशक्तिवान होकर किसी भी कर्मेन्द्रिय को, किसी भी शक्ति को जब आर्डर करें, जो आर्डर करें, वह प्रैक्टिकल में आर्डर माना या नहीं माना ? ... अलबेले नहीं बनना।" अ.बापदादा 31.12.05

"तो चेक करो कि मेरे हर कदम में, बोल में मेरे द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होती है ?... मेरा हर कर्म श्रेष्ठ कर्म की गति सुनाने वाले बाप को प्रत्यक्ष करने वाला है ? ... हर कदम, हर बोल बाप को प्रत्यक्ष करने वाले हों तब यह आवाज़ गूँजेगा कि "हमारा बाबा आ गया" ।" अ.बापदादा 23.3.88

"अपनी तस्वीर को देखो कि तस्वीर ऐसी बनी है, कोई भी आपको देखे तो सदा के लिए प्रसन्नचित्त हो जाये। ... अशान्त आत्मा अशान्ति को भूल जाये, शान्ति की लहरों में लहराने लगे। ... सदा यह स्मृति में रखो कि हम ऐसे आधारमूर्त हैं, फाउण्डेशन हैं। ... ऐसे समझकर हर कदम उठाओ।" अ.बापदादा 15.3.88

"चेक करो - आदि से अब तक स्नेह एकरस रहा है वा समय प्रमाण, समस्या प्रमाण व ब्राह्मण आत्माओं के सम्पर्क प्रमाण स्नेह बदलता रहता है ?... रूलिंग पॉवर तब आती है जब पहले कन्ट्रोलिंग पॉवर हो। जो स्वयं को ही कन्ट्रोल नहीं कर सकता, वह विश्व के राज्य को क्या कन्ट्रोल करेगा !" अ.बापदादा 12.3.88

"कदम-कदम श्रीमत पर चलो, अन्दर कुछ भी गन्द न रहे। हृदय को शुद्ध बनाना है। नारद का भी मिसाल है ... अपने से पूछना है कि हम कहाँ तक श्रीमत पर चल रहे हैं। बुद्धियोग कहाँ बाहर में तो नहीं भटकता है।" सा.बाबा 18.3.06 रिवा.

"अब हर एक अपने दिल से पूछे कि याद से कितने हमारे पाप मिटे हैं और कितने पाप हमने किये हैं, बाकी कितने पाप रहे हुए हैं ? ... इस धन्धे में ही लग जाओ। औरों को भी यह समझाना है कि बाप को याद करो तो पुण्यात्मा बन जायेंगे।"

सा.बाबा 12.03.06 रिवा.

"ब्राह्मण अर्थात् सब-कुछ मिला। प्राप्ति की निशानी है खुशी। खुश रहने वाले भी हो और खुशी बांटने वाले भी। बांटेगा कौन ? जिसके पास स्टॉक होगा। ... तो सदैव अपना स्टॉक चेक करो कि इतना भरपूर है ?" अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 2

"कन्ट्रोलिंग पॉवर की ब्रेक चेक करो। ... जब समझते हैं कि यह रांग है तो उसी समय रांग को राइट में परिवर्तन होना चाहिए। इसको कहा जाता है कन्ट्रोलिंग पॉवर।"

अ.बापदादा 12.11.92

"चेक करो - निश्चय के फाउण्डेशन के चारो ओर (बाप, आप, परिवार, संगम का समय) मज़बूत है ... पहली बात प्यार का सबूत है - समान बनना। दूसरी बात क्या करनी है - निश्चय के फाउण्डेशन को पक्का करो।... हलचल समाप्त होगी तब निश्चय और विजय दोनों की समानता हो जायेगी।"
अ.बापदादा 15.4.92

"पहले स्वयं अपना साक्षी बनकर चेक करो - स्व के चार्ट से, स्वयं सच्चे मन, सच्चे दिल से सन्तुष्ट हैं? दूसरा जिस विधिपूर्वक बापदादा याद के परसेन्ट को चाहते हैं, उस विधिपूर्वक मन-वचन-कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में सम्पूर्ण चार्ट रहा अर्थात् बाप भी सन्तुष्ट हो, तीसरा ब्राह्मण परिवार हमारे श्रेष्ठ योगी जीवन से सन्तुष्ट रहा?"
अ.बापदादा 31.12.91

"चेक करो - ऐसे प्यारिटी की रॉयलिटी कहाँ तक आई है? रुहानी रॉयलिटी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है - रॉयलिटी अर्थात् रियलिटी अर्थात् सत्यता। ... सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। ... सच्ची आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी।"
अ.बापदादा 11.12.91

"सदैव अपने को चेक करो कि आज के दिन मन्सा अर्थात् स्वयं के संकल्प शक्ति में क्या विशेष विशेषता लाई?... साथ-साथ बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता कितनी लाई?... कर्म रूपी बीज प्राप्ति के वृक्ष से भरपूर हो, खाली नहीं हो।"

अ.बापदादा 31.12.90

"हर एक अपने को समझ सकते हैं कि हम कहाँ तक परवाना बनें हैं। हम बाबा की मत पर चलते रहते हैं। फालतू बातें तो नहीं करते हैं, कहाँ अपना पैसा पाप की तरफ तो नहीं लगा रहे हैं?"
सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

"मन और बुद्धि अगर उसी प्रमाण चलती रहती है तो वह संस्कार बन जाता है। अभी भी अपने को चेक करो कि मेरा जो व्यर्थ संस्कार है, वह कैसे बना?... जब व्यर्थ संस्कार के वश हो जाते हो तो क्या उस समय ब्रह्मा कुमार-कुमारी, ब्राह्मण हो या क्षत्रिय हो? ... जिसकी खुशी गुम हो जाये तो क्या वह ब्राह्मण है?"
अ.बापदादा 9.1.96

"एवर-रेडी का अर्थ ही है - आर्डर हुआ और चल पड़ा। ... इसलिए महीन बुद्धि से चेक करो कि कोई भी अल्पकाल का नशा, धागा बनकर रोकने के निमित्त तो नहीं बनेंगा?"

अ.बापदादा 9.1.95

"चेक करो - अमृतवेले से लेकर रात तक मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में जो आज्ञा मिली हुई है, उसी आज्ञा प्रमाण चलते हैं? ... पहला कदम आज्ञाकारी बनें, इसलिए

आज्ञाकारी को सदा बाप की दुआयें स्वत: मिलती हैं और साथ-साथ ब्राह्मण परिवार की भी दुआयें हैं।” अ.बापदादा 19.1.95

“सदा ये सोचो और चेक करो कि अगर इस घड़ी भी महाविनाश हो जाये तो हमारी तस्वीर क्या होगी? ... अपनी तकदीर की तस्वीर को देखो।” अ.बापदादा 14.12.94

“आंखें बड़ा धोखा देती हैं। ... चार्ट में लिखो फलानी को देखा, हमारी दृष्टि गई, फिर आपही अपने को सजा दो। ... छिपाकर खाना भी चोरी है, सो भी शिवबाबा के यज्ञ की चोरी - यह तो बहुत खराब है।” सा.बाबा 10.5.06 रिवा.

श्रीमत और गीत-कवितायें

बाबा कहते हैं - वास्तव में इस ज्ञान मार्ग में गीत-कविताओं की कोई आवश्यकता नहीं है, इसमें तो शान्ति में रहकर बाप को याद करना है। बाबा ने ये भी कहा कुछ अच्छे-अच्छे गीत अपने पास रखने चाहिए, जो जब मन में कोई उल्झन हो, तब बजाओ तो तुम उमंग में आ जायेंगे, दुख की लहर मिट जायेगी। अनेक बार हमने देखा कि साकार बाबा को कोई गीत-कविता आदि सुनाता था तो बाबा उसे प्यार से सुनते तो थे लेकिन साथ-साथ समझानी भी देते थे कि बच्चे आवाज से परे जाना है, अन्तर्मुख रहकर बाप को याद करना है।

साथ-साथ यह भी कहा है - कुछ अच्छे-अच्छे गीत अपने पास रखो और जब जीवन में उदासी आदि आये तो अपनी अवस्था को खुशी में लाने के लिए उन गीतों को बजाओ तो उदासी मिट जायेगी।

“आठ-दस गीत हैं, जिनको सुनने से खुशी का पारा चढ़ जाता है। देखो अवस्था में कुछ गड़बड़ है तो गीत बजा लो। ये हैं खुशी के गीत। बाप युक्तियाँ बताते हैं अपने को हर्षितमुख बनाने की।” सा.बाबा 13.10.05 रिवा.

“शान्ति में रहकर थोड़े अक्षर ही बोलने हैं, जास्ती आवाज नहीं। बाबा यह गीत, कवितायें आदि कुछ भी पसन्द नहीं करते। तुमको बाहर वाले मनुष्यों से रीस नहीं करनी है।”
सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

“यह है अजपाजाप। मुख से कुछ बोलना नहीं है। गीत भी स्थूल हो जाता है। बच्चों को सिर्फ बाप को याद करना है। नहीं तो गीत आदि याद आते रहेंगे। तुमको आवाज से परे जाना है। बाप का डायरेक्शन है ही - मन्मनाभव। बाप थोड़ेही कहते हैं गीत गाओ, रड़ी मारो। मेरी महिमा गायन करने की भी दरकार नहीं है।” सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

“यह साक्षात्कार आदि की सब ड्रामा में नूँध है। जो जैसी भावना रखते हैं, उसका साक्षात्कार

हो जाता है। ... इन गीतों आदि की भी ड्रामा में नूँध है। कब उदास हो जाते हो तो ये अच्छे-अच्छे गीत बजाओ तो खुशी में आ जायेंगे।" सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

"यहाँ तो बाबा रिकार्ड आदि बजाना भी पसन्द नहीं करते हैं। आगे चलकर शायद यह भी बन्द हो जायें।... यह पढ़ाई है। बच्चे जानते हैं - हम राजयोग सीख रहे हैं।"

सा.बाबा 5.9.06 रिवा.

"ज्ञान मार्ग में गीत आदि नहीं गाया जाता है, न बनाया जाता है और न जरूरत है क्योंकि गाया हुआ है - बाप से सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है, उसमें गीत आदि की कोई बात ही नहीं। ... अब तुम बच्चों को बाप मिला है तो खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बाप ने 84 जन्मों के चक्र का ज्ञान भी सुनाया है।" सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

श्रीमत और फोटो

बाबा ने स्पष्ट श्रीमत दी है कि किसी का फोटो आदि नहीं रखो क्योंकि तुमको तो एक निराकार बाप को याद करना है, उससे ही तुम्हारा कल्याण है। किसकी फोटो आदि रखते और उसे देखते रहते तो अपना टाइम वेस्ट करते हो। शिवबाबा का चित्र आदि भी किसको समझाने के लिए रखते हैं, चित्र को देखकर याद करना या चित्र पर मन-बुद्धि को एकाग्र करना यथार्थ याद नहीं है। मम्मा-बाबा का फोटो रखने के लिए भी बाबा ने मना की है और कहा है अन्त में यदि मम्मा-बाबा की याद रही तो भी दुर्गति हो जायेगी अर्थात् जो कल्याण शिवबाबा की याद से होना है, वह नहीं होगा। अनेक बार देखा कि ब्रह्मा बाबा को कोई अपने साथ फोटो निकलाने के लिए कहते थे तो बाबा बच्चों का मन रखने के लिए साथ में फोटो तो निकलवा लेते थे परन्तु साथ में समझानी भी अवश्य देते थे कि बच्चे शिवबाबा का फोटो तो निकल नहीं सकता है और याद तो शिवबाबा को ही करना है, इस तन को तो याद नहीं करना है। बाबा ने ये भी कहा है - मैं किसके पास मम्मा-बाबा का फोटो देखता हूँ तो फाड़ देता हूँ क्योंकि अन्त में मम्मा-बाबा को याद करते रहे तो दुर्गति हो जायेगी।

"बाप की छत्रछाया में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... जो अभी छत्रछाया में रहते हैं, वे ही छत्रधारी बनते हैं। ... बाप की छत्रछाया के अन्दर हैं, यह चित्र सदा सामने रखो।"

अ.बापदादा 27.3.88

"तुम अपना फोटो निकालो, ऊपर में शिवबाबा, फिर अपना राजाई का चित्र, उसके नीचे अपना साधारण चित्र। शिवबाबा से हम राजयोग सीखकर डबल सिरताजधारी देवता बन रहे हैं। ... तुमको आप ही बाप को याद करने का उपाय ढूँढना चाहिए।"

सा.बाबा 21.9.06 रिवा.

श्रीमत और गन्धर्वी विवाह

दुनिया में अनेक प्रकार से विवाह सम्बन्ध की प्रथायें हैं, उसके साथ ही एक संगमयुग की प्रथा का विधि-विधान भी परमात्मा ने बताया है, जिसको गन्धर्वी विवाह कहते हैं, जो किसी कन्या के जीवन की रक्षार्थ बाबा ने अपनी श्रीमत से कराया है या रचाया है। परन्तु बाबा ने यह भी कहा है कि यह भी आत्मा की कमजोरी है अन्यथा कन्या को अपने योगबल से अपने जीवन को बचाना चाहिए क्योंकि गन्धर्वी विवाह के बाद भी पवित्र रहते भी कन्या कुमारी से अधर-कुमारी ही कहलाती है और उसमें भी नाम-रूप की बीमारी तो प्रभावित होती ही है और वह भी अन्तिम परीक्षा में बाधक बन सकती है।

"तुम बच्चों को तो बड़ी खुशी होनी चाहिए - हमको परमात्मा पढ़ाते हैं।... गन्धर्वी विवाह किया, यह कोई खुशी की बात नहीं है, यह तो कमजोरी है।"

सा.बाबा 17.8.05 रिवा.

"कमल पुष्प समान पवित्र रहना है, यह गृहस्थियों के लिए कहा जाता है। कुमार-कुमारियों के लिए ऐसे नहीं कहेंगे।... कुमार-कुमारियों को तो शादी करनी ही नहीं चाहिए।... गन्धर्वी विवाह का नाम भी है। कन्या पर मार पड़ती है तो लाचारी हालत में गन्धर्वी विवाह कराया जाता है। वास्तव में मार भी सहन करनी चाहिए परन्तु अधरकुमारी नहीं बनना चाहिए। बाल ब्रह्मचारी का नाम बहुत होता है। शादी की तो हॉफ पार्टनर हो गये।"

सा.बाबा 7.6.06 रिवा.

श्रीमत और विभिन्न त्योहार, उनका रहस्य एवं उनका मनाना

श्रीमत और रीति-रस्म, उत्सव

बाबा ने दुनियावी रीति-रस्मों और उनके ब्राह्मण जीवन के प्रभाव के विषय में भी श्रीमत दी है। जैसे जन्मदिन मनाना, दीपावली मनाना, रक्षाबन्धन मनाना, होली, शिवरात्रि आदि मनाना।

भारत में और दुनियां में विभिन्न त्योहार मनाये जाते हैं और उनकी भिन्न-भिन्न रीति-रस्में हैं, जिसके अनुसार दुनिया वाले मनाते हैं परन्तु बाबा ने हमको श्रीमत दी है कि कैसे

तुमको कोई त्यौहार मनाना है, जिसके अनुसार दुनिया वालों को त्यौहार का पता भी पड़े और हमारे ज्ञान-मार्ग के नियम-संयम भी भंग न हों। जैसे बाबा ने रक्षा-बन्धन के लिए श्रीमत दी है कि तुम कोई से राखी नहीं बंधवा सकते क्योंकि तुमने शिवबाबा से राखी बंधवाई हुई, फिर और किससे क्या राखी बंधवायेंगे। लौकिक बहनों आदि से राखी बंधवाते तो विचारणीय है कि वे पतित और हम पावन बनने वाले तो उनसे राखी बंधवाने का क्या अर्थ और हमारे ज्ञान-मार्ग का क्या महत्व है। ऐसे ही दीपावली जैसे दुनिया वाले मनाते, वैसे ही हमने भी मनाई, पटाखे आदि चलाये तो हमारे मनाने और दुनिया वालों के मनाने में क्या अन्तर रहा, उसका महत्व क्या रहा।

बाबा ने कहा है - बच्चे तुमको दुनियावी रीति से त्यौहार नहीं मनाने हैं। तुम भी ऐसे ही मनाओ, जैसे दुनिया वाले मनाते हैं तो दुनिया वालों और तुम्हारे में क्या फर्क रहा।

“कोई भी ब्राह्मण सन्यासी को कभी राखी नहीं बांधेंगे। ... तुम बच्चे भी कोई से राखी नहीं बंधवा सकते हो।... अन्त तक इस काम विकार पर जीत रहे तो पवित्र जगत का मालिक बनेंगे।” सा.बाबा 28.9.05 रिवा.

“दीपमाला भी आर्टिफिशियल मनाते हैं। ज्ञान का तीसरा नेत्र खुलना चाहिए तो घर-घर में सोझरा हो। यह सब बाहर का प्रकाश है। तुम अपनी ज्योति जगाने के लिए शान्त में बैठते हो। ... तुमको कोई इस दीपमाला आदि की खुशी नहीं है। तुमको तो खुशी है, हम बेहद के बाप के बने हैं, उनसे वर्सा पाते हैं। ... तुम बेहद के बाप के बने हो तो तुमको कापारी खुशी होनी चाहिए।” सा.बाबा 3.11.05 रिवा.

“वास्तव में सच्ची-सच्ची दीवाली याद की यात्रा ही है, जिससे आत्मा की ज्योति 21 जन्मों के लिए जग जाती है। बहुत कमाई होती है। तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए क्योंकि अभी तुम्हारा नया खाता खुरू होता है। 21 जन्मों के लिए खाता जमा करना है।”

सा.बाबा 1.11.05 रिवा.

“साक्षी होकर देखो तो बहुत मजा आयेगा। ...उत्साह की लहर फैलाने के लिए उत्सव बनाये तो अच्छे हैं ना। ... उत्साह की लहर फैल जाती है।” अ. बापदादा 7.3.86

“इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आकर पवित्र बनने की प्रतिज्ञा कराते हैं। ... रक्षाबन्धन का भी भारत में ही रिवाज है। ... बाकी राखी आदि बांधने की दरकार नहीं है। .. तुम्हारा भी यह जन्म हीरे जैसा है, फिर गोल्डन एज में आते हो।” सा.बाबा 19.8.05 रिवा.

“उत्सव का अर्थ ही है - सदा सर्व उत्साह-उमंग में रहें। ... इसलिए बापदादा इस श्रेष्ठ

संगमयुग को उत्सव का युग कहते हैं। संगम का हर दिन आपके लिए उत्साह सम्पन्न है। ... कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिए।" अ.बापदादा 26.2.95

श्रीमत और अन्य प्राणियों के प्रति व्यवहार

बाबा की श्रीमत है - किसी भी आत्मा को चाहे वह पशु-योनि की आत्मा हो या कीट-पतंगे की आत्मा हो या मनुष्यात्मा हो, किसको भी दुख नहीं दो। किसको भी दुख देंगे तो तुमको दुखी अवश्य होना पड़ेगा। बाबा सांप आदि को भी मारने के लिए मना करते थे।

श्रीमत और विदेशी

विदेशियों को बाबा कहते हैं - सदा अपने को डबल विदेशी समझो। एक तो परमधाम से इस स्थूल देश में आये हैं और दूसरे देशों से इस भारत भूमि में परमात्मा से मिलने आये हैं। बाबा भी विदेशी है क्योंकि वह भी परमधाम से यहाँ आता है। भारत वालों को भी बाबा की श्रीमत है कि विदेशियों के साथ ऐसा व्यवहार करो, जो उनको अपना देश भूल जाये और वे भी अपने को भारतवासी समझें क्योंकि वे भी ओरिजनल में भारतवासी ही हैं, सेवार्थ विदेशों में गये हैं। वास्तविकता भी यही है क्योंकि किसी अन्य धर्म वाले को हमारे इस ज्ञान में और इस ब्राह्मण संस्कृति में रुचि नहीं आयेगी।

श्रीमत और भय-चिन्ता / श्रीमत और निर्भय एवं निश्चिन्त स्थिति

भय और चिन्ता आत्मा के बड़े शत्रु हैं। शुभ के वियोग और अशुभ के संयोग की आशंका मनुष्य को भयभीत करती है, जो आत्मा के व्यर्थ चिन्तन का मूल कारण है, जिस व्यर्थ चिन्तन से आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है और आत्मा अनेकानेक विकर्मों में प्रवृत्त होकर दुखी होती है। बाबा ने इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है और कर्मों की गहन गति का भी ज्ञान दिया है तथा इस भय और चिन्ता से मुक्त होकर निश्चिन्त, सुखमय जीवन जीने के लिए श्रीमत दी है, वह ज्ञान और श्रीमत हमारे जीवन में प्रैक्टिकल धारणा में रहे तो आत्मा इससे उत्पन्न होने वाले दुख से सहज ही मुक्त हो सकती है।

बाबा ने कहा है - भयभीत और व्यर्थ चिन्तन से कुछ भी होने वाला नहीं है और ही नुकसान होने वाला है। तुम विश्व-नाटक और कर्म की गहन गति की यथार्थता को जान निश्चिन्त और निर्भय होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर सर्वशक्तिवान परमात्मा को याद करो तो कभी अशुभ जीवन में होगा ही नहीं और पूर्व कर्मों के फलस्वरूप कुछ आता भी है तो

वह भी शूली से कांटा हो जायेगा।

भय और चिन्ता आत्मा के अपने ही विकर्मों के फलस्वरूप होती है, जो आत्मा ईश्वरीय ज्ञान को समझकर परमात्मा की श्रीमत अनुसार कर्म करती हैं, वे सदैव निर्भय और निश्चिनत रहते हैं। अपने किन्हीं पूर्व संचित कर्मों के फलस्वरूप भय और चिन्ता होती भी है तो वह सत्य ज्ञान और परमात्मा की मदद से समाप्त हो जाती है, शूली से कांटा हो जाती है। जो परमात्मा के साथ सच्चे और आज्ञाकारी रहते हैं, उनको कब भय और चिन्ता हो नहीं सकती। भय और चिन्ता का मूल है अज्ञानता।

"जितना-जितना गहराई में जायेंगे, उतना ही घबराहट गायब हो जायेगी। ... सागर के तले में, गहराई में क्या होता है ? बिल्कुल शान्त और शान्त के साथ प्राप्ति भी होती है।"

अ.बापदादा 3.10.69

"वैभव वा व्यक्ति चिन्ता को मिटाने वाले नहीं चिन्ता को उत्पन्न कराने के निमित्त बन जाते हैं।... शुभ-चिन्तक आत्मायें औरों के भी व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन को समाप्त करने वाले हैं।" अ.बापदादा 10.11.87

"सतयुग में देवी-देवताओं को यह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं था। अगर उनको ये ज्ञान हो कि हम सीढ़ी उतरते रसातल में जायेंगे तो बादशाही का सुख भी न रहे। चिन्ता लग जाये। अब तुमको चिन्ता लगी हुई है कि हम सतोप्रधान थे, फिर तमोप्रधान से अब कैसे सतोप्रधान बनें।" सा.बाबा 17.7.71 रिवा.

"ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके। ... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है। ... चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है। ... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।" अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी I

"याद में ही माया बहुत विघ्न डालती है। ... भावी को कोई भी टाल नहीं सकते। सदा हुल्लास में रहना चाहिए। ... बाप को याद करते प्रेम में आंसू आ जाने चाहिए।"

सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

"अभी तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिल रही है। ... आत्मा को कोई भय नहीं रहता है। बाप कहते हैं निर्भय बनो। तुमको कोई भय नहीं है। तुम अपने घर बैठे भी बाप की श्रीमत लेते रहते हो। ... इसको कहा जाता है ईश्वर के साथ बच्चों का मेला।" सा.बाबा 6.12.05 रिवा.

"जिन बच्चों को निश्चय हो जाता है तो वे निश्चय से समझाते भी हैं।... जब पूरे देही-अभिमानी बनेंगे, तब निडर होंगे। ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति।" सा.बाबा 23.12.05 रिवा.

"बाप ने "नथिंग न्यू" का पाठ भी पढ़ाया हुआ है। इसलिए वर्तमान समय के प्रमाण किसी समस्या में घबराने में समय नहीं गंवाना है। ... कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन 9नथिंग न्यु" की स्मृति से समर्थ बन जायेंगे।" अ.बापदादा 18.1.88

"इसमें बड़ी बहादुरी चाहिए। सिवाए एक बाप के और कोई की परवाह नहीं।... जिनकी तकदीर में नहीं, समझें भी कैसे। ... बाबा के सामने कितने हंगामें हुए, बाबा को कभी रंज हुआ देखा। नथिंग न्यू। ... डरने से इतना ऊंच पद नहीं पा सकेंगे।"

सा.बाबा 16.02.06 रिवा.

"यह विनाश भी फिर से होना है जरूर। बहुत पॉवरफुल बॉम्बस बनाते रहते हैं। यह विनाश भी शुभ कार्य के लिए है। तुम बच्चों को डरने की कोई दरकार नहीं है। यह है कल्याणकारी लड़ाई। ... अभी यह सारी पुरानी दुनिया खत्म होनी है। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए।" सा.बाबा 5.01.06 रिवा.

"आपको सदा काल की प्राप्ति है, तो चेहरा सदा खुशी में दिखाई दे, उदास न हो। ... चिन्ता से कभी भी कमाई में सफल नहीं होंगे, चिन्ता छोड़कर कर्मयोगी बनकर काम करो, तो जहाँ योग है वहाँ कार्य में कुशलता होगी और सफलता होगी। अगर चिन्ता से कमाया हुआ पैसा आयेगा तो भी चिन्ता ही पैदा करेगा क्योंकि जैसा बीज होगा, वैसा ही फल निकलेगा।"

अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 2

"कोई मर गया तो भी साक्षी होकर देखा जाता है। कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था। अपनी अवस्था को पक्का रखना चाहिए। ... कोई पर ग्रहचारी बैठती है तो राहू की दशा बैठ जाती है, फिर ट्रेटर बन पड़ते हैं तो बड़ा नुकसान करते हैं। इन बातों में भी कभी अफसोस नहीं करना चाहिए।" सा.बाबा 31.5.06 रिवा.

"इस बाबा के सामने कितने हंगामें हुए। बाबा को कभी रंज हुआ देखा। ... नथिंग न्यु। यह तो कल्प पहले मुआफिक होता है, इसमें डर की बात क्या है।... डरने से इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।" सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

श्रीमत और विघ्न और विघ्न-विनाशक स्थिति

श्रीमत और निर्विघ्न जीवन

जैसे पढ़ाई में परीक्षा आवश्यक है। परीक्षा ही पढ़ाई में आगे जाने का साधन है। ऐसे ही इस ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वाभाविक हैं अर्थात् विघ्न अवश्य सम्भावी हैं क्योंकि

अनेक जन्मों के हिसाब-किताब हैं, हम युद्ध के मैदान में हैं और हमको माया पर जीत पानी है। माया न आये अर्थात् विघ्न न आयें, ये हो नहीं सकता। इसलिए विघ्नों से घबराना नहीं है लेकिन उनको जीतने का संकल्प और साहस रखकर अभीष्ट पुरुषार्थ करना है। बाबा ने कहा है तुम योद्धे हो, योद्धों को बुद्धि में सदा युद्ध और विजय ही रहती है अर्थात् युद्ध करना है और विजय पानी है। और कोई बात उनकी बुद्धि में होती ही नहीं।

हिम्मतवान को बाप की मदद अवश्य मिलती है और वह निश्चित ही विघ्नों पर जीत पाने में सफल होता है। ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वभाविक है क्योंकि विघ्न ही आत्मा को अनुभवी बनाते हैं और आत्मा को अन्तिम परीक्षा में पास होने की शक्ति प्रदान करते हैं। विघ्नों पर कैसे जीत पायें, उसका विधि-विधान भी बाबा ने बताया है और उन पर जीत पाने के लिए श्रीमत भी दी है।

बाबा ने कहा है विघ्न तो आगे जाने के साधन हैं, इसलिए तुमको विघ्नों को विघ्न न समझ आगे बढ़ने का साधन समझना है, परीक्षा का पेपर समझ, उनको पार करना है।। विघ्न ही नष्टोमोहा बनाते हैं, परमात्मा से प्रीतबुद्धि बनने की प्रेरणा देते हैं। विघ्न आत्मा को अनुभवी बनाते हैं और जब स्वयं अनुभवी होंगे तब ही औरों को भी विघ्नजीत बनने का रास्ता बता सकेंगे।

जीवन में विघ्न आत्मा को दुखी बना देते हैं। हमारा जीवन सदा विघ्नों से मुक्त, निर्विघ्न कैसे बनें, इसका राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है, जिसको धारण कर हम जीवन को निर्विघ्न बनाकर परम सुख अनुभव कर सकते हैं। इस ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वभाविक है क्योंकि ये तमोप्रधान दुनिया है, अभी हमको सारे कल्प का हिसाब-किताब चुक्तू करना होता है। अभी हम माया का पक्ष छोड़कर प्रभु के पक्ष में आते हैं तो माया विघ्न जरूर लायेगी परन्तु इन विघ्नों को सहज कैसे पार करें, उसके लिए बाबा विघ्न आने का कारण भी बताया है और उन विघ्नों को पार करने के लिए श्रीमत भी दी है।

"विघ्न तो आयेंगे, उनको खत्म करने की युक्ति है सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है। ... इसमें घबराना नहीं है, उसकी गहराई में जाकर पास करना है।" अ.बापदादा 24.1.70

"प्रकृति पहले से ही सावधानी जरूर देती है। अगर नॉलेजफुल हो तो प्रकृति के विघ्नों से बच सकते हो। ... नॉलेज न होने के कारण पॉवरफुल नहीं और पॉवरफुल न होने के कारण जो विजय की प्राप्ति होनी चाहिए, वह नहीं होती है।" अ.बापदादा 27.7.71

"जितना-जितना अपनी स्मृति की समर्थी में आते जायेंगे अर्थात् आत्मा रूपी नेत्र को पॉवरफुल

बनाते जायेंगे, क्लियर बनाते जायेंगे, उतना-उतना कोई भी विघ्न आने वाला होगा तो पहले से ही यह महसूसता आयेगी कि आज कोई पेपर होने वाला है।... होशियार होने के कारण विघ्नों में सफलता पा लेंगे।" अ.बापदादा 27.7.71

"यह पहला पाठ नेचुरल रूप में स्मृति स्वरूप में रहे। देह को देखते भी आत्मा को देखें। ... इस पहली स्मृति की मर्यादा स्वयं को सदा निर्विघ्न बनाती है और औरों को भी इस श्रेष्ठ स्मृति के समर्थपन के वायब्रेशन फैलाने के निमित्त बन जाते हैं, जिससे और भी निविघ्न बन जाते हैं।" अ.बापदादा

"जो अव्यक्त वातावरण व रुहानी अनुभव पहले किये, क्या वही रुहानी स्थिति अभी है ? ... अभी ऐसा ही अव्यक्त वातावरण बनाना। एक तरफ वरदान दूसरी तरफ विघ्न। दोनों का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध है। सिर्फ अपने प्रति विघ्न-विनाशक नहीं बनना है लेकिन अपने ब्राह्मण कुल की सर्व आत्माओं के प्रति विघ्न-विनाश करने में सहयोगी बनना है।"

अ.बापदादा 19.4.73

"वैसे भी कोई भी बात, कोई दृश्य, कोई भी चीज परिवर्तन तो होनी ही है। यह ड्रामा ही परिवर्तनशील है। ... इस प्रकार हर बात परिवर्तित होनी है लेकिन जिस समय आपके सामने वह बात विघ्न रुप बन जाती है उस समय अपनी शक्ति के आधार से एक सेकेण्ड में परिवर्तित कर दिया तो उस पुरुषार्थ करने का फल आपको प्राप्त हो जायेगा।"

अ.बापदादा 24.12.72

"अगर परखने की शक्ति तीव्र है तो भिन्न-भिन्न प्रकार के आये हुए विघ्न, जो लगन में विघ्न रूप बनते हैं, उन विघ्नों को पहले से ही जानकर, उन द्वारा वार होने से पहले ही उन्हें समाप्त कर देते हैं। इस कारण व्यर्थ समय जाने के बदले समर्थ में जमा हो जाता है।"

अ.बापदादा 29.1.75

"अगर परखने की शक्ति तीव्र है तो भिन्न-भिन्न प्रकार के आये हुए विघ्न, जो लगन में विघ्न रूप बनते हैं, उन विघ्नों को पहले से ही जानकर, उन द्वारा वार होने से पहले ही उन्हें समाप्त कर देते हैं। इस कारण व्यर्थ समय जाने के बदले समर्थ में जमा हो जाता है।"

अ.बापदादा 29.1.75

"बाप कहते हैं - पवित्र बनो, इसमें कोई विघ्न डालता है तो परवाह नहीं करनी चाहिए। ... अपने आपको अच्छी रीति सम्भालना है।... महावीर बनना है और औरों को भी महावीर बनाने का पुरुषार्थ करना है।" सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

"अभी बुद्धि में सारा ज्ञान है। कैसे यह सब ड्रामा के एक्टर्स हैं, जो पार्ट बजाते रहते हैं। ...

ड्रामा में जो कुछ हुआ, विघ्न आदि पड़े, फिर भी पड़ेंगे।... यह सब बना-बनाया खेल है। यह ड्रामा का चक्र रिपीट होता है।" सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

"तपस्या वर्ष अर्थात् तपस्या के वायब्रेशन्स विश्व में और तीव्र गति से फैलाओ। ... विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूँध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं। ... फुटबाल के खेल में बाल आती है तब तो ठोकर लगाते हो। बाल ही न आये तो ठोकर कैसे लगायेंगे।" अ.बापदादा 26.10.91

"सदा स्मृति में रखो कि विघ्न का काम है आना और हमारा काम है विघ्न-विनाशक बनना। ... सदा ड्रामा के ज्ञान की स्मृति से हर विघ्न को "नथिंग न्यू" समझना। ... अगर ड्रामा की प्वाइन्ट बुद्धि में क्लीयर है कि हू-ब-हू रिपीट होता है ... ड्रामा बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात् रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल-अडोल रहता है।"

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 4

"सदैव यह स्मृति में रखो कि हमारा टाइटिल ही है - "विघ्न-विनाशक"... सदा अपने मास्टर सर्वशक्तिमान स्वरूप की स्मृति में रहो।... पाण्डव भगवान की मत पर चले अर्थात् फॉलो किया तो विजय हुई।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 4

"संस्कार से टक्कर नहीं खाना है लेकिन संस्कार मिलाना है। यदि कोई दूसरा गड़बड़ भी करे तो भी आप मिलाओ, आप गड़बड़ नहीं करो। और ही उसको शान्ति का सहयोग दो। समझा - विघ्न-विनाशक आत्मायें हो।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

"सदा काल के लिए विघ्न समाप्त। अगर संस्कार संकल्प में इमर्ज भी हो जाये तो वहाँ ही खत्म कर दो। कर्म में, बोल में नहीं आये।" अ.बापदादा 18.1.06

"विघ्न-विनाशक अर्थात् सारे विश्व के विघ्न-विनाशक।... विघ्न-विनाशक वही बन सकता है, जो सदा सर्व शक्तियों से सम्पन्न होगा। ... सदा स्मृति में रखो कि बाप के सदा साथी हैं और विश्व के विघ्न-विनाशक हैं।" अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

"निर्विघ्न रहना और निर्विघ्न बनाना, यह यथार्थ योग और यथार्थ सेवा की निशानी है।... यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ ... फीलिंग आना माना विघ्न।" अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 1

"विघ्न-विनाशक टाइटिल है तो विघ्न आयेंगे तब तो विनाश करेंगे। अगर कोई विजयी कहे कि दुश्मन आये ही नहीं लेकिन मैं विजयी हूँ तो कोई मानेगा? नहीं, विघ्न तो आयेंगे चाहे प्रकृति के, चाहे आत्माओं के, चाहे अनेक प्रकार की परिस्थितियों के लेकिन आप ऐसे पॉवरफुल डायमण्ड हो, जो आप पर कोई दाग़ रूपी प्रभाव न पड़े।"

अ.बापदादा 31.12.95

"विघ्न-विनाशक नाम क्यों रखा है। ... विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विघ्न-विनाशक बनना। इसकी परवाह नहीं करो। यह खेल है। खेल में खेल है और खेल देखने में तो मज़ा आता है ना।" अ.बापदादा 23.2.97

श्रीमत और बैज / श्रीमत और हमारा कोट ऑफ आर्म्स

बाबा के दिल में इस बैज का बहुत महत्व था भी और है भी, इसलिए बाबा ने सदा बैज लगाकर रखने की श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - मिलीटरी वालों को सदा बैज लगा हुआ होता है, तुम भी रुहानी मिलीटरी हो। तुमको भी सदा बैज लगा रहना चाहिए। बैज लगाने में तुमको लज्जा नहीं आनी चाहिए। यह बैज तुम्हारी सेफ्टी का साधन है और सेवा का भी साधन है। इस बैज पर तुम किसको सहज ही समझा सकते हो। बाबा ने कहा है - यदि बैज नहीं लगाते तो यह भी देहाभिमान है।

बाबा ने कहा है - जैसे गवर्मेन्ट का "कोट ऑफ आर्म्स" होता है, वैसे ही यह त्रिमूर्ति पाण्डव गवर्मेन्ट का कोट ऑफ आर्म्स है। तुम रुहानी मिलिटरी हो और यह रुहानी पाण्डव गवर्मेन्ट है। यह स्मृति सदा तुमको रहनी चाहिए।

"यह बैज श्रीमत से ही तो बने हैं। ... हर एक ब्राह्मण के पास यह बैज होना चाहिए। कोई भी मिले तो इस पर समझाना है। ... बाप की याद के बल से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे, फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी।" सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

"बाबा ने कितना समझाया है कि बैज पर सर्विस करनी है परन्तु बैज लगाते नहीं हैं। लज्जा आती है। ... आफिस आदि में जाते हो तो यह बैज जरूर लगा रहना चाहिए। ... शायद लज्जा आती है जो बैज पहनकर सर्विस नहीं करते हैं। एक तो बैज, सीढ़ी का चित्र, त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ का चित्र साथ में हो।" सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

"क्लास में जाते हो तो भी बैज लगा रहे। मिलिटरी वालों को बिल्ला लगा रहता है। उनको कभी लज्जा आती है क्या ? तुम भी रुहानी मिलिटरी हो ना।... बैज लगा रहेगा तो शिवबाबा की याद भी रहेगी।" सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

"बैज सदा लगा रहे, लिटरेचर भी साथ हो। कोई भी अच्छा आदमी मिले तो देना चाहिए। ... बोलो - गरीबों को मुफ्त दिया जाता है, बाकी जो जितना देवे, हम और छपायेंगे। रॉयलिटी होनी चाहिए। तुम्हारी रस्म-रिवाज दुनिया से बिल्कुल न्यारी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 4.6.05 रिवा.

"ऊंच से ऊंच भगवान की है श्रीमत। ... बाप कहते हैं - मन्मनाभव, देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो तो तुम कृष्ण की डायनेस्टी में आ जायेंगे। ... अभी तुम बच्चों को ज्ञान है, तुमको बैज तो जरूर लगा रहना चाहिए। इसमें लज्जा की बात नहीं है, इससे बाप की याद रहेगी।" सा.बाबा 1.9.05 रिवा.

"हमको बाप से वर्सा मिलना है। सेवा करेंगे तब तो मिलेगा। इसलिए बैज सदा पड़ा रहे तो याद रहेगा - हमको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है।" सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"कहाँ भी जाते हो तो यह बैज पड़ा रहे। बोलो - वास्तव में यह है पाण्डव गवर्मेन्ट का कोट ऑफ आर्म्स। समझाने की बड़ी रॉयलिटी चाहिए। ... तुम रुहानी मिलिटरी हो। मिलीटरी को सदा निशानी रहती है। यह रहने से तुमको नशा रहेगा कि हम यह बन रहे हैं।"

सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

"हमको बाप से वर्सा मिलना है। सेवा करेंगे तब तो मिलेगा। इसलिए बैज सदा पड़ा रहे तो याद रहेगा - हमको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है।" सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

"बैज जरूर लगा रहे। सब समझ जायेंगे कि यह रुहानी मिलेट्री है।... कई समझते हैं - यह वही महाभारत लड़ाई है। गीता का भगवान भी जरूर होगा।"

सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

"सफेद साड़ी पहनी हुई हो, बैज लगा हो तो इससे स्वत: सेवा होती रहेगी। ... तुमको सर्विस का शौक रहना चाहिए। सबको यह पैगाम देने की युक्तियां रचनी चाहिए।"

सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

"तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। ओहो ! शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। यही बैठ चिन्तन करो। भगवान हमको पढ़ाते हैं, वाह मेरी तकदीर वाह। ऐसे-ऐसे विचार करते मस्ताना हो जाना चाहिए। ... बाबा तुमको राय देते हैं - चार्ट लिखो और एकान्त में बैठ ऐसे अपने साथ बातें करो। यह बैज तो छाती से लगा दो। भगवान की श्रीमत पर हम यह बन रहे हैं।"

सा.बाबा 29.11.05 रिवा.

"इन मैडल्स में कितनी नॉलेज है। इनमें सारा ज्ञान है। इन पर समझाना बहुत सहज है ... छोटी-छोटी बच्चियां भी यह ज्ञान सुना सकती हैं। बन्दर सेना भी मशहूर है। सीतायें जो रावण की जेल में फंसी हुई हैं, उनको छुड़ाना है।" सा.बाबा 27.4.06 रिवा.

श्रीमत और चित्र एवं चित्रों की लिखत आदि

बाबा ने इस ब्राह्मण जीवन में ज्ञान के चित्रों का महत्व भी बताया है और चित्रों पर क्या-क्या लिखत हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - हर एक चित्र पर लिखा हो - त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच।

साथ ही बाबा ने यह भी श्रीमत दी है कि तुमको किसी भी चित्र को रखकर याद नहीं करना है। तुमको याद विचित्र को करना है, अपने चित्र को भी भूलना है।

इस प्रकार देखें तो देखते हैं बाबा ने चित्रों के विषय में दो प्रकार से श्रीमत दी अर्थात् किन चित्रों को रखना है और किन चित्रों को रखने की दरकार नहीं है। बाबा ने ये भी श्रीमत दी है कि शिव के आगे त्रिमूर्ति शब्द जरूर लिखो और संगमयुग के आगे पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखना चाहिए।

"शिव के आगे त्रिमूर्ति जरूर लिखना चाहिए। यह भी लिखना है कि डीटी सावरन्टी आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, सो भी अभी कल्प के संगम युगे। ... ब्रह्मा के आगे प्रजापिता जरूर लिखना है। ... दिन प्रतिदिन लिखत चेन्ज होती रहेगी।" सा.बाबा 14.9.05 रिवा.

"अभी 100 परसेन्ट पवित्रता, सुख-शान्ति, सम्पत्ति की स्थापना हो रही है।... त्रिमूर्ति शिवबाबा की श्रीमत पर। ऐसे बडे-बड़े अक्षरों में बड़े-बड़े चित्र हों।" सा.बाबा 6.9.05 रिवा.

"तुम लिख सकते हो कि अभी पुरानी दुनिया बदल रही है, फिर यह सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राज्य होगा। ... याद से विकर्म विनाश होते हैं और पढ़ाई से स्टेट्स मिलता है।"

सा.बाबा 5.10.05 रिवा.

"बाप ने कहा है - यह भी लिख दो वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, आकर समझो।... विचार करो - कहाँ इतनी सारी दुनिया, कहाँ सिर्फ एक ही स्वर्ग होगा।"

सा.बाबा 27.9.05 रिवा.

"बाप ने यह भी समझाया है कि संगम के पहले पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखो। शिव के पहले त्रिमूर्ति अक्षर भी जरूर लिखना है। ब्रह्मा के पहले प्रजापिता अक्षर लिखना जरूरी है।"

सा.बाबा 2.11.05 रिवा.

"कहाँ भी प्रदर्शनी, म्युजियम आदि खोलते हो तो ऊपर में त्रिमूर्ति शिव जरूर होना चाहिए। ... बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दो - अब आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। प्रजापिता ब्रह्मा भी बैठा है, हम प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियां श्रीमत पर यह कार्य कर रहे हैं।" सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

"जब कहाँ भी तुम समझाते हो तो तो बोलो - यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, बाप आया हुआ है। ... बाबा ने कहा है - प्रदर्शनी आदि में यह जरूर लिखना है कि अब यह पुरुषोत्तम संगमयुग

है। यह मुख्य बात है। ... संगमयुग को नवयुग नहीं कहेंगे। संगमयुग को संगमयुग ही कहा जाता है।" सा.बाबा 25.11.05 रिवा.

"तुम्हारे बोर्ड पर भी प्रजापिता (प्रजापिता ब्रह्मा) अक्षर बहुत जरूरी है। सिर्फ ब्रह्मा लिखने से इतना जोरदार नहीं होता है। बोर्ड में भी करेक्ट अक्षर लिखना पड़े। ... ऐसे-ऐसे सीधे अक्षर लिखने चाहिए जो मनुष्यों की दृष्टि पड़े।" सा.बाबा 17.12.05 रिवा.

"कोई फिर अपनी मत पर चलते रहते हैं। बाप कितना दूर से आते हैं तुम बच्चों को डायरेक्शन देने, समझाने के लिए।... सारा दिन यह चिन्तन चलना चाहिए - क्या लिखें, जो मनुष्य सहज समझ जायें।... किसको भी तुम ऐसा समझाओ, जो प्रश्न पूछने की दरकार ही न पड़े।" सा.बाबा 17.12.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - त्रिमूर्ति का चित्र साथ में रख दो तो घड़ी-घड़ी याद आयेगी।... कमरे में त्रिमूर्ति का चित्र लगा होगा तो घड़ी-घड़ी नज़र जायेगी ... ये चित्र मदद करेंगे। ... यह त्रिमूर्ति का चित्र ही मुख्य है।" सा.बाबा 12.4.06 रिवा.

"हम सो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। वास्तव में इन चित्रों की भी दरकार नहीं है। जो कच्चे हैं, घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, इसलिए चित्र रखे जाते हैं। ... तुमको कोई चित्र लगाने की दरकार नहीं है। तुमको तो अपने चित्र को भी भूलना है। देह सहित सब सम्बन्ध भूल जाने हैं।" सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

"अभी हम श्रीमत पर श्रेष्ठाचारी, सतयुगी स्वराज्य पा रहे हैं। ... यहाँ लाइट का ताज किसको दे नहीं सकते। इन चित्रों में जहाँ तुम तपस्या में बैठे हो, वहाँ लाइट का ताज नहीं देना चाहिए। तुमको डबलसिरताज भविष्य में बनना है।" (आत्मा और शरीर दोनों पावन हों, तब ही लाइट का ताज दे सकते हैं) सा.बाबा 12.9.06 रिवा.

"बाप दिन-प्रतिदिन गुह्य बातें सुनाते रहते हैं तो फिर पुराने चित्रों को बदल कर दूसरा बनाना पड़े। यह तो अन्त तक होता ही रहेगा।... ये सब बातें विचार-सागर मन्थन कर बुद्धि में धारण करना चाहिए। ... देहाभिमान बहुत है, इसलिए धारणा नहीं होती है।" सा.बाबा 30.5.06 रिवा.

"भक्ति मार्ग में भक्त लोग देवताओं के चित्र साथ में रखते हैं। अभी तुमको यह त्रिमूर्ति का चित्र पॉकेट में रखना चाहिए। याद रहेगा की शिवबाबा द्वारा हम यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं।" सा.बाबा 13.5.06 रिवा.

"यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखना है ... अभी सारे ड्रामा का राज़

बुद्धि में है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, 84 का चक्र कैसे फिरता है।"

सा.बाबा 10.5.06 रिवा.

"ड्रामानुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइन्ट्स गुह्य होती जाती हैं तो चित्रों में भी चेन्ज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेन्ज होती है। आगे यह थोड़ेही समझते थे कि शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि पहले ऐसा क्यों नहीं बताया।... बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते रहेंगे, करेक्शन होती रहेगी।" सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

श्रीमत और विभिन्न धर्म एवं धर्म-प्रचारक

श्रीमत और विभिन्न धर्म-शास्त्र

सभी धर्म वाले परमात्मा के बच्चे हैं, और हर धर्म वाले का इस विश्व-नाटक में पार्ट है, इसलिए बाबा की श्रीमत है हर धर्म और धर्म के अनुयायी को मान-सम्मान दो, किसी का भी अपमान नहीं करो, किससे भी घृणा नहीं करो। वे भी आपके छोटे भाई हैं। बड़े भाइयों का कर्तव्य है छोटे भाइयों को प्यार करना।

"बोलो, बाप कहते हैं - देह के सब धर्म छोड़, मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यह पैगाम सब धर्म वालों के लिए है।" सा.बाबा 9.9.05 रिवा.

"शास्त्र वालों को भी बोलो - शास्त्र तो हम भी पढ़ते थे, फिर बाप ने ज्ञान दिया है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। भगवानुवाच - वेद-शास्त्र आदि पढ़ने, दान-पुण्य आदि करने से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं करते। मेरे द्वारा ही मेरे को प्राप्त कर सकते हो।" सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - अब मैं तुमको जो श्रीमत देता हूँ, वह राइट है या शास्त्रों की मत राइट है - जज करो। ... बच्चों को यह नशा रहना चाहिए कि हमारी यह सच्ची-सच्ची जादूगरी है मनुष्य से देवता बनाने की।... अभी तुम बच्चों को राइट और रांग को समझने का ज्ञान चक्षु मिला है।" सा.बाबा 27.11.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - अब जज करो शास्त्र राइट हैं या मैं राइट हूँ?... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, सारी नॉलेज देते हैं। यह और कोई समझा न सके।... परमात्मा रचता और उनकी रचना को सतयुग में भी कोई नहीं जानता। अगर वहाँ भी यह मालूम हो कि हमको फिर गिरना है तो राजाई की खुशी ही न रहे।" सा.बाबा 11.9.06 रिवा.

"तुम बच्चों को कोई से डिबेट नहीं करनी है। ... बाप खुद आकर अपना और अपनी रचना के आदि-मध्य-अन्त का परिचय देते हैं, फिर हम आपसे शास्त्रों आदि की बातें सुनें ही क्यों।

हम आपको रुहानी नॉलेज सुनाते हैं। सुनना हो तो सुनों। इसमें मूँझने की कोई बात ही नहीं।”

सा.बाबा 5.10.06 रिवा.

श्रीमत और हठयोग, तन्त्र-मन्त्र, रिद्धि-सिद्धि आदि

तान्त्रिकों आदि के पीछे भटकना भी व्यभिचारी स्थिति है, बाबा की अव्यभिचारी याद नहीं है। बाबा ने श्रीमत दी है - स्व-स्थिति में स्थित आत्मा के ऊपर किसी भी तन्त्र-मन्त्र, रिद्धि-सिद्धि का प्रभाव हो नहीं सकता। विचारणीय तथ्य है कि जिस आत्मा पर सर्वशक्तिवान परमात्मा की छत्रछाया हो, उसके ऊपर किसी अशुद्ध आत्मा की रिद्धि-सिद्धि, तन्त्र-मन्त्र, भूत-प्रेत का प्रभाव कैसे हो सकता है। इसलिए बाबा की श्रीमत है कि तुम अपने स्वमान में रहो और बाप को याद करते रहो, किसी रिद्धि-सिद्धि, तन्त्र-मन्त्र वालों के पीछे न जाओ, न उनसे प्रभावित हो। ये भी सर्वशक्तिवान बाप, टीचर, सत्गुरु की निन्दा कराना है।

“रिद्धि-सिद्धि वाले भी बहुत तंग करते हैं। अखबारों में भी पड़ता है, इनमें ईविल सोल है, बहुत दुख देते हैं। बाप कहते हैं - इन बातों से तुम्हारा कोई कनेक्शन नहीं। ... तुम मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे।” सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

श्रीमत और सद्‌गुरु

गायन है सद्गुरु का निन्दक ठौर न पाये अर्थात् हमारे किसी भी कर्म से बाप की, बाप के कार्य की निन्दा होती है, सेवा में विघ्न पड़ता है, तो हम सतयुगी दुनिया में श्रेष्ठ पद नहीं पा सकेंगे। जैसे कोई ज्ञान में आता है, छोड़ कर चला जाता है तो भी मनुष्य समझते शायद ज्ञान सत्य नहीं है। कोई क्रोध करता, रिश्वत लेता पकड़ा जाता, आदि आदि कोई भी कर्म करते, जिसको देखकर, सुनकर अन्य आत्माओं को दुख होता, वे ज्ञान मार्ग से बिचलित होते तो वह सद्गुरु की निन्दा है। बाबा ने ऐसा कोई भी कर्म करने से मना की है।

“कृष्ण की महिमा करने से कोई फायदा नहीं होता। तुमको अब चढ़ती कला में ले जाने के लिए सत्गुरु मिला है।... तुम्हारी बुद्धि में यह सारी नॉलेज रहनी चाहिए। कोई भी आये तो उसको समझा सकें।” सा.बाबा 18.12.05 रिवा.

श्रीमत और टी.वी., बाइसकोप, देखना-सुनना, पठन-पाठन आदि

बाबा ने कहा है बाइसकोप सबसे गन्दी चीज है। बाइसकोप देखने वालों में विकार

की आकर्षण अवश्य होगी। ब्रह्मा बाबा ने अपना भी अज्ञानकाल का अनुभव सुनाया है कि कैसे बाइसकोप बुद्धि को खराब करके अपने अभीष्ट लक्ष्य से भ्रमित कर देता है। टी.वी. के लिए भी बाबा कहते टी.वी, टी.बी. है। दोनों के लिए बाबा ने मना की है। अब ये हर एक के अपने पुरुषार्थ पर है, जो जितना श्रीमत का पालन करेगा, वह उतना माया के वार से बचेगा और इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव करेगा। मनुष्य जो देखता, उसका चिन्तन अवश्य चलता है, जिससे उतना समय बाप की याद भी नहीं रहती और जिसका चिन्तन होता है, उसका प्रभाव कर्मेन्द्रियों पर अवश्य होता है।

"सबसे गन्दी बीमारी है बाइस्कोप। अच्छे बच्चे भी बाइस्कोप में जाने से खराब हो जाते हैं। इसलिए ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को बाइस्कोप में जाना मना है। ... यह है बेहद का बाइस्कोप। बेहद के बाइस्कोप से ही फिर यह हद के झूठे बाइस्कोप निकले हैं।"

सा.बाबा 7.10.05 रिवा.

"फिल्मी कहानियों की किताबें, नॉविल्स आदि भी बहुत पढ़ते हैं। बाबा बच्चों को खबरदार करते हैं - कभी भी कोई नॉविल्स आदि नहीं पढ़ना है। ... कोई बी.के. भी नॉविल्स पढ़ते हैं। इसलिए बाबा सब बच्चों को कहते हैं - कभी भी किसको नॉवेल्स पढ़ता देखे तो झट उठाकर फाड़ दो। इसमें डरना नहीं है। तुम्हारा काम है एक-दो को सावधान करना।... फिल्मी कहानियां, नॉवेल्स पढ़ना-सुनना बेकायदे है।" सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

"कोई में कोई अवगुण है, बेकायदे चलन है तो झट रिपोर्ट करनी चाहिए।... ब्राह्मण इस समय सर्वेन्ट हैं ना, इसलिए देहाभिमान नहीं आना चाहिए।" सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

"समझकर उस खुशी से समझाना चाहिए। परन्तु यह उमंग उनको आयेगा, जो तकदीरवान होंगे। दुनिया के मनुष्य तो रत्नों को भी पत्थर समझकर फेंक देंगे। ... अभी तुम डायरेक्ट ज्ञान सागर से सुनते हो तो फिर और कुछ भी सुनने की दरकार ही नहीं है।"

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - बच्चे, तुम एक मेरे से ही सुनो और यही श्रीमत औरों को भी सुनाओ। फादर शोज़ सन, सन शोज़ फादर। ... अब तुमको पारलौकिक बाप को फॉलो कर ऊपर चढ़ना है।" सा.बाबा 15.9.06 रिवा.

श्रीमत और विनाश एवं विनाश की प्रक्रिया

परमात्मा का अवतरण होता ही है नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराना और आत्माओं को नई दुनिया के योग्य बनाना। बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चों

को नई दुनिया के योग्य बनने का पुरुषार्थ करना परन्तु वर्तमान समय की परिस्थितियों और कर्मभोग आदि से परेशान होकर विनाश जल्दी हो, इसका संकल्प नहीं करना है। इसके लिए बाबा कहते हैं - तुमको विनाश -लीला का इन्तजार नहीं करना है लेकिन उसके लिए इन्तजाम करना है। यदि आप चाहते हो कि विनाश जल्दी हो तो इसका मतलब आप चाहते हो कि बाबा जल्दी चला जाये। ड्रामा को भी समझते हुए यह स्मृति रखना चाहिए कि विनाश भी अपने समय पर ही होगा, हमारे कहने या सोचने से नहीं होगा।

निर्भय, निर्वैर, निर्मोही ... होगी तो न व्यक्ति का भय, न मृत्यु का भय होगा, आत्मा एक सेकेण्ड में अपने स्व-स्वरूप में स्थित हो, देह से न्यारी हो जायेगी। उसको न यहाँ से जाने की जल्दी होगी और न रहने की इच्छा होगी। वह सदा न्यारा और प्यारा होगा। इसलिए ऐसी स्थिति को धारण करो।

"बाबा ने कहा - मैं ऐसे शुरू नहीं करूँगा, मैंने कहा ना, जो कुछ होगा अचानक होगा। बाबा तो सिर्फ बताते हैं कि आने वाला समय बहुत भयानक होगा। ... उस समय हलचल नहीं चाहिए। बिल्कुल अचल, अडोल, एकरस अवस्था चाहिए क्योंकि उस समय दातापन की स्थिति चाहिए। दाता घबराता नहीं है लेकिन सबको दान देता है। ... आप अपनी स्थिति ऐसी अचल-अडोल बनाओ।" अ.बापदादा 22.9.05 सन्देश मोहिनी बहन

"तुम जानते हो अभी खूने नाहेक खेल होना है।... नेचुरल केलेमिटीज होंगी, सबका मौत होगा। इसको देखने की बड़ी हिम्मत चाहिए। डरपोक तो झट बेहोश हो जायेंगे। इसमें निडरपना बहुत चाहिए।" सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

"यह है खूने नाहेक खेल, नेचुरल केलेमिटीज भी होंगी। ... बहुत आफतें आयेंगी। तुम बच्चों को अभी ऐसी प्रैक्टिस करनी है, जो अन्त में एक शिवबाबा ही याद रहे। ... नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा।" सा.बाबा 13.4.05

"हाहाकार के बाद जयजयकार हो जायेगी। ... नेचुरल केलेमिटीज बहुत मदद करतीं हैं। ... ऐसी सीन को देखने के लिए हिम्मत चाहिए। मेहनत भी करना है और निर्भय भी बनना है। तुम बच्चों में अहंकार बिल्कुल नहीं होना चाहिए।" सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

"समय आपका इन्तजार कर रहा है और आपको इन्तजाम करना है, समय का इन्तजार नहीं करना है। सर्व को सन्देश देने का और समय को सम्पन्न बनाने का इन्तजाम करना है।"

अ.बापदादा 20.12.92

"पुरुषोत्तम संगम युग ... विनाश की बातें तो स्थापना के समय से चल रही हैं ... अभी भी पता नहीं विनाश कब हो ! ... बापदादा ऐसे बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर

जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं है ... समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी, आपको नहीं।" अ.बापदादा 15.4.92

"कब विनाश होगा ... बाप से पूछते हैं तारीख बता दो ... बापदादा बच्चों से प्रश्न पूछते हैं कि आप सब बाप समान बन गये हो ? ... ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक प्रैक्टिकल रूप में करके दिखाया। ... बापदादा आपसे प्रश्न पूछता है - आप सभी सन्तुष्ट हो कि विश्व कल्याण का कार्य पूरा हो गया है ? ... पहले तो 9 लाख तैयार करो। ... पहले जन्म वाली प्रजा भी तो अच्छे नम्बर वाली होगी ना।" अ.बापदादा 31.12.05

"बापदादा देख रहे हैं कि समय आपका इन्तजार कर रहा है। आप समय का इन्तजार करने वाले नहीं हो, आप इन्तजाम करने वाले हो। समय आपका इन्तजार कर रहा है। सतोप्रधान प्रकृति भी आपका आह्वान कर रही है। ... समय का आप इन्तजार नहीं करो कि कब विनाश होगा ... दो साल में होगा या दस साल में होगा।" अ.बापदादा 31.12.05

"ड्रामा प्लॉन अनुसार तुम जागते हो, तुमको फिर औरों को जगाना है। अब तक जिसने जैसा पुरुषार्थ किया है, उतना ही कल्प पहले भी किया था। ... ड्रामा में उन्होंका पार्ट ही है मूसल बनाना क्योंकि वे विनाश के निमित्त बने हुए हैं। इसमें प्रेरणा की कोई बात नहीं है। ड्रामानुसार विनाश तो होना ही है।" सा.बाबा 22.8.06 रिवा.

"पूछते - बाबा विनाश की डेट बता दो। ... अगली सीज़न में बाबा ने पूछा था कि कम से कम सतयुग आदि के 9 लाख बने हैं ? नहीं बनें हैं तो विनाश कैसे हो।... ज्योतिषियों बच्चों से पूछो। जो ज्योतिषी कर सकते हैं, वह बाप क्यों करेगा!... सतयुग की प्रजा भी रॉयल चाहिए।" अ.बापदादा 31.12.96

श्रीमत और प्राकृतिक आपदायें

कर्म और ड्रामा के विधि-विधान के अनुसार हर आत्मा अपने कर्म के फलस्वरूप ही सुखी-दुखी होती है परन्तु किसी आत्मा के दुख के समय कर्म और फल के विधि-विधान को समझते हुए भी उसके प्रति रहम और कल्याण की भावना रहनी ही चाहिए। उसका अपना कर्म और पार्ट है परन्तु हम सुखदाता परमात्मा के बच्चे हैं तो हमको अपना कर्तव्य भूलना नहीं चाहिए। इसलिए ही बाबा ने श्रीमत दी है कि ऐसे समय पर तुम अपना मास्टर सुखदाता का कर्तव्य अवश्य निभाओ अर्थात् उन आत्माओं को योग का दान दो। तुम्हारे योगबल से वे दुखी आत्मायें राहत महसूस करेंगे, उनमें उस आपदा के दुख को सहन करने का बल मिलेगा। तुम्हारे कर्म का फल तुमको अवश्य ही मिलेगा।

सौराष्ट्र के भूकम्प के समय की मुरली और उड़ीसा के तूफान के समय की मुरली से-
"किसी भी घटना का समाचार तो सब इन्ट्रेस्ट से सुनते हो ... अशान्ति के समय आप पूर्वज आत्माओं का और विशेष कार्य स्वत: ही हो जाता है। ... अपनी वृत्ति द्वारा, मन्सा-शक्ति द्वारा विशेष सेवा की ?... ऐसे समय पर सेकण्ड में अपनी सेवा पर अलर्ट हो जाना चाहिए।"

अ.बापदादा 10.12.92

"अभी भी विश्व में हलचल है और यह हलचल तो समय प्रति समय बढ़नी ही है। ऐसे समय आप आत्माओं का फर्ज है आत्माओं की विशेष शान्ति की, सहन-शक्ति की हिम्मत भरना, लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट देना।... श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा परिस्थितियों को पार करने की शक्ति अनुभव कराओ।" अ.बापदादा 10.12.92

श्रीमत और रुहानी सेना, पाण्डव सेना, सेलवेशन आर्मी

बाबा ने कहा है - तुम हो रुहानी सेना। सेना को कमाण्डर से जो आर्डर मिलता है, वह उसी समय और उसी तरह कार्य करने लगते हैं। तुमको भी बाप का जो आर्डर मिले, उसे उसी रूप में अमल करना चाहिए। सेना के योद्धाओं को युद्ध और विजय ही बुद्धि में रहता है, इसलिए तुम भी सदा अटेन्शन में रहो कि तुमको माया से युद्ध करनी है और विजय पानी है। बाबा ने कहा है - योद्धे कब भी आराम पसन्द नहीं होते, योद्धे कब अस्त्र-शस्त्रों के बिना नहीं रहते। तुमको कब आराम पसन्द नहीं बनना है और सदा ही ज्ञान-योग के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित रहना चाहिए।

बाबा कहते हैं - युद्ध के मैदान में किसी सैनिक को आर्डर मिले और कोई पालन न करे तो उसको शूट कर देते हैं परन्तु यहाँ कोई किसको शूट नहीं करता परन्तु हर एक अपने को आप ही शूट कर देते हैं अर्थात् गिर पड़ते हैं।

"बाप रास्ता बताते हैं - तुम इस माया की दुबन से कैसे निकल सकते हो। ... तुम हो रुहानी सेलवेशन आर्मी, तुम श्रीमत पर सबको रास्ता बताते हो।" सा.बाबा 14.10.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - बच्चों को दुख-सुख, मान-अपमान सब सहन करना है। नाजुकपना नहीं हो कि मैं फलाने स्थान पर नहीं रह सकती।... तुम भी सर्विस के लिए बांधे हुए हो।"

सा.बाबा 10.10.05 रिवा.

"तुम बाप के मददगार हो सबको पैगाम देने में।... बाप सर्विस के लिए बोले तो झट हाजिर

होना चाहिए।... बेहद के बाप का आर्डर मिलता है, जिसका राइट हेण्ड फिर धर्मराज है। उनकी श्रीमत पर न चलने से फिर गिर पड़ते हैं।" सा.बाबा 10.10.05 रिवा.

श्रीमत और नैया एवं खिवैया

परमात्मा को सभी आत्मायें पुकारती हैं - हे खिवैया आओ और मेरी नैया को पार लगाओ। बाबा आकर नैया और खिवैया का राज़ बताते हैं और नैया को कैसे पार करना है, उसके लिए भी श्रीमत देते हैं।

"गाते हैं - नैया मेरी पार लगाओ।... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना बेड़ा पार होगा। ... वास्तव में हर एक को अपने पुरुषार्थ से पार जाना है।" सा.बाबा 14.10.05 रिवा.

"बाप का हाथ तो सबको नहीं मिल सकता। बाप का हाथ तुमको मिलता है, तुम्हारा हाथ फिर औरों को मिलता है। ... तुम भी मास्टर खिवैया हो। तुम्हारा धन्धा ही है कि हर एक की नैया पार लगाने का रास्ता बतायें।" सा.बाबा 12.10.05 रिवा.

श्रीमत और ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य - फरिश्ता

श्रीमत और लक्ष्य एवं लक्षण

जैसा लक्ष्य होता है, वैसे ही लक्षण आते हैं। इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही है ब्राह्मण से फरिश्ता बनना और फरिश्ता से देवता बनना। जैसे ब्रह्मा बाबा ने अपने सम्पूर्ण लक्ष्य को सदा सामने रख पुरुषार्थ किया और सम्पूर्णता को प्राप्त किया। इसके लिए बाबा ने हमको अपने सम्पूर्ण स्वरूप को सामने रखकर पुरुषार्थ करने की श्रीमत दी है।

बाबा ने ब्रह्मा बाबा को आदर्श रूप में अपने सामने रखकर पुरुषार्थ करने की भी श्रीमत दी है। इसके लिए बाबा ने ये भी कहा है कि जो अभी तक सम्पूर्ण नहीं बनें हैं, उनको भी आदर्श रूप में सामने नहीं रखकर सकते हैं, इसलिए ब्रह्मा जो सम्पूर्ण स्वरूप को पाये हुए हैं, उनको ही सामने रखना है। भले सबके गुण-विशेषताओं को देखकर उन गुण-विशेषताओं को धारण करना है लेकिन उनको भी लक्ष्य नहीं बनाना है। लक्ष्य ब्रह्मा समान पुरुषार्थ करके शिवबाबा के समान निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनना है।

"सदा फरिश्ता स्वरूप का सम्पूर्ण लक्ष्य सामने रखो।... जैसे अपना स्थूल स्वरूप सदा याद रहता है, वैसे अपना फरिश्ता स्वरूप सदा ही स्पष्ट सामने हो।" अ.बापदादा 16.3.92

"बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनो। ... वह यहाँ-वहाँ कभी नहीं देखेगा। वह सदा मंजिल की ओर देखेगा। फॉलो किसको करना है ? ब्रह्मा बाप को क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 4

"चैक करो फरिश्तेपन की विशेषतायें जीवन में कितनी दिखाई देती हैं ? फरिश्ता अर्थात् जिसका पुराने संसार और पुराने संस्कार से कोई नाता नहीं।... फरिश्ता अर्थात् मन्सा-वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क में डबल लाइट। .. फरिश्ता अर्थात् जो सर्व का प्यारा और न्यारा हो। ... फरिश्ता अर्थात् हर एक अनुभव करे कि यह मेरा है।... फरिश्ता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में बेहद हो।" अ.बापदादा 21.10.05

"मैं आत्मा हूँ, आत्मा का संसार है बापदादा। मुझ आत्मा का संस्कार ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता - यह है मन की ड्रिल। तो क्या करेंगे, यह मन की ड्रिल करो। मैं आत्मा और मेरा बाबा।" अ.बापदादा 21.10.05

"अभी बापदादा मधुबन निवासियों से एक बात चाहते हैं ... ऐसे दिखाई दे जैसे फरिश्ते कर्मयोगी बनकर कर्म कर रहे हैं क्योंकि सभी की नज़र मधुबन निवासियों की तरफ जाती है। ... आप मधुबन में नहीं रहते हो लेकिन वर्ल्ड की स्टेज पर रहते हो।"

अ.बापदादा 4.9.05 समर्पित भाई-बहनें

"आज के हर मानव से विकारी होने के कारण, किसी न किसी विकार के वश होने के कारण संकल्प में, बोल में, ईर्ष्या-घृणा या कोई न कोई विकार का धुआं निकलता रहता है। आंखों से भी विकारों का धुआं निकलता रहता है। ... ज्ञानी तू आत्माओं के फरिश्ते रूप से सदा दुआयें निकलती हैं।" अ.बापदादा 31.12.87

"जो दिल से बधाई देते हैं वा लेते हैं, वे सदा ही कैसे दिखाई देते हैं - संगमयुगी फरिश्ता। ... सब बोझ बाप को दे दिया। ... थोड़ा भी बोझ फरिश्ता बनने नहीं देगा।"

अ.बापदादा 31.12.05

"अमृतवेले उठते ही स्मृति में लाओ - मैं कौन ? फरिश्ता।... जो फरिश्ता बनेंगे, उसके आगे अगर कोई भी परिस्थिति आई या कोई भी विघ्न आया तो बाप स्वयं आपकी छत्रछाया बन जायेंगे। ... फरिश्ता रूप में चलना-फिरना, यही डॉयमण्ड बनना है।"

अ.बापदादा 31.12.95

“चलो बिन्दी खिसक जाती है लेकिन फरिश्ता रूप तो लम्बा-चौड़ा शरीर है ... फरिश्ते स्वरूप में स्थित होकर हर कर्म करो। ... लाइट का शरीर देखो।”

अ.बापदादा 31.12.95

“कोई हाथी ले आता है, कोई घोड़ा ले आता है। ये गिफ्ट तो है मनोरंजन। ... बाप के दिल पसन्द गिफ्ट है चलता-फिरता फरिश्ता स्वरूप। तो फरिश्ता स्वरूप बन जाओ। फरिश्ते रूप में कोई भी विघ्न आपको प्रभाव नहीं डालेगा।” अ.बापदादा 31.12.95

“आप सभी अवतार हो, अवतरित हुए हो। ... अवतार किसलिए नीचे आते हैं? मैसेज देने के लिए। देहभान रूपी मिट्टी, पृथ्वी में आपके पांव नहीं हैं... सदा याद रखना कि हम फरिश्ता अवतरित आत्मायें हैं, ब्राह्मण आत्मायें हैं।” अ.बापदादा 22.2.90 पार्टी 2

श्रीमत और भावना एवं विवेक

भावना और विवेक मानव जीवन के उत्थान और पतन में, सुख-दुख के अनुभव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं अथवा ऐसे कहें कि इन दोनों पर जीवन का उत्थान-पतन आधारित है। विवेकहीन भावना अन्धश्रद्धा में बदल जाती है और भावनाहीन विवेक जीवन को नीरस बना देता है। इसलिए बाबा ने दोनों का महत्व बताते हुए दोनों में सन्तुलन रखने की श्रीमत दी है। इन दोनों में सन्तुलन कैसे रखें, उसके लिए भी बाबा ने अनेक रूप से महावाक्य उच्चारण किये हैं।

श्रीमत और ईश्वरीय विवेक एवं आसुरी विवेक

ज्ञान सागर बाबा ने हमारा विवेक जाग्रत किया है और आसुरी विवेक और ईश्वरीय विवेक का अन्तर बताया है तथा आसुरी विवेक को छोड़कर ईश्वरीय विवेक को धारण कर, उस पर चलने की शिक्षा दी है। ईश्वरीय विवेक अर्थात् किसी बात की सत्यता को समझने के बाद हमारा विवेक जो कहे, वही हमारे द्वारा कर्म हो। किसी विकार अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वश उस ईश्वरीय विवेक को दबाकर कोई गलत कर्म न हो। यदि ऐसा करते हैं तो यह ईश्वरीय विवेक का खून करते हैं, आपघात करते हैं।

87 की अव्यक्त मुरली से

श्रीमत और प्रत्यक्षफल

यह ज्ञान प्रत्यक्ष फल देने वाला है। जो भी कर्म करते हैं, उसके प्रत्यक्ष फलस्वरूप खुशी उसी समय मिलती है। बाबा ने कहा है भविष्य के दिलासे पर मत रहो, अभी प्रत्यक्ष फल को अनुभव करो। वर्तमान का प्रत्यक्ष फल भविष्य से पदमगुणा श्रेष्ठ है।

"प्रत्यक्ष फल मिलता है या भविष्य के आधार पर चल रहे हो ? भविष्य से भी प्रत्यक्षफल अति श्रेष्ठ है। सदा ही श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ प्रत्यक्षफल मिलने का साधन है कि सदा ये याद रखो कि - अब नहीं तो कब नहीं।" अ.बापदादा 23.12.93 पार्टी 5

"अमृतवेले से लेकर रात तक जो भी कर्म करो, याद के विधिपूर्वक करो, तब सिद्धि मिलेगी।... प्रत्यक्षफल के रूप में सबसे बड़ी सिद्धि है अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करना।... इस समय का प्रत्यक्षफल फल भविष्य अनेक जन्मों के फल से श्रेष्ठ है।"

अ.बापदादा 9.12.89 पार्टी

श्रीमत और मांगना या किससे लेने की इच्छा रखना

श्रीमत और मांगना अर्थात् सामने वाला कुछ दे तो मैं उसको दूँ - ऐसी भावना रखना

बाबा ने दो शब्दों में बताया है - बच्चे मांगने से मरना भला। बाबा की श्रीमत है तुम बच्चे दाता के बच्चे हो, तुमको कब किससे कुछ मांगना नहीं है और न ही लेने की इच्छा रखनी है। कोई हमारी सेवा के फलस्वरूप हमको कुछ दे, ऐसी भावना भी नहीं रखनी है। कोई कुछ दे, तब हम उसकी सेवा करें, ऐसा लक्ष्य भी नहीं रखना है। तुम सबको यज्ञ स्थापना का, राजाई की स्थापना का, कर्म और फल का लॉ बता दो, फिर निश्चिन्त हो जाओ। जिसने कल्प पहले यज्ञ में बीज बोया होगा, अपना भाग्य बनाया होगा, वह अभी भी अवश्य बनायेगा।

तुमको बाबा से भी कुछ मांगना नहीं है कि बाबा शक्ति दो, शान्ति दो, सहयोग दो। बाप तो दाता है, बिना मांगे ही वह स्वत: सबकुछ देता है। मांगने से तो मनुष्य देते हैं। तुम्हारे मांगने से दे बाबा भी दे तो भगवान दाता भी मनुष्य हो गया। दुनिया में भी कहावत है - बिनु मांगे मोती मिलें, मांगे मिले न भीख।

"ड्रामा अनुसार जो फूल बनने वाले होंगे, उनको टच होगा। तुम बच्चों को ऐसे नहीं कहना पड़ेगा कि बाबा इनकी बुद्धि को टच करो। टच कोई बाबा थोड़ेही करते हैं। समय पर आपही टच होगा। बात तो रास्ता बतायेंगे ना।" सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

"कल्प पहले जो आये होंगे, वे अभी भी आयेंगे। फिकरात की कोई बात नहीं है। शिवबाबा

को कभी कोई फिकरात होती नहीं है, इस दादा को होगी।... तुमको आशीर्वाद, कृपा, रहम आदि मांगने से मरना भला। कोई से पैसा भी नहीं मांगना चाहिए। बच्चों को सख्त मना है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार जिन्होंने कल्प पहले बीज बोया है, वर्सा पाया है, वे आपही करेंगे। ... ड्रामा उनसे करायेगा जरूर।" सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

"रॉयलिटी की और विशेषता है - उस आत्मा में कभी किसी भी प्रकार के स्थूल-सूक्ष्म मांगने के संस्कार नहीं होंगे। क्योंकि रॉयल आत्मा सदा सम्पन्न भरपूर रहती है। ... जिसका मन भरपूर नहीं होता, वह आत्मा बाहर से कितनी भी वस्तु और साधन से भरपूर होते भी वह कभी भी अपने को भरपूर नहीं समझेगा।" अ.बापदादा 11.12.91

"चाहे कोई ज्ञान सुने या न सुने लेकिन शुभ-भावना शुभ-कामना के वायब्रेशन से भी बदलते हैं। सिर्फ वाणी की सेवा ही सेवा नहीं है लेकिन शुभ-भावना रखना भी सेवा है। ... ब्राह्मणों का कर्तव्य देना। दाता के बच्चे हो ना। वह अच्छा कहे, मान दे फिर आप दो तो यह लेवता हुए, दाता नहीं।... दाता के बच्चे लेकर नहीं देते।" अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 2

"दाता के बच्चे बनो, लेने का संकल्प भी न हो।... दाता के बच्चों को सब स्वतः प्राप्त होता है। मांगने वालों को नहीं मिलता है। दाता बनो तो आपही सब मिलता रहेगा।"

अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 2

"जो बिना मांगे मिलता है, उसको अच्छा माना जाता है।... शुभ इच्छा स्वतः ही पूर्ण होती हैं। ... सारे कल्प का श्रेष्ठ भाग्य अब मिल रहा है।" अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 5

"याद से सर्व कार्य स्वतः ही सफल हो जाते हैं, कहने की आवश्यकता नहीं। सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है। अधिकार मांगने से नहीं मिलता, स्वतः ही मिलता है। ... अधिकारी आत्मायें स्वप्न में भी मांग नहीं सकती। बालक सो मालिक हो।"

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 3

"राजा का अर्थ ही है दाता। अगर हद की इच्छा वा प्राप्ति की इच्छा है तो राजा के बजाये मंगता बन जाता है। ... यह भी नहीं सोचना कि अन्त में बन जायेंगे। अगर बहुत काल का राज्य-भाग्य प्राप्त करना ही है तो बहुत काल के स्वराज्य बनो।"

अ.बापदादा 18.11.93

"रॉयलिटी की और विशेषता है - उस आत्मा में कभी किसी भी प्रकार के स्थूल-सूक्ष्म मांगने के संस्कार नहीं होंगे। क्योंकि रॉयल आत्मा सदा सम्पन्न भरपूर रहती है।... जिसका मन भरपूर नहीं होता, वह आत्मा बाहर से कितनी भी वस्तु और साधन से भरपूर होते भी वह कभी भी अपने को भरपूर नहीं समझेगा।" अ.बापदादा 11.12.91

"अगर आपको निश्चय है कि सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो बाप किसी न किसी को निमित्त बना ही देता है। ... अगर योग्य है, चान्स मिलता है तो खुशी से करो लेकिन ये संकल्प करना कि हमें चान्स मिलना चाहिए... यह भी मांगना है।" अ.बापदादा 4.12.95

"फरिश्ता दाता होता है, लेवता नहीं। देने वाले दाता हो, न कि लेकर देने वाले हो।... बाप से लेना अलग बात है।... दाता के बच्चे दाता है तो किसी भी बात में असन्तुष्ट नहीं हो सकते।... कितना भी कड़ा पेपर आ जाये लेकिन सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है।"

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी 6

"आप बीज डालते जाओ। ... ये तो लेवता हो गये। ये इच्छा नहीं रखो कि वह अच्छा बोले, अच्छा माने तो दें। नहीं, दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो।"

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी 1

श्रीमत और ईश्वरीय लॉज एवं लॉ मेकर

श्रीमत और ईश्वरीय दरबार एवं उसके विधि-विधान

जैसे हर धर्म-सम्प्रदाय, समाज के कुछ विधि-विधान होते हैं, वैसे ही इस ईश्वरीय परिवार के भी विधि-विधान हैं, उनका बाबा ने ज्ञान भी दिया है और उनको पालन करने के लिए श्रीमत भी दी है।

बाबा हमको इस विश्व के सभी नियम-सिद्धान्त बताते हैं और कहा है - तुम लॉ-मेकर हो। अभी संगमयुग पर तुम जो कर्म करते हो, वह भविष्य के लिए लॉ बन जाता है, जिसको सभी फॉलो करते हैं। बाबा ने यज्ञ के सभी नियम-सिद्धान्त बताये हैं, उन पर चलने की श्रीमत दी है।

"अविनाशी वैद्य तो एक बाप ही है, वे ही दवाई करेंगे, तुम बच्चे अपने हाथ में लॉ क्यों उठाते हो। ... किसकी ग्लानि करते हैं तो गोया अपने हाथ में लॉ उठाया। ... कोई न कोई खराबी तो सब में है। ... इस समय सब पुरुषार्थी हैं। बाबा सदैव अडोल रहते हैं।"

सा.बाबा 14.01.06 रिवा.

"श्रीमत पर चलते रहना है। श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ बनेंगे। इसमें कोई से बिगड़ने की बात ही नहीं।... कोई बात है तो बाबा को बोलो परन्तु लॉ अपने हाथ में नहीं उठाना चाहिए।... बाप बच्चों को सावधान करते रहते हैं।" सा.बाबा 14.01.06 रिवा.

"कोई भी बात है तो बाप को रिपोर्ट करो। सुधारने वाला तो एक ही बाप है। तुम अपने हाथ में

लॉ नहीं उठाओ। तुम बाप की याद में रहो, सबको बाप का परिचय दो।"

सा.बाबा 12.01.06 रिवा.

"इन्द्र सभा में कोई परी किसी विकारी को छिपाकर ले आई तो इन्द्र सभा में बांस आने लगी। तो ले आने वाली पर दण्ड पड़ गया, वह पत्थर बन गई। ऐसे कुछ कहानी है। बाप पारसनाथ बनाते हैं फिर अगर अवज्ञा की तो पत्थर बन जाते हैं। ... बाबा कोई यह श्राप नहीं देते हैं परन्तु यह तो एक लॉ है।" सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

"कोई हंगामा करे तो बोलना चाहिए - एकान्त में आकर समझो। यहाँ का कायदा है - पहले 7 रोज भट्ठी में रहकर समझाना होता है।... समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए।"

सा.बाबा 23.5.06 रिवा.

"कभी कभी पतित भी यहां छिपकर आ जाते हैं, वे अपना ही नुकसान करते हैं, अपने को आपही ठगते हैं। बाप को ठगने की बात ही नहीं। ... शिवबाबा की श्रीमत पर कायदे सिर नहीं चलते तो क्या हाल होगा। बहुत सजायें खानी पड़ेंगी।" सा.बाबा 29.9.06 रिवा.

श्रीमत और विभिन्न शब्दों का यथार्थ रहस्य

बाबा ने विभिन्न शब्द, जो दुनिया में मनुष्य बोलते तो हैं परन्तु उनका यथार्थ रहस्य नहीं जानते। बाबा ने उनका यथार्थ रहस्य बताया है और उन शब्दों को कैसे प्रयोग करें, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

"यह है ईश्वरीय विश्व विद्यालय, वर्ल्ड युनिवर्सिटी। सारे युनिवर्स को चेन्ज किया जाता है।... ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक ही होता है, जिससे सारे विश्व का कल्याण हो जाता है।"

सा.बाबा 28.10.05 रिवा.

"अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी। संगमयुग के साथ पुरुषोत्तम शब्द जरूर लिखना चाहिए।... तुम जानते हो अभी हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं।" सा.बाबा 28.10.05 रिवा.

"प्रजापिता ब्रह्मा है प्रजा का पिता, शिवबाबा को तो आत्माओं का पिता कहेंगे। वह है अविनाशी पिता, यह गुह्य बातें अच्छी रीति धारण करनी है।" सा.बाबा 28.10.05 रिवा.

श्रीमत और बाप का स्नेह एवं स्नेही आत्माओं की परख

बाप के स्नेह ने ब्राह्मण जन्म दिया है, अब स्नेही आत्माओं का क्या कर्तव्य है, वह भी श्रीमत बाबा ने दी है।

"बाप को स्नेह की छोटी वस्तु ही हीरे रतन हैं। इसीलिए सुदामा के कच्चे चावल गाये हुए हैं।... अगर कोई वैसे ही भल कितना भी दे देवे लेकिन स्नेह नहीं तो उसका जमा नहीं होता है और स्नेह से थोड़ा भी जमा करे तो उसका पदम जमा हो जाता है। बाप को स्नेह पसन्द है।"

अ.बापदादा 19.3.86

"सदा स्नेही आत्माओं का हर समय, हर संकल्प है ही बाप की याद और सेवा के प्रति। ... सदा स्नेही आत्मा की स्थिति का ही गायन है - "एक बाप दूसरा न कोई"।"

अ.बापदादा 27.3.86

"फरिश्ता बनना अर्थात् फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाप से प्यार हो। जिसका फरिश्ते स्थिति से प्यार नहीं तो ब्रह्मा बाप नहीं मानता कि उसका मेरे से प्यार है। प्यार का अर्थ ही है समान बनना। ... अगर बाप से सच्चा प्यार है तो इस वर्ष में फरिश्ता समान बनकर दिखाओ।"

अ.बापदादा 8.4.92

"स्नेह में सभी बच्चे पास हैं। पास नहीं होते तो पास नहीं आते। पास आना सिद्ध करता है कि स्नेह में पास हैं। स्नेह का अर्थ ही है पास रहना, पास होना और हर परिस्थिति करे बहुत सहज पास करना।... पास रहने में तो आनन्द ही आनन्द है और पास करना, इसमें नम्बरवार हैं या सब नम्बरवन हैं?" अ.बापदादा 14.4.94

श्रीमत और क्षमा का विधि-विधान

इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का क्या विधि-विधान है और अगर हमारे से कोई गलत कर्म हो जाता है, तो उसके दुखदायी फल से हम कैसे, कितना बच सकते हैं या परमात्मा की उसमें क्या भूमिका होती है, उसका ज्ञान भी दिया है और अधिक गलत कर्म न हों, उसके लिए भी श्रीमत दी है। गलत कार्य हो गया तो बाबा को बताने और आगे से बाबा की श्रीमत पर चलने से हम अनेक पाप-कर्मों से बच जाते हैं।

"छोटेपन से भी कुछ खराब काम कया है तो वह भी बाबा को सुनाते हैं तो आधा माफ हो जाता है। ... बाप कहते हैं क्षमा तो होती नहीं है, बाकी सच बताते हो वह हल्का हो जायेगा।"

सा.बाबा 9.12.05 रिवा.

श्रीमत और समर्थ स्थिति / श्रीमत और व्यर्थ एवं समर्थ

समर्थ आत्मा ही सदा सुखी रह सकती है। बाबा सर्व समर्थ है और वह ज्ञान देकर हमको भी समर्थ बनाता है। समर्थ बनने के लिए हमारे लिए बाबा की श्रीमत है - मेरापन समाप्त कर सब बाबा का समझो। जब सब बाबा का समझेंगे और प्रैक्टिकल में रहेंगे तो बाबा का सबकुछ हमारा होगा।

आत्मा का अनादि-आदि स्वरूप समर्थ है, व्यर्थ अज्ञानता जनित है। ड्रामा के विधि-विधान, कर्म-फल के विधि-विधान, आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता और परमात्मा के सहयोग के विषय में परमात्मा ने ज्ञान दिया है और उस विध-विधान को जानकर व्यर्थ से मुक्त हो समर्थ स्वरूप में स्थित होने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है।

"जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त है। हरेक ब्राह्मण पुरूषार्थ ही व्यर्थ को समाप्त करने का कर रहे हो।... जबकि ब्राह्मण जन्म लेते प्रतिज्ञा की तन-मन-धन सब तेरा तो व्यर्थ संकल्प समाप्त हुआ, क्योंकि मन समर्थ बाप को दिया।" अ.बापदादा 30.7.83

"ड्रामा के हर दृश्य को ड्रामा चक्र में संगमयुगी टाप पाइंट पर स्थित हो कुछ भी देखेंगे तो स्वत: ही अचल अडोल रहेंगे। टाप पाइंट से नीचे आते हैं तब ही हलचल होती है। सभी ब्राह्मण आत्मायें सदा कहाँ रहते हो ? चक्र में संगमयुग ऊंचा युग है।" अ.बापदादा 30.7.83

जीवन में सदा सफलता प्राप्त करने के लिए जीवन से व्यर्थ को समाप्त करना और समर्थ को धारण करना अति आवश्यक है। व्यर्थ को कैसे छोड़ें और समर्थ को कैसे धारण करें, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है कि -

"बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनो।... वह यहाँ-वहाँ कभी नहीं देखेगा। वह सदा मंजिल की ओर देखेगा। फॉलो किसको करना है ? ब्रह्मा बाप को क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 4

"यदि व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होगी तो अन्त में व्यर्थ का संस्कार धोखा दे देगा। ...अपनी शुभ भावना व्यर्थ वाले को भी चेन्ज कर देती है। ... व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने का आधार है - शुभ भावना और शुभ कामना। ... जो हंस सदा ज्ञान सरोवर में रहते हैं, उनकी स्थिति समर्थ होगी या व्यर्थ होगी ?"

अ.बापदादा 26.10.91 पार्टी 2

"सिर्फ एक ही मेरा बाबा - यह अनुभव होता रहे, यही फुल नॉलेज है। एक "बाबा" शब्द में

सारा आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान समाया हुआ है क्योंकि बाबा बीज है ना।... इसलिए उड़ो और औरों को भी उड़ाते चलो। इसकी विधि है - वेस्ट अर्थात् व्यर्थ को बचाओ, बचत का खाता, जमा का खाता बढ़ाते चलो।" अ.बापदादा 3.4.91

"व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो। व्यर्थ को अपनी बुद्धि में स्वीकार नहीं करो। अगर एक भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म स्वीकार किया तो एक व्यर्थ अनेक व्यर्थ को जन्म देगा। ... जिसको आप लोग कहते हो - फीलिंग आ गई।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 5

"जिस बात में कोई रस नहीं, कोई सम्बन्ध नहीं हो, वह सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए भी नहीं देखो। देखते-सुनते हुए सोचो नहीं। सुनो तो बाप की बातें, देखो तो बाप के श्रेष्ठ कर्म और बाप को फॉलो करने वालों के श्रेष्ठ कर्म। यही विधि है डबल लाइट रहने की।"

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 6

"अगर योग कमजोर होता है तो भी उसका कारण "मेरा" है और योग शक्तिशाली होता है तो भी उसका कारण "मेरा" ही है। "मेरा बाबा" है तो योग शक्तिशाली होता है और मेरा सम्बन्ध, मेरा पदार्थ, यह "अनेक मेरा" याद आना अर्थात् योग कमजोर होना।"

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 2

"मैं बाबा का और बाबा मेरा", यह स्मृति सहज भी है और समर्थ बनाने वाली है।... असमर्थ होना अर्थात् मेरा बाबा के बजाये और कोई मेरापन आ जाना है।... अगर संकल्प में भी एक बाप के सिवाए और कोई व्यक्ति या प्रकृति के साधन को सहारा स्वीकार किया तो सेकेण्ड में मन-बुद्धि का बाप से किनारा हो जाता है।" अ.बापदादा 24.9.92

"होली मनाना अर्थात् जो भूलना है, वह सेकेण्ड में भूल जाये और जो याद करना है, वह सेकेण्ड में याद आये।... आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और व्यर्थ को भी बिन्दी अर्थात् फुल स्टॉप।" अ.बापदादा 16.3.92

"माया के खेल खिलाड़ी बनकर देखते चलो।... बाप का श्रीमत रूपी हाथ और दिव्य बुद्धियोग रूपी साथ सदा अनुभव कर समर्थ बन सदा पास विद् ऑनर बनते चलो।"

अ.बापदादा 18.1.92

"जो भाव वृत्ति में होगा, वही कर्म स्वत: ही होगा। तो एक सेकेण्ड भी वृत्ति व्यर्थ नहीं बना सकते। एक सेकेण्ड भी व्यर्थ संकल्प नहीं कर सकते क्योंकि आपके पीछे विश्व की जिम्मेवारी है। ... स्व की भावना और स्व की वृत्ति कौनसी है ? विश्व-कल्याणकारी।"

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 2

"जहाँ समर्थ है, वहाँ व्यर्थ हो नहीं सकता। जैसे प्रकाश और अंधियारा साथ-साथ नहीं होता। तो "ज्ञान" प्रकाश है और "व्यर्थ" अन्धकार है।... सबसे मुख्य बात संकल्प रूपी बीज को समर्थ बनाना है। संकल्प रूपी बीज समर्थ है तो वाणी, कर्म, सम्बन्ध सहज ही समर्थ हो जाता है।"

अ.बापदादा 25.11.93

"बाप से प्यार है तो क्या प्यार के पीछे इस एक क्रोध विकार को कुर्बान नहीं कर सकते? कुर्बान की निशानी है - फरमान को मानने वाला। यह व्यर्थ संकल्प अन्तिम घड़ी में बहुत धोखा दे सकता है क्योंकि उस समय चारो ओर दुख का वायुमण्डल, प्रकृति का वायुमण्डल और आत्माओं का वायुमण्डल आकर्षण करने वाला होगा। अगर वेस्ट थॉट्स की आदत होगी तो उसमें उलझ जायेंगे।"

अ.बापदादा 25.2.06

"बाप चाहते हैं कि हर एक बच्चा बाप समान बन जाये, हर एक के चेहरे से बाप प्रत्यक्ष दिखाई दे ... बाप के दिल पसन्द स्थिति है ही सम्पूर्ण पवित्रता। ... संकल्प और स्वप्न में भी रिंचक मात्र अपवित्रता का नाम-निशान न हो। ... सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प अपवित्रता है। तो चेक करो - व्यर्थ संकल्प चलते हैं?"

अ.बापदादा 03.2.06

"व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो। व्यर्थ को अपनी बुद्धि में स्वीकार नहीं करो। अगर एक भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म स्वीकार किया तो एक व्यर्थ अनेक व्यर्थ को जन्म देगा। ... जिसको आप लोग कहते हो - फीलिंग आ गई।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 5

"होली मनाना अर्थात् जो भूलना है, वह सेकण्ड में भूल जाये और जो याद करना है, वह सेकण्ड में याद आये। ... आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और व्यर्थ को भी बिन्दी अर्थात् फुल स्टॉप।"

अ.बापदादा 16.3.92

"व्यर्थ नहीं गंवाया, वह अलग बात है लेकिन यह चेक करो कि सफल कितना किया? ... ज्ञान, गुण, शक्तियां, स्वांस, समय, संकल्प बाप की देन हैं ... प्रभु-प्रसाद को अपना मानना - यह अभिमान और अपमान करना है ... अपने ईश्वरीय संस्कारों को भी सफल करो तो व्यर्थ संस्कार स्वत: ही चले जायेंगे।"

अ.बापदादा 3.4.91

"जैसा समय, उस प्रमाण वरदान स्मृति में आये तो स्मृति में आने से समर्थ बन जायेंगे और सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे। जितना समय प्रमाण वरदान को कार्य में लगायेंगे, उतना वरदान वृद्धि को प्राप्त करता रहेगा।"

अ.बापदादा 24.2.88

"बापदादा श्रेष्ठ मत देते हैं कि शुद्ध फीलिंग में रहो - मैं सर्वश्रेष्ठ अर्थात् कोटों में कोई आत्मा हूँ, मैं देव आत्मा हूँ ... विशेष पार्टधारी आत्मा हूँ। इस फीलिंग में रहने वाले को व्यर्थ फीलिंग

का फ्लू नहीं होगा। मेहनत से बच जायेंगे।" अ.बापदादा 21.12.89

"जहाँ समर्थ स्थिति है, वहाँ व्यर्थ हो नहीं सकता। संकल्प भी व्यर्थ उत्पन्न नहीं हो सकता। ... व्यर्थ देखना, व्यर्थ बोलना, व्यर्थ सुनना, व्यर्थ सोचना, व्यर्थ समय गंवाना - इसमें फुल पास नहीं हैं। ... इसलिए अपसेट हो जाते हैं।" अ.बापदादा 17.12.89

"अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करेंगे तो स्वत: ही कभी भी अपसेट नहीं होंगे। ... आप विश्व के नव-निर्माण के आधारमूर्त हो, बेहद के ड्रामा में हीरो एक्टर हो और हीरे तुल्य जीवन वाले हो। यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है और देहाभिमान का नशा नीचे ले आता है।" अ.बापदादा 17.12.89

"व्यर्थ तरफ आकर्षित होने का कारण है - अपने मन-बुद्धि की दिनचर्या सेट नहीं करते, ... दूसरी बात - अमृतवेले से रात सोने तक के लिए जो आज्ञायें मिली हुई हैं, उनमें कोई न कोई आज्ञाओं का उलंघन हो जाता है और अवज्ञा होने से आत्मा पर थोड़ा-थोड़ा बोझ होकर इकट्ठा हो जाता है।" अ.बापदादा 17.12.89

"आप विश्व के नव-निर्माण के आधारमूर्त हो, बेहद के ड्रामा में हीरो एक्टर हो और हीरे तुल्य जीवन वाले हो। यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है ... सदा समर्थ रहने का दूसरा आधार है - सदा और स्वत: आज्ञाकारी बनना।" अ.बापदादा 17.12.89

"बिन्दी रूप याद नहीं आता है तो उस समय प्राप्ति को याद करो, सम्बन्ध याद करो, साकार मिलन को याद करो ... तो युद्ध में समय नहीं गँवाओ। किसी भी विधि से व्यर्थ को समाप्त करो और समर्थ को इमर्ज करो। ... विकर्म विनाश नहीं होता है तो सुकर्म तो बनाओ, सुकर्म करो। व्यर्थ आपही खत्म हो जायेगा।" अ.बापदादा 16.3.95

"जितना ही बिन्दु, उतना ही सिन्धु बनो। ज्ञान, गुण और शक्तियों की धारणा में सिन्धु और स्मृति में बिन्दु। बिन्दु बनो, बिन्दु को याद करो और बिन्दु लगाते चलो तो वेस्ट खत्म हो जायेगा।" अ.बापदादा 16.3.95

"बीती को सोचते रहते हो ... सेकण्ड पूरा हुआ और निर्विकल्प स्थिति बन जाये - यह संस्कार इमर्ज करो। ... समझते हो कि यह व्यर्थ है लेकिन व्यर्थ संकल्पों का बहाव इतना तेज होता है जो अपनी तरफ खींचता जाता है।... इसके लिए पहला परिवर्तन करो - मैं शरीर नहीं लेकिन आत्मा हूँ।" अ.बापदादा 26.11.94

"अभी नॉलेजफुल बने हो। अगर अभी संकल्प, बोल या कर्म व्यर्थ गंवाते हैं तो सारे कल्प के लिए अपने जमा के खाते में कमी हो जाती है।... राजयोगी डबल पॉवर वाले कभी भी व्यर्थ सोच नहीं सकते।" अ.बापदादा 9.3.94 पार्टी 2

"हंस का काम है दूध और पानी को अलग करना, ज्ञान रत्न चुगना अर्थात् धारण करना। ... दूध और पानी का अर्थ है व्यर्थ और समर्थ का निर्णय करना।... बुद्धि में सदा ज्ञान का मनन चलता रहे। ज्ञान चलेगा तो व्यर्थ नहीं चलेगा। इसको कहा जाता है रत्न चुगना।"

अ.बापदादा 25.1.94 पार्टी 3

"कोई भी बच्चे थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हैं, अचल से हलचल में आते हैं तो उसका कारण तीन बातें मुख्य हैं ... अशुभ वा व्यर्थ सोचना, अशुभ वा व्यर्थ बोलना और अशुभ वा व्यर्थ करना। ... समय-संकल्प बहुत व्यर्थ जाता है। ... तो बापदादा आज यह तीन बातें सोचना, बोलना और करना - इनकी गिफ्ट सभी से लेना है।" अ.बापदादा 6.3.97

श्रीमत और बेहद का वैराग्य / श्रीमत और बेहद का सन्यास

बाबा ने हद और बेहद के वैराग्य और सन्यास की भी बात बताई है और हम बेहद के वैरागी, बेहद के सन्यासी कैसे बनें, उसके लिए श्रीमत दी है।

"दुनिया का राइज़ और फॉल होता है, उसमें मुख्य पार्ट है भारत का।... अभी तुम्हारा मुँह स्वर्ग की तरफ है।... पुरानी दुनिया को भूलना पड़े। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य।"

सा.बाबा 23.8.06 रिवा.

"फिर से वही वृत्ति, वही वायुमण्डल इमर्ज करो।... साधन और साधना का बैलेन्स ... साधन हैं तो साधनों को यूज करते हुए भी उन्हों के प्रभाव में नहीं आये, न्यारे। साधन बेहद की वैराग्य वृत्ति को मर्ज नहीं करें।... चाहते हो सेकण्ड में अशरीरी हो जायें, उसका फाउण्डेशन यह बेहद की वैराग्य वृत्ति है।" अ.बापदादा 3.4.96

"समय प्रमाण वा सरकमस्टांस प्रमाण वैराग्य आता है ... परिस्थिति खत्म, समय पास हो गया तो वैराग्य भी पास हो गया ... अगर वैराग्य खण्डित होता जाता है तो उसका मुख्य कारण है - देह-भान। जब तक देह-भान का वैराग्य नहीं तब तक कोई भी बात का वैराग्य सदाकाल नहीं होगा।" अ.बापदादा 3.4.96

"जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है तो अन्य आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती और जब तक वैराग्य वृत्ति नहीं होगी तब तक जो चाहते हो कि बाप का परिचय सबको मिले, वह नहीं मिल सकता। वर्तमान समय इसका विशेष अटेन्शन चाहिए।" अ.बापदादा 3.4.96

"वफादार ... अगर व्यक्ति की, पदार्थ की, साधनों की संकल्पमात्र भी आकर्षण है तो साधना

खण्डित हो जाती है। ... संकल्प मात्र भी झुकाव नहीं। वाचा-कर्मणा की तो बात ही छोड़ो।... ब्रह्मा बाप ने अन्त तक बड़ी आयु होते भी, तन का हिसाब चुक्तू करते हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई। ... साधनों को सेवा प्रति कार्य में लगाओ, स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो।"

अ.बापदादा 26.1.95

"अगर पुरानी दुनिया और पुराने शरीर से दिल लगायेंगे तो तकदीर फूट जायेगी... इसलिए जितना हो सके एक बाप को याद करो, जो बेहद का वर्सा देते हैं।"

सा.बाबा 27.5.06 रिवा.

"यह भी जानते हैं, सारी दुनिया आकर मत नहीं लेगी। यह मुश्किल है, जो तुम सारी दुनिया को मत दो। अभी सबका कयामत का समय है।... पावन दुनिया में चलना है तो फिर पतित दुनिया में बुद्धि का योग नहीं जाना चाहिए, विकार में नहीं जाना चाहिए।"

सा.बाबा 23.5.06 रिवा.

"यथार्थ वैराग्य वृत्ति का सहज अर्थ है... जितना न्यारा, उतना न्यारा - इसका बैलेन्स रहे ... न्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव और निर्मान भाव।... मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है। ... अभी बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ।"

अ.बापदादा 5.12.94

"उस दुनिया में रौनक जरूर है लेकिन धोखा देने वाली रौनक है।... आर्टिफिशियल की चमक ज्यादा है। तो कभी आर्टिफिशियल चमक आकर्षित तो नहीं करती है ?"

अ.बापदादा 1.2.94 पार्टी 2

श्रीमत और देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थों की आकर्षण

बाबा ने हद-बेहद के वैराग्य और सन्यास का राज़ भी बताया है और बेहद के वैराग्य और बेहद के सन्यास के लिए श्रीमत भी दी है। बाबा ने कहा है - तुमको सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य होना चाहिए और सारी पुरानी दुनिया में रहते भी दुनिया से सन्यास करना है अर्थात् दुनिया में रहते भी उसका बुद्धि से सन्यास करना है, दुनिया की किसी भी वस्तु या व्यक्ति में लगाव न हो, उसकी याद न हो। देह, देह के सम्बन्ध, दैहिक पदार्थ आत्मा को आकर्षित न करें। बाबा ने कहा है - जब तक दुनिया की किसी भी वस्तु या व्यक्ति की याद है, तब मुझ परमात्मा की याद ठहर नहीं सकती। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है - तुमको देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध, पदार्थों की वास्तविकता को समझकर उनसे बुद्धियोग हटा लेना है

और एक मुझ परमात्मा से बुद्धियोग जोड़ना है।

"दुनिया वालों को समय करायेगा और समय पर मजबूरी से करेंगे। बच्चों को बाप समय के पहले तैयार करते हैं और बाप की मोहब्बत से करते हो। ... बेहद का वैराग्य धारण करना ही होगा लेकिन मजबूरी से करने का फल नहीं मिलता। मोहब्बत से करने से का प्रत्यक्ष फल और भविष्य फल बनता है।" अ.बापदादा 13.12.90

"अब यह सारी दुनिया भस्मीभूत होने वाली है। इस ड्रामा को अच्छी रीति समझना है। जो कुछ होता है, वह फिर कल्प 5 हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू रिपीट होगा। इसको बहुत अच्छी रीति से समझकर बेहद का सन्यास करना है।" सा.बाबा 22.12.05 रिवा.

"ड्रामा के हिसाब से वर्तमान समय बहुत तीव्र गति से जा रहा है, अति में जा रहा है ... उड़ती कला, सर्व का भला ... चेक करो - संकल्प में भी कोई आकर्षण आकर्षित नहीं करे। सिवाए बाप के कोई आकर्षण न हो।" अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 1

"चाहे अपने में, चाहे व्यक्ति में, चाहे किसी वस्तु में कहाँ भी लगाव है तो राजऋषि नहीं हैं। ... अगर लगाव है तो दो नांव में पांव हुआ ना।... अनुभवी कभी धोखा नहीं खाता। यह पुरानी दुनिया का लगाव सोने के हिरण के समान है।" अ.बापदादा 2.12.93 पार्टी 4

"तुमको बहुत अनासक्त रहना चाहिए। देहाभिमान को तोड़ना है... इस समय तुम हो ही वनवाह में। वनवाह और वानप्रस्थ एक ही बात है।... पुरानी दुनिया सब खलास होनी है, इसलिए इस सारी दुनिया से बुद्धियोग तोड़ना है। इसको बेहद का सन्यास कहा जाता है।"

सा.बाबा 24.4.06 रिवा.

"इस पुरानी दुनिया से वैराग्य भी चाहिए अर्थात् देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को अशरीरी आत्मा समझना है।... मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा जानकर याद करो। ऐसा कोई विरला जानते हैं और निश्चय करते हैं। जो निश्चय कर लेते हैं, वे पुरुषार्थ कर वर्सा पा लेते हैं।"

सा.बाबा 1.5.06 रिवा.

श्रीमत और मुसाफिर

बाबा ने बताया है तुम सब मुसाफिर हो। कहाँ से मुसाफिरी पर आये हो और अब तुम्हारा क्या कर्तव्य है, उसके लिए श्रीमत भी दी है। बाबा ने कहा है - मुसाफिर को अपना गन्तव्य ही बुद्धि में रहता है, वह बीच में कहाँ ठहरता भी तो भी वहाँ की वस्तु और व्यक्ति से

लगाव नहीं रखता, इसलिए तुमको इस दुनिया की किसी भी वस्तु या व्यक्ति से लगाव नहीं होना चाहिए, अपना गन्तव्य परमधाम और स्वर्ग ही बुद्धि में रहना चाहिए और मुसाफिरी पर ले जाने वाला बाप ही याद रहना चाहिए।

श्रीमत और न्यारा एवं प्यारा

बाबा ने कहा है - न्यारा और प्यारा बनो। न्यारा और प्यारा का आपस में घनिष्ट सम्बन्ध है। जो जितना न्यारा बनेंगा, वह उतना ही बाप, ब्राह्मण परिवार और विश्व-परिवार का प्यारा बनेंगा। शिवबाबा सबसे न्यारा है, इसलिए वह सर्वात्माओं का प्यारा है।

"अगर बाप का और ब्राह्मण परिवार का सच्चा प्यार प्राप्त करना है तो न्यारे बनो। सभी हद की बातों से, अपनी देह से भी न्यारा। जो अपनी देह से न्यारा बन सकता है, वही सबसे न्यारा बन सकता है। ... परमात्म प्यार अखुट है लेकिन प्राप्त करने की विधि है - न्यारा बनना। विधि से सिद्धि मिलती है।" अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 4

"सदा अपने को जैसे बाप न्यारा और प्यारा है, ऐसे अपने को न्यारे और प्यारे अनुभव करते हो ? ... पहली अपनी देह की स्मृति से न्यारा। जितना देह की स्मृति से न्यारे होंगे, उतने बाप के प्यारे होंगे और सर्व आत्माओं के भी प्यारे होंगे।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 2

"अगर बाप का और ब्राह्मण परिवार का सच्चा प्यार प्राप्त करना है तो न्यारे बनो। सभी हद की बातों से, अपनी देह से भी न्यारा। जो अपनी देह से न्यारा बन सकता है, वही सबसे न्यारा बन सकता है। ... परमात्म प्यार अखुट है लेकिन प्राप्त करने की विधि है - न्यारा बनना। विधि से सिद्धि मिलती है।" अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 4

"जितना न्यारे होंगे, उतना बाप के प्यार के पात्र होंगे। कहाँ भी लगाव है तो न्यारा नहीं हो सकते। ... बाप न्यारा इसलिए प्यारा है। तो फॉलो फादर।"

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 2

"रियल और रॉयल प्यार की निशानी है - वह जितना ही प्यारा होगा और उतना ही न्यारा भी होगा। इसलिए वह न स्वयं एक्स्ट्रा अटैचमेन्ट में आयेगा और न दूसरा उसकी अटैचमेन्ट में आयेगा।" अ.बापदादा 11.12.91

"न्यारा बनना ही बाप का प्यारा बनना है। बाप सारे विश्व को प्यारा क्यों लगता है, क्योंकि सबसे न्यारा है। ... न्यारे और प्यारे। आपका यह न्यारा जीवन सारे विश्व को प्रिय लगता

है।... स्वप्न में भी पुराना जीवन याद नहीं आये। जब मर गये तो याद कहाँ से आयेगा!”

अ.बापदादा 27.11.89 पार्टी

श्रीमत और अनुशासन

किसी भी संगठन की सफलता और व्यक्तिगत जीवन की सफलता के लिए अनुशासन अति आवश्यक है। अनुशासन के विषय में भी बाबा ने ज्ञान और श्रीमत दी है कि जिसकी अपनी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां अनुशासन में होंगी, उसकी स्थूल कर्मेन्द्रियां भी अनुशासन में होंगी और वही दूसरों को भी अनुशासन में रख सकेगा और अनुशासन सिखा सकेगा। इसलिए पहले हरेक को अपनी स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों को अनुशासन में रखना है और उसके लिए बाबा ने कहा है - सदा अपनी स्व-स्थिति की सीट पर स्थित रहो तो कर्मेन्द्रियां सदा अनुशासन में रहेंगी।

“जैसे ब्रह्मा बाप ने हर रोज चेकिंग कर मन के मालिक बन विश्व के मालिक का अधिकार प्राप्त कर लिया। ... चेक करो - मन व्यर्थ संकल्प के वश तो नहीं कर लेता। ... आपके पास श्रीमत का लगाम है। अगर श्रीमत का लगाम थोड़ा भी ढीला होता है तो मन चंचल बन जाता है।”

अ.बापदादा 03.2.06

श्रीमत और सत्यता

सत्य अविनाशी Eternal को भी कहा जाता है और सत्य अर्थात् Truth को भी कहा जाता है।

“असत्य और सत्य में विशेष अन्तर क्या है? असत्य की जीत अल्पकाल की होती है ... सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है ... असत्यता के वश जितनी मौज मनाई, उतना ही सौगुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पश्चाताप करना ही पड़ता है।”

अ.बापदादा 24.9.92

“कहते - “भविष्य किसने देखा”... यह है असत्य की जजमेन्ट। भविष्य तो वर्तमान की परछाई है, बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता। ... अल्पकाल के मान-शान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्वात्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं पा सकते।”

अ.बापदादा 24.9.92

"भविष्य की बात तो छोड़ा लेकिन वर्तमान सत्यता और असत्यता की प्राप्ति में कितना अन्तर है ? ... बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा नम्बरवार ही जानते हैं। ऐसे ही असत्य के राज्य-अधिकारी रावण को भी जो है, जैसा है, वैसा सदा नहीं जानते।"

अ.बापदादा 24.9.92

"अगर संकल्प में भी एक बाप के सिवाए और कोई व्यक्ति या प्रकृति के साधन को सहारा स्वीकार किया तो ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी बहुत फास्ट गति से कार्य करती है। ... सेकेण्ड में मन-बुद्धि का बाप से किनारा हो जाता है।" अ.बापदादा 24.9.92

"तुम्हारा कनेक्शन इन क्रिश्चियन्स से अधिक है। क्रिश्चियन घराने ने भारत की राजाई हप की।... ड्रामा अनुसार सबको रास्ता बताना है, कोई से डिबेट करने की दरकार नहीं है।"

सा.बाबा 1.03.06 रिवा.

श्रीमत और भक्ति, भक्ति-भावना एवं यथार्थ ज्ञान

बाबा ने ये ज्ञान दिया है कि जो बाबा के बनते हैं और ज्ञान मार्ग में तीखे जाते हैं, बाबा से अव्यभिचारी ज्ञान लेते हैं वे ही पहले भक्ति आरम्भ करते हैं और अव्यभिचारी भक्त बनते हैं। ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग का घनिष्ट सम्बन्ध है। जब भक्ति पूरी होती है, भक्ति की पराकाष्टा होती है, तब ही भक्ति का फल ज्ञान परमात्मा से मिलता है और बुद्धि में बैठता है। जब ज्ञान बुद्धि में बैठ जाता है तो भक्ति आपही छूट जाती है। इसलिए बाबा कहते कब भी किसको भक्ति को छोड़ने के लिए नहीं कहना है। कहीं ऐसा न हो कि वह भक्ति से भी चला जाये और ज्ञान भी पूरा न उठा पाये। जब ज्ञान की पराकाष्टा होगी तो आपही भक्ति को छोड़ देगा। सा. बाबा 14-3-06 रिवा.

"तुम जानते हो - ड्रामा में जो कुछ पास्ट हो गया, वह फिर से एक्यूरेट रिपीट होगा, इसलिए किसको भी ऐसी राय नहीं देनी है कि भक्ति छोड़ो। जब ज्ञान बुद्धि में आ जायेगा तो समझेंगे ... फिर हद की बातें आपही खत्म हो जाती हैं।" सा.बाबा 16.12.05 रिवा.

"बाबा कहते हैं, किसको मना नहीं करना है कि भक्ति न करो। आपही छूट जायेगी। तुम भक्ति छोड़ते हो, विकार छोड़ते हो, इस पर ही हंगामा होता है। ... बाप कहते हैं - इस पुरानी दुनिया से ममत्व मिटा दो।" सा.बाबा 24.02.06 रिवा.

"जो सदा याद में रहते हैं, सदा श्रीमत पर चलते हैं, उनकी पूजा भी सदा होती है। जो हर कर्म में कर्मयोगी बनता है, उसके हर कर्म की पूजा होती है। बड़े-बड़े मन्दिरों में हर कर्म की पूजा होती है।" अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 5

“भक्ति मार्ग का पार्ट भी कैसा वण्डरफुल है।... परन्तु यह सब ड्रामा में नूँध है। ड्रामानुसार बेहद की बेसमझी से भक्ति करते हैं। ... श्रीमत पर चलने वाले ही समझदार बनते हैं। वे सदैव श्रेष्ठाचारी काम ही करेंगे।” सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

“भक्ति में जो जिस भावना से पूजा करते हैं, उनको उसका फल देने वाला मैं ही हूँ। वह भी ड्रामा में नूँध है। उनको आपही मिल जाता है, अपने पुरुषार्थ से। अब पवित्र भी अपने पुरुषार्थ से बच्चों को बनना है। ... इसमें कृपा आदि मांगने बात नहीं।” सा.बाबा 16.8.06 रिवा.

“भक्ति में सब यादगार इस संगमयुग के ही हैं। यादगार क्यों बने ? क्योंकि इस समय याद में रहकर कर्म करते हो, तो तुम्हारे हर कर्म का यादगार बन गया।... विधिपूर्वक भोग लगाकर खाने से सिद्धि प्रापत होती है, खुशी होती है, निरन्तर याद सहज रहती है।”

अ.बापदादा 9.12.89 पार्टी

“ज्ञान की परिपक्व अवस्था होने से भक्ति आपही छूट जायेगी। तुमको कभी किसको ऐसा नहीं कहना है कि भक्ति न करो। तुमको उनको ज्ञान देना है। ... इनमें बाबा की प्रवेशता हुई और गीता आदि पढ़ना छोड़ दिया, भक्ति छूट गई। तुमको भी कोई ने कहा नहीं कि भक्ति नहीं करो। ... बाप आये हैं भक्तों को भक्ति का फल देने।” सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

“तुम एक शिवबाबा से ही सुनते हो, जिसकी पहले तुमने भक्ति की है ... तुमको किसको मना नहीं करनी है कि भक्ति नहीं करो। आपही छूट जायेगी।” सा.बाबा 4.10.06 रिवा.

श्रीमत और दिल एवं दिमाग़

बाबा ने कहा है दिल से बाप को याद करने वाले दिलाराम बाप को राज़ी करते हैं और दिमाग़ से याद करने वाले ... परन्तु दिल और दिमाग़ में क्या अन्तर है, उनका देह में कहाँ स्थान है, यह एक रहस्मय पहेली है।

श्रीमत और विल-पॉवर

हर कार्य की सफलता में आत्मा की विल-पॉवर परमावश्यक है। विल-पॉवर आत्मा में कैसे आये, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है - जब विल करोगे तब ही विल पॉवर आयेगी, इसलिए अपना तन-मन-धन सब परमात्मा को विल कर दो तो पूरी विल पॉवर आयेगी। जो जितना विल करता है, उतनी ही उसमें विल पॉवर आती है।

श्रीमत और पर्सनॉलिटी एण्ड रॉयलिटी

दुनिया में मनुष्य मान-सम्मान की इच्छा रखते हैं, उसके पर्सनॉलिटी का बहुतरु ध्यान रखते हैं परन्तु यथार्थ पर्सनॉलिटी क्या है, उसका राज़ भी बाबा ने बताया है और उसके लिए श्रीमत भी दी है, जिससे उसमें स्थित होकर हम सर्वात्माओं से मान-सम्मान पा सकें।

"चले जाओ अनादि काल (परमधाम) में ... सेकण्ड से भी कम समय में जहाँ चाहो, वहाँ पहुँच सकते हो। ... अनादि, आदि, मध्य काल और अब अन्त काल में अर्थात् सारे कल्प में आपकी पर्सनॉलिटी सदा ही महान रही है। ... आपका गायन शास्त्रों में होता है और शास्त्रों को कितना रिगार्ड देते हैं। ... तो अपनी पर्सनॉलिटी की स्मृति सदा इमर्ज स्वरूप में रखो।"

अ.बापदादा 6.4.95

"पवित्रता की पर्सनॉलिटी को सदा इमर्ज रूप में स्मृति में रखो। ... स्मृति ही समर्थी का आधार है और जहाँ समर्थी है, वहाँ माया का आना असम्भव है। ... मायाजीत बनने का सहज साधन है, अपनी रुहानी पर्सनॉलिटी को सदा स्मृति स्वरूप में रखो।" अ.बापदादा 6.4.95

श्रीमत और जाति-पाति, देश-धर्म, भाषा आदि का भेद

हम सभी एक परमात्मा के बच्चे भाई-भाई और प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हैं, एक ही ईश्वरीय परिवार या विश्व-परिवार के भाती हैं और विश्व में एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एकमत की स्थापना कर रहे हैं, इसलिए हमारे अन्दर इन बातों के आधार पर कोई भेद नहीं होना चाहिए। जब ये भेद मिटेगा तब ही हम इस ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे, इसके लिए बाबा ने हमको देही-अभिमानी बनकर इस भेद को मिटाने की श्रीमत दी है और आपस में आत्मिक एवं अलौकिक प्रेम जाग्रत करने की श्रीमत दी है।

"थोड़ा भी किसी आत्मा से प्यार रखेंगे तो फिर जास्ती बढ़ता जायेगा, उनकी याद आती रहेगी। इसलिए इससे भी पार जाना है। ... देही-अभिमानी बनो तो जात-पात का सब भेद निकल जायेगा। ... सतयुग में कोई भेदभाव नहीं होगा।" सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

श्रीमत और विविधि विषय

"यूथ के परिवर्तन का एक बुक बनाओ, जिसमें उनके नाम, स्थान और परिवर्तन, उसका प्रैक्टिकल लिखत हो, जो गवर्मेन्ट को दिया जाये। ... यूथ का नाम, स्थान, परिवर्तन शार्ट में हो।"

अ.बापदादा 30.11.05

"डबल विदेशी यह दृढ़ता की अण्डरलाइन बार-बार करते जाओ। बाकी बापदादा खुश है कि वृद्धि भी कर रहे हैं और सेवा और स्व के ऊपर अटेन्शन भी है ... बीच-बीच में थोड़ा टेन्शन भी है, वह समाप्त करना है।" अ.बापदादा 30.11.05

"आप को देखकर उमंग-उत्साह आता है ना। ... माइक भी हो और माइट भी हो, ऐसा गुलदस्ता निकालो। फिर वह ग्रुप सेवा करने के निमित्त बनेगा। वह माइक बनेगा और आप माइट बनेंगी। उनके जिगर से निकले - बाबा, तब प्रभाव पड़ेगा।"

अ.बापदादा 30.11.05

"अलबेलापन भी कई प्रकार का आता है... अलबेलापन की लिस्ट निकालना ... अलबेलापन दृढ़ता नहीं लाता है और दृढ़ता सफलता का साधन है। इसलिए संकल्प तक ही रह जाता है, स्वरूप में नहीं आता।" अ.बापदादा 30.11.05

"हर एक वर्ग के कोई ऐसे एग्जॉम्पुल चाहिए जो माइक भी हों और माइट भी हों, जिनका अनुभव सुनकर औरों को भी उमंग आ जाये। ... पहले दिल्ली में ऐसा वायुमण्डल पैदा करो।" अ.बापदादा 30.11.05

"सदा फरिश्ता स्वरूप का सम्पूर्ण लक्ष्य सामने रखो। ... जैसे अपना स्थूल स्वरूप सदा याद रहता है, वैसे अपना फरिश्ता स्वरूप सदा ही स्पष्ट सामने हो।" अ.बापदादा 16.3.92

"हर संगम परिवर्तन की प्रेरणा देने वाला है। संगमयुग विश्व-परिवर्तन की प्रेरणा देता है। बाप और बच्चों का संगम सर्वश्रेष्ठ भाग्य एवं श्रेष्ठ प्राप्तियों की अनुभूति कराने वाला है और वर्ष का संगम नवीनता की प्रेरणा देने वाला है।" अ.बापदादा 31.12.87

सम्पूर्णता, कर्मातीत, बाप समान ... एक ही स्थिति के पर्यायवाची शब्द हैं। समझाने के लिए बाबा ने भिन्न-शब्दों में उनका वर्णन किया है।

"यह राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ है। इसका क्रियेटर है मात-पिता, ततत्वम्। तुम बच्चों को यज्ञ की बड़ी सम्भाल करनी है, यज्ञ के लिए बहुत रेस्पेक्ट रहनी चाहिए।... कितना लव होना चाहिए। ... पूरा ज्ञान न होने के कारण इतना रिगार्ड नहीं है।"

सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

"किसको बड़ा युक्ति से समझाना है, जो सर्प भी मरे और लाठी भी न टूटे। बाप कहते हैं - चूहे से भी गुण उठाओ। चूहा काटता ऐसी युक्ति से है जो खून भी निकलता है परन्तु पता बिल्कुल नहीं पड़ता है।" सा.बाबा 20.02.06 रिवा.

"चिटकी लिखना कोई बड़ी बात नहीं है। अभी मस्तक पर दृढ़ संकल्प की स्याही से लिख दो। ... करना ही है, जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जाये - ऐसा दृढ़ संकल्प ही बाप

समान सहज बनायेगा।”   अ.बापदादा
18.1.93

“बिजी रहने से सहज निर्विघ्न बन जाते हैं। ... जैसे कर्म का टाइम-टेबल रोज़ बनाते हो, ऐसे मन-बुद्धि का टाइम-टेबल बनाओ।”   अ.बापदादा 18.02.93 पार्टी 3

“सतयुग में कर्म करते भी कर्म-बन्धन नहीं बनता। कर्म, अकर्म, विकर्म की गति तो परमात्मा ही समझा सकता है। वही विकर्मों से छुड़ाने वाला है। ... तुम यहाँ आये हो हिसाब-किताब चुक्तू करने। ऐसे नहीं कि यहाँ आकर भी हिसाब-किताब बनाते जाओ और सजा खानी पड़े।”   सा.बाबा
30.12.05 रिवा.

“पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण, फर्स्ट प्रिन्स। श्री नारायण तो बाद में बनता है, जब बड़ा होता है। वह भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं। उनके भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। ... हिसाब तो बच्चों को करना है ना। पूरे 84 जन्म, 5000 वर्ष श्रीकृष्ण के ही कहेंगे। ... मैं कल्प-कल्प उसी ही तन में आता हूँ, जिसका आदि से अन्त तक पार्ट है।”   सा.बाबा 20.9.06
रिवा.

“ब्रह्मा बाप ब्रह्मा बना ही तब जब बाप-दादा कम्बाइण्ड हुए। परमात्म प्रवेशता के साथ ही ब्रह्मा का कर्तव्य शुरू हुआ। ... अव्यक्त पालना सहज ही शक्तिशाली बनाने वाली है। ... अच्छाई को स्वयं प्रति और दूसरों के प्रति कार्य में लगाओ। यहाँ खर्चना अर्थात् बढ़ाना है।”
अ.बापदादा 18.1.94 दादियों
से

“यह है संजीवनी बूटी, जो अपने पास रखनी है और औरों को भी देनी है, सुरजीत करने के लिए। ... यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह भी नॉलेज बुद्धि में रखनी है।”
सा.बाबा 4.9.06
रिवा.

“अनेक बार के विमित्त बने हुए विजयी आत्मा हैं ... ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार हैं - “अटेन्शन और अभ्यास” ... अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं रखना।”

अ.बापदादा 22.1.90

श्रीमत का आकार-प्रकार, विधि-विधान

स्पष्ट शब्दों में भी बाबा ने श्रीमत दी है, ब्रह्मा बाबा और निमित्त भाई-बहनों के जीवन से भी स्पष्ट किया है। देश-काल परिस्थितयों के अनुसार भी दी है

बाप राय देते हैं - अपनी पास्ट की जीवन कहानी, जो कोई पाप किये हों, जो दिल को खाते हैं, वे सब बाप को लिखकर दो तो तुम्हारा आधा माफ हो जायेगा। जो दिल में खाता है, उसे बाप को लिखकर देने से, उससे तुम छूट जायेंगे।

श्रीमत और समर्पित जीवन में

बाबा ने समर्पित जीवन का महत्व बताया है, जो इस जीवन के महत्व को अनुभव करता है, उसके लिए ये जीवन संसार की किसी सम्पदा और पद से महत्व पूर्ण है।

श्रीमत से सम्बन्धित अन्य विशेष महावाक्य

श्रीमत और निश्चय

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने जीवन के हर क्षेत्र और समाज के वर्ग के लिए श्रीमत दी है, फिर भी देश-काल-परिस्थिति के आधार श्रीमत का निर्णय करना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है, जिसके आधार पर ही वह उस देश-काल-परिस्थिति में विजयी बनता है। जो जितना परमात्मा और उनके द्वारा दी गई श्रीमत के विषय में निश्चयबुद्धि होगा, वह उतना ही श्रीमत का समय पर यथार्थ निर्णय कर सकेगा और उनमें विजयी होगा। इसीलिए कहा गया है - निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

"सूक्ष्मवतन में ट्रिबुनल बैठती है, सजायें मिलती हैं। सज़ायें खाकर पवित्र बन ऊपर घर चले जाते हैं। ... पूछते बाबा स्वर्ग में क्या-क्या होगा ? बाबा कहते हैं - बच्चे वह सब आगे चलकर देखना। पहले तुम बाप को जानो और पतित से पावन बनने की धुन में रहो। स्वर्ग में जो होना होगा सो होता रहेगा।" सा.बाबा 8.11.06 रिवा.

"बच्चों को अच्छे कर्म भी करने हैं। बाप की याद में रहने से कब बुरा कर्म होगा ही नहीं। ... एक-दो के नाम-रूप में फंस मरते हैं। यहाँ तुम्हारा जिस्मानी प्यार नहीं होना चाहिए। कोई से भी लेना-देना नहीं है। ... ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है तो उनके द्वारा सब कुछ करना है। ... इनके हाथ में आया गोया शिवबाबा के हाथ में आया। सेन्टर भी खोलना है तो थ्रू इनके खोलो।"

सा.बाबा 8.11.06 रिवा.

श्रीमत और विचार-सागर मन्थन

"जब यहाँ आते हो दुनिया के सब ख्यालात छोड़कर आओ।... तुमने कलियुग को छोड़ दिया है, अब तुम संगमयुग पर हो। मधुबन जो खास है, यह है संगम। इसलिए मधुबन का गायन है। यहाँ इस मुरली का ही सुमिरन करना है। जो सुनते हो, उसे रिपीट करो और विचार-सागर मन्थन करो।"

सा.बाबा 9.11.06 रिवा.

"बाबा का कितना ख्याल चलता रहता है। ख्यालात करते-करते नीद ही फिट जाती है। विचार सागर मन्थन तो सबको करना चाहिए ना।... इसमें बड़ी विशाल बुद्धि से विचार सागर मन्थन करना होता है।" सा.बाबा 17.11.06 रिवा.

"कोई शरीर छोड़ते हैं तो जाकर दूसरा पार्ट बजायेंगे, इसमें रोने से क्या होगा। ... यह समझ में आता है कि जैसा-जैसा आज्ञाकारी बच्चा होगा, उस अनुसार जरूर अच्छे घर में जन्म लिया होगा। ... जो जैसा कर्म करते हैं, ऐसे घर में जाकर जन्म लेते हैं। ... इसमें बड़ी विशाल बुद्धि से विचार सागर मन्थन करना होता है।" सा.बाबा 17.11.06 रिवा.

"भिन्न-भिन्न युक्तियां विचार सागर मन्थन करने की निकालनी चाहिए और बाबा को बताना चाहिए कि बाबा इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं और हमने इस प्रकार से समझाया। फिर बाबा भी ऐसी प्वाइन्ट सुनायेंगे, जो उनको असर पड़े।" सा.बाबा 25.11.06 रिवा.

"वहाँ तो सब पवित्र होंगे। राजा-रानी। वहाँ कोई बहुत वज़ीर नहीं रहते।... श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनेंगे। ... अभी तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनना है।" सा.बाबा 11.11.06 रिवा.

"कोई पूछते हैं - बाबा, धन्धे में झूठ बोलना पड़ता है। झूठ बोलने से थोड़ा पाप बनेंगे। फिर बाप को याद करते रहेंगे तो वह पाप कट जायेगा। हर बात में पूछते रहो।"

सा.बाबा 11.11.06 रिवा.

"कदम आगे बढ़ाने का पुरुषार्थ जरूर करना चाहिए। कदम कब पीछे नहीं आना चाहिए।... सबको बताना है कि बाप कहते हैं - मुझे याद करो। देहधारियों को याद करने से विकर्म बनेंगे।"

सा.बाबा 13.10.06 रिवा.

"यह नॉलेज जिनकी बुद्धि में टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी।... ज्ञान से तुम्हारी बुद्धि भरपूर होनी चाहिए। ऐसी कोई चीज नहीं, जिसको तुम नहीं जानते हो।... जब तुम्हारी बुद्धि सतोप्रधान बन जायेगी, तब तुम्हारी कर्मातीत अवस्था हो जायेगी।"

सा.बाबा 14.10.06 रिवा.

"सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे और फिकर से फारिग हो जायेंगे।... नॉलेज है सोर्स आफ इन्कम। यह नॉलेज भी है और धन्धा भी है। जो जितना पढ़ता है, उसकी उतनी इन्कम होती है।" सा.बाबा 14.10.06 रिवा.

"ड्रामानुसार बाप को आना ही संगमयुग पर है।... यह कोई नहीं लिखते कि बरोबर परमात्मा ब्रह्मा तन द्वारा भारत को फिर से श्रेष्ठाचारी, सतयुगी दुनिया बना रहे हैं। यथार्थ रीति कोई समझते नहीं

हैं।... बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायें, और कोई नया विकर्म नहीं करो।"

सा.बाबा 16.10.06 रिवा.

"बाप आया है पतितों को पावन बनाने। बाबा कहते हैं - तुम्हारा भी यही धन्धा है। रात-दिन यही चिन्तन करो कि हम पतितों को पावन बनने का रास्ता कैसे बतायें।"

सा.बाबा 16.10.06 रिवा.

"श्रीमत पर चलेंगे, बहुतों को रास्ता बतायेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। अपने लिए ही सर्विस करनी है। जो करेगा, सो पायेगा। तो पुरुषार्थ करना चाहिए।... शरीर निर्वाह तो चाहे हजार से करे, चाहे 10 रुपये से करे।" सा.बाबा 16.10.06 रिवा.

"राजाई वालों की ही माला बनती है। आठ दाने में जाओ, 8 में नहीं तो 108 में जाओ। कम से कम 16108 में तो जाओ। यह है ही राजयोग। बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए।"

सा.बाबा 17.10.06 रिवा.

"अभी तो मैं डायरेक्ट आकर भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। इसमें जो कुछ खर्चा लगता है, वह बच्चों का ही लगता है। बच्चों को ही कहेंगे खर्चा करना है। ... इनमें प्रवेश होकर इनसे सबकुछ कराया। यह तो झट स्वाहा हो गया। सबकुछ जो इनके पास था, सब दे दिया। बाबा बोले - बेगर बन जाओ तो ऐसा प्रिन्स बनाऊंगा। ... झट मुट्ठी खोल दी।" सा.बाबा 17.10.06 रिवा.

"सपूत बच्चे माँ-बाप को फॉलो करते हैं। बाप पावन बने, बच्चा न बनें तो वह कपूत ठहरा। इसमें तो नष्टोमोहा बनना होता है। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। ... अब बाप से वर्सा पाना है नई दुनिया का तो पतित मत बनो।" सा.बाबा 17.10.06 रिवा.

"यहाँ काशी कलवट खाने की बात नहीं है। यह है जीते जी मरना और बाप की श्रीमत चलना। ... अब बाप चेतन्य में आकर कहते हैं - बच्चे मेरा बनो। मैं आया हूँ तुमको घर ले चलने। पवित्र बने बिगर तो चल नहीं सकते।" सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

"भक्ति में कुम्भ मेले पर जाते, दान-पुण्य आदि करते हैं। अब बाप कहते हैं - यह सब बातें छोड़ो। तुमको ज्ञान सागर मिला है, फिर और कहाँ जायेंगे। ... बाबा से पूछते - विनाशी धन सफल कैसे करें ? ... भारत की सेवा में लगाए उसको सफल कर दो, कोई सेन्टर खोल दो।"

सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

"बाबा के पास ऐसे-ऐसे बच्चे भी हैं, जो कहते बाबा जब जरूरत पड़े तो मुझे याद करना, हम मदद करने के लिए हाज़िर हैं।... बाबा कहते - हम किसको याद नहीं करते, जो करना है सो करो। हम तो दाता हैं, हम आये ही हैं भारत को स्वर्ग बनाने, तुम भी स्वर्ग में जायेंगे। जो जितना करेंगे, उतना पायेंगे।" सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

"स्वर्ग बनाने में जो जितना करेंगे, उतना पायेंगे।... गायन है - साँवलशाह की हुण्डी सकारी। इनको कोई परवाह नहीं है। बाबा कहते हैं - हुण्डी आपेही भरेगी। तुम बच्चों को श्रीमत पर चलना है, इसमें ही कल्याण है। अकल्याण कभी मत समझो।" सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

"बेहद के बाप का बनकर फिर पाप किया तो एक का सौगुणा दण्ड हो जायेगा। शिवबाबा कहते हैं - मैं धर्मराज से बहुत कड़ी सजायें दिलवाता हूँ। ... इसमें बड़े कायदे हैं। जज का बच्चा पाप करे तो जज कुछ कर थोड़ेही सकेंगा। उसकी सजा भोगनी ही पड़े।" सा.बाबा 18.10.06 रिवा.

"तुम शिवबाबा की सन्तान हो, बहुत ऊंच ते ऊंच बाप के बच्चे हो। ... तुम जानते हो हम वह हमारा बाप, टीचर, सत्गुरु है। हमको उनकी मत पर जरूर चलना है। ... सारा दिन आपस में यही रूह-रुहान होनी चाहिए। सिवाए इस ज्ञान के बाकी सब हैं सत्यानाश करने वाली बातें। ... यह रुहानी सर्विस भी करनी है।" सा.बाबा 19.10.06 रिवा.

"सारा दिन यही तात लगी रहे कि कोई हो, जिसे यह रास्ता बतायें। ... तुम आये ही हो पढ़ने और पढ़ाने। टाइम वेस्ट करने या सिर्फ रोटियां पकाने तो नहीं आये हो। सारा दिन बुद्धि सर्विस में चलनी चाहिए।" सा.बाबा 19.10.06 रिवा.

"बाप की शरण लेते ... इसमें नष्टोमोहा होना पड़े। समझना है - हम मर गये, बाप के बने गोया इस दुनिया से मर गये। फिर शरीर का भान नहीं रहता। ... देह सहित सब भूल जाना है।"
सा.बाबा 20.10.06 रिवा.

"तुम सबका आधार मुरली पर है। मुरली तुमको नहीं मिलेगी तो तुम क्या करेंगे। ... बाप समझाते हैं - पुरुषार्थ करो और औरों के लिए भी युक्ति रचो।" सा.बाबा 23.10.06 रिवा.

"मूलवतन का चित्र ऐसा बनाना चाहिए, जिसमें छोटी-छोटी आत्मायें स्टार्स मिसल दिखाई पड़ें। ... मुख्य चीज है ही त्रिमूर्ति, गोला और स्वर्ग-नर्क के गोले। यह पहले-पहले समझाने के लिए बहुत जरूरी हैं। ... यह ज्ञान बाप के सिवाए और कोई समझा न सके।"
सा.बाबा 24.10.06 रिवा.

"जब आत्माओं का ऊपर से आना बन्द हो जायेगा, तब विनाश होगा। फिर सभी आत्माओं को वापस जाना होगा। पापात्मायें और पुण्यात्मायें सब इकट्ठी जाती हैं। ... संगमयुग पर सारी बदली होती है। सारा ड्रामा बच्चों को बुद्धि में रखना चाहिए। ... ये सब बातें तुमको समझना और औरों को समझाना है।" सा.बाबा 24.10.06 रिवा.

"श्रीमत पर चलना है। कदम-कदम पर बाबा से राय लेनी है। ... विकार में गये तो मरे। यह तो बाप के साथ प्रतिज्ञा की है ना। ... पवित्रता के लिए राखी बांधी जाती है, क्रोध के लिए राखी नहीं बांधी जाती है।" सा.बाबा 25.10.06 रिवा.

"बाप को याद करना गोया कमाई करना। इसमें आशीर्वाद क्या करेंगे। सब पर आशीर्वाद करें तो सब स्वर्ग में चले जायें। यहाँ तो अपनी मेहनत करनी है। ... जितना याद करेंगे, उतना राजाई मिलेगी।" सा.बाबा 25.10.06 रिवा.

"भक्त महिमा गाते हैं। तुम भी गाते थे। तुम अब महिमा नहीं गाते हो और न तुम्हारे लिए महिमा की जरूरत है। जो भगत करते हैं, वह तुम बच्चे नहीं कर सकते हो। ... बाप का बनकर बाप की श्रीमत पर चलना है। ... जो जितना पढ़ेगा, वह उतना ऊंच पद पायेगा। ... इसमें बड़ाई की वा महिमा की कोई बात नहीं है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। बाप भी आकर अपना पार्ट बजाते हैं।"

सा.बाबा 26.10.06 रिवा.

"सबकी बीमारी एक जैसी हो न सके। कर्म भी एक जैसे हो न सकें। तो कदम-कदम पर बाप से पूछना चाहिए। ... ड्रामा में मुझे भी पार्ट मिला हुआ है। पांच तत्वों को भी अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है, सो सबको बजाना है। धरती को उथलना है, विनाश होना है। ... बड़ा विचित्र ड्रामा है।"

सा.बाबा 26.10.06 रिवा.

"शिवबाबा का ड्रामा में बहुत अच्छा पार्ट है। हम भी बाबा के संग अच्छा पार्ट बजाते हैं। ... यह भी जानते हैं, जो ब्राह्मण बने थे, वे ही अब भी बनेंगे और ब्राह्मण बनकर फिर देवता बनेंगे। ... सबको अनादि पार्ट मिला हुआ है।" सा.बाबा 26.10.06 रिवा.

"हम अभी ब्राह्मण हैं, फिर देवता, क्षत्रिय बनेंगे। यह सारी भारत की ही बात है। और सब धर्म तो जैसे बाइ-प्लॉट्स हैं। ... बच्चों की बुद्धि में रहना चाहिए कि हम ब्राह्मण इस बेहद यज्ञ के रक्षक हैं। बाबा ने हमको निमित्त बनाया है।" सा.बाबा 27.10.06 रिवा.

"बाप कहते हैं - बच्चे चिन्ता उसकी की जाये, जो अनहोनी हो। हो गया सो ड्रामा में था, फिर उनका चिन्तन काहे को करें। ... तुमको कोई दुख के आंसू नहीं आना चाहिए। साक्षी होकर तुमको सारा खेल देखना है। जानते हो यह ड्रामा है, इसमें रोने की क्या दरकार है। पास्ट इज पास्ट। कब किसका विचार भी नहीं करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सबको रास्ता बताते रहो।" सा.बाबा 27.10.06 रिवा.

"रोज़ सवेरे उठकर विचार सागर मन्थन करो। अपना टीचर आपेही बनकर पढ़ो। ... तुम बच्चों को यह झाड़, चक्र देखने से ही बुद्धि में सारा ज्ञान आ जाना चाहिए।"

सा.बाबा 27.10.06 रिवा.

"भारत में ही डबल सिरताज वालों की पूजा होती है। लाइट है पवित्रता की निशानी। ... अब तुम पुरुषार्थी हो, इसलिए तुम पर लाइट नहीं दे सकते हैं। देवी-देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं।... अन्दर में यह नशा रहना चाहिए कि हमको परमपिता परमात्मा डबल सिरताज बनाते हैं।... सिंगल ताज वाले डबल ताज वालों को पूजते हैं।" सा.बाबा 28.10.06 रिवा.

"तुम बच्चों को कितना नशा रहना चाहिए। हम गॉड फादरली स्टूडेण्ट हैं, ईश्वर हमको पढ़ाते हैं। ... ब्रह्मा द्वारा यह राजधानी स्थापन हो रही है। हम हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारियां।" सा.बाबा 28.10.06 रिवा.

"मैं हूँ गरीब निवाज़। कोई-कोई सेन्टर पर मेहतर भी आते हैं तो कोई पर मुसलमान भी आते हैं। बाप कहते हैं - देह के सब धर्म छोड़ो। ... यहाँ तो आत्माओं को परमात्मा पढ़ाते हैं।"

सा.बाबा 28.10.06 रिवा.

"साधू-सन्त कह देते - आत्मा निर्लेप है। लेकिन आत्मा ही कर्मों अनुसार दूसरा जन्म लेती है। आत्मा ही अच्छा वा बुरा कर्म करती है... सतयुग में कर्म अकर्म होते हैं, वहाँ विकर्म होता नहीं है। वह है पुण्यात्माओं की दुनिया।" सा.बाबा 29/31.10.06 रिवा.

"अभी रामराज्य की स्थापना, रावण राज्य का विनाश होता है। मैं जो युक्ति सिखलाता हूँ, जो सीखते हैं, वे ही जाकर नई दुनिया में राज्य करते हैं। ... सर्विसएबुल बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान टपकता रहता है।" सा.बाबा 30.10.06 रिवा.

"अभी तुम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हो, तो उनकी श्रीमत पर चलना है। ... बाप की श्रीमत पर न चलने से भूलें होती रहेंगी। श्रीमत पर चलने से खुशी का पारा चढ़ेगा। ... अन्दर की खुशी चेहरे से भी दिखाई पड़ती है।" सा.बाबा 30.10.06 रिवा.

"बाप को और नई दुनिया को याद करो तो तुम नई दुनिया में चले जायेंगे, फिर अगर अच्छी तरह पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे तो राजा-रानी बन सकते हैं।" सा.बाबा 1.11.06 रिवा.

"यह भारत अविनाशी खण्ड है क्योंकि अविनाशी बाप परमपिता परमात्मा की जन्म-भूमि है। ... परन्तु ड्रामा अनुसार किसको पता नहीं है कि यह हमारे गॉड फादर अथवा मात-पिता, पतित-पावन सर्व के सद्गतिदाता का जन्म स्थान है।... तुमको यह नशा रहना चाहिए कि श्रीमत पर हम कल्प-कल्प भारत को पैराडाइज़ बनाते हैं। ... यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है।"

सा.बाबा 3.11.06 रिवा.

"तुम्हारा यह सर्वोत्तम कुल है। तुम ब्राह्मण चोटी हो ... श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है देवी-देवता धर्म, उनसे भी ऊंच तुम ब्राह्मण हो, जो बाप के साथ बैठे हो।... अब है संगमयुग। इन बातों को अच्छी तरह समझकर फिर धारण करना चाहिए।" सा.बाबा 3.11.06 रिवा.

"21 जन्म तुम एवरहेल्दी बनेंगे, तो ऐसे सर्जन की दवाई अर्थात् श्रीमत पर क्यों नहीं चलना चाहिए।... बाप तुमको श्रीमत देकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। तो तुम श्रीमत पर क्यों नहीं चलते हो।... ऐसे बाप की आज्ञा न मानना, वह तो कपूत ठहरा।" सा.बाबा 4.11.06 रिवा.

"सबकी सद्गति करने वाला एक ही शिवबाबा है, उनका फोटो निकाल नहीं सकते। वह है निराकार, उनको दिव्य दृष्टि से ही देख सकते हैं। बाकी उनको जाना जा सकता है।"

सा.बाबा 4.11.06 रिवा.

"जैसे आत्मा की स्थूल कर्मेन्द्रियां आत्मा के कन्ट्रोल से चलती हैं .... ऐसे मन-बुद्धि-संस्कार, जो आत्मा की सूक्ष्म शक्तियां हैं, उनको जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें, जितना समय चाहें, ऐसे कन्ट्रोल करने की पॉवर आई है?" अ.बापदादा 7.3.90

"जैसे आपके दिल में उनके प्रति श्रेष्ठ भावना होती है, वैसे ही आपकी शुभ भावना का रिटर्न दूसरे द्वारा भी प्राप्त होता है। जैसे बाप के प्रति अटूट, अखण्ड, अटल प्यार है, श्रेष्ठ भावना है, निश्चय है, ऐसे ब्राह्मण आत्मायें नम्बरवार होते हुए भी उनके प्रति आत्मिक प्यार अटूट-अखण्ड है?"

अ.बापदादा 7.3.90

"आत्मा का श्रेष्ठ आत्मा के भाव से आत्मिक प्यार होता है, उसमें परसेन्टेज नहीं होती है। कैसे भी संस्कार हों, चलन हो लेकिन ब्राह्मण आत्माओं का सारे कल्प में अटूट सम्बन्ध है। सब ईश्वरीय परिवार के हैं। बाप ने हर आत्मा को विशेष चुनकर ईश्वरीय परिवार में लाया है। ... बाप को सामने रखने से हर आत्मा से भी आत्मिक अटूट प्यार हो जाता है।" अ.बापदादा 7.3.90

"बाप ने हर आत्मा को विशेष चुनकर ईश्वरीय परिवार में लाया है। ... सदा बुद्धि में रखो, जिसको बाप ने पसन्द किया है, अवश्य उसमें कोई विशेषता है।... बाप को पहचानने की बुद्धि, बाप का बनने की हिम्मत, बाप से प्यार करने की विधि, जो... में भी नहीं है लेकिन उस आत्मा में है।"

अ.बापदादा 7.3.90

"बाप को फॉलो करो। जब विशेष आत्मा समझकर किसको भी देखेंगे, सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे तो बाप को सामने रखने से आत्मा में स्वत: ही आत्मिक प्यार इमर्ज हो जाता है... आत्मिक स्नेह से सदा सभी द्वारा सद्भावना, सहयोग की भावना स्वत: ही आपके प्रति दुआओं के रूप में प्राप्त होगी।" अ.बापदादा 7.3.90

"तीन शब्द - व्हाई, व्हाट, वान्ट से कन्ट्रोलिंग पॉवर कम हो जाती है। ये तीन शब्द खत्म कर एक शब्द बोलो। वाह। वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा।" अ.बापदादा 7.3.90

"जैसे बाप से सम्बन्ध रखना आवश्यक है, ऐसे ईश्वरीय परिवार से सम्बन्ध रखना भी अति आवश्यक है। ... यह भी पास विद् ऑनर की निशानी नहीं है। क्योंकि आप सन्यासी आत्मायें नहीं हो।... विश्व से किनारा नहीं, विश्व-कल्याणकारी हो। ब्राह्मण आत्माओं की तो बात छोड़ो लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाले आप हो।" अ.बापदादा 7.3.90

"किसी साथी से किनारा करके अपनी अवस्था को अच्छा बनाकर दिखाऊं, यह संकल्प भी नहीं करना।... अगर एक बार किनारा करने की आदत अपने में डाली तो यह आदत आपको कहाँ भी टिकने नहीं देगी।" अ.बापदादा 7.3.90

"माया के भी नॉलेजफुल हो... टीचर्स माया के नॉलेजफुल हो ? ... टीचर्स सदा स्वयं हिम्मत में रहने वाली और दूसरों को हिम्मत देने के निमित्त बनने वाली हैं। ... सफल टीचर की पहली निशानी होगी कि वह कभी भी हिम्मतहीन नहीं बनेंगी। जो खुद हिम्मत में रहता है, वही दूसरों को भी हिम्मत दे सकता है।" अ.बापदादा 7.3.90

"सदा ये गीत गाते रहो - "पाना था सो पा लिया, अब काम क्या बाकी रहा!" यह गीत आपका है। बाप ने ब्राह्मण जन्म होते ही सबको बड़े-ते-बड़ा खज़ाना "खुशी" दे दी। यह ब्राह्मण जन्म की गिफ्ट है।... बाप के खज़ानों पर सबका पूरा अधिकार है।" अ.बापदादा 7.3.90 पार्टी

"एक हैं जो खज़ाने को अपना बना लेते हैं और हर समय यूज़ करने के अनुभव से खुशी और नशे में रहते हैं।... दूसरे हैं जो खज़ाना मिला है, मेरा है, इस खुशी में रहते हैं लेकिन उसको कार्य में नहीं लगाते हैं... जमा करने और यूज़ करने की अनुभूति में अन्तर है।" अ.बापदादा 13.3.90

"नये बच्चों को बापदादा स्नेह का वरदान देते हैं कि सदा अपने मस्तक पर बाप का हाथ अनुभव करते चलो। ... यह वरदान का हाथ सदा हर बात में आपकी सेफ्टी का साधन है। सबसे बड़े ते बड़ी सिक्यूरिटी यही है।" अ.बापदादा 13.3.90

"टीचर्स को दुआयें भी ज्यादा मिलती हैं तो अपने ऊपर ध्यान भी उतना ही देना आवश्यक है। ड्रामा अनुसार यह भी विशेष भाग्य है।... सदा इस भाग्य को बढ़ाते चलना। इसको कहते हैं योग्य आदर्श टीचर।... बापदादा सदा अमृतवेले "वाह बच्चे वाह" यह दुआयें देते हैं।"

अ.बापदादा 13.3.90

"जैसे बाप के समीप हो, वैसे बाप के साथ-साथ परिवार के भी समीप हो क्योंकि यह परिवार भी इस क्ल्प-कल्प के मिलन की पहचान से, परिचय से अभी मिलता है।... योग परिवार से नहीं लगाना है लेकिन एक-दो के समीप रहना है। ... बापदादा सदा हरेक की विशेषता को देख हर्षित रहते हैं।"

अ.बापदादा 13.3.90 पार्टी 1

"बिज़ी रहने से घबराना नहीं। यह गुड साइन है।... यह बिज़ी रहना अर्थात् मायाजीत बन जाना। ... बापदादा डबल विदेशियों को तन-मन-धन सब सफल करने में बिज़ी देख खुश होते हैं।"

अ.बापदादा 13.3.90 पार्टी

"जब जीवनमुक्त का अभी फाउण्डेशन पक्का होगा, तब तो वह 21 जन्म चलेगा। जितना अपने में निश्चय रखेंगे, उतना ही नशा होगा। बाप में निश्चय, आप में निश्चय और फिर ड्रामा में भी निश्चय। तीनों निश्चय में पास होना।" अ.बापदादा 13.3.90 पार्टी 2

"जहाँ सर्वशक्तिवान बाप साथ है, वहाँ सर्व शक्तियां भी साथ होंगी ना। जहां सर्वशक्तियां हैं, वहाँ मेहनत करने की आवश्यकता नहीं। ... हर कर्म में वरदाता का वरदान मिला हुआ है। जहाँ वरदान होता है, वहाँ मेहनत नहीं होती।" अ.बापदादा 13.3.90 पार्टी 3

"चाहे धर्म नेताओं के रूप में, चाहे महात्माओं के रूप में, चाहे पदमपति आत्माओं के रूप में किसी भी आत्मा का इतना भाग्य नहीं है, जितना आप ब्राह्मणों का भाग्य है।... बापदादा सभी बच्चों को सदा ही भाग्य के स्मृति स्वरूप में देखना चाहते हैं।... कभी-कभी मर्ज क्यों हो जाता है?"

अ.बापदादा 3.4.97

"भाग्य का निश्चय और नशा कभी-कभी मर्ज क्यों हो जाता है? ... सोचना-संकल्प करना, बोलना-वर्णन करना और प्रैक्टिकल में कर्म में लाना - तीनों का बैलेन्स कम है। ... क्लास अच्छा करायेंगे, भाषण अच्छा करेंगे, जिनको सुनकर बाबा मुस्कराते रहते हैं। ... धारणा स्वरूप में कम हो जाता है।" अ.बापदादा 3.4.97

"सदा याद रखो - मेरा निजी संस्कार कौनसा है?... क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है। क्रोध को देखकर बाप के नाम की बहुत ग्लानि होती है। ... एक है बाहर का क्रोध, दूसरा है - ईर्ष्या, द्वेष, घृणा। ... अभी से कहना - शान्त स्वरूप में रहना और सहनशील बनना मेरा संस्कार है।" अ.बापदादा 3.4.97

"ज्ञान, योग, धारणा और सेवा इन चारो सब्जेक्ट का सार दो शब्द हैं - एक बाप ही मेरा संसार है और दूसरा हर गुण, हर शक्ति मेरा निजी संस्कार है। तो संसार और संस्कार ये दो शब्द याद रखना।" अ.बापदादा 3.4.97

"विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है, अचानक होना है। ... वायदा पूरा करके दिखाना - 9हम सब पुराने संस्कार खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवर-रेडी आत्मायें हैं" ... ... अभी ज्ञान-रतनों से खेलो, गुणों से खेलो, शक्तियों से खेलो, मिट्टी से नहीं। किसी भी

प्रकार का देहाभिमान मिट्टी से खेलना है।" अ.बापदादा 3.4.97

"टीचर्स बहुत आई हैं ... एक गीत बजाते हो - तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे कांटो से भी प्यार। ... अगर कांटों को भी प्यार से सम्भाल से उठाओ तो कांटे भी प्यारे लगते हैं।... कांटे अर्थात् ये छोटी-छोटी बातें बहुत अनुभवी बनाती हैं।... सिर्फ घबराना नहीं, घबराना कमजोरों का काम है। आप तो बहादुर हो।" अ.बापदादा 3.4.97

"टीचर्स न छोटी दिल करो और न छोटी-छोटी बातों में घबराओ।... कोमल नहीं बनना, कमाल करके दिखाना।... सदा मुस्कराते रहना तो आपका पूज्य स्वरूप में यादगार बन जायेगा।"

अ.बापदादा 3.4.97

"मुझे याद करो, सो भी अजपा। जैसे कन्या की शादी होती है तो क्या वह जाप करती है? याद में स्वभाविक रहती है।... तुम्हारी सगाई हुई है परमात्मा के साथ।" सा.बाबा 6.11.06 रिवा.

"सतयुग में 9 लाख होंगे तो जरूर बाकी इतने सब मनुष्य विनाश होंगे।... महाभारी महाभारत लड़ाई नामीग्रामी है। नेचुरल केलेमिटीज भी होनी हैं।" सा.बाबा 7.11.06 रिवा.

"बाबा का सारा दिन ख्याल चलता रहता है। ... सर्विस का शौक रखना चाहिए। खर्चा तो करना ही है। बाकी तुमको किससे भीख मांगने की दरकार नहीं है। आपही हुण्डी भर जायेगी। ड्रामा में नूँध है। सेवा के लिए बच्चों की बुद्धि चलनी चाहिए।" सा.बाबा 7.11.06 रिवा.

"देहाभिमान में आकर गिर पड़ते हैं। शिवबाबा कहते - अगर ब्रह्मा की बेअदबी की तो गोया मेरी बेअदबी की। बाप-दादा दोनों इकट्ठे हैं। ... ब्रह्मा के बिना शिवबाबा से वर्सा कैसे लेंगे।... साकार की दिल से उतरे तो निराकार की दिल से भी उतर जाते हैं।" सा.बाबा 7.11.06 रिवा.

"परमात्म-प्यार का अनुभव कन्फ्यूज को सुरजीत कर देता है और उमंग-उत्साह के पंख फिर मिल जाते हैं। ... राज अमृतवेले अपने सामने सारा दिन किस स्मृति से उमंग-उएत्साह में रहें, उमंग-उत्साह की वे वैराइटी प्वाइन्ट्स इमर्ज करो।" अ.बापदादा 19.3.90

"सारा दिन बिन्दु याद करेंगे तो बोर हो जायेंगे ... मुझ जीरो का सारे कल्प में क्या-क्या पार्ट रहा है और इस समय क्या हीरो पार्ट है, किसके साथ पार्ट है, कितना समय और क्या-क्या पार्ट बजाना है - इस वैराइटी रूप से जीरो बन अपने हीरो पार्ट की स्मृति में रहो।" अ.बापदादा 19.3.90

"वैरायटी खज़ाने हैं, वैरायटी प्राप्तियां हैं, वैराइटी सम्बन्ध हैं, वैरायटी खुशी और उमंग-उत्साह की वैराइटी बातें हैं, उनको उसी विधि से यूज़ करो। बाप और आप यही सेफ्टी की लकीर है। यह लकीर ही परमात्म छत्रछाया है।" अ.बापदादा 19.3.90

"ब्रह्मा कुमार-कुमारी नाम तो सभी को पसन्द है।... रंगीन कपड़े पहनने की मना नहीं है लेकिन उसी वृत्ति से नहीं पहनों कि यह हमारा फॉरेन कल्चर है, यह मेरी पर्सनॉलिटी है ... लेकिन वह भी निमित्त बनी हुई आत्माओं से वेरीफाय कराओ।... जो ब्रह्मा बाप का कल्चर, वही ब्रह्मा कुमार-कुमारियों का कल्चर है।" अ.बापदादा 19.3.90

"बापदादा सभी बच्चों को रोज दो-तीन पेज का पत्र लिखते हैं... मुरली बापदादा का पत्र है ना!

मुरली में आपकी सब बातों का रेस्पाण्ड होता है।... सिर्फ बुद्धि को सदा केयरफुल और क्लीयर रखो।"
अ.बापदादा 19.3.90

"मन-बुद्धि को फ्री रखना माना माया को वेलकम करना।... टीचर्स वा नम्बरवन गॉडली स्टूडेण्ट्स की विशेषता है - मन-बुद्धि और शरीर से अपने को सदा बिज़ी रखना।"
अ.बापदादा 19.3.90

"अनगिनत बार बाप से यह अधिकार प्राप्त किया है - जब यह सोचते हो तो कितनी खुशी होती है ... नॉलेज को भी लाइट-माइट कहा जाता है। जिसमें फुल नॉलेज अर्थात् लाइट-माइट है, तो उसके पास माया आ नहीं सकती। ... स्वराज्य अधिकारी हो और फिर बनेंगे विश्व के मालिक। तो समय पर बालकपन का नशा और खुशी और समय पर मालिकपन का नशा और खुशी। ... तो बालक सो मालिक बनकर बाप खज़ाने सो मेरे खज़ाने समझकर खूब बांटो।"
अ.बापदादा 19.3.90

"फालो फादर गाया हुआ है। तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। जो अच्छी तरह से श्रीमत पर चलते हैं, उनको फॉलो करना चाहिए। जैसे यह (ब्रह्मा) बच्चा अच्छी तरह चल रहा है। लौकिक बच्चे राय पर नहीं चले तो कहा - तुम अपनी राह ले लो। रावण की मत पर चलने वाले और राम की मत पर चलने वाले इकट्ठा नहीं रह सकते।" सा.बाबा 18.11.06 रिवा.

"गृहस्थ व्यवहार में रहते उनसे भी तोड़ निभाओ। वास्तव में कायदे बहुत कड़े हैं। तुम जन्म-जन्मान्तर तो पापात्माओं को दान देते पापात्मा बनते रहे। अभी तुम पापात्मा को पैसा दे नहीं सकते परन्तु अगर दादे का वर्सा है तो देना पड़ता है। इसलिए बाप कहते हैं - पहले सब काम उतारकर फिर सरेण्डर हो जाओ। ऐसा भी कोटों में कोई ही निकलता है। फॉलो फादर करना है।"
सा.बाबा 20.11.06 रिवा.

"बहुत बच्चे हैं, जो बाप को पहचानते नहीं हैं। बाप के साथ धर्मराज भी है। बाप कहते हैं मेरी आज्ञा नहीं मानी, मेरी इन्सल्ट की तो धर्मराज बहुत सजायें देगा। डायरेक्ट हमारी या हमारे बच्चे की तुम अवज्ञा करते हो। ... इनकी इन्सल्ट करते हो तो कितनी सजायें खानी पड़ेंगी।"
सा.बाबा 20.11.06 रिवा.

"बाबा हमेशा समझाते हैं - ऐसे समझो कि शिवबाबा मुरली चलाते हैं, शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं। तो शिवबाबा की याद भी रहेगी और डर भी रहेगा।... सच बताने से आधा माफ हो जायेगा। ... श्रीमत पर चलते हैं तो फिर जबाबदार वह है।" सा.बाबा 21.11.06 रिवा.

"बच्चों का फर्ज है बेहद के बाप को याद करना।... तुम श्रीमत पर विश्व को स्वर्ग बनाते हो, इसलिए तुम्हारा गायन है, पूजा नहीं हो सकती। ... तुमको बड़ा शुद्ध अहंकार होना चाहिए। हम आत्मायें बाप की मत पर चलकर भारत को स्वर्ग बना रहे हैं।" सा.बाबा 22.11.06 रिवा.

"तुम जानते हो हमारा दुश्मन कोई मनुष्य नहीं है। हमारा दुश्मन रावण है। शादी करने के बाद कुमार-कुमारी भी पतित बनने से एक-दो के दुश्मन बन जाते हैं। ... काम विकार से ही पतित बने

हो, इसलिए काम महाशत्रु कहा जाता है।” सा.बाबा 22.11.06 रिवा.

“बाबा हर एक की नब्ज देखकर राय देते हैं क्योंकि बाप समझते हैं - मैं कहूँ ओर कर न सके तो ऐसी राय ही क्यों दूँ। इसलिए नब्ज़ देखकर ही राय देते हैं। राय लेने के लिए इनके पास तो आना पड़े। वह पूरी राय देंगे। सबको अपना पूछना है - बाबा इस हालत में हमको क्या करना चाहिए।” सा.बाबा 22.11.06 रिवा.

“कब किससे कोई डिबेट या शास्त्रवाद नहीं करना है।... उन बिचारों का भी कोई दोष नहीं है। वे इस नॉलेज को जानते ही नहीं हैं। यह है रुहानी नॉलेज, जो एक रुहानी बाप से ही मिलती है। ज्ञान का सागर वह है।” सा.बाबा 23.11.06 रिवा.

“जब कोई गीता आदि पर डिबेट करते हैं तो पहले-पहले उनसे यह बात पूछनी है कि ऊंचे ते ऊंचा भगवान कौन है ? ... सर्वशास्त्रमई शिरोमणि है गीता, वह है भगवान की गाई हुई।... भगवान होता है एक, 10 नहीं होते हैं। कृष्ण तो भगवान हो न सके।” सा.बाबा 24.11.06 रिवा.

“तुम अन्धों की लाठी बनो।... यह एक ही बड़ी भूल की है, जो परमात्मा को सर्वव्यापी कह दिया है। तुम सिद्ध कर बताओ कि वह सर्व का बाप है, पतित-पावन, लिबरेटर है।” सा.बाबा 24.11.06 रिवा.

“बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कोई भी धर्म वाले हों, बाप का सन्देश सबके लिए है। ... कोई को भी समझाने का शौक रहना चाहिए।... सर्विस में रहेंगे तो याद की यात्रा भूलेंगे नहीं।” सा.बाबा 25.11.06 रिवा.

“समझो इनसे कोई भूल हो जाती है तो भी उसको सुधारने के लिए ड्रामा में नूँध है। उससे भी फायदा ही निकलेगा क्योंकि यह बड़ा बच्चा है।... यह कहते हैं ऐसे करो तो कर देना चाहिए। ... नुक्सान की कोई बात नहीं। हर बात में कल्याण ही कल्याण है। अकल्याण भी ड्रामा में था।” सा.बाबा 27.11.06 रिवा.

“अबलाओं पर अल्याचार होते, चित्र फाड़ देते, कोई समय आग लगाने में भी देरी नहीं करेंगे। हम क्या करेंगे। अन्दर में समझते हैं भावी, बाहर से पुलिस आदि को रिपोर्ट करनी पड़ेगी। अन्दर जानते हैं कल्प पहले जो हुआ था, सो होगा। इसमें दुख की कोई बात नहीं।” सा.बाबा 27.11.06 रिवा.

“बाप तो सबको सावधानी देते हैं, किसकी इन्सल्ट नहीं करते। बच्चों में कोई भी छी-छी आदत नहीं होनी चाहिए... बहुत पुरुषार्थ करना है। लड़ाई के मैदान में सुस्त थोड़ेही होना चाहिए। बहुत खबरदारी रखनी है।” सा.बाबा 25.11.06 रिवा.

“धन की सेवा - समर्पित आत्मा अगर अपने अटेन्शन से यज्ञ के कार्य में एकॉनामी करती है तो जैसे वह धन की एकॉनामी वाला धन उनके नाम से जमा होता है और अगर कोई नुकसान करता है तो खाते में बोझ जमा होता है।... यज्ञ का एक-एक कणा मुहर के समान है।... दूसरी बात - अगर समर्पित आत्मा सेवा द्वारा दूसरों के धन को सफल कराती है तो उसमें से उसका भी शेयर जमा

होता है।"   अ.बापदादा 25.3.90

"मन्सा और वाचा इकट्ठी सेवा हो सकती है लेकिन वाचा सहज है और मन्सा में अटेन्शन देने की बात है। ... फिर कोई ऐसा उल्हना न दे कि हमको तो इशारा भी नहीं दिया गया कि यह भी होता है। उस समय बापदादा यह प्वाइन्ट याद करायेगा। ... तीनों प्रकार के खाते (मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन-मन-धन) और चारो (स्व-सेवा, विश्व-सेवा, मन्सा-सेवा और यज्ञ-सेवा) प्रकार की सेवा साथ-साथ करो।"   अ.बापदादा 25.3.90

"सेवा की विधि क्या अपनायेंगे ? ... कम खर्च बालानशीन। बापदादा हर कार्य के लिए आदि से अब तक यही विधि अपनाते रहे हैं कि न बहुत ऊंचा और न बिल्कुल सादा। बीच का हो। ... शार्ट भी हो, स्वीट भी हो और सार भी हो। कहाँ-कहाँ विस्तार में सार छिप जाता है।"

अ.बापदादा 25.3.90

"समय निश्चित होना चाहिए। बुद्धि थक जाती है, जिससे अमृतेला शक्तिशाली न होने के कारण जो कार्य दो गुणा होना चाहिए, वह एक गुणा होता है। ... सदा फ्रेश बुद्धि रहे तो फ्रेश बुद्धि से जो काम होगा वह एक घण्टे में दो घण्टे का काम कर सकते हो।"   अ.बापदादा 25.3.90

"सेवा का समय निश्चित हो और अमृतवेला शक्तिशाली हो।... सेवा बिज़ी रहने का साधन है ... सेवा खुशी बढ़ाती है, सेवा अनेक आत्माओं की दुआयें प्राप्त कराती है ... सेवा करो लेकिन अण्डरलाइन यह करना कि बर्डन वाली सेवा नहीं।... डबल लाइट होकर सेवा करो।"

अ.बापदादा 25.3.90

"टीचर्स कहने से कहाँ-कहाँ नशा चढ़ जाता है, इसलिए बापदादा निमित्त सेवाधारी कहते हैं ... सेवा के निमित्त आत्माओं में अभी विल पॉवर चाहिए। विल पॉवर बढ़ाने से औरों को भी बाप के आगे सहयोगी बनाये विल करा सकते हो।... जैसे ब्रह्मा बाप ने आदि में धन की विल की, जिससे यज्ञ स्थापन हुआ और अन्त में शक्तियों की विल की, जिससे यह सेवा वृद्धि को पा रही है। तो फॉलो ब्रह्मा बाप।... सेवा भी जरूर करनी है और स्व-उन्नति भी जरूर करनी है।"

अ.बापदादा 25.3.90

"आज बापदादा विश्व के सर्व अन्जान बच्चों को देख रहे थे। भले अन्जान हैं लेकिन फिर भी बच्चे हैं। ... सभी को मर्सी अर्थात् रहम-दया की आवश्यकता है और आवश्यकता के कारण ही मर्सीफुल बाप को याद करते रहते हैं।... आपके ही भाई-बहनें हैं। चाहे सगे हैं वा लगे हैं लेकिन है तो परिवार के।... ऐसी आत्माओं के ऊपर दिल से रहमदिल बनो।"

अ.बापदादा 31.3.90

"श्रीमत एक बाप की ही है। कोई निमित्त आत्मा आपको बाप की श्रीमत को फॉलो कर औरों को भी फॉलो कराने के लिए स्मृति दिलाती है।... निमित्त आत्मायें कब ये नहीं कहेंगी कि मेरी मत ही श्रीमत है।... दादी की, दीदी की श्रीमत नहीं कहेंगे। वे निमित्त बन श्रीमत की शक्ति स्मृति में दिलाते हैं।"   अ.बापदादा 31.3.90

"झूठ बोलता है तब गुस्सा आता है... उसने झूठ बोला तो उसको रांग समझते हो परन्तु आप जो गुस्सा करते हो, वह राइट है क्या ? तो रांग-रांग को कैसे समझा सकते हैं, उसका असर कैसे हो सकता है... ऐसे समय रहमदिल बनो, उसको सहयोग दो।" अ.बापदादा 31.3.90

"जो बाप को अच्छा नहीं लगता, वह नहीं करना है, नहीं सोचना है, नहीं बोलना है। इसको कहते हैं बापदादा से दिल का प्यार। ... ब्रह्मा बाप का नम्बरवन बनने का फाउण्डेशन क्या रहा - बेहद का वैराग्य। जो बाप ने कहा, वह ब्रह्मा ने किया।" अ.बापदादा 31.3.90

"जब मेहनत का अनुभव हो तो उस समय चेक करना चाहिए कि किस श्रीमत की लकीर से बाहर जा रहे हैं ... बापदादा ऐसी बात तो कहेंगे नहीं, जिससे बच्चों का कोई नुकसान हो। ये मर्यादायें भी बाप का प्यार हैं क्योंकि इन पर चलने से शक्ति आती है।" अ.बापदादा 31.3.90 पार्टी 1

"ऐसे नहीं सोचना कि विनाश की तैयारियाँ तो अभी दिखाई नहीं दे रही हैं।... जब सभी की बुद्धि में आयेगा कि अभी तो बहुत समय पड़ा है, तब ही अचानक विनाश होगा। इसलिए सदा एवर-रेडी। एवर-रेडी अर्थात् सदा अपने को सब रीति से सम्पन्न बनाना।" अ.बापदादा 31.3.90 पार्टी

"बाप का वर्सा, शिक्षक की पढ़ाई और सत्गुरु का वरदान - तीनों सम्बन्ध द्वारा तीनों ही प्राप्तियों की स्मृति रहने से सदा ही सहज तीव्र पुरुषार्थी हो जायेंगे।... कभी भी पढ़ाई में मेहनत का अनुभव हो तो बाप का वर्सा और गुरु रूप से प्राप्त हुए वरदानों को सामने रखो तो मुश्किल सहज हो जायेगी।" अ.बापदादा 31.3.90 पर्सनल

"सदैव इसी स्मृति में रहो कि हम इतने भाग्यवान हैं जो परमात्म-छत्रछाया में हैं।... बच्चे कहें न कहें लेकिन बाप सदा बच्चों का साथ देने के लिए बंधा हुआ है।" अ.बापदादा 31.3.90 पर्सनल

"भारत सबसे महान और भाग्यवान है। चाहे धनवान और देश हैं लेकिन फिर भी महान भारत ही गाया जाता है। भाग्यविधाता भाग्य की लकीर खींचने के लिए भारत में ही आता है। ... सभी देश वाले आपके मेहमान होकर आते हैं।... सदा भाग्यविधाता बाप और भाग्यवान मैं - यह रुहानी नशा रहता है।" अ.बापदादा 31.3.90 सेवाधारी

"स्थापना के आदि में बाप की मन्सा द्वारा रुहानी आकर्षण ने बच्चों को आकर्षित किया। ... स्थापना के आदि में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी आत्माओं साक्षात् देवी-देवता दिखाई देंगे। ... इसके लिए जो आज सुनाया कि अभी से प्रालब्ध स्वरूप में स्थित रहो। छोड़ो छोटी-छोटी बातों को, अब ऊंचे जाओ। विशेष प्रालब्ध स्वरूप का साक्षात्कार स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ।" अ.बापदादा 13.11.97

"असमर्थ को गुण और शक्ति का सहयोग देने से आपको दुआयें मिलेंगी और दुआयें लिफ्ट से भी तेज रॉकेट है। ... दुआयें पुरुषार्थ की मेहनत के बजाये संगम के प्रालब्ध का अनुभव करायेंगी। तो दुआयें लेना सीखो और सिखाओ।" अ.बापदादा 28.11.97

"हर एक सेन्टर की सेवा का रिकार्ड बापदादा के पास रहता है ... बापदादा सब जगह चक्कर लगाते हैं ... सेवा का स्थान विधि पूर्वक हो, स्वच्छ और मर्यादा पूर्वक भी हो और दिनचर्या ब्राह्मण

जीवन के नियम प्रमाण हो।... बापदादा नहीं कहेंगे, आपका काम है चेक करना।"

अ.बापदादा 28.11.97

"परमात्म प्यार आनन्दमय झूला है... परमात्म प्यार अनेक जन्मों के दुखों को एक सेकण्ड में समाप्त कर देता है। परमात्म प्यार सर्व शक्ति सम्पन्न है, जो निर्बल आत्माओं को शक्तिशाली बना देता है। ... सदा इसी परमात्म प्यार में लवलीन रहो।" अ.बापदादा 14.12.97

"सदा उत्साह में रहना और औरों को भी उत्साह में लाना - यही ब्राह्मणों का आक्यूपेशन है।... ब्राह्मण आत्मा सिवाए उत्साह दिलाने और उत्साह में रहने के बिना रह नहीं सकती।... वेस्ट और निगेटिव बातों को दिल में धारण करने से अवाइड करो, मन-बुद्धि में धारण नहीं करो।"

अ.बापदादा 14.12.97

"खुद को बदलकर औरों को बदलो ... आपका वायदा है स्व परिवर्तन से विश्व का परिवर्तन करेंगे। ... न जज बनो और न वकील बनो। यह अथॉरिटी बापदादा ने दी नहीं है। जो निमित्त हैं, उनका सहयोग लो। वे निमित्त आत्मायें भी बापदादा की राय से करती हैं, अपनी मनमत नहीं चलाती हैं।" अ.बापदादा 14.12.97

"यह सब बातें समाप्त करो अर्थात् मन से परिवर्तन करो, अवाइड करो।... निमित्त आत्माओं तक पहुँचाना आपका फर्ज है। फिर खुद लॉ हाथ में नहीं उठाओ।... स्नेह क्या नहीं कर सकता और यह तो परमात्म स्नेह है, परमात्म प्यार है।" अ.बापदादा 14.12.97

"ब्रह्मा बाप ने आपकी कमजोरियां देखी ? नहीं देखी। तो ब्रह्मा बाप की पालना लेने वाले निमित्त हो, फॉलो ब्रह्मा को करने के लिए।... स्व-परिवर्तन से सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन लाने की जिम्मेवारी हर छोटे-बड़े की है।... बाप की पालना लेना, उसका रिटर्न है - बाप समान पालना देना।" अ.बापदादा 14.12.97

"टीचर्स का काम ही है कोई रोता आये और नाचता जाये, कोई परेशान आये और अपनी शान में स्थित हो जाये। ... तो टीचर्स का काम है परेशान को शान में स्थित करना। ... टीचर्स अर्थात् सदा अपने फीचर्स द्वारा हर आत्मा की सेवा करे।" अ.बापदादा 14.12.97

"अभी ड्रामा अनुसार भक्ति पूरी होती है। भक्ति के बाद है ज्ञान। ... अभी तुम सतयुग में जाने के लिए पढ़ रहे हो। भक्ति मार्ग के जो भी इतने वेद-शास्त्र आदि हैं, उनको छोड़ना पड़ता है। ज्ञान मिल गया फिर भक्ति की दरकार नहीं। बाबा आया है भक्ति का फल देने, वह ज्ञान सुना रहे हैं।"

सा.बाबा 28.11.06 रिवा.

"बाप और वर्से को याद करते, स्वदर्शन चक्र फिराते जब देखो नींद आती है तो सो जाओ। फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। फिर सवेरे उठेंगे तो वही प्वाइन्ट्स याद आती रहेंगी। ऐसे अभ्यास करते-करते तुम नींद को जीतने वाले बन जायेंगे। जो करेगा सो पायेगा।"

सा.बाबा 29.11.06 रिवा.

"यह शरीर तो पुराना है, इनका भी बहुत ख्याल नहीं करना है। यह ठीक भी तब रहेगा, जब ज्ञान-योग की पूरी धारणा होगी। ज्ञान-योग की धारणा नहीं होगी तो शरीर और सड़ता जायेगा। ... इस

शरीर को कितना भी पाउडर लगाओ तो भी वर्थ नॉट ए पेनी है।"

सा.बाबा 29.11.06 रिवा.

"समझाने की भी ताक़त चाहिए। अगर नहीं समझा सकते तो गोया ताक़त नहीं है, योग नहीं है। बाबा भी मदद उनको करते हैं जो योगयुक्त बच्चे हैं। ड्रामा में जो है, वह रिपीट होता है।... हम श्रीमत से एक्ट में आते हैं।" सा.बाबा 29.11.06 रिवा.

"यह सिद्ध कर बताना है कि हमारा प्रवृत्ति मार्ग है, राजयोग है। तुम्हारा हठयोग है। ... ये सब बातें विचार सागर मन्थन करने की हैं।... इसमें बुद्धि चाहिए, बाबा के धन से बहुत लव चाहिए।"

सा.बाबा 29.11.06 रिवा.

"सबको तो घरबार नहीं छोड़ना है। यह तो पहले भट्ठी बननी थी। ... उनको पकना था। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। ... यह भट्ठी लगाने की किसकी ताक़त थी ? शिवबाबा की। ... कितने कायदे और युक्ति से भट्ठी बनी।" सा.बाबा 1.12.06 रिवा.

"इस ड्रामा का राज़ तुम ही जानते हो। तुम ड्रामा के चेतन्य एक्टर हो। ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर और मुख्य एक्टर्स को तो जानना चाहिए।... जितना बेहद के बाप की श्रीमत पर चलेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।" सा.बाबा 1.12.06 रिवा.

"जिनको मरना होगा, वे तो मरेंगे, जाकर दूसरा पार्ट बजायेंगे। इसमें चिन्ता की कोई बात ही नहीं। बाबा कहते हैं खबरदार रहना। रोया तो खेल खलास। ... देहाभिमान के कारण ही रोते रहते हैं। ... जो कुछ होता है, वह साक्षी होकर देखना है। बाप साक्षी होकर देखते भी हैं तो पार्ट भी बजाते हैं। बच्चों को भी साक्षी होकर देखना है।... हर एक के कर्मों का हिसाब-किताब अलग-अलग है।" सा.बाबा 2.12.06 रिवा.

"तुम्हारी है एकमत, इसको कहा जाता है अद्वेत मत।... यह है ईश्वरीय दरबार, इसमें कोई पतित को बैठना नहीं चाहिए। नहीं तो वह एकदम रसातल में चला जायेगा, पतित बनने से।"

सा.बाबा 2.12.06 रिवा.

"आत्मा अविनाशी है, यह देह विनाशी है। आत्मा एक शरीर से निकल जाकर दूसरा शरीर लेती है। मनुष्य शरीर को याद करने से रोते हैं। तुमको रोने की दरकार नहीं है। तुम अपने को आत्मा समझो।" सा.बाबा 2.12.06 रिवा.

"इस बाबा ने सब कुछ दे दिया, फिर फायदे में है या घाटे में है ? बाबा अब सम्मुख समझा रहे हैं - तुम्हारा यह धन-दौलत सब कुछ मिट्टी में मिल जाने वाला है। अपना जीवन सफल करना है, तन-मन-धन सब इसमें लगाओ, फिर देखो इनके एवज़ में तुमको क्या मिलता है।"

सा.बाबा 2.12.06 रिवा.

"जब कोई शास्त्रों की बात करे तो उनको कहना चाहिए - यह तो भक्ति मार्ग के शास्त्र हैं, ज्ञान मार्ग का शास्त्र होता नहीं क्योंकि ज्ञान सागर तो एक परमात्मा को कहा जाता है। जब वह आकर ज्ञान दे तब सद्गति हो। यह गीता आदि भी भक्ति मार्ग के लिए है।" सा.बाबा 4.12.06 रिवा.

"भगवानुवाच - गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बन मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हों। ... थोड़ी बात करनी चाहिए, मूँझना नहीं चाहिए। बाबा ने समझाया है रात को बैठकर विचार करो - आज के सारे दिन में जो पास्ट हुआ, जो सर्विस होनी थी, वह ड्रामा प्लेन अनुसार हुआ।"

सा.बाबा 4.12.06 रिवा.

"माया के तूफान तो आयेंगे, इनसे डरने की कोई बात नहीं। जब कर्मातीत अवस्था होगी, तब यह खलास होंगे। बाबा से सच्चा होकर चलना है। ... बाबा ने समझाया है - मेरे से बिना पूछे किसी को चिट्ठी नहीं लिखो। बाबा से पूछेंगे तो बाबा ऐसी मत देंगे, जिससे किसका कल्याण हो जाये।"

सा.बाबा 4.12.06 रिवा.

"भगवान हमको पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाते हैं तो कितनी खुशी होनी चाहिए। रचता और रचना के आदि-मध्य-अनत का यह ज्ञान सतयुग में भी नहीं होगा। ... बाप हमारा कल्याण करते हैं, हमको फिर औरों का कल्याण करना है।... अभी तुम हो संगमयुग पर।"

सा.बाबा 5.12.06 रिवा.

"तुम बच्चों को बहुत-बहुत निडर बनना है। बाबा कहते हैं कि यह लिख दो कि हर 5 हजार वर्ष के बाद यह मेला, प्रदर्शनी हम इस संगमयुग पर दिखाने आये हैं। यह लड़ाई हर 5 हजार वर्ष के बाद लगती है, पुरानी दुनिया को नया बनाने या नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने के लिए।"

सा.बाबा 6.12.06 रिवा.

"गरीब जो अच्छी रीति पढ़ेंगे, वे जाकर राजा-रानी बनेंगे। ऐसे भी सेन्टर्स पर आते हैं, जो ईश्वरीय सेवा में कुछ नहीं देते हैं। उनको पता ही नहीं कि थोड़ा भी बीज बोने से हमारा भविष्य कितना ऊंचा बनेगा। सुदामा का मिसाल है ना। ... कौड़िया देते, हीरे बन जाते हैं। इसलिए ही चावल मुट्ठी का गायन है।" सा.बाबा 6.12.06 रिवा.

"अभी तुमको माया पर जीत पाकर देही-अभिमानी बनना है। एकान्त में बैठकर विचार करो - हम आत्मा हैं, बाप ने कहा है - मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।... देहाभिमान मुर्दा बना देता है। बाप कहते हैं - देही-अभिमानी बनो।" सा.बाबा 7.12.06 रिवा.

"तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए कि हमको बाप मिला है, वे हमको पढ़ा रहे हैं, हम इस पढ़ाई से विश्व का मालिक बनते हैं। अब बाप की मत पर तो जरूर चलना चाहिए। ... बाप राय देंगे तो फिर जिम्मेवार भी वे हैं।" सा.बाबा 7.12.06 रिवा.

"ज्ञान सागर तो वह है ना, तुम आये हो शिवबाबा से ज्ञानामृत पीने।... बाप ऐसे नहीं कहते कि भक्ति छोड़ो। जब ज्ञान की पराकाष्टा आयेगी तो आपेही समझेंगे कि यह भक्ति है और यह ज्ञान है। फिर भक्ति आपेही छूट जायेगी।" सा.बाबा 7.12.06 रिवा.

"इसमें टू-मच आशायें नहीं होनी चाहिए।... जब इस ज्ञान में पक्का हो जाये, पूरा निश्चय हो जाये कि हमको भगवान मिला है, वे हमको कहते हैं कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जायें। जब यह पक्का निश्चय जम जाये तब ही किससे सामना कर सकें।" सा.बाबा 8.12.06 रिवा.

"बाबा कुमारियों का मान रखता है, परन्तु कुमारियां किसके नाम-रूप में फँसकर उल्टा लटककर उल्लू न बन जायें।... काला मुँह किया फिर बाबा से बुद्धियोग लग न सके।"

सा.बाबा 9.12.06 रिवा.

"शिवबाबा के डायरेक्शन तो जरूर साकार द्वारा ही मिलेंगे ... तुम अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो परन्तु यह जो सृष्टि-चक्र की नॉलेज मिलती है, वह कैसे सुनेंगे। यह समझने बिना सिर्फ याद कैसे कर सकेंगे।... बाप कहते हैं - जो ऐसे घर बैठकर कर्मातीत अवस्था को पाने का पुरुषार्थ करे, तो हो सकता है कि वह मुक्ति में जाये। जीवनमुक्ति में तो जा न सके।"

सा.बाबा 11.12.06 रिवा.

"सेन्टर पर आते हैं, उनको समझाना है - अगर पवित्र नहीं बनेंगे तो नॉलेज बुद्धि में ठहरेगी नहीं। ... अगर कोई पवित्र नहीं बन सकता है तो कह देना चाहिए - भले न आओ। कोई की परवाह थोड़ही रखनी चाहिए।" सा.बाबा 12.12.06 रिवा.

"साधू-सन्त आदि किसको भी लाइट का ताज नहीं है। इसलिए ब्राह्मणों को भी लाइट का ताज नहीं दिखा सकते हैं। जिनका ज्ञान तरफ पूरा ध्यान होगा, वे करेक्शन भी करते रहेंगे।... आत्म पवित्र बन जायेगी तो फिर घर चली जायेगी।" सा.बाबा 12.12.06 रिवा.

"कहा जाता है - साफ दिल मुराद हासिल।... दिल लेने वाला दिलवाला एक बाप को ही कहा जाता है, वह आते ही हैं सबकी दिल लेने के लिए।... सर्विस का हुल्लास रखना चाहिए। हम जाकर किसको दान दें। धन होगा ही नहीं तो दान देने का ख्याल भी नहीं आयेगा।"

सा.बाबा 12.12.06 रिवा.

"समय प्रमाण अव्यक्त मिलन और अव्यक्त रूप से सेवा अति आवश्यक है। इसलिए समय प्रति समय बापदादा अव्यक्त मिलन की अनुभूति का इशारा देते रहते हैं। इसके लिए ही तपस्या वर्ष मना रहे हो।" अ.बापदादा 13.12.90

"श्रीमत पर निमित्त बनी हुई आत्माओं के इशारे प्रमाण सेकेण्ड में बुद्धि प्यारे से फिर न्यारी बन जाये, वह नहीं होती। ... न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है। ... इसलिए वर्तमान समय तपस्या द्वारा वैराग्य वृत्ति की अति आवश्यकता है।"

अ.बापदादा 13.12.90

"हिम्मत बच्चों की और बाप की मदद सदा है ही। इसलिए सदैव हिम्मत से मदद के अधिकार को अनुभव करते सहज उड़ते चलो।... सदा सर्वशक्तिवान बनना है। सर्वशक्तियों के अधिकार को पूरा प्राप्त करो।" अ.बापदादा 13.12.90

"आदि रतन अर्थात् हर श्रीमत को जीवन में लाने की आदि करने वाले, सिर्फ सुनने-सुनाने वाले नहीं। ... यह रुहानी नशा, माया के नशों से छुड़ा देता है। यह रुहानी नशा सेफ्टी का साधन है।... समझदार कभी माया से धोखा नहीं खाते।... धोखा खाना अर्थात् दुख का आह्वान करना।"

अ.बापदादा 13.12.90

"दाता के बच्चे बनो, लेने का संकल्प भी न हो। दाता के बच्चों को सब स्वत: ही प्राप्त होता है। मांगने वालों नहीं मिलता है। दाता बनो तो आपेही मिलता रहेगा।"

अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 2

राग-द्वेष, ईर्ष्या, भय-चिन्ता आत्मा के बड़े शत्रु, जिनके वशीभूत आत्मा पर-चिन्तन के कारण परमात्मा पिता को याद कर नहीं सकती, ज्ञान का चिन्तन कर नहीं सकती क्योंकि इनके वशीभूत आत्मा को किसी न किसी व्यक्ति या वस्तु की याद अवश्य रहेगी। परमात्म-चिन्तन और ज्ञान-चिन्तन से विहीन आत्मा संगमयुग के परम सुख से वंचित हो जाती है, जिससे भविष्य के सुख को भी गँवा देती है। इसलिए हमारा परम कर्तव्य है कि विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा से मुक्त हो संगमयुग के परमसुख को अनुभव करें और भविष्य के लिए भी श्रेष्ठ प्रालब्ध का संचय करें।

"कई लिखते हैं - बाबा पहले से ही सगाई की हुई है, अब हम क्या करें ? बाबा कहते हैं - तुम कमाल करके दिखाओ। उनको पहले से ही बोल दो। ... हम पवित्र रहेंगी, पहले से ही लिख दे... कन्या तो लिखवा न सके। उनको पुरुषार्थ करना चाहिए हमको शादी नहीं करनी है। कन्याओं को बहुत खबरदार रहना है।" सा.बाबा 26.12.06 रिवा.

"यह तो तुम बच्चों को मालूम है कि कोई भी विकारी को यहाँ मधुबन में एलाउ नहीं किया जाता है। पहले-पहले पवित्रता की प्रतिज्ञा करनी होती है। एक बार प्रतिज्ञा कर फिर अगर तोड़ते हैं तो एकदम रसातल में चले जाते हैं, चण्डाल का जन्म पा लेते हैं। ... ब्राह्मणी भूल से भी ले आती है तो उन पर भी बड़ा दोष आ जाता है।" सा.बाबा 28.12.06 रिवा.

"मैं इनमें प्रवेश होकर तुमको राजयोग सिखाता हूँ, इसमें प्रेरणा की कोई बात नहीं है। बाबा प्रेरणा से कोई काम नहीं करता है। यह ड्रामा अनुसार सबकुछ होना ही है।... यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। जो नूँध है, वह होता रहेगा, बच्चों का काम है पुरुषार्थ कर अपना जीवन हीरे जैसा बनाना।"

सा.बाबा 29.12.06 रिवा.

"सब स्टूडेण्ट्स को हक है मुरली को अच्छी तरह पढ़ने का। जिनको मुरली का शौक होगा, वे तीन-चार बार मुरली जरूर पढ़ेंगे। मुरली बिगर कुछ सूझना ही नहीं चाहिए।... सबको अपनी उन्नति करनी है।... यहाँ कायदे सिर पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे तो सतयुग में भी कायदे सिर राज्य करेंगे।"

सा.बाबा 29.12.06 रिवा.

"गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहे तो तुमसे भी तीखे जा सकते हैं। जो कांटों के जंगल में रहते सर्विस करते हैं, उनको फल जास्ती मिलता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते सर्विस बहुत अच्छी करते हैं, उनको सर्विस में बड़ा मज़ा आयेगा, शिवबाबा भी मदद करेंगे।... सर्विस का शौक रखने से मदद भी अधिक मिलती है। जितना बाप की सर्विस करेंगे, उतना ताक़त मिलेगी, आयु भी बढ़ेगी, खुशी का पारा चढ़ेगा, नामीग्रामी भी बनेंगे अपने कुल में।"

सा.बाबा 30.12.06 रिवा.

"सभी आप सब के भाई और बहनें इन खज़ानों की प्यासी हैं। तो क्या अपने भाई-बहनों पर तरस नहीं पड़ता है!... अपने भक्त और दुखी आत्मायें दोनों पर दया करो, कृपा करो ... समय भी देने का अब है, फिर तो सिर्फ अंचलि दे सकेंगे।" अ.बापदादा 31.10.06

"चेक करो हर समय कोई न कोई खज़ाना सफल कर रहे हैं। इसमें डबल फायदा है। खज़ाने को सफल करने से आत्माओं का कल्याण भी होगा और आप सब महादानी बनने के कारण विघ्न-विनाशक बन जायेंगे। समस्या स्वरूप नहीं लेकिन समाधान स्वरूप सहज बन जायेंगे।"

अ.बापदादा 31.10.06

"क्या अभी तक अपनी छोटी-छोटी समस्याओं को मिटाने के पुरुषार्थी रहेंगे! अब पुरुषार्थ करो - अखण्ड महादानी, अखण्ड सहयोगी। ब्राह्मणों में सहयोगी बनो और दुखी-प्यासी आत्माओं के लिए महादानी बनो। अब इस पुरुषार्थ की आवश्यकता है।" अ.बापदादा 31.10.06

"अभी हर एक के दिल से यह अनहद शब्द निकले - "पाना था वह पा लिया"... जब बापदादा को पा लिया, मेरा बाबा कह दिया, मान लिया, जान भी लिया... जिसने दिल से माना "मेरा बाबा" और बाप ने भी माना "मेरा बच्चा", वे सभी जिम्मेवार हैं।" अ.बापदादा 16.11.06

"समय का भी महत्व अटेन्शन में रखो। समय पूछकर नहीं आना है।... बापदादा कहते हैं फाइनल विनाश के समय की बात तो छोड़ो, आपको अपने शरीर के विनाश का पता है?... कोई भरोसा नहीं। इसलिए समय का महत्व जानो।" अ.बापदादा 16.11.06

"इस सीज़न में न स्वमान से उतरना है और न समय के महत्व को भूलना है। अलर्ट, होशियार, खबरदार। ... इस सीजन में क्या-क्या करना है, वह होम वर्क दे दिया। स्वयं को रियलाइज करो। स्वयं को ही करो, दूसरे को नहीं और रियल गोल्ड बनो।" अ.बापदादा 16.11.06

"बापदादा के साथ श्रीमत का हाथ पकड़कर साथ चले और फिर ब्रह्मा बाप के साथ पहले राज्य में आये। ... प्यार की निशानी है साथ रहे, साथ चले, साथ आये। यह है प्यार का सबूत।"

अ.बापदादा 16.11.06

"श्रीमत का हाथ उठाना। शिवबाबा को तो हाथ होगा नहीं, ब्रह्मा बाबा आत्मा को भी हाथ नहीं होगा, आपको भी यह स्थूल हाथ नहीं होगा। श्रीमत का हाथ पकड़कर साथ चलना। ... एवररेडी रहना पड़ेगा। ... अभी यह दृढ़ संकल्प अपने से करो, इस स्थिति में बैठ जाओ। गे-गे नहीं करना, करना ही है।" अ.बापदादा 16.11.06

"समान बनने में जो विघ्न पड़ता है... वह है "मैं" मैंपन। बापदादा ने पहले भी कहा है जब भी मैं शब्द बोलते हो तो सिर्फ मैं नहीं बोले लेकिन मैं आत्मा। ... बॉडी कान्शस का मैं कभी अभिमान लाता तो कभी अपमान भी लाता है। कभी दिलशिकस्त बनाता है। इसलिए इस बॉडी कान्शस के मैंपन को स्वप्न में भी नहीं आने दो।" अ.बापदादा 30.11.06

"जैसे स्नेही की सब्जेक्ट में पास हैं, अब यह कमाल करो समान बनने की सब्जेक्ट में भी पास विद् ऑनर बनकर दिखाओ। ... समान बन जाओ तो समाप्ति सामने आयेगी।... प्रतिज्ञा करते हो

लेकिन दृढ़ता की कमी पड़ जाती है, जिससे समानता दूर हो जाती है, समस्या प्रबल हो जाती है। अब क्या करेंगे ? ... ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है।” अ.बापदादा 30.11.06

“दुखियों पर रहम करके उन्होंको मुक्तिधाम में तो भेजो।... मन्सा और वाणी की साथ-साथ सेवा हो ... चलते-फिरते अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप का परिचय देते हुए चलो ... आपकी चलन बाप को प्रत्यक्ष करे। तो ऐसे सेवाधारी भव।” अ.बापदादा 30.11.06

“हर प्वाइन्ट का अनुभवी स्वरूप बनना - यह है ज्ञानी तू आत्मा। योग लगाने वाले बहुत हैं, योग में बैठने वाले बहुत हैं लेकिन योग का अनुभव अर्थात् शक्ति स्वरूप बनना और शक्ति स्वरूप की परख है कि जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय उस शक्ति का अवाह्वन कर निर्विघ्न स्वरूप बन जाये।” अ.बापदादा 15.12.06

“चारो ही सब्जेक्ट में स्मृति स्वरूप वा अनुभवी स्वरूप की निशानी क्या होगी ? स्थिति में निमित्त भाव, वृत्ति में सदा शुभ भाव, आत्मिक भाव, निस्वार्थ भाव। वायुमण्डल में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा निर्मान भाव, वाणी सदा निर्मल। ये विशेषतायें अनुभवी मूर्त की हर समय नेचुरल नेचर होगी।”
अ.बापदादा 15.12.06

“नेचर नेचुरल काम वही करती है। सोचना नहीं पड़ता... अपने को चेक करो - मेरी नेचुरल नेचर क्या है। अगर कोई भी पुरानी नेचर अंशमात्र भी है तो हर समय वह कार्य में आते-आते पक्का संस्कार बन जाता है।... न चाहते भी हो जाता है, उसका कारण है - परिवर्तन करने की शक्ति कम है।” अ.बापदादा 15.12.06

“अभी आपके हर कदम में पदम समाया हुआ है। तो बढ़ाने का तो बुद्धि में रखते हो लेकिन गंवाने का भी तो बुद्धि में रखो। अगर कदम में पदम बनता है तो कदम में पदम गंवाते भी हो।”
अ.बापदादा 15.12.06

“सेकेण्ड में ना ठीक को बिन्दी और ठीक को प्रैक्टिकल में लाना है। अभी बिन्दी के महत्व को कार्य में लगाओ। ... लास्ट समय सेकेण्ड का पेपर आना है, मिनट का नहीं। तो सेकण्ड का अभ्यास बहुत काल का होगा तब ही सेकेण्ड में पास विद् ऑनर बनेंगे ना!” अ.बापदादा 15.12.06

“सेवा तो ब्राह्मण आत्माओं का धर्म है, कर्म है लेकिन अभी परिवर्तन की मशीनरी तीव्र करो।... सोचना स्वरूप नहीं लेकिन समर्थ स्मृति सो समर्थ स्वरूप बनो। व्यर्थ को तीव्र गति से समाप्त करो। व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ समय और सम्बन्ध-सम्पर्क में भी व्यर्थ विधि-रीति सब समाप्त करो।” अ.बापदादा 15.12.06

“अभी जैसे यात्रा के समय निर्विघ्न रहे, ऐसे इस ब्राह्मण जीवन में सदा निर्विघ्न, निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प ... बिल्कुल स्वप्न मात्र भी निर्विघ्न। ... स्व को देखो, समय को देखो, दूसरे की कमी को देखो ही नहीं। अगर देखते भी तो अपने मन में नहीं रखो। अगर किसी की कमजोरी मन में रखेंगे तो बाप कैसे याद आयेगा।” अ.बापदादा 15.12.06 युवा पदयात्री

“बाप समान बनना ही है ना कि देखेंगे, सोचेंगे... मेहनत करते हैं, उसकी सफलता मिलती है, व्यर्थ

नहीं जाती। लेकिन किसलिए सेवा करते हो ?... बाप को प्रत्यक्ष करना ही है और करेंगे ही लेकिन बाप को प्रत्यक्ष करने के पहले स्व को प्रत्यक्ष करो।... शिव-शक्तियां इस वर्ष स्व को शिव-शक्ति के रूप में प्रत्यक्ष करेंगे ?" अ.बापदादा 31.12.06

"शिव-शक्तियां इस वर्ष स्व को शिव-शक्ति के रूप में प्रत्यक्ष करेंगे ? ... (मधुबन वाले ! करना ही है) करना पड़ेगा। ... पाण्डवों को क्या दिखाना है ! विजयी पाण्डव। ... बापदादा ने पहले भी कहा है - माया अपना लास्ट टाइम तक आना बन्द नहीं करेगी। लेकिन माया का काम है आना और आपका काम क्या है ? विजयी बनना।" अ.बापदादा 31.12.06

"चाहे स्वयं का कारण या दूसरा कोई कारण बनता लेकिन पर-उपकारी आत्मा बन, रहमदिल आत्मा बन शुभ-भावना, शुभ-कामना के दिल वाले बन सहयोग दो, स्नेह लो।... बापदादा इस वर्ष को श्रेष्ठ शुभ संकल्प, दृढ़ संकल्प, स्नेह-सहयोग के संकल्प का वर्ष देखना चाहते हैं।" अ.बापदादा 31.12.06

"दूसरे को कोर्स कराते कि नेगेटिव को पॉजेटिव में बदली करो। तो क्या आप स्वयं नेगेटिव को पॉजिटिव में चेन्ज नहीं कर सकते हो ? दूसरा परवश होता है। परवश पर रहम किया जाता है। ... जब आपके जड़ चित्र रहमदिल है। ... सदा पहले अपने ऊपर रहम करो, फिर ब्राह्मण परिवार पर रहम करो। ... तो दयालु बनो, कृपालु बनो।" अ.बापदादा 31.12.06

"हर एक बच्चा बाप का अधिकारी है... मेरा बाबा कहा तो अधिकारी है। श्रीमत पर चलने के अधिकारी और सर्व प्राप्तियों के अधिकारी।... बच्चों के परिवर्तन के बिना विश्व का परिवर्तन भी ढीला हो रहा है।" अ.बापदादा 31.12.06

"तो हे मास्टर सुखदाता बच्चे, दुखियों पर रहम करो। ... भक्तों को भी मुक्ति का वर्सा दिलाओ। ... एक-एक बच्चा जिसने "मेरा बाबा" कहा है, माना है, वे सभी निमित्त हैं।... दुखियों को दुख से छुड़ाओ और मुक्तिधाम में शान्ति दिलाओ। यह गिफ्ट दो।" अ.बापदादा 31.12.06

"आप सबसे फीलिंग आये कि यह हमको देने वाले हैं, सहयोग देने वाले हैं, दिल का स्नेह देने वाले हैं। ... अभी इस रूप को प्रत्यक्ष करो।... पाण्डव बाप के साथ रहने वाले और सर्व को साथ देने वाले।" अ.बापदादा 31.12.06

"यह शिवबाबा का भण्डारा है। कोई चीज चाहिए तो मांग सकते हो। यथा योग्य सबको मिलना ही है।... मम्मा-बाबा और अनन्य बच्चों से रीस नहीं करनी चाहिए।... ये बातें बड़ी समझने की हैं, जो तकदीरवान ही अच्छी रीति समझ सकते हैं और समझा सकते हैं।" सा.बाबा 4.1.07 रिवा.

"पोप के लिए कहते हैं वह ब्लेसिंग्स देते हैं परन्तु उनको भी उस परमपिता परमात्मा की ब्लेसिंग चाहिए, जो ऊंचे ते ऊंचा है। तुमको परमात्मा की ब्लेसिंग्स तब मिलती हैं जब तुम श्रीमत पर चलते हो।" सा.बाबा 6.1.07 रिवा.

"परमपिता परमात्मा इस ब्रह्मा तन में बैठ पढ़ाते हैं, यह याद तब पड़े जब अपने को आत्मा समझें और श्रीमत पर पूरा चले।... ऐसे मत समझो कि हम कुछ भी करते हैं तो बाबा को पता नहीं पड़ता

है।" सा.बाबा 6.1.07 रिवा.

"उन सन्यासियों को ईश्वर की श्रीमत नहीं मिलती। तुमको ईश्वर आकर श्रीमत देते हैं। ... पक्के सन्यासियों का कर्मेन्द्रियों पर पूरा कन्ट्रोल रहता है, वे दूसरी चीज कभी नहीं लेंगे। कोई फिर ले भी लेते हैं। यहाँ भी ऐसे है। वास्तव में ईश्वर के भण्डारे से जो कुछ कायदे सिर मिले, उस पर चलना ठीक है।" सा.बाबा 8.1.07 रिवा.

"तुमको किससे कुछ मांगना नहीं है। तुम कोई से कुछ ले नहीं सकते हो, किसके हाथ का खा नहीं सकते हो। अपने हाथ से बनाकर खाने से ताक़त बहुत आयेगी। ... अपनी देही-अभिमानी अवस्था जमाने के लिए बड़ी मेहनत चाहिए।" सा.बाबा 8.1.07 रिवा.

"अभी श्रीमत कहती है - यह विष की लेन-देन छोड़ दो, ज्ञान और योग की धारणा करो। जितना ज्ञान रतन धारण करेंगे, उतना निरोगी बनेंगे। ... यह है रुहानी हॉस्पिटल और युनिवर्सिटी, इससे मनुष्य 21 जन्मों के लिए एवर हेल्दी-वेल्दी बन सकते हैं।" सा.बाबा 9.1.07 रिवा.

"दुनिया में तो रिश्वतखोरी बहुत है। तुमको रिश्वत लेने की कोई दरकार ही नहीं है।... बाबा कहते हैं - बच्चे किसी से भी मांगो मत। तुम दाता के बच्चे हो ना। तुमको देना है, न कि मांगना है। तुमको जो कुछ चाहिए वह शिवबाबा के भण्डारे से मिल सकता है। और कोई से लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ता है क्योंकि उसने शिवबाबा के भण्डारे में नहीं दिया।" सा.बाबा 10.1.07 रिवा.

"ये बड़ी समझने की बातें हैं, जिनको सेन्सीबुल बच्चे ही समझ सकते हैं। बुद्धि साफ नहीं है तो उसमें ये ज्ञान रतन ठहर न सकें। जब देही-अभिमानी बने तब ज्ञान रत्न ठहर सकें। ... धारणा नहीं होती तो समझना चाहिए मेरे में बहुत खामियां हैं। नम्बरवन खामी है, जो श्रीमत पर नहीं चलते हैं।"
सा.बाबा 11.1.07 रिवा.

"लक्ष्मी-नारायण ने यह वर्सा श्रीमत पर चलने से ही पाया। ... पहले नम्बर में श्रीकृष्ण आता है। विचार करो - उसने ऐसे क्या कर्म किये जो अपने माँ-बाप से भी जास्ती मर्तबा पाया।"
सा.बाबा 11.1.07 रिवा.

"गाते हैं और संग तोड़ एक तुम संग जोड़ेंगे - इसमें ही मेहनत है।... जो अन्त में सिवाए आपके और कोई की याद न आये। कोई अवगुण भी न रहे। जो बच्चे ऐसे बनते हैं, वे सदैव हर्षित रहते हैं। यह प्रैक्टिस अच्छी रीति करनी है।" सा.बाबा 12.1.07 रिवा.

"भल कोई कैसा भी है तो भी तुम बच्चों को सर्विस करते ही रहना है। जांच करनी है - कौन वर्सा पाने के लायक है। जैसे बिच्छू को मालूम पड़ता है - यह पत्थर है या नर्म चीज है। पत्थर को कभी डंक नहीं लगायेगा। तुम्हारा भी धन्धा यह है।" सा.बाबा 12.1.07 रिवा.

"योग में रहकर शान्ति और सुख का दान देना है। बाबा कहते हैं - रात्रि को उठकर योग में बैठो, सृष्टि को शान्ति-सुख का दान दो। सवेरे उठकर अशरीरी होकर बैठो तो तुम न सिर्फ भारत को, बल्कि सारी सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो और फिर चक्र का ज्ञान सुमिरण करने से तुम

सुख का दान देते हो।" सा.बाबा 16.1.07 रिवा.

"शिवबाबा को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। समझो फोटो निकालते हैं तो भी बुद्धि शिवबाबा की तरफ रहे कि यह बापदादा दोनों हैं। ... शिवबाबा के पास इस दादा द्वारा मिलने आये हैं। शिवबाबा के इन द्वारा डायरेक्शन लेने हैं।" सा.बाबा 17.1.07 रिवा.

"अगर बच्चों के पास पैसा बहुत है, कमाई करने की दरकार नहीं है तो और ही सौभाग्य, पदम भाग्य कहेंगे। एक जन्म के लिए धन काफी है तो कर्मातीत अवस्था में बैठ जायें, उस अवस्था में रहते बैठे-बैठे शरीर छूट जाये।" सा.बाबा 18.1.07 रिवा.

"सम्पूर्णता के दर्पण में लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। ... सब किनारे छोड़ो और मुक्त हो जाओ।" अ.बापदादा 18.1.98

"आज बापदादा हर एक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। ऐसा भाग्य सारे कल्प में सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के और किसी का भी नहीं हो सकता है। ... आप बच्चों को पालना, पढ़ाई और श्रीमत, वरदान देने वाला कौन ? परम-आत्मा द्वारा यह तीनों ही प्राप्त हैं।... तो अपने भाग्य को अच्छी तरह से जानते हो ?" अ.बापदादा 31.1.98

"अमृतवेले परमात्म-प्यार उठाता है। दिनचर्या की आदि ही परमात्म-प्यार से होती है। ... ऐसे कभी सुना है कि भगवान रोज़ अपने धाम को छोड़कर पढ़ाने के लिए आते हैं। ... सतगुरु के रूप में हर कार्य के लिए श्रीमत भी देते हैं और साथ भी देते हैं।" अ.बापदादा 31.1.98

"सच्ची सेवाधारी कुमारी वह है, जो शक्ति रूप कुमारी है। अगर निमित्त सेवाधारी शक्तिशाली नहीं है तो औरों को शक्तिशाली नहीं बना सकती।... प्रभावित होने वाली नहीं लेकिन ज्ञान का प्रभाव डालने वाली हो। ... जिस सेन्टर पर जायें, उस सेन्टर को निर्विघ्न बनाकर रखें।"

अ.बापदादा 31.1.98

"गीता पाठशाला के निमित्त आत्माओं की विशेषता है कि सदा हर कार्य में अपने को ट्रस्टी समझकर चलना।... गीता पाठशाला का अर्थ है ट्रस्टी बनकर सेवा करना क्योंकि जो आत्मायें आती हैं, वे बाप के स्नेह में आती हैं।... ट्रस्टी अर्थात् एकदम निस्वार्थ सेवा की भावना। ... प्रवृत्ति में रहते सेवा के निमित्त बनने वालों को देख और भी प्रवृत्ति वालों को हिम्मत, उमंग-उत्साह आता है।" अ.बापदादा 31.1.98

"समर्पण वाली टीचर्स अब जिस स्थान पर रहती हो, उस स्थान को और स्वयं को निविघ्न बनाना। ... स्व-निर्विघ्न, सेन्टर निर्विघ्न, साथी निर्विघ्न - ये तीन सर्टीफिकेट इस मुक्ति वर्ष में लेना है। ... तो समर्पण समारोह माना सम्पूर्णता का समारोह।" अ.बापदादा 31.1.98

"अमृतवेले जो मुख्य प्लॉनिंग बुद्धि हैं, उनको बापदादा कार्य के निमित्त बनाता है। उनको नई विधियां सेवा की टच होंगी, सिर्फ अपनी बुद्धि को बाप के हवाले करके बैठो। बुद्धिवानों की बुद्धि आपकी बुद्धि को टच करेंगे।" अ.बापदादा 31.1.98

"चारो ओर के परमात्म पालना, पढ़ाई और श्रीमत के भाग्य के अधिकारी विशेष आत्माओं को, सदा सोचना और स्वरूप बनना दोनों समान करने वाले बाप समान आत्माओं को, सदा परमात्म

विल पॉवर द्वारा स्वयं में और सेवा में सहज सफलता प्राप्त करने वाले निमित्त सेवाधारी बच्चों को, सदा बाप को कम्बाइण्ड रूप में अनुभव करने वाले बच्चों को... बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।" अ.बापदादा

"दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए कहा हुआ है - जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा न जाये। ... तो आज प्रतिज्ञा की फाइल को बढ़ायेंगे या प्रतिज्ञा को फाइनल करेंगे, क्या करेंगे ? ... झुकना पड़े, बदलना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना भी पड़े लेकिन बदलना ही है - वे हाथ उठाओ। टी.वी. में सबका फोटो निकालो।" अ.बापदादा 18.1.07

"आप वर्ल्ड क्रियेटर के बच्चे हो तो आप इस वर्ष ऐसी नवीनता के साधन अपनाओ, जो प्रतिज्ञा दृढ़ हो जाये ... इस वर्ष यह एडीशन करो कि जो भी सेवा करो, मानों मुख की सेवा करते हो तो सिर्फ मुख की सेवा नहीं लेकिन मन्सा-वाचा और स्नेह-सहयोग रूपी कर्म तीनों की सेवा एक ही समय इकट्ठी हों। ... अच्छा-अच्छा कहकर जाते हैं लेकिन अच्छा बनना अर्थात् प्रत्यक्षता होना।"

अ.बापदादा 18.1.07

"किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो। ... बापदादा अपनी आशा सुना रहे हैं। बापदादा की एक ही आशा है कि कारण खत्म हो जाये, निवारण दिखाई दे। समस्या समाप्त हो जाये, समाधान होता रहे।" अ.बापदादा 18.1.07

"श्रीमत पर चलना है। बाबा को सारा पोतामेल मालूम होगा तो बाबा राय देंगे कि इस हालत में ऐसे करो। ... सेन्टर पर मदद देने से भी तुम्हारा भविष्य बनता है। एक्स्ट्रा है तो उसको सफल करना है। ... बाकी बच्चों को कभी किसका कर्जा नहीं उठाना है। कर्ज है मर्ज।"

सा.बाबा 26.1.07 रिवा.

"बाबा समझाते हैं पहले दास-दासी बनें, फिर थर्ड क्लास राजा-रानी बनना, इससे तो प्रजा में साहूकार बनना अच्छा है। दान-पुण्य कर साहूकार बन जायें। दास-दासी का नाम तो न पड़ेगा। भल वे दास-दासी बन राजाई में जाते हैं परन्तु उनसे वे साहूकार जास्ती सुखी हैं।... यहाँ अगर पूरा श्रीमत पर नहीं चलते तो दास-दासी बन जाते हैं।" सा.बाबा 29.1.07 रिवा.

"रॉयल घर के बच्चों की चलन बहुत अच्छी होती है। यहाँ तो श्रीमत पर चलना है। ... इसमें तो शिवबाबा की पधरामणी है, इनसे रीस नहीं करनी है।" सा.बाबा 29.1.07 रिवा.

"अगर बाबा को यथार्थ रीति जान जायें तो उनके फरमान पर जरूर चलें, कदम-कदम श्रीमत लें। ... एक ही शिवबाबा की श्रीमत पर चलते रहें तो सदा ऊपर चढ़ते रहें।... राजधानी स्थापन होनी ही है, इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। मिलने के लिए आते हैं परन्तु पूरे निश्चय से थोड़ेही आते हैं।" सा.बाबा 21.2.07 रिवा.

"सद्गति तो एक सेकेण्ड में मिल सकती है। श्रीमत कहती है - मुझे याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी। ... वह सर्व का सद्गति दाता है। तुम किसकी सद्गति नहीं कर सकते हो। ... मुक्ति तो एक सेकेण्ड में मिल सकती है। मुक्ति के बाद जीवनमुक्ति तो है ही।"

सा.बाबा 26.2.07 रिवा.

"श्रीमत पर चलना चाहिए। श्रीमत कहती है - अच्छी रीति धारणा करो और कराओ। अगर ईश्वरीय डायरेक्शन पर नहीं चलेंगे तो ऊंच पद भी नहीं पायेंगे। अपनी दिल से आपही पूछो - हम श्रीमत पर चल रहे हैं?"
सा.बाबा 28.2.07 रिवा.

"कोई को समझ में भी नहीं आता कि योग किसको कहा जाता है। मंजिल बहुत ऊंची है। अपने को अशरीरी आत्मा समझना है। ... तुम्हारी यह अशरीरी होने की प्रैक्टिस है। यह प्रैक्टिस तुम यहाँ ही करते हो।... पिछाड़ी में तुमको कोई याद न आये, शरीर ही याद न रहे तो बाकी क्या रहा। मेहनत है इसमें।"
सा.बाबा 28.2.07 रिवा.

"किसको भी मन्सा-वाचा-कर्मणा दुख नहीं देना है। भल तुमसे किसकी दुश्मनी भी हो, तो भी तुम्हारी बुद्धि में किसको दुख देने का ख्याल न आये। सबको सुख की बात बतानी है।"
सा.बाबा 6.3.07 रिवा.

"तुम बच्चों को निरहंकारी बनना है। हेड में तो बड़ी नम्रता चाहिए। बाप कितना निरहंकारी है ... मम्मा-बाबा तो बच्चों को सिखलाने के लिए सब कुछ करते हैं। पतितों को पावन बनाना है, मूत-पलीती कपड़ों को धोना है।"
सा.बाबा 7.3.07 रिवा.

"अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखना चाहते हैं। ... गम्भीरता और रमणीकता दोनों का बैलेन्स हो। ... कोई बुरा भी दे तो भी आप बुरे को स्वीकार न कर दाता बन उसको सहयोग दो, स्नेह दो, शक्ति दो।"
अ.बापदादा 24.2.98

"(ड्रिल) मन्सा सेवा व सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारो ओर सुख की अन्चलि का अनुभव कराओ। ... पूज्य आत्मायें हो, अपने भक्त आत्माओं को सकाश दो।"
अ.बापदादा 13.3.98

"आप और बाप इन दो शब्दों में सारी पढ़ाई, ड्रामा, कल्प वृक्ष की सारी नॉलेज समाई हुई है। ... इस पढ़ाई से मन-बुद्धि उड़ती कला का अनुभव करती है। ... फिर सतगुरु द्वारा श्रीमत ऐसी मिलती है, जिससे सदा के लिए सब क्वेश्चन समाप्त हो जाते हैं और सब क्वेश्चन का जबाब - फॉलो फादर के रूप में मिल जाता है।"
अ.बापदादा 30.3.98

"साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो करो, निराकारी स्थिति में अशरीरी बनने में शिव बाप को फॉलो करो। ... बाप समान बनना अर्थात् फॉलो फादर करना। ... जब अपनी ईश्वरीय प्राप्तियों की लिस्ट इमर्ज होगी तो किसी भी प्रकार का विघ्न वार नहीं करेगा।" अ.बापदादा 30.3.98

"यज्ञ से जो कुछ मिले, वह स्वीकार करना है। बाबा अनुभवी है। भल कितना भी बड़ा जवाहरी था लेकिन कहाँ आश्रम में जायेंगे तो आश्रम के नियमों पर पूरा चलेंगे।... मोह रखना चाहिए बाप और अविनाशी ज्ञान रतनों में।"
सा.बाबा 12.3.07 रिवा.

"जितनी स्वयं में धारणा होगी, उतना औरों को भी करायेंगे।... मुख से सदैव ज्ञान रत्न निकालो। कोई भी संसार समाचार की बातें नहीं निकालो। नहीं तो मुख कड़ुवा हो जायेगा। ... भारत को

महादानी कहा जाता है।” सा.बाबा 12.3.07 रिवा.

“इस समय बाप बच्चों को दान करते हैं और बच्चे बाप को दान करते हैं।... कोई ऐसे न समझे कि हम तन-मन-धन देते हैं तो हम कोई भूख मरेंगे। ... शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। बेगरी पार्ट भी एक परीक्षा थी। जिनको डर लगा, वे सब चले गये। बाकी साथ देने वाले चलते आ रहे हैं।” सा.बाबा 12.3.07 रिवा.

“तारू लोग अपनी जान को भी जोखिम में रखकर दूसरों को बचाते हैं।... जो महावीर होगा, वह झट संजीवनी बूटी किसको देंगे। यह बेहोश हो गया, माया ने नाक से पकड़ लिया है तो उनको बचायें।” सा.बाबा 14.3.07 रिवा.

“अभी यह भारत कितना कंगाल है, देवाला मारा हुआ है। बाप कहते हैं - जब भारत की ऐसी हालत हो जाती है तब मैं आकर भारत को सोने की चिड़िया बनाता हूँ। ... तुम बच्चे श्रीमत पर स्वर्ग की राजधानी स्थापन कर रहे हो।” सा.बाबा 23.3.07 रिवा.

“सर्विसएबुल बनने से बन्धन आपही छूट जायेंगे। ... जितना बाबा के यज्ञ की सेवा करेंगे, उतना कमाई ही कमाई है। ... ऐसा मीठा बनना है, सो तब बनेंगे जब सदा सर्विस करते रहेंगे। रावण की जंजीरों से सबको छुड़ाना है।” सा.बाबा 24.3.07 रिवा.

“पूछते हैं - गृहस्थ व्यवहार चलाने के लिए ठगी आदि करनी पड़ती है, क्या करें। परन्तु इस ज्ञान मार्ग में ऐसे कोई ख्यालात नहीं होने चाहिए, नहीं तो दुर्गति हो पड़ेगी। यहाँ तो बहुत सच्चाई-सफाई से बाप को याद करना पड़े, तब ही ऊंच पद पा सकते हैं।” सा.बाबा 26.3.07 रिवा.

“तुम्हारा धन्धा ही है सबकी मनोकामनायें पूर्ण करना।... बुद्धि में आता है - हम सबकी मनोकामनायें पूर्ण करें अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बतायें।... शिवबाबा द्वारा जगतपिता-जगदम्बा को वर्सा मिलता है, फिर उनके द्वारा बच्चों को मिलता है।” सा.बाबा 29.3.07 रिवा.

“बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया परन्तु अब साधना को बढ़ाना है अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना है।” अ.बापदादा 18.1.99

“हर कर्म में कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो - इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी। ... रोज़ रात अपना टीचर बनकर चेक करो और अपने को आपही मार्क्स दो। ... अपने को देखना, दूसरे को नहीं देखना।” अ.बापदादा 13.2.99

“मित्र-सम्बन्धियों का श्रीमत से कल्याण करना है। चिट्ठी लिखते हैं परन्तु श्रीमत से नहीं लिखते तो अकल्याण ही करते हैं। ... बाबा तुमको ऐसी चिट्ठी लिखना सिखायेंगे, जो पढ़ने वाले का रोमांच खड़ा हो जायेगा।” सा.बाबा 4.4.07 रिवा.

“तुम ईश्वरीय सन्तान में बड़ी रॉयल्टी और स्यानप होनी चाहिए। बहुत प्यार से तुम्हें सबको बाप की पहचान देनी है ... पुण्य की दुनिया में तुम चलने वाले हो तो तुमको बहुत मीठा बनना है।” सा.बाबा 4.4.07 रिवा.

“तुम बच्चे बाप को पूरा जानते हो तो बाप को भी तुम्हारा पूरा मालूम होना चाहिए। ... पूरा-पूरा

मालूम होगा तब तो मत देंगे। ... पूरा समाचार नहीं देते तो समझा जाता है कि यह सौतेले बच्चे हैं, तो राजाई का वर्सा नहीं पा सकेंगे। अगर श्रीमत पर चलना है तो बाप को पूरा समाचार देना है।"

सा.बाबा 16.4.7 रिवा.

"अगर बोर्ड नहीं लगाते, सर्विस नहीं की तो समझेंगे इनमें देहाभिमान बहुत है। ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुंद्धि विनश्यन्ति कहा जाता है। ... शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमाल कर दिखानी है। कब छोड़ने का ख्याल नहीं करना है।"

सा.बाबा 16.4.7 रिवा.

"यहाँ नम्बरवार जो जितना दान करते हैं, उनको उतना ही एवजा मिलता है। तब कहा जाता है - धन दिये धन ना खुटे ... अभी जो करेगा, वह ऊंच पद पायेगा। निश्चयबुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति।" सा.बाबा 21.4.07 रिवा.

"शिवबाबा के खजाने से खर्च कर कोई पाप नहीं करना है। शिवबाबा के पैसे से पुण्य ही करना है। ... कन्या ज्ञान में नहीं आती, शादी करना चाहती है तो कहेंगे कर दो। बच्चा अगर आज्ञाकारी नहीं है तो वर्से का हकदार नहीं है।" सा.बाबा 24.4.07 रिवा.

"ऑनेस्ट आत्मा स्वत: ही हर कदम श्रीमत के इशारे प्रमाण उठाती है, उनका हर कदम ऑटोमेटिक श्रीमत के इशारे पर ही चलता है। ... ऑनेस्ट आत्मा की पहली निशानी है - हर सेकेण्ड हर कदम श्रीमत पर एक्यूरेट चलना। ... उस आत्मा को सदा श्रीमत स्पष्ट स्मृति में रहने के कारण समर्थ है। ... वह कभी किसी भी खज़ाने को वेस्ट नहीं करेगा।" अ.बापदादा 18.12.91

"चलते-चलते थकते क्यों हैं? चलते-चलते श्रीमत के इशारों में मनमत-परमत मिक्स कर देते हैं, इसलिए स्पष्ट और सीधे रास्ते से भटक टेढ़े-बांके रास्ते में चले जाते हैं।"

अ.बापदादा 18.12.91

"अगर खास बैठकर योग लगाने की आदत है तो योग सिद्ध हो न सके।... उनका योग कब स्थाई नहीं रह सकेगा। समझो हार्टफेल की तकलीफ हो जाती है तो उस समय कोई योग में बिठायेगा क्या? ... अगर लाल बत्ती अच्छी लगती है तो वह याद आयेगी तो उनसे भी योग हो गया ... यहाँ तो देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं, उन सबको भूलकर मुझ एक के साथ योग लगाओ, तब तुम्हारा कल्याण होगा और तुम विकर्माजीत बनेंगे।" सा.बाबा 27.4.07 रिवा.

"यहाँ जो श्रीमत पर चलते हैं, उनको बाबा भी बहुत अच्छी मदद करते हैं ... योग में रहकर तुम कोई भी चीज़ बनाओ तो कभी खराब नहीं होगी। बुद्धि ठीक रहने से मदद मिलती है। ... चलते-फिरते याद में रहने का अभ्यास करना है। लेट्रिन में भी याद कर सकते हो।"

सा.बाबा 27.4.07 रिवा.

"शिवबाबा तो भोजन आदि खाते नहीं हैं। तुम पवित्र भोजन बनाते हो तो याद में रह बनाना चाहिए, उससे तुमको बल मिलेगा।" सा.बाबा 4.5.07 रिवा.

"कुमारियां ...अगर मां-बाप कहे आओ तो क्या करेंगी? अगर अपनी हिम्मत है तो कोई किसको

रोक नहीं सकता है। अगर थोड़ा-थोड़ा आकर्षण होगा तो रोकने वाले रोकेंगे।"

अ.बापदादा 31.12.91

"बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनो। ... वह यहाँ-वहाँ कभी नहीं देखेगा। वह सदा मंजिल की ओर देखेगा। फॉलो किसको करना है? ब्रह्मा बाप को क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है।"

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 4

"हर एक को अपने लिए राय लेनी है। बाप कहते हैं - बच्चे पाप क्यों करते हो, पुण्य से काम चलाओ। अपना खर्चा कम कर दो। ... शादी में मनुष्य कितना शादमाना करते हैं। कर्जा लेकर भी शादी कराते हैं। एक तो कर्जा उठाते हैं और दूसरा पतित बनते। सो भी जो पतित बनना चाहते हैं, जाकर बनें। जो श्रीमत पर चल पवित्र बनते हैं, उनको क्यों रोकना चाहिए। मित्र-सम्बन्धी आदि झगड़ा करेंगे, सो तो सहन करना ही पड़ेगा।" सा.बाबा 11.5.07 रिवा.

"चाहे प्रवृत्ति वाले, चाहे सेन्टर वाले ... सदा शिव बाप की भण्डारी है और ब्रह्मा बाप का भण्डारा है - इस स्मृति से भण्डारी भी भरपूर रहेगी और भण्डारा भण्डारा भी भरपूर रहेगा। मेरापन लाया तो भण्डारा वा भण्डारी में बरक्कत नहीं होगी। ... कोई कमी होती है तो इसका कारण बाप के बजाये मेरेपन की खोट है।" अ.बापदादा 18.1.92

"माया के खेल खिलाड़ी बनकर देखते चलो। ... बाप का श्रीमत रूपी हाथ और दिव्य बुद्धियोग रूपी साथ सदा अनुभव कर समर्थ बन सदा पास विद् ऑनर बनते चलो।"

अ.बापदादा 18.1.92

"यहाँ रहते भी क्लास में नहीं आते हैं तो समझा जाता है कि यह स्वर्ग के मालिक नहीं बन सकते। ... यहाँ तो बगुलों से किनारा करना होता है। मूल पलीती के हाथ का तुम खा भी नहीं सकते हो।"

सा.बाबा 14.5.07 रिवा.

"सबको बाप का परिचय दो और बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाओ। ... अब सोचो यह धन्धा करें या जिस्मानी धन्धा करें। ... बाबा का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में बहुत ध्यान देता तो बाप का डिस्रिगार्ड हो गया। ... जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे, फिर बड़े बाबा ने कहा - यह अविनाशी ज्ञान रतनों का धन्धा करना है तो उसे छोड़कर इसमें लग गया।"

सा.बाबा 15.5.07 रिवा.

"सतयुग में भल सुखी तो सब बनेंगे परन्तु फर्क सारा पद का रहता है ना। ... बाप से तुमको अविनाशी ज्ञान रतनों का दान कहो, वर्सा कहो मिल रहा है। तुमको यह वर्सा लेकर फिर औरों को भी रास्ता बताना है।" सा.बाबा 23.5.07 रिवा.

"बाबा कितनी गुह्य बातें सुनाते हैं। जो रोज़ नहीं सुनते, वे कोई न कोई बातें मिस कर देते हैं। मुरली रोज सुनने वाले कभी फेल नहीं होंगे। उनके मैनर्स भी अच्छे रहेंगे।"

सा.बाबा 29.5.07 रिवा.

"ऐसी चलन नहीं चलनी चाहिए, जिससे बाप की निन्दा हो।... समझते हैं कि हम सुधर नहीं सकेंगे तो फिर राय दी जाती है - घर-गृहस्थ में रहो। जब धारणा हो जाये तब फिर सर्विस करना। घर में रहेंगे तो तुम्हारे ऊपर इतना पाप नहीं चढ़ेगा, जितना यहाँ रहने से चढ़ता है। ... इससे तो गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान रहना अच्छा है।" सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

"बाप तुमको लायक बनाने की शिक्षा दे रहे हैं। नित्य नई प्वाइन्ट्स मिलती हैं। ... यहाँ एडीशन किया जाता है, कटकुट भी किया जाता है। रोज नई-नई प्वाइन्ट्स मिलती हैं।"

सा.बाबा 8.6.07 रिवा.

"बाप कहते हैं - धन्धाधोरी तो भल करो परन्तु मेरी श्रीमत पर चलने से फिर रेस्पॉन्सीबिलिटी मेरी हो जाती है। ... ऊंच तं ऊंच बाप ऊंची मत देते हैं।" सा.बाबा 9.6.07 रिवा.

"वास्तविक सेवा उसको कहा जाता है, जिसमें स्व और सर्व की सेवा समाई हुई हो। ... एक को देखते तो दूसरा ढीला हो जाता है, दूसरे को देखते तो पहला ढीला होता - इसका कारण क्या है? ... सेवा का प्लेन बनाते तो प्लेन बुद्धि बनकर नहीं बनाते हो।... प्लेन बुद्धि अर्थात् निमित्त और निर्मान भाव। निर्माण करते निर्मान स्थिति की कमी हो जाती।" अ.बापदादा 8.4.92

"तुम कल्याणकारी बाप की सन्तान हो। तुम किसका अकल्याण कर नहीं सकते। ... बाप का आर्डिनेन्स निकला है कि अभी यह भोगबल की रचना नहीं चाहिए।... स्वच्छ कौन हैं और गन्दे कौन हैं - यह तुम बच्चे ही जानते हो।" सा.बाबा 11.6.07 रिवा.

"वास्तव में ओम् शान्ति कहने की भी जरूरत नहीं है। परन्तु बच्चों को कुछ न कुछ समझाना ही होता है। ... इन गीतों आदि की भी कोई जरूरत नहीं है। दुनिया में आजकल कनरस बहुत है। इन सभी कनरस में फायदा कुछ नहीं है। मनरस तो अभी आता है एक बाप की याद से।"

सा.बाबा 12.6.07 रिवा.

"बाबा सब तरफ बच्चों को देखते हैं। कहाँ कोई झुटका तो नहीं खाते हैं। झुटका खाया, उबासी दी, बुद्धियोग बाहर गया तो वे वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। ... यहाँ वे ही आने चाहिए, जो योग में अच्छी तरह रह सकें। नहीं तो वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। ... फोटो आदि निकालने की भी बात नहीं।" सा.बाबा 15.6.07 रिवा.

"जो ब्राह्मण बनते हैं, उनको ही शिवबाबा ब्रह्मा मुख द्वारा मन्त्र देते हैं। ... देह के सब धर्म त्यागकर अर्थात् देह और देह के सर्व धर्मों को भूल एक मुझ बाप को याद करो। अपने को देह समझने से देह के सम्बन्धी याद आ जाते हैं।" सा.बाबा 16.6.07 रिवा.

"अभी पुरुषोत्तम संगम युग है ... विनाश की बातें तो स्थापना के समय से चल रही हैं ... अभी भी पता नहीं विनाश कब हो! ... बापदादा ऐसे बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं है ... समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी, आपको नहीं। ... पुरुषार्थ कर समय के पहले परिवर्तन किया तो आपके पुरुषार्थ की मार्क्स जमा होगी।" अ.बापदादा 15.4.92

"बापदादा ने पहले भी सुनाया ... मैजारिटी बच्चों की दूर की नज़र तेज़ है, नज़दीक की नज़र कुछ

ढीली है। ... अपनी बड़ी बात को छोटा करेंगे और दूसरों की छोटी बात को बड़ा करेंगे। ... असत्य को देखकर और झूठ को सुनकर अन्दर में जोश आता है। तो विचार करो - जोश सत्य है या असत्य है ?" अ.बापदादा 15.4.92

"अगर वह असत्य है और आपको असत्य को देखकर जोश आता है तो जोश सत्य है या असत्य है ?... जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, यह लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। ... सत्यता की निशानी है सभ्यता।" अ.बापदादा 15.4.92

"सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आप में है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे। सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्वक।... असभ्यता की निशानी है जिद्द और सभ्यता की निशानी है निर्मान।" अ.बापदादा 15.4.92

"मनुष्य भल करोड़पति, पदमपति हो गये हैं, रावण का बड़ा पॉम्प है, इसमें ही ललचायमान हो गये हैं। ... तुम भविष्य 21 जन्मों के लिए बाप से वर्सा लेने आये हो। यह है सचखण्ड के लिए सच्ची कमाई। ... रावण की आसुरी मत पर सारे कल्प पतित ही बनते आये।"

सा.बाबा 22.6.07 रिवा.

"बाप का फरमान है - मुझे याद करो, मैं आया हूँ भक्ति का फल देने। किसको ? जिन्होंने शुरू से लेकर अन्त तक भक्ति की है। ... सोमनाथ का मन्दिर कितना जबरदस्त है। विचार करना चाहिए कि हम कितने साहूकार थे, अभी गरीब कौड़ी मिसल बन गये हैं।"

सा.बाबा 22.6.07 रिवा.

"खास करके टीचर्स की चलन बड़ी अच्छी चाहिए। कोई से भी घृणा न रहे। बाप कहते हैं - मुझे थोड़ेही किसी से घृणा है। जानते हैं - सब पतित हैं, यह ड्रामा बना हुआ है।"

सा.बाबा 22.6.07 रिवा.

"एक बाप के सिवाए और कुछ भी याद न पड़े।... अन्दर में बाप की बड़ी गुप्त महिमा करनी है ... बाप की याद में न रहे, पढ़ाई में मस्त न रहे तो टाइम वेस्ट हो जायेगा। ... मन्मनाभव। बस वही टाइम फायदे वाला है, बाकी टाइम सब वेस्ट जाता है।" सा.बाबा 22.6.07 रिवा.

"श्रीमत पर हू-ब-हू कल्प पहले मुआफिक हम फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। ... हम श्रीमत पर अपना दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। जो-जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार ही पद पायेंगे।" सा.बाबा 23.6.07 रिवा.

"हार अथवा जीत पाना तुम्हारे हाथ में है। इसमें उस्ताद कोई मदद नहीं करेंगे। उस्ताद कहते हैं - यह माया की युद्ध है। माया के तूफान आयेंगे ... तुमको बहादुर होकर लड़ना है। इसमें थकना नहीं है, फेल नहीं होना है।" सा.बाबा 23.6.07 रिवा.

"श्रीमत पर चलना है। मन्मनाभव और चक्र का राज़ भी सहज है। स्वदर्शन चक्रधारी भी बनना है। तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी हो परन्तु यह अलंकार विष्णु को दे दिये हैं क्योंकि अभी तुम सम्पूर्ण नहीं

बने हो। ... कितनी प्वाइन्ट्स हैं, जो तुमको बुद्धि में धारण करना है।"

सा.बाबा 23.6.07 रिवा.

"बाप ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों को ही राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं जो भी आकारी, साकारी वा निराकारी चित्र हैं, उन्हें तुम्हें याद नहीं करना है। ... चित्रों को देखना अब बन्द करो। यह है भक्ति मार्ग।... बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, बुद्धियोग ऊपर में लटकाओ। ... कोई भी चित्र का सिमरण नहीं करना है। यह जो शिव का चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है क्योंकि शिव तो ऐसा है नहीं।" सा.बाबा 25.6.07 रिवा.

"मनुष्य ईश्वर के लिए भी झूठ बोलते हैं, इसलिए ही भारत कंगाल बना है। ... यह ड्रामा हार-जीत, भूल-भुलैया का खेल है। ... गीता का नाम तो बहुत चला आता है। बाप कहते हैं - गीता का भगवान मैं हूँ, न कि श्रीकृष्ण।" सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

"भारत अभी जो झूठ खण्ड बन गया है, उसको सचखण्ड बनाने वाला एक ही बाप है। ... गवर्मेन्ट जो कसम उठवाती है, वह भी झूठ। कहते हैं कि हम भगवान की कसम उठाकर सच कहते हैं परन्तु यह कहने से मनुष्यों को डर नहीं रहता। इससे तो कहें कि हम अपने बच्चों की कसम उठाते हैं तो हिचकेंगे, दुख होगा ... पता नहीं मर जाये।" सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

"विकारों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करो तो बाप की मदद मिलेगी। इतना जरूर है कि प्रतिज्ञा करके फिर कुल कलंकित नहीं बनना। गायन है - धरत परिये धर्म न छोड़िये।"

सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

"जैन धर्म वालों का बड़ा कड़ा सन्यास है। बाप कहते हैं - मैं तुमको सहज राजयोग सिखाता हूँ ... परन्तु खानपान की जितना हो सके परहेज रखना है। भोजन पर दृष्टि देकर फिर खाना है।... तो खुशी का पारा चढ़ता रहेगा, ज्ञान की धारणा भी होती जायेगी।" सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

"निश्चय भी उनको बैठेगा, जिनको कल्प पहले बैठा होगा। ... अभी समझ में आता है - बरोबर बाप की नॉलेज बड़ी वण्डरफुल है। ... माया के तूफानों से डरना नहीं है। काम अग्नि से कभी जलना नहीं है।" सा.बाबा 2.7.07 रिवा.

"भीष्म पितामह आदि को भी तुमने ज्ञान वाण मारे हैं। ज्ञान वाण लगाने से डरो मत।... कल्प पहले भी हमने भारत को स्वर्ग बनाया था, श्रीमत पर। ... अभी परमपिता परमात्मा ने फरमान निकाला है कि काम महाशत्रु है, जो इस पर जीत पायेंगे, वे ही श्रेष्ठाचारी बन स्वर्ग का मालिक बनेंगे।"

सा.बाबा 5.7.07 रिवा.

"ऐसे नहीं कि बाहर से कहते रहो - हमारा तो एक दूसरा न कोई और अन्दर में और कोई खींचता रहे। बाप का सच्चा बच्चा बनना है। ... चेहरा खुशी में खिल जाना चाहिए।"

सा.बाबा 5.7.07 रिवा.

"मन का रोना तो सबको आ सकता है। श्रीमत है - सदा खुश रहो। ... दुख की लहर आना, यह भी रोना है। सुखदाता के बच्चे हो तो दुख की लहर आ नहीं सकती। यह भूल जाते हो तब दुख की लहर आती है।" अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

“जगदम्बा की महिमा गाते हैं। अब यह हुई भक्ति और महिमा। तुम भक्ति और महिमा नहीं कर सकते हो। तुम जानते हो कि सौभाग्य विधाता एक ही बाप है।... अभी हम भगत तो नहीं हैं, हम हो गये भगवान के बच्चे।” सा.बाबा 10.7.07 रिवा.

“इसमें तो अपना पुरुषार्थ करना है, आशीर्वाद वा कृपा की कोई बात ही नहीं है। ... बाबा किसकी बुद्धि नहीं खोलते हैं। ड्रमा अनुसार जिन बच्चों को शूद्र से ब्राह्मण बनना है, उनको आना ही है। जिनका कल्प पहले ताला खुला होगा, उनका ही खुलेगा। हाँ शुभचिन्तक होकर राय दी जाती है।”

सा.बाबा 11.7.07 रिवा.

“यह 84 जन्मों का चक्र है। तुम जानते हो 5 हजार वर्ष पहले हमारा राज्य था। ... जो भी एक्टर्स हैं, सबको यहाँ अन्त में हाजिर होना ही है।... ऊपर से आना पूरा हो जाता है, तब लड़ाई लगती है।”

सा.बाबा 14.7.07 रिवा.

“तुमको एक निराकार शिवबाबा को ही याद करना है। कोई भी गुरु गोसाई आदि का फोटो भी नहीं रखना है। निराकार शिवबाबा का फोटो तो निकल न सके।” सा.बाबा 14.7.07 रिवा.

“जो जन्म ही भाग्यविधाता द्वारा हुआ है, वह जन्म कितना भाग्यवान हुआ। ... लेकिन हर चलन और चेहरे से भाग्यवान का स्मृति-स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में स्वयं को भी अनुभव हो और दूसरों को भी दिखाई दे।” अ.बापदादा 3.10.92

“यह परमात्म-श्रीमत ही पालना है। बिना श्रीमत अर्थात् परमात्म-पालना के एक कदम भी नहीं उठा सकते। ऐसी पालना सिर्फ अभी ही प्राप्त है, सतयुग में भी नहीं मिलेगी।”

अ.बापदादा 3.10.92

“प्रैसीडेण्ट, प्राइम-मिनिस्टर ... यह सब पद आपके आगे क्या हैं।... साधारणता में महानता दिखाई दे। ... तो ऐसे अपनी पढ़ाई के भाग्य को इमर्ज रूप में अनुभव करो।... मजबूरी उनके आगे आ नहीं सकती। अपना श्रेष्ठ भाग्य मर्ज नहीं रखो, इमर्ज रखो।” अ.बापदादा 3.10.92

“टीचर्स का अर्थ ही है अपने फीचर्स से सबको फरिश्ते के फीचर्स अनुभव कराने वाली।... यह भी भाग्य है, जो निमित्त बने हो। अभी इस भाग्य को स्वयं अनुभव में बढ़ाओ और दूसरों को भी अनुभव कराओ। अनुभवी मूर्त बनो।” अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 1 टीचर्स

“जिस बात में कोई रस नहीं, कोई सम्बन्ध नहीं हो, वह सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए भी नहीं देखो। देखते-सुनते हुए सोचो नहीं। सुनो तो बाप की बातें, देखो तो बाप के श्रेष्ठ कर्म और बाप को फॉलो करने वालों के श्रेष्ठ कर्म। यही विधि है डबल लाइट रहने की।”

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 6

“बाप कहते हैं - मैं तुमको श्रीमत देता हूँ तो उस पर सबको चलना पड़े। तुम जानते हो कल्प-कल्प श्रीमत मिलने से ही भारत श्रेष्ठ बनता है। भारत को ही पैराडाइज़ कहते हैं।... भारत में ही गॉड-गॉडेज़ का राज्य था।” सा.बाबा 20.7.07 रिवा.

“हम पतित-पावन बाप के बच्चे हैं तो हरेक अपनी दिल से पूछते रहे कि अभी हम बाप का धन्धा

करते हैं या नहीं। ... जो अपने को ईश्वरीय औलाद निश्चय करते हैं, उनको अपनी दिल से यह पूछना है। जो निश्चय ही नहीं करते, उनसे यह धन्धा हो भी नहीं सकेगा।"

सा.बाबा 21.7.07 रिवा.

"बाप ने यह हॉस्पिटल वा युनिवर्सिटी खोली। बच्चों का भी यही काम है। ... छोटे से मकान में ही आकर परमपिता परमात्मा हॉस्पिटल अथवा युनिवर्सिटी खोली, फिर धीरे-धीरे और मकान आदि बनते गये। ... तुम ब्राह्मणों का धन्धा ही है पतितों को पावन बनाना।"

सा.बाबा 21.7.07 रिवा.

"जो भी आसुरी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं, उनसे बुद्धियोग हटाना है। अपनी चढ़ती कला है, तो उसका भी सबूत चाहिए ना। ... कोई लूनपानी है। हमको ऐसे नमक को भी चेन्ज कर मीठा बनाना है। देखो - सूर्य में कितनी ताक़त है, जो खारे सागर से पानी खींच कर मीठा बना देते हैं।"

सा.बाबा 21.7.07 रिवा.

"सिर्फ बाप और वर्से को याद करने से स्वर्ग का मालिक बन जायेंगे। स्वर्ग में भी पद तो नम्बरवार होंगे ना। ज्ञान से फिर आपेही समझ जायेंगे कि हमको क्या करना है।... बाबा हमेशा बच्चों को कहते हैं - मांगने से मरना भला।" सा.बाबा 24.7.07 रिवा.

"बाप कल्याणकारी है तो बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है।... किसका कल्याण करने के लिए घूमना पड़ता है। धर्म की स्थापना अर्थ भी धक्का खाना पड़ता है।" सा.बाबा 24.7.07 रिवा.

"बिजी रहना ही सहज पुरुषार्थ है ... बिजी रहेंगे तो माया की हिम्मत नहीं होगी आने की और जितना अपने को बिजी रखेंगे, उतना ही आपकी वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन होता रहेगा। कोई भी ब्राह्मण आत्मा यह नहीं सोच सकती कि क्या करें, वायुमण्डल बहुत खराब है। खराब है तब तो परिवर्तन करते हो ... विश्व-परिवर्तक का काम है - बुरे को अच्छा बनाना।"

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 1

"श्रीमत पर श्रेष्ठ बनना है। योग अग्नि से ही आत्मा की खाद निकलेगी। बच्चों को बहादुर बनना है। डरो मत। जिनका रक्षक खुद भगवान बाप बैठा है, उनको किससे डरना है! तुम्हें कोई श्राप आदि दे नहीं सकता।" सा.बाबा 1.8.07 रिवा.

"जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है और श्रीमत पर चले हैं, वे ही चलेंगे।... अभी बाप बच्चों को अविनाशी ज्ञान रतन देते हैं, वे धारण करने हैं।... एक-एक रत्न अच्छी रीति धारण करना और कराना है। ... दान भी आसामी देखकर करो।"

सा.बाबा 3.8.07 रिवा.

"सतयुग में अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं। लेकिन इसका आधार क्या है ? इस समय सम्पन्न बनते हो, इसलिए परमात्म-सम्पत्ति की सम्पन्नता के फलस्वरूप सतयुग-त्रेता के अनेक जन्म सम्पन्नता प्राप्त होती है। इसलिए कहा जाता है - नम्बरवन राज्य है स्वराज्य, फिर है विश्व का राज्य और तीसरा है द्वापर-कलियुग का अलग-अलग स्टेट का राज्य।" अ.बापदादा 12.11.92

"कार्य में दिव्यता ही सफलता का आधार है। दिव्य बुद्धि की निशानी है - हर कर्म में दिव्यता। ... दिव्य बुद्धि प्राप्त करने वाली आत्मायें सदा अदिव्य को भी दिव्य बना देती हैं।... दिव्य बुद्धि अर्थात् पारस बुद्धि। ... अभी दिव्य बुद्धि के वरदान को कार्य में लगाओ।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 4

"व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो। व्यर्थ को अपनी बुद्धि में स्वीकार नहीं करो। अगर एक भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म स्वीकार किया तो एक व्यर्थ अनेक व्यर्थ को जन्म देगा। ... जिसको आप लोग कहते हो - फीलिंग आ गई।" अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 5

"कैसा भी वातावरण हो, कैसी भी वृत्ति हो, कैसी भी वाणी हो, कैसी भी दृष्टि हो लेकिन होली हंस सबको होली बना देते हैं। ... फरिश्ता कभी किसी विघ्न के वश नहीं होता। न विघ्न के, न व्यक्ति के। तो होली हंस अर्थात् फरिश्ता।" अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 5

"साधारणता में महानता समाई हुई हो। जितने ही साधारण हो, उतने ही अन्दर महान हो। तो यह नशा रहता है कि बाप ने क्या से क्या बना दिया और क्या-क्या दे दिया।... गरीब को साहूकार बनाना - यह है कमाल। ... विनाशी धन के साहूकारों का भाग्य नहीं है। भाग्य है ही गरीबों का।"

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 6

"तुमको दिल में आना चाहिए कि हम कैसे अपने भाई-बहनों को रास्ता बतायें।... अविनाशी ज्ञान रतनों की पूरी धारणा होगी तो बहुतों का कल्याण कर सकते हैं।" सा.बाबा 6.8.07 रिवा.

"बच्चों का धन्धा ही है सबको सच्ची गीता सुनाना।... बाप रहमदिल-ब्लिसफुल है तो बच्चों को भी बाप समान बनना है। इन चित्रों में तो बहुत बड़ा खज़ाना है। स्वर्ग का मालिक बनने की इनमें युक्ति है। ... हमारे बिछुड़े हुए बच्चे जो होंगे, उनको ये अक्षर लगेंगे।"

सा.बाबा 6.8.07 रिवा.

"कुम्भ के मेले में कितनी खुशी और शुद्धि से जाते हैं। वहाँ मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र रहते हैं। क्योंकि अपना कल्याण करना चाहते हैं। पण्डों का इतना कल्याण नहीं होता है, जितना यात्रियों का होता है। पण्डे लोग तो पैसा इकट्ठा करने जाते हैं। ... यात्रियों में भावना होती है।" (बाबा के समझाने का भाव है - ऐसे ही इस चैतन्य कुम्भ के यात्रियों और पण्डों के विषय में भी है।)

सा.बाबा 7.8.07 रिवा.

"भगवान का तो फोटो नहीं निकाल सकते हैं। बिन्दी का क्या फोटो होगा।... भृकुटी में टीका लगाते हैं ... आत्मा का निवास भृकुटी में है। सच्चा-सच्चा तिलक कहें तो वह है।... अभी तुमको ज्ञान मिला है कि हम आत्मा स्टार हैं और परमपिता परमात्मा भी स्टार इतना ही छोटा है।"

सा.बाबा 7.8.07 रिवा.

"देवताओं का भोजन भी कितना पवित्र होता है। तो हमको भी बहुत परहेज में रहना चाहिए। इसमें पूछने की भी बात नहीं रहती है। बुद्धि समझती है - एक तो विकार सबसे खराब है, दूसरा खान-पान की परहेज भी रखनी है। ... बुद्धि से समझना होता है कि हम किस युक्ति से अपने को बचाते रहें।"

सा.बाबा 9.8.07 रिवा.

"इस ज्ञान मार्ग में गीतों, कविताओं, डायलागों आदि की कोई जरूरत नहीं है। यह सब भक्ति मार्ग में चलता है। यहाँ तो हैं समझ की बातें। हर बात को बुद्धि से समझना है... बाप समझाते हैं उठते-बैठते सब कुछ करते चुप रहना है और अन्दर में विचार चलता रहे।" सा.बाबा 10.8.07 रिवा.

"यहाँ मधुबन में स्वयं ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा बैठ ज्ञान का वाण मारते हैं। इसलिए मधुवन की इतनी महिमा है। गाते भी हैं - मधुवन में मुरली बाजे। मुरली तो बहुत स्थानों पर बजती है परन्तु यहाँ बाप सम्मुख बैठकर समझाते हैं।" सा.बाबा 11.8.07 रिवा.

"किसी की बुरी बात को समझना अलग चीज है। समझने तक राइट है लेकिन स्वयं में वा अपने चित्त पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई रूप में धारण नहीं करना है।" अ.बापदादा 21.11.92

"इसमें दिल बड़ी साफ चाहिए। दिल साफ तो मुराद हासिल। कोई2 की दिल साफ नहीं होती है। सच्ची दिल से सच्चे बाप की सेवा में लग जाना चाहिए।... यह जानते हो कि जो कल्प पहले निकले होंगे, बी.के. बनें होंगे, वे ही अभी फिर आयेंगे। मेहनत करते रहो, थकना नहीं है।"

सा.बाबा 16.8.07 रिवा.

"हर एक को अलग-अलग राय दी जाती है।... झाड़ बढ़ना तो है ना, तब तो विनाश भी शुरू हो। इससे पहले तो विनाश हो न सके। यहाँ तो राजधानी स्थापन हो रही है।"

सा.बाबा 16.8.07 रिवा.

"तुमको लाइट हाउस बनना है।... चलते-फिरते यह चक्र फिराते रहो और औरों को भी रास्ता बताते रहो। ... तुम बच्चों को अब यह प्रैक्टिस करनी है - हम रास्ता बताने वाले लाइट हाउस हैं।"

सा.बाबा 17.8.07 रिवा.

"बाप के पास जल्दी-जल्दी रिफ्रेश होने आना चाहिए... बाप तो दाता है। हम देते हैं, ऐसा कब ख्याल नहीं करना है। ... जिनको अपना भाग्य बनाना होता है, वे अपना पुरुषार्थ करते हैं। ... कोई भी कारण बताये छुट्टी ले सकते हो। यह कोई झूठ थोड़ेही है। इन जैसा सच्च और कोई नहीं है।"

सा.बाबा 17.8.07 रिवा.

"ज्ञान और योग की सहज धारणा का सहज साधन है - बाप और दादा के आज्ञाकारी बनकर चलना। ... बाप, शिक्षक और सतगुरु तीनों ही रूपों में आज्ञाकारी बनना अर्थात् सहज पुरुषार्थी बनना क्योंकि तीनों ही रूपों से बच्चों को आज्ञा मिली है।" अ.बापदादा 15.11.99

"अमृतवेले से लेकर रात तक हर समय और हर कर्तव्य की आज्ञा मिली हुई है।... मन्सा संकल्प, वाणी और कर्म तीनों ही प्रकार की आज्ञा स्पष्ट मिली हुई है। सोचने की भी आवश्यकता नहीं कि यह करें या न करें, राइट है या रांग है। ... परमात्म-आज्ञा है ही सदा श्रेष्ठ।"

अ.बापदादा 15.11.99

"पहला वायदा है तन-मन-धन सब आपका और सर्व सम्बन्ध भी सब आपसे। यह वायदा पक्का

किया है ? … माया के दरवाजे हैं - “मैं और मेरा”। … पहला वायदा याद करो। तो जो बाप की आज्ञा है। तन को भी बाप की अमानत समझो, मन को भी अमानत समझो। … मन के लिए बाप की आज्ञा है - पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो।” अ.बापदादा 15.11.99

“कोई भी बाबा का सम्बन्ध याद रहे, दिल से निकले - “बाबा”, तो समीपता का अनुभव करेंगे। … हर एक कुमार को धन का भी पोतामेल रखना चाहिए। धन को, मन को, तन को कहाँ और कैसे लगाना है - यह सब पोतामेल होना चाहिए। … लक्ष्य के साथ लक्षण भी चाहिए।”

अ.बापदादा 15.11.99

“(उड़ीसा का तूफान) आप लोगों ने सिर्फ प्रकृति का खेल देखा या अपनी उड़ती कला के खेल में बिजी रहे ? … कई बच्चे गुप्त योगी भी हैं। ऐसे गुप्त योगी बच्चों को बापदादा की बहुत मदद मिलती है। ऐसे बच्चे स्वयं भी अचल, साक्षी रहे और वायुमण्डल में भी समय पर सहयोग दिया। … जैसे वे लोग सहयोग देने के लिए तैयार हो जाते हैं, ऐसे ब्राह्मण आत्माओं ने भी शक्ति, शान्ति, सुख देने का जो ईश्वरीय श्रेष्ठ कर्तव्य है, वह किया, अपना सहयोग दिया ?”

अ.बापदादा 15.11.99

“आपको भी अलर्ट होना चाहिए। स्थूल सहयोग देना, यह भी आवश्यक होता है, इसमें बापदादा मना नहीं करते हैं लेकिन जो ब्राह्मण आत्माओं का विशेष कार्य है, जो सहयोग (शक्ति, शान्ति, सुख देने का) और कोई नहीं दे सकता, ऐसा सहयोग अलर्ट होकर आपने दिया ? … ऐसे समय पहले तो मन में शान्ति चाहिए, सामना करने की शक्ति चाहिए।” अ.बापदादा 15.11.99

“बताओ - जिसने दिल दिलाराम बाप को दे दी, वह कभी किसी भी आत्मा से दिल लगायेगा ? नहीं लगायेगा ना ! … दिलाराम को दिल दे दी तो दिल बाप की अमानत हो गई।… कुमार जब बापदादा से वचन कर लिया, फिर कितनी भी मुश्किल आये लेकिन वचन को नहीं छोड़ना।… अभी एक मिनट दिल में वचन करो - “सदा विघ्न-विनाशक, आज्ञाकारी रहेंगे”।”

अ.बापदादा 15.11.99

“दुआयें किसको मिलती हैं ? जो सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करे।… सब बातें छोड़ दो लेकिन एक बात यह धारण करो कि दुआयें सबको देनी हैं और सबसे दुआयें लेनी हैं।”

अ.बापदादा 30.11.92

“क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। शिक्षा देते हो तो क्षमा भूल जाते हो।… क्षमा करनी है, रहमदिल बनना है, सिर्फ शिक्षक नहीं बनना है।… अगर श्रीमत प्रमाण कोई भी कदम उठाते हो तो क्या अनुभव होता है ? बाप की दुआयें मिलती हैं ना।” अ.बापदादा 30.11.92

“स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन है या अन्य के परिवर्तन से स्व-परिवर्तन है।… खज़ानों को स्वयं प्रति भी कार्य में लगाओ और दूसरों को भी गुण-दान, ज्ञान-दान, शक्तियों का दान करो। अगर कोई निर्बल है तो शक्ति देकर उसको भी सम्पन्न बनाओ। इसको कहा जाता है भरपूर आत्मा।”

अ.बापदादा 30.11.92

"मुरली के महावाक्य सीधे सुनाने चाहिए, बीच में मिक्स नहीं करना चाहिए।... आजकल मिक्स करने का फैशन हो गया है।" दादी जानकी 28.8.07 डॉमण्ड हॉल

"पॉजेटिव थिंकिंग को समझाने से कोई देही-अभिमानी नहीं बनेगा। बाबा ने जो समझाया है, उसको समझाने से देही-अभिमानी बनेगा। बाबा ने समझाया है, उसे न समझाकर पॉजिटिव थिंकिंग को समझाना, उसका टाइम वेस्ट करना है। ... किसको भी ऐसा समझाओ, जो वह परमात्मा के प्यार में खो जाये। किसको भी प्यार और अथॉरिटी से बाबा का सत्य ज्ञान समझाओ।"

दादी जानकी 28.8.07 डॉयमण्ड हॉल

"भक्ति मार्ग में निराकार, आकार और साकार तीनों का गायन होता है। ... सर्व मनुष्य मात्र को सद्गति देने वाला एक ही निराकार शिव है। फिर उनके साथ जो सर्विस करने वाले हैं, उन्हों की भी महिमा गाते है। बाप तो कहते हैं - मामेकम् याद करो।" सा.बाबा 28.8.07 रिवा.

"पहले-पहले किसको भी बाप का परिचय देना होता है। गाते भी हैं पतित-पावन आओ।... आत्मा अविनाशी है। पहले अपने को आत्मा समझो। ... पहले आत्मा का ज्ञान देकर फिर समझाओ - आत्मा का बाप तो परमात्मा है। ... निराकार बाप ने इनमें प्रवेश किया है। वे कहते हैं - तुम भी देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझ मुझ परमपिता परमात्मा को याद करो।... बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे।" सा.बाबा 28.8.07 रिवा.

"भारत पावन था, अभी पतित है। पतित-पावन बाप आकर आत्माओं से बात करते हैं। ... भारत में प्योरिटी थी तो कितनी पीस-प्रॉस्पेरिटी थी। उस समय और और कोई धर्म वाला नहीं था। ... अभी पतित दुनिया का विनाश होना है। यह महाभारत लड़ाई है।... भारत आधा कल्प शोक वाटिका में और आधा कल्प अशोक वाटिका में रहता है।" सा.बाबा 28.8.07 रिवा.

"तुम अथॉरिटी से समझाने वाले हो तो भी रेस्पेक्ट से बोलना है ... पारलौकिक बाप जो इतना बेहद का सुख देते हैं, स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनको तुम नहीं जानते हो। भारत को जिसने स्वर्ग बनाया था, उनको तुम भूल गये हो इसलिए ही यह हालत हुई है।... इसमें इन्सल्ट की कोई बात नहीं है। यह तो समझानी दी जाती है।" सा.बाबा 28.8.07 रिवा.

"जो वर्सा लेने वाले हैं, उनको खुशी का पारा चढ़ता रहेगा। श्रीमत पर तो जरूर चलना होगा।... अभी हम परमपिता परमात्मा के फरमान पर चलते हैं। उनकी श्रीमत मिलती है।... हम कैसे पतित बने हैं और फिर कैसे पावन बनना है, अगर यह नहीं समझेंगे तो पछताना पड़ेगा।"

सा.बाबा 28.8.07 रिवा.

"पतित-पावन परमपिता परमात्मा ने आकर पतिज्ञा कराई है। पांच हजार वर्ष पहले भी प्रतिज्ञा की थी, अब फिर परमपिता परमात्मा से बुद्धियोग लगाओ तो तुम पावन बन जायेंगे। ... हू-ब-हू कल्प पहले भी हुआ था। ड्रामा को पूरा न समझने के कारण मूँझ भी पड़ते हैं, इसलिए पहले-पहले बाप का परिचय देना होता है।" सा.बाबा 28.8.07 रिवा.

"बच्चे रोज़ रात को अपना पोतामेल निकालो... अगर कोई भूल हुई तो बाप से माफी लेनी चाहिए।

शिवबाबा हमको माफ करना।... मेरा नम्बरवन फरमान है कि देही-अभिमानी बनो, विकार में मत जाओ। यह महा दुश्मन है, इन पर जीत न पायी तो पद भ्रष्ट हो जायेगा और कुल कलंकित बन जायेंगे।"
सा.बाबा 21.8.07 रिवा.

"अगर कोई की तकदीर में नहीं है तो पुरुषार्थ भी नहीं करते हैं।... दूसरों को समझाने से खुशी बहुत होगी, तन्दुरुस्त हो जायेंगे क्योंकि सबकी आशीर्वाद मिलती है ना। ... नॉलेज को धारण कर फिर दूसरों का भी कल्याण करना चाहिए।" सा.बाबा 22.8.07 रिवा.

"यह चक्र कैसे फिरता है, उसको समझना है। ... सारा पुरुषार्थ का खेल है। कोई तो रात-दिन बहुत मेहनत करते रहते हैं। ... बाप कहते हैं - अपना कल्याण करना चाहते हो तो श्रीमत पर चलो, ऐसा काम नहीं करो जो दूसरों का अकल्याण हो, उनको दुख हो।"
सा.बाबा 25.8.07 रिवा.

"(अयोध्या काण्ड) किसी भी घटना का समाचार तो सब इन्ट्रेस्ट से सुनते हो ... अशान्ति के समय आप पूर्वज आत्माओं का और विशेष कार्य स्वत: ही हो जाता है। ... अपनी वृत्ति द्वारा, मन्सा-शक्ति द्वारा विशेष सेवा की ? ... ऐसे समय पर सेकेण्ड में अपनी सेवा पर अलर्ट हो जाना चाहिए। यही आप पूर्वज आत्माओं की जिम्मेवारी है।" अ.बापदादा 10.12.92

"अभी भी विश्व में हलचल है और यह हलचल तो समय प्रति समय बढ़नी ही है। ऐसे समय आप आत्माओं का फर्ज है आत्माओं में विशेष शान्ति की, सहन-शक्ति की हिम्मत भरना, लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट देना। ... श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा परिस्थितियों को पार करने की शक्ति अनुभव कराओ।" अ.बापदादा 10.12.92

"रहमदिल बाप के बच्चों को सर्व आत्माओं के प्रति रहम आता है ना। ... कोई भी आत्मा वंचित न रह जाये। चाहे अन्य धर्म की आत्मायें हैं लेकिन हैं तो अपनी वंशावली। चाहे कोई भी धर्म की आत्मायें हैं लेकिन जड़ तो एक ही है ना।" अ.बापदादा 10.12.92 दादियों से

"सदा अपने को जैसे बाप न्यारा और प्यारा है, ऐसे अपने को न्यारे और प्यारे अनुभव करते हो ? ... पहले अपनी देह की स्मृति से न्यारा। जितना देह की स्मृति से न्यारे होंगे, उतने बाप के प्यारे होंगे और सर्व आत्माओं के भी प्यारे होंगे। ... कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे और सेकेण्ड में न्यारे हो जाओ।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 2

"ऐसे नहीं कि जिस समय याद में बैठो, उस समय अशरीरी स्थिति का अनुभव करो। नहीं, चलते-फिरते बीच-बीच में यह अभ्यास पक्का करो। आत्मा का स्वरूप ज्यादा याद होना चाहिए। ... "मेरा बाबा" यह भूले नहीं।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 2

"सदा आकारी और निराकारी स्थिति का अभ्यास करना है। जब चाहें तब उस स्थिति में स्थित हो जायें। इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े ... तो सूक्ष्म रीति से चेक करो कि लगाव अंश मात्र भी नहीं हो।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 3

"सदैव यह स्मृति में रखो कि हमारा टाइटिल ही है - "विघ्न-विनाशक" ... सदा अपने मास्टर

सर्वशक्तिमान स्वरूप की स्मृति में रहो।... पाण्डव भगवान की मत पर चले अर्थात् फॉलो किया तो विजय हुई।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 4

"यहाँ भी जो देहाभिमानी हैं, वे कड़ुवे हैं। देही-अभिमानी बड़े मीठे होंगे। ... बाहर में जो प्रजा बनने वाले हैं, उनसे भी गिर पड़ेंगे। प्रजा में जो साहूकार बनेंगे, उनको भी नौकर-चाकर मिलेंगे। यह तो और ही जाकर नौकर-चाकर बनते हैं। इसमें बुद्धि से काम लिया जाता है।... निर्बन्धन हो रहने वालों से कई गृहस्थ व्यवहार में रहने वालों की अवस्था अच्छी है।"

सा.बाबा 29.8.07 रिवा.

"जो एक सेकण्ड में अपने संकल्प को जहाँ चाहें, जो सोचना चाहें, वही सोच चलता रहे - ऐसे जो समझते हैं, वे हाथ उठाओ। ... अभी यह अभ्यास बहुत जरूरी है क्योंकि अन्त के समय यह अभ्यास बहुत काम में आयेगा। ... जब यह अभ्यास पक्का होगा तब समझो पास विद् ऑनर होंगे।" अ.बापदादा 30.11.99

"लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट आ सकते हैं। इसके लिए जमा का खाता ज्यादा से ज्यादा इकट्ठा करो। ... पहले स्वराज्य अधिकारी बनेंगे तब विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे। इसका भी साधन यही है कि खज़ाने जमा करो। ... मन को ऑर्डर दो कि आत्मा परमधाम निवासी बन जाओ और बन जाये।" अ.बापदादा 30.11.99

"मन सेकेण्ड में एकाग्र हो जाये क्योंकि समस्या अचानक आती है और उसी समय अगर मनोबल है तो समस्या समाप्त हो जाती है। ... इसलिए सभी मन-बुद्धि को अभी-अभी एकाग्र करो। देखो होता है। ऐसे सारे दिन में अभ्यास करते रहो।" अ.बापदादा 15.12.99

"तुम कितने भाग्यवान हो, जो स्वयं परमात्मा की पालना में पल रहे हो।... परमात्म-श्रीमत ही परमात्म-पालना है, उसी श्रीमत से चल रहे हो, पल रहे हो। ऐसे अपने को विशेष आत्मायें अनुभव करते हो ?" अ.बापदादा 31.12.99

"ब्राह्मण अर्थात् सदा सम्पन्न आत्मा। शक्तियों से भी सम्पन्न, गुणों से भी सम्पन्न, सर्व ज्ञान के खज़ाने से सम्पन्न ... जब लास्ट जन्म तक आपकी दिव्यता, महानता आपके जड़ चित्रों से भी अनुभव करते हैं तो वह दिव्यता वर्तमान समय आप चेतन्य श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा अनुभव होती है ?" अ.बापदादा 31.12.99

"अमृतवेले से लेकर हर चलन को चेक करो कि हमारी दृष्टि अलौकिक है, चेहरे का पोज़ सदा हर्षित है ? एकरस, अलौकिक है वा समय प्रति समय बदलता रहता है ?... साधारण कार्य करते हुए भी चेहरा और चलन विशेष रहता है ?" अ.बापदादा 31.12.99

"चलते-फिरते सदा स्मृति में रखो - मैं बाप समान फरिश्ता हूँ, मेरा पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से कोई रिश्ता नहीं। ... इस संकल्प को, बीज को स्मृति का पानी और धूप देते रहना। बार-बार रिवाइज़ करो - मेरा बापदादा से वायदा क्या है ?" अ.बापदादा 31.12.99

"निराकार बाप की महिमा और श्रीकृष्ण की महिमा सबको बताकर, पूछो - अब बताओ गीता का

भगवान कौन ?... कल्प पहले भी ड्रामा अनुसार तुमको ऐसे ही समझाया था, फिर आज समझाता हूँ। तो तुमको भी अन्धों की लाठी बनना चाहिए।" सा.बाबा 31.8.07 रिवा.

"अभी वापस घर जाना है इसलिए जीते जी देहाभिमान छोड़ना है। हम आत्मा परमात्मा की सन्तान हैं, उनसे ही अब हम वर्सा ले रहे हैं। बच्चों को यह नशा रहना चाहिए।... तुम बच्चों के अन्दर बहुत नशा और खुशी होनी चाहिए।" सा.बाबा 1.9.07 रिवा.

"बाबा कहते हैं - कोई गला भी काट दे तो भी अपवित्र नहीं बनना है। बाबा से पूछते हैं कि इस हालत में क्या करूँ ? तो बाबा समझ जाते हैं कि सहन नहीं कर सकते हैं। ... यह तो तुम्हारे ऊपर है। वह तो करके इस एक जन्म के लिए मार देंगे, तुम तो 21 जन्मों के लिए अपना कत्ल करती हो।" सा.बाबा 1.9.07 रिवा.

"हर एक की बीमारी अलग-अलग होती है, इसलिए हर एक को अपनी राय लेनी होती है।" सा.बाबा 1.9.07 रिवा.

"समय आपका इन्तजार कर रहा है और आपको इन्तजाम करना है, समय का इन्तजार नहीं करना है। सर्व को सन्देश देने का और समय को सम्पन्न बनाने का इन्तजाम करना है। जब दोनों कार्य सम्पन्न हों तब समय का इन्तजार पूरा हो। ... करने के लिए तो ड्रामा के बन्धन में बंधे हुए ही हो लेकिन गति क्या है, इसको चेक करो।" अ.बापदादा 20.12.92

"इस एक जन्म में संगम पर जो स्थिति में समीप रहता है, वह परमधाम में भी समीप है और राजधानी में भी समीप है। ... हर कर्म को चेक करो - बाप समान है ? है तो करो, नहीं तो चेन्ज कर दो। ... ज्ञानी का लक्षण है - पहले सोचे, फिर कर्म करे और अज्ञानी करके फिर सोचते हैं।" अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 1

"कदम पर कदम रखना है। कदम है श्रीमत। ... ब्रह्मा बाप कर्म का सेम्पुल है। ब्रह्मा बाप ने हर कदम श्रीमत पर उठाये। तो फॉलो फादर।" अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 2

"तुम बच्चों को फिर अविनाशी ज्ञान रतनों का दानी भी बनना है। अपने को देखना चाहिए - हम कितना दान करते हैं ? ... कभी भी परचिन्तन नहीं करना चाहिए। ... कब किसके दिल को खराब नहीं करना चाहिए।" सा.बाबा 5.9.07 रिवा.

"तुम बच्चों की बुद्धि में बहुत नशा चढ़ना चाहिए। अब हमारी राजधानी स्थापन हो रही है। अब तुमको ज्ञान रतन मिलते हैं... अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते रहो। बाबा जो सुनाते हैं, वह औरों को भी सुनाओ।" सा.बाबा 6.9.07 रिवा.

"बाबा से पूछते हैं - शादी करूँ ? बाबा समझ जाते हैं कि इनकी दिल है। बाबा कहेंगे - मालिक हो, चाहे जहन्नुम में जाओ, चाहे क्षीर सागर में जाओ। ... सन्यासी पवित्र बनते हैं तो बड़े-बड़े प्रेजीडेण्ट आदि भी जाकर उनको माथा टेकते हैं। फर्क देखो कितना है पतित और पावन का।" सा.बाबा 7.9.07 रिवा.

"सतयुग में भारत ही था, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था।... तुम जानते हो यह सब खेल है। तुम्हारी

बुद्धि में है कि हमारा दुश्मन पहले-पहले रावण बनता है।... तुमको इस रावण दुश्मन पर जीत पानी है। यही भारत का नम्बरवन दुश्मन है। शिवबाबा जन्म भी भारत में ही लेते हैं। शिव जयन्ति भी यहाँ मनाते हैं।" सा.बाबा 12.9.07 रिवा.

"तुम कुछ भी शास्त्र आदि नहीं पढ़े हो तो बहुत अच्छा है। बाप कहते हैं जो कुछ सुना है अथवा पढ़ा है, वह सब भूल जाओ, हम नई बात सुनाते हैं, वह सुनो। तुम्हारा नम्बरवन दुश्मन रावण है, उस पर ज्ञान-योग बल से जीत पानी है।" सा.बाबा 12.9.07 रिवा.

"यहाँ तुम बच्चों पर बाप बलि चढ़ते हैं, वर्सा देते हैं... फिर बाप का रिगार्ड भी रखना होता है। पहले बाप के आगे बच्चों को बलि चढ़ना है, तब बाप 21 बार बलि चढ़ेंगे।... इसलिए बाप कहते हैं - देह सहित सब कुछ त्याग, ट्रस्टी हो श्रीमत पर चलते जाओ। बाप डायरेक्शन देते रहेंगे। ... निष्कामी एक बाप ही है, जो सर्व का सद्गतिदाता है।" सा.बाबा 12.9.07 रिवा.

"नीचे उतरते-2 सतोप्रधान से तमोप्रधान बन पड़े हो। अभी तुम्हारी वह रुहानी खुशी गुम हो गई है। अब फिर तुमको सतोप्रधान बनना है। ... अब फिर बाप आया है, वह कहते हैं - अपने को आत्मा भाई-भाई समझो। एक-दो से बहुत प्रेम रखो।" सा.बाबा 13.9.07 रिवा.

"अपने को आत्मा समझो और सतोप्रधान बनने के लिए पुरुषार्थ करो, दूसरों के अवगुण नहीं देखो। देहाभिमान में आने से ही अवगुण दिखाई देते हैं।... सबसे जास्ती गुण हैं बाप में, तो बाप से ही गुण ग्रहण करो और सब बातें छोड़ दो।" सा.बाबा 13.9.07 रिवा.

"एक बाप की अव्यभिचारी याद में रहो। ... याद की यात्रा में रहने से फिर और बातें भूल जाती हैं। ... अन्दर ही अन्दर बाप की महिमा करनी है। बाप की महिमा करते खुशी में गद्‌गद होना चाहिए। बहुत खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप सुप्रीम बाप हमको पढ़ा रहे हैं।"

सा.बाबा 13.9.07 रिवा.

"बाप कहते हैं - सबको यह पैग़ाम दो कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। और कोई धर्म स्थापक ऐसे कह नहीं सकता। ... सब जगह बाप का पैग़ाम लिख दो।" सा.बाबा 13.9.07 रिवा.

"तुम जानते हो - हम आत्मायें अपनी क्या तकदीर बनाकर आये हैं। अभी फिर हम नई दुनिया के लिए तकदीर बना रहे हैं। ... बाप है श्रीमत देने वाला, नई दुनिया का स्वराज्य देने वाला।... अभी तुम बच्चों की तकदीर बन रही है।" सा.बाबा 17.9.07 रिवा.

"तुम्हारी ये लाइफ मोस्ट वेल्यूबुल है, इसमें तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो।... उत्तम से उत्तम दान है अविनाशी ज्ञान रत्नों का। ... पूरा नष्टोमोहा बनना है, प्यार एक बाप से रखो, उनको ही याद करना है।" सा.बाबा 17.9.07 रिवा.

"तुम खुशी से बाबा के पास जाने की तैयारी कर रहे हो। घुटका प्रूफ यहाँ ही बनना है। ऐसे सन्यासी भी बहुत होते हैं, जो बैठे-बैठे शरीर छोड़ देते हैं। सन्नाटा हो जाता है।... अन्त में एक बाप की याद में ही शरीर छूटे, कोई घुटका नहीं आये, ऐसी प्रैक्टिस करनी चाहिए।"

सा.बाबा 18.9.07 रिवा.

"पतित-पावन शिवबाबा के भण्डारे में जो आता है, वह पावन बन जाता है, इसलिए इसको ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। इसकी बहुत महिमा है। योग में रह भोजन बनाओ और खाओ तो तुम्हारी बहुत अच्छी उन्नति होगी। उस भोजन में ताकत आ जाती है।" सा.बाबा 18.9.07 रिवा.

"दुख-सुख, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति ... आदि कुछ भी हो परन्तु तुम पढ़ाई को तो न छोड़ो। ... अगर श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो माया कहाँ न कहाँ वार करती रहेगी।"

सा.बाबा 26.9.07 रिवा.

"यह युद्ध का मैदान है। कुछ भी बात समझ में न आये तो पूछो क्योंकि तुमको औरों को भी समझाना है। ... अनुभवी टीचर न हो तो कैसे किसको समझा सकेगी। ... जब तक ज्ञान की पूरी पराकाष्टा आ जाये, कर्मातीत अवस्था हो, उस समय तक माया के तूफान आते रहेंगे।... इनसे जरा भी डरना नहीं है।" सा.बाबा 27.9.07 रिवा.

"तुम ब्राह्मण कुल भूषणों को बिल्कुल ह्रास नहीं होना चाहिए।... तुम बच्चों को कब ह्रास नहीं होना चाहिए। तुम समझते हो - बाबा रामराज्य की स्थापना कर रहे हैं, रावण राज्य का विनाश होना है। इसमें डरने की कोई बात नहीं है।" सा.बाबा 28.9.07 रिवा.

"जीते जी मरने का अर्थ कितना सहज है। तुम जीते जी मरे हुए हो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हो। ... बाबा की याद में शरीर छूट जाये तो अच्छा है। सदैव तैयार रहना चाहिए।"

सा.बाबा 28.9.07 रिवा.

"माया का वार अच्छे-अच्छे बच्चों पर भी हो जाता है। कोई तो ऐसे मूर्ख बन जाते हैं, जो कहते हैं - हमारा तो डायरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन है। ... सतगुरु का निन्दक बनें तो ऊंच ठौर पा नहीं सकेंगे। ... मेहनत है। माया किसकी बुद्धि को ताला लगा देती है तो फिर उल्टा-सुल्टा बोलते रहते हैं।" सा.बाबा 28.9.07 रिवा.

"हम ज्ञान सागर बाप के बच्चे हैं, अभी हम ज्ञान सागर द्वारा इस सारे सृष्टि-चक्र वा ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हैं। ... तुम गॉडली स्टूडेण्ट हो, तुमको पढ़ाई एक दिन भी मिस नहीं करना है। ... रात-दिन पढ़ाई का बहुत शौक होना चाहिए। मात-पिता को भी रात-दिन शौक है ना।"

सा.बाबा 29.9.07 रिवा.

"बाप का फरमान है पवित्र बनो तो 21 जन्म की राजाई पायेंगे। पतित बनने से तो बर्तन मांजकर पवित्र रहना अच्छा है। परन्तु देहाभिमान न टूटने के कारण वर्से को भी गँवा देते हैं। ... अपवित्र बनने से तो झाड़ू लगाकर, बर्तन मांजकर पवित्र रहना अच्छा है। इसमें बहुत देही-अभिमानी बनना पड़े।" सा.बाबा 2.10.07 रिवा.

"बाप बच्चों को समझाते हैं - दिल हमेशा साफ रहनी चाहिए।... बाप है गरीब निवाज। वाह गरीबी वाह! गरीबों को ही साहूकार बनना है। बाप भारत को गरीब से साहूकार बनाते हैं। भारतवासी ही बनेंगे और बनेंगे भी वे जो श्रीमत पर चलेंगे।" सा.बाबा 2.10.07 रिवा.

"चढ़ती कला का और उतरती कला का भी चित्र है। उतरती कला में 5000 वर्ष और चढ़ती कला

में एक सेकेण्ड लगता है। ... बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। सबको चक्र का भी ज्ञान देना है। ... चढ़ती कला तो परमात्मा ही करा सकते हैं। बाकी तो एक-दो को नीचे ही गिराते रहते हैं। देवतायें भी नीचे गिरते जाते हैं। भल सुख में हैं परन्तु कला तो कम होती जाती है ना।"

सा.बाबा 4.10.07 रिवा.

"यह है रुहानी कमाई, तो इस कमाई में बहुत ध्यान देना चाहिए। योग की बहुत प्रैक्टिस करनी चाहिए। सुबह उठकर बड़े प्यार से बाप को याद करना चाहिए। ... आत्मा याद से ही उड़ेगी, ज्ञान से थोड़ेही उड़ेगी।" सा.बाबा 4.10.07 रिवा.

"बच्चों को अपने भाई-बहनों पर बहुत रहम करना चाहिए। बाबा रहमदिल है ना। मेरा आना भी भारत में ही होता है। और जगह मेरा आना नहीं होता है। शिवजयन्ति भी भारत में मनाई जाती है। ... भारत है बड़े ते बड़ा तीर्थ। गीता में कृष्ण का नाम डालने से इतने बड़े तीर्थ भारत की महिमा गुम हो गई है।" सा.बाबा 4.10.07 रिवा.

"बाप भारत को स्वर्ग कैसे बनाते हैं, यह गुप्त बात है ना। ... बच्चों को खुशी होनी चाहिए कि हम अपने लिए राजाई स्थापन कर रहे हैं। औरों को भी रास्ता दिखाकर प्रजा भी बनानी चाहिए। ... तुम जानते हो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी प्रजा कैसे बनती है।" सा.बाबा 4.10.07 रिवा.

"अपन को आत्मा बिन्दी समझ बिन्दी बाप को याद करने में थोड़ी डिफीकल्टी तो है ... तुमको यह ज्ञान घास मिलता है, फिर इसको विचार-सागर मन्थन करते रहो। जैसे गाय का मुख चलता रहता है। तुम्हारा मुख तो चलने की दरकार नहीं है, बाकी अन्दर में सबकुछ याद करना है। ... सहज होते भी याद ठहर जाये, उसमें टाइम तो लगता है ना।" सा.बाबा 17.12.1968 रात्रि क्लास

"उस समय सारा भारत ही नया होता है। दीपक आदि जगाना, यह सब भक्ति मार्ग है। ... उस दिन बारूद कितना जलाते हैं। यह सब वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ मनी, वेस्ट ऑफ एनर्जी करते रहते हैं।" सा.बाबा 6.10.07 रिवा.

"किसी ने कहा - लौकिक बाप गुस्सा करता है, तो मैंने कहा कि जब वह क्रोध करता है तो तुम अच्छे-अच्छे फूल चढ़ाओ। ... एक तो सबके साथ प्रेम से चलना है, दूसरा स्मृति में रहना है और स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।" सा.बाबा 8.10.07 रिवा.

"इस समय परमपिता परमात्मा प्रैक्टिकल में मात-पिता का पार्ट बजा रहे हैं। ... तुम श्रीमत पर सबकी परमात्मा के साथ सगाई कराते हो।" सा.बाबा 11.10.07 रिवा.

"बाबा का फरमान है - अपने को निराकार आत्मा समझ निराकार बाप को याद करो। अपनी और दूसरों की देह को भूलना है।... बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हों।"

सा.बाबा 12.10.07 रिवा.

"बाप के साथ योग चाहिए, जिससे विकर्म विनाश हों। एवरहेल्दी-एवरवेल्दी बनने के लिए स्वदर्शन चक्र फिराना पड़े। ... जितना याद में रहेंगे तो अतीन्द्रिय सुख की भासना आयेगी। ... तुम

अभी ईश्वरीय कुल के बने हो तो कितना प्यार से उनको याद करना चाहिए।"

सा.बाबा 13.10.07 रवि.

"स्वदर्शन चक्र फिराने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, नहीं तो सजायें खायेंगे और विजय माला में भी नहीं आयेंगे। जब फ्री हो तो कछुये के मिसल चुप बैठकर चक्र को फिराओ।"

सा.बाबा 13.10.07 रवि.

"धरती को आकाश पुकारे ... धरती पर रहने वालों को आकाश में रहने वाला बाप पुकारते हैं। अब तुमको मेरे पास आना है, इसलिए नष्टोमोहा बनो। ... तुमको देह सहित इस सारी डर्टी दुनिया नर्क को भूलना है।" सा.बाबा 13.10.07 रवि.

"मैं सबसे साहूकार हूँ, मैं गरीबों को दान देता हूँ। ... यह इन्द्रप्रस्थ, यहाँ हंस मोती चुंगने वाले ही आने चाहिए। बाकी जो बगुले होंगे, वे तो पत्थर ही उठायेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं - यहाँ हंस ही आने चाहिए, बगुले नहीं।" सा.बाबा 13.10.07 रवि.

"बार-बार मन से रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो कि बोझ क्या है और डबल लाइट का अनुभव क्या है! दोनों का अन्तर सामने रखो। समय की समीपता प्रमाण बापदादा हर एक बच्चे में क्या देखने चाहते हैं? जो कहते हैं, वह करके दिखाना है। जो सोचते हो, वह स्वरूप में लाना है क्योंकि बाप का वर्सा है, जन्मसिद्ध अधिकार है - मुक्ति और जीवनमुक्ति।"

अ.बापदादा 15.10.07

"अपने से पूछो - क्या मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव करना है वा सतयुग में जीवनमुक्ति का अनुभव करना है वा अब संगमयुग में मुक्ति-जीवनमुक्ति का संस्कार बनाना है? ... इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता है क्योंकि सतयुग में जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध दोनों का ज्ञान ही नहीं होगा। अभी अनुभव कर सकते हो कि जीवन-बन्ध क्या है और जीवनमुक्त क्या है।" (परमधाम में शरीर ही नहीं होगा तो मुक्ति का अनुभव भी कैसे होगा) अ.बापदादा 15.10.07

"बन्धन का कारण सोचो और उसका निवारण सोचो। निवारण बापदादा ने अनेक बार भिन्न-भिन्न रूप से दिये हैं। सर्वशक्तियों का वरदान दिया है, सर्वगुणों का खजाना दिया है ... स्टॉक में है लेकिन खज़ाने को समय पर यूज़ नहीं करते हो ... प्वाइन्ट सोचते हैं लेकिन प्वाइन्ट बनकर प्वाइन्ट को यूज़ नहीं करते। इसलिए प्वाइन्ट रह जाती है, प्वाइन्ट बनकर यूज़ करो तो निवारण हो जाये।"

अ.बापदादा 15.10.07

"बन्धन मुक्त होने और जीवनमुक्ति का अनुभव करने की सहज बिधि है - बिन्दी यूज़ करो। संगमयुग में बिन्दी की कमाल है। आत्मा बिन्दी, बाप बिन्दी और ड्रामा बिन्दी है ... और दूसरी युक्ति है - दुआ दो और दुआ लो।... एक दिन अभ्यास करके देखो, पक्का करो - दुआ देनी है और दुआ लेनी है। ... कुछ भी हो जाये लेकिन मुझे दुआ देनी है और दुआ लेनी है।"

अ.बापदादा 15.10.07

"जैसे विश्व-सेवा उमंग-उत्साह से कर रहे हैं ऐसे स्वयं को भी अर्थात् स्व सेवा के प्रति चेक करना और अपने को बाप समान बनाना।... बाबा दो शब्द बार-बार रिवाइज़ कराये हैं। वे दो शब्द हैं - अचानक और एवर-रेडी।" अ.बापदादा 15.10.07

"अभी उथल-पाथल बहुत होगी। जो कच्चे हैं, उनके तो देखकर ही प्राण निकल जायेंगे।... तुमको तो बहुत मजबूत होना चाहिए। गाया भी जाता है कि मिरुआ मौत मलूक का शिकार।... इस लड़ाई के द्वारा ही स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं। ... कब्रिस्तान फिर परिस्तान होगा। यह देहली परिस्तान थी, देवी-देवताओं का राज्य था।" सा.बाबा 16.10.07 रिवा.

"अभी हम ईश्वरीय गुण वाले बनते हैं। ईश्वर बैठ हमको गुणवान बनाते हैं। बाबा की शिक्षा से हम सर्वगुण सम्पन्न ... बनते हैं। भारत की महिमा है अर्थात् भारत में रहने वालों की महिमा है। ... तुमको बहुत रोशनी मिली है। तुमको बहुत हर्षित रहना है।" सा.बाबा 17.10.07 रिवा.

"पढ़ाई की बातें रोज़ बुद्धि में आनी चाहिए। मुख खोलने की प्रैक्टिस करनी चाहिए। अपनी उन्नति के लिए आपेही प्रबन्ध रचना है। जैसे बाबा सबको रास्ता बताते हैं, ऐसे हमको भी औरों को रास्ता बताना है।" सा.बाबा 17.10.07 रिवा.

"ये है अविनाशी ज्ञान रत्न। जो धारण कर औरों को भी कराते हैं तो वे कितना ऊंच पद पाते हैं। बच्चों के मुख से सदैव रत्न ही निकलना चाहिए। ... जो मेहनत करेंगे, आप समान बनायेंगे तो फल भी उनको ही मिलेगा।" सा.बाबा 17.10.07 रिवा.

"जिन्होंने कल्प पहले राजाई ली है, वे ही अब भी ले रहे हैं।... तुम पुरुषार्थ कर रहे हो बाबा से फिर से राज्य-भाग्य लेने का। तुमको बहुत खुशी रहनी चाहिए। जो अच्छी तरह धारण कर आप समान बनाते रहेंगे, उनको बहुत खुशी रहेगी।" सा.बाबा 18.10.07 रिवा.

"इसमें डरने की तो कोइ बात ही नहीं है। बाबा तो देने वाला है। कहते हैं - जो कुछ तुम्हारा है सो कुर्बान कर दो। ... तीन पैर पृथ्वी के लेकर सेन्टर खोल देते हैं। जो रिलीजस माइन्डेड होंगे, वे तो कहेंगे कि क्यों नहीं हम ऐसा हॉस्पिटल खोलें, जो मनुष्य एवर-हेल्दी बन जायें। बाबा हेल्थ-वेल्थ देते हैं।" सा.बाबा 18.10.07 रिवा.

"निश्चय कर पूरा बाप को फालो करना चाहिए।... अपने को कहते हो - हम ब्राह्मण हैं तो फिर क्यों नहीं सबकुछ नई दुनिया के लिए ट्रान्सफर कर देना चाहिए। बाबा की सर्विस में लग जाने से तुम कभी भूख नहीं मरेंगे।" सा.बाबा 18.10.07 रिवा.

"बच्चों को बाबा का फरमान है - शिवबाबा के भण्डारे से ही सबकुछ लेना है। शिवबाबा के भण्डारे से लेंगे तो शिवबाबा याद आयेगा। शिवबाबा के भण्डारे से बच्चों को सबकुछ मिलना है। ऐसा भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि फलाने को अच्छी साड़ी पड़ी है तो हम भी पहनें। अरे तुम बाप से राजाई का वर्सा लेने आई हो या साड़ी का वर्सा।... शिवबाबा कहाँ-कहाँ बच्चों की परीक्षा भी लेते हैं।" सा.बाबा 19.10.07 रिवा.

"तुम जितना रुस्तम बनेंगे, उतना माया जोर से आयेगी।... बुढ़ापे में भी आकर चकरी लगेगी कि शादी करें, यह करें। माया बूढ़े को भी जवान बना देगी। तुम डरते क्यों हो ? भल कितना भी तूफान

आयें परन्तु बाबा को याद करने से बच जायेंगे।” सा.बाबा 19.10.07 रिवा.

“आपस में प्लॉन बनाते हैं कि हम आपस में गन्धर्वी विवाह करेंगे। मैं तुमको बचाता हूँ, बन्धन से छुड़ाता हूँ। बाबा कहते हैं - तुम कैसे बचा सकते हो, पहली तुम माया से बचे हो ? तुमने बाबा से राय ली है ? श्रीमत ही नहीं ली।... बाबा समझ जाते हैं कि यह रसातल में जा रहा है।”

सा.बाबा 24.10.07 रिवा.

“जो कोई आये, उनको यह ज्ञान बैठ समझाना चाहिए। तुमको रहमदिल और महादानी भी बनना है। इसको अविनाशी ज्ञान रत्न कहा जाता है। ... अभी यह नये झाड़ का कलम लग रहा है। ... माया के तूफान भी लगते हैं। अगर बुद्धि में बाबा की याद होगी तो माया का असर नहीं होता है।”

सा.बाबा 25.10.07 रिवा.

“अब बाप कहते हैं - तुमने जो कुछ पढ़ा है और सुना है, वह सब भूल जाओ। मनुष्य मरते हैं तो सब कुछ भूल जाता है। तुम भी यहाँ जीते जी मरते हो। ... यह भी एक कहानी है, जो औरों को भी समझानी है।” सा.बाबा 25.10.07 रिवा.

“विशाल बुद्धि एक-दो के पिछाड़ी सेन्टर्स खोलते जायेंगे। तुम जानते हो - हम श्रीमत पर अपना गुप्त राज्य स्थापन कर रहे हैं। ... बाप समझानी देते हैं तो चिन्तन भी चलता रहे। ... भारत परमात्मा की बर्थ प्लेस है।” सा.बाबा 25.10.07 रिवा.

“तुम बच्चे ब्रह्मा का मर्तबा भी देख रहे हो कि यह सबसे जास्ती पढ़ते हैं। यह बरोबर सबसे नज़दीक है, पहले इनके कान सुनते हैं। ... बाबा बच्चों का रिगार्ड भी रखते हैं, तो बच्चों को फादर को फॉलो करना चाहिए। एक-दो का रिगार्ड रखना चाहिए।” सा.बाबा 26.10.07 रिवा.

“अभी नाटक पूरा होता है, अब वापस घर जाना है तो जरूर घर याद आयेगा। हर एक बात की समझानी मुरली में मिलती रहती है। बच्चे मुरली नोट नहीं करते, फिर-फिर वे ही बातें बाबा से पूछते रहते हैं। ... तुम बच्चे इस समय सब नई-नई बातें सुनते हो।”

सा.बाबा 26.10.07 रिवा.

“भक्ति में तो खूब नाचते-गाते ताली बजाते रहते हैं परन्तु सद्गति तो होती नहीं है। तुम बच्चे सद्गति में जाने के लिए बिल्कुल चुप रहते हो।... सारा मदार है बुद्धि की यात्रा पर। अचल-अडोल अंगद की तरह बनना है।” सा.बाबा 26.10.07 रिवा.

“सभी आत्माओं को बाप ने डायरेक्शन दिया है कि मुझ पतित-पावन बाप को याद करो। ... माया भटकायेगी जरूर। न चाहते हुए भी तुम्हारी बुद्धि कहाँ न कहाँ भागती रहेगी। ... पहले-पहले अपने को आत्मा समझो - यह है ज्ञान, फिर बाप को याद करो - यह है विज्ञान क्योंकि आत्मा को ज्ञान से परे विज्ञान में, शान्त घर में जाना है।” सा.बाबा 27.10.07 रिवा.

“तुम्हारे कदम-कदम में पदम हैं। देवताओं के पैर में पदम दिखाते हैं तो इसका भी कोई अर्थ तो होगा ना। ... हम बेहद के बाप की सन्तान बने हैं, बाबा से वर्सा ले रहे हैं। तो तुमको अथाह खुशी होनी चाहिए। यहाँ तुम्हारा स्वर्ग से भी ऊंच पद है। ... अपनी तकदीर पर तुमको बहुत खुश रहना

चाहिए।” सा.बाबा 27.10.07 रिवा.

“सभी एक सेकेण्ड भी मन्सा-वाचा-कर्मणा सर्विस से रेस्ट नहीं करना। तब ही बेस्ट बनेंगे। ... समाना और सामना करना - यह है इस ग्रुप का स्लोगन। अपने पुराने संस्कारों को समाना है और माया से सामना करना है। नॉलेजफुल के साथ पॉवरफुल भी बनना है, तब ही सर्विसएबुल बनेंगे।”

अ.बापदादा 9.12.70

“ये गुह्य ज्ञान की बातें हैं। अब तुमने समझा है तो औरों को समझाने की युक्ति निकालो। तुमको ख्याल आना चाहिए कि औरों को कैसे दूरांदेशी बनायें, सबको बाप का परिचय कैसे दें। ... पहले दूरांदेशी पीछे विशाल बुद्धि कहेंगे।” सा.बाबा 29.10.07 रिवा.

“अभी तुम सच खण्ड की स्थापना कर रहे हो तो तुम्हारे ऊपर बड़ी जबाबदारी है, इसलिए बहुत खबरदारी रखनी है। ... अपने को देखना है कि हम सर्विसके बजाए कहाँ डिस्सर्विस तो नहीं करते हैं।” सा.बाबा 28/31.10.07 रिवा.

“शिवबाबा तो अन्तर्यामी है परन्तु साकार को तो रजिस्टर दिखाना पड़े। यह सब तूफान पहले मेरे पास ही आते हैं क्योंकि जब तक इनको अनुभव न हो तो बच्चों को कैसे समझा सकें। ... माया बहुत हैरान करेगी। यह भी उसका फर्ज है, इसलिए टकरायेगी जरूर। बाकी तुम्हारा काम है बाप को याद कर माया को भगाना।” सा.बाबा 28/31.10.07 रिवा.

“मंजिल तो ऊंच है, इसलिए कहते हैं चढ़े तो चाखे प्रेम रस ... इसलिए बड़ी सावधानी से चलना पड़ता है परन्तु डरना नही है।” सा.बाबा 28/31.10.07 रिवा.

“मनुष्य एक्टर होते भी ड्रामा को नहीं जानते। इस ज्ञान को गरीब ही समझते हैं। साहूकार तो कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप गरीब निवाज़ पतित-पावन गाया हुआ है। अब प्रैक्टिकल में वह पार्ट बजा रहे हैं। ... इसमें कब अफसोस नहीं किया जाता है। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। ड्रामा के पट्टे पर खड़ा रहना है, हिलना नहीं चाहिए।” सा.बाबा 1.11.07 रिवा.

“बाप रोज़ खज़ाना देते हैं, रोज़ पढ़ाते हैं, प्यार भी देते हैं। बाप, टीचर, सतगुरु तीनों इकट्ठे हैं। ... बच्चे बाप को चिट्ठी नहीं लिखते तो बाप को भी फिकर होता है कि बच्चे को क्या हुआ ? ... बाबा को समाचार देंगे तो बाबा राय देंगे कि ऐसे-ऐसे अपने को माया से बचाते रहो।”

सा.बाबा 2.11.07 रिवा.

“समर्थ और व्यर्थ, इसको परखना और परिवर्तन करना - यह है होली हंस का कर्तव्य। ... कोई कितना भी व्यर्थ बोले लेकिन आप व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो। व्यर्थ को अपनी बुद्धि में स्वीकार नहीं करना। अगर एक भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म स्वीकार किया तो एक व्यर्थ अनेक व्यर्थ को जन्म देगा।” अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 5

“पाण्डव सेना हो ना। सेना माना अलर्ट, सावधान, खबरदार रहने वाले।... स्मृति स्वरूप रहने की आदत नेचुरल हो जाये, अटेन्शन की आदत नेचुरल हो जो जाये।... बहुत काल का अभ्यास चाहिए। सदैव अलर्ट माना सदा एवर-रेडी।... विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का

इन्तजार नहीं करो।" अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 1

"सदा याद रखो कि हम दिलाराम बाप के दिल तख्त-नशीन हैं। यह स्मृति ही तिलक है। तिलक है तो तख्त-नशीन भी हैं। ... स्मृति नशा दिलाती है। अगर स्मृति नहीं है तो नशा भी नहीं है।"

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 2

"अपनी स्थिति रुहानी आकर्षमय बनाओ। जब चुम्बक अपनी तरफ खींच सकता है तो क्या आपकी रुहानी शक्ति आत्माओं को नहीं खींच सकती है! ... ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ कर्म "सेवा" है। तो अचल बनो, अचल बनाओ और सदा सन्तुष्ट रहो।" अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 2

"जैसे ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या, सेवा का फल आप सब बच्चों को मिल रहा है, ऐसे हर एक बच्चा अपने त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाये। ... साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्र गति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता। अभी यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए।"

अ.बापदादा 18.1.2000

"सभी आत्माओं के प्रति दिल से रहम इमर्ज हो। ... आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर के बच्चे हैं, सभी आपके ही बिरादरी हैं, शाखायें हैं, परिवार हैं। आप ही भक्तों के इष्ट देव हो। ... पुकार सुनो और रेस्पाण्ड दो। परिवर्तन का वायुमण्डल बनाओ।" अ.बापदादा 18.1.2000

"हर एक के स्वभाव का राज़ जानकर राज़ी रहो और राज़ी करो। ... दुआयें देते जाओ, लेने का संकल्प नहीं करो। देते जाओ तो मिलता जायेगा। देना ही लेना है। ... दाता के बच्चे बनकर देते जाओ तो आपही मिलेगा।" अ.बापदादा 18.1.2000

"फालो फादर में यह क्यों, क्या, कैसे शब्द समाप्त हो जाते हैं। कैसे नहीं, ऐसे। बुद्धि फौरन जज करती है - ऐसे चलो, ऐसे करो। ... बापदादा बच्चों को यही इशारा देते हैं कि अपने मन को स्वच्छ रखो। बहुतों के मन में अभी भी व्यर्थ और नेगेटिव के छोटे-बड़े दाग़ हैं।"

अ.बापदादा 15.2.2000

"बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन सदा हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना और शुभ कामना रखो - यह है स्वच्छ मन। अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखना - यह है स्वच्छ मन। ... अपने आपको अटेन्शन से देखो। ... तब डबल लाइट स्थिति बन सकती है। बाप समान स्थिति बनाने का यही सहज साधन है। यह अभ्यास अन्त में नहीं बहुत काल का आवश्यक है।"

अ.बापदादा 15.2.2000

"अभी यह नेचुरल स्थिति और नेचर बनाओ कि "मैं फरिश्ता हूँ" अमृतवेले उठते ही यह पक्का करो कि मैं फरिश्ता हूँ, परमात्म-श्रीमत पर नीचे इस साकार तन में आया हूँ, सभी को सन्देश देने के लिए वा श्रेष्ठ कर्म करने के लिए। कार्य पूरा हुआ और अपने शान्ति की स्थिति में स्थित हो जाओ, ऊंची स्थिति में चले जाओ।" अ.बापदादा 15.2.2000

"एक सेकेण्ड में फरिश्ता अर्थात डबल लाइट बन सकते हो? एक सेकण्ड में, 10 सेकण्ड भी नहीं ... देह-भान में आने में कितना समय लगता है... पता ही नहीं पड़ता कि देह-भान में आ गये। ऐसे ही यह अभ्यास करो।... सोल कान्सस स्थिति नेचुरल हो जाये। ... (दादी जानकी ने कहा आज की आज होगी, कल नहीं)... बापदादा ने आज ब्रह्मा बाप का कौनसा संस्कार बताया - "तुरत दान महापुण्य"।" अ.बापदादा 15.2.2000

""पाना था वो पा लिया" - यह ब्रह्मा बाप के आदि अनुभव के बोल हैं, तो जो ब्रह्मा बाप के बोल वही सर्व ब्राह्मणों के बोल हैं। ... सदा बाप की कम्पनी में रहो। बाप ने सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया है।... सर्व सम्बन्धों का अनुभव समय प्रति समय करते रहो तो कम्पेनियन भी होगा, कम्पनी भी होगी।... सर्व सम्बन्धों का सुख लो, सर्व सम्बन्धों को कार्य में लगाओ।"

अ.बापदादा 3.3.2000

"एक-दो को आगे बढ़ते देख खुश होना - यह भी ब्राह्मण कुल की फर्स्ट कल्चर है, ब्राह्मण कुल की सभ्यता है।... "कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो" - बापदादा वरदान में यह शब्द देते हैं। हर एक ब्राह्मण के चेहरे और चलन में ब्राह्मण कल्चर प्रत्यक्ष हो।... हर एक ब्राह्मण मुस्कराता हुआ हर एक से सम्पर्क में आये।" अ.बापदादा 3.3.2000

"हर एक ब्राह्मण मुस्कराता हुआ हर एक से सम्पर्क में आये। कोई से कैसा, कोई से कैसा - नहीं, किसको देखकर अपना कल्चर नहीं छोड़ो। बीती बातें भूल जाओ। नई सभ्यता के नये संस्कार जीवन में दिखाओ।" अ.बापदादा 3.3.2000

"कोई भी सेवा करते हो चाहे देश में चाहे विदेश में तो बापदादा यही कहते हैं कि पहले एकमत, एक बल, एक भरोसा और एकता साथियों, वायुमण्डल में हो।... पहले इन चार बातों की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो।... सेवा सब करते हैं लेकिन नम्बर बापदादा के पास रजिस्टर में नोट उसका होता है, जो निर्विघ्न सेवाधारी है।"

अ.बापदादा 19.3.2000 डबल विदेशी

"बापदादा भाषण करने वाला उसको कहता है, जो पहले भासना दे, फिर भाषण करे। भाषण तो आजकल स्कूल-कॉलेज के लड़के-लड़कियां भी बहुत अच्छा करते, तालियां बजती रहती हैं लेकिन बापदादा के पास लिस्ट वह है, जो निर्विघ्न सबकी सन्तुष्टता, प्रसन्नता वाले हों।"

अ.बापदादा 19.3.2000 डबल विदेशी

"बापदादा बच्चों के पांच स्वरूप देख रहे हैं - अनादि ज्योतिबिन्दु स्वरूप... दूसरा आदि देवता स्वरूप... मध्य में पूज्य स्वरूप... संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप और लास्ट में है फरिश्ता स्वरूप। ... अच्छा एक सेकेण्ड में अपने इन पांचों रूपों को अनुभव कर सकते हो?... जब चाहो तब उस स्वरूप में स्थित हो गये और अनुभव किया।" अ.बापदादा 30.3.2000

"हर घण्टे में यह 5 सेकेण्ड की एक्सरसाइज करो अर्थात् अपने 5 स्वरूपों को याद करो। ब्राह्मण शब्द याद आये तो ब्राह्मण जीवन के अनुभव में आ जाओ, फरिश्ता शब्द याद आये तो फरिश्ता

बन जाओ। ... अभी-अभी सभी यह ड्रिल करो, लगाओ चक्कर।"

अ.बापदादा 30.3.2000

"बापदादा सदा ही बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में देखने चाहते हैं।... ब्राह्मणों के जीवन में मैजारिटी विघ्न रूप बनता है - संस्कार। चाहे अपना संस्कार, चाहे दूसरों का संस्कार।... इसके लिए दो बातों का अटेन्शन रखो। एक - सच्ची दिल और दूसरा - बुद्धि की लाइन क्लीयर हो।... सच्ची दिल पर साहेब राज़ी।" अ.बापदादा 30.3.2000

"बापदादा पूछते हैं - हे दाता के बच्चे मास्टर दाता कब अपने मास्टर दातापन का पार्ट तीव्रगति से विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेंगे? ... विश्व परिवर्तन के निमित्त आत्मायें अब विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम करो। होना तो है ही, यह तो निश्चित है और होना भी आप निमित्त आत्माओं द्वारा ही है।"

अ.बापदादा 11.11.2000

"बापदादा यह सेरीमनी देखने चाहते हैं - हर एक ब्राह्मण बच्चे के दिल में सम्पन्नता और सम्पूर्णता का झण्डा लहराया हुआ दिखाई दे। जब हर ब्राह्मण के अन्दर सम्पूर्णता का झण्डा लहरायेगा तब ही विश्व में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा।" अ.बापदादा 11.11.2000

"विघ्न आयेंगे, परिस्थितियां भी आयेंगी, साधन भी बढ़ेंगे लेकिन साधन के प्रभाव से मुक्त रहना। ... यह मरना मीठा मरना है। इस मरने में दुख नहीं होता है क्योंकि यह मरना अनेकों के कल्याण के लिए मरना है। इसलिए इस मरने में मज़ा है। इसमें दुख नहीं सुख है। ... बहानेबाजी, कमजोरी की बाजी - यह सब समाप्त और उड़ती कला की बाजी करना।"

अ.बापदादा 11.11.2000

"कमजोर की कमजोरी नहीं देखना लेकिन ऐसी आत्माओं को अपने हिम्मत के हाथ से उठाना, ऊंचा करना। हिम्मत का हाथ सदा स्वयं प्रति और सर्व के प्रति बढ़ाते रहना। ... बापदादा का वरदान है - हिम्मत का एक कदम बच्चों का, हजार कदम बाप की मदद का है ही है।"

अ.बापदादा 11.11.2000

"आप सभी सोचते हो - बाप की प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी हो जाये लेकिन प्रत्यक्षता किस कारण से रुकी हुई है?... बापदादा ने बाप समान बनने के लिए कहा है। क्या बनना है, कैसे बनना है, "समान" शब्द में यह दोनों क्वेश्चन उठ नहीं सकते। बस बाप समान बनना है।"

अ.बापदादा 25.11.2000

"फालो फादर अर्थात् फुट-स्टेप फादर-मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर को फालो करना।... बापदादा सब जगह चक्कर लगाते रहते तो क्या देखा - हर सेन्टर पर और हर एक के घर में ब्रह्मा बाप के चित्र बहुत रखे हुए हैं। ... अच्छी बात है लेकिन बापदादा यह सोचते हैं कि चित्र को देख चरित्र तो याद आते हैं या सिर्फ चित्र को ही देखते हो?" अ.बापदादा 25.11.2000

"बाप समान बनने का संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है, बाकी क्या चाहिए। ... वह है दृढ़ता। ... दृढ़ता उसको कहा जाता है - मर जायें, मिट जायें लेकिन संकल्प न जाये। झुमना पड़े, जीते जी

मरना पड़े, अपने को मोड़ना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना पड़े लेकिन संकल्प नहीं जाये। इसको कहा जाता है - दृढ़ता।" अ.बापदादा 25.11.2000

"कोई इन्सल्ट करे, कोई घृणा करे, कोई अपमान करे, निन्दा करे, कभी भी कोई दुख दे लेकिन आपकी शुभ भावना मिट नहीं जाये। आप चेलेन्ज करते हो कि हम माया को, प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक हैं।" अ.बापदादा 25.11.2000

"कभी भी विनाश आदि की बातों को अपना आधार बनाकर अलबेले नहीं होना। अचानक होना है। ... आज भी सम्भव है। इतना एवर-रेडी रहना ही है। ... आप समय का इन्तजार नहीं करो लेकिन अभी समय आपका इन्तजार कर रहा है।" अ.बापदादा 16.12.2000

"विनाश तो अचानक होना है। एक घण्टा पहले भी बापदादा एनाउन्स नहीं करेगा, नहीं करेगा, नहीं करेगा। अगर अचानक नहीं हो होगा तो पेपर कैसे होगा और नम्बर कैसे बनेंगे। पास विद् ऑनर का फाइनल सर्टीफिकेट का पेपर तो अचानक में ही होना है।" अ.बापदादा 16.12.2000

"अन्त में शक्तियों और पाण्डव बच्चों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष होना है।... बाप समान बनना है तो ब्रह्मा बाप को फालो करो। फिर अशरीरी, बिन्दी तो ऑटोमेटिकली हो जायेंगे।... बापदादा ऐसे रुहानी चलते-फिरते कर्मयोगी फरिश्ते देखने चाहते हैं।" अ.बापदादा 16.12.2000

"अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, रूह-रुहान करो, कर्मयोगी फरिश्ता स्वरूप का वरदान लो। ... कम बोलो, धीरे बोलो। फरिश्ता अर्थात् जिसका काम है वही सुने, जितना काम है, उतना ही बोले।" अ.बापदादा 16.12.2000

"ब्रह्मा बाप के प्यार का रिटर्न है - ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी फरिश्ता भव। बापदादा यही कह रहे हैं - इस स्थिति की धरनी तैयार करो तो बापदादा साक्षात् बाप बच्चों द्वारा साक्षात्कार अवश्य करायेगा। "साक्षात् बाप और साक्षात्कार" - ये दो शब्द याद रखना।"

अ.बापदादा 16.12.2000

"फरिश्ते रूप से वायब्रेशन फैला सकते हो ... फरिश्ता अर्थात् पुराने संसार और पुराने संस्कार से नाता नहीं। अभी संसार परिवर्तन आप सबके संस्कार परिवर्तन के लिए रुका हुआ है। ... इस वर्ष का टॉपिक है - "संस्कार परिवर्तन"। फरिश्ता संस्कार, ब्रह्मा बाप समान संस्कार।"

अ.बापदादा 16.12.2000

"समय प्रमाण मन में धुन लगी रहे - मुझे अखण्ड महादानी बनना ही है। अखण्ड महादानी, महादानी नहीं, अखण्ड। मन्सा से शक्तियों का दान, वाचा से ज्ञान का दान और अपने कर्म से गुण दान। ... विशेष ध्यान रखो - हर आत्मा को गुण दान अर्थात् अपने जीवन के गुणों द्वारा सहयोग देना है। ब्राह्मणों को दान तो नहीं करेंगे ना, सहयोग दो।" अ.बापदादा 31.12.2000

"ब्रह्मा बाप को सदा कर्म में गुण दान मूर्त देखा। ... ब्रह्मा बाप ने सी (See) शिव बाप किया। अगर देखना है तो ब्रह्मा बाप को देखो। ... जो ओटे सो अर्जुन अर्थात् जो स्वयं को निमित्त बनायेगा, वह नम्बरवन अर्जुन हो जायेगा।" अ.बापदादा 31.12.2000

"जगत अम्बा माँ बोली - एडवान्स पार्टी कब तक इन्तजार करे ? क्योंकि जब आप एडवान्स स्टेज पर जाओ तब एडवान्स पार्टी का कार्य पूरा हो।... आजकल अलबेलापन बहुत प्रकार का बच्चों में आ गया है। ... जगत अम्बा बोली अगर यह धारणा सब कर लें कि हमको बापदादा चला रहा है, उसके हुक्म से हर कदम चला रहे हैं, हमको चलाने वाला डायरेक्ट बाप है तो अलबेलापन सहज समाप्त हो जायेगा।" अ.बापदादा 31.12.2000

"अब महारथियों की सेवा है - वायब्रेशन्स द्वारा आत्माओं को समीप लाना। आपस में तो स्नेह होना ही है। आपसी स्नेह औरों को वायब्रेशन द्वारा खींचेगा।... ब्राह्मण परिवार को भी अपने संगठन के वायब्रेशन द्वारा निर्विघ्न बनाना है। मन्सा सेवा की विधि को और तीव्र करो।... हर एक को शान्ति, खुशी, सुख, अपनेपन का अनुभव हो।" अ.बापदादा 31.12.2000 जगदीश भाई से

"आपके जाने के बाद आपके फरिश्ते रूप का साक्षात्कार होगा कि यह कौनसी देवी थी, जिसने मेरे को एक सेकेण्ड के लिए शान्ति का अनुभव कराया, सुख का अनुभव कराया ... औरों को भी यह पाठ पढ़ाओ। हर बात में कहें - बाबा-बाबा-बाबा। अभी मैंपन आ जाता है इसलिए लोग ब्रह्मा कुमारियों की महिमा करते, बाप की कम करते हैं।"

अ.बापदादा 31.12.2000 दादी जानकी से

जनक बच्ची को कहा कि अब तक विचार सागर मन्थन कर सबको अच्छे रूप से सूक्ष्म में ले जाने, सुनाने, अटेन्शन देने की सेवा तो बहुत की है। अब समय अनुसार सूक्ष्म मनोबल की सेवा की आवश्यकता है। ... साइलेन्स पॉवर अर्थात् मन्सा बल से स्प्रीचुअल राकेट बन दूर-दूर की आत्माओं को बाप का अनुभव कराओ, उनको आवाज़ पहुँचे कि कोई बुला रहा है, नज़दीक आने की प्रेरणा मिले, सेवा के निमित्त बनने का उमंग आये। जैसे आदि में बच्चों को ब्रह्मा बाप की अनुभूति होती थी। अ.बापदादा 20.3.2000 सन्देश

बाबा को इन बच्चों में से एक ग्रुप चाहिए जो सिर्फ ब्रह्मचारी नहीं लेकिन ब्रह्माचारी हो। हर बात में ब्रह्मा बाप को फॉलो करे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्ण बनकर अपना कार्य सम्पन्न किया। बाबा ने किसी को भी नहीं देखा कि ये ऐसा है... हर पार्ट बजाते हुए सम्पूर्ण और सम्पन्न बने - ऐसे मुझे भी बनना ही है। सेसा संकल्प लेने वाला ब्रह्माचारी ग्रुप चाहिए। ... लेकिन "प्रीत निभाने वाला, प्रतिज्ञा निभाने वाला हो।" अ.बापदादा 23.3.2000 सन्देश

"बच्चों को यज्ञ के पैसे की बहुत कदर होनी चाहिए क्योंकि इससे भारत स्वर्ग बनता है। बाप है गरीब निवाज। गरीबों की पाई-पाई पड़ेगी तब वे साहूकार बनेंगे। ... सतयुग में कब रोते नहीं हैं तो तुमको भी यहाँ कब रोना नहीं है।" सा.बाबा 6.11.07 रिवा.

"बुद्धियोग पुरानी दुनिया के मित्र-सम्बन्धियों में होने के कारण थोड़ी भी बीमारी आदि होती है तो मर पड़ते हैं। अरे योग में रहेंगे तो दर्द भी कम हो जायेगा। योग नहीं तो बीमारी कैसे छूटे। ख्याल करना चाहिए मात-पिता जो पावन बनते हैं, वे फिर सबसे पहले पतित भी बनते हैं। उनको बहुत भोगना भोगनी पड़ती है परन्तु योग में रहने के कारण बीमारी हट जाती है। नहीं तो उनकी भोगना सबसे

जास्ती है।”　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　सा.बाबा 8.11.07 रिवा.

“मालियों को पौधों की सम्भाल करनी चाहिए। माली ही ठीक नहीं होगा तो वह पौधों की क्या सम्भाल करेगा। ... पहले नम्बर में बाबा सर्विस करते हैं, सेकेण्ड नम्बर में मम्मा क्योंकि मम्मा को सेकेण्ड नम्बर में आना है। तुम बच्चों को मम्मा-बाबा को फॉलो करना है।”

सा.बाबा 9.11.07 रिवा.

“अभी तुम श्रीमत से रावण पर जीत पाते हो। गीता, महाभारत, रामायण सब है भक्ति की सामग्री। तुमने संगमयुग पर जो कर्तव्य किया है, उसका यादगार यह मन्दिर आदि बने हैं। ... लक्ष्मी-नारायण का इतना बड़ा मन्दिर क्यों बनाया है, उनकी इतनी पूजा क्यों होती है . यह किसको पता नहीं है। फिर पूज्य से पुजारी जरूर बनना पड़े।”　　　　　　　　　　सा.बाबा 10.11.07 रिवा.

“यहाँ किसका भी झूठ-सच छिप नहीं सकता। यह बाबा कहते हैं - मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ। शिवबाबा अन्तर्यामी है। बाप खुद कहते हैं - मैं निराकार सब जानता हूँ।... बाबा ने कहा है - इनसे मत छिपाओ, इनको सब कुछ सुनाओ तो आधा माफ हो जायेगा। मैं तो सबकुछ जानता हूँ परन्तु इनको कैसे पता पड़े, इसलिए इनको सब सुनाओ।”　　　　　　　　　　सा.बाबा 10.11.07 रिवा.

“जन्म-जन्मान्तर का हिसाब तो मेरे पास जमा है। बाकी इस जन्म का जो है, वह इनको सुनाओ तो मैं भी सुनूँगा।... बहुत सजायें मिलती हैं। इसलिए पाप कभी भी सर्जन से छिपाओ मत। माफ वह करेंगे, यह नहीं। इस समय पाप करने से तो सौगुणा हो जायेगा।”

सा.बाबा 10.11.07 रिवा.

“तुमको डरना नहीं चाहिए। गुप्त वेष में तुम कहाँ भी जा सकते हो। बहुरूपी के बच्चे बहुरूपी होने चाहिए।... यह ज्ञान तो चलना ही है। हर एक पंथ वाले को बुलाते रहो। राजाओं को भी बुला सकते हो।... यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, आओ तो हम आपको परमपिता परमात्मा और 5000 वर्ष के चक्र की कहानी सुनायें।”　　　　　　　　　　सा.बाबा 10.11.07 रिवा.

“बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। पतित आत्मा वहाँ जा नहीं सकती। ... इस योग अग्नि है, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। यह कोई नहीं जानते कि योग अग्नि से विकर्म विनाश हो सकते हैं।... कोई विघ्न न आये, जल्दी योग लग जाये तो जल्दी विकर्म विनाश हो जायें, परन्तु ऐसा हो नहीं सकता। टाइम लगता है। योग लगाते रहो, अन्त में कर्मातीत अवस्था होगी, फिर यह दुनिया खत्म हो जायेगी।”　　　　　　　　　　सा.बाबा 10.11.07 रिवा.

“विजय का नशा सदा स्मृति में रहे क्योंकि विजय आप सब ब्राह्मण आत्माओं का जन्मसिद्ध अधिकार है। कल्प-कल्प के विजयी हैं... सदा अमृतवेले अपने मस्तक में विजय का तिलक लगाओ। ... जब अविनाशी बाप मिला है तो अविनाशी बाप द्वारा तिलक भी अविनाशी मिला है।”

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 5

“जैसे बाप को रहम आता है कि भटकती आत्माओं को ठिकाना दें, तो बच्चों के मन में भी यह रहम आना चाहिए। तो अभी ऐसा कोई नया साधन निकालो, जिससे अनेक आत्माओं को सन्देश मिल

जाये।" अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 5

"पहले-पहले यह बुद्धि में बिठाना चाहिए कि कोई भी देहधारी को याद करने से मुक्ति-जीवनमुक्ति मिल नहीं सकती। ... मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा बाप ही आकर देते हैं परन्तु किसको डायरेक्ट और किसको इन्डायरेक्ट।" सा.बाबा 12.11.07 रिवा.

"तुम कहते हो - बाबा हम मर चुके हैं, हम आपके हैं। फिर मित्र-सम्बन्धियों तरफ बुद्धि क्यों जाती है। जाती है तो गोया मरे नहीं हो, बाप के बने नहीं हो। ... बाबा के बन गये, पुराना सम्बन्ध छूटा। वह जाने, उनके कर्म जाने, हम क्या जाने। इतनी उछल होनी चाहिए।"

सा.बाबा 12.11.07 रिवा.

"पारलौकिक बाप है ही सुख देने वाला, तब तो भक्ति मार्ग में इतना याद करते हैं। ... तुम हर एक बाप से वर्सा ले रहे हो। बाप की श्रीमत है - हर एक अपने को बाप का बच्चा समझे और सबको बाप का परिचय देते रहे तथा सृष्टि-चक्र का राज़ भी समझाये।"

सा.बाबा 13.11.07 रिवा.

"वैसे वास्तव में जो भी आत्मायें हैं, वे सब याद करती हैं परमपिता परमात्मा बाप को। ... बेहद का बाप सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं।... अभी तुमने पारलौकिक माँ-बाप की गोद ली है।"

सा.बाबा 14.11.07 रिवा.

"बाप कहते हैं - भ्रष्टाचारी को वर्सा मिल न सके। प्रैक्टिकल में इनका (ब्रह्मा) ही मिसाल देखा ना। ... इस ज्ञान मार्ग में बड़ा अच्छा नष्टोमोहा चाहिए। बाबा की आज्ञा मिली हुई है, जो बच्चे आज्ञाकारी नहीं, वे कपूत ठहरे।" सा.बाबा 15.11.07 रिवा.

"बाबा कहते हैं - यहाँ तो देह सहित सब कुछ भूल मामेकम् याद करो। अपनी देह में भी न फंसो। किसकी देह में फंसने से गिर पड़ते हैं। जैसे मम्मा की देह से प्यार था तो मम्मा के जाने के बाद कितने मर गये क्योंकि नाम-रूप में फंसे हुए थे। ... तुम इस ब्रह्मा के शरीर को भी याद नहीं करो। शरीर को याद करने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकते।" सा.बाबा 15.11.07 रिवा.

"अभी शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा राज्य स्थापन कर रहे हैं, वह है हमको पढ़ाने वाला। इस पर जोर देना - भभके से और नशे से कहना चाहिए कि मैं बी.के.शिवबाबा का पोत्रा हूँ, शिवबाबा से हमको वर्सा मिल रहा है।" सा.बाबा 17.11.07 रिवा.

"भारत में शिव जयन्ति मनानते हैं, यह भारत परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस। बहुत फखुर से बोलना चाहिए। सर्व का सद्गति दाता एक बाप है, भारत उनका बर्थ प्लेस है। वह बाप फिर से आया हुआ है। ... हम उनकी श्रीमत पर चलते हैं।" सा.बाबा 17.11.07 रिवा.

"सन्यासियों आदि को भी तुमसे ही मुक्ति का रास्ता मिलना है, उनको भी तुम समझाओ।... सर्विस पर होगा तो नशा भी रहेगा। ऐसे नहीं कि थोड़ी बात में अवस्था डगमग हो जाये। गाया हुआ है - स्तुति-निन्दा में समान रहना चाहिए।" सा.बाबा 17.11.07 रिवा.

सारांश

श्रीमत ही इस ब्राह्मण जीवन का आधार है। श्रीमत की कसौटी है कि जो श्रीमत पर चलेगा, उसको उसी क्षण स्वयं को और उसके द्वारा औरों को भी सुख-खुशी की महसूसता होगी, उसके सफलता की अनुभूति होगी। श्रीमत यथार्थ होगी तो उसके विषय में मन में अंशमात्र भी उलझन नहीं होगी।

नैतिक श्रीमत

जिसके विषय में बाप ने कहा है या नही कहा है परन्तु वह भी श्रीमत है ही - जैसे लाल लाइट है योग में सब बैठे है फिर भी कोई आता जाता तो ताली बजाना ठीक नहीं है, जो प्रायः बजाते है, ट्रैफिक कन्ट्रोल के समय चहल-पहल, बात करना आदि ऐसे कई अन्य विषय है।

बाबा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उसके अनुसार हर आत्मा अपने सुख-दुख का स्वयं ही कारण है, इसलिए किसी भी आत्मा को दोष न देकर अपने कर्म पर ध्यान देना ही यथार्थ पुरुषार्थ है। अपने लिए भी बीती का चिन्तन न करके भविष्य अच्छा हो, उसके लिए वर्तमान में अभीष्ठ पुरुषार्थ करना ही बाबा की श्रीमत है। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी बीती का चिन्तन नहीं करो और आगे की चिन्ता न करके वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करो।

अमृत-धारा

यह अटल सत्य है, जो ज्ञान-सागर बाप ने बताया है कि इस विश्व-नाटक में जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

जब इस सत्य का यथार्थ ज्ञान होगा, इस पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास द्वारा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस सत्य का- अनुभव करना और कराना ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और परम-कर्तव्य है।

“जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।” अ.बापदादा 14.11.87

Puzzel of Life Solved

-: O :-

Suffering are due to unrighteous & vicious actions

Vices are due to body consciousness

Body consciousness is due to ignorance

Ignorance can be eradicated through Real Godly Knowledge

Real Godly knowledge can be given by God Father only

Acquire this which He is giving now.

Now or Never

-: O :-